साधुमार्ग की पावन सरिता

(भाग-1)

पूर्वार्द्ध

मुनि धर्मेश

प्रकाशक :
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, रामपुरिया मार्ग, बीकानेर-334005
फोन 0151-2544867, 2203150 फैक्स 2203150

❋ साधुमार्ग की पावन सरिता (भाग–1) पूर्वार्द्ध

❋ मुनि धर्मेश

❋ अर्थ सौजन्य : श्रीमान सोहनलाल जी सिपानी, बैंगलोर

❋ प्रतियां–2100, फरवरी [illegible]

❋ प्रकाशक :

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, रामपुरिया मार्ग,
बीकानेर – 334005
फोन 2544867

❋ मूल्य . 200/-

❋ मुद्रक . अमित कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, बीकानेर

प्रकाशकीय

इतिहास समाज का दर्पण होता है। दर्पण भी ऐसा कि उसमे भूत, भविष्य और वर्तमान को देखा जा सकता है। इतिहास के द्वारा विगत काल मे हुए उत्थान, पतन एव उसके कारणो का अवबोध किया जा सकता है तथा भविष्य के लिए प्रेरणा भी प्राप्त की जा सकती है।

इतिहास को सुरक्षित रखने की परम्परा प्रारम्भ से हो रही है। आगमो मे तीर्थकरो, आचार्यो, साधु, साध्वी, श्रावक-श्राविकाओ के जीवन से सम्बन्धित विवरण ही नहीं चक्रवती राजा, महाराजाओ एव नगर, ग्राम आदि से सम्बन्धित जानकारिया भी प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध होती है। इतिहास चक्षु है, भला कौन ऐसा होगा कि चक्षुओ की उपेक्षा करेगा ? चक्षु के बिना मनुष्य अधा है तो इतिहास के बिना समाज अन्धा है।

हमारा गौरव है कि श्रमण धर्म मे साधुमार्गी परम्परा का इतिहास अतीव गौरवशाली रहा है। भगवान महावीर के पट्टधर आचार्य सुधर्मा, जम्बू प्रभव आदि से यह परम्परा की सरिता प्रवाहित एव आचार्य देवार्धिगणि क्षमा श्रमण आदि द्वारा आसेवित होते हुए निरन्तर गतिशील रही। जब इसकी धारा मन्द पड़ने लगी तो क्रान्तिकारी वीर लोकाशाह ने वीर सवत् 2000 की वैशाख शुक्ला तृतीया को शिथिलाचार, आडम्बर और असयम के निरुद्ध जाहिर प्रवचन प्रारम्भ करके सयम, उच्चाचार और आडम्बरविहनी विशुद्ध साधुमार्गी सरिता को गति प्रदान की।

वीर लोकाशाह की क्राति-धारा जब पुन मन्द पड़ने लगी और जिनशासन सरिता मे शिथिलाचार बाह्याडम्बर का कचरा बढने लगा तो महान् क्रियोद्धारक आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा ने ज्ञान और उच्चाचार के बल पर शिथिलाचार आडम्बर के कचरे को रोक कर जिनशासन सरिता को पुन विशुद्ध बनाने का अभिनन्दनीय कार्य किया। विशुद्धि-प्रक्रिया के पश्चात् ज्योर्तिधर जवाहराचार्यजी ने उस सरिता के सुदृढ तट बन्धो का पुनर्निर्माण किया एव शान्त क्रान्ति के अग्रदूत गणेशाचार्य ने उस सरिता के घाट पर सीढियो का निर्माण किया। समता विभूति श्री नानेशाचार्य ने उस सरिता तक जिज्ञासु लोगो को पहुचाने का सुकार्य किया। वर्तमान मे उस सरिता का जो सुधर्मा स्वामी से निरन्तर प्रवहमान है, सरक्षण सवर्धन कर रहे है- प्रशान्तमना परमागम रहस्यज्ञाता पूज्याचार्य श्री रामलालजी म सा । प्रशान्तमना शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् उस पावन सरिता का पावन जल जन-जन को पिलाने का श्लाघनीय कार्य कर रहे है।

भगवान महावीर से अद्यावधि साधुमार्गी परम्परा पर शासन प्रभावक आदर्श त्यागी, तपस्वी, विद्वान श्री धर्मेशमुनि जी म सा ने अनाग्रही दृष्टि से जो प्रकाश डाला है वह प्रस्तुत ग्रन्थ मे आबद्ध है। मुनि श्री ने प्रस्तुत ग्रन्थ के आलेखन मे पर्याप्त समय और श्रम का नियोजन किया है। आचार्यो, साधु, साध्वियो से सम्बन्धित जानकारी सकलित करने के लिए आप श्री ने व्यापक भ्रमण किया। प्राचीन हस्तलिखित पत्रो का निरीक्षण किया है और वृद्ध अनुभव श्रावक-श्राविकाओ से तत्सबधी चर्चाए की है। अत इतिहास के अज्ञात तथ्यो को ढूढ कर प्रकाश मे लाने का श्रेय आपको ही जाता है। सघ आपके इस श्रम का मूल्याकन करता है।

मुनि श्री युवावस्था में शादी के सात माह पश्चात् सजोडे आचार्य श्री नानेश के चरणाम्बुजो मे दीक्षित होकर शिक्षित होने वाले अग्रगण्य सत है। सर्वाधिक उग्र विहारी मुनि श्री ने देश के विभिन्न भागो मे विहार कर जन चेतना पैदा की है और आज भी शासन प्रभावना मे सतत् सलग्न है। आपकी सासारिक धर्म सहायिका आज विदुषी साध्वी श्री जय श्री जी म सा के रूप मे शासन प्रभावना के साथ साधनारत है।

शासन प्रभावक मुनिश्री के इतिहास लेखन के कार्य मे कविरत्न, प्रज्ञा सम्पन्न, विद्वान श्री गौतम मुनि जी म सा एव विद्वान सेवाभावी श्री प्रशममुनि जी म सा का छाया की तरह सतत् सहयोग रहा है। ग्रन्थ की समग्रता मे उनके श्रम को रेखाकित करना भी आभार की परिधि मे आता है।

सघ सदस्यो से निवेदन है कि इतिहास की जानकारी के लिए प्रस्तुत ग्रन्थ का स्वाध्याय करे और सघ की रीति-नीति का परिज्ञान प्राप्त करे। ताकि ग्रन्थ के अध्ययन से इतिहास की जानकारी के साथ श्रद्धा भी सुदृढ होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस ग्रथ के अर्थ सहयोगी है स्वनामधन्य सुश्रावक श्री सोहनलालजी सा सिपानी उदयरामसर/ बैगलोर और उनका परिवार। श्री सोहनलाल जी सिपानी ने सघ और सघ से सबद्ध सस्थाओ मे विभिन्न पदो पर रहकर आदर्श सघ सेवा प्रदान की है। शासन सेवा मे भी आपकी और आपके परिवार की अग्रणी भूमिका है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन मे सिपाणी परिवार के प्रशस्त अर्थ सहयोग के प्रति हम आभारी है।

पुन सुधी पाठको के सुझाव-सहयोग के आमन्त्रण सहित।

निवेदक

शान्तिलाल साड

सयोजक, साहित्य प्रकाशन समिति

अर्थ सहयोगी परिचय

शासन प्रभावक श्री धर्मेश मुनिजी म सा की प्रस्तुत कृति **''साधुमार्ग की पावन सरिता-प्रथम भाग'** का प्रकाशन स्व सेठ श्री भैरुदानजी सिपानी एव श्रीमती धन्नी देवी की स्मृति मे उनके आत्मज श्री सोहनलालजी एव पौत्र श्री विमलचन्दजी के अर्थ सौजन्य से हो रहा है । गुरु निष्ठा, धर्म परायणता, सघ/शासन सर्मपणा एव समाज सेवा मे बेजोड़ पिता-पुत्र की जोड़ी पर बीकानेर, श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ ही नहीं, समग्र जैन समाज गौरवान्वित है।

श्री भैंरुदानजी सिपानी मूलत बीकानेर जिलान्तर्गत उदयरामसर ग्राम के निवासी थे। आप स्कूली शिक्षा अधिक प्राप्त नहीं कर सके परन्तु श्रमनिष्ठता, लगन, अनुपम प्रतिभा एव व्यावसायिक कुशलता से आपने अर्थोपाजन तो किया ही, धार्मिक/सामाजिक कार्यो मे अग्रणी रहकर मुक्त हस्त से दान भी दिया। आपकी धर्मपत्नी की कुक्षि से पुत्र-त्रय (सर्व श्री सोहनलालजी, गोकलचन्दजी एव रिधकरणजी) व पुत्री-द्वय (श्रीमती छगनीदेवी दस्सानी व मोहनीदेवी लूणिया) का जन्म हुआ, जिन्हे धर्मनिष्ठा तथा सेवा के सस्कार मातु श्री एव शासननिष्ठा तथा जनकल्याण के सस्कार पितृश्री से विरासत मे मिले।

श्री भैंरुदानजी ने सर्वप्रथम कलकत्ता मे स्लेट का व्यवसाय प्रारम्भ किया और तदनन्तर आध्रप्रदेश के मारकापुर कस्बे मे इसका विस्तार कर स्लेट बनाने का कारखाना स्थापित किया। साथ ही हसन तथा चिकमगलूर मे लकड़ी का कारखाना भी खोला। आपने निरन्तर साफल्य के सौपान तय किये और कुछ वर्षो मे अपनी प्रामाणिकता व ईमानदारी मे अपना पृथक् स्थान बना लिया। आपकी धार्मिक/सामाजिक प्रवृत्तियो मे भी विशिष्ट रुचि रही। आप आजीवन समाज उन्नयन हेतु सजग, सचेष्ट व तत्पर रहे।

श्री सोहनलालजी आपके ज्येष्ठ पुत्र है, जिनका जन्म वि स 1985 मिगसर सुदी 15 को उदयरामसर मे हुआ। आपका पाणिग्रहण गगाशहर निवासी स्व श्री चादमलजी डागा की सुपुत्री श्रीमती जेठी देवी के साथ हुआ।

चूकि आपको व्यावसायिक कुशलता व धर्मपरायणता के सस्कार अपने पूर्वजो से मिले थे आपने व्यवसाय मे प्रविष्ठ होते ही उद्योगो का उल्लेखनीय विस्तार किया। बैगलोर मे वर्तमान मे HDPE SACKS की चार फैक्ट्रिया व एक प्लास्टिक की बोतल बनाने तथा लकडी का कारखाना कार्यरत है। सम्पूर्ण व्यवसाय **'सिपानी ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज'** के नाम से सुख्यात है।

व्यवसाय सचालन के साथ आप अनेक सामाजिक/धार्मिक/शैक्षणिक/सास्कृतिक सस्थाओ से सम्बद्ध रहकर अनुपम कार्य कर रहे है। सम्प्रति आप मुख्यत निम्नाकित सस्थानो के पदाधिकारी है-

1 श्री साधुमार्गी जैन सघ, बैगलोर-अध्यक्ष
2 एस एम जैन श्रावक सघ विल्सन गार्डन, बैगलोर-अध्यक्ष
3 श्री सुरेन्द्र कुमार साड शिक्षा सोसायटी, नोखा-अध्यक्ष
4 श्री जैन शिक्षा समिति, बैगलोर-अध्यक्ष
5 बीकानेर समुदाय, बैगलोर-अध्यक्ष

आप श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ के सर्वतोमुखी विकास हेतु सदेव प्रयासरत रहे व रहते है तथा उपाध्यक्ष रह चुके है। सामाजिक/धार्मिक कार्यो हेतु आप उदारता पूर्वक तहेदिल से सहयोग प्रदान करते है। आपने बैगलोर मे सिपानी समता भवन का निर्माण भी कराया है, जहा नियमित रूप से रविवार को सामूहिक सामायिक/स्वाध्याय के कार्यक्रम होते है। जन कल्याण के कार्यो हेतु भी आपका उल्लेखनीय योगदान रहा है। उदयरामसर के अभावग्रस्त छात्रो की पढाई लिखाई व रोगग्रस्त व्यक्तियो की चिकित्सा हेतु सहयोग के लिये आप सदैव तत्पर रहते है।

सामायिक सूत्र कठस्थ करने पर तथा धार्मिक परीक्षा देने वालो को प्रोत्साहन स्वरूप रजत पदक प्रदान कर आपने जो प्रभावना की वह अप्रतिम है। प्रतिक्रमण वर्ष 1999 मे प्रतिक्रमण सूत्र याद करने वाले भाई-बहिनो को आप द्वारा सहस्त्राधिक रजत सिक्को से सम्मानित करना भी श्लाघनीय व स्तुत्य है।

आपके चार पुत्र (सर्व श्री सुन्दरलाल, राजकुमार, कमलचन्द व विमलचन्द) है एव पुत्री-श्रीमती सरला देवी बेताला है। सभी सुशील, विनयवान एव सघनिष्ठ है। आपके हर कार्य मे उनका सहयोग/योगदान रहता है।

श्री विमलचन्द जी सिपानी आपके चतुर्थ पुत्र है, जिनका जन्म स 2014 मिती आसोज बदी 11 तदनुसार 21 सितम्बर 1957 को उदयरामसर मे हुआ। आपका पाणिग्रहण गगाशहर निवासी श्री भवरलाल जी बेद (पूर्व अध्यक्ष श्री अ भा साधुमार्गी जैन सघ) की आत्मजा कपूर देवी के साथ हुआ। आपके दो पुत्र-श्री सुनील कुमार एव पुनीत कुमार है।

विरासत मे प्राप्त व्यावसायिक गुणो व धर्मनिष्ठता के सस्कार को निरन्तर वृद्धिगत रखकर आपने सामाजिक, धार्मिक, जनकल्याणकारी क्षेत्रो मे विशेष पहचान बनाई है। आप अनन्य सघनिष्ठ है और आचार्य श्री नानेश के परम भक्त रहे है। वर्तमान शासनेश श्री रामेश के प्रति आप अटूट आस्थावान है एव सघ की सर्वतोमुखी प्रगति हेतु सोत्साह तत्पर रहते है।

सत् साहित्य के प्रकाशन में सिपानी परिवार का सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा, यही विश्वास है।

बीकानेर

उदय नागोरी
सदस्य, साहित्य प्रकाशन समिति

–अनुक्रमणिका–

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ

समर्पण

अर्ध शताब्दी से महावीर की साधुमार्ग परम्परा को निर्बाध रूप से गतिमान एव कीर्तिमान करने वाले, समता–विभूति, समीक्षण ध्यान योगी, आचार्य प्रवर श्री नानेश के पावन कर कमलो मे दीक्षा स्वर्ण जयती के उपलक्ष्य मे सविनय सादर समर्पित।

—मुनि धर्मेश

ईस्वी सन् १९८९ वि स २०४६

सारोठ (राजस्थान)

दो शब्द

पारिवारिक शुभ सस्कारो के फलस्वरूप मेरे अन्तर्मन मे प्रारभ से ही साधुमार्गी जैन सघ के प्रति गहरी श्रद्धा रही है। जब कभी भी सत–सतीवृद का शुभ सान्निध्य प्राप्त होता, मेरा मानस प्रमोद से भर जाता और उनकी सेवा–सुश्रूषा करने की भावना उमडने लगती थी। यह कल्पना जिस समय साकार हो जाती तब मेरा मन पढना लिखना खाना पीना छूटकर उनकी उपासना मे लग जाता।

आचार्य प्रवर की मेरे एव मेरे ससारपक्षीय परिवार पर महती कृपा दृष्टि रही। समय–समय पर उनके सान्निध्य का सबल पाकर धर्म के सही स्वरूप के ज्ञान का ही प्रतिफल है कि मै सयम मार्ग पर आरूढ हो सका।

साधुमार्गी जैन परपरा मे दीक्षित होते ही मेरे मानस मे इस परपरा के उद्‌भव एव विकास के बारे मे जानने एव खोज करने की जिज्ञासा उत्पन्न होने लगी। मेरी रुचि उस समय और बढ गयी जब सघ मे सवत् २०३३ तक के आचार्यो एव उनके पास दीक्षित होने वाले सत–सतीवृदो के कुछ हस्तलिखित प्रपत्र प्राप्त हो गये। मै श्रद्धेय आचार्य प्रवर, गुरु अग्रज श्री शातिमुनि जी म सा एव गुरु अनुज तपस्वी विद्वान् श्री रामलालजी म सा के आशीर्वाद, सबल और सहयोग से प्राचीन भडारो एव क्षेत्रो से इस विषय की अधिकाधिक सामग्री सकलित करता गया। इस सकलन मे चिर सहयोगी सतद्वय– अनवरत सेवारत श्री गौतममुनि जी एव श्री प्रशममुनिजी का समर्पण एव सहकार मेरे लिए सबल बना रहा।

इस साधुमार्ग की पावन सरिता मे साधुमार्गी परपरा की तथ्यपरक, प्रामाणिक जानकारी देने का यथा साध्य प्रयास किया है। आचार्य प्रवर पूज्य श्री नानालालजी म सा की दीक्षा स्वर्ण जयती के पावन प्रसग पर प्रस्तुत सामग्री पाठको को कुछ नवीन तथ्यो से अवगत कराएगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रस्तुत लेखन मे प्रत्यक्ष एव परोक्ष रूप से जिन–जिन लेखको, विद्वानो, साहित्यकारो, ग्रन्थ भडारो, साधु साध्वियो का सहयोग प्राप्त हुआ है, उनका मै हृदय से आभारी हू।

—मुनि धर्मेश

आचार्य नानेश दीक्षा स्वर्ण जयन्ती

प्रस्तावना
विश्व के धर्म व संस्कृति में साधुमार्ग की सनातनता

जिन महान् आत्माओ ने अध्यात्म ज्योति को प्राप्त करने हेतु बारह प्रकार का बाह्याभ्यतर तप करके पाचो आश्रवो का परित्याग किया, सत्रह प्रकार के सयम का आराधन करते हुए शील के अठारह सहस्र भेदो का पालन किया और कर्म शत्रुओ को परास्त कर केवलज्ञान की विशुद्ध ज्योति प्राप्त की, तथा उसके प्रकाश मे प्राणियो के अध्यात्म विकास हेतु विशुद्ध साधुमार्गी जैन धर्म का प्रतिपादन किया वही केवली प्ररूपित निर्ग्रथ प्रवचन के रूप मे प्रख्यापित हुआ। अनेक उत्सर्पिणिया अवसर्पिणिया व्यतीत हो जाने पर भी सपूर्ण लोक की अपेक्षा से न कभी उसमे व्यवधान आया है न आयेगा।

भरत क्षेत्र मे काल के प्रभाव से उसमे जरूर उतार चढाव आया है और आगे भी आता रहेगा उसके फलस्वरूप इस अवसर्पिणी काल मे भी साधुमार्ग के आद्य प्रवर्तक प्रभु ऋषभ से लगाकर मध्यवर्ती २२ तीर्थकरो के साथ ही अतिम तीर्थकर प्रभु महावीर तक अनेक व्यवधान आये। कभी–कभी तो ऐसे–ऐसे प्रसग भी आये कि जैसे साधुमार्ग का विच्छेद ही हो गया। इसका लाभ उठाकर अनेक धर्म प्रवर्तक अपने–अपने मत का प्रचार करने मे जुट गये।

भगवान महावीर के निर्वाण पश्चात् तो इसमे इतना उतार–चढाव आया कि इसकी प्राचीनता पर भी प्रश्न चिन्ह खडा करने लग गये। यहा तक ही नहीं, किसी ने इसकी उत्पत्ति सनातन धर्म से किसी ने गोरखनाथ–मच्छेन्द्रनाथ से, किसी ने बौद्ध धर्म से तो किसी ने शकराचार्य के बाद मे इसकी उत्पत्ति मान कर मनचाहे मतव्य और लेख लिख डाले। यही नहीं, इस साधुमार्ग से निकली हुई दिगबर मूर्ति पूजक, स्थानकवासी आदि विभिन्न शाखाओ ने भी अपनी प्राचीनता सिद्ध करने हेतु आगमिक शब्दो के अर्थ का अनर्थ कर डाला। फिर भी यथार्थता तो यथार्थता ही है चाहे उस पर कितने ही क्यो न आवरण डाले जाय वह छिप नहीं सकती। जिस प्रकार सूर्य पर कितने ही बादलो का घटाटोप आवरण क्यो न मडराये वह तो अपनी स्थिति से प्रकाशमान रहता है, आखिर बादल फटते ही है और ज्यो ही बादल फटे कि सूर्य का प्रकाश धरती पर फैल कर सत्य स्वरूप को प्रगट कर देता है। इसी प्रकार साधुमार्गी (जैनधर्म) रूप सूर्य पर भी स्व–पर मत के बादलो की गहरी घटाए मडराकर उसके अस्तित्त्व को विलीन करने अथवा दबाने का तथा उसकी प्राचीनता को अर्वाचीनता मे परिवर्तित करने का दुस्साहस करने लगी।

किसी भी प्रवृत्ति मे साहस या दु साहस करना व्यक्ति की स्वतत्रता है पर सत्यान्वेषको को तो सत्य के अनुसधान हेतु उन्ही प्रमाणो का आधार लेना पडता है जो प्रतिवादी के विचारो को अथवा प्रमाणो को काट कर सत्य को उद्घाटित कर सके।

वैदिक सनातन धर्म से साधुमार्गी (जैनधर्म) सनातन है। आइए, अब इसी बात को लेकर आगे बढते है। वैदिक सनातन धर्मी अपने आपको सबसे प्राचीन सिद्ध करने हेतु जैनधर्म को उसकी शाखा बताकर प्रचार करने लगे लेकिन कभी इस बात पर भी विचार करने की कोशिश नही की कि प्राचीनता की पुष्टि अर्वाचीनता से होती है या अर्वाचीनता की पुष्टि प्राचीनता से होती है ? आज किसी भी मत अथवा दर्शन की अर्वाचीनता अथवा प्राचीनता की सिद्धि का आधार है तो उनके अपने मान्य ग्रथ। अब हम देखे कि जो वैदिक सनातन धर्मी साधुमार्गी (जैनधर्म) से अपने धर्म की प्राचीनता बताते हैं वे अपने मान्य ग्रथ वेदो को ही देखे।

डा राजेन्द्रलाल मित्र ने योग सूत्र की भूमिका मे उल्लेख किया है कि– सामवेद मे एक ऐसे यति का वर्णन है जो बलिदान को निद्य समझता था – " ॐ पवित्र नग्नमुपवि (इ) प्रसामहे येषा नग्न (नग्नये) जातिर्येषा वीरा।।"

इसी वेद मे साधुमार्गी जैनधर्म के आद्य प्रवर्तक ऋषभदेव व बाइसवे तीर्थकर अरिष्ठनेमि का नाम आया है जिसमे कहा गया है– "ॐ नमोऽर्हन्तो ऋषभो ॐ ऋषभ पवित्र पुरुहूतमध्वर यज्ञेषु नग्न परम माहस स्तुत वार शत्रुजय त पशुरिंद्रमाहुरिति स्वाहा।"

– अध्याय २५, मत्र– १९

ॐ रक्ष रक्ष अरिष्ठनेमि स्वाहा। वामदेव शान्त्यर्थ मुपविधीयते सोऽस्माक अरिष्टनेमि स्वाहा।"

सबसे प्राचीन ऋग्वेद मे २२वे तीर्थकर अरिष्ठनेमि की स्तुति करते हुए लिखा है– "ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्तिन यूषा विश्ववेदा स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्ठनेमि स्वस्तिनो ब्रहस्पतिर्दधातु।"

–अष्टक २१, अध्याय ६, वर्ग १६

इसी मे प्रभु ऋषभ हेतु कहा है–

हिरण्य गर्भ समवर्तताग्रे भूतस्य जात पतिरेक आसीत्।

सदाधार पृथ्वीद्यामुतेषा कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ऋग्वेद १०/१२१/१

अर्थात् हिरण्य गर्भ ही पहले उत्पन्न हुए थे। वे समस्त भूतो के स्वामी थे। उन्होने इस पृथ्वी ओर स्वर्गलोक को धारण किया। उन अनिर्वचनीय वेद की हम अर्चना करते है।

इन्हीं हिरण्य गर्भ को महाभारतकार ने भी योग विद्या के प्रारभकर्त्ता मानते हुए कहा कि इस योग विद्या से कोई विद्या या दर्शन प्राचीन नहीं है–"हिरण्य गर्भो योगस्य वक्ता, नान्य पुरातन ।।

– महाभारत –१२/३४९/४५

"नानायोगश्चर्या चरणे भगवान कैवल्य पति रिषभ।" – श्रीमद्भागवत ५/२/२५

"भगवान रिषभदेवो योगेश्वर" – भागवत ५–४३

भागवत मे प्रथम योगेश्वर के रूप मे और महाभारत मे हिरण्य गर्भ के रूप मे जो आद्य पुरुष हैं वे वस्तुत एक ही है जिसका स्पष्टीकरण महापुराण के १२/९५ के श्लोक मे किया गया हे–

सैषा हिरण्यमयी वृष्टि धनेरोन निपातिता।

विभो हिरण्य गर्भत्व मिव बोधयितु जगत्।।

अर्थात् जब भगवान ऋषभदेव गर्भ मे आये तो धनपति कुवेर ने हिरण्य की वृष्टि करके माता–पिता का भवन भर दिया अत वे ऋषभदेव जगत् मे हिरण्य गर्भ के नाम से प्रसिद्ध हुए।

इन्हीं के प्राचीन मान्य ग्रन्थ वेद व्यास के अध्याय २ पद २ सूत्र ३३ से ३६ तक मे जैनधर्म के स्याद्वाद सिद्धान्त का ब्रह्म सूत्रो के टीकाकार शकराचार्य आदि ने विकृत रूप से खडन किया जैसे–

३३– "नैकस्मिन्न सभवात्।" ३४–"एव चाऽऽत्माकार्त्स्न्यम्।" ३५–" न च पर्यायादप्य विरोधो विकारादिभ्य।", ३६ "अन्त्या वस्थिते श्चोभय नित्यावाद विशेष।"

कई ऐतरेय ब्राह्मण ग्रथो मे कुछ उल्लेख मिलते है कि जैन यतियो को गीदडो के आगे फैक दिया गया और उनके साथ अनेक प्रकार से कुत्सित व्यवहार किया गया।

सुप्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनी ने अपनी अष्टाध्यायी मे शाकटायन जैन वैयाकरण का उल्लेख किया है। इसी शाकटायन का ऋग्वेद के प्रतिशाख्यो मे और यजुर्वेद मे व यास्क के निरूक्त मे भी उल्लेख हैं जो पाणिनी ईसा से २००० वर्ष पहले और यास्क उससे कई शताब्दी पहले विद्यमान थे जिसका उल्लेख रामचन्द्र घोष ने अपने–" Peep into the Vedic Age" नामक ग्रन्थ मे लिखा है कि यास्क कृत निरूक्त को हम बहुत ही प्राचीन समझते है।

पुराणो मे योग वशिष्ठ और अनेक हिन्दू ग्रन्थो मे भी जैनधर्म का उल्लेख कई स्थानो पर मिलता है।

महाभारत के आदि पर्व के तृतीय अध्याय मे २३वे व २६वे श्लोक मे जैन मुनि का निर्देश दिया है। शातिपर्व (मोक्षधर्म अध्याय २३९, श्लोक ६) मे जैनो के सुप्रसिद्ध सप्तभगी नय का वर्णन है। रामायण व महाभारत मे जैन मुनियो का स्थान–स्थान पर उल्लेख आता है। महाभारत का काल ईसा से तीन हजार वर्ष पहले और रामायण का काल चार हजार वर्ष पूर्व माना जाता है।

माधव और आनन्द गिरि ने अपने शकर दिग्विजय ग्रन्थ मे, सदानद ने अपने शकर विजय सार मे कई जगह शकराचार्य का जैन विद्वानो के साथ शास्त्रार्थ होना स्वीकार किया है। स्वय शकराचार्य के वेदात सूत्र भाष्य के द्वितीय अध्याय के ३३ से ३६ तक के पदो मे जैनधर्म का उल्लेख करते हुए जैनधर्म की प्राचीनता स्वीकार की है।

शिवपुराण मे भी जैन मुनि का उल्लेख किया गया है–

हस्ते पात्र दधानाश्च, तुंडे वस्त्रस्य धारका।

मलिनान्यवे वासासि, धारयन्तोऽल्प भाषिण ।।

–शिवपुराण, ज्ञान सहिता अ २१ श्लोक, २४

हाथ मे पात्र धारण करने वाले, मुख पर मुख वस्त्रिका धारण करने वाले अर्थात् बाधने वाले एव मैले वस्त्रो को शरीर पर धारण करने वाले और बहुत थोडे बोलने वाले जैन मुनि होते है।

बौद्ध धर्म से साधुमार्गी जैनधर्म की प्राचीनता

इन प्रमाणो से वैदिक सनातन धर्म से साधुमार्गी जैनधर्म की प्राचीनता स्वत सिद्ध हो जाती है। बौद्धधर्म की प्राचीनता की तो गुजाईश ही कहा है ? जिसका उद्‌भव ही साधुमार्गी जैनधर्म के २४वे तीर्थकर महावीर के समकाल मे ही हुआ फिर भी न मालूम किस भ्रम मे पडकर लेथब्रिज, ऐलफिस्टन बेवर, वार्थ आदि विद्वानो ने जैन धर्म की उत्पति बौद्ध धर्म से मान ली। यदि वे हिन्दू धर्म के ग्रथो का और बौद्ध धर्म के ग्रथो का सरसरा अध्ययन भी करते तो उनका यह भ्रम निवृत्त हो जाता और उनको मानना पडता कि जैनधर्म बौद्ध धर्म की शाखा नहीं है। बौद्ध धर्म की उत्पति भी एक जैन साधु से हुई थी जिसका उल्लेख दर्शन सार नामक ग्रथ, जिसकी रचना देवचद आचार्य ने विक्रम सवत ९९० मे (ई सन् ९३३ मे) उज्जैन मे की, उसमे लिखा गया है कि पार्श्वनाथ परपरा के पिहिताश्रव नामक जैन साधु के एक विद्वान शिष्य बुद्ध कीर्ति था, उसने बौद्ध धर्म की स्थापना की थी। बुद्ध कीर्ति पलाश नगर मे सरयू नदी के किनारे पर तपस्या कर रहा था उस समय उसने एक मरी हुई मछली को पानी पर तैरते हुए देखा– इसके खाने मे हिंसा नहीं लग सकती क्योकि जीव रहित है। इस विचार धारा को पुष्ट कर गेरुआ वस्त्र धारण करके नये धर्म का प्रचार किया जो बुद्धकीर्ति के नाम पर बौद्ध धर्म कहलाया।

बौद्ध ग्रथो मे भी जैसे अगुत्तर निकाय के ३ अध्याय की ७४वे श्लोक मे जैनो के कर्म सिद्धात का वर्णन, "महावग्ग के ६ठे अध्याय मे भगवान महावीर के श्रमणोपासक सिह के साथ बुद्ध देव की भेट का उल्लेख, मज्झिम निकाय मे महावीर के उपाली श्रमणोपासक से बुद्ध देव के शास्त्रार्थ का वर्णन व अगुत्तर निकाय मे जैन श्रावको व उनके आचार विचार का विस्तृत वर्णन ऐसे ही उनके ग्रथो मे मखली पुत्र गोशालक का, सुधर्माचार्य के गोत्र का, महावीर के निर्वाण स्थान का उल्लेख मिलता हे,

जो जैन धर्म की बौद्ध धर्म से प्राचीनता स्वय सिद्ध करते है।

डा हर्मन जेकोबी ने तो इसकी गहरी छानवीन करके यह निर्णय लिया हे कि जैन धर्म की उत्पत्ति महावीर और प्रभु पारस से भी बहुत पहले की है।

इन सारी बातो से तो सुस्पष्ट हो ही चुका है कि वैदिक सनातन, वौद्ध, ईसाई ओर ईस्लाम धर्म से साधुमार्ग जैनधर्म प्राचीन है। जैनधर्म अनेक विरोधो के वावजूद अहिसा का विगुल वजाने मे सफल रहा। जैनाचार्यो ने अनेक राजा–महाराजाओ को प्रतिवोधित कर अनके माध्यम से जीव हिसा को रोकने का पुरुषार्थ किया। देवी–देवताओ की तुष्टि के लिये किये जाने वाले वलिदानो को धर्मविरुद्ध बताकर उन हिसको के दिल मे अहिसा के प्रति अनुराग पेदा किया। इसका इतना प्रभाव पडा कि पर्युषण पर्व मे कोई जीव हिसा नहीं कर सकता था। जेन मोहल्लो मे या उनके आसपास जीव हिसा तो दूर मृत पशुओ को भी नहीं ले जा सकता था।

जैन मुनियो की अहिसात्मक उपदेश धारा का हिन्दू राजाओ पर तो प्रभाव था ही, मुसलमान बादशाहो पर भी गहरा प्रभाव पडा। स्वय बादशाह अकबर के फरमान तो आज भी जग जाहिर हें लेकिन काल के प्रभाव से धीरे–धीरे राजाओ के राज्य भी हाथ से निकल गये। दुष्कालो की चपेट, विदेशी आक्रमणकारियो के कारण जैनागम साहित्य बहुत ज्यादा नष्ट हो गया और बहुत कुछ चोरी मे चला गया। शुद्ध साधुमार्गीय जैन साधुओ की सुदूर विचरण कठिन हो जाने से इसका प्रभाव विदेशो से हटकर भारत की सीमा मे ही सीमित रह गया और उसमे भी महाजन जाति तक ही सिमट गया।

जो कुछ शेष बचा वह साधुमार्गी जैन धर्म दिगबर, मूर्तिपूजक, श्वेताबर, स्थानकवासी आदि अनेक भागो मे बट गया और सब अपने आपको एक दूसरे से प्राचीन सिद्ध करने मे ही अपनी शक्ति का व्यय करने लग गये जो आज तक कर रहे है।

अब देखना यह है कि इन मे से भी कौनसी परम्परा प्राचीन एव विशुद्ध है। इस समाधान के लिए भी हमको पूर्वोक्त कसौटी को ही आधार बनाकर खोज करनी होगी।

वर्तमान मे भरत क्षेत्र मे जैनधर्म को मानने वाली जो भी सप्रदाय है वे सब चौबीसवे तीर्थकर भ महावीर को अपना आराध्य मानती है और उनके द्वारा प्रतिपादित प्रवचन जो गणधरो द्वारा द्वादशागी के रूप मे रचित है उनको आधार मानकर साधनारत है। यह निर्विवाद सत्य है कि पहले यह वाणी कठाग्र थी और परपरागत आगे से आगे भ महावीर के बाद सत्ताईसवे पट्टधर देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण तक उसका क्रम चलता रहा। तत्पश्चात् स्मृति भ्रश के दोष को देखकर ई सन् ४५४ मे लिपिबद्ध किया गया। इस विषय मे श्वेताम्बर परम्परा मे एकरूपता है पर दिगबर परपरा इसको नहीं मानती। उसका कहना है कि भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित शास्त्र काल दोष से नष्ट हो गये। वर्तमान मे जो शास्त्र हैं वे अर्वाचीन है। परतु प्रोफेसर हर्मन जैकोबी ने जैन सूत्रो के अनुवाद की भूमिका मे यह

सिद्ध कर दिया है कि श्वेताबरो के वर्तमान शास्त्र महावीर के कहे हुए हैं और परपरा से चले आ रहे हैं।

इसके बारे मे उन्होने निम्न प्रमाण दिये हैं—

बहुत सा प्राचीन साहित्य जो उपलब्ध हुआ है उससे नि सन्देह कहा जा सकता है कि वह प्राचीन से प्राचीन सस्कृत साहित्य से भी प्राचीन है। बहुत से शास्त्र तो उत्तरी बौद्धो के प्राचीन ग्रथो के मुकाबले के हैं क्योकि इसमे बुद्ध एव बौद्धधर्म के इतिहास की सामग्री प्राप्त करने मे बडी सफलता प्राप्त हुई है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जैन शास्त्रो के लिपिबद्ध होने से पहले भी जैन धर्म की मर्यादाए और अन्य बाते भी व्यवस्थित थीं।

सबसे बडी महत्त्वपूर्ण दलील उन्होने यह दी है कि इन शास्त्रो मे ग्रीस की ज्योतिर्विधा की कुछ झलक भी नहीं मिलती जिसका भारत मे ईसा की तीसरी या चौथी शताब्दी मे आगमन हुआ था। दूसरी बात, जैन शास्त्र सबसे प्राचीन माने जाने वाला ग्रन्थ ललित विस्तार की गाथाओ से भी प्राचीन है जिसका अनुवाद चीनी भाषा मे ई सन् ६५ मे हुआ था। इससे और स्पष्ट होता है कि जैनशास्त्रो का लेखन ईस्वी सन् से पहले ३०० वर्ष पूर्व ही हो चुका था।

हा, सूत्र लेखन व पूर्वो के बारे मे उनका कुछ मतभेद जरूर है जिसका खुलासा अभयदेव सूरि जी ने समवायाग सूत्र की टीका करते हुए लिखा है कि भगवान महावीर ने गणधरो को जो उपदेश दिया उसको उन्होने आचाराग आदि द्वादशागी के रूप मे रचा। समस्त चौदहपूर्व १२वे अग दृष्टिवाद मे शामिल हैं। देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण तक एक पूर्व का ज्ञान शेष रह गया था उससे पूर्व कइयो को चौदह पूर्व का ज्ञान था तो कुछेक को दश, नौ आदि का भी था। पाटलीपुत्र मे तो केवल उसका सग्रह किया गया था और वल्लभीपुर मे लिखा गया। इसकी प्रामाणिकता के लिए देखे बौद्धो का मज्झिम निकाय ग्रथ जिसमे भ महावीर के शिष्य उपाली और गौतमबुद्ध मे जो विवाद हुआ जिसका वर्णन स्वय जैकोबी ने ही लिखा है— निर्ग्रथ उपाली कहते है कि दड तीन प्रकार के होते है— मन, वचन व काय दड जो आज भी स्थानाग सूत्र के तीसरे ठाणे मे ज्यो का त्यो मिलता है।

इससे यह तो सुस्पष्ट हो जाता है कि श्वेताम्बर परपरा के मान्य ग्रथ प्राचीन है ओर स्वय भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित और गणधरो द्वारा ग्रथित है और उसमे कहीं दिगबर शब्द का प्रयोग ही नहीं हुआ है। न ही एकात रूप से साधुओ को नग्न रहने का ही उपदेश दिया है। जैन साधु वस्त्र धारण करते थे इस बात की पुष्टि धम्मपद आदि सूत्रो से भी होती है। जैनागमो मे तो स्थान—स्थान पर वस्त्र, पात्र ग्रहण करने, पहनने, प्रतिलेखन करने की विधि का निर्देश आता है और केशी गौतम सवाद तो इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

साथ ही श्वेताबरो की प्राचीनता और दिगबर मत की अर्वाचीनता की पुष्टि भी बोद्धग्रथो से सहज

हो सकती है। जैसे जैनमुनियो के लिए श्रमण शब्द के प्रयोग तो जगह–जगह प्रयुक्त हुए हैं लेकिन दिगबर शब्द का कहीं प्रयोग नहीं हुआ है। भगवती सूत्र मे गोशालक का वर्णन है उसका बौद्धो के मज्झिम निकाय सूत्र मे सपूर्ण विवरण उसके सिद्धात के साथ मिलता है। दिगबर मान्यतानुसार स्त्री मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकती इस सिद्धात का भी कहीं उल्लेख नहीं मिलता। हा, श्वेताम्बर शास्त्रो के तो अनेक उल्लेख है। दिगबर ग्रथो से भी वस्त्र, पात्र, स्त्री मुक्ति आदि पुष्ट किये जा सकते है। इतना ही नहीं, दिगबर श्वेताबर की मूर्तियो के लेखो से भी दिगबर मत अर्वाचीन सिद्ध हो जाता हे जेसा कि रूडाल्फ हार्नले साहब ने उपासक दशाग सूत्र की प्रस्तावना मे लिखा है। सबसे प्राचीन मूर्तियाँ जो मथुरा से निकली है वे १८०० वर्ष पुरानी है। जिस पर कनिष्क, हुविष्क ओर वासुदेव राजा का सवत् दिया गया है जो अब शक सवत् से प्रसिद्ध है। जो ईस्वी सन् ७८–७९ से प्रारभ होता है। उस पर स्पष्ट लिखा है कि ये मूर्तियाँ श्वेताबर सप्रदाय के अनुयायियो की भक्ति का स्मारक है। उनमे श्वेताबर सप्रदाय के कल्पसूत्र मे उल्लेखित गणो के भी कुछ नाम है।

इसके साथ ही दिगम्बराचार्य धर्मसागर जी कृत प्रवचन परीक्षा नामक ग्रथ मे दिगबर मत की उत्पत्ति के बारे मे लिखा है कि वी ६०९ रथवीरपुर नामक नगर मे शिवभूति उर्फ सहस्रमल नामक व्यक्ति रहता था जो राजसेवक था। एक दिन राजमाता के कोप से साधु बन गया। एक बार राजा ने उसको बहुमूल्य दुशाला दिया। उस पर उसको ममत्व हो गया, आर्य कृष्ण ने उसको समझाया, नहीं माना तब एक दिन आर्यकृष्ण ने उसके टुकडे करके सबको बाट दिया। यह देख शिवभूति कुपित हुआ और वस्त्र पात्र का त्याग करके निकल गया और अपने आपको दिगबर कहने लगा। उसकी बहिन भी वस्त्र त्यागने लगी तब उसको रोका और कहा कि स्त्री वस्त्र त्याग नहीं सकती इसलिए मोक्ष नहीं जा सकती। ऐसा ही एक उल्लेख सत्यार्थ प्रकाश ग्रथ मे भी मिलता हे जो दोनो दिगबर परपरा से सबधित है। ऐसे ही प्राचीन पट्टावली मे भी उल्लेख मिलते है।

हालाकि साधुमार्गी जैनधर्म मे श्वेताबर शब्द धर्म से सबधित नहीं है फिर भी दिगबर मत की उत्पत्ति के बाद श्वेत वस्त्र धारण करने के कारण यह उनकी विशेष पहचान हो गई इसलिए श्वेताबर शब्द विशेष रूप से इसके साथ जुड गया।

लेकिन इन श्वेताबरो मे भी जब से मूर्ति पूजा ने प्रवेश पाया तब से यह भी मूर्ति पूजक, अमूर्ति पूजक के नाम से विभाजित होकर अपनी प्राचीनता की पुष्टि करने लगे।

लेकिन इन दोनो की भी प्राचीनता व अर्वाचीनता के निर्णय का आधार भी इसकी उत्पत्ति का इतिहास, जैनागम और बौद्धो के शास्त्र ही बन सकते है।

यह तो सुस्पष्ट हो ही चुका है कि वर्तमान मे श्वेताबरो के मान्य शास्त्र ही प्राचीन एव भ महावीर द्वारा प्रतिपादित है। उनमे से ११ अग, १२ उपाग, ४ मूल, ४ छेद व आवश्यक सूत्र श्वेताम्बर मूर्तिपूजक, अमूर्तिपूजक दोनो को मान्य हैं। उसमे से आचाराग सूत्र, दशवैकालिक सूत्र, छेद सूत्र, आवश्यक सूत्र

जिसमे पूर्ण रूप से श्रमणाचार का सूक्ष्मता से विवेचन है और उपासकदशाग सूत्र मे श्रावकाचार का सूक्ष्म रूप मे विवेचन है और अन्य आगमो मे भी यथाप्रसग जहा–जहा भी श्रमणाचार व श्रावकाचार का उल्लेख आया है वहा कहीं भी मूर्तिपूजा को नियम व आवश्यक कार्य के रूप मे निर्दिष्ट नहीं किया गया और नहीं उसको धर्म या मोक्ष का साधन ही माना है। शास्त्रो मे पौषधशालाओ का, यक्षो के चैत्यो का तो उल्लेख मिलता है लेकिन तीर्थकरो की मूर्तियो से सज्जित मदिरो का व प्रतिमा की पूजा प्रतिष्ठा का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। गौतम बुद्ध जो भगवान महावीर के समकालीन थे उनके ग्रथो मे भी महावीर द्वारा प्ररूपित धर्म व उनके निर्ग्रंथो की चर्या एव उन पर समय–समय पर किये गये कटाक्षो के उल्लेख मिलते है लेकिन तीर्थकरो की मूर्तियो का या उनके मदिरो का या उसकी पूजा प्रतिष्ठा के बारे मे कहीं उल्लेख नहीं मिलता। इससे स्पष्ट होता है कि मूर्ति पूजा महावीर द्वारा प्ररूपित अहिंसा, सयम और तप रूप श्रुत चारित्र धर्म के प्रतिकूल है क्योकि उसमें छ काया के जीवो की विराधना निश्चित है।

पुरातत्त्व की दृष्टि से खोज करने पर डा फूहरर को मथुरा मे मिली सबसे प्राचीन मूर्ति १८०० वर्ष पुरानी ही है। इसके अलावा अभी तक कोई महावीर अथवा उनके पूर्ववर्ती तीर्थकरो के काल की बनी मूर्तियॉ प्रगट हुई हो ऐसा उल्लेख नहीं मिलता।

आश्चर्य तो इस बात पर होता है कि भगवान महावीर एव पूर्ववर्ती तीर्थकरो द्वारा पूर्ण अहिंसात्मक धर्म का प्रतिपादन होते हुए भी आज उनके नाम पर ही छ काया की विराधना को भी धर्म और मोक्ष का कारण माना जाता है। लेकिन यह कुछ काल का प्रभाव समझिये कि जिसका उल्लेख भद्रबाहु स्वामी ने चन्द्रगुप्त राजा के १६ स्वप्नो के अर्थ का विस्तार करते हुए पाचवे व छठे स्वप्न मे स्पष्ट किया है– "पचमे दुवालस्स फणिय सजुत्तो तस्स्स फले तेण दुवालस्स वास परिणामो दुकालो भवस्सई तत्थ कालिय सुय पमुहा वोच्छिज्जस्सति चेइयाई ढव्वावई दव्वाहारिणो मुणी भविस्सई लोयणेमाला रोहण देउल उवहाण उज्जमण जिण बिंब पईट्ठावण विहि उ माईयोहि बहवे तवप्पभावा पयाइस्सति अवियपथे पडिसति।

अर्थ– बारह वर्षी काल पडेगा, कालिक सूत्र नष्ट हो जायेगे। शुद्ध आहार पानी नहीं मिलने पर जिनमार्ग को छोडकर जिनप्रतिमा बनाकर अविधिमार्ग को अपनाकर उसकी स्थापना करायेगे। आज्ञा की विराधना करके परिग्रहधारी बनकर जिनबिब स्थापना कराके माला आदि धराकर नीलाम करायेगे, उजमणा इत्यादि की विधि बतलाकर वीर प्रभु के धर्म से परागमुख होवेगे।

इधर, इन्हीं के मान्य शास्त्र महानिशीथ मे तो मूर्तिपूजा करने वालो को अनत ससारी बताया है। वह पाठ निम्नलिखित है–

" एत्थ च गोयमा कई अमुणिय समय सप्भावे उसन्नविहारी णियवासिणो अदिट्ठ पर लोए पच्चवायए सयमति इड्ढि रस साय गारवाई मुच्छिए रागदोस मोहाहकारममीका राई सुपडिबद्धो कसिण

सजम सद्धमपरमुहे निद्दय नितिस निग्घिण अकलूण निक्किवे पावायरणेक्क अभिनिविठ बुद्धी एगतेण अइचडरोद्दे कूराभिगहिए मिच्छदिट्ठिणो कय सव्वसावज्ज जोग पच्चक्खाण विप्पमुक्का सेस सभारम परिगाहे तिविहेण पडिवन्ना सामाईएय दव्वताय नभावताए नाम मेव मुडे अणगारे महव्वय धारी समणे विभविताण एवमन्नमाणे सव्वहा उम्मग पवत्तति तहा किल अम्हे अरिहताण भगवताण गध मल्ल पदीव समज्जणो विलेवणा विचित्त वत्थ बली धुयाइएहिं पूयासक्कारेहिं अणुदि वत भवण पकुव्वाणा तित्थुथ्प्पण करेमो तव्वयण नो ण तहत्ति गोयमा समणुजाणेज्जा। से भयव केण अट्ठेण एव वुच्चई जहाण त च णों तहत्ति समणुजाणेज्जा।

गोयमा तयत्थाणुसारेण असजम बाहुलेण च मूल कम्मासव्व मूल कम्मासव्वा ऊय अज्झव साय पडुच्चत्थू लोयर सुहासुह कम्मपयडी बद्धो सव्वसावज्ज विरयाण च वय भगो वयभगेण च आणाई कम्म आणाई कम्मेण तु उमग्गामित उम्मगागामिते स च समगा पलायण उम्मगा पवत्तण सम्मगा विप्पलोयणेण वज्जईण महत्ति आसायणा तऊ अणतरो ससार हिऽण एएण अट्ठेण गोयमा एव वुच्चई जहाण गोयमा णो ण तहत्ति समणुजाणेज्जा" इति।।

अर्थ – (इत्थ) यहॉ (च) और सर्व स्थान पर ही (गोयमा) हे गोतम (कई) कितनेक, (अमुणिय) असाधु, (समय) दया आदि सिद्धात से, (सप्भावे) सद्भाव तथा श्रेष्ठ आचार से (उसन्न विहारी) शिथिलाचारी कुत्सित विहार वाले (नियवासिणो) नव कल्पी विहार न करने वाले (अर्थात् नित्य वासी), (अदिट्ठ परलोय– पच्चवाया) परलोक मे होने वाले दुःखो की उपेक्षा करने वाले (सयमति), विषय मे आशक्त हो अपनी बुद्धि अनुकूल बर्तने वाले (इड्ढि) ऋद्धि (रस साय ग़ारवाई) षट्रस मे सतरह प्रकार के सयम मे प्रमत्त न बनकर इन्द्रिय सुख मे वा अहकार मे (मुच्छिय) मूर्च्छित (राग दोस मोह अहकार ममिकाराई) राग द्वेष मोह अभिमान ममता आदि के करने मे (पडिबद्धो) आसक्त बने हुए (कसिण सजम) सपूर्ण १७ भेदी सयम से जो (सद्धम) सत्य धर्म से अर्थात् पाच महाव्रत तथा बारह व्रत रूप सच्चे धर्म से (परमुहे) परामुख (निद्दय) निर्दय, (नितिस) त्रास रहित, (निग्घणे) निर्घृणी अर्थात् पाप की घृणासे रहित, (अकलुण) करुणा रहित, (निक्किवे) कृपा रहित, (एगतेण) एकान्त, (पावायरणे) पाप आचरण के विषय, (अभिनिविट्ठ बुद्धि) स्थापना करी हुई है, जिन्होने अपनी बुद्धि, (अईचड) अति क्रोधी, (रौद्र) रौद्र परिणामी, (कुराभिगाहिए) करूर अर्थात् पाप करके हर्ष करने वाले, (मिच्छ दिट्ठी) मिथ्यादृष्टि, (कय सव्व सावज्जजोग पच्चक्खाण) करके सर्व सावद्य योगो का प्रत्याख्यान करके (विप्प मुक्क) छोड देने वाले (से सगारभ परिग्गहे) अर्थात् सघ निकालना आरम्भ करना परिग्रह अर्थात् धन जोडने मे, (तिविहेण) तीनो योगो से, (पडिवन्ना) प्रतिपन्न अर्थात् तत्पर हैं, (सामाइएय) सामायिक चारित्र हैं, उनका (दव्वताए न भावताए) द्रव्य अर्थात् कहने मात्र ही साधु है भाव चारित्र जिनमे नहीं (नाम मेव मुड अणगारे) नाम मात्र ही मुडित अणगार है। (महव्वय धारी) महाव्रतधारी, (समणे विभविताण) हम श्रमण अर्थात् साधु हुए हैं (एवमन्नमाणे) ऐसा मानते हुए (सव्वहा) सर्वथा, (उम्मगा)

उन्मार्ग अर्थात् उलटे मार्ग की (पक्तति) प्ररूपणा करते है व कहते है कि हम (तहाकिल) निश्चय ही (अम्हे) हमारे (अरिहताण भगवताण) अरिहतो भगवतो को, (गध मल्ल पदीव समज्जणो विलेवणे) सुगध माला दीपक स्नान विलेपन, (विचितवत्थ बलि धुयाइएहिं) नाना प्रकार के वस्त्र बल धूप आदि से, (पूया सक्कारेहि) पूजा सत्कार करके, (अणुदिवत) प्रतिदिन, (भवन) टूटे फूटे मदिर का, (पकुव्वाणा) जीर्णोद्धार करवाते (तित्थुत्थप्पणा) तीर्थ का उत्थान (करेमो) हम करते हैं। भगवान् कहते है कि आप इति गोयमा समणुजाणेज्जा) हे गोतम ! तू उनके वचनो को सत्य और भले न जान, (से भयव केण अट्ठेण च वुच्चई), हे भगवन्त ! आपने किस वास्ते ऐसा कहा है कि (जहाण) उनके वचनो को, (तचणोणा तहति समणुजाणोज्जा) तू सत्य और भले न जान, (गोयमा) हे गौतम ! (तयत्थाणुसारेण) तीर्थकरो के कथनानुकूल, उसमे (असजम बहुल्लेण च) असयम बहुत होने के कारण और (मूल कम्मासव्व) असयम ही कर्मो के आने का मूल कारण है, (मूल कम्मा सव्वाउय) मूल कर्माश्रवो से क्या होता है (अज्झवसाय) बुरे परिणाम होते है ऐसे अध्यवसायो से क्या होता है। (पडच्चत्थलोयर) बडी भारी, (सुहासुह कम्मपयडीबद्धो) शुभाशुभ कर्मो की प्रकृति बन्धती है, (सव्व सावज्ज विरयाण) जो सर्वसावद्य कार्यो से जो निवृत गये थे (वय भगो) व सर्व व्रत भग हो जायेगे अर्थात् पचमहाव्रत जाते रहेगे (वयभगेण च व्रत भग होने से क्या होता है, (आणा इक्कम्म) आज्ञा से बाहर होता है (आणाई कम्मेण तु) आज्ञा से बाहर होने से क्या होता है (अम्मग्ग गामित) अधर्म पथ मे चलने वाला होता है (उम्मग गामितेण च) अधर्म पथ मे चलने से क्या होता है, (सम्मगा पलायण) धर्म के पथ से दूर हो जाता है (उम्मगा पवत्तण) पाप मार्ग प्रवर्तन होता है (सम्भगा विलोयणेण) सच्चे धर्म के विलोप हो जाते है। (वज्जइ ण) सन्मार्ग को छोड देता है (महति आसायणा) मोटी आशातना करने को उतारू हो जाते है। (वउ अणत ससार हिंडण) तत्पश्चात् अनत ससार मे परिभ्रमण करता है, (एएण अठेण) इस कारण (गोयमा) है गौतम ! (एव वुच्चई), ऐसा कहा जाता है (जहाण गोयमा) जो उनके वचन है उनको तू हे गौतम (गोण तहति समणु जाणेज्जा) सत्य और भले जान)

आत्माराम जी (सवेगी) अपने जैनतत्त्वादर्श के पृ ३८७ मे स्पष्ट लिखते है–

पूजा कोटी समंस्तोत्रं, स्तोत्र कोटी समो जप ।

जपकोटि समं ध्यानं, ध्यान कोटि समं लय ।।

अर्थात् क्रोड पूजा करने से जितना फल होता है उतना ही एक स्तोत्र पढने से और क्रोड स्तोत्र से बढकर जप का, जप से ध्यान, ध्यान से भी प्रभु मे लय हो जाना सर्वश्रेष्ठ है।

आगे पृ ३०२ "पूजा से निवृत्त होकर नवकार मत्र की एक माला मुक्ति प्राप्ति के लिए जरूर फेरे" लिखा है।

हेमचन्द्राचार्य ने योग शास्त्र के पृष्ठ २८७ मे लिखा है– स्नान, मूर्तिपूजा आदि सावद्य कार्यो

का सूत्रकारो को उपदेश नहीं है।

प्रश्न व्याकरण प्रथम आश्रव द्वार मे लिखा है—

चतिय देवकुले चितसभा पव्वायतण जाव पुढवी आऊ तेऊ वाऊ वणस्सई तस्स हिंसन्ति जाव मछ बुद्धि जणइति।।

अर्थ— जो मूर्ति व देवमदिर उसमे जो चित्राम किया हुआ मकान तथा पर्वत आदि के वास्ते मिट्टी, पानी, अग्नि, हवा, वनस्पति और त्रसकाय जीवो की हिसा करता है वह मद बुद्धि वाला पुरुष है।

पाश्चात्य विद्वान ऐशियाटिक सोसायटी के सेक्रेटरी डाक्टर ए ऐफ ऐ डालफ हारनल साहिब ने आचारागसूत्र के अगरेजी अनुवाद की प्रस्तावना मे मिस्टर लैसन साहब के एक लेख को उद्धृत किया है जिसमे बताया है कि जैन मे मूर्तिपूजा नहीं है क्योकि जिन अर्थात् तीर्थंकरो का यह उपदेश ही नहीं है किन्तु उनका निर्वाण होने के पश्चात् अन्य धर्मावलम्बी जो मूर्ति पूजा अधिक करते थे उनका प्रभाव इन पर भी जब अधिक पड़ गया तब इनके भक्तो ने अपनी मान महिमा बढाने के कारण ही मूर्ति पूजा प्रारभ करदी। इसमे साहिब बहादुर भी स्पष्ट लिखते हैं कि मूर्ति पूजा का मत साधुओ से नहीं निकला अपितु गृहस्थियो ने ही निकाला है।

Mr Lesson says " I believe that this worship had nothing to do with original Budhism or Jainism that it did not originate with marks but felt the want of a higher call than that of their rude deities and demons, and when the religious development of india found in the Bhagti, the supreme means of salvation Therefore instead of seeing in the Budhists the original, and in the Jains the Immitators, with regard to the erection of temple and worship of statues, I assume that both sects were, indepedent from each of her, brought to adopt this practice by the perpetual and irresistable influence of the religious development of the people in India "

भावार्थ— मिस्टर लैसन साहिब प्रतिज्ञा पूर्वक कहते है कि इस बात पर मुझे पूर्ण विश्वास है कि बौद्धो और जैनियो मे प्रथम मूर्ति पूजा न थी और न ही इसके नेता साधु लोग हुए है, क्योकि जब लोगो को प्राय प्रतीक और दूसरे देवताओ से सहायता लेने की आवश्यकता हुई अर्थात् जब हिन्दुस्थान मे अन्य धर्मो के निकलने से यह प्रकट हुआ कि भक्ति ही, एक निर्वाण का पथ है इस कारण इनमे भी मन्दिर और प्रतिमाओ की पूजा आरभ हुई। इसमे जो लोग यह कहते हैं कि जैनो ने बौद्धो की या बौद्धो ने जैनो की नकल की है। यह असत्य है इसके सिवाय हम मानते हैं कि दोनो धर्म वालो ने एक दूसरे की नकल न करते हुए इस (मूर्ति पूजा) को उस वक्त प्रचलित किया जब मूर्ति पूजको का इन पर अत्यन्त प्रभाव पड गया।

ये ही उपरोक्त बाते पाटावलिओ आदि मे भी स्पष्ट उल्लिखित है कि भगवान महावीर के निर्वाण के ६२० वर्ष बाद मे बारह वर्षीय भयकर दुष्काल पडा। भिक्षा प्राप्ति दुश्वार बन गई थोडी बहुत मिलती भी तो भिखारी कुत्ते आदि इतने तग करते कि ठहरे हुए स्थान तक पहुचना भी बडा कठिन होता। दान दाताओ के द्वार भी बद रहने लग गये। ऐसी परिस्थिति मे ९८० साधुओ को तो सथारा पच्चक्ख कर अपना देहोत्सर्ग करना पडा, अवशेष साधुओ मे से कुछ ने मुख वस्त्रिका, रजोहरण आदि स्वलिग का परिवर्तन कर धर्मलाभ रुप गुप्त सकेतो से, कुछ भक्तो को यत्र, मत्र तत्र आदि से वश करके भिक्षा प्राप्त करने लग गये, फिर भी दुष्काल की इस चपेट मे बडे–बडे धान्य भडार भी खाली हो गये।

एक दिन राजगृही के सेठ जिनदत्त अपनी धर्मपत्नी ईश्वरी देवी व २१ पुत्रो के साथ जीवन यापन कर रहे थे। साधु सतो को भिक्षा दान देकर कृतार्थ हो रहे थे। एक दिन ऐसा आया कि सेठ का भडार भी खाली हो गया। सिर्फ एक सेर भर अनाज बच गया। सेठ सेठानी सोचने लगे अब क्या होगा ? सेठ सेठानी से बोला– इसकी राबडी बनाओ। सेठानी राबडी बनाने लगी। सेठ जिनदत्त चुपचाप सखिया (१ जाति का जहर) पीस कर तैयार करने लगे। इतने मे सेठ के द्वार पर एक साधु ने धर्मलाभ की जोरदार आवाज लगाई। सेठजी ने द्वार खोला, मुनिराज अन्दर आये। सखिया देखकर आश्चर्यान्वित होकर सारी बात पूछने लगे। सेठ जी बोले– बस अब सारे परिवार को इस दुष्काल की चपेट से बचाने का निश्चय करके जो सेर भर अनाज बचा है उसकी राब बनाकर उसमे यह सखिया डालकर राब सबको चुपचाप पिलाकर हम भी पी लेगे जिससे खाते पीते ही मृत्यु को प्राप्त कर लेगे ताकि भूख से पीडित होकर छटपटाते हुए मरने से बच जायेगे। यह सुनकर उन साधुजी का मन प्रकपित हो उठा। सेठ को आश्वस्त करके वह उपाश्रय गया और गुरुजी को लेकर पुन आया। गुरुजी ने सारी बात समझ कर कहा– श्रेष्ठीवर्य ! माना कि दुष्काल की चपेट बडी भयकर है। मोती के बराबर भी अनाज नहीं मिल रहा है फिर भी थोडा धैर्य रखो और तुम्हारे इन २१ पुत्रो मे से चार पुत्र मुझे सौप दो। मैं इनका पालन करूगा। साधुजी के कथन को श्रवण करके स्वीकृति दे दी और बोले, यदि आप पालन कर सकते हैं तो ये चार क्या, सबको ले जाइये, क्योकि वैसे ही इस दुष्काल की चपेट मे मृत्यु तो सामने दिख रही है। माता–पिता की स्वीकृति से चारो पुत्रो को तो दीक्षा देकर अपने साथ ले लिये, फिर सेठ जी से कहा– सेठजी ! थोडा धैर्य धारण करे, सुकाल के चिन्ह प्रकट हो रहे हैं। उसके पहले कुछ दिनो मे एक अनाज का जहाज आने वाला है तुम वह अनाज खरीद लेना। मुनिराज के कथन पर विश्वास करके ही जहाज के आने पर धान्य खरीद लिया। अब उदारतापूर्वक सुपात्र दान देते हुए जीवन यापन करने लगे। वे चारो मुनि दीक्षित होकर विद्वान बने कालान्तर मे चारो के चार गच्छ बन गये और उनकी नागेन्द्र, चद्र, निवृत्त और विद्याधर ये चार शाखाए बन गई। उनमे से दो दिगबर मत मे मिल गई। दो श्वेताम्बर रह गई। उनमे से रतनसूरिजी यति ने वी सवत् ६८४ मे साचौर मे सर्वप्रथम भगवान महावीर की प्रतिमा बनाई। पूजा की विधि निर्मित की। सही बात प्रकट

होने के भय से शास्त्रो को गुप्त भडारो मे छिपाकर रास चौपाई आदि से मूर्ति पूजा की पुष्टि करने लगे। राजा महाराजाओ को वश कर शत्रुजय, गिरनार, आवू इत्यादि स्थानो पर मदिरो की स्थापना कराई। मुहपति मुह पर बाधने का विरोध करके उसमे समूर्च्छिम जीवो की उत्पत्ति की भ्रमणा फेलाने लगे। इस प्रकार चन्द्रगुप्त राजा के स्वप्न साकार होने लगे। जो शुद्ध आचारनिष्ठ साधु थे, वे सुदूर प्रात मे जाकर अपना सयम निर्वाह करते रहे।

इधर धीरे–धीरे भस्मग्रह जो भगवान् महावीर की नाम राशि के साथ लगा था उसका प्रभाव कम होने लगा। उसके पूर्ण होते ही पुन इस साधुमार्ग मे एक महान् क्राति का प्रादुर्भाव हुआ। लोकाशाह का निमित्त मिला। ज्ञानजी यति ने कार्यवश जेसलमेर का गुप्त भडार खोला ओर देखा तो मालूम पडा कि भडार मे रखे शास्त्र सड गये है। बाहर निकाल कर देखा तो कुछ आगम ही पूर्ण रहे है वाकी सब खडित हो गये हैं। आगमो की यह स्थिति देखकर वे चिंतित हो उठे। वारम्वार यही विचार आने लगे कि अवशेष सूत्रो की सुरक्षा कैसे हो ? इतने मे भिक्षार्थ लोकाजी के घर पहुचे। उस समय लोकाजी खाता–बही लिख रहे थे। अचानक उनके अक्षरो पर यतिजी की दृष्टि पडी। अक्षरो को देखते ही उनका मन प्रमुदित हो उठा बोले, वाहरे वाह लोका सेठ ! अक्षर तो वहुत सुदर हे। क्या ही अच्छा हो कि उनसे आप जैनागमो की सुरक्षा कर सको। धर्मवीर लोका ने तत्काल स्वीकृति दे दी ओर उपाश्रय मे जाकर वे आगम लेकर आ गये और बडे गौर से उनका अध्ययन करते हुए प्रतिलिपि तैयार करने लगे। अध्ययन करके लिखते–लिखते उनको आगमो का तलस्पर्शी ज्ञान पूर्ण क्षयोपशम से ऐसा हुआ कि उनको तत्कालीन साधुओ का आचार–विचार–व्यवहार आगम विपरीत प्रतीत होने लगा। कुछ बातो की चर्चा जब यतिजी से करने लगे तो उनको शका पैदा हो गई। यतिजी ने लोका से पूछा– आपने कितने शास्त्र लिख दिये हैं ? उत्तर मिलता –३२। कैसे लिखे है देखने की इच्छा है। पास मे लोकाजी का लडका बैठा था। बोले बेटा ! शास्त्रो की पेटी लेकर आ। पुत्र कहने लगा पिताश्री ! कौन सी पेटी लाऊ दिन वाली या रात वाली ? लोकाजी बोले दिन वाली लेकर आ जा। यह बात यतिजी ने ज्यो ही सुनी तो फिर बोले–यह दिन रात का क्या रहस्य है ? लोकाजी बोले– आपने जो आगम दिये उनकी दो प्रतिया उतारी हैं–एक आपके लिए और एक मेरे लिए। यतिजी बोले– तुम क्या करोगे ? लोकाशाह बोले– आप भी स्वाध्याय करेगे, मैं भी स्वाध्याय करूगा। यतिजी बोले–भाई। शास्त्रो का स्वाध्याय करना गृहस्थ के लिए वर्जित है। यह बात सुनते ही लोकाजी ने इस बात की पुष्टि हेतु शास्त्र के पाठ खोलकर रख दिये। इतना ही नहीं, आगम विरूद्ध चलने वाली प्रवृत्ति ओर मूर्तिपूजा आदि पर अनेक प्रश्नो की झडी लगा दी। यह देख यतिजी कुपित होते हुए बोले– हमारे शास्त्र हमको दे दो, बस आगे नहीं लिखाना है। लोकाजी बोले– कोई बात नहीं। नहीं लिखाना है तो ये लीजिए आपके शास्त्र। यतिजी को शास्त्र सभलाकर घर आये और उन्होने उन बतीस आगमो की अनेक प्रतिया तैयार करके सपर्क मे आने वाले धर्म प्रेमियो को उसका मर्म समझाते और समय–समय

पर जाहिर उपदेश देने लगे। जिसके फलस्वरूप अल्पकाल मे ही हजारो व्यक्तियो ने सद्‌बोध पाकर मूर्तिपूजा का त्याग कर दिया। ४५ व्यक्तियो ने तो ससार से विरक्त होकर लोकाजी से सयम पथ पर आरूढ होने की प्रार्थना की। लेकिन धर्मवीर लोकाशाह ने फरमाया– भाई ! मेरी अभी ससार त्यागने की पूर्ण तैयारी नहीं है तो मैं आपको दीक्षा कैसे दे सकता हू ? सयम लेना और उसको शुद्धता से पालना सर्वश्रेष्ठ है। आप अपने भावो को दृढ करे। मैं आपके इस पवित्र कार्य मे पूर्ण सहयोगी हू। साथ ही हृदय से यह चाहता हू कि कोई अच्छे त्यागी वैरागी, शुद्ध सयमी महापुरुषो का आपको सान्निध्य प्राप्त हो जिससे आपके इष्ट लक्ष्य की पूर्ति हो सके–इसके लिए मेरी खोज जारी है। लोकाशाह ने उन व्यक्तियो की भावनानुसार खोज कराई तो मालूम पडा कि सिध हैदराबाद की तरफ विचरने वाले ज्ञानजी स्वामी आज भी आगम निर्दिष्ट शुद्ध सयम का पालन करते हुए भव्य जीवो का उद्धार कर रहे हैं तथा शुद्ध साधुमार्गी जैनधर्म का ध्वज फहरा रहे है। लोकाशाह ने उनके पास विश्वस्त व्यक्ति को भेजकर सारी बात निवेदन करा कर शीघ्र गुजरात की तरफ पधारने की विनती करवाई। लोकाशाह की विनती को स्वीकार करके ज्ञानजी ऋषि गुजरात पधारे और स १५२७ वैशाख सुदी ३ को दीक्षा प्रदान की। दीक्षा ग्रहण करने के बाद वे मुनिराज गाव–गाव मे शुद्ध साधुमार्गी जैनधर्म का प्रचार करने लगे। भयकर उपसर्ग परिषह सहन करने पडे। स्थान न मिलने पर पुराने ढूढो मे भी निवास करना पडता तब विद्वेषी लोग उनको ढूढिया जैसे हीन शब्दो का प्रयोग करके चिढाने मे भी कमी नहीं रखते। फिर भी ये महापुरुष समभाव से इसका सीधा अर्थ ग्रहण करते और कहते–

ढूंढत–ढूढत सब ढूंढ लियो सब वेद पुराण किताब ने जोई।
जैसे दही मे माखन ढूंढत ऐसो दया मयलियो जोई।
ढूंढत है वही वस्तु पावन विन ढूंढत पावत नहीं कोई।
ऐसो दया मय धर्म है ढूढियो, जीव दया बिन धर्म न कोई।

इसी प्रकार जब कुछ प्रचार हुआ, लोगो के मन मे निर्वद्य साधना की अभिरुचि पैदा होने लगी। किसी निर्वद्य स्थान मे धर्माराधना करने लगे तो लोग उनको स्थानकवासी के रूप मे चिढाने लगे तो भी उन महापुरुषो ने पूर्णरूप से अपने समत्व भाव का ही परिचय दिया। साथ ही कुछ साधु स्थानक निर्माण के प्रपच मे भी पडने लग गये इसलिए स्थानकवासी शब्द भी रुढ हो गया लेकिन शुद्ध साधुमार्गी जैनधर्म के शुद्ध स्वरूप पर उसका कोई प्रभाव नहीं पडा। थोडा बहुत प्रभाव पडा भी तो आचार्य श्री हुक्मीचद जी म सा ने उसकी सुरक्षा हेतु ऐसा सिहनाद किया कि साधुमार्गी जैन सघ का शुद्ध रूप पुन निखर उठा जो पश्चात्‌वर्ती आचार्यो से पोषित हुआ। आचार्य श्री नानेश के शासन काल मे तो उसका खूब प्रसार हुआ और आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि आचार्य श्री नानेश ने अपनी गहरी परख से भावी शासननायक के रूप मे युवाचार्य श्री रामलालजी म सा की नियुक्ति की है जिनके द्वारा भी साधुमार्गी जैन धर्म का अभ्युदय निश्चित रूप से होगा। —मुनि धर्मेश

प्रभु ऋषभदेव का पूर्वभव :

वैसे तो ससार का प्रत्येक प्राणी अनादि काल से जन्म मरण भोगता आ रहा है लेकिन सार्थक वही जन्म है जिसमे जीव ने ससार परित्त (सीमित) किया। उसी क्रम मे प्रभु ऋषभ का जीव भी कई भव पूर्व जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह की क्षिति प्रतिष्ठित नगरी के प्रसन्नचन्द्र राजा के राज्य मे धन्ना सार्थवाह था। एक बार व्यापार के लिए बसतपुर जाने का निश्चय करके, धन्ना ने राजाज्ञापूर्वक नगर मे घोषणा कराई कि यदि उनके साथ कोई चलना चाहे तो यथायोग्य पूर्ण सहयोग दिया जायेगा। इस घोषणा की जानकारी तत्र विराजित आचार्य धर्मघोष को भी मिली। वसतपुर की ओर विहार करने का निर्णय करके सार्थवाह से आज्ञा लेकर साथ मे विहार कर दिया। रास्ते मे वर्षाकाल से मार्ग अवरूद्ध हो जाने से सुरक्षित स्थान देखकर सार्थ को वहीं रूकने का आदेश दे दिया। धन्ना सार्थवाह के मुनीम मणिभ्रद ने आचार्य धर्मघोष व उनके शिष्यो को भी अपने झोपडे मे ठहरने की व्यवस्था कर दी।

लेकिन वर्षा का क्रम इतना लबा हो गया, जिससे साथ की, सारी खाद्य सामग्री समाप्त हो गई। लोग कद मूल खाकर समय निकालने लगे। धन्ना सार्थवाह को जब इस स्थिति का पता चला तो वह विचार मे पड गया कि ऐसी स्थिति मे मुनिराजो को आहार कैसे प्राप्त हो रहा होगा। चितातुर स्थिति मे वह सीधा चलकर मुनियो के पास आया और पश्चाताप करता हुआ आहार ग्रहण करने की प्रार्थना करने लगा। सार्थवाह को अत्याग्रह व पश्चाताप करते देख आचार्य के निर्देशानुसार एक शिष्य भिक्षाटन करते हुए उसके आवास पहुच गया। अपने आवास मे मुनिराज को आते देख हर्ष विभोर होते हुए साधुओ के योग्य आहार देखने लगा लेकिन अन्य सामग्री को अप्रासुक देख चितित होते हुए उसकी दृष्टि पास मे पडे प्रासुक घी के घडे पर पडी और बडे प्रमुदित भाव से मुनिराज को ग्रहण करने का आग्रह करने लगा। मुनिराज ने झोली मे से पात्र निकाला। सार्थवाह उत्कृष्ट भाव से पात्र मे घी बहराने लगा। उसी समय एक देव ने उसकी उत्कृष्ट भावो की परीक्षा हेतु मुनिराज की दृष्टि बाध ली। मुनिराज का पात्र घी से भर घी बाहर बहने लग गया । फिर भी मना नहीं कर सके और सार्थवाह घी बहराता ही रहा जिसके फलस्वरूप उन्ही उत्कृष्ट परिणामो से उसने सम्यक्त्व की प्राप्ति की और अनत ससार परित्त कर लिया। उस भव की आयु पूर्ण कर उत्तर कुरू मे ३ पल्योपम की स्थिति वाला युगल बना और वहा का आयु पूर्णकर तीसरे भव मे सौधर्म कल्प मे देव बना।

वहा का आयु पूर्णकर चौथे भव मे महाविदेह की गन्धिलावती विजय के गान्धार देश की गध समृद्धि नगरी के शतबल नामक विद्याधर राजा की चन्द्रकाता रानी की कुक्षि से पुत्ररूप मे पैदा हुआ जिसका नाम महाबल रखा गया। यौवनावस्था मे उसका विवाह सम्पन्न कर राजा शतबल ने महाबल का राज्याभिषेक कर दीक्षा ग्रहण करली।

महाबल राजा अपने एक बाल साथी व चार प्रधानो के साथ नर्तकी द्वारा किये जा रहे नृत्य मे आसक्त हो रहे थे। एक बार की बात है, इधर स्वयबुद्ध नामक मत्री जिसे यह ज्ञात हो चुका था कि जघाचरण मुनि द्वारा महाबल की सिर्फ एक माह की उम्र शेष है, ने राजा के समक्ष यह बात निवेदित करदी। इससे प्रतिबोधित होकर राजा महाबल उत्कृष्ट भाव से सयम ग्रहण करके २२ दिन के अनशन पूर्वक देह त्याग कर ५वे भव मे दूसरे देवलोक मे श्रीप्रभ विमान के स्वामी ललिताग देव बने। इनकी प्रधान देवी स्वयप्रभा थी।

ज्ञानी महापुरुषो से मुनि महाबल के देवयोनि मे जन्मादि विषयक रहस्य जानकर स्वय बुद्ध मत्री ने भी सिद्धाचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। उत्कृष्ट आराधना के साथ आयु पूर्णकर मुनि स्वयबुद्ध ईशानकल्प मे ईशानेन्द्र का दृढ धर्मा नामक सामानिक देव बना। इधर ललिताग देव व स्वय प्रभादेवी वहा का आयु पूर्ण करके महाविदेह क्षेत्र की पुष्कलावती विजय मे लोहार्दगल नगर के राजा स्वर्ण जग की महारानी लक्ष्मी की कुक्षि से वज्रजग नाम के पुत्र व श्रीमती नामक पुत्री के रूप मे उत्पन्न हुये।

यौवनावस्था मे श्रीमती ने एक देव विमान को देखा। उसे देखकर जातिस्मरण ज्ञान के माध्यम से वह अपने पूर्वभव के पति का स्मरण करने लगी। पूर्वभव के पति की गहरी स्मृतियो के फलस्वरूप उसने यह प्रतिज्ञा धारण करली कि जबतक वे उसे नहीं मिलेगे तब तक वह किसी से नहीं बोलेगी। यह बात उसकी पडिता नामक दासी ने जानली। श्रीमती की सहायता करने हेतु दासी ने इशान कल्प के ललिताग देव के विमान का कुछ त्रुटिपूर्ण चित्र बनाकर राजपथ पर टाग दिया जिसे देखते ही वज्रजग को भी जातिस्मरण ज्ञान हो गया और उसने उस चित्र मे रही त्रुटि को दूर कर दिया। यह बात उनके पिता स्वर्ण जग को मालूम हुई तब योग–सयोग समझ कर उन्होने दोनो की शादी कर दी। कुछ समय पश्चात् श्रीमती ने एक पुत्र को जन्म दिया। धीरे–धीरे पुत्र युवावस्था को प्राप्त होने लगा। उसको युवा होते देख इधर तो रात्रि को दोनो ने उसको राज्य सौप कर दीक्षा ग्रहण करने का विचार किया उधर उसी रात्रि को पुत्र ने राज्य लोभ मे विषाक्त धुआ उनके महल मे छोड दिया। फलत दोनो ने शुभ परिणामो से अपना आयु पूर्ण कर ७वे भव मे ३ पल्योपम की स्थिति वाले कुरूक्षेत्र के युगलिक रूप से जन्म लिया। वहा की आयु पूर्ण करके दोनो ८वे भव मे सौधर्म देवलोक मे देव बने। वहा की आयु पूर्णकर ९वे भव मे वज्रजग का जीव जबूद्वीप के महाविदेह मे क्षिति प्रतिष्ठत नगर के सुविधि वैद्य के यहा जीवानद नामक पुत्र रूप मे जन्म लिया और श्रीमती का जीव इसी नगर मे श्रेष्ठि ईश्वरदत्त के पुत्र रूप मे उत्पन्न हुआ जिसका नाम राव रखा गया।

इसी काल मे राजा ईशानचद की रानी कनकवती के भी एक पुत्र हुआ जिसका नाम महीधर रखा गया। राजा के मत्री सुवासीर की पत्नी लक्ष्मी के सुबुद्धि नाम का पुत्र हुआ। सागरदत्त सार्थवाह की पत्नी अभागी के पूर्णचद्र व धनश्रेष्ठि की पत्नी शीलवती के गुणकार पुत्र हुए। पूर्वभव की प्रीति से सब मे परस्पर

लेकिन प्रभु तो अपने सकल्प के साथ आगे वढते ही जा रहे थे। जिसका उल्लेख करते हुये लिखा है–

"उसभो वर वस गई धेतूण अभिगइ परम घोरं।

वोसट्ट चतदेहो विहरउ गामाणुगामे।।" — आ नि गा ३३८

"भयण दीण मणसो सवच्छर भणासिओ विहरमाणो।

कन्नाहिं निमतिज्जइ वत्था भरणासणेहि।।" —आ नि गा ३४१।।

बढते–बढते प्रभु हस्तिनापुर पधारे। वहा राजा वाहुवली के पौत्र व सोमप्रभ के पुत्र श्रेयास कुमार को स्वप्न फल के अनुसार प्रभु के दर्शन होते ही जाति स्मरण हो गया जिससे निर्दोष भिक्षा का स्वरूप समझ आते ही महल से नीचे उतरे। प्रभु को वदन कर आहार के लिये आमत्रित किया ओर प्रासुक इक्षु रस का दान देकर प्रथम दान का महान् लाभ प्राप्त कर धन्य हुए। देवो ने भी धन्य-धन्य का उद्घोष करते हुए पचदिव्य प्रगट किये। वह दिवस अक्षय तृतीया के रूप मे सर्वमान्य एव प्रसिद्ध हे।

उसभस्स पढमभिक्खा खोय रसो असि लोगनाहस्स (समवायाग) "राध शुक्ल तृतीया याम दानमासीत् तदक्षयम पर्वाक्षय तृतीयेतिततोद्यापि प्रवर्तने। श्रेयांसोपज्ञ भवनौदान धर्म प्रवृत्तिमान स्वाभयुपज्ञामिवाऽशेष व्यवहार नय क्रम।।

वैशाख मासे राजेन्द्र शुक्ल पक्षे तृतीय का अक्षया सानिथी प्रोक्ता कृर्तिका रोहिणीयुता"

—त्रिषष्ठी पु १/३/३०१–२११

शेष प्रभु के साथ प्रव्रजित चार हजार पुरुष भूख प्यास सहन नहीं कर सके और अपनी इच्छानुसार विभिन्न वेष धारण करके स्वच्छन्द प्रवृत्ति करने लगे। उन्ही के नाम से ३६३ मत चले।

इस प्रकार प्रभु कठोर साधना करते हुए १०००वर्ष बाद जब पुरिमताल नगर पधारे और वहा के शकट मुख उद्यान मे फाल्गुन वद ११ के दिन तेले के तप में वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ थे। उस समय परिणामो की अत्यत उत्कृष्टता से घनधाती कर्मो का क्षय करके केवल्यज्ञान प्राप्त हुआ। देवो ने महामहोत्सव के साथ समोशरण की रचना की। १२ प्रकार की परिषद् एकत्रित हुई। राजा भरत भी यह शुभ सदेश पाकर दादी मरुदेवी व राजपरिवार के साथ प्रभु दर्शन को पहुचे। माता मरुदेवी ने इस दिव्य दृश्य को देखते ही देखते सर्व कर्मो का क्षय करके तीर्थ स्थापना के पूर्व सिद्ध गति प्राप्त करली।

प्रभु ने अपनी प्रथम देशना मे शुद्ध साधुमार्ग का निरूपण किया, जिसको श्रवण कर प्रभो के १२ सो पोत्र, प्रपौत्र, पुत्री ब्राह्मी आदि अनेक महिलाओ ने दीक्षा ग्रहण की व अनेको ने श्रावक धर्म धारण किया। प्रभु ने चतुर्विध सघ की विधिवत् स्थापना करके ऋषभसेन आदि ८४ गणधर व गण निर्धारित किये।

प्रभु ऋषभ के शासन मे ८४ हजार मुनि, ३ लाख साध्वी, तीन लाख पाच हजार श्रावक, पाच लाख चौपन हजार श्राविकाये। जिनमे से चार सौ सत्तर चवदह पूर्वधर, नौ हजार अवधिज्ञानी, बीस हजार केवलज्ञानी, ६ सौ वैक्रिय लब्धिधर, बारह हजार, छ सौ पचास मन पर्यवज्ञानी व तेरह हजार छ सौ पचास चर्चावादी हुए।

इस प्रकार कुल १ हजार कम १ लाख पूर्व तक केवली पर्याय मे विचरण करते हुए दस हजार मुनियो के साथ अष्टापद पर्वत पर ६ दिन का अनशन करके १०७ मुनियो के साथ मोक्ष गये।

अन्य धर्म शास्त्रो में प्रभु ऋषभ :

मखस्य ते तीवषस्य प्रजूति मियभिवाच भृताय भूषन।
इन्द्र क्षिति मामास मानुषीणाविशा दैवीनायुत पूर्वयाया।। ऋग्वेद।। २ ३४ २।।
त्रिधाबद्धो वृषभोरोक्ती, महादेवो मृत्या अविशेष ऋग्वेद।।५८—३।।
अधे मुच वृषभ यतियान विराजत प्रथम मध्वाराणाम्
अपात्र न पातभृश्विना हुवेदि इन्द्रियेण वमिद्रिय द्यत्त भोज।। अथर्व वेद की टीका १९—४२—४
नित्यानुभूत निजलाभविवृत तृष्णं, श्रेयसृतप्रचनया चिर सुदृबुद्धे।
लोकस्यय. करुणया भयमात्यलोक माख्यान्नामो भगवते भृभाय तस्मै।।
श्रीमद् भागवत् ५—६—१९—५६।।

कैलासे पर्वते रम्ये वृषभोऽय जिनेश्वर
चकारस्याष तारज्च सर्वज्ञ सर्वग शिव ।। —शिवपुराण

2. भगवान अजितनाथ :

पूर्वभव मे जबूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र की सीता नदी के तट पर वत्स देश की शुसीमा नगरी के विमल वाहन राजा थे। जिन्होने उत्कृष्ट वैराग्य भाव से अरिदमन आचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर बीस बोलो का उत्कृष्ट रसायन के साथ आराधनाकर तीर्थकर नाम कर्म का उपार्जन करके आयु पूर्ण कर विजय विमान मे देव बने और वहा ३३ सागरोपम का आयुष्य करके जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र मे विजिता नगरी के राजा जितशत्रु की महारानी विजयादेवी की कुक्षि मे वैशाख शुक्ला १३ को चवकर आये तव माता को १४ स्वप्न दिये। उसी रात्रि को आपके छोटे भाई सुमित्र विजय की महारानी वेजयति को भी मद प्रभाव से १४ स्वप्न दिखे। गर्भकाल पूर्ण होने पर माघशुक्ला अष्टमी को विजिया महारानी के पुत्र पेदा हुआ। भव्य जन्मोत्सव के साथ अजित कुमार नाम रखा। कुछ समय बाद महारानी वेजयन्ति के भी पुत्र पैदा हुआ। उसका नाम सगर रक्खा। यौवनावस्था मे दोनो का विवाह सम्पन्न कर महाराजा जितशत्रु ने अजितकुमार को राज्याभिषेक करके सगर को युवराज बनाकर प्रभु ऋषभ के स्थविरो के पास सयम धारण कर मोक्ष पधार गये।

इधर अजित कुमार ने ५३ लाख पूर्व तक राज्य सचालन कर लोकातिक देवो के आग्रह पर वर्षीदान देकर माघ शुक्ला नवमी को सुप्रभा नामक शिविका पर आरूढ होकर नगर के बाहर सहसाम्र उद्यान मे पधारे एव दिवस के अतिम प्रहर मे रोहिणी नक्षत्र मे चद्रमा का योग होने पर वस्त्राभूषण उतारकर पचमुष्टि लोच करके एक देवदुष्य वस्त्र को धारण कर बेले के तपपूर्वक १ हजार व्यक्तियो के साथ सामायिक चारित्र ग्रहण कर लिया। उसी समय मन पर्यवज्ञान की प्राप्ति हुई। अयोध्या के ब्रह्मदत राजा के यहा बेले का खीर से पारणा करके १२ वर्ष तक कठोर तप कर पुन विनीता नगरी के सहसाम्र उद्यान मे पधारे और पौष सुदी ११ को तेले के तप मे केवलज्ञान की प्राप्ति की।

देवो ने समोशरण की रचना की। प्रभु ने धर्मदेशना दी जिसको श्रवण कर हजारो नरनारी प्रतिबोधित हुये। प्रभु ने चार तीर्थ की स्थापना करके सिहसेन आदि ९५ गणधर एव गण स्थापित किये। प्रभु के शासनकाल मे एक लाख साधु, तीन लाख तीन हजार साध्वी, दो लाख अठाणु हजार श्रावक, ५ लाख पैतालीस हजार श्राविकाये बनीं। बावीस सौ केवलज्ञानी, दो हजार सात सौ वीस चौदह पूर्वधर, १२ हजार ५०० मन पर्यवज्ञानी हुये।

दीक्षा के बाद एक पूर्वांग कम एक लाख पूर्व बीतने पर १ हजार मुनियो के साथ समवेतशिखर पर एक मास के सथारे के साथ चैत्र सुदी ५ को ७२ लाख पूर्व का आयुष्य पूर्ण कर प्रभु ऋषभ के निर्वाण के ५० लाख कोडाकोडी सागरोपम के बाद ४५० धनुष का देह त्याग कर मोक्ष पधारे।

3. श्री संभवनाथ स्वामी जी :

विपुल वाहन राजा के भव मे जिन नाम कर्म का उपार्जन कर सप्तम ग्रैवेयक का दिव्य सुख भोगकर फाल्गुण सुदी ८ को श्रावस्ति नगरी के जितारी राजा की महारानी सेनादेवी की कुक्षि से उत्पन्न हुये। १४ स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर मृगसर सुदी १४ को पुत्र रूप मे पैदा हुआ। देवो ने जन्मोत्सव मनाया और नाम सभव कुमार रखा। यौवनावस्था मे विवाह सम्पन्न कर राज्याभिषेक के साथ राजा जितारी ने दीक्षा ग्रहण कर ली। बाद मे ४ पूर्वांग व ४४ लाख पूर्व की वय मे आपने भी वर्षीदान सहित सिद्धार्थ शिविका मे आरूढ हो सहसाम्र उद्यान मे बेले के तप सहित दीक्षा ग्रहण कर ली। मन पर्ययज्ञान की प्राप्ति के साथ ही सुरेन्द्र दत्त राजा के यहा खीर से पारणा करके विहार कर दिया। १४ वर्ष की कठोर साधना के बाद दीक्षा स्थल मे ही केवलज्ञान प्राप्त किया। देवो ने समोशरण की रचना की। प्रभु ने धर्मदेशना देकर चार तीर्थ की स्थापना की। प्रभु के शासन मे दो लाख साधु, ३ लाख छत्तीस हजार साध्वी, २९ लाख तीस हजार श्रावक, ६ लाख ३६ हजार श्राविकाये चारू आदि १०२ गणधर व गण बनाये। उसमे से १५ हजार केवलज्ञान, १२१५० मन पर्ययज्ञानी, ९ हजार छ अवधिज्ञानी हुये।

इस प्रकार प्रभु ने कुल ६० लाख पूर्व की आयु को पूर्णकर एक हजार मुनियो के साथ समवेत शिखर पर चैत्र सुदी ५ को प्रभु अजितनाथ के ३ लाख कोडाकोडी सागरोपम बाद मोक्ष पधारे।

4. श्री अभिनंदन स्वामीजी :

महाबल मुनि के भव मे जिननाम कर्म का उपार्जन करके वहा का आयु पूर्ण कर विजय विमान का सुख भोग करके वैशाख शुक्ला चतुर्थी के दिन जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की अयोध्या नगरी के राजा सवर की महारानी सिद्धार्थ की कुक्षि मे उत्पन्न हुये एव चवदह दिव्य स्वप्न दर्शन के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर माघ शुक्ला द्वितीया को पुत्र रूप मे उत्पन्न हुये। देवो द्वारा जन्माभिषेक के साथ अभिनदन नाम रखा गया। यौवनावस्था मे विवाह सम्पन्न हुआ और साढे बारह लाख पूर्व की वय मे राज्याभिषेक हुआ। ३६ लाख पूर्व राज्य सुख भोगकर लोकातिक देवो के आग्रह पर वर्षीदान देते हुए माघ सुदी १२ को १ हजार पुरुषो के साथ अर्थसिद्धा शिविका पर आरूढ होकर सहसाम्र वन मे दीक्षा ग्रहण की और मन पर्यय ज्ञान की प्राप्ति के साथ ही राजा इन्द्रदत्त के वहा बेले का खीर से पारणा करके आगे विहार किया।

१८ वर्ष तक घोर तप करके पुन दीक्षा स्थल पर ही केवलज्ञान की प्राप्ति की। देवो के समोशरण की रचना करने पर प्रभु ने धर्मदेशना दी और चार तीर्थ की स्थापना की। आपके शासन मे कुल ३ लाख साधु, ६ लाख ५० हजार साध्वी,, २८ लाख ८ हजार श्रावक, ५२ लाख ७ हजार श्राविकाये हुई। वज्रनाम प्रमुख ११६ गणधर हुये। अत मे समवेतशिखर पर १ हजार मुनियो के साथ वैशाख शुक्ला ८ को भगवान सभवनाथ के १० लाख क्रोड सागरोपम बाद मोक्ष पधारे।

5. श्री सुमतिनाथजी स्वामी :

पुरुषसिह के भव में जिननाम का उपार्जन करके वहा से जयत विमान का सुख भोगकर श्रावण शुक्ला २ को अयोध्या नगरी के राजा मेघरथ की महारानी मगला देवी की कुक्षि मे उत्पन्न हुये। १४ स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण हुआ तब वैशाख शुक्ला अष्टमी को पुत्र रूप मे जन्मे। देवो द्वारा जन्मोत्सव मनाने के बाद नाम सुमति कुमार रखा। यौवनावस्था मे अनेक राजकुमारियो के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। आपका देहमान ३०० धनुष का था। आपका १० लाख पूर्व की अवस्था मे राज्याभिषेक हुआ। उसके २९ लाख पूर्व बाद लोकातिक देवो के आग्रह पर वर्षीदान देकर वैशाख सुदी ९ को १ हजार पुरुषो के साथ अभ्यकरा शिविका पर आरूढ होकर सहसाम्र उद्यान मे दीक्षा ग्रहण कर मन पर्ययज्ञान की प्राप्ति की। बीजेपुर के राजा पद्म के यहा खीर से पारणा करके २० वर्ष की कठोर साधना के पश्चात् विचरण करते हुए पुन उसी दीक्षा स्थान पर पधारे और चेत्र सुदी ११ को बेले के तप मे प्रियगु वृक्ष के नीचे केवलज्ञान की प्राप्ति की।

देवो ने महोत्सव के साथ समोशरण की रचना की जिसमे प्रभु ने धर्मदेशना देकर चार तीर्थ स्थापित किये। प्रभु के शासन काल मे ३ लाख २० हजार साधु, ६० लाख २० हजार साध्विया २ लाख ८ हजार एक सौ श्रावक, ५ लाख १६ हजार श्राविकाये रूप चतुर्विध सघ वना। १३ हजार केवलज्ञानी, १० हजार ४५० मन पर्ययज्ञानी, ११ हजार अवधिज्ञानी २ हजार ४ सो चोदह पूर्वधर हुए।

चमर प्रमुख १०० गण घर हुए। बीस वर्ष १२ पूर्वांग कम एक लाख पूर्व के पश्चात् कुल ४० लाख पूर्व का आयु पूर्ण कर भगवान अभिनदन के मोक्ष के पश्चात् ९ लाख क्रोड सागरोपम वाद १ हजार मुनियो के साथ समवेत शिखर पर चैत्र सुदी ९ को मोक्ष पधारे।

6. श्री पद्मप्रभु स्वामीजी :

आप वत्स देश की कौशम्बिक नगरी के राजा श्रीधर की महारानी सुसीमा की कुक्षि मे अपराजित के पूर्वभव मे जिननाम कर्म का उपार्जन कर देवलोक मे माघ वदी ६ को च्यवन कर चोदह दिव्य स्वप्न दर्शन के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर कार्तिक बदी १२ को जन्म लिया। देवो ने जन्माभिषेक के साथ पद्मप्रभ नाम रखा। यौवनावस्था मे विवाह के पश्चात् राज्याभिषेक हुआ। साढे इक्कीस लाख पूर्व तक राज्य किया। बाद मे लोकातिक देवो के आग्रह पर वर्षीदान देकर कार्तिक बदी १३ को वेजयन्ति शिविकारूढ होकर सहसाम्र वन मे पधारे एव हजार पुरुषो के साथ प्रवर्जित होकर मन पर्यवज्ञान की प्राप्ति के साथ ब्रम्ह स्थल के राजा सोमदेव के यहा बेले का परमान्न से पारणा कर ६ महिने तक छद्मस्थ अवस्था मे विचरण करते हुए पुन दीक्षा स्थल पर पधारे और केवलज्ञान प्राप्त किया। देवो द्वारा समोशरण की रचना होने पर धर्म देशना देकर चार तीर्थ स्थापित किये।

'आपके शासन काल मे ३ लाख तैतीस हजार साधु, ४ लाख २ हजार साध्वी, २ लाख ७६ हजार श्रावक, ५ लाख ५० हजार श्राविकाये, १२ हजार केवलज्ञानी, १० हजार ३ सौ मन पर्यय ज्ञानी, १० हजार अवधि ज्ञानी हुए। सुव्रत आदि १०७ गणधर हुए। कुल ३० लाख पूर्व का आयु पूर्ण कर मिगसर सुदी ११ को ३०८ मुनियो के साथ भगवान सुमतिनाथ के ९० हजार क्रोड सागरोपम के बाद मोक्ष पधारे।

7 श्री सुपार्श्वनाथ स्वामीजी :

आपने नदीषेण के पूर्वभव मे तीर्थकर नामकर्म का उपार्जन कर वहा के आयु को पूर्णकर ग्रैवेयक का सुख भोगकर काशी की राजधानी वाराणसी के प्रतिष्ठित राजा की पृथ्वी राणी की कुक्षि मे भादवा बदी ९ को उत्पन्न हुये। १४ स्वप्न के साथ ९ फण वाले नाग की शैय्या पर आपने सोती देखी। गर्भ काल पूर्ण होने पर जेठ सुदी १२ को जन्म लिया। देवो द्वारा जन्माभिषेक के साथ स्वप्न के आधार पर सुपार्श्व नाम रखा। यौवनावस्था मे विवाह के बाद राज्याभिषेक हुआ। १४ लाख पूर्व, २० पूर्वांग तक राज्य करने के बाद लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर जेठ सुदी १३ को जयति शिविका मे आरूढ होकर सहसाम्र उद्यान मे १ हजार पुरुषो के साथ दीक्षा ग्रहण कर मन पर्यय ज्ञान प्राप्त किया। दूसरे दिन पाटली खण्ड के राजा महेन्द्र के यहा परमान्न (खीर) का पारणा करके ९ महिने बाद फाल्गुन सुदी ६ को दीक्षा स्थल पर ही केवलज्ञान प्राप्त किया। देवो द्वारा समोशरण की रचना करने पर धर्मदेशना देकर चार तीर्थ की स्थापना की।

आपके तीर्थ मे ३ लाख साधु, ४ लाख तीस हजार साध्वी, २ लाख ५० हजार श्रावक, ४

लाख ९३ हजार श्राविकाए एव विधर्म आदि ९५ गणधर हुये। ११ हजार केवलज्ञानी, ९१५० मन पर्ययज्ञानी, ९ हजार अवधिज्ञानी, ३ हजार ३० चौदह पूर्वधर हुए। कुल २० लाख पूर्व का आयु पूर्णकर फाल्गुन सुदी ७ को श्री पद्मप्रभ स्वामी के ९ हजार क्रोड सागरोपम बाद ५०० मुनियो के साथ समवेत शिखर पर मोक्ष पधारे।

8. श्री चन्द्रप्रभु स्वामी :

आपने धातकी खण्ड के पूर्वविदेह की मगलावती विजय की रत्न सचया नगरी के राजा पद्म के भव में युगन्धर आचार्य के भव मे दीक्षा ग्रहण की एव जिननाम कर्म का उपार्जन कर वैजयन्त विमान का ३२ सागरोपम का सुख भोगकर चैत्र बदी ५ को चद्रानगरी के राजा महासेन की महारानी लक्ष्मणा की कुक्षि मे उत्पन्न हुये। चौदह स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण करके पोष सुदी १२ को जन्मे। देवो द्वारा जन्माभिषेक के साथ चद्रपान के स्वप्न के आधार पर चद्रप्रभ नाम रखा। यौवनावस्था मे विवाह के बाद राज्याभिषेक हुआ। ६ लाख पूर्व २४ पूर्वांग तक राज्य करने के बाद लोकातिक देवो के आग्रह पूर्वक वर्षीदान देकर पोष बदी १३ को अपराजित शिविका पर आरूढ होकर सहसाम्र वन मे हजार पुरुषो के साथ दीक्षा ग्रहण की। मन पर्यय ज्ञान प्राप्त कर पद्म खण्ड के राजा सोमदत्त के यहा परमान्न से पारणा करके ३ महिने बाद दीक्षा ली। उसी स्थान पर केवलज्ञान की प्राप्ति की। देवो द्वारा समोशरण की रचना करने पर धर्म देशना देकर चार तीर्थ स्थापित किये। आपका देहमान १५० धनुष था।

आपके शासन मे २५ हजार साधु, ३८ हजार साध्वी, २५ लाख श्रावक, ४९ लाख १ हजार श्राविकाये हुई। १० हजार केवलज्ञानी, ४ हजार मन पर्यय ज्ञानी, ८ हजार अवधिज्ञानी, २ हजार १४ पूर्वधर हुए और सुपार्श्वनाथ भगवान के मोक्ष के ९ सौ कोटि सागरोपम बाद मोक्ष पधारे।

9. श्री सुविधिनाथजी स्वामी ·

आपने अर्द्धपुष्कर द्वीप के पूर्व विदेह की पुष्कलावती विजय मे पुण्डरी कीणी नगरी के महापद्म राजा के भव मे जगन्नद स्थविर के पास सयम ग्रहण कर जिननाम कर्म का उपार्जन कर वहा से वैजयन्त विमान का देवसुख भोगकर फाल्गुन वदी ९ को काकदी नगरी के राजा सुग्रीव की महारानी रामा की कुक्षि मे उत्पन्न हुए। १४ महास्वप्न के साथ गर्भकाल पूरा कर मिगसर बदी ५ को मूल नक्षत्र के योग मे जन्म लिया। देवो द्वारा जन्माभिषेक के बाद पुष्प शैय्या के स्वप्न के आधार सुविधि कुमार पुष्पदत दोनो नाम रखे। यौवनावस्था मे विवाह सम्पन्न हुआ। राज्याभिषेक के बाद ५० हजार पूर्व ओर २८ पूर्वांग तक राज्य किया। फिर लोकातिक देवो के आग्रह पर वर्षीदान देकर माघ वदी ६ को अकण शिविकारूढ होकर सहसाम्र उद्यान मे एक हजार पुरुषो के साथ प्रवर्जित होकर मन पर्यय ज्ञान की प्राप्ति की। श्वेतपुर के राजा पुष्प के यहां परमान्न (खीर) से बेले का पारणा करके विहार किया। पुन चार महिने की साधना करके उसी दीक्षा स्थल पर केवल्य ज्ञान प्राप्त किया। देवो द्वारा समोशरण की

रचना करने पर धर्म देशना देकर ४ तीर्थ स्थापित किये।

आपके शासन मे २ लाख साधु, एक लाख २० हजार साध्वी, २ लाख २९ हजार श्रावक, ४ लाख ७१ हजार श्राविकाये हुई जिनके वराह प्रमुख ८८ गण व गणधर हुए। ७५०० केवली, ७५०० मन पर्ययज्ञानी, ८४०० अवधि ज्ञानी, १५०० चोदह पूर्वधर, १३ हजार वैक्रिय लब्धिधर, ६ हजार चर्चावादी हुए। आयुकर्म का निकट क्षय जानकर एक हजार मुनियो के साथ समवेत् शिखर पर १ मास के अनशन के साथ कार्तिक बदी ९ को मोक्ष पधारे। उसके कुछ समय वाद श्रमण धर्म का विच्छेद किया।

10. श्री शीतलनाथजी स्वामी :

अर्द्धपुष्कर द्वीप की वज्र विजय की सुसीमा नगरी के राजा पद्मोत्तर ने अस्ताप नाम के आचार्य के पास दीक्षा ग्रहण करके उत्कृष्ट परिणामो से जिननाम कर्म का उपार्जन करके वहा का आयु पूर्ण करके प्राणत देवलोक मे उत्पन्न हुए और वहा से भरत क्षेत्र मे भद्दिलपुर नगर के दृढरथ राजा की नदा रानी की कुक्षि मे वैशाख कृष्णा ६ को, १४ शुभ स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर श्रीवत्स के लाछन सहित माघकृष्णा १२ को जन्म लिया। इन्द्रो द्वारा जन्माभिषेक के साथ ही राजा दृढरथ के भयकर द्राह ज्वर मे गर्भवती महारानी के स्पर्श से परम शीतलता का अनुभव हुआ जिसके फलस्वरूप आपका शीतलकुमार नाम रखा। यौवनावस्था मे अनेक राजकुमारियो से विवाह सपन्न हुआ। दृढरथ नृप ने आपका राज्याभिषेक कर दीक्षा ग्रहण करली। आपने ५ हजार वर्ष राज्य करके लोकातिक देवो के आग्रह पर वर्षीदान देकर माघकृष्णा १२ को चद्रप्रभा नामक शिविकारूढ होकर सहसाम्र उद्यान मे एक हजार पुरुषो के साथ दीक्षा ग्रहण की। तीसरे दिन रिष्ट नगर के राजा पुर्नवस्तु के यहा बेले का परमान्न (खीर) से पारणाकर तीन महिने तक छद्मस्थ अवस्था मे विचरण करते हुए पुन दीक्षा स्थल पर पोष बदी ९मी के दिन केवलज्ञान को प्राप्त हुए।

देवो ने समोशरण की रचना की देशना को श्रवण करके एक लाख मुनि, एक लाख ४ हजार साध्वी, दो लाख, ८९ हजार श्रावक ४ लाख ५८ हजार श्राविकाये रूप चतुर्विध सघ बना। ८१ गण व गणधर बने। ७ हजार केवलज्ञानी, ७ हजार पाच सौ मन पर्यय ज्ञानी, सात हजार २ सौ अवधिज्ञानी १४ सौ १४ पूर्वधर, १२सौ वैक्रिय लब्धिधर, ५८ सौ चर्चावादी हुए। कुल १ लाख पूर्व का आयुष्य पूर्ण कर भ सुविधिनाथ के ९ क्रोड सागरोपम बाद मोक्ष पधारे।

11. श्री श्रेयांसनाथ स्वामी :

पुष्करार्धद्वीप के पूर्वविदेह मे कच्छ विजय की क्षेमा नगरी के नलिनी गुप्त राजा वज्रदत मुनि के पास दीक्षा ग्रहण करके तीर्थकर नामकर्म का उपार्जन कर महाशुक्र विमान मे देव बने और वहा से भरत क्षेत्र के सिहपुर नगर मे विष्णु राजा की विष्णु रानी की कुक्षि मे जेठ बदी ९ को चवकर आये। १४ स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण कर भादवा बदी १२ को, गैंडे के चिन्ह व स्वर्ण वर्ण वाले पुत्र को जन्म

दिया। देवो द्वारा जन्माभिषेक के बाद श्रेयास नाम दिया। यौवनवय और ८० धनुष के देहमान के साथ अनेक राजकुमारियो से विवाह सम्पन्न हुआ। २१ हजार वर्ष की वय मे राज्याभिषेक हुआ। ४२ लाख वर्ष राज्य करने के बाद लोकातिक देवो के आग्रह के वर्षीदान देकर विमलप्रभा शिविकारूढ हो फाल्गुण बदी १३ को १ हजार राजाओ के साथ सयम ग्रहण किया। मन पर्यय ज्ञान की प्राप्ति के साथ तीसरे दिन सिद्धार्थ नगर के नदराजा के यहा परमान्न (खीर) से पारणा करके दो मास बाद दीक्षास्थल पर ही वैशाख बदी अमावस को केवलज्ञान प्राप्त किया। देवो द्वारा समोशरण की रचना के पश्चात् धर्मदेशना देकर चार तीर्थ की स्थापना की। आपके तीर्थ मे गोधूम आदि ७६ गणधर, ८४ हजार साधु, १ लाख ३० हजार साध्वी, २ लाख ७८ हजार श्रावक, ४ लाख ४८ हजार श्राविकाये हुई। उनमे से ६ हजार पाच सो केवली, ६ हजार मन पर्यय ज्ञानी, ६ हजार अवधिज्ञानी, ३ सौ १४ पूर्वधर, १ हजार वैक्रिय लब्धिधर, पाच हजार चर्चावादी हुए। कुल ८४ लाख वर्ष का आयु पूर्ण कर समवेत शिखर पर १ हजार मुनियो के साथ श्रावण वदी ३ को शीतलनाथ के ६६ लाख ३६ हजार सागरोपम कम एक कोटि सागरोपम बाद मोक्ष पधारे।

12. श्री वासुपूज्य स्वामी :

पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व विदेह मे मगलावती विजय थी। उसकी रत्न सचया नगरी के पद्मोत्तर राजा के वज्रनाभ मुनि के पास सयम ग्रहण करके जिन नाम कर्म का उपार्जन कर वहा से प्राणत देवलोक मे उत्पन्न हुए और वहा ज्येष्ठ शुक्ला ९ को चवकर भरत क्षेत्र की चपा नगरी के राजा वसु की महारानी जया की कुक्षि मे आये। १४ महास्वप्न के साथ गर्भ काल पूर्ण कर फाल्गुन वदी १४ को रक्त वर्ण एव महिष लाछन के युक्त पुत्र रूप मे जन्म हुआ। देवो द्वारा जन्माभिषेक के साथ वासुपूज्य नाम रखा। यौवनावस्था मे ७० धनुष के देहमान मे लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर फाल्गुन बदी अमावश्या के पृथ्वी नामका शिविकारूढ हो छ सौ राजाओ के साथ दीक्षा ग्रहण की। मन पर्ययज्ञान की प्राप्ति के साथ दूसरे दिन महापुर के राजा सुनद के घर खीर (परमान्न) से पारणा कर १ मास बाद उसी दीक्षा स्थल पर चेत्र सुदी २ को केवल ज्ञान प्राप्त किया।

देवो द्वारा समोशरण की रचना होने पर धर्मदेशना दी। सुधर्मादि ६६ गणधर, ७२ हजार साधु, १ लाख साध्वी, २ लाख १५ हजार श्रावक, ४ लाख ३६ हजार श्राविकाये रूप चतुर्विध सघ वना। उनमे से ६ हजार केवलज्ञानी, ६ हजार एक सौ मन पर्यय ज्ञानी, ५५ सौ अवधि ज्ञानी, १२ सो चोदह पूर्वधर, दस हजार वैक्रिय लब्धिधर, ४७ सो वादी हुए कुल ६२ लाख वर्ष का आयु पूर्ण कर ६ सो मुनियो के साथ चपा नगरी मे १ मास में अनशन के साथ श्रेयासनाथ भगवान के ५४ सागरोपम वाद मोक्ष पधारे।

13 **श्री विमलनाथ स्वामी .**

घातकी खड के प्रागविदेह मे भरत विजय की महापुरी नगरी के पद्मसेन राजा ने सर्वगुप्त आचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर जिननाम के उपार्जन के साथ सहस्रार देवलोक मे उत्पन्न हुए। वहा से वैशाख सुदी १२ को चवकर जबूद्वीप के भरतक्षेत्र मे कपिलपुर के राजा कृतवर्मा की महारानी श्यामा की कुक्षि मे उत्पन्न हुए। चौदह दिव्य स्वप्न–दर्शन के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर माघ शुक्ला तृतीया की मध्य रात्रि को सुवर्ण वर्ण एव शूकर के चिन्ह से युक्त पुत्र रूप मे जन्म लिया। देवो द्वारा जन्माभिषेक पश्चात् विमल कुमार नाम दिया। योवनावस्था मे अनेक राजकुमारियो के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। उस समय आपका ६० धनुष का देहमान था। राज्याभिषेक के साथ ३० लाख वर्ष राज्य करके लोकातिक देवो के आग्रह पर वर्षीदान देकर माघ सुदी १४ को देवदत्त शिविकारूढ हो १ हजार पुरुषो के साथ सहसाम्र उद्यान मे सयम ग्रहण किया। मन पर्ययज्ञान की प्राप्ति के साथ तीसरे दिन धान्यपुर नगर के राजा जय के यहीं खीर (परमान्न) से पारणा करके दो वर्ष बाद दीक्षा स्थल पर ही पोष सुदी ६ के दिन केवलज्ञान प्राप्त किया।

देवो द्वारा समोशरण की रचना होने पर धर्म देशना दी। आपके शासनकाल मे मथर आदि ५७ गणधर, ६८ हजार साधु, १ लाख ८ सौ साध्विये, २ लाख ८ हजार श्रावक, ४ लाख ३४ हजार श्राविकाये रूप चतुर्विध सघ हुआ। उनमे से ५५ सौ केवलज्ञानी, ५५ सौ मन पर्ययज्ञानी, ४८ सो अवधिज्ञानी, १२ सौ पूर्वधर, ९ हजार वैक्रिय लब्धिधर हुये। कुल ६० लाख वर्ष का आयु पूर्णकर वासुपूज्य स्वामी के ३ लाख सागरोपम बाद ६ हजार साधुओ के साथ आषाढ बदी ७ को समवेत् शिखर पर मोक्ष पधारे।

14. **श्री अनंतनाथ स्वामी :**

घातकी खड के महाविदेह की ऐरावत विजय मे अरिष्ठा नगरी के राजा पद्मरथ ने जिनरक्षक आचार्य के पास दीक्षा ग्रहण करके जिननाम कर्म का उपार्जन कर प्राणत स्वर्ग मे गये एव वहा से चवकर अयोध्या नगरी के राजा सिहसेन की महारानी सुयशा की कुक्षि मे श्रावण बदी ७ को आये। चौदह महास्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर वैशाख बदी १३ को स्वर्ण वर्ण बाज लक्षण से युक्त पुत्र रूप मे जन्म लिया। इन्द्रो के जन्मोत्सव बाद नाम अनत कुमार रखा। यौवनावस्था मे अनेक राजकन्याओ के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। आपका देहमान ५० धनुष था। राज्याभिषेक के बाद १५ लाख वर्ष तक राज्य करने के बाद लोकातिक देवो के आग्रह पर वर्षीदान देकर वैशाख सुदी १४ को सागरदत्त शिविकारूढ हो १ हजार पुरुषो के साथ सहसाम्र उद्यान मे बेले के तप के साथ देव दूष्य वस्त्र धारण कर दीक्षा ग्रहण की। मन पर्ययज्ञान प्राप्ति के साथ तीसरे दिन विजय नगर के राजा विजयसेन के यहा खीर से पारणा करके तीन वर्ष बाद दीक्षा स्थान पर ही वैशाख वदी १४ को केवलज्ञान प्राप्त किया।

देवो द्वारा समोशरण की रचना होने पर धर्म देशना दी एव चतुर्विध सघ की स्थापना की। आपके शासन मे यश आदि ५० गणधर, ६६ हजार साधु, ६२ हजार साध्वी, २ लाख छ हजार श्रावक, ४ लाख १४ हजार श्राविकाये रूप चतुर्विध सघ हुआ। ५ हजार केवली, ४५ सो मन पर्ययज्ञानी, ४३ सौ अवधिज्ञानी, ८ हजार वैक्रिय लब्धिधर, ३२ सौ वादी हुए। कुल ३० लाख वर्ष का आयु पूर्ण कर चैत्र शुक्ला ५ को विमलनाथ भगवान के ७ सागरोपम बाद मोक्ष पधारे।

15. श्री धर्मनाथजी :

घातकी खण्ड के पूर्वविदेह की भरत विजय के भद्दिलपुर के राजा दृढरथ ने विमल वाहन मुनि से सयम ग्रहण कर जिननाम कर्म के उपार्जन के साथ विजय विमान में उत्पन्न हुये और वहा का आयु पूर्णकर वैशाख सुदी ७ को चवकर रत्नपुर नगर के भानुराजा की महारानी सुव्रता की कुक्षि मे उत्पन्न हुये। चौदह स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर बिजू चिन्ह व स्वर्ण प्रभा सी देह मे माघ सुदी ३ को जन्मे। देवो द्वारा जन्माभिषेक के साथ धर्मकुमार नाम रखा। यौवनावस्था मे ४५ धनुष का देहमान और अनेक राजकुमारियो के साथ विवाह सम्पन्न होने के पश्चात् राज्याभिषेक के साथ ५ हजार वर्ष राज्य व्यवस्था सभाली। लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर माघ सुदी १३ को नागदत्त शिविका पर आरूढ होकर १ हजार राजाओ के साथ वप्र काचन उद्यान मे दीर्घवर्ण वृक्ष के नीचे देव दूष्य वस्त्र धारण कर पचमुष्ठि लोच करके सयम ग्रहण किया। मन पर्ययज्ञान प्राप्तकर शोभनपुर के राजा धर्मसिह के यहा खीर (परमान्न) से बेले का पारणा करके दो वर्ष की साधना के बाद दीक्षास्थल पर पोष सुदी १५ को केवलज्ञान प्राप्त किया।

देवो द्वारा समोशरण की रचना होने पर धर्म देशना देकर चतुर्विध सघ की स्थापना की। आपके शासन काल मे अरिष्ठ आदि ४५ गणधर, ६४ हजार साधु, ६२ हजार चार सौ साध्वी, २ लाख ४० हजार श्रावक, ४ लाख १३ हजार श्राविका रूप चतुर्विध सघ केवली ४५ सो मन पर्ययज्ञानी ३६ सौ, अवधिज्ञानी, ७ हजार वैक्रिय लब्धिधर ९ सौ १४ पूर्वधर, १८ सौ प्रतिवादी हुए। आपसे पुरुष सिह वासुदेव ने सम्यक्त्व व बलदेव ने १२ व्रत धारण किये। कुल १० लाख वर्ष का आयु पूर्ण करके आठ सो मुनिया के साथ जेठ सुदी ५ को अनतनाथ भगवान के ४ सागरोपम बाद समवेत शिखर पर मोक्ष पधारे।

16. श्री शांतिनाथ भगवान :

जबूद्वीप के महाविदेह की पुष्कलावती विजय की पुण्डरीकिणी नगरी के राजा धनरथ की प्रियवती और भोगवती दो रानिया थीं। ग्रैवेयक का आयु पूर्ण करके वज्रायुध का जीव प्रियवती की कुक्षि मे मेघ के दोहले के साथ उत्पन्न हुआ। उसका नाम मेघरथ रखा। योवनवय मे सुमदिरपुर के राजा निहित शत्रु की पुत्रियो–प्रियमित्रा और मनोरमा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। प्रियमित्रा के जो पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम नदीषेण रखा।

धनरथ नृप की दूसरी रानी मनोरमा की कुक्षि से सहस्रायुध पुत्र रूप से जन्मा जिसका नाम दृढरथ रखा। उसके पुत्र का नाम रथसेन रखा। लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान पूर्वक पुत्र मेघरथ को राजा व दृढरथ को युवराज बनाकर दीक्षा ग्रहण कर ली। केवलज्ञान की प्राप्ति के बाद चार तीर्थ की स्थापना की।

राजा मेघरथ की धार्मिक भावना की महिमा देव सभा मे गाई जाने लगी जिसकी परीक्षा हेतु दो देवो ने बाज व कबूतर का रूप धारण किया। कबूतर थर–थर कापता हुआ राजा की गोद मे बैठ गया। इतने मे बाज भी आकर झपटने लगा। राजा ने कबूतर की रक्षा की। उसे ललकारा तब वह बोला– मैं मासाहारी हू। यह मेरा भक्ष मुझे मिलना चाहिये। राजा ने कहा– मैं अपना मास देकर तेरी तृप्ति कर देता हू लेकिन इसे नहीं मारने दूगा। यह कहकर राजा बाज को एक पलडे मे बिठाकर दूसरे पलडे मे अपना मास काट–काट कर रखने लगा। यह उत्कृष्ट दयाभाव देख दोनो असली रूप मे प्रगट होकर उनकी महिमा गाने लगे।

इसी प्रकार आप तेले के तप मे पौषधशाला मे ध्यानस्थ बैठे थे। विमान मे जाते इन्द्र ने नमस्कार करके इन्द्राणी को बताया कि ये १६वे तीर्थकर होगे। इनकी ध्यान साधना अडोल है। यह सुनकर इन्द्राणी सुरूपा प्रतिरूपा ने उनको विचलित करने हेतु कई अनुकूल, प्रतिकूल उपसर्ग दिये। आखिर असफल होकर क्षमायाचना करके अपने स्थान गई। एकबार तीर्थकर धनरथ का समोशरण लगा। आपके उपदेश से मेघरथ व दृढरथ दोनों ने ससार से विरक्त बनकर अपने ७०० पुत्रो और ४ हजार राजाओ के साथ दीक्षा ग्रहण की। मुनि मेघ ने जिननाम कर्म का उपार्जन कर आयु पूर्ण करके सर्वार्थ सिद्ध विमान मे जन्म लिया और वहा से भाद्रपद कृष्णा ७ को चवकर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे हस्तिनापुर के राजा विश्वसेन की महारानी अचिरा की कुक्षि मे उत्पन्न हुआ। १४ महास्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर जेठ बदी १३ को जन्म लिया। गर्भावस्था मे महामारी की भयकरता से पीडित जनता की शाति हेतु रानीजी के महल की छत पर चढकर करुणार्द्र दृष्टि प्रसार कर सारी जनता को रोग से मुक्ति मिली। उससे आपका नाम भी शातिनाथ रखा। यौवनावस्था मे विवाह सम्पन्न कर राजा विश्व सेन ने आपका राज्याभिषेक करके दीक्षा ग्रहण कर ली।

कुछ समय बाद चक्रवर्ती पद सूचक १४ रत्ननिधान मे उत्पन्न हुये जिसके फलस्वरूप छ खण्ड जीतकर चक्रवर्ती बने। लोकातिक देवो के आग्रह पर वर्षीदान देकर अपने पुत्र चक्रायुध को राज्य देकर एक हजार पुरुषो को साथ लेकर जेठ सुदी १४ को दीक्षा ग्रहण कर मन पर्ययज्ञान की प्राप्ति के बाद दूसरे दिन मदिरपुर के राजा सुमित्र के यहा खीर (परमान्न) से पारणा करके एक वर्ष बाद पोषसुदी ५ को दीक्षा स्थल पुन पधारे। तब पोष सुदी ५ को केवलज्ञान प्राप्त किया।

देवो द्वारा समोशरण की रचना होने पर देशना प्रदान की जिसको श्रवण कर चक्रायुध ने अपने पुत्र कुल चन्द को राज्य सौपकर ३५० व्यक्तियो के साथ दीक्षा ग्रहण की। चक्रायुध प्रमुख ३५

गणधर, ६२ हजार साधु, ६१ हजार ६ सौ साध्वी, दो लाख ७० हजार श्रावक, ३ लाख ९३ हजार श्राविका रूप चतुर्विध सघ बना उसमे से ४३ सौ केवली ३ हजार अवधिज्ञानी, ४ हजार मन पर्ययज्ञानी, ७ सौ १४ पूर्वधर, ६ हजार वैक्रिय लब्धिधर, २४ सौ प्रतिवादी हुए।

कुल १ लाख वर्ष का आयु पूर्णकर धर्मनाथ भगवान के बाद पौष पल्योपम कम ३ सागरोपम बाद स्वर्णकातिमय ४० धनुष का देहमान छोडकर ९०० मुनियो के साथ एक मास के अनशनपूर्वक जेठ बदी १३ को मोक्ष पधारे।

17. कुंथुनाथजी :

जबूद्वीप के पूर्व विदेह के आवृत्त विजय की खगी नगरी के राजा सिहावद ने सवराचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर जिननामकर्म का उपार्जन करके सर्वार्थसिद्ध विमान मे उत्पन्न हुए। वहा से हस्तिनापुर के राजा शूरसेन की महारानी श्रीदेवी की कुक्षि मे श्रावण बदी ९ को चवकर आये। १४ दिव्य स्वप्न दर्शन के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर अजगर के चिन्ह स्वर्ण कातिमय पुत्र रूप मे वैशाख बदी १४ को जन्म लिया। देवो द्वारा जन्माभिषेक के बाद कुथुकुमार नाम रखा। यौवनावस्था मे शादी के बाद राज्याभिषेक हुआ और आयुधशाला आदि से चक्र आदि १४ रत्न उत्पन्न हुये जिसके सहयोग से छ खण्ड जीतकर चक्रवर्ती बने। २३७५० वर्ष बाद लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर वैशाखवदी ५ को शिविकारूढ हो एक हजार राजाओ के साथ दीक्षित हुये। मन पर्ययज्ञान की प्राप्ति के साथ चक्रपुर के राजा व्याघ्रसिह के यहा बेले के तप का खीर (परमान्न) से पारणा कर १६ वर्ष बाद विचरण कर दीक्षास्थल पर ही चैत्र बदी १३ को बेले के तप मे केवलज्ञान प्राप्त किया।

देवो द्वारा समोशरण की रचना करने पर धर्मदेशना दी जिसको श्रवण कर स्वयभू आदि ३५ गणधर, ६० हजार साधु, ६० हजार छ सौ साध्वी, १७९ हजार श्रावक, ३ लाख ८१ हजार श्राविका रूप चतुर्विध सघ बना। उनमे से ३२ हजार केवली, ३ हजार ३ सौ ४० मन पर्ययज्ञानी, २५ सौ अवधिज्ञानी, ६७० चौदह पूर्वधर, ५१ सौ वैक्रिय लब्धिधर, दो हजार प्रतिवादी हुये।

कुल ९५ हजार वर्ष का आयु पूर्ण कर भ शातिनाथजी के पश्चात् अर्द्ध पल्योपम बाद १ हजार मुनियो के साथ समवेत शिखर पर १ मास के सथारा सहित ३५ धनुष के देहमान को छोडकर वैशाखबदी १ को मोक्ष पधारे।

18 श्री अरहनाथजी :

जबूद्वीप के पूर्वविदेह की सुषमा नगरी के धनपति राजा ने सवराचार्य के पास दीक्षा ग्रहण करके जिननाम कर्म का उपार्जन करके ग्रैवेयक मे उत्पन्न हुये। वहा फाल्गुण सुदी २ को चवकर हस्तिनापुर के राजा सुदर्शन की महारानी महादेवी की कुक्षि मे आये। चोदह स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर नदावर्त चिन्ह के स्वर्णप्रभा युक्त पुत्र के रूप मे मिगसर सुदी १० को जन्म लिया। देवो द्वारा

जन्माभिषेक होने पर अरहकुमार नाम रखा। यौवनावस्था मे अनेक राजकुमारियो से विवाह सम्पन्न हुआ। राज्याभिषेक के बाद आयुधशाला मे १४ रत्न उत्पन्न हुए जिनके सहयोग से छ खण्ड जीतकर २१ हजार वर्ष तक चक्रवर्ती पद का भोग किया। बाद मे लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर अनेक पुरुषो के साथ शिविकारूढ हो उद्यान मे पधारे। माघ सुदी ११ को पचमुष्ठि लोचकर देवदूष्य वस्त्र धारण करके दीक्षा ग्रहण की। मन पर्ययज्ञान के पश्चात् राजगृही के अपराजित नृप के घर खीर (परमान्न) से पारणा करके ३ वर्ष बाद पुन दीक्षा स्थल पर पधारे और कार्तिक सुदी १२ को केवलज्ञान की प्रप्ति हुई।

देवो द्वारा समोशरण की रचना होने पर धर्मदेशना प्रदान की जिसको श्रवण करके कुभ आदि ३३ गणधर, ५० हजार साधु, ६० हजार साध्वी, १ लाख ८४ हजार श्रावक, ३ लाख ६२ हजार श्राविकावे, २८ सौ केवली, २५ सौ ५१ मन पर्ययज्ञानी, २६ सौ अवधिज्ञानी, ६१० चौदह पूर्वधर, ७४ सौ वैक्रिय लब्धिधर, १६ सौ प्रतिवादी हुये। कुल ८४ हजार वर्ष का आयु पूर्ण कर एक हजार मुनियो के साथ समवेत शिखर पर एक मास के सथारे सहित कुथुनाथजी के हजार क्रोड वर्ष कम पल्योपम के चतुर्थ भाग मे मिगसर सुदी १० को ३० धनुष की देहमान को छोडकर मोक्ष पधारे।

19. श्री मल्लिनाथजी :

जबूद्वीप के महाविदेह की सलिलावती की वीतशोका नगरी के राजा बल की महारानी धारिणी पुत्र महाबल का विवाह ५०० राजकुमारियो के साथ हुआ। युवराज महाबल के साथ अचल धरण पूरण वसु वैश्रमण से अभिचन्द्र सदा साथ रहते थे। राजा बल ने धर्मघोष आचार्य के पास दीक्षा ग्रहण की। महाबल राजा बने। आपके पुत्र बलभद्र हुआ। उसका राजयाभिषेक कर अपने छ मित्रो के साथ आचार्य धर्मघोष के पास दीक्षा ग्रहण की। सब उत्कृष्ट तपाराधन करने लगे लेकिन महाबल कपट पूर्वक उनके पारणे के दिन आगे तपकर लेते जिससे उन्होने स्त्रीवेद का बधन कर दिया। साथ ही २० बोलो का आराधन करके जिननाम कर्म का उपार्जन कर अनुत्तर विमान वासी देव बने। मित्र ३२ सागरीया देव बने। वहा का आयु पूर्ण करके अचल का जीव प्रतिबुद्ध नाम का राजा बना। धरण का जीव चद नाम का राजा बना। पूरण का जीव रूपम नाम का राजा बना। वसु का जीव शख नाम का राजा बना। वैश्रमण का जीव अदीन शत्रु राजा बना और अभिचन्द्र का जीव जितशत्रु नाम का राजा बना और महाबल का जीव अनुत्तर विमान का आयु पूर्ण करके फाल्गुण कृष्णा ४ को चवकर मिथिला नगरी के राजा कुभ की महारानी प्रभावती की कुक्षि मे उत्पन्न हुये। १४ स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर मिगसर सुदी ११ को पुत्री रूप मे जन्मे। देवो द्वारा जन्माभिषेक के साथ फूलो की माला के दोहद के कारण मल्लिनाथ रखा। यौवनावस्था मे एक मोहनगृह का निर्माण कर उसमे अपनी आकृति की एक पोली स्वर्ण प्रतिमा का निर्माण कराकर उसके सिर के ढक्कन से प्रतिदिन अपने भोजन का एक ग्रास कसने लगी। पूर्वभव की प्रीति के कारण मल्लि कुमारी के साथ विवाह करने हेतु छ ही

राजाओ ने अपने–अपने दूत कुभ राजा के पास भेज दिये। राजा कुभ घब
आमत्रण देकर मोहन मदिर मे ठहरा दिया। सब उस प्रतिमा को साक्षात्
आसक्ति दिखाने लगे। इधर मौका देखकर उस पुतली का ढक्कन खोल
मदिर मे दुर्गंध व्याप्त हो गई। जिससे सब घबराने लगे। उसी समय अवस
शरीर के प्रति उद्बोधन देकर जीवन को सार्थक करने हेतु उद्बोधित वि

लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर मनोरमा शिविकारूढ
के एव राजकुमारो के साथ दीक्षा ग्रहण कर ली और मन पर्ययज्ञान के सा
केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया। देवो द्वारा समोशरण की रचना हुई। आपने
कर ६ मित्रो के साथ ही ४० हजार साधु, बधुमती आदि ५५ हजार साध्विए,
३ लाख ६५ हजार श्राविकाये रूप चतुर्विध सघ हुआ। भिषक आदि २८ ग
हजार वर्ष का आयु पूर्ण कर फाल्गुन सुदी १२ के दिन आभ्यन्तर परिषद
परिषद के ५०० साधुओ के साथ भगवान अरहनाथ के बाद फाल्गुण सुदि

20. श्री मुनिसुव्रत स्वामी :

जबूद्वीप के अपर विदेह की भरत विजय की चपानगरी के सुश्रेष्ठ
दीक्षा ग्रहण करके जिननाम का उपार्जन करके प्राणत स्वर्ग मे गये और व
पूर्णिमा को चवकर राजगृही नगरी के सुमित्र राजा की पद्मावती रानी क
स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर कूर्म लक्षण एव श्यामवर्ण पुत्र रूप
दिया। देवो द्वारा जन्माभिषेक के बाद मुनिसुव्रत कुमार नाम रखा। यौवना
करने के बाद लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर अपराजित
उद्यान पधारे और फाल्गुन सुदी १२ को १ हजार व्यक्तियो के साथ दीक्षा
प्राप्त कर राजगृही के ब्रह्मदत राजा के यहा बेले का खीर से पारणा करन
स्थान पर पधारे। और फाल्गुन बदी १२ को केवलज्ञान की प्राप्ति की। देव
होने पर धर्मदेशना दी।

जिसको श्रवण करके ३० हजार साधु, २० हजार साध्विये, ५०
हजार श्रावक, ३ लाख ५० हजार श्राविकाये रूप चतुर्विध सघ बना। उन
१५ सो मन पर्ययज्ञानी, १८ सौ अवधिज्ञानी, दो हजार वेक्रिय लब्धिधर, १२

21. श्री नेमिनाथ स्वामी :

जबूद्वीप के पश्चिम विदेह मे भरत विजय की कौशम्बी नगरी के राजा सिद्वार्थ ने सुदर्शन मुनि के पास दीक्षा ग्रहण कर तीर्थकर नामकर्म का उपार्जन करके अपराजित विमान के देव बने ओर वहा से आसोज सुदी १५ को मिथिला नगरी के राजा विजय की महारानी विप्रा की कुक्षि मे चवकर आये। चौदह स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण करके नीलकमल के चिन्ह व स्वर्ण प्रभा युक्त शरीर मे पुत्र रूप मे श्रावण बदी ८ को जन्मे। देवो द्वारा जन्माभिषेक के साथ नेमीकुमार नाम रखा गया। योवनास्था मे १५ धनुष के देहमान वाले नमी का अनेक राजकुमारियो से विवाह सम्पन्न हुआ। राज्याभिषेक के साथ ५ हजार वर्ष राज्य करने के बाद लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर आसाढ बदी ९ को देवकुल शिविकारूढ होकर एक हजार राजाओ के साथ दीक्षा ग्रहण की। मन पर्ययज्ञान की प्राप्ति के साथ वीरपुर के राजा दत्त के यहा खीर (परमान्न) से पारणा कर विचरण करते हुए ९ महिने बाद दीक्षा स्थल पर ही मिगसर सुदी ११ को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। देवो के समोशरण की रचना करने पर धर्मदेशना दी।

जिसको श्रवण कर कुभादि १७ गणधर, २० हजार साधु, ४१ हजार साध्विये, एक लाख ७० हजार श्रावक, ३ लाख ४८ हजार श्राविका रूप चतुर्विध सघ बना। जिसमे से १६ सौ केवलज्ञानी। १२०८ मन पर्ययज्ञानी, १६०० सौ अवधिज्ञानी, ५ हजार वैक्रिय लब्धिधर, १ हजार प्रतिवादी हुये। कुल १० हजार वर्ष का आयु पूर्ण कर १ हजार मुनियो के साथ समवेत शिखर पर १ महीने के अनशनपूर्वक वैशाख बदी १० को मुनिसुव्रत स्वामी के ६ लाख वर्ष बाद मोक्ष पधारे।

22. श्री अरिष्टनेमीनाथ स्वामी :

भरत क्षेत्र की हस्तिनापुरी नगरी के श्रीषेण राजा की श्रीमती राणी की कुक्षि से अपराजित मुनि का जीव देवलोक से चवकर आया। जन्म होने पर शख नाम रखा। इधर प्रीतिमति की जीव देवलोक से चवकर अगदेश की चपानगरी के राजा जितारी की महारानी की कुक्षि मे पुत्री रूप ले जन्मा। जिसका यशोमति नाम रखा। उसने पूर्व प्रीति से शख की प्रशसा सुनकर उसके साथ ही शादी का सकल्प कर दिया। विद्याधर मणिशेखर ने जब याचना की तो इच्छा पूर्ण नहीं होने पर उसका अपहरण कर दिया शख को मालूम पडते ही उसका पीछा करके एक पर्वत पर पकड लिया और उसको परास्त करके उससे विवाह कर लिया। उसकी वीरता को लखकर अनेक विद्याधरों ने अपनी कन्याओ का विवाह आपके साथ कर दिया। पूर्वभवो,के बधु शूर व क्षोभ भी आरण देवलोक से चवकर श्रीसेन के घर यशोधर व गुणधर रूप से अनुज बने। राजा श्रीसेन ने शख को राज्य सौप कर दीक्षा ग्रहण करली और कठोर तपाराधन करके केवली बन गये। यह शुभ सदेश पाकर राजा शख अपने भाइयो के साथ समोशरण मे पहुचा।

केवली भगवन्त ने उनके पूर्वभव का वृतान्त सुनाया और कहा कि तू पूर्व भव मे धन्यकुमार और यह धन्यवती नामक तेरी पत्नी थी। सौधर्म देवलोक मे भी तेरी मित्र बनी और विन्न गति के भव मे रत्ननाम की तेरी पत्नी बनी। और आरण देवलोक मे भी तेरी यह मित्र थी और इसी भव मे तेरी यह पत्नी बनी और इन सात भवो के साथ ही आगामी भव मे तुम अपराजित देवलोक मे उत्पन्न होकर वहा से भरत क्षेत्र मे अरिष्ठ नेमी नाम के २२वे तीर्थकर व यह राजमति बनकर तेरी अविवाहिता बनकर तेरे से पहले मोक्ष जायेगी।

इस प्रकार पूर्व भव का वृतात श्रवण कर अपने भाइयो के साथ दीक्षा ग्रहण करली ओर तीर्थकर नाम कर्म का उपार्जन कर अपने साथियो के साथ अपराजित स्वर्ग मे उत्पन्न हुये। वहा से यदुवश के राजा अधकवृष्णि और भोजवृष्णि जो सौर्यपुर व मथुरा के राजा थे। अधकवृष्णि के समुद्रविजय अक्षोमस्तिमित, हिमवान, अचल धरण, पूरण, अभिचद और वसुदेव ये दशाया दशारण हुआ। उनमे से सबसे छोटे पुत्र वसुदेव की रानी से ८ पुत्र पैदा हुए। जिनमे सातवे श्री कृष्ण और आठवे गजसुखमाल थे।

सबसे बडे पुत्र समुद्र विजय की शिवारानी उन्हीं कुक्षि मे शखराजा का जीव अपराजित स्वर्ग से कार्तिक बदी १२ को चवकर उत्पन्न हुआ। महारानी शिवादेवी ने चोदह स्वप्न देखे और गर्भकाल पूर्ण होने पर श्रावण सुदी ५ को शखचिन्ह व श्यामवर्ण से युक्त पुत्र को जन्म दिया। देवो ने जन्मोत्सव मनाया और अरिष्टनेमि नाम रखा।

यौवनावस्था मे आने पर एक बार जब आयुधशाला मे पहुचे तो वहा खडे पचजन्य शख को फूककर सारग धनुष को उठाकर छोड दिया और सुदर्शन चक्र को ज्यो ही घुमाने लगे तो चारो तरफ तहलका मच गया। स्वय श्रीकृष्ण घबराते हुए आयुधशाला मे पहुचे और अपने चचेरे भाई अरिष्टनेमी को देखते ही चितित हो उठे। उनके बल के परीक्षण हेतु परस्पर मलयुद्ध का प्रस्ताव रखा लेकिन आपने उसको टालते हुए कहा, आप अपना हाथ खडा कीजिये जब श्रीकृष्ण ने अपना हाथ खडा किया तो आपने उसको कच्ची टहनी की तरह नीचे झुका दिया। बाद मे अपना हाथ ऊचा करके श्रीकृष्ण को झुकाने को कहा लेकिन अपनी पूरी ताकत लगाने पर भी उसको हिला भी नहीं सके। यह देखकर तो और ज्यादा चितित रहने लगे और बल को कमजोर करने हेतु सत्यभामा आदि से योजना वनाकर भोजक वृष्णि के पुत्र उग्रसेनजी की पुत्री राजमती से विवाह निश्चय किया। धूमधाम से वारात रवाना होकर तोरणद्वार पर पहुची लेकिन ज्योही प्रभु की दृष्टि एक बाडे मे करुणा क्रन्दन करते हुए पशुओ पर पडी और यह मालूम पडा कि ये सब मेरी शादी मे आए मांस भोजी बरातियो के भोजनार्थ एकत्रित किये गये है, आपकी अतरात्मा प्रकम्पित हो उठी। सारथी को उन प्राणियो को मुक्त करने का आदेश कर रथ को पुन मुडवाकर सीधे शोर्यपुर आ गये।

इधर लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देना प्रारम कर दिया ओर श्रावण शुक्ला छठ को

21. श्री नेमिनाथ स्वामी :

जबूद्वीप के पश्चिम विदेह मे भरत विजय की कौशम्बी नगरी के राजा सिद्धार्थ ने सुदर्शन मुनि के पास दीक्षा ग्रहण कर तीर्थकर नामकर्म का उपार्जन करके अपराजित विमान के देव वने ओर वहा से आसोज सुदी १५ को मिथिला नगरी के राजा विजय की महारानी विप्रा की कुक्षि मे चवकर आये। चौदह स्वप्न के साथ गर्भकाल पूर्ण करके नीलकमल के चिन्ह व स्वर्ण प्रभा युक्त शरीर मे पुत्र रूप मे श्रावण बदी ८ को जन्मे। देवो द्वारा जन्माभिषेक के साथ नेमीकुमार नाम रखा गया। योवनास्था मे १५ धनुष के देहमान वाले नमी का अनेक राजकुमारियो से विवाह सम्पन्न हुआ। राज्याभिषेक के साथ ५ हजार वर्ष राज्य करने के बाद लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर आसाढ वदी ९ को देवकुल शिविकारूढ होकर एक हजार राजाओ के साथ दीक्षा ग्रहण की। मन पर्ययज्ञान की प्राप्ति के साथ वीरपुर के राजा दत्त के यहा खीर (परमान्न) से पारणा कर विचरण करते हुए ९ महिने बाद दीक्षा स्थल पर ही मिगसर सुदी ११ को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। देवो के समोशरण की रचना करने पर धर्मदेशना दी।

जिसको श्रवण कर कुभादि १७ गणधर, २० हजार साधु, ४१ हजार साध्विये, एक लाख ७० हजार श्रावक, ३ लाख ४८ हजार श्राविका रूप चतुर्विध सघ वना। जिसमे से १६ सो केवलज्ञानी। १२०८ मन पर्ययज्ञानी, १६०० सौ अवधिज्ञानी, ५ हजार वेक्रिय लब्धिधर, १ हजार प्रतिवादी हुये। कुल १० हजार वर्ष का आयु पूर्ण कर १ हजार मुनियो के साथ समवेत शिखर पर १ महीने के अनशनपूर्वक वैशाख बदी १० को मुनिसुव्रत स्वामी के ६ लाख वर्ष बाद मोक्ष पधारे।

22. श्री अरिष्टनेमीनाथ स्वामी :

भरत क्षेत्र की हस्तिनापुरी नगरी के श्रीषेण राजा की श्रीमती राणी की कुक्षि से अपराजित मुनि का जीव देवलोक से चवकर आया। जन्म होने पर शख नाम रखा। इधर प्रीतिमति की जीव देवलोक से चवकर अगदेश की चपानगरी के राजा जितारी की महारानी की कुक्षि मे पुत्री रूप ले जन्मा। जिसका यशोमति नाम रखा। उसने पूर्व प्रीति से शख की प्रशसा सुनकर उसके साथ ही शादी का सकल्प कर दिया। विद्याधर मणिशेखर ने जब याचना की तो इच्छा पूर्ण नहीं होने पर उसका अपहरण कर दिया शख को मालूम पडते ही उसका पीछा करके एक पर्वत पर पकड लिया और उसको परास्त करके उससे विवाह कर लिया। उसकी वीरता को लखकर अनेक विद्याधरो ने अपनी कन्याओ का विवाह आपके साथ कर दिया। पूर्वभवो, के बधु शूर व क्षोभ भी आरण देवलोक से चवकर श्रीसेन के घर यशोधर व गुणधर रूप से अनुज बने। राजा श्रीसेन ने शख को राज्य सौप कर दीक्षा ग्रहण करली और कठोर तपाराधन करके केवली बन गये। यह शुभ सदेश पाकर राजा शख अपने भाइयो के साथ समोशरण मे पहुचा।

केवली भगवन्त ने उनके पूर्वभव का वृतान्त सुनाया और कहा कि तू पूर्व भव मे धन्यकुमार और यह धन्यवती नामक तेरी पत्नी थी। सौधर्म देवलोक मे भी तेरी मित्र बनी और विन्न गति के भव मे रत्ननाम की तेरी पत्नी बनी। और आरण देवलोक मे भी तेरी यह मित्र थी और इसी भव मे तेरी यह पत्नी बनी और इन सात भवो के साथ ही आगामी भव मे तुम अपराजित देवलोक मे उत्पन्न होकर वहा से भरत क्षेत्र मे अरिष्ठ नेमी नाम के २२वे तीर्थकर व यह राजमति बनकर तेरी अविवाहिता बनकर तेरे से पहले मोक्ष जायेगी।

इस प्रकार पूर्व भव का वृतात श्रवण कर अपने भाइयो के साथ दीक्षा ग्रहण करली और तीर्थकर नाम कर्म का उपार्जन कर अपने साथियो के साथ अपराजित स्वर्ग मे उत्पन्न हुये। वहा से यदुवश के राजा अधकवृष्णि और भोजवृष्णि जो सौर्यपुर व मथुरा के राजा थे। अधकवृष्णि के समुद्रविजय अक्षोमस्तिमित, हिमवान, अचल धरण, पूरण, अभिचद और वसुदेव ये दशया दशारण हुआ। उनमे से सबसे छोटे पुत्र वसुदेव की रानी से ८ पुत्र पैदा हुए। जिनमे सातवे श्री कृष्ण और आठवे गजसुखमाल थे।

सबसे बडे पुत्र समुद्र विजय की शिवारानी उन्हीं कुक्षि मे शखराजा का जीव अपराजित स्वर्ग से कार्तिक बदी १२ को चवकर उत्पन्न हुआ। महारानी शिवादेवी ने चौदह स्वप्न देखे और गर्भकाल पूर्ण होने पर श्रावण सुदी ५ को शखचिन्ह व श्यामवर्ण से युक्त पुत्र को जन्म दिया। देवो ने जन्मोत्सव मनाया और अरिष्टनेमि नाम रखा।

यौवनावस्था मे आने पर एक बार जब आयुधशाला मे पहुचे तो वहा खडे पचजन्य शख को फूककर सारग धनुष को उठाकर छोड दिया और सुदर्शन चक्र को ज्यो ही घुमाने लगे तो चारो तरफ तहलका मच गया। स्वय श्रीकृष्ण घबराते हुए आयुधशाला मे पहुचे और अपने चचेरे भाई अरिष्टनेमी को देखते ही चिंतित हो उठे। उनके बल के परीक्षण हेतु परस्पर मलयुद्ध का प्रस्ताव रखा लेकिन आपने उसको टालते हुए कहा, आप अपना हाथ खडा कीजिये जब श्रीकृष्ण ने अपना हाथ खडा किया तो आपने उसको कच्ची टहनी की तरह नीचे झुका दिया। बाद मे अपना हाथ ऊचा करके श्रीकृष्ण को झुकाने को कहा लेकिन अपनी पूरी ताकत लगाने पर भी उसको हिला भी नहीं सके। यह देखकर तो और ज्यादा चिंतित रहने लगे और बल को कमजोर करने हेतु सत्यभामा आदि से योजना बनाकर भोजक वृष्णि के पुत्र उग्रसेनजी की पुत्री राजमती से विवाह निश्चय किया। धूमधाम से बारात रवाना होकर तोरणद्वार पर पहुची लेकिन ज्योही प्रभु की दृष्टि एक बाडे मे करुणा क्रन्दन करते हुए पशुओ पर पडी और यह मालूम पडा कि ये सब मेरी शादी मे आए मास भोजी बरातियो के भोजनार्थ एकत्रित किये गये हैं, आपकी अतरात्मा प्रकम्पित हो उठी। सारथी को उन प्राणियो को मुक्त करने का आदेश कर रथ को पुन मुडवाकर सीधे शौर्यपुर आ गये।

इधर लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देना प्रारभ कर दिया और श्रावण शुक्ला छठ को

उत्तरकुरू शिविकारूढ हो रथनेमि दृढनेमि आदि हजार पुरुषो के साथ उज्जयत पर्वत के पास सहसाम्र उद्यान मे पच मुष्टि लोच कर देवदूष्य वस्त्र धारण कर दीक्षा ग्रहण की और मन पर्ययज्ञान प्राप्त कर वरदत्त ब्राह्मण के यहा खीर (परमान्न) से वेले का पारणा करके विचरण करके ५४ दिन बाद पुन दीक्षा स्थान पर बेले के तप मे केवलज्ञान प्राप्त किया। देवो द्वारा समोशरण की रचना होने पर धर्म देशना दी।

जिसको श्रवण कर वरदत्त आदि ११ गणधर, १८ हजार साधु, ४०, हजार साध्विये, १ लाख ५९ हजार श्रावक, ३ लाख ३९ हजार श्राविकाये रूप चतुर्विध सघ वना। उनमे से १५०० केवली हुए। १ हजार मन पर्ययज्ञानी हुए, १५ सौ अवधिज्ञानी, ४०० चोदह पूर्वधर हुए, १५ सौ वेक्रिय लब्धिधर हुए, ८ सौ वादी हुए। प्रभु कुल १ हजार वर्ष का आयु पूर्ण करके ५५६ साधुओ के साथ रेवतक गिरी पर्वत पर १ मास के अनशनपूर्वक आषाढ सुदी ८ को मोक्ष पधारे।

इधर राजमति प्रभु के तोरण से पुन लोट जाने से वहुत खेदित हुई। बाद मे प्रभु के दीक्षा के समाचार से जातिस्मरण ज्ञान हो गया। जिससे पूर्वभव की प्रीतिवश ७०० सखियो के साथ दीक्षित होकर प्रभु दर्शन को निकल पडी। गिरनार पर्वत पर चढते-चढते अकस्मात् वर्षा से सारे कपडे गीले हो गये। सब साध्विये वर्षा से बचने हेतु इधर उधर यथास्थान बिखर गई। राजमती भी अकेली रह गई और एक गुफा देखकर उसमे जाकर वस्त्रो को खोलकर सुखाने लगी।

सयोग वशात् उसी गुफा मे रथनेमि साधनारत थे। एकात मे रथनेमि राजमती को देखते ही कामराग से पीडित होकर राजमति के पास आ गये और अपनी कुत्सित भावना की अभिव्यक्ति देने लगे। राजमती ने एकदम सजगहोकर उसको उद्‌बोधित करने लगी। अपयश के कामी धिक्कार हे जो तू वमन को कौओ और कुत्तो की तरह खाने की चेष्टा करता है इससे तो मरना ही श्रेष्ठ है।

राजमती के इस मर्म भरे उद्‌बोधन से रथनेमि का काम विकार रूपमद उतर गया और क्षमायाचना करते हुए पुन साधना में स्थिर बने। इधर राजमती गुफा से निकलकर अपनी साध्वियो के साथ आगे बढी और प्रभु के दर्शन करके कठोर तपाराधन करती हुई भगवान अरिष्टनेमी से ५४ दिन पहले मोक्ष मे पहुच गई।

23. श्री पार्श्वनाथ प्रभुजी :

इसी जम्बूद्वीप के पूर्वविदेह मे पुराणपुर नगर के राजा वज्रबाहु की महारानी सुदर्शना की कुक्षि मे वज्रनाभ के जीव ने देवलोक से आकर जन्म लिया जिसका नाम सुवर्णबाहु रखा। युवावस्था मे विवाह सम्पन्न हुआ। राज्य सिहासन पर बैठे। एक दिन घुडसवारी करते हुए अचानक घोडा बेकाबू हो गया और दौडते-दौडते गालव ऋषि के आश्रम पर जाकर रूका। आश्रम मे ज्योही ऋषि के पास बैठी युवती को देखकर मोहभाव जागृत हो गया। गालव ऋषि ने सारा परिचय प्राप्त कर अपनी पुत्री चपा को सहर्ष सौंप दिया। उसके साथ विवाह करके ज्योहीं नगरी मे पहुचे तो शुभसदेश मिला कि

आयुध शाला मे चक्ररत्न उत्पन्न हुआ है। सुवर्णबाहु ने उसकी पूजा करके उसके माध्यम से छ खड साधकर चक्रवर्ती बने।

एक बार उसी नगरी मे तीर्थकर जगन्नाथ प्रभु का आगमन हुआ जिनके उपदेश से जातिस्मरण ज्ञान पूर्वक विरक्त भाव से दीक्षा ग्रहण करली और उत्कृष्ट सयम साधना की रसायन से तीर्थकर गोत्र उपार्जन कर एक बार विचरण करते हुए वन मे पधारे। वहीं पर आपके पूर्वभव का बैरी कमठ का जीव नरक से निकलकर सिह के भव मे भूखा प्यासा उधर से निकला और आपको देखते ही उनपर झपट पडा। आपने पूर्ण समभाव रखते हुए सथारा पच्चक्ख लिया और आयु पूर्ण कर महाप्रभ विमान मे उत्पन्न हुये और वहा से वाराणसी नगरी के राजा अश्वसेनजी की महारानी वामादेवी की कुक्षि से चैत्रबदी ४ को चवकर आये। १४ स्वप्न दर्शन के साथ गर्भकाल पूर्ण होने पर सर्प चिन्ह के साथ नीलवर्ण की काति से युक्त पुत्र रूप मे पोस बदी १० को जन्मे। देवो द्वारा जन्माभिषेक के साथ नाम पार्श्वकुमार रखा। यौवनावस्था मे प्रवेश करते ही राज्य व्यवस्था मे सहयोग देने लगे।

एक दिन कुशस्थल के राजा नरवर्मा का दूत राजसभा मे आकर अर्ज करने लगाकि राजा नरवर्मा दीक्षित हो गये है और उनके पुत्र प्रसेनजित की पुत्री प्रभावती ने राजकुमार पार्श्व की महिमा श्रवण कर पूर्वभव प्रीतिवश उनको अपना हृदय सम्राट मान लिया है और उनकी यादो मे भूखी प्यासी दिन व्यतीत कर रही है।

यह बात कलिग देश के यवनराज को मालूम पडते ही उसने विशाल सेना से कुशस्थल को घेर लिया है। इसलिये सहायता हेतु निमत्रण लेकर आया हू। राजा अश्वसेन ने यह बात श्रवणकर वहा पहुचने का आशवासन देकर तैयारी कर आदेश दे दिया। यह बात कुमार पार्श्व को ज्ञात होते ही पिताश्री की आज्ञा लेकर वहा पहुचकर अपनी युद्धकला से यवन को परास्त कर पद्मावती से विवाह करके पुन वाराणसी लौट गये।

एक दिन वाणारसी नगरी मे ही कमठ का जीव अनेक योनियो मे भटकते हुए एक गरीब ब्राह्मण के यहा जन्म लेकर तापसो की सगत मे तापस बन कर राजमार्ग पर पचाग्नि तप कर रहा था। उसी मे एक लक्कड मे सर्प को कुमार पार्श्व ने अपने अवधि ज्ञानोपयोग से जानकर तीव्र अनुकपा से प्रेरित हो वहा पहुचे। कमठ को सारी बात बताई पर वह नहीं माना। उल्टा पूर्व बैर से प्रेरित हो अटसट बकने लगा। कुमार पार्श्व ने उस लक्कड को चीरकर साप को बाहर निकाला और महामत्र सुनाकर सान्त्वना दी जिससे आयु पूर्ण कर धरणेन्द्र देव बना। इस घटना को अपना अपमान समझ उसने बदला लेने का निदान किया। आयु पूर्ण कर मेघमाली देव बना।

इधर लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर पोष बदी ११ को आश्रम पद उद्यान मे ३०० पुरुषो के साथ दीक्षा ग्रहण कर मन पर्ययज्ञान की प्राप्ति की और कोटगाव के धन्यकुमार के यहा खीर से पारणाकर आगे विचरण करने लगे। एक दिन तापस आश्रम के पास जीर्ण कुए के पास ध्यानस्थ

थे। उस समय मे मेघमाली देव की ज्योही आप पर दृष्टि पडी तो पूर्व वैर से प्रज्वलित होकर भयकर उपसर्ग पैदा करते हुए ओलो की वर्षा प्रारभ की। उसी समय धरणेन्द्र का उपयोग लगते ही पद्मावती देवी के साथ वहा पहुचा और स्वर्ण कमल पर प्रभु को खडा करके नाग का रूप बनाकर फन फैला दिया और मेघमाली को समझाकर शात किया। ठीक ८४ दिन बाद दीक्षा स्थल पर पधारे ओर चैत्र बदी १४ को केवलज्ञान की प्राप्ति की और देवो द्वारा समोशरण की रचना करने पर धर्मदेशना दी। जिसको श्रवणकर शुभदत्तादि १० गणधर, १६ हजार साधु, ३८ हजार साध्वी, १ लाख ६४ हजार श्रावक, ३ लाख ७० हजार श्राविकाए रूप चतुर्विध सघ हुआ। उनमें से ७५० मन पर्ययज्ञानी, ४०० अवधिज्ञानी १०० वैक्रिय लब्धिधर,, ३५० चौदह पूर्वधर, ६०० वादी हुए। कुल १०० वर्ष का आयु पूर्णकर नेमीनाथ भगवान के बाद ८३ हजार ७५० वर्ष बीतने पर भादवासुदी ८ को ३३ मुनियो के साथ समवेत शिखर पर १ मास के अनशनपूर्वक मोक्ष पधारे।

24. प्रभु महावीर के पूर्वभव

जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह की महाविप्रा विजय मे जयति नगरी के राजा शत्रुमर्दन थे। इसी राज्य के प्रतिष्ठान गाव मे प्रभु महावीर का जीव विभिन्न योनियो मे भवभ्रमण करते हुए नयसार ग्राम अधिकारी के रूप मे जन्म लेकर जीवनयापन कर रहा था। एक बार राजाज्ञा से महल निर्माण हेतु अपने साथियो के साथ जगल मे लकडी एकत्रित कर रहा था।

सयोगवशात् दोपहर को कार्य से निवृत्त होकर भोजन बना कर खाने को तैयारी कर ही रहा था कि अचानक उसको समुद्रसेन मुनिराज आते हुए दिखाई दिये जिनको देखते ही उसका अतरमन पुलकित हो उठा। बडे उत्कृष्ट परिणामो से आहार ग्रहण करने की प्रार्थना करने लगा। मुनिराज ने भी प्रासुक आहार देखकर ग्रहण करने हेतु पात्र रख दिया। नयसार ने उत्कृष्ट भावो से आहार बहराकर आपने आपको आज महान् धन्य मानने लगा और ऐसा अनुभव करने लगा कि एक महासागर से डूबते को पार कर किनारे पहुचा दिया है। उन मुनिराज ने इन शुभ्र परिणामो से उसने शुद्ध सम्यक्त्व रत्न की प्राप्ति के साथ ही ससार परित किया और नयसार के भव का आयु पूर्णकर सौधर्मस्वर्ग मे देव बना। वहा भरत चक्रवर्ती के पुत्र मरीची के रूप मे पैदा हुआ। प्रभु ऋषभ के साथ सयम ग्रहण करके परिषह सहन नहीं होने पर त्रिदडी के रूप मे विचरण करते हुए भी धर्मदलाली करके जिस पुण्य का सचय किया उसके फलस्वरूप चौथे भव मे ब्रह्म देवलोक मे गया। वहा से पाचवे भव मे कोल्लाक सन्निवेश मे कौशिक ब्राह्मण बन के साख्यमत मे प्रवृजित हुआ। वहा से सातवे भव मे चुनानगरी मे पुष्यमित्र ब्राह्मण बनकर साख्यमत की प्रवज्या ग्रहण की। वहा से ८वे भव मे पुन सौधर्म देवलोक मे गया। वहा से नवमे भव मे चेत्य सन्निवेश मे अग्निहोत्र ब्राह्मण बना। वहा से १०वे भव मे ईशानस्वर्ग मे देव बना। वहा से ११वे भव मे मदिर सन्निवेश मे अग्निभूत ब्राह्मण बना। वहा से १२वे भव मे सनतकुमार देवलोक में गया। वहा से १३वे भव मे श्वेताम्बिका नगरी मे भारद्वाज ब्राह्मण

बन प्रव्रज्या ग्रहण की। वहा से १४वे भव मे महेन्द्र कल्प मे देव बना। वहा से १५वे भव मे राजगृही मे ब्राह्मण बन प्रवृज्या ग्रहण की वहा से १६वे भव मे ब्रह्म देवलोक मे गया। वहा से १७वे भव मे राजगृही नगरी मे विशाख भूति के यहा विश्वभूति राजकुमार के रूप मे जन्म लेकर निर्ग्रंथ प्रवृज्या धारण की। वहा से १८वे भव मे महाशुक्र विमान मे देव बना। वहा से १९वे भव मे पोतनपुर मे राजा प्रजापति की महारानी मृगावती की कुक्षि मे जन्म लेकर त्रिपृष्ठ वासुदेव बने और बडे भाई अचल प्रतिवासु देव बने। वहा से २०वे भव मे सातवीं नरक मे नेरिया बना। वहा से २१वे भव मे सिह बना। २२वे भव मे पुन नरक मे गया। वहा से २३वें भव मे पश्चिम विदेह की मुक्ता नगरी मे प्रियमित्र नामक चक्रवर्ती बनकर पोट्टिलाचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर २४वे भव मे महाशुक्र विमान मे देव बने। वहा से २५वे भव मे अहिच्छत्रा नगरी के राजा जितशत्रु के यहा नदराजकुमार बना और उत्कृष्ट वैराग्य भाव से दीक्षित होकर अनेक मासखमण करते हुए २० बोल का आराधन करके जिननामकर्म का उपार्जन कर २६वे भव मे दशमे स्वर्ग के प्राणव कल्प मे देव बने।

भ. महावीर का जन्म :

भारतवर्ष की बिहार प्रात की राजधानी वैशाली उसके गगातट के उत्तरीय भाग हाजीपुर सब डिवीजन से करीब १३–१४ मील उत्तर मे "वसढ" ग्राम है। इसके उत्तर मे एक बहुत बडा विशाल गढ है। उसके पास ही अशोक स्तभ बना हुआ है। पुरातत्ववेत्ताओ ने इसी की विच्छिनियो की वैशाली बताई है। जो उस समय १२ योजन लबी और नव योजन चौडी थी जहा गणतत्र व्यवस्था चलती थी। जिसके प्रधान हयवश के राजा चेडा थे। जिनके शतानिक दधिवाहन बिबीसार चडप्रद्योतन उदायन नदीवर्धन आदि दामाद थे।

उसी वैशाली के पश्चिम भाग मे गडकी नदी के तट पर ब्राह्मण कुड और क्षत्रिय कुड के साथ वाणिज्यग्राम, कूर्मारग्राम कोल्लाक सन्निवेष आदि नगर बसे हुये थे। क्षत्रिय कुड व ब्राह्मण कुड एक दूसरे के पूर्व पश्चिम मे बसे थे। जिनके दक्षिण व उत्तर दो भाग थे। बीच मे बहुशान उद्यान था। ब्राह्मण कुड का दक्षिण भाग ब्रह्मपुरी कहलाता था। वहा कोडाल गोत्रीय ऋषभदत्त ब्राह्मण एव उसकी धर्मपत्नी जालन्धर गोत्रीय देवानदा निवास करते थे जो प्रभु पार्श्व सघ के अनन्य उपासक थे।

उसी देवानदा की कुक्षि मे दशवे स्वर्ग के प्राणत देवलोक के पुष्पोत्तर विमान से चवकर आषाढ शुक्ला ६ को हस्तोत्रा नक्षत्र मे चन्द्रमा का योग होने पर नदमुनि का जीव आया। माता देवानदा ने १४ महास्वप्न देखे और गर्भ का हर्षभाव से पावन करने लगी। लेकिन अकस्मात् ८२वीं रात्रि मे उसे ऐसा स्वप्न आया कि मेरे स्वप्न हरण हो रहे है और उसी उत्तर क्षत्रिय कुड जिसमे ५०० ज्ञातवशीय क्षत्रिय परिवार रहते थे। जिनके नायक काश्यप गोत्रीय राजा सिद्धार्थ थे। जिनकी महारानी त्रिशला ने १४ स्वप्न देखे।

जिसका मूल कारण था कि सोधर्मेन्द्र ने जब अवधिज्ञान से यह जाना कि प्रभु देवानदा की कुक्षि मे उत्पन्न हो गये तो साश्चर्य चितन करने लगा कि यह केसे हुआ। उपयोग लगाने पर मरीचि भव मे कुल मद मे बधे कर्म फल का उदय भाव जान उसके क्षय के साथ ही हरिण गमेशी देव को आदेश देकर आसोज बदी १० को महारानी त्रिशला की कुक्षि से कन्या का हरण कराकर देवानदा की कुक्षि मे प्रक्षेपित कराया और उसकी कुक्षि से प्रभु का हरण कर महारानी त्रिशला की कुक्षि मे प्रक्षेप कराया।

माता त्रिशला ने चौदह स्वप्न देखकर परमान्दित होती हुई गर्भ का पालन करने लगी। ज्यो–ज्यों गर्भ बढता गया त्यो–त्यो उसको उठने–बेठने की तकलीफ होते देख प्रभु ने अपने शरीर को हिलाना बद कर दिया। जिससे माता त्रिशला एकदम दुखित वन गई। तव प्रभु ने ज्योही अपने ज्ञानोपयोग से यह बात जानकर पुन हिलना प्रारभ किया त्योही माता के आनद का पार नहीं रहा। इस मातृ ममता को देख प्रभु ने उनके जीते जी दीक्षी नहीं लेने का गर्भ मे ही सकल्प कर लिया।

गर्भकाल पूर्ण होने पर चैत्रशुक्ला त्रयोदशी को ज्योही प्रभु ने जन्म लिया तीनो लोक मे खुशी का सचार हो गया। ६४ इन्द्र ५६ दिशा कुमारियो ने रिद्धि एव ऐश्वर्यपूर्वक प्रभु जन्मोत्सव मनाने लगी। मेरू शिखर पर जन्माभिषेक हो रहा था। उस समय एक देव के मन मे उठे सशय की निवृत्ति हेतु ज्योही अपने अगुष्ठ से मेरू स्पर्श किया तो सारा मेरू थर–थर कापने लग गया तब इन्द्र ने क्षमायाचना कर देव को प्रभु की अनत शक्ति का परिचय देकर सशय की निवृत्ति की ओर महावीर नामकरण करके पुन माता त्रिशला के पास रखकर अपने–अपने स्थान पहुचे।

प्रियवदा दासी ने ज्योही राजा सिद्धार्थ को पुत्र जन्म की बधाई दी तो राजा सिद्धार्थ ने उसको विपुल वस्त्राभरण दिये कि उसकी तीन पीढिये सुखमय बन गई। सारे राज्य मे १२ दिन तक जन्मोत्सव की धूम रही। सबने गर्भकाल से ही चहू ओर की अभिवृद्धि को लखकर वर्धमान नाम दिया।

शैशवावस्था से बालावस्था मे प्रवेश करते ही बालक वर्धमान को कलाचार्य के पास भेज दिया लेकिन कलाचार्य कहीं तीर्थकर की आशातना न कर बैठे इसलिये पडित के रूप मे पहुचकर व्याकरण के ऐसे प्रश्न पूछे कि कलाचार्य तो सकपका गया लेकिन बालक वर्धमान ने ज्योही समाधान किया तो कलाचार्य को सारा रहस्य ज्ञात होते ही पुन राजा सिद्धार्थ के पास ले जाकर यह कहते हुए सौंप दिया कि इनको पढाने का मेरा सामर्थ्य नहीं है। ये तो स्वय सर्वकलाओ मे निष्णात है।

बाल्यक्रीडा करते हुए प्रमदावन मे बालक वर्धमान को बल एव निर्भयता की परीक्षा हेतु सर्प का पिशाच का विकराल रूप बनाकर देवो ने प्रयत्न किया। आखिर क्षमायाचना कर अपने स्थान पर गये। इस प्रकार बालवय से यौवनवय मे जब प्रवेश किया तो राजा सिद्धार्थ ने राजा समर वीर की पुत्री यशोदा के साथ विवाह कर दिया। कुछ समय पश्चात् एक पुत्री का जन्म हुआ जिसका नाम

प्रिय दर्शना रखा गया।

प्रभु की संसार विरक्ति व दीक्षा :

इस प्रकार सुखमय जीवनयापन करते हुए २८ वर्ष की वय मे राजा सिद्धार्थ व रानी त्रिशला दोनो का अकस्मात् कालधर्म को प्राप्त कर लेने से प्रभु को ससार से विरक्ति हो गई। भाई नदीवर्धन से दीक्षा की अनुमति चाहते हुए भी जब नहीं मिली तो गृहवास मे दो वर्ष योग साधना मे व्यतीत किये फिर लोकातिक देवो के आग्रह से वर्षीदान देकर चाचा सुपार्श्व व भाई नदी वधर्न से आज्ञा प्राप्त कर देव देवेन्द्र नर नरेद्रो से परिवेष्टित होते हुए चद्रप्रभा शिविकारूढ होकर ज्ञातवनखण्ड मे पधारे और मिगसर सुदी ९ को बेले के तप मे देवदूष्य वस्त्र को धारण कर जीवन पर्यन्त के लिये सामायिक चारित्र ग्रहण किया और मन पर्यय ज्ञान की प्राप्ति के साथ ही विहार कर दिन के अतिम प्रहर मे कुर्मारगाव के बाहर ध्यानस्थ बन गये।

प्रभु का छद्मस्थ काल व उपसर्गो का घेरा :

उसी दिन एक ग्वाला प्रभु को वहा खडे देख अपने बैलो को वहीं छोडकर यह कहते हुए घर चला गया कि ध्यान रखना मै वापिस आ रहा हू। इधर प्रभु तो अपने ध्यान मे खडे थे और वापिस आया तो बैल वहा नहीं मिले तो ढूढते-ढूढते परेशान हो गया और पुन वहा आया तो बैल वापिस नहीं खडे देख कुपित हो उठा और प्रभु पर कोडे का प्रहार करने लगा। सौधर्मेन्द्र ने उपयोग लगाते ही उसको रोका और समझाकर रवाना किया और प्रभु से सेवा मे रहने की अर्ज करने लगा। प्रभु ने न भूतो न भविष्यति कहकर निषेध कर दिया फिर भी सौधर्मेन्द्र ने प्रभु के पूर्वभव के मौसी के पुत्र जो बाल तप करके व्यतर जाति का देव बना था उसको सेवा मे नियुक्त कर दिया।

दूसरे दिन प्रभु कुमार गाव से विहार कर कोल्लाग सन्निवेष पधारे। वकुल ब्राह्मण के यहा खीर से पारणा किया। ज्योही देवो ने हर्षध्वनि गुजरित करते हुए पचदिव्य प्रगट किये। प्रभु वहा से विहार कर सन्निवेष के बाहर ध्यानस्थ हो गये। इधर प्रभु के शरीर पर देवो द्वारा जो गोशीर्ष चदन का विलेपन किया था जिसकी सुगध से भवरे आदि डक मार-मार कर उपसर्ग पैदा करने लगे। कई युवक युवतिया भी प्रभु के शरीर से चिपक कर अपने शरीर को सुगधित बनाने का प्रयास करने लगी। अपनी इच्छाओ वासनाओ की आपूर्ति नहीं होने पर उनपर आक्रोश व प्रहार भी करती लेकिन प्रभु तो अपनी ध्यान साधना मे अडिग रहे और प्रात सूर्योदय के साथ ही विहार करके मोराक सन्निवेष के दूइज्जत आश्रम पधारे। वहा के कुलपति राजा सिद्धार्थ के मित्र होने के कारण बडे आदर भाव से ठहरने की आज्ञा प्रदान कर चातुर्मास यहीं सम्पन्न करने का आग्रह किया। रात्रि की प्रतिमायुक्त प्रात वहा विहार किया और विचरण करते हुये चातुर्मासार्थ पुन पधार गये और एक पर्ण कुटि मे आज्ञा लेकर ध्यानस्थ हो ठहर गये। वर्षा की कमी के कारण आस-पास के पशु पर्ण कुटिया का घास खाने लगते जिसको देखकर आश्रमवासी कुपित होकर कुलपति से शिकायत करने लगे जब कुलपति ने आकर उपालभ

दिया तो प्रभु ने यह विचार करके १५ दिन वाद ही विहार कर दिया कि मेरे कारण किसी को कष्ट हो ऐसे स्थान पर ठहरना उचित नहीं हे साथ ही १ अप्रीतिकर स्थान मे नहीं रहना। २ नित्य ध्यान मे रहना। ३ करपात्र मे ही भोजन करना। ४ गृहस्थ का विनय नहीं करना। ५ नित्य मोन रहना यह पाच प्रतिज्ञा धारण कर अस्थिक गाव पधार कर शूलपाणि यक्ष के आयतन मे आज्ञा लेकर ध्यानस्थ हो गये।

शूलपाणी यक्ष ने उसी रात्रि मे भयकर उपसर्ग दिये। सिद्धार्थ व्यतर से प्रभु का परिचय पाकर क्षमायाचना कर सम्यक्त्व बोध पाया। प्रभु ने उस चातुर्मास मे १५ के ८ थोक दिये। वहा से विहार कर मोराक सन्निवेश पधारे। वहा अधदक पाखड जो ज्योतिष निमित्त यत्र मत्र से लोगो को प्रभावित कर अपनी आजीविका चला रहा था लेकिन सिद्धार्थ व्यतर लोगो को समझाकर प्रभु चरणो की उपासना मे भेजना जिससे उस पर बहुत गहरा असर पडने लगा। एक दिन परेशान होकर प्रभु चरणो मे आकर गिडगिडाता हुआ रोने लगा। प्रभु ने उसकी व्यथा समझकर तुरत वहा से विहार कर दिया। दक्षिण वाचाल से उत्तर वाचाल होते हुए श्वेताम्बिका नगरी पधार रहे थे। रास्ते मे देवदूष्य वस्त्र गिर गया। प्रभु तो आत्मभावो मे रमण करते हुए सीधे रास्ते पधारे और सुनसान कनखल आश्रम के बाहर जहा चडकोशिक सर्प की बाबी थी वहा ध्यानस्थ खडे हो गये। सर्प को सुगध आते ही अपनी बाबी से बाहर आया और क्रोधावेग से दृष्टि से विष का प्रहार करने लगा और अतिक्रोधावेग मे प्रभु के अगुष्ठ पर डक भी लगा दिया जिससे खून की धारा प्रवाहित होने लगी जिसको चखते ही उसको अमृता स्वादन की अनुभूति होने लगी। वह अनिमेष दृष्टि से प्रभु को निहारते हुए इतने गहरे चितन मे डूब गया कि उसको जातिस्मरण ज्ञान हो गया। जिससे वह पूर्वभव मे कौन था और क्रोधावेग से इस योनी मे कैसे आया इसका बोध हो गया। पश्चाताप करने लगा। प्रभु ने भी योग्य अवसर देख प्रतिबोध दिया। चड कोशिक बुझ-बुझ प्रभु के प्रतिबोध से वह और जागृत हो गया और अपनी पापालोचना करते हुए प्रायश्चित कर अनशन धारण करके मुह को बिल मे डालकर निचेष्ट हो गया।

जब यह सदेश आस-पास मे फैला तो लोग वहा पहुचकर दही घृत आदि से उसकी पूजा करने लगे जिससे अनेक कीडे-मकोडो ने पहुचकर उसके शरीर को छलनी-छलनी कर दिया। वह चड कोशिक सारी वेदना को समभाव से सहन करता रहा और १५ दिन बाद ८वे स्वर्ग मे पहुचा।

प्रभु ने १५ दिन का पारणा उत्तर वाचाल के नागसेन गृहपति के यहा किया। पचदिव्य की वृष्टि के साथ इसका लडका भग गया था। वह १२ वर्ष बाद पुन उसी दिन घर पहुचा। प्रभु विहार कर श्वेताम्बिका पधारे। राजा प्रदेशी ने अपने राजवैभव के साथ प्रभु के दर्शन किये। वहा से सुरभिपुर पधारते समय पाच राजाओ को प्रभु के दर्शन हुए। आगे बढते हुए सिद्धदत्त नाविक की नाव मे बैठकर गगा नदी पार करते हुए सुदृष्ट देव ने [illegible] पैदा किया तब सबल कबल देव ने उसे ललकार कर समझाया।

प्रभु गगा किनारे नाव से उतर गये और वहा से मोराक सन्निवेश पधारे और वहा से राजगृही पधार गये और ततुवाय की शाला मे चातुर्मास किया। उसी मे मखलिपुत्र गौशालक शिष्य बनकर साथ मे रहने लगा। प्रभु ने पहले मासखमण का पारणा अभिग्रह फलने पर विजय सेठ के यहा किया। दूसरा आनद के यहा तीसरा सुदर्शन के यहा हुआ और चौथे मासखमण मे कार्तिक पूर्णिमा को पाद बिहार कर कोल्लाक सन्निवेश मे वकुल ब्राह्मण के यहा करके सुवर्णखल, नदपादक होते हुए तीसरा चातुर्मास चपा मे करके दो–दो महिने का पारणा कर फिर दो महिने पच्चक्ख लिया जिसका पारणा चपा के बाहर कर कोल्लाक सन्निवेष पधारे। वहा से पत्रकाल होतु हुए कुमारगाव पधारे। चपक उद्यान मे प्रभु ध्यानस्थ थे वहीं पार्श्वापत्य चद्राचार्य विराजमान थे। गोशालक उनकी आशातना करने लगा। प्रभु वहा विहारकर चोराक सन्निवेष होते हुए पृष्ठ चपा मे चौथा चातुर्मास ४ महिने के उग्रतप के साथ पूर्णकर गाव बाहर पारणा करके कयग ला दरिड घेर होते हुए श्रावस्ती पधारे और वहा हल्लिद्दपुर गाव के बाहर कायोत्सर्ग मे स्थित अग्नि के उपसर्ग से पाव झुलस गये वहा से कोडिआर होते हुए नगला गाव बाहर वासुदेव मदिर मे विराजे। वहा आवती गाव मे बलदेव मदिर मे ठहरे। प्रात विहारकर चौराक सन्निवेष से होकर कलबुआ सन्निवेष पधारे। रात्रि को कालहस्ती डाकू ने परिचय नहीं बताने पर पिटाई करके प्रभु व गोशालक दोनो को बाधकर सरदार मेघ के पास भेजा। उसने पूर्व परिचय से पहचान कर छोड दिया।

वहा से प्रभु ने विशिष्ट निर्जरा हेतु अनार्य देश मे विचरण करके अनेक उपसर्गो को सहन करके पुन आर्यक्षेत्र मे पधारकर मलयदेश की राजधानी भद्दिल मे ५वा चातुर्मास कर चौमासी तप किया। गाव के बाहर पारणा करके अबू साड कूपिय सन्निवेष ततुवाय सन्निवेश पधारे। कूपिय सन्निवेष मे गुप्तचरों ने शका कर दोनो को पकडकर पीटकर जेल मे डालदिये तब वहा विराजित प्रभु पार्श्वसघ की साध्वी सोमा व जयति ने सारी बात श्रवण करके पहचान कर परिचय दिया तब क्षमायाचना करते हुये मुक्त कर दिया। मुक्त होते ही गोशालक तो घबराकर प्रभु से अलग निकल गया। प्रभु वहा से विहार कर वैशाली पधारे और एक लोहार शाला मे ठहरने की इजाजत मागने लगे त्योही लुहार ने अपशकुन समझकर हथोडा उठाकर प्रहार करने लगा पर वह वहीं का वहीं स्वभित हो गया। प्रभु वहा से ग्रामक पधारे। विलेमन रक्ष ने भक्ति पूर्वक खूब महिमा बढाई। छठा चातुर्मास भद्रिकापुर करके चौमासी तप धार लिया।

नगरी बाहर पारणा करके मगध देश पधारे और आलभिका नगरी मे चातुर्मास किया। वहा भी प्रभु ने चौमासी तप किया और बाद मे विहार कर कुण्डाक सन्निवेष होते हुए मद्दमा बहुशाल स्पर्श कर लोर्हागल पधारे। राजा जितशत्रु ने प्रतिपक्ष का व्यक्ति समझकर कैद कर दिया। तब उत्तल ज्योतिषी ने प्रभु का परिचय बताया तब क्षमायाचना करके मुक्त किया। प्रभु समभावपूर्वक वहा से विहार कर पुरिमताल, उन्नाग गोभूमि होते हुए राजगृही पधारे और वहीं आठवा चातुर्मास किया और वहा से

वज्रभूमि पधारे। चातुर्मास योग्य क्षेत्र नहीं होने से पुन नवमा चातुर्मास वहीं करके कूर्मगाव पधारे। गोशालक पुन साथ हो गया उसी रास्ते मे एक वेश्यायन तापस वृक्ष की टहनी के उल्टा लटक कर आतापना लेते हुए उसी जटा से निकलने वाली जुओ को पुन उठाकर उनकी रक्षा हेतु अपनी जटा मे रख रहा था यह देख गोशालक ने उसकी मजाक उडाते हुए जुओ का शय्यातर कहकर चिडाने लगा। इस प्रकार बार–बार चिडाने पर वह कुपित हो उठा ओर तेजोलेश्या छोड दी जिससे झुलसते हुए गोशालक ने प्रभु को आवाज लगाई। प्रभु ने करुणार्द्र दृष्टि से ज्योही पीछे देखा तो प्रभु के नेत्रो से प्रवाहित शीत लेश्या से वह तेजोलेश्या शमन हो गये। प्रभु के साथ गोशालक भी आगे पधार गये। बाद मे तेजोलेश्या का उपाय पूछकर उसकी साधना करने हेतु अलग हो गया और अष्टाग विद्या साधकर उसने आजीवक मत स्थापित किया।

प्रभु सिद्धार्थपुर होते हुए गडक नदी पुन नाव द्वारा पार कर वाणिज्य ग्राम पधारे ओर वहा से श्रावस्ति पधारे और १०वा चातुर्मास किया कठोर तप का आचरण करते हुए चातुर्मास पूर्ण कर आनद के यहा पारणाकर चडिक गाव पधारे १६ की तपस्या करके महाभ्रद, सर्वतोभद्र प्रतिमा के पारणा हेतु एक कृपण सेठ की हवेली के द्वार पधारे। सेठ दासी को बोला कि कुछ बचा हो तो इस भिखारी को दे दे। दासी बर्तनो का बचा कुछ अन्न कुचर कर बाहर फेकने के लिए रखा था वही प्रभु को देने लगी। प्रभु ने उसी से उग्रतप का पारणा कर दृढभूमि पधारे और पेढाल गाव के पलास चैत्य मे तेले का तप कर एक पुद्‌गल पर ध्यान केद्रित कर खडे थे। सौधर्मेन्द्र ने देव सभा मे प्रभु की प्रशसा की जिससे प्रज्वलित हो सगमदेव ने छ महिने तक लगातार भयकर उपसर्ग दिये। आखिर क्षमायाचना करके अपने स्थान पर गया। प्रभु ६ महिने का पारणा वज्रगाम के वत्स पालक वृद्धा के यहा करके पुन आलमिका सेविका होते हुए श्रावस्ति पधारे और कौशम्बी वाणारसी राजगृही मिथिला होते हुए वैशाली मे ११वा चातुर्मास किया। चार महिने की तपस्या का पारणा जिनदत्त जिरण सेठ की तो तीव्रतम भावना होते हुए भी पूरण सेठ के यहा हुआ उडद के बाकुले से हुआ। देवो ने पचदिव्य प्रगट किये। यह सवाद सुनते ही जिरण सेठ पहले तो बहुत दुखित हुआ फिर पूरण सेठ की प्रशसा करके अच्युत कल्प मे देव बना।

प्रभु वहा से सुसुभापुर भोगपुर नदीग्राम मेठक होकर कौशम्बी पधारे और पोष सुदी १ को १ राजकन्या २ कवारी ३ सदाचारिणी ४ निरपराध ५ हथकडी बेडी से जकडी ६ शिर मुडित ७ काछा पहने ८ तेले का तप ९ उडद बाकुले १० सूप मे ११ एक पाव घर मे एक बाहर १२ अतिथि का इतजार करते हुए। १३ प्रसन्नता के आसू गिराते हुए आहार बहराने वाली के हाथ से पारणा करना ऐसा कठोर अभिग्रह धारण करके प्रभु घूमने लगे। लगभग ५ महिने २५ दिन पूरे हो गये। सारे शहर मे राजा से लगाकर प्रजा मे यही चिता व्याप्त हो रही थी। सयोग से उस पारणे का योग धन्ना सेठ के द्वार पर खडी वसुमति (चदनबाला) के द्वारा सम्पन्न हुआ। देवो ने पचदिव्य प्रगट कर अहोदान की

घोषणा की। प्रभु पारणा करके सुमगल, सुच्छेता होते हुये चम्पा पधारे और स्वादिति ब्राह्मण की यज्ञशाला मे १२वे चातुर्मासार्थ विराजे। कठोर तपाराधन करते हुए चातुर्मास सम्पन्न होने पर मिढियगाव होते हुए छम्माणी पधारे। गाव के बाहर प्रभु को ध्यानस्थ देखकर त्रिपृष्ठ चक्रवर्ती के भव मे शैय्या पालक के कान मे शीशा उबालकर डलवा के हत्या कराई वहीं जीव ने इस भव मे बैल चुराने का आरोप प्रभु पे धर कर पूर्वभव के वैर का बदला लेने हेतु खेर की लकडी की तीखी खील दोनो मे ठोककर चला गया। प्रभु समभाव से वेदना सहन करते हुये मध्यमा पधारे। सिद्धार्थ श्रेष्ठि की दृष्टि पडी। उसने खरक वैद्य की सहायता से वह कीले निकलवाई और औषध से घाव भरदिया। यह प्रभु का अतिम उपसर्ग था।

प्रभु को केवल्यज्ञान :

प्रभु वहा से विहार कर जृभक गाव पधारे और ऋजुबालिका नदी के उत्तरी तट पर श्यामक किसान के खेत मे जीर्ण चैत्य के पास शालवृक्ष के नीचे बेले के तप मे गोदूह आसन मे ध्यानस्थ थे। वैशाखसुदी १ की रात्रि के अतिम प्रहर मे कुछ निद्रा की तद्रा मे प्रभु ने १० स्वप्न देखे और कुछ समय पश्चात् हस्तोतरा नक्षत्र मे केवल ज्ञान की प्राप्ति हो गई। देवो ने समोशरण की रचना की। प्रभु ने धर्म देशना भी दी लेकिन केवल देव–देवियो की परिषद् ही उपस्थित हो सकी जिसके अप्रत्याख्यानी कषाय चतुष्क के उदयभाव से अणुव्रत धारण नहीं कर सकने से पहली देशना खाली गई।

चतुर्विध सघ की स्थापना :

दूसरे दिन प्रभु विहार कर जब मध्य पावा पधारे तब देवो ने पुन समोशरण की रचना की। उस समय सोमिल ब्राह्मण की यज्ञ शाला मे इन्द्रभूति आदि तत्कालीन प्रखर ११ विद्वान अपने चार हजार चार सौ शिष्यो के साथ यज्ञ सम्पन्न करा रहे थे। प्रभु के केवलज्ञान की बात श्रवण कर अहभाव से उद्वेलित होते हुए विवाद करने हेतु प्रभु के पास आये और सशय की निवृत्ति के साथ ही सयम ग्रहण कर लिया। ऐसे ही चदनबाला प्रमुख अनेक महिला भी दीक्षित हुई। रेवती आदि ने श्राविका व्रत और आनद आदि ने श्रावक व्रत धारण किये। इस प्रकार प्रभु ने चतुर्विध सघ की स्थापना की। ९ गण और ग्यारह गणधर स्थापित किये।

प्रभु ने १३वा चातुर्मास ब्राह्मण कुड के बहुशाल उद्यान मे किया। माता देवानदा व पिता ऋषभ ने प्रभु चरणो मे दीक्षा ग्रहण की और उग्र तप कर केवलज्ञान की प्राप्ति करके मोक्ष पधारे। इसी चातुर्मास मे भगवान की पुत्री प्रियदर्शना व दामाद जमाली ने १ हजार स्त्री व पुरुषो के साथ दीक्षा ग्रहण की।

प्रभु ने चातुर्मास पूर्ण कर १४वा चातुर्मास वैशाली मे सम्पन्न किया। वहा वत्स भूमि होते हुए कौशम्बी पधारे। चद्रावतरण उद्यान मे १५वा चातुर्मास वाणिज्य ग्राम, १६वा राजगृही मे सम्पन्न किया।

वज्रभूमि पधारे। चातुर्मास योग्य क्षेत्र नहीं होने से पुन नवमा चातुर्मास वहीं करके कूर्मगाव पधारे। गोशालक पुन साथ हो गया उसी रास्ते मे एक वेश्यायन तापस वृक्ष की टहनी के उल्टा लटक कर आतापना लेते हुए उसी जटा से निकलने वाली जुओ को पुन उठाकर उनकी रक्षा हेतु अपनी जटा मे रख रहा था यह देख गोशालक ने उसकी मजाक उडाते हुए जुओ का शय्यातर कहकर चिडाने लगा। इस प्रकार बार--बार चिडाने पर वह कुपित हो उठा और तेजोलेश्या छोड दी जिससे झुलसते हुए गोशालक ने प्रभु को आवाज लगाई। प्रभु ने करुणार्द्र दृष्टि से ज्योही पीछे देखा तो प्रभु के नेत्रो से प्रवाहित शीत लेश्या से वह तेजोलेश्या शमन हो गये। प्रभु के साथ गोशालक भी आगे पधार गये। बाद मे तेजोलेश्या का उपाय पूछकर उसकी साधना करने हेतु अलग हो गया ओर अष्टाग विद्या साधकर उसने आजीवक मत स्थापित किया।

प्रभु सिद्धार्थपुर होते हुए गडक नदी पुन नाव द्वारा पार कर वाणिज्य ग्राम पधारे और वहा से श्रावस्ति पधारे और १०वा चातुर्मास किया कठोर तप का आचरण करते हुए चातुर्मास पूर्ण कर आनद के यहा पारणाकर चडिक गाव पधारे १६ की तपस्या करके महाभ्रद, सर्वतोभद्र प्रतिमा के पारणा हेतु एक कृपण सेठ की हवेली के द्वार पधारे। सेठ दासी को बोला कि कुछ बचा हो तो इस भिखा
दे दे। दासी बर्तनो का बचा कुछ अन्न कुचर कर बाहर फेकने के लिए रखा था वही प्रभ
प्रभु ने उसी से उग्रतप का पारणा कर दृढभूमि पधारे ओर पेढाल गाव के पला
कर एक पुद्गल पर ध्यान केद्रित कर खडे थे। सौधर्मेन्द्र ने देव सभा
प्रज्वलित हो सगमदेव ने छ महिने तक लगातार भयकर उपसर्ग
अपने स्थान पर गया। प्रभु ६ महिने का पारणा वज्रगाम के
आलमिका सेविका होते हुए श्रावस्ति पधारे और कौशम्बी
मे ११वा चातुर्मास किया। चार महिने की तपस्या का
होते हुए भी पूरण सेठ के यहा हुआ उडद के बाकुले
सुनते ही जिरण सेठ पहले तो बहुत दुखित हुआ फिर पू
बना।

प्रभु वहा से सुसुभापुर भोगपुर नदीग्राम मेठक होकर
१ राजकन्या २ कवारी ३ सदाचारिणी ४ निरपराध ५ हथकडी
७ काछा पहने ८ तेले का तप ९ उडद बाकुले १० सूप मे ११ एक पाव
का इतजार करते हुए। १३ प्रसन्नता के आसू गिराते हुए आहार बहराने वाली।
ऐसा कठोर अभिग्रह धारण करके प्रभु घूमने लगे। लगभग ५ महिने २५ दिन पू
मे राजा से लगाकर प्रजा मे यही चिता व्याप्त हो रही थी। सयोग से उस पारणे क
के द्वार पर खडी वसुमति (चदनबाला) के द्वारा सम्पन्न हुआ। देवो ने पचदिव्य प्रगट कर

चौबीस तीर्थंकरों का लेखा

१७वा वाणिज्य ग्राम १८ राजगृही १६ राजगृही २० वैशाली २१ वाणिज्यग्राम २२ राजगृही २३ वाणिज्यग्राम २४वा मिथिला २५ मिथिला २६ श्रावस्ति २७ वाणिज्यग्राम २८ राजगृही २९ वाणिज्यग्राम ३० वैशाली ३१ वैशाली ३२ राजगृह ३३ नालदा ३४ वैशाली ३५ मिथिला ३६ राजगृही ३७ नालदा ३८ मिथिला ३९ राजगृही ४०वा राजगृही ४१ नालदा करके ४२वा चातुर्मास था पावापुरी मे राजा हस्तिपाल की रज्जुक सभा मे विराजे। चातुर्मास के ३ महिने पूर्ण होकर चौथा महिना प्रारभ हुआ। कार्तिक बदी १३ को प्रभु ने आहार पानी ग्रहण करना छोड दिया। १८ गणराज्य के राजा आदि भी तेले का तपधारण कर प्रभु उपासना मे तन्मय हो गये। प्रभु ने हस्तिपाल राजा मे ८ स्वप्न के समाधान के साथ अपुट्ठ वागराणा रूप ५६ अध्ययन पुण्य व ५६ पाप विपाक के व उत्तराध्ययन के ३६ अध्ययन प्रतिपादित कर गणधर गौतम को देव शर्मा के यहा प्रतिबोध हेतु भेजकर कार्तिक बदी अमावश्या को मध्यरात्रि मे सर्व कर्मो के बधन से मुक्त होकर सिद्ध बुद्ध निरजन निराकार बनकर अष्ट गुणो से युक्त हो अविग्रह गति से एक समय मे लोकाग्र पर स्थित सिद्धशिला पर स्थित हो गये।

प्रभु के शासन काल मे १४ हजार सत, ३६ हजार साध्विये, १ लाख ५९ हजार श्रावक, ३ लाख १८ हजार श्राविकायें हुई।

चौबीस तीर्थंकरों का लेखा

जबूद्वीप के भरत क्षेत्र के वर्तमान काल

क्र स	तीर्थंकर का नाम	गणधर	केवलज्ञानी	मन पर्यय ज्ञानी	अवधिज्ञानी	चौदह पूर्वधर	मुनियो के स अनशन कि
1	श्री ऋषभदेव	८४	२००००	१२६५०	९०००	४७५०	१०००
2	श्री अजितनाथ	९०	२००००	१२५००	९४००	३२७०	१०००
3	श्री सभवनाथ	१०२	१५०००	१२१५०	९६००	२१५०	१०००
4	श्री अभिनन्दन	११६	१४०००	११६५०	९८००	१५००	१०००
5	श्री सुमतिनाथ	१००	१३०००	१०४५०	११०००	२४००	१०००
6	श्री पद्मप्रभ	१०७	१२०००	१०३००	१००००	२३००	३०८
7	श्री सुपार्श्वनाथ	९५	११०००	९१५०	९०००	२०३०	५००
8	श्री चन्द्रप्रभ	९३	१००००	८०००	८०००	२०००	१०००
9	श्री सुविधिनाथ	८६	७५००	७५००	८४००	१५००	१०००
10	श्री शीतलनाथ	८३	७०००	७५००	७२००	१४००	१०००
11	श्री श्रेयासनाथ	६६	६५००	६०००	६०००	१३००	१०००
12	श्री वासुपूज्य	६२	६०००	६०००	५४००	१२००	६०००
13	श्री विमलनाथ	५६	५५००	५५००	४८००	११००	६०००
14	श्री अनन्तनाथ	५४	५०००	५०००	४३००	१०००	७०००
15	श्री धर्मनाथ	४८	४५००	४५००	३६००	९००	१०८
16	श्री शान्तिनाथ	९०	४३००	४०००	३०००	९३००	९००
17	श्री कुथुनाथ	३७	३२३२	८१००	९१००	६७०	१०००
18.	श्री अरनाथ	३३	२८००	२५५१	२६००	६१०	१०००
19	श्री मल्लिनाथ	२८	३२००	५७००	५९००	५६८	500 साधु 500 साध्वी
20	श्री मुनिसुव्रत	१८	१८००	१५००	१८००	५००	१००० मुनि
21	श्री नमिनाथ	१७	१६००	१२६०	३९००	४५०	१००० मुनि
22	श्री अरिष्टनेमि	१८	१५००	१०००	१५००	४००	536 मुनि के साथ
23	श्री पार्श्वनाथ	८	१०००	७५०	१४००	३५०	
24	श्री महावीर	११	७००	५००	१३००	३००	

मे हुए २४ तीर्थकरो के गणधर आदि परिवार का कोष्ठक (नक्शा)

वैक्रिय लब्धिारी	चर्चावादी विजय	साधु	साध्वी	श्रावक	श्राविका
२०६००	१२६५०	८४०००	३०००००	३०५०००	५५४०००
२०४००	१२४००	१०००००	३३००००	२९८०००	५४५०००
१९८००	१२०००	२०००००	३३६०००	२९३०००	६३६०००
१९०००	११०००	३०००००	६३००००	२८८०००	५२७०००
१८४००	१०६५०	३२००००	५३००००	२८१०००	५१६०००
१६८००	९६००	३३००००	४२००००	२७६०००	५०५०००
१५३००	८६००	३०००००	४३००००	२५७०००	४९३०००
१४०००	७६००	२५००००	३८००००	२५००००	४९१०००
१३०००	६०००	२०००००	१२००००	२२९०००	४७१०००
१२०००	५८००	१०००००	१०००००	२८९०००	४५८०००
११०००	५०००	८४०००	१०३०००	२७९०००	४४८०००
१००००	४७००	७२०००	१०००००	२१५०००	४३६०००
९०००	३२००	६८०००	१००८००	२०८०००	४२४०००
८०००	३२००	६६०००	६२०००	२०६०००	४१४०००
७०००	२८००	६४०००	६२४००	२०४०००	४१३०००
६०००	२४००	६२०००	६१६००	२९००००	३९३०००
५१००	२०००	६००००	६०६००	१७९०००	३८१०००
७३००	१६००	५००००	६००००	१८४०००	३७२०००
२९००	१४००	४००००	५५०००	१८३०००	३७००००
२०००	१२००	३००००	५००००	१७२०००	३५००००
५०००	१०००	२००००	४१०००	१७००००	३४८०००
१५००	८००	१८०००	४००००	१६९०००	३३६०००
११००	६००	१६०००	३८०००	१६४०००	३२७०००
७००	४००	१४०००	३६०००	१५९०००	३१८०००

क्र स	नाम	पूर्वभव का नाम	देवलोक का नाम	देवलोक आयुष्य	च्यवन नक्षत्र	च्यवन तिथि
१	श्री ऋषभदेव	वज्रनाभ	सर्वार्थसिद्ध विमान	३३ सागरोपम	उत्तराषाढा	आषाढ कृष्णा चर्तुदशी
२	श्री अजितनाथ	विमलवाहन राजा	विजय विमान	३३ सागरोपम	रोहिणी	वैशाख शुक्ला त्रयोदशी
३	श्री सभवनाथ	विपुलवाहन	नवम देवलोक	१६ सागरोपम	मृगशिरा	फाल्गुन शुक्ला अष्टमी
४	श्री अभिनन्दन	महाबल राजा	विजय विमान	३३ सागरोपम	अभिजीत	वैशाख शुक्ला चतुर्थी
५	श्री सुमतिनाथ	पुरुषसिह	वैजयन्त विमान	३३ सागरोपम	मघा	माघ शुक्ला द्वितीया
६	श्री पद्मप्रभु	अपराजित राजा	नवम् ग्रैवेयक	३१ सागरोपम	चित्रा नक्षत्र	माघ कृष्णा षष्ठी
७	श्री सुपार्श्वनाथ	नदिसेण राजा	छट्ठा ग्रैवेयक	२८ सागरोपम	अनुराधा	भाद्रपद कृष्णा अष्टमी
८	श्री चन्द्रप्रभ	पद्म राजा	वैजयन्त विमान	३३ सागरोपम	अनुराधा	चैत्र कृष्णा पचमी
९	श्री सुविधिनाथ	महापद्म राजा	वैजयन्त विमान	३३ सागरोपम	मूल	फाल्गुन कृष्णा नवमी
१०	श्री शीतलनाथ	पद्मोत्तर राजा	प्राणत कल्प	२० सागरोपम	पूर्वाषाढा	वैशाख कृष्णा षष्ठी
११	श्री श्रेयासनाथ	नलिनीगुल्म	महाशुक्र	१७ सागरोपम (उत्कृष्ट आयु)	श्रवण	जेठ कृष्णा षष्ठी
१२	श्री वासुपूज्य	पद्मोत्तर राजा	प्राणत	२० सागरोपम (उत्कृष्ट आयु)	शतभिषा	जेठ शुक्ला नवमी

जन्म नक्षत्र	जन्म तिथि	पिता का नाम	गाता का नाम	नगरी	आयुष्य
उत्तराषाढा	चैत्र कृष्णा अष्टमी	नाभिराजा	गरुदेवी	विनीता	८४ लाख पूर्व
रोहिणी	माघ शुक्ला अष्टमी	जितशत्रु	विजया देवी	विनीता	७२ लाख पूर्व
मृगशिरा	मिगसर शुक्ला चतुर्दशी	जितारि राजा	सेना देवी	श्रावस्ती	६० लाख पूर्व
अभीजित	माघ शुक्ला द्वितीया	सवर राजा	सिद्धार्था रानी	अयोध्या	५० लाख पूर्व
मघा	वैशाख शुक्ला अष्टमी	मेध राजा	मगला रानी	विनीता	४० लाख पूर्व
चित्रा	कार्तिक कृष्णा तेरस	धर राजा	सुसीमा रानी	कौशाम्बी	३० लाख पूर्व
विशाखा	जेठ शुक्ला तेरस	प्रतिष्ठ राजा	पृथ्वी रानी	वाराणसी	२० लाख पूर्व
अनुराधा	पौष कृष्णा तेरस	महासेन राजा	लक्ष्मणा रानी	चद्रानना	१० लाख पूर्व
मूल	मिगसर कृष्णा अष्टमी	सुग्रीव राजा	रामा रानी	काकन्दी	२ लाख पूर्व
पूर्वाषाढा	माघ कृष्णा बारस	दृढरथ राजा	नन्दा रानी	भद्दिलपुर	१ लाख पूर्व
श्रवण	फाल्गुन कृष्णा बारस	विष्णु राजा	विष्णु देवी	सिहपुर	८४ लाख वर्ष
वरुण	फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी	वसुपूज्य राजा	जया रानी	चपा नगरी	७२ लाख वर्ष

क्र स	नाम	पूर्वभव का नाम	देवलोक का नाम	देवलोक आयुष्य	च्यवन नक्षत्र	च्यवन तिथि
१३	विमलनाथ	पद्मसेन राजा	सहस्रार	१८ सागरोपम	उत्तराभाद्रपद	वैशाख शुक्ला बारस
१४	अनन्तनाथ	पद्मरथ राजा	प्राणत	२० सागरोपम	रेवती	श्रावण कृष्णा सप्तमी
१५	धर्मनाथ	दृढरथ राजा	वैजयन्त	३२ सागरोपम	पुष्य	वैशाख शुक्ला सप्तमी
१६	शान्तिनाथ	मेघरथ राजा	सर्वार्थसिद्ध	३३ सागरोपम	भरणी	भाद्रपद कृष्णा सप्तमी
१७	कुन्थुनाथ	सिहावह राजा	सर्वार्थसिद्ध	३३ सागरोपम	कृतिका	श्रावण कृष्णा नवमी
१८	अरनाथ	धनपति राजा	नवम् ग्रैवेयक मतान्तर मे सर्वार्द्ध सिद्ध विमान	३१ सागरोपम मतान्तर मे ३३ सागरोपम	रेवती	फाल्गुन शुक्ला बीज
१९	मल्लिनाथ	महाबल राजा	वैजयन्त	३२ सागरोपम	अश्विनी	फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी
२०	मुनिसुव्रत	सुरश्रेष्ठ राजा	प्राणतकल्प मतान्तर में अपराजित विमान	२० सागरोपम मतान्तर मे ३२ सागरोपम	श्रवण	श्रावण पूर्णिमा
२१	नमिनाथ	सिद्धार्थ राजा	अपराजित विमान	३२ सागरोपम	अश्विनी	आसोज शुक्ला पूर्णिमा
२२	अरिष्टनेमि	शख राजा	अपराजित विमान	३२ सागरोपम	चित्रा	कार्तिक कृष्णा बारस
२३	पारसनाथ	सुवर्णबाहु राजा	प्राणत कल्प	२० सागरोपम	विशाखा	चैत्र कृष्णा चतुर्थी
२४	महावीर	नन्दन मुनि	प्राणत देवलोक	२० सागरोपम	उत्तराषाढा	आषाढ शुक्ला षष्ठी

जन्म नक्षत्र	जन्म तिथि	पिता का नाम	माता का नाम	नगरी	आयुष्य
उत्तराभाद्र पद	माघ शुक्ला तीज	कृतवर्मा राजा	श्यामा देवी रानी	कापिल्य	६० लाख वर्ष
पुष्य	वैशाख कृष्णा तेरस	सिहसेन राजा	सुयशा रानी	अयोध्या	३० लाख वर्ष
पुष्य	माघ शुक्ला तीज	भानु राजा	सुव्रता रानी	रत्नपुर	१० लाख वर्ष
भरणी	जेठ कृष्णा तेरस	विश्वसेन राजा	अचिरा (अचला)	हस्तिनापुर	१ लाख वर्ष
कृतिका	वैशाख कृष्णा चतुर्दशी	सूर राजा	श्रीदेवी राणी	हस्तिनापुर	६५ हजार वर्ष
रेवती	माघ शुक्ला दशमी	सुदर्शन राजा	महादेवी राणी	हस्तिनापुर	८४ हजार वर्ष
अश्विनी	माघ शुक्ला एकादशी	कुभ राजा	प्रभावती	मिथिला	५५ हजार वर्ष
श्रवण	जेठ कृष्णा अष्ठमी	सुमित्र राजा	पद्मावती रानी	राजगृह	३० हजार वर्ष
अश्विनी	श्रावण कृष्णा अष्टमी	विजय राजा	वप्रा रानी	मिथिला	१० हजार वर्ष
चित्रा	श्रावण शुक्ला पचमी	समुन्द्र विजय राजा	शिवा देवी रानी	सूर्यपुर	१ हजार वर्ष
अनुराधा	पौष कृष्णा दशमी	अश्वसेन राजा	वामा देवी	वाराणसी	१०० वर्ष
उत्तराषाढा	चैत्र शुक्ला तेरस	सिद्धार्थ राजा	त्रिशला देवी राणी	क्षत्रियकुड नगर	७२ वर्ष

क्र स	नाम	कुमार वय	राज पदवी	धनुष	वर्ण	लक्षण	दीक्षा शिविका तथा उद्यान
१	श्री ऋषभदेव	२० लाख पूर्व	६३ लाख पूर्व	५०० धनुष	सुवर्ण	वृषभ	सुदर्शन शिविका तथा सिद्धार्थ नाम उद्यान
२	श्री अजितनाथ	१८ लाख पूर्व	५३ लाख पूर्व	४५० धनुष	सुवर्ण	गज	सुप्रभा शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
३	श्री सभवनाथ	१५ लाख पूर्व	४४ लाख पूर्व	४०० धनुष	सुवर्ण	अश्व	सिद्धार्था शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
४	श्री अभिनन्दन	१२½ लाख पूर्व	३६½ लाख पूर्व	३५० धनुष	सुवर्ण	वानर	अर्थसिद्ध शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
५	श्री सुमतिनाथ	१० लाख पूर्व	२६ लाख पूर्व	३०० धनुष	सुवर्ण	क्रोचपक्षी	अभयकरा शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
६	श्री पद्मप्रभु	७½ लाख पूर्व	२१½ लाख पूर्व	२५० धनुष	पद्म (लाल)	पद्म	सुखकारी शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
७	श्री सुपार्श्वनाथ	५ लाख पूर्व	१४ लाख पूर्व	२०० धनुष	सुवर्ण	स्वस्तिक	मनोहरा शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
८	श्री चन्द्रप्रभ	२½ लाख पूर्व	६½ लाख पूर्व	१५० धनुष	श्वेत	चन्द्र	मनोरमा शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
९	श्री सुविधिनाथ	½ लाख पूर्व	½ लाख पूर्व	१०० धनुष	श्वेत	मगर	सूरप्रभा शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
१०	श्री शीतलनाथ	२५ हजार पूर्व	५० हजार पूर्व	६० धनुष	सुवर्ण	श्री वत्स	चद्रप्रभा शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
११	श्री श्रेयासनाथ	२१ लाख पूर्व	४२ लाख पूर्व	८० धनुष	सुवर्ण	गेडा	विमलप्रभा शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
१२	श्री वासुपूज्य	१८ लाख पूर्व		७० धनुष	लाल	महिष	पृथ्वी शिविका तथा विहार ग्रह उद्यान

दीक्षा तिथि	कितनो के साथ दीक्षा ली	छद्मस्थ	केवलज्ञान नक्षत्र	केवलज्ञान तिथि	प्रथम गणधर	शासनदेव
चैत्र कृष्णा अष्टमी	४ हजार राजाओ के साथ	१ हजार वर्ष	उत्तरापाढा	फाल्गुन कृष्णा ग्यारस	ऋषभसेन	गोमुख
माघ शुक्ला नवमी	१ हजार राजाओ के साथ	१२ वर्ष	रोहिणी	पोप शुक्ला एकादशी	सिहसेनजी	महायक्ष
मिगसर शुक्ला पूर्णिमा	१ हजार राजाओ के साथ	१४ वर्ष	गृगशिरा	कार्तिक कृष्णा पचमी	चारु	त्रिभुज
माघ शुक्ला बारस	१ हजार राजाओ के साथ	१८ वर्ष	अभिजीत	पोप शुक्ला चतुर्दशी	वज्रनाभ	यक्षेश्वर
वैशाख शुक्ला नवमी	१ हजार राजाओ के साथ	२० वर्ष	मघा	चैत्र शुक्ला एकादशी	चमर	तुबरु
कार्तिक कृष्णा तेरस	१ हजार राजाओ के साथ	६ महीना	चित्रा	चैत्र शुक्ला पूर्णिमा	सुव्रत	कुसुम
जेठ शुक्ला तेरस	१ हजार राजाओ के साथ	६ महीना	विशाखा	फाल्गुन कृष्णा षष्ठी	विदर्भ	मातग
पौष कृष्णा तेरस	१ हजार राजाओ के साथ	३ महीना	अनुराधा	फाल्गुन कृष्णा सप्तमी	दत्त	विजय
मिगसर कृष्णा अष्टमी	१ हजार राजाओ के साथ	४ महीना	मूल	कार्तिक शुक्ला तृतीया	वराह	अजित
माघ कृष्णा बारस	१ हजार राजाओ के साथ	३ महीना	पूर्वाषाढा	पौष कृष्णा चतुर्दशी	आनन्द	ब्रह्म
फाल्गुन कृष्णा तेरस	१ हजार राजाओ के साथ	२ महीना	श्रवण	माघ कृष्णा अमावस	गोशुभ	ईश्वर (मनुज)
फाल्गुन कृष्णा अमावस्या	६०० राजाओ के साथ	१ महीना	शतभिषा	माघ शुक्ला द्वितीया	सूक्ष्म	कुमार

क्र स	नाम	कुमार वय	राज पदवी	धनुष	वर्ण	लक्षण	दीक्षा शिविका तथा उद्यान
१३	विमलनाथ	१५ लाख वर्ष	३० लाख वर्ष	६० धनुष	सुवर्ण	सूर	देवदत्ता शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
१४	अनन्तनाथ	७½ लाख वर्ष	१५ लाख वर्ष	५० धनुष	सुवर्ण	सिचाण (बाज)	सागरदत्ता शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
१५	धर्मनाथ	२½ लाख वर्ष	५ लाख वर्ष	४५ धनुष	सुवर्ण	वज्र	नागदत्ता शिविका तथा वप्रकाचन उद्यान
१६	शान्तिनाथ	२५ हजार वर्ष	२५ हजार वर्ष मडलीक राजा २५ हजार वर्ष चक्रवर्ती पदवी	४० धनुष	सुवर्ण	मृगाक (चन्द्र)	सर्वार्थ शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
१७	कुन्थुनाथ	२३ $\frac{3}{4}$ लाख वर्ष	२३ ३/४ हजार वर्ष राज पदवी २३ ३/४ हजार वर्ष चक्रवर्ती पदवी	३५ धनुष	सुवर्ण	बकरी	विजया शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
१८	अरनाथ	२१ हजार वर्ष	२१ हजार वर्ष मडलीक राजा २१ हजार वर्ष चक्रवर्ती पदवी	३० धनुष	सुवर्ण	नन्दावर्त	वैजयन्ती शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
१९	मल्लिनाथ	१०० वर्ष		२५ धनुष	नीला	कुभ	जयन्ती शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
२०	मुनिसुव्रत	७½ हजार वर्ष	१५ हजार वर्ष	२० धनुष	श्याम	कूर्म	अपराजिता शिविका तथा नील गुहा उद्यान
२१	नमिनाथ	2 ½ हजार वर्ष	५ हजार वर्ष	१५ धनुष	सुवर्ण	नीलकमल	देवकुरु शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
२२	अरिष्टनेमि	३०० वर्ष		१० धनुष	कृष्ण	शख	उत्तरकुरु शिविका तथा सहस्राम्र वन उद्यान
२३	पारसनाथ	३० वर्ष		६ हस्त	नीला	सर्प	विशाला शिविका तथा आश्रमपद उद्यान
२४	महावीर	३० वर्ष		७ हस्त	सुवर्ण	सिह	चद्रप्रभा शिविका तथा ज्ञात खण्ड उद्यान

दीक्षा तिथि	कितनो के नाम दीक्षा ली	छद्मस्थ	केवलज्ञान नक्षत्र	केवलज्ञान तिथि	प्रथम गणधर	शासनदेव
माघ शुक्ला चौथ	१ हजार राजाओ के साथ	२ वर्ष गतान्तर २ महीना	उत्तराभाद्रपद	पोष शुक्ला षष्ठी	मन्दर	षणमुज
वैशाख कृष्णा चतुर्दशी	१ हजार राजाओ के साथ	३ वर्ष मतान्तर ३ महीना	रेवती	वैशाख कृष्णा चतुर्दशी	यश	पाताल
माघ शुक्ला तेरस	१ हजार राजाओ के साथ	२ वर्ष मतान्तर २ महीना	पुण्य	पौष शुक्ला पूर्णिमा	अरिष्ट	किन्नर
जेठ कृष्णा चतुर्दशी	१ हजार राजाओ के साथ	१ वर्ष मतान्तर १ महीना	भरणी	पोष शुक्ला नवमी	चक्रायुद्ध	गरुड
वैशाख कृष्णा पचमी	१ हजार राजाओ के साथ	१६ वर्ष मतान्तर १६ महीना	कृतिका	चैत्र शुक्ला तीज	स्वयभू	गन्धर्व
माघ शुक्ला एकादशी	१ हजार राजाओ के साथ	३ वर्ष मतान्तर ६ महीना	रेवती	कार्तिक शुक्ला बारस	कुभ	षट्भुज
मिगसर शुक्ला एकादशी	१ हजार पुरुष ३०० स्त्रियो के साथ	१ प्रहर झाझेरी	अश्विनी	मिगसर शुक्ला एकादशी	भिषक (अभिक्षक)	कुबेर
माघ शुक्ला बारस	१ हजार राजाओ के साथ	११ महीना	श्रवण	फाल्गुन कृष्णा बारस	इन्द्र	वरुण
आषाढ कृष्णा नवमी	१ हजार राजाओ के साथ	६ महीना	अश्विनी	मिगसर शुक्ला एकादशी	कुभ	भ्रकुटी
श्रावण शुक्ला षष्ठी	१ हजार राजाओ के साथ	५४ दिन	चित्रा	आसोज कृष्णा अमावस्या	वरदत्त	गोमेध
पौष कृष्णा एकादशी	३०० राजाओ के साथ	८४ दिन मतान्तर ८३ दिन	विशाखा	चैत्र कृष्णा चतुर्थी	आर्यदत्त	पार्श्व
मिगसर कृष्णा दशमी	अकेले	१२½ वर्ष १५ दिन	उत्तराषाढा	वैशाख शुक्ला दशमी	इन्द्रभूति	मातगा

क्र स	नाम	शासनदेवी	दीक्षा पर्याय	निर्वाण तिथि	अन्तरमान
१	श्री ऋषभदेव	चक्रेश्वरी	१ लाख पूर्व	माघ कृष्णा त्रयोदशी	–
२	श्री अजितनाथ	अजित बला	१ लाख पूर्व	चैत्र शुक्ला पचमी	५० लाख कोटि सागरोपम
३	श्री सभवनाथ	दुरितारि	१ लाख पूर्व	चैत्र शुक्ला पचमी	३० लाख कोटि सागरोपम
४	श्री अभिनन्दन	कालिका	१ लाख पूर्व	वैशाख शुक्ला अष्टमी	१० लाख करोड सागरोपम
५	श्री सुमतिनाथ	महाकाली	१ लाख पूर्व	चैत्र शुक्ला नवमी	६ लाख कोटि सागरोपम
६	श्री पद्मप्रभु	अच्युता	१ लाख पूर्व	मिगसर कृष्णा एकादशी	६००० कोटि सागरोपम
७	श्री सुपार्श्वनाथ	शाता	१ लाख पूर्व	फाल्गुनी कृष्णा सप्तमी	६००० करोड सागरोपम
८	श्री चन्द्रप्रभ	भ्रकुटी	१ लाख पूर्व	भाद्रपद कृष्णा सप्तमी	६०० कोटि सागरोपम
६	श्री सुविधिनाथ	सुतारा	१ लाख पूर्व	कार्तिक कृष्णा नवमी	६ कोटि सागरोपम
१०	श्री शीतलनाथ	अशोका	२५ हजार पूर्व	वैशाख कृष्णा बीज	६ कोटि सागरोपम
११	श्री श्रेयासनाथ	मानवी (श्री वत्सा)	२१ लाख वर्ष	श्रावण कृष्णा तृतीया	१ करोड सागरोपम मे १०० सागर कम
१२	श्री वासुपूज्य	चन्द्रा	५४ लाख वर्ष	आषाढ शुक्ला चतुर्दशी	५४ सागरोपम

क्र स	नाम	शासनदेवी	दीक्षा पर्याय	निर्वाण तिथि	अन्तरमान
१३	विमलनाथ	विदिता	१५ लाख वर्ष	आषाढ कृष्णा सप्तमी	३० सागरोपम
१४	अनन्तनाथ	अकुशा	७½ लाख वर्ष	चैत्र शुक्ला पचमी	६ सागरोपम
१५	धर्मनाथ	कन्दर्पा	२½ लाख वर्ष	जेठ शुक्ला पचमी	४ सागर
१६	शान्तिनाथ	निर्वाणी	२५ हजार वर्ष	जेठ कृष्णा तेरस	३ सागर मे पौन पल कम
१७	कुन्थुनाथ	बला	२३ $\frac{3}{4}$ हजार वर्ष	वेशाख कृष्णा एकम	अर्ध पल्योपम
१८	अरनाथ	धारिणी	२१ हजार वर्ष	माघ शुक्ला दशमी	कोटि हजार वर्ष कम पल्योपम का चोथा भाग
१९	मल्लिनाथ	वैरोट्या	१०० वर्ष कम ५५ हजार वर्ष	फाल्गुन शुक्ला बारस	कोटि हजार वर्ष
२०	मुनिसुव्रत	नरदत्ता	७½ हजार वर्ष	ज्येष्ठ कृष्णा नवमी	५४ हजार वर्ष
२१	नमिनाथ	गाधारी	२½ हजार वर्ष	वैशाख कृष्णा दशमी	६ लाख वर्ष
२२	अरिष्टनेमि	अम्बिका	७०० वर्ष	आषाढ शुक्ला अष्टमी	५ लाख वर्ष
२३	पारसनाथ	पद्मावती	७० वर्ष	श्रावण शुक्ला अष्टमी	८३ हजार ७५० वर्ष
२४	महावीर	सिद्धायिका	४२ वर्ष	कार्तिक कृष्णा अमावस्या	२५० वर्ष

पांचों महाविदेह क्षेत्र के 160 तीर्थकरों के नाम

जबूद्वीप के महाविदेह के ३२ तीर्थंकर

१ श्री जयदेव जी , २ श्री करण भद्रजी, ३ श्री लक्ष्मीपति जी, ४ श्री गगाधरजी, ५ श्री विशालचन्द्र जी, ६ श्री प्रियकर जी, ७ श्री अमरधर जी, ८ श्री कृष्णनाथ जी, ९ श्री अनन्तहृदय जी, १० श्री गुणगुप्त जी, ११ श्री पद्मनाथ जी, १२ श्री जलधर जी म, १३ श्री युगादित्य जी, १४ श्री वरदत्त जी, १५ श्री चन्द्रकेतु जी, १६ श्री महाकाय जी, १७ श्री अमरकेतुजी, १८ श्री अरण्यवास जी, १९ श्री हरिहर जी, २० श्री रामचन्द्र जी, २१ श्री शातिदेव जी, २२ श्री अन्नतर्कत जी, २३ गजेन्द्र प्रभु जी, २४ श्री सागर चन्द्र जी, २५ श्री महेश्वर जी, २६ श्री लक्ष्मीचन्द्र जी, २७ श्री ऋषभनाथ जी, २८ श्री सौम्यकान्त जी, २९ श्री नेमीभद्र जी, ३० श्री अजितभद्र जी, ३१ श्री महीधर जी, ३२ श्री राजेन्द्रश्वर जी।

घातकी खंड द्वीप के पूर्व महाविदेह के ३२ तीर्थंकर .

१ श्री वीरचन्द्र जी, २ श्री वत्ससेन जी, ३ श्री नलकान्त जी, ४ श्री मुजकेश जी, ५ श्री ऋकमाक जी, ६ श्री क्षेमकर जी, ७ श्री मृगाक जी, ८ श्री मुनिमूर्तिजी, ९ श्री विमलचन्द्र जी, १० श्री आगमिक जी, ११ श्री दुष्कर तपजी, १२ श्री वसुद्वीप जी, १३ श्री महल्लनाथ जी, १४ श्री वनदेव जी, १५ श्री वलभूत जी, १६ श्री अमृतवाहन जी, १७ श्री पोर्णिमेन्द्र जी, १८ श्री रेवाकित जी, १९ श्री कल्पशाक जी, २० श्री नलणादित्त जी, २१ श्री विद्या पतिजी, २२ श्री सुपार्श्व जी, २३ श्री भानूनाथ जी २४ श्री प्रभजन जी, २५ श्री विशिष्ठनाथ जी, २६ श्री जलप्रभुजी, २७ श्री महाभीम जी, २८ श्री ऋषिपाल जी, २९ श्री कुडदन्तजी, ३० श्री महावीर जी, ३१ श्री मृतानन्द जी, ३२ तीर्थेश्वर जी।

घातकी खंड द्वीप के पश्चिम महाविदेह के ३२ तीर्थंकर

१ श्री दत्त जी, २ श्री भूमिपतिजी, ३ श्री मेरूदत्त जी, ४ श्री सुमित्र जी, ५ श्री सेननाथ जी, ६ श्री प्रभानन्द जी, ७ श्री पद्माकर जी, ८ श्री महाघोष जी ९ श्री चन्द्रप्रभु जी, १० श्री भूमि पाल जी, ११ श्री सुमति सेन जी, १२ श्री अतिअचूत जी, १३ श्री तीर्थभूत जी, १४ श्री ललिताग जी, १५ श्री अमर चद जी, १६ श्री समाधिनाथ जी, १७ मुनिचद जी, १८ श्री महेन्द्र जी, १९ श्री शशाक जी, २० श्री जगदीश्वर जी, २१ श्री देवेन्द्र जी, २२ गुणनाथ जी, २३ श्री नारायण जी, २४ श्री कपिलनाथ जी, २५ श्री प्रभाकर जी, २६ श्री जिन रक्षित जी, २७ श्री सकलनाथ जी, २८ श्री सीलारनाथ जी, २९ श्री उद्योतनाथ जी, ३० श्री वज्रधर जी, ३१ श्री सहस्रधर जी, ३२ श्री आशोकदत्त जी।

पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व महाविदेह के ३२ तीर्थंकर

१ श्री मेघवाहन जी, २ श्री जीव रक्षक जी, ३ श्री महापुरुष जी ४ श्री पापहरजी, ५ श्री मृगाकजी, ७ श्री सुरसिहजी, ७ श्री जगतपूज्य जी, ८ श्री सुगति नाथ जी, ९ श्री महामहेद्रजी, १० श्री अमरभूति जी, ११ श्री कुमार चद्र जी, १२ श्री वीरसेनजी, १३ श्री रमणनाथ जी, १४ श्री स्वयभूनाथ जी, १५ श्री अचल नाथ जी, १६ श्री मकरकेतु जी १७ श्री सिद्धार्थनाथ जी, १८ श्री सफलनाथ जी, १९ श्री विजयदेव जी, २० श्री नरसिहनाथ जी, २१ श्री सीतानदजी, २२ श्री वृन्दारकजी, २३ श्री चद्रतप जी, २४ श्री चद्रगुप्त जी, २५ श्री दृढरथनाथ जी, २६ श्री महायशजी, २७ श्री उग्माकजी, २८ श्री प्रद्युम्नजी, २९ श्री महातेजजी, ३० श्री पुष्पकेतुजी, ३१ श्री कामदेव जी, ३२ श्री समरकेतु जी।

पुष्करार्ध द्वीप के पश्चिम महाविदेह के ३२ तीर्थंकर

१ श्री प्रसन्नचन्द्रजी, २ श्री महासेन जी, ३ श्री वज्रनाथजी, ४ श्री सुवर्ण बाहुजी, ५ श्री कुरुविन्दजी, ६ श्री वज्रवीर्य जी, ७ श्री विमल चद्र जी, ८ श्री यशोधर जी, ९ श्री महाबल जी, १० श्री वज्रसेन जी, ११ श्री विमलबोधजी, १२ श्री भीमनाथ जी, १३ श्री मेरुप्रभुजी, १४ श्री भद्रगुप्त जी, १५ श्री सुदृढ सिहजी, १६ श्री सुव्रतनाथ जी, १७ श्री हरिश्चन्द्र जी, १८ श्री प्रतिमाधार जी, १९ श्री प्रति श्रेय जी, २० श्री प्रतिसेण जी, २१ श्री कनक केतुजी, २२ श्री अजित वीर जी, २३ श्री फाल्गुन मित्र जी, २४ श्री ब्रह्मभूत जी, २५ श्री हितकरजी, २६ श्री वरुणदत्तजी, २७ श्री यश कीर्तिजी, २८ श्री नागेन्द्र कीर्ति जी, २९ श्री महीकृतब्रह्मजी, ३० श्री महेन्द्र जी, ३१ श्री वर्द्धमान जी, ३२ श्री सुरेन्द्रदत्त जी।

वर्तमान काल मे पच महाविदेह क्षेत्र मे २० तीर्थंकर हुए :

जबूद्वीप के पूर्व महाविदेह मे श्री सीमधर स्वामी, श्री बाहु स्वामी।

जबूद्वीप के पश्चिम महाविदेह मे श्री युगमदर स्वामी, श्री सुबाहु स्वामी।

पूर्व घातकी खड के पूर्व महाविदेह मे श्री सुजात स्वामीजी, श्री ऋषभानन स्वामी।

पूर्व घातकी खड के पश्चिम महाविदेह मे श्री स्वय प्रभु स्वामी जी, श्री अनतवीर्य स्वामी जी।

पश्चिम घातकी खड के पूर्व महाविदेह मे श्री सुरपुत्र स्वामी जी, श्री वज्रधर स्वामी जी।

पश्चिम घातकी खड के पश्चिम महाविदेह मे श्री विशालधर स्वामीजी, श्री चन्द्राननस्वामी जी।

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व महाविदेह मे श्री चन्द्र बाहु स्वामी जी, श्री भुजगस्वामी जी।

पूर्व पुष्करार्ध द्वीप के पश्चिम महाविदेह मे श्री ईश्वर स्वामी जी, श्री नेमप्रभस्वामी जी।

पश्चिम पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व महाविदेह मे श्री वीरसेन स्वामी, श्री देवसेनस्वामी जी।

पश्चिम पुष्करार्ध के पश्चिम महाविदेह मे श्री महाभद्र स्वामी, श्री अजितवीर्यस्वामी जी।

X X X

भगवान महावीर के बाद शासन व्यवस्था

भगवान महावीर ने मोक्ष पधारने के पूर्व ही सघीय व्यवस्था को व्यवस्थित रूप देने हेतु सारी व्यवस्था एक आचार्य मे केन्द्रित कर दी जिसका निर्देश पट्टावली मे इस प्रकार किया गया है–

भवियजणे पडिबोहिय, बाबत्तरि पालिउण वरिसहं,
सोहम्म गणहरस्सय पट्ट दाउ शिव पत्तो।।वीरवश पट्टावली।।
जैनधर्म का मौलिक इतिहास भा २ पृ ७३।।

प्रभु निर्वाण के बाद सघ ने प्रभु आज्ञानुसार कार्तिक सुदी १ वीं स १ मे गणधर सुधर्मा को आचार्य पद पर स्थापित करके उनकी आज्ञा मे चलने का सकल्प लिया। आपने २० वर्ष तक शासन व्यवस्था का उत्तरदायित्व वहन कर जबूस्वामीजी को सघ का उत्तरदायित्व सौंपकर केवली बनकर मोक्ष पधार गये।

आचार्य जबूस्वामी ने सघ के उत्तरदायित्व को वहन कर वीर सवत् ६४ मे प्रभव स्वामी को सघ का उत्तरदायित्व सौपा और केवली बनकर मोक्ष पधार गये। आप अतिम केवली व मोक्षगामी हुए। उसके बाद १० बोलो का विच्छेद हो गया। प्रभवस्वामी ने वीर सवत् ७५ मे आचार्य स्वयभव को उत्तराधिकार दिया और स्वर्गवासी हो गये।

कुछ इतिहासकारो का मन्तव्य है कि आचार्य प्रभव के बाद ही भस्मग्रह ने अपना प्रभाव दिखा दिया और सघ दिगम्बर श्वेताम्बर दो भागो मे विभाजित हो गया। इसलिये दोनो की पाट परपरा मे भिन्नता परिलक्षित होती है। जैसे दिगम्बर परपरा के अन्तर्गत आचार्य प्रभव के बाद विष्णु नदी, अपराजित, गोवर्धन और भद्रबाहु हुए और श्वेताम्बर परपरा मे आचार्य प्रभव, स्वयभव, यशोभद्र, सभूति विजय और भद्रबाहु हुए। काल गणना मे भी ८ वर्ष का अतर प्रकट हो जाता है। फिर भी भद्रबाहु को तो दोनो परम्पराए अपना पचम श्रुत केवली आचार्य मानती है। जिनका काल दिगबर परपरा वीर निर्वाण सवत् १६२ और श्वेताम्बर परपरा १७० मानती है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह काल चद्रगुप्त व चाणक्य का काल माना जाता है। ये जैन शासक के रूप मे प्रख्यात थे। यह भारत के इतिहासकार मिस्टर स्मिथ लिखते है कि "मैं अब यह विश्वास करता हू कि यह परपरा मूलरूप से यथार्थ है कि चद्रगुप्त साम्राज्य का परित्याग करके जैनमुनि बन गये थे।"

इसी बात को डॉ कासीप्रसाद एव डाईस साहब, डॉ S W टामस, प्रो हर्मन याकोबी, प्रो बसत कुमार चटर्जी ने भी स्वीकार किया है। साथ ही वराहमिहर और इन भद्रबाहु और उवस्सगहर स्तोत्र के रचयिता भद्रबाहु के बारे मे भी मतभेद है। डॉ कर्नल ने वराहमिहर का काल ई पू ६०० स्थापित किया है जबकि पच नामक पुस्तक जो वराहमिहर द्वारा लिखी गई है उसमे शक सवत् ४२७ लिखा है।

जिस समय भद्रबाहु पाटलीपुत्र मे चातुर्मासार्थ विराजमान थे। कार्तिक पूर्णिमा को राजा चद्रगुप्त पौषध आराधना करके सोये थे। अचानक १६ स्वप्न देखकर भयभीत होते हुए भद्रवाहु के चरणो मे पहुचे और उनका अर्थ पूछने लगे। भद्रबाहु ने १२ वे स्वप्न मे १२ फण वाले नाग के स्वप्न का चितन कर बताया कि निकट भविष्य मे १२ वर्ष का दुष्काल सभवित है। चन्द्रगुप्त ने स्वप्न के अर्थ का चितन मनन कर उत्कृष्ट विरक्त भाव से भद्रबाहु के चरणो मे दीक्षा ग्रहण कर ली। इधर भद्रवाहु ने भूख से छटपटाते बच्चो को देखा। उस स्वप्न का प्रभाव चालू हो गया हे यह सोचकर उन्होने दक्षिण की ओर विहार कर दिया और वहा की गुफा मे भद्रबाहु महाप्राणयोग साधना मे तन्मय हो गये। सघ के आग्रह से स्थूलिभद्र जी ने शासन व्यवस्था तो सभाली पर आपकी तीव्रज्ञान पिपासा को देखकर, सघ ने भद्रबाहु से निवेदन किया। उन्होने स्थूलिभद्र के वहा पहुचने पर वाचना देना स्वीकार कियाा ताकि उनकी साधना मे भी व्यवधान नहीं हो।

स्थूलिभद्र अणगार साधुओ के साथ उग्रविहार करके वहा पहुचे तन्मयता से १० पूर्व के ज्ञान की प्राप्ति की लेकिन अपनी बहन साध्वियो को सिह का रूप बनाकर चमत्कार वताने की बात मालूम पडते ही भद्रबाहु स्वामी ने आगे वाचना देना वद कर दिया। आखिर अधिक आग्रह करने पर ४ पूर्व की सिर्फ मूल वाचना दी। भद्रबाहु स्वामी का दक्षिण भारत मे इतना प्रभाव पडा कि सारा प्रात ही जैनधर्म का अनुयायी बन गया था। केवल पल्लव और चोल वश के राजा इसके अपवाद रहे। इसका चीनी यात्री ह्वेनसाग ने हर्षवर्धन युग के इतिहास मे सकेत किया है। इसकी साक्षी वहा की गुफाओ मे उत्खनित लेख व कन्नड व तमिल साहित्य है। लेकिन हर्मन जेकोबी का मानना था कि भद्रबाहु ने नेपाल की ओर विहार किया लेकिन यह बात इतनी ठोस प्रतीत नहीं होती।

साहित्य क्षेत्र मे भी भद्रबाहु का महान् उपकार है। वीर सवत् १७० मे आपका स्वर्गवास होने के बाद स्थूलिभद्र जी को विधिवत् आचार्य बना दिया गया। तब भद्रबाहु स्वामी की सेवा मे रत विशाखानद मुनि भद्रबाहु स्वामी के स्वर्गवास बाद जब पुन मगध मे आये और देखा कि स्थूलिभद्र के श्रमण दुष्काल से प्रेरित होकर वनो, उपवनो की जगह बस्तियो मे निवास कर रहे है तो उनको बडा अटपटा लगा। परस्पर चर्चा भी हुई लेकिन अपने एकात आग्रह से टस से मस नहीं हुए और स्थूलिभद्राचार्य से सम्बन्ध तोडकर उनके द्वारा सकलित शास्त्रो को भी अमान्य कर दिये और सघ सचेल अचेल जिनकल्प स्थविर कल्प के एकातवाद के दुराग्रह से दो भागो मे विभाजित हो गया। स २१५ मे स्थूलिभद्राचार्य अपने शिष्य महागिरि को सघ का उत्तरदायित्व सौप कर स्वर्गवासी हो गये। महागिरी ने स्थूलिभ्रदाचार्य की बहनो को कठस्थ जो अध्ययन थे उनको दशवैकालिक व आचाराग की चूलिका मे जोड दिया। आपने अपना उत्तरदायित्व आर्य सुहस्ति को सौप दिया आपने राजा अशोक के पौत्र और कुणाल के पुत्र सप्रति को प्रतिबोध दिया। जिसका जन्म वि स २७० के पोष महिने मे ई पूर्व २५७ मे हुआ था। जिसने विदेशो पर विजय प्राप्त कर आर्यगुण सुन्दर की प्रेरणा से जातिस्मरण ज्ञान

की अनुभूति से बर्मा, ईराक, ईरान, अरब, अफगानिस्थान आदि मे जैनधर्म का प्रचार कर ४० क्रोड जैन बनाये। उस समय ईशा व मोहम्मद का तो जन्म ही नहीं हुआ था। आपका वी स २३५ मे स्वर्गवास हुआ। अशोक स्वय जैनधर्म का अनुयायी था। इसके प्रमाण कल्हणकृत राजतरगिणी के १०१२ वे श्लोक मे उल्लेख है कि उसने काश्मीर तक जैनधर्म का विकास किया। प्रोफेसर कर्ण के मतानुसार उनकेद्वारा निर्मित अशोक चक्र के २४ आरे भी २४ तीर्थकरो के प्रतीक रूप है। राजवल्लीय नामक ग्रथ डा थामस द्वारा लिखित अर्लोकेथ ऑफ अशोका मे श्री पुष्टप्रमाण मिलते हैं। साथ ही राजा खार बेल के भी जैन होने के पुष्ट प्रमाण मिलते हैं, जिन्होने आगम साहित्य के विकास व सुरक्षा मे बहुत बडा योगदान दिया।

आचार्य महागिरी के बाद कुछ पट्टावलियो मे नाम का भेद परिलक्षित होता है। कोटा सप्रदाय की पाटावली और स्थानकवासियो की प्रचलित पाटावलियो मे तो वलिस्सह का नाम आता है जबकि कल्पसूत्र, नदीसूत्र और वृहदगच्छ की पाटावली मे आर्य सुहस्ति का नामोल्लेख आता है फिर भी इतिहासकारो का यह मतव्य तो स्पष्ट है कि आर्य सुहस्ति तक अनेक मतभेद होने पर भी आचार्य परपरा की कडी जुडी ही रही।

मतभेदो की उत्पत्ति के क्रम मे गोशालक जमाली का मतभेद तो प्रभु महावीर की मौजूदगी मे ही उभरकर सामने आ गया लेकिन प्रभु निर्वाण के बाद तो वह बढता ही गया। वीर स २१४ मे आषाढाचार्य नाम का अव्यक्तवादी २२० मे महागिरी के प्रशिष्य कौडिन्य का शिष्य अश्वमित्र समुच्छेद वादी (शून्यवादी), २२८ मे महागिरी का शिष्य गग दो क्रियावादी निन्हव हुआ। ३३५ मे प्रथम कालकाचार्य व ४५२ मे द्वितीय कालकाचार्य हुए जिन्होने अपनी बहन साध्वी सरस्वती को अपहरण करने वाले राजाओ से युद्ध करके छुडवाकर पुन दीक्षा ग्रहण की।

इसके साथ ही मूल आगम परम्परा मे भी एक नया मोड आया। आचार्य उमास्वाति ने आगम वाणी के भावो का सस्कृत सूत्रो मे सूत्रित किया और तत्वार्थ सूत्र का भाष्य लिखा तो उन्ही के शिष्य श्यामाचार्य ने प्रज्ञापनासूत्र की रचना की। इस प्रकार भगवान महावीर के शासन का ४७० वर्ष का एक अध्याय पूर्ण होते ही विक्रम सवत् के साथ नया अध्याय प्रारभ हुआ।

विक्रम सवत् का प्रारंभ और भगवान महावीर का शासन

उज्जैनी पर गुप्त तथा गर्दभिल्ल के बाद मे शक राजाओ ने अपना अधिकार जमा लिया था। लेकिन राजा विक्रम ने उनको परास्त कर वी सवत् ४७० मे अपनी विजय पताका फहराई तव से विक्रम सवत् की स्थापना हुई जो आज तक चल रही है।

विक्रम सवत् ३० मे विमलसूरी ने पद्म चारित्र (जैन रामायण) की प्राकृत मे रचना की। उसी बीच वि स ६ मे मथुरा मे आर्यदिन्न (स्कदिलाचार्य) के सान्निध्य मे एकादशागी की प्रथम वाचना हुई। इसलिए अर्ध मागधी के साथ शूरसेन देश की शौरसेनी भाषा का भी समावेश हुआ। पादलिप्त सूरी सिद्धसेन दिवाकर, भद्रबाहु आदि ने आगमो पर भाष्य एव चूर्णी लिखी। न्याय तर्क शास्त्रो का भी लेखन हुआ।

पईट्ठाणपुर नगरी मे शालीवाहन राजा के राज्य पर विपत्ति आने के कारण उनके आग्रह से चतुर्थी की सवत्सरी का निर्णय दिया। लेकिन आगे के लिए 'भदवयसुद्ध पचमीए पज्जोसवया' का निर्देश दिया लेकिन उनके शिष्यो ने हठाग्रह से चौथ की ही जारी रखी जिसको रत्नेश्वर सूरी कुल मडलसूरी आदि ने अप्रमाणिक ठहराकर विरोध भी प्रगट किया। वीरात् ९८० मे धनेश्वर सूरी ने कल्पसूत्र की रचना की।

आचार्य मानतुग ने वि स ६६४ वीर स ११३४ मे भक्तामर स्तोत्र की रचना की। वि स ६४५, वीरात् ११४५ मे जिनभद्र क्षमाश्रमण ने विशेषावश्यक भाष्य मूल व टीका वृहत् सग्रहणी, वृहत् क्षेत्र, समास, विशेषणवती, जीतकल्प, ध्यानशतक आदि की रचना की।

आचार्य हरिभद्र .

आपका जन्म चित्रकूट मे हुआ था। आप राजातिवारी के राजपुरोहित थे। चौदह विद्याओ के ज्ञाता कुशल व सर्वमान्य अग्निहोत्री ब्राह्मण थे। ज्ञान के गर्व मे कधे पर कुदाली, जाल व सीढी के साथ जबूलता धारण करते रहते कि इस सारे जबू द्वीप मे आकाश, पाताल व जल मे कोई मेरा प्रतिवादी नहीं टिक सकता। फिर भी मेरी प्रतिज्ञा है कि जिसके श्लोक का अर्थ मै नहीं समझ सकूगा उसीका मैं शिष्य बन जाऊगा।

एक दिन उपासरे मे याकिनी साध्वी ने स्वाध्याय करते हुए "चक्की दुग हरि पणग, पणग चक्कीण केसवा चक्की। केशव चक्की केशवहु चक्की केसीय चक्कीया" गाथा का उच्चारण किया जो उधर घूमते हुये हरिभद्र के कान मे पडी। जिससे उनको अपूर्व आश्चर्य हुआ और इसके अर्थ का चितन करने लगे पर कुछ समझ मे नहीं आया। अपनी प्रतिज्ञानुसार उपासरे मे पहुचकर अर्थ बताने के लिए प्रार्थना की। याकिनी साध्वी ने ज्योहीं उसका अर्थ स्पष्ट किया तो उन्होने अपना शिष्य बनाने का आग्रह किया। याकिनी आर्या ने उनको अपने धर्माचार्य जिनदत्त सूरी के पास भेज दिया। आपने उनकी तेजस्विता को देखकर दीक्षा प्रदान की। कठोर तपसयम का आराधन करते हुए गहन अध्ययन किया। आपके पास आपके दो भाणजे (बहिन के पुत्र) हस और परमहस शिष्य बने। स्वमत् का अध्ययन करने के बाद बौद्ध दर्शन का अध्ययन करने हेतु गुप्त वेश मे बौद्ध पीठ मे भर्ती हो गये। अकस्मात् पोल खुलने पर जब दोनो को मारने का प्रयत्न होने लगा तो मौका देखकर वहा से निकल पडे लेकिन हस को तो उन्होने पकडकर मार डाला पर परमहस बचकर गुरुचरणो मे पहुच गया। हरिभद्र सूरी को सारी बात का ज्ञान हुआ तो उन्होने बौद्धो को शास्त्र की चुनौती दी और शर्त तय हुई कि जो शास्त्रार्थ मे हारेगा उसको अग्निकूड मे कूदकर प्राण त्यागना होगा। आपके विद्याबल से १४४४ बौद्ध शिष्यो को प्राण खोने पडे। आपके गुरु जिनदत्त सूरि को मालूम पडते ही साम्रादित्य चारित्र की ३ गाथाए प्रतिबोध हेतु लिखकर भेजी जिससे आपके हृदय मे गहरा पश्चाताप हुआ और प्रायश्चित हेतु १४४४ ग्रथ रचने की प्रतिज्ञा धारण की।

वल्लभी वाचना और देवर्धि क्षमाश्रमण

देवर्धि क्षमा श्रमण का जन्म बेलाकुल पत्तन (वेरावल पाटन) मे कामर्द्धिकी धर्मपत्नी कलावती के यहा हुआ। रोहिताचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर देवगुप्त गणी के पास एक पूर्व का अर्थ ज्ञान प्राप्त किया और क्षमाश्रमण विशेषण के साथ आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। दुष्काल की चपेट मे जेनधर्म के दिग्गज श्रुतधरो का अवसान हो जाने से व बुद्धि के क्रमिक हास से श्रुत साहित्य के विच्छेद जेसी स्थिति आ गई। परस्पर विचार विमर्श से द्वादशागी को लिपिबद्ध करने का निर्णय लिया। इसका वीडा आपने उठाया क्योकि उस समय आप ही युग प्रधान थे। वीरात् ९८० मे ५०० आचार्यो को एकत्रित करके उनके मुह से त्रुटित अत्रुटित पाठो को श्रवण करके अपनी बुद्धि से सकलित कर ताडपत्र पर लिपिबद्ध किया। वि स ५३० वीरात् १००० मे आपका स्वर्गवास हो गया ओर पूर्वज्ञान का भी विच्छेद हो गया।

उसके बीच वी स ५४४ मे रोहगुप्त नामक त्रैराशिक मतवाला निन्हव हुआ। वी स ५८४ मे गोष्ठमाहिल नामक सर्प काचलीवत् जीव व शरीर सबध का प्रतिपादन करने वाला निन्हव हुआ। वी स ६०५ मे शालीवाहन सवत् चला। वी स ६०९ मे आर्यकृष्ण के शिष्य शिवभूति (सहस्रमल) व उसकी बहिन उत्तरा ने दिगबर मत की स्थापना की। वीस ६२० मे बारह काली दुष्काल पडा। अन्नाभाव मे लोग साधुओ की भिक्षावृत्ति मे प्राप्त आहार भी छीनने लग गये तब साधु मुहपति व रजोहरण छिपाकर दड धारण कर भिक्षावृत्ति से जीवन यापन करने लगे। इसी दुष्काल की चपेट मे राजगृही के जिनदत्त श्रेष्ठि के यहा वज्रस्वामी भिक्षार्थ गये तब देखा कि अन्नाभाव मे अपने २१ पुत्रो सहित जहर खाकर मरने की तैयारी कर रहे है। उन्होने उनको अपने अनुभव से जहाज का सकेत करके बचा दिया। उन्हीं २१ पुत्रो मे से नागेद्र, चन्द्र, निवृत्त और विद्याधर इन चार पुत्रो ने वज्र स्वामी के पास दीक्षा ग्रहण की। उनके नाम से चार शाखाए चली जो दो दिगबर दो श्वेताबर रह गई। वी स ६८४ मे साचौर मे महावीर स्वामी की प्रथम प्रतिमा बनी। तब से श्वेताबर दिगबर दोनो मूर्तिपूजक–अमूर्ति पूजक रूप मे विभाजित होकर अनेक आरभ परिग्रहजनित प्रवृत्तियो मे उलझकर मदिर निर्माण और मूर्तिपूजा आदि को ही धर्म का प्रमुख आधार मानने लग गये। आगे चलकर तो ताडपत्र पर लिखित आगम निधि को गुप्त भडारो मे कैद करके रास, चौथाई यत्र मत्र आदि से जन मानस को प्रभावित करने लगे गये। जो कुछ आत्मार्थी साधक थे वे सुदूर प्रातो मे आगमोल्लेखित शुद्ध साधुमार्ग का आराधन करते हुए विचरण करने लगे।

वी स ६९५ मे रत्नप्रभ सूरी ने ओसिया मे ओसवाल बनाये। वी स ८२० मे चौदस की पक्खी चली। वी स ८६४ मे गध हस्ती प्रथम टीकाकार हुए। वी स ८८२ मे पूजापोथी देहरावास प्रारभ हुआ। वी स ९५७ मे दिगम्बरो मे सम्मेद शिखर तीर्थ बनाया। वी स ९९३ मे कालकाचार्य तृतीय ने

पईट्ठाणपुर नगरी मे शालीवाहन राजा के राज्य पर विपत्ति आने के कारण उनके आग्रह से चतुर्थी की सवत्सरी का निर्णय दिया। लेकिन आगे के लिए 'भदवयसुद्ध पचमीए पज्जोसवया' का निर्देश दिया लेकिन उनके शिष्यो ने हठाग्रह से चौथ की ही जारी रखी जिसको रत्नेश्वर सूरी कुल मडलसूरी आदि ने अप्रमाणिक ठहराकर विरोध भी प्रगट किया। वीरात् ९८० मे धनेश्वर सूरी ने कल्पसूत्र की रचना की।

आचार्य मानतुग ने वि स ६६४ वीर स ११३४ मे भक्तामर स्तोत्र की रचना की। वि स ६४५, वीरात् ११४५ मे जिनभद्र क्षमाश्रमण ने विशेषावश्यक भाष्य मूल व टीका वृहत् सग्रहणी, वृहत् क्षेत्र, समास, विशेषणवती, जीतकल्प, ध्यानशतक आदि की रचना की।

आचार्य हरिभद्र -

आपका जन्म चित्रकूट मे हुआ था। आप राजातिवारी के राजपुरोहित थे। चौदह विद्याओ के ज्ञाता कुशल व सर्वमान्य अग्निहोत्री ब्राह्मण थे। ज्ञान के गर्व मे कधे पर कुदाली, जाल व सीढी के साथ जबूलता धारण करते रहते कि इस सारे जबू द्वीप मे आकाश, पाताल व जल मे कोई मेरा प्रतिवादी नहीं टिक सकता। फिर भी मेरी प्रतिज्ञा है कि जिसके श्लोक का अर्थ मैं नहीं समझ सकूगा उसीका मै शिष्य बन जाऊगा।

एक दिन उपासरे मे याकिनी साध्वी ने स्वाध्याय करते हुए "चक्की दुग हरि पणग, पणग चक्कीण केसवा चक्की। केशव चक्की केशवहु चक्की केसीय चक्कीया" गाथा का उच्चारण किया जो उधर घूमते हुये हरिभद्र के कान मे पडी। जिससे उनको अपूर्व आश्चर्य हुआ और इसके अर्थ का चितन करने लगे पर कुछ समझ मे नहीं आया। अपनी प्रतिज्ञानुसार उपासरे मे पहुचकर अर्थ बताने के लिए प्रार्थना की। याकिनी साध्वी ने ज्योहीं उसका अर्थ स्पष्ट किया तो उन्होने अपना शिष्य बनाने का आग्रह किया। याकिनी आर्या ने उनको अपने धर्माचार्य जिनदत्त सूरी के पास भेज दिया। आपने उनकी तेजस्विता को देखकर दीक्षा प्रदान की। कठोर तपसयम का आराधन करते हुए गहन अध्ययन किया। आपके पास आपके दो भाणजे (बहिन के पुत्र) हस और परमहस शिष्य बने। स्वमत् का अध्ययन करने के बाद बौद्ध दर्शन का अध्ययन करने हेतु गुप्त वेश मे बौद्ध पीठ मे भर्ती हो गये। अकस्मात् पोल खुलने पर जब दोनो को मारने का प्रयत्न होने लगा तो मौका देखकर वहा से निकल पडे लेकिन हस को तो उन्होने पकडकर मार डाला पर परमहस बचकर गुरुचरणो मे पहुच गया। हरिभद्र सूरी को सारी बात का ज्ञान हुआ तो उन्होने बौद्धो को शास्त्र की चुनौती दी और शर्त तय हुई कि जो शास्त्रार्थ मे हारेगा उसको अग्निकूड मे कूदकर प्राण त्यागना होगा। आपके विद्याबल से १४४४ बौद्ध शिष्यो को प्राण खोने पडे। आपके गुरु जिनदत्त सूरि को मालूम पडते ही साम्रादित्य चारित्र की ३ गाथाए प्रतिबोध हेतु लिखकर भेजी जिससे आपके हृदय मे गहरा पश्चाताप हुआ और प्रायश्चित हेतु १४४४ ग्रथ रचने की प्रतिज्ञा धारण की।

उद्योतन सूरि

आपका काल विक्रम स ८३४, वीर स १३०४ का है आपके धर्मगुरु तत्त्वाचार्य व विद्यागुरु हरिभद्रसूरि ही थे आपकी प्रसिद्ध रचना कुवलयमाला चरित्र है।

बप्पभट्टसूरि

आपका जन्म वि स ८०० मे हुआ। दीक्षा ८०६ मे ग्रहण कर २२ वर्ष की आयु मे आचार्य बने। आपके गुरु सिद्धसेन सूरि थे। तत्कालीन ग्वालियर नरेश ने आपके पास दीक्षा ग्रहण की। आपकी बुद्धि इतनी निर्मल थी कि १ हजार श्लोक प्रतिदिन याद कर लेते थे। आपने वगाल के राजाओ और भोजराजाओ को प्रतिबोध दिया।

शीलकाचार्य

आप विक्रम स ९२५, वीरात् १३९५ मे मानदेव सूरी के शिष्य बने। आपने ११ अग पर टीका लिखी और ५४ श्लाघ्य पुरुषो का प्राकृत मे चरित्र लिखा।

सिद्धर्षिसूरि

आपका विक्रम स ८६२ का काल माना जाता जो वीर सवत् १४३२ होता है। जो गुजरात के श्रीमाली नगर के मत्री सुप्रभदेव के पौत्र थे और शुभकर के पुत्र थे। कवि माघ इनके चचेरे भाई थे। यौवन वय मे जुए के व्यसनी हो गये थे। एक दिन माता की फटकार से खिन्न हो घर से भागकर उपाश्रय मे चले गये और दुर्गस्वामी के पास दीक्षित हो गये। आपने विद्ववत्ता प्राप्त कर उपमिति भव प्रपच कथा, चद्रकेवली चरित्र की अलकारमय रचना की।

अभयदेव सूरि .

आपने मालव प्रात की धारा नगरी के श्रेष्ठि महीधर की पत्नी धनदेवी की कुक्षि से जन्म लिया और प्रद्युम्न सूरि के शिष्य बने। आप सस्कृत के तथा न्याय दर्शन के प्रकाड विद्वान बने। इसके साथ ही विक्रम की ११ वीं सदी मे धनेश्वर सूरि, शान्तिसूरि, वर्धमान सूरि, जिनप्रभचद्रसूरि आदि अनेक विद्वान हुए।

नवागीटीकाकार अभयदेवसूरी .

आपने मेवाड के बडसाल नगर के राजा के घर जन्म लिया। नाम सागदेव रखा। जिनेश्वर देवसूरि के उपदेश से विक्रम स १०८८, वीरात् १५५८ मे दीक्षा ग्रहण की। कठोर तप एव रस परित्याग से भयकर व्याधि मे भी अदृश्य प्रेरणा से आचाराग व सूयगडाग को छोडकर ९ अगो पर टीका लिखी। वि स ११४५, वीरात् १६१५ मे स्वर्गवास हुआ। आपके चद्रप्रभ वर्द्धमानाचार्य शिष्य हुए जिन्होने विपुल साहित्य की रचना की।

मल्लधारी अभयदेव सूरि :

आपके उपदेश से सिद्धाराज पाटन नरेश ने अमारी की घोषणा कराई। आपका रणथभोर शकभरी पृथ्वीराज आदि राजाओ पर गहरा प्रभाव था। आपका वि स ११६८, वीरात् १६३८ मे ४७ दिन के अनशनपूर्वक मेडता मे स्वर्गवास हुआ।

हेमचद्राचार्य :

आपका जन्म धधुका (गुजरात) मे चार्चीग की धर्मपत्नी पाहिनी की कुक्षि से वि स ११४५, वीर सवत् १९२५ मे हुआ। नाम चगोदेव था। आपके शुभलक्षणो से प्रभावित हो आचार्य देवचद्र ने माता को समझा कर साथ मे लेकर खभात पधारे वहा राजा और आपके परम भक्त उदायन ने बडी धूमधाम से दीक्षा सम्पन्न कराकर नाम सोमचद्र रखा। अल्पवय मे आशातीत प्रगति से प्रभावित होकर आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। आपके पाटण नरेश सिद्धराज परम भक्त बने। इस प्रीतिवश आपने सिद्ध हेम शब्दानुशासन ग्रथ का निर्माण किया। राजा कुमारपाल भी आपके अनन्य उपासक बने। आपने कुमारपाल चरित्र द्वाश्रय महाकाव्य अभिधान चितामणि प्रमाण मीमासा स्याद्वाद मजरी आदि अनेक ग्रथो की रचना की जो लगभग ३ क्रोड श्लोक प्रमाण है।

वीर निर्वाण की प्रथम सहस्त्राब्दी के बाद उपरोक्त ऐतिहासिक परिवर्तनो के साथ ही विशेष रूप से ११४५ मे श्वेताम्बरो ने शत्रुजय तीर्थ बनाया। १७६४ बड गच्छ की स्थापना हुई और ८४ गच्छ बने। १४७१ मे मठधारी महात्मा गच्छ बना। १५९६ मे तक्षशीला गच्छ, १६५४ मे आचलिया गच्छ, १६७० मे खरतरगच्छ की स्थापना हुई। १७०५ मे प्रौढ सूरि ने प्रागवाट नगर मे पोरवाल जैन बनाये। १७०८ मे आगमिया गच्छ बना। १७५५ मे तपागच्छ की स्थापना हुई।

लोंकाशाह

प्रभु महावीर के बाद भस्म ग्रह के प्रभाव से आर्य स्थूलिभद्र, आर्य सुहस्ति, आर्य महागिरी के शासन काल तक तो विचारो मे मतभेद होते हुए भी शासन व्यवस्था मे एकता का रूप बना रहा। लेकिन उसके बाद धीरे–धीरे मान्यता, क्रियाए, वस्त्र, आचार सहिता पद गच्छ चेत्य मुखवस्त्रिका रजोहरण दड आहार विहार आदि निमित्तो को लेकर भयकर विग्रह का रूप बन गया। श्रमण वर्ग यत्र–मत्र–तत्र औषध निमित्त द्वारा यशलिप्सा धन सग्रह की वृत्ति मे पडकर निर्वद्य साधना के स्थान पर प्रतिमा निर्माण एव पूजा विधि आदि का सावद्य उपदेश देने लग गये। निर्वद्य साधना पर आवरण बना रहे इस उद्देश्य से साधु व यति के अलावा जैनागम कोई पढे ही नहीं इसलिये शास्त्रो को गुप्त भडारो मे रख दिये। 'पढे सूत्र तो मरे पुत्र' जैसी डराने वाली भ्रान्ति पैदा करने लगे। रास चोपाई जन्म कल्याणक आदि के माध्यम से जन समुदाय को आल्हादित करने लगे।

जिससे सामन्तशाही, शिथिलाचार व स्वच्छदता इतनी बढ गई कि जनसाधारण मे धर्म व धर्मगुरुओ के प्रति घृणा व उदासीनता व्याप्त हो गई। लेकिन किसी मे हिम्मत करके विरोध करने की क्षमता ही पैदा नहीं हो पा रही थी। इतजार थी एक ऐसे क्रातिकारी व्यक्तित्व की जो इस पर प्रहार करके शुद्ध साधुमार्ग का स्वरूप जन–जन तक पहुचा सके।

वह समय भी आया जब दो हजार वर्ष के भस्म ग्रह का प्रभाव मद पडा। सवत् १४८२ की कार्तिक पूर्णिमा को अरहटवाडा के हेमाशाह मेहता (दफ्तरी) की धर्मपत्नी गगाबाई की कुक्षि से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम लोकचद्र रखा। बालवय मे ही आपकी अनेक घटनाओ ने जनमानस के हृदयपटल पर गहरी छाप छोड दी। यौवनावस्था मे सिरोही के शाह ओघवजी की पुत्री सुदर्शना से विवाह सम्पन्न हुआ और ३ वर्ष बाद एक पुत्र हुआ जिसका नाम पूर्णचद्र रखा।

२३ वर्ष की वय मे पिता का व एक वर्ष पश्चात् माता का वियोग हो गया। राज्य की अव्यवस्था से मन उचट गया और आप वहा अहमदाबाद आकर जवाहरात का धधा करने लगे। एक बार अहमदाबाद मे बादशाह मुहम्मद के दरबार मे सूरत के जौहरी दो हीरे लेके आये। उनके परीक्षण हेतु जोहरियों की सभा बुलाई। उनके साथ आप भी गये। सबने दोनो हीरो को खरा बताया पर आपने एक को ही खरा बताया। परीक्षण से आपकी बात खरी उतरी जिससे खुश होकर बादशाह ने अपना कोषाध्यक्ष बना दिया।

एक बार चापानेर के रावल ने अहमदाबाद पर आक्रमण किया। मुहम्मदशाह के द्वारा उसके प्रति अपनी नम्रता बताने से उसका पुत्र कुतुबशाह एकदम विफर गया और क्रोध के आवेग मे पिता की हत्या कर दी। इस दृश्य से लोकाशाह के मन मे ससार से विरक्ति पैदा हो गई।

सयोग से एकदिन ज्ञानजी यति गोचरी हेतु घर आये। आप कुछ लेखन कार्य कर रहे थे। ज्योंही आपकी दृष्टि उनके अक्षरो पर पडी तो वे बहुत प्रभावित हुए और बोले भैय्या यदि आपके अक्षरो से शास्त्रो का लेखन हो जाय तो बहुत बडी श्रुत सेवा होगी। आप एक बार उपाश्रय चलिये। आप उनके साथ उपासरे मे गये वहा जैसलमेर भडार से ताड पत्र पर लिखे हुए जीर्ण शीर्ण आगम आए हुए थे। उनमे से ४५ आगम जो व्यवस्थित बच गये थे उनकी प्रतिलिपि उतारने का आदेश दिया। शास्त्रो का लेखन करते हुए आपके मन मे गहरा आकर्षण पैदा हो गया। आपने प्रत्येक शास्त्र की दो–दो प्रतिलिपिया उतारी। कुल ३२ आगमो की प्रतिलिपिया उतारने के बाद इस बात का रहस्योद्घाटन होते ही यतिजी ने लिखवाना बद कर दिया।

लोकाशाह ने समय पाकर लिखित आगमो का गहन अध्ययन करके शुद्ध साधुमार्ग का स्वरूप जनता के सामने रखने लग गये। जिसको श्रवण करके जनमानस मे अद्‌भुत क्राति का सचार होने लगा। वातावरण मे एक खलबली सी मच गई। कई लोग शुद्ध साधुमार्ग का अनुसरण करने लगे तो कई लोग उनको अधर्मी मिथ्यात्वी धर्मद्रोही कहकर भ्रान्तिया फैलाने लगे। यह बात अणहिलपुर पाटण वाले श्रेष्ठिवर्य लखमसी भाई को मालूम पडी। वे आपके मित्र थे इसीलिये आकर समझाने लगे।

लखमशी भाई एवं लोंकाशाह की चर्चा :

लखमशी भाई बोले भैया मैने सुना है कि आप लोगो को उल्टा उपदेश देकर कोई नया पथ चलाना चाहते हैं। लोकाशाह ने कहा–

'भाई साहब न तो मै कोई उपदेशक हू न नया पथ खडा करने की ही भावना है। हा सत्य की शोध करके उसका प्रतिपादन करना अपना कर्त्तव्य समझता हू।'

लखमशी भाई– सुना है कि आप मूर्तिपूजा का विरोध करते हैं। लोकाशाह–भाई साहब, मेरी विरोध की कोई भावना नहीं है लेकिन जैनागमो के अध्ययन करने से यह स्पष्ट कहता हू कि मूल आगमो मे कहीं भी तीर्थकरो की प्रतिमा व उसकी पूजा का उल्लेख नहीं है। जबकि श्रमणाचार व श्रावकाचार का गहन व सूक्ष्म विवेचन आचाराग, दशवैकालिक, उपासग, दशागादि मे भरा पडा है। ज्ञातासूत्र व रायप्रसेणी आदि सूत्रो मे भी यक्षायतन चेत्तादि के उल्लेख के अलावा जैनसाधु व श्रावको के नित्य क्रम मे जिनप्रतिमा पूजन का कहीं उल्लेख नहीं है और न ही इन कृत्रिम तीर्थो की उसकी यात्रा से मोक्ष प्राप्त हो सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि भगवान महावीर ने तो साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप चार ही सच्चे तीर्थ प्रतिपादित किये है।

लखमशी भाई–तो फिर यह प्रतिमा व उसकी पूजा कबसे प्रारभ हुई ? लोकाशाह–भाई साहब, इसके बारे मे विभिन्न–विभिन्न मत हैं। व्यवहार सूत्र की चूलिका के आधार से तो इसका प्रारभ भद्रवाहु स्वामी के स्वर्गवास बाद हुआ ऐसा परिलक्षित होता है जैसा कि–

लोभेण माला रोहेण देवल उवहाण उज्जगण जिणबिंब,
पइट्ठावण विहि पगासिस्संति अविहे पंथे।
पडिस्सइ जत्थ जे केइ साहु साहुणि सावय सावियायो,
विहिमग्गा बुहिस्सति नेसिं बहुण हिलणाणं।
निहणाणं खिसणाण मरहियाणं भविस्सई।।

अर्थात् – भद्रबाहु स्वामी ने अपने शिष्य चद्रगुप्त को पाचवे स्वप्न के अर्थ का प्रतिपादन करते हुए बताया कि बस अब कुछ समय बाद जिनबिब की प्रतिष्ठा करके श्रावक वर्ग अविधि के पथ पर चल पडेगे। जो कोई विधि पथ का वर्णन करेगा उसकी निदा होगी।

जिनदास महत्तर ने अपनी आवश्यक चूर्णी मे पूजा का विवेचन करते हुये लिखा है कि "इदाणि **पूजाकज्जंपुरस्तान पुज्जादव्व पुया। विण्हगा दीणं, भाव पूया लोगाद्दिताणं" आ चू पृ १८।।** अर्थात् पूजा दो तरह की द्रव्य और भाव इसमे से द्रव्य सावद्य पूजा निन्हवो की और निर्वद्य भाव पूजा परलोक हितकामियो की है जो अहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य युक्त गुरु भक्तय ज्ञान सत्पुष्णाणि प्रचक्षते"।

अब आपही सोचे कि मै और मेरा चित्र भारत और उसका नक्शा एक हो सकता है क्या ? वैसे ही भगवान और उसकी मूर्ति एक हो सकती है क्या ? नहीं तो अब आपही चितन करे कि जितने भी तीर्थकर हो चुके है वे वीतराग और वर्तमान मे निरजन निराकार सिद्धावस्था मे विराजमान हैं। उनका आकार या मूर्ति कैसी ? मूर्ति एक कला और पुरातत्त्व की रिद्धि हो सकती है। पर धर्म मे तो अहिसा, सयम और तप की आराधना का ही महत्त्व है।

इस प्रकार जब परस्पर चर्चा चली तो लखमशी भाई जो आये तो समझाने थे पर खुद समझ गये। इसी तरह सिरोही के नागसी, अरहरवाडा के दलीचदजी पाटण के मोतीचद जी, सूरत के शभुजी ये चारो ही सघपति भी अपने अपने विशाल सघ के साथ तीर्थयात्रा करते हुए अहमदाबाद आये और जब उन्होने भी लोकाशाह का आगम सम्मत उपदेश श्रवण किया तो इतने प्रभावित हुए कि उनमे से एक साथ ४५ व्यक्तियो ने आगमानुकूल सयम ग्रहण करने की तीव्र इच्छा प्रगट की। तब लोकाशाह ने अपनी सयम ग्रहण करने की तत्काल मे असमर्थता अभिव्यक्त करते हुए उनकी भावना को साकार करने का प्रोत्साहन देते हुए सिन्ध हैदराबाद की तरफ विचरण कर रहे सुविहित साधुमार्ग का सम्यग् आराधन करनेवाले मुनि श्री ज्ञान जी स्वामी को निमत्रण देकर २१ ठाणे से बुलाया और वि स १५२७ वैशाख शुक्ला ३ को महोत्सवपूर्वक दीक्षा दिलवाई। उन्होने लोकाशाह के महान् उपकारवश अपने को लोकाजी के साधु कहने लगे जो आगे लोकागच्छ के रूप मे प्रख्यात हुआ जिसके अनुयायियो की शाखाए विदेशो तक फैल गई और साधु साध्वियो की सख्या भी ४०० तक पहुच गई।

लोकागच्छ में विभाजन :

लोकाशाह की क्राति के ३० वर्ष पश्चात् ही कुछ विचारभेद उत्पन्न हुआ और बीजायती गच्छ बन गया। एक शतक व्यतीत होते–होते तो भाणोजी, रूपजी, जीवाजी इन ३ पाटो के बाद ही जीवाजी के शिष्य कुवरजी, वृद्ध वरसिह जी और बजरग जी ने अपनी अलग–अलग गदिया स्थापित करके गुजराती, नागोरी और उतरार्द्ध ३ भागो मे लोकागच्छ को विभाजित कर दिया और धीरे–धीरे आरभ परिग्रहधारी बन गये। यत्र, मत्र, तत्र आदि टोणा टोटका से धनोपार्जन करने लगे और शुद्ध साधुमार्ग से पतित होकर यति जीवन यापन करने लगे।

क्रियोद्धार :

उपरोक्त यति परपरा की अति स्वच्छद वृत्ति से व्यथित होकर आगमवाणी के आधार पर इन्हीं यतियो के शिष्य परिवार से निकलकर पूज्य श्री जीवराजजी, लवजी, धर्मसिहजी, धर्मदासजी एव हरजी ऋषिजी ने क्रियोद्धार करके एक अभिनव क्राति का सिहनाद किया।

क्रियोद्धारक पूज्य श्री जीवराज जी म.सा. .

आपका जन्म सूरत मे श्री वीरजी भाई की धर्मपत्नी केशरबाई की कुक्षि वि स १६०० की श्रावण शुक्ला १४ को हुआ था। शिक्षा सस्कार के बाद यौवनवय मे विवाह भी सम्पन्न हुआ लेकिन अतरभावो मे ससार से विरक्ति पैदा हो गई और कुवर जी के गच्छ के यति तेजराजजी के सान्निध्य मे यति जगाजी के पास दीक्षा ग्रहण की। आगमो के गहन अध्ययन से तत्कालीन यतिचर्या आगमानुकूल नहीं लगी। उनकी बढती हुई आचार शिथिलता एव स्वच्छदता से उदविग्न अपने साथी सत अमीपाल जी, महीपाल जी, हरजी व गिरधरजी से विचार विमर्श करके गुरुचरणो में आगमानुकूल आचरण की अर्ज की लेकिन उस ओर कोई लक्ष नहीं होते देख अपने पाचो सहयोगियो के साथ पुन महाव्रत धारण किये और शास्त्रविहित वस्त्र पात्र मुँहपत्ती रजोहरण रजस्त्राण प्रमार्जिका आदि अति आवश्यक उपकरणो के सिवाय सर्व अनावश्यक उपकरणो का त्याग करके तत्कालीन प्रचलित साधना पद्धति मे प्रवेश करने वाली विकृति का उच्छेदन करने हेतु स १५६६ मे क्रियोद्धार का शखनाद फूका और मूलरूप से लोकाशाह द्वारा लिखित ३२ शास्त्रो की प्रामाणिकता, मुँहपत्ति मुह पर बाधना ही शास्त्र विहित है और सावद्य व परिग्रह प्रवृत्ति युक्त जड चैत्य पूजा मुक्ति मार्ग मे अनावश्यक है, इन तीन सूत्रो को मूल रूप से क्रियोद्धार का आधार बनाकर शुद्ध श्रमणाचार के नियम निर्धारित किये।

मुखवस्त्रिका सिद्धि ·

आपने मुखवस्त्रिका का व्युत्पत्ति परक शाब्दिक अर्थ " **मुखस्थिता चासौ वस्त्रिका मुखवस्त्रिका**" अर्थात् जो मुख पर स्थित रहे वही मुखवस्त्रिका होती है। ऐसा स्पष्ट फरमाया कि उसको हस्तवस्त्रिका का रूप देना कितना हास्यास्पद है जबकि भगवान महावीर स्वय ने भगवती शतक १६ उद्देशे २ मे

फरमाया–"गोयमा ! जाहेणं सक्के देविदे देवराया गुंहकाय अणिजूहिताण भास, भासति ताहेण सक्के देविदे देवराया, सावज्जं मास भासई"

अर्थात् हे गौतम शक्र देवेन्द्र जब मुख को वस्त्रादि से ढककर नहीं बोलता हे तव उसकी भाषा सावद्य है और ढककर बोलता है तो वह निरवद्य होती है। हेमचद्राचार्य ने योगशास्त्र के तृतीय प्रकाश के ८७वे श्लोक मे "मुखवस्त्रमपि सम्पातिम जीव रक्षणादुष्ण मुखवात विराध्यमान बाह्य वायुकाय जीव रक्षणात् मूखे धूलि प्रवेश रक्षणाच्वो पयोगिति"

अर्थात् मुखवस्त्रिका सम्पातिम जीवो की रक्षा एव धूलि को मुंह मे प्रवेश होने से रक्षा करती है। साथ ही मुह से निकलने वाली उष्ण हवा से होने वाली वायुकाय के जीवो की रक्षा मे सहायक बनती है।

मूर्तिपूजक विद्वान कवि ऋषभदासजी ने अपनी हितशिक्षा रास मे लिखा है मुखेबाधी ते मुहपत्ती पृ ३८ मे। महानिशीथ अ ७" कण्णेट्ठियाएवा मुहणगतेण वा विणा इरिय पडिकम्मे मिच्छकूड पुरिमउढ"।।

देवचद्र सूरि ने समाचारी ग्रथ मे लिखा है "मुखवस्त्रिका प्रतिलेख्य मुखेबध्वा ।" भुवनभानु केवली रास मे रोहिणी अपनी गुरुणी से कहती है मुहपत्तियें मुह बाधी नेरे तुमे वेसो ले जेम

हरिबल मच्छीरास मे साधुजनो ने मुखपत्ती बाधी है। जिनधर्म विचार रत्नाकर मे गुरु स्वरूप बताते हुए लिखा है– कठे सार सरस्वती, दृष्टि कृपा नीसी क्षमा शुद्धयो'।

"वस्त्राब्जे मुखवस्त्रिका" शुभवता काये करे पुस्तिका"

हितशिक्षा रास मे श्राविका अधिकार मे रजोहरण उज्झल मुहपत्ती अलगी न करे मुख थी।

बारह व्रत की टीप मे पृष्ठ १२१ जयणा युक्त भईने "मुह पत्ती मुखे बाधी ने"

वल्लभविजय जी ने किसी साधु को अपने हाथ से पत्र लिखा उसमे उन्होंने लिखा है कि "मुहपत्ती मुह पर बाधनी अच्छी है। जैनेत्तर ग्रथ शिवपुराण अ २१ श्लोक १५ मे जैनमुनि का परिचय बताते हुए लिखा है "हस्तेपात्र दधानाश्च तुण्डे वस्त्रस्य धारका मलिनान्येव वस्त्राणि धारयन्ते अल्प भाषिण"

आचार्य हीरविजय जी को बादशाह अकबर ने पूछा था–महाराज ! यह मुख पर कपडा क्यो बाधते हो तो उत्तर मे आपने कहा भाई धर्म पुस्तक पर थूक नहीं गिरे इसलिए।

इत्यादि अनेक प्रमाणो से मुहपत्ती मुह पर ही बाधी जाती थी और बाधना भी आवश्यक है क्योकि इसके बिना भाषा निरवद्य नहीं हो सकती इसलिये सुत्तस्स मग्गेण– चरेज्ज भिक्खु के आदर्श को सम्मुख रखकर आपने मुहपत्ती को मुह पर बाधने की आवश्यकता वर बल दिया। आपने अनेक परिषह उपसर्गो को सहन करते हुये १६९८ मे काल धर्म को प्राप्त किया। आपके धनजी व लालचद

जी २ शिष्य हुये। धनजी के १ रामजी, २ विसनोजी, ३ बालजी, ४ सामजी ये चार शिष्य हुये।

जीवराज जी	जीवराज जी	जीवराज जी	जीवराज जी	जीवराज जी	जीवराज जी
धनजी	धनजी	धनजी	धनजी	धनजी	लालचदजी
रामजी	रामजी	विसनाजी	बालजी	सामोजी	दीपचदजी
शामजी के	अमरसिहजी	मनजी	शीतलजी	मुगटरामजी	सामीदासजी
ताराचदजी	तुलसीदासजी	नाथूरामजी के	देवचद जी	हरऋषजी	रूपचदजी
अनोपचदजी	ईश्वरदासजी	लक्ष्मीचदजी	हरिजी	चेनसुखजी	किसनगढ सिघाडा
विनेचदजी	मारवाड	चेनसिहजी	मेवाड	मनासारामजी	
	के सिघाडा		का सिघाडा	दिल्ली सिघाडा	
वख्तावरमलजी के		दयाराम जी			
जीवण जी		श्रीचदजी			
सावतरामजी		गगाराम जी			
सुदेभाणजी		बीकानेर का			
लक्ष्मीचद जी		सिघाडा			
न्यायरिखजी					
इन्द्रभाणजी के					
फत्तेचदजी					
खूबचदजी					
अमरचद जी					
नथमलजी					
चैणसुखजी					
देवचद जी					

पूज्य हरजी स्वामी :

आपने भी पीपाड मे कुवर जी के शिष्य तेजराज के पास दीक्षा ग्रहण की ओर वाद मे स १६६६ मे जीवराजजी म सा के साथ पुन दीक्षा ग्रहण करके कोटा पधारे ओर उस क्षेत्र मे क्रियोद्धार का सिहनाद किया। इसलिये आपका अनुयायी सघ कोटा सप्रदाय के नाम से प्रख्यात हुआ।

आपके गोरिखजी (गोधाजी) गुलाबचदजी

आ गुलाबचद जी	आ फरसरामजी	आ लालचदजी
आ फरसरामजी	आ लोकमल जी	आ हुक्मीचदजी
आ खेतसी	आ महाराम जी	आ शिवलाल जी
आ लोवसी जी	आ दौलतराम जी	आ उदयसागर जी
खिबसीजी	आ लालचदजी	आ चौथमल जी
	आ गणेशराम जी	आ श्रीलाल जी
	आ गोविन्दराम जी	

आ जवाहिर लाल जी	आ मन्नालाल जी
आ गणेशीलाल जी	आ खूबचद जी
आ नानालाल जी	आ शेषमल जी
युवाचार्य रामलाल जी	

पूज्य गिरधर जी स्वामी ·

आपने १६६६ मे पूज्य श्री जीवराज जी म सा. के साथ कुवरजी के गच्छ से निकलकर पुन दीक्षा ग्रहण की। आपके दयालजी २ बडा पृथ्वीराज जी ३ रोडीलाल जी ४ मानजी ५ नरसिहजी, उदयपुर सिघाडा। बडा पृथ्वीराज जी, बडालाल जी खोडजी।

श्री लवजी ऋषि जी :

आपका जन्म सूरत के गोपीपुरा निवासी वीरजी बोहरा की पुत्री फूलाबाई की कुक्षि से हुआ। आपके पिताजी का नाम उपलब्ध नहीं है। बुद्धि की प्रखरता से माताजी के सामायिक प्रतिक्रमण के पाठ सुन–सुन कर ही कठस्थ कर लिये। लोकांगच्छीय बजरग जी यति के पास व्यवहारिक शिक्षा के साथ जैनागमो का अध्ययन किया। आपकी प्रतिभा एव विरक्तभाव को देखकर यतिजी ने आपके परिवार को वचनबद्ध कर लिया इसलिए दीक्षा तो आपके पास ले ली लेकिन दो वर्ष बाद जब आपने

गच्छ मे फैले शिथिलाचार व आगम विरुद्ध प्रवृत्ति देखी और गुरु महाराज को अर्ज करने पर भी ध्यान नहीं दिया तो भोयण जी व भानुजी इन दो साथियो के साथ विहार कर खभात पधारे और नगर बाहर उद्यान मे स १६३१ मे सिद्ध भगवान की साक्षी से पुन- शुद्ध दीक्षा ग्रहण कर शुद्ध साधुमार्ग के प्रचार व आचरण का सकल्प लेते हुए आगे चरण बढाया। आपके निर्दोष आहार स्थानक वस्त्रपात्र स्थान आदि की गवेषणा मुह पर मुखपत्ती बाधे रहना व इसकी प्रेरणा देना मूर्तिपूजा आदि आरभ परिग्रह मय जीवन प्रवृत्तियो का निषेध करना आदि आगम प्रमाण युक्त उपदेश व आचरण का जनता पर सहज प्रभाव पडने लगा। आपके बढते प्रभाव से जलने वाले लोगो ने बादशाह को बहकाकर बदी बना दिया। आपके शिष्यो को मदिर मे कत्ल कर दिये। आपके अनुयायियो को कुए से पानी तक भरने के प्रतिबध लगाये। फिर भी घोर उपसर्ग परिषहो को सहन करते हुए शुद्ध साधुमार्ग का प्रचार करते हुए बुरहानपुर पधारे तो वहा पर एक बाई को लोभ देकर विष मिश्रित लड्डू बहराये जिसका सेवन करने से आपकी मृत्यु हो गई।

आपके पाट परम्परा मे प्रेमजी, सोमजी, कानजी, रिणछोडजी, ताराऋषि जी, लालाजी हुए। इनकी ही परपरा मे रतनऋषि जी, तिलोकऋषि जी, अमोलक ऋषि जी, देव ऋषि जी, आनदऋषि जी व इनका साधु साध्वी परिवार हुआ।

मगलऋषि जी, ताराऋषि जी, छगन ऋषि जी और वर्तमान मे काति ऋषि जी का साधु-साध्वी परिवार है।

अमरसिह जी पजाब पधारे। पू काशीराम जी व पू मोतीराम जी, पू आत्माराम जी का परिवार।

पूज्य श्री धर्मसिह जी महाराज :

आपका जन्म काठियावाड के हालर प्रान्तीय जामनगर के श्री जिनदास जी दशा श्रीमाली की धर्मपत्नी शिवाबहन की कुक्षि से हुआ। १५ वर्ष की वय मे लोकागच्छीय रत्नसिहजी के शिष्यदेव जी यति के पास दीक्षा ग्रहण की और बुद्धि की तीक्ष्णता से अल्पवय मे और अल्प समय में ही शास्त्रो का गहन अध्ययन करके गच्छ मे बढते शिथिलाचार देखकर गुरु चरणो में क्रियोद्धार की अर्ज की। गुरु ने अपनी कमजोरी बताते हुए आपकी परीक्षा हेतु १ रात्रि दरिया स्थान की दरगाह मे १ रात्रि व्यतीत करने का आदेश दिया। आप गुरु आज्ञा शिरोधार्य कर वहा पहुचे। लोगो के मना करने पर आज्ञा लेकर ठहर गये और स्वाध्याय मे तन्मय हो गये जिससे यक्ष इतना प्रभावित हुआ कि आगे से उपद्रव त्यागकर भक्त बन गया। आपकी बुद्धि इतनी तीव्र थी कि एक दिन मे हजार श्लोक कठस्थ कर लेते थे और दोनो हाथ पैरो, से कलम चलाते थे। आपने २७ शास्त्रो पर टब्बा लिखा। आपकी लवजी ऋषि जी से भी परस्पर कई बोलो पर चर्चा हुई। आपकी परपरा दरियापुरी सप्रदाय के नाम से प्रख्यात हुई। आपने स १६९२ मे क्रियोद्वार किया। आपका स्वर्गवास १७२८ आसोजसुदी ४ को हुआ। आपकी परपरा मे वर्तमान में आचार्य शातिलाल जी म सा व उनके आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी है।

पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज

आपका जन्म सरखेज गाव मे लोकागच्छ प्रमुख जीवनदास की धर्मपत्नी हीरावाई की कुक्षि से १७०१ चैत्रसुदी ११ को हुआ था। बचपन मे लोकागच्छ के यति केशवजी के शिष्य तेजसिह जी के पास अध्ययन करने लगे। सयोग से १६६० मे एक पात्रियापथ का नया प्रादुर्भाव हुआ था। जिसके प्रमुख प्रेमचद जी श्रीश्रीमाल थे जो लाल वस्त्र धारण करके ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुये श्रमण धर्म के विच्छेद की प्ररूपणा करते हुए श्रावकाचार का प्रचार करते थे। इनकी श्रद्धा ग्रहण करते थी लेकिन भगवती सूत्र के २१वे शतक के तीसरे उद्देशा मे भगवान ने फरमाया कि मेरा चतुर्विध सघ २१ हजार वर्ष चलेगा यह बात ध्यान मे आते ही उनका पथ त्यागकर १७१६ मे दीक्षा ग्रहण करके प्रथम भिक्षा हेतु कुम्हारी के घर गये तो उसने पात्र मे राख बहरादी जो हवा के झपाटे से कुछ तो पात्र मे गिरी और बाकी चारो दिशाओ मे उड गई। यह बात आपने वहा विराजित धर्मसिहजी म सा को बताई तो आपने फरमाया कि इसी तरह आपका शिष्य समूह भी चारो दिशा मे फैलेगा। आपके व धर्मसिह जी म सा व लवजी, ऋषि जी म सा के परस्पर विचार विमर्श भी हुआ लेकिन ८ कोटि सामायिक व २१ बोलो के अतर होने से आप स्वतत्र ही धर्म प्रभावना करने लगे। आपके ९९ शिष्य हुए और २२ सम्प्रदाय बने। आपने धार मे एक शिष्य के सथारा मे विचलित होने पर उसकी जगह आपने सथारा पचक्ख लिया और १७७२ मे स्वर्ग पधार गये।

: संदर्भ ग्रन्थ सूची :

१ पाटावली प्रबन्ध सग्रह

२ श्रमणोपासक की फाइले

३ जवाहराचार्य के व्याख्यानो की फाइले

४ पूज्य श्री श्रीलाल जी म का जीवन चरित्र

५ पूज्य श्री जवाहरलाल जी म का जीवन

६ पूज्य श्री गणेशीलाल जी म का जीवन

७ पूज्य श्री मन्नालाल जी म का जीवन

८ मुनि श्री घासीलाल जी म का जीवन

९ महासती श्री पानकवर जी म का जीवन

१० प्रवर्तनी श्री आनन्द कवर जी म की जीवनी

११ जैनधर्म का इतिहास

१२ धर्मदास सप्रदाय का इतिहास

१३ ऋषि सप्रदाय का इतिहास

१४ स्थानकवासी की प्राचीनता

१५ जैन सुबोध हीरावली

१६ जैनतत्त्व प्रकाश एव प्राचीन हस्तलिखित पट्टावलिया, यादिया, प्राचीन फुटकर पत्र, भजन, गीत, सन्त सतियो के पास की सग्रहित सामग्री आदि।

साधुमार्ग की पावन सरिता का आविर्भाव

साधुमार्ग की पावन सरिता इस पृथ्वी तल पर अनादिकाल से अविच्छिन्न धारा के रूप मे प्रवाहित होती हुई चली आ रही है। नवकार महामत्र जो अनादि सिद्ध है, इसकी सपुष्टि कर रहा है।

नमो अरिहताण
नमो सिद्धाण
नमो आयरियाण
नमो उवज्झायाण
नमो लोए सव्वसाहूण

भगवती–सूत्र, श. १, उ १, सू १

नमस्कार महामत्र मे जिन पाच पदो का समावेश है उनमे से द्वितीय पद 'नमो सिद्धाण' प्रत्येक साधक की साधना का चरम लक्ष्य है। शेष चार पद साधक अवस्था के हैं। 'नमो अरिहताण' मे अरिहत की उच्चतम स्थिति पर जब साधक जिन नाम कर्म की उदयावस्था के साथ अवस्थित हो जाते है तब वे सर्वज्ञ सर्वदर्शी, तीर्थ की स्थापना करने वाले, साधुता के परमादर्श, अरिहत सिद्धाण पद प्राप्ति हेतु जो मार्ग प्रतिपादित करते हैं वही (साधो आगत मार्ग साधुमार्ग) साधुमार्ग है। जो साधु साध्वी, श्रावक, श्राविका चतुर्विध सघ के रूप मे सुसगठित होकर अनुशासन बद्ध इस मार्ग का अनुसरण करते है, वे ही साधुमार्गी कहलाते है। यह अनुसरण अनादिकाल से चला आ रहा है। वर्तमान मे चल रहा है और भविष्य मे अनन्तकाल तक चलता रहेगा।

साधुमार्ग की पावन सरिता की विभिन्न धाराएं :

अवसर्पिणी काल के प्रभाव से भरत क्षेत्र मे प्रवाहित साधुमार्ग की यह धारा अनेक मतो, परपराओ और सप्रदायो मे विभाजित होती रही। इस विभाजन के पीछे आचार–विचार की असामजस्यता अथवा मानसिक कलुषता या विद्वेषता ही मुख्य निमित्त बनी। जैनधर्म के आदि सस्थापक प्रभु ऋषभदेव के शासनकाल मे भी ३६३ मतों का उल्लेख प्राप्त होता है। फिर भी मूल परपरा कहीं न कहीं किसी न किसी रूप मे सुरक्षित बनी रही। और इस सुरक्षा मे योगदान दिया– मध्यवर्ती २२ तीर्थकरो ने। उन्होने न केवल इस परपरा को सुरक्षित ही रखा वरन् इसे द्विगुणित वेग से आगे भी बढाया। चरम तीर्थकर भगवान् महावीर ने देश, काल, परिस्थितियो को दृष्टिगत रखकर एव साधको की शारीरिक एव मानसिक आवस्थाओ का अवलोकन कर साधको की दो श्रेणिया स्थापित कीं–

क्रान्ति को सूत्रपात का निमित्त ऐसा बना कि लोकाशाह के सुन्दर अक्षरो से प्रभावित होकर यति रत्नसूरि ने उन्हे वर्षो से जीर्ण–शीर्ण हो रहे शास्त्रो का पुनर्लेखन का कार्य सौपा। हुआ यो कि यति रत्नसूरी ने लोकाशाह को अच्छी, सुन्दर एव शुद्ध हस्तलिपि के कारण वर्षो से रक्षित सडते–गलते शास्त्रो के पुन लेखन का दायित्व सौपा। प्रतिलिपि करते–करते लोकाशाह ने आगमो मे उल्लेखित शुद्ध श्रमणाचार एव श्रावकाचार का अध्ययन किया। जब उन्होने देखा कि शास्त्रो मे लिखित बात और जीवन व्यवहार मे हो रही बात मे बहुत अधिक अन्तर और विसगति है तो वे एकदम सचेत हो गये। इससे उनकी आत्मा मे धर्म के नाम पर होने वाली सावद्य प्रवृत्तियो एव आडम्बरीय वृत्तियो के प्रति ग्लानि उत्पन्न हो गयी। उनके मन मे इन मान्यताओ को जडमूल से नष्ट करने की दिव्य क्रान्ति प्रस्फुटित हो उठी और उसी समय इन दूषित प्रवृत्तियो का भडाफोड करने हेतु आगम प्रमाण सहित खुलकर सचोट प्रचार करने लगे। उनके द्वारा निर्वद्य श्रमणाचार एव श्रावकाचार का प्रतिपादन सुनकर जनता मे नवीन स्फूर्ति सी जागृत हुई।

उनके उपदेश को श्रवण कर बडे–बडे श्रीमत जैसे– भाणोजी, जगोजी, लुणोजी जो कई अकबर बादशाह के नवरत्नो मे प्रसिद्ध थे – ऐसे ४५ प्रतिष्ठित श्रेष्ठिवर्य एव राज्याधिकारियो ने प्रतिबोधित होकर दीक्षा लेने की उत्कृष्ट भावना अभिव्यक्त की। यह बात सुनकर शुद्ध साधुमार्ग के आराधक ज्ञान जी ऋषि जो उस समय सिन्ध हैदराबाद की तरफ विचरण कर रहे थे और जिन्हे लोकाशाह ने गुजरात मे पधारने का निमत्रण दिया था वे कठोर परिषह एव उपसर्गो को सहन करके विचरण करते हुए गुजरात में पधारे। उनसे विशेष प्रेरणा पाकर विक्रम सवत् १५२७ की वैशाख शुक्ला–३ (अक्षय तृतीया) को उन ४५ ही आत्माओ ने दीक्षा ग्रहण कर ली। चूकि सभी लोकाशाह से प्रतिबोधित हुए थे अत ज्ञानजी ऋषि ने लोकाशाह के नाम से ही 'लोकागच्छ' की स्थापना की। अल्पकाल मे ही भारत मे ही नहीं, यूरोप तक इस गच्छ की प्रसिद्धि फैल गई।

लगभग १०० वर्ष तक लोकागच्छ का प्रभाव अबाध गति से फैलता ही गया। लोकाशाह के अष्टम पट्टधर जीवाजी ऋषि तक परस्पर एकता बनी रही लेकिन इसके बाद यह गच्छ गुजराती, नागौरी और लाहोरी– इन तीन भागो मे विभक्त हो गया। इनमे भी सावद्य आडम्बरी प्रवृत्तियो को उत्तरोत्तर बढावा मिलने लगा। गुजराती लोकागच्छ की बडौद गादी पर वीरसिह जी को और बालापुर की गादी पर कुवर जी यति को बैठाया गया। तब इन्हीं के गच्छ मे से (जगाजी के शिष्य जीवराज जी, बजरग जी के शिष्य लवजी ऋषि और कुवर जी के शिष्य केशवजी और शिवजी एव तेजसिह जी थे। इनके शिष्य हरजी और धर्मसिह जी के साथ धर्मदास जी थे) इन जीवराज जी, लवजी ऋषि, हर जी ऋषि, धर्मसिहजी, एव धर्मदास जी– पाचो महापुरुषो ने पुन क्रियोद्धार का सिहनाद करके इस साधुमार्गी धर्म सघ रूप पावन सरिता को प्रवाहित होने मे अपना सक्रिय योगदान दिया। इन्हीं के पुण्य प्रभाव से आज मुहपति मुह पर बाधकर निर्वद्य धर्माराधन करने वाला एव ३२ शास्त्रो पर आस्था रखने वाला

१ जिनकल्प — अचेलक

२ स्थविर कल्प — सचेलक

फिर भी यह सुस्पष्ट है कि हर व्यक्ति समान विचार एव समन्वयात्मक दृष्टिकोण वाला नहीं होता है। यही स्थिति महावीर के समय मे भी थी। महावीर के अनेक शिष्य अपने एकान्त दृष्टिकोण के दुराग्रह से ग्रसित होने लगे। उदाहरणार्थ जमाली ने "चलमाणे चलिए' तिष्यगुप्त ने अतिम प्रदेश मे आत्मा के अस्तित्व, अषाढाचार्य ने सतो के शरीर मे अव्रती देव की शका से, गुप्ताचार्य ने त्रिराशि, धनगुप्ताचार्य ने एक समय मे दो क्रियाओ के वेदन के आग्रह से, मुनि प्रजात ने सर्प कचुकी के समान आत्मा पर कर्म लेप की प्ररूपणा से, अश्वामित्र ने नरकगति के जीवो की पर्याय क्षण–क्षण मे परिवर्तित होने के दुराग्रह से अलग–अलग मतो की स्थापना कर अपना–अपना अस्तित्व वताना शुरू कर दिया। महावीर के शिष्य गोशालक ने आजीवक मत की स्थापना प्रभु महावीर के समय मे ही कर दी थी। यह प्रारम्भ था–इस पावन सरिता के विभाजन का।

इसी प्रकार महावीर निर्वाण के पश्चात् तो अनेक मत एव सप्रदायो मे इस पावन सरिता का विभाजन होने लगा। प्रभु निर्वाण के ६०९ वर्ष बाद ही शिवभूति (सहस्रमल) ने वस्त्र एव पात्रो का परित्याग कर स्त्री मुक्ति के दुराग्रह के वशीभूत होकर दिगम्बर मत की स्थापना की। इसके ६५ वर्ष बाद चेइअ– चैत्य शब्द का इच्छानुसार अर्थ करके मुखवस्त्रिका बाधने से समूर्च्छिम जीवो की उत्पत्ति होती है, इस धारणा को प्रचारित करके मुखवस्त्रिका जो कि साधु का चिन्ह एव अहिसा की ध्वजारूप होती है, उसका परित्याग कर दिया और भगवान् महावीर की काल्पनिक प्रतिमा की स्थापना करके मूर्तिपूजक पथ का प्रादुर्भाव कर दिया। इसी का प्रभाव पडा– दिगम्बर समाज पर और उन्होने भी अनेक जगह जैसे शत्रुजय, गिरनार, सम्मेद शिखर आदि कृत्रिम तीर्थो की स्थापना कर दी। जहा जैन धर्म निर्वद्य धर्म साधना का पक्षधर रहा वहीं उसमे मत्र, तत्र एव अनेक बाह्य आडम्बरो से ओतप्रोत सावद्य कार्यो/प्रवृत्तियो/ क्रियाओ का प्रवेश हो गया। जैन शास्त्रो मे निहित सिद्धान्तो और साध्वाचार के नियमो का जन सामान्य को ज्ञान नहीं हो जाय, इस कारण जैन शास्त्र एव पाडुलिपियो को गुप्त भडारो मे रख दिया गया। जनसाधारण को शास्त्र पढने का अधिकार नहीं है इस बात को प्रचारित किया गया और इस भ्रम की शिकार जनता भगवान महावीर निर्वाण के २००० वर्षो तक शास्त्रो को छूने से भी भयभीत होती रही।

लोकाशाह क्रान्ति :

श्रमण भगवान् महावीर के निर्वाण के २००० वर्ष पश्चात् विभिन्न सघो, गच्छो एव सप्रदायो मे बटे हुए धर्म को देखकर और शास्त्रो के विपरीत आचरण करते हुए समझकर धर्मवीर लोकाशाह ने एक दिव्य क्राति का सूत्रपात किया।

क्रान्ति को सूत्रपात का निमित्त ऐसा बना कि लोकाशाह के सुन्दर अक्षरो से प्रभावित होकर यति रत्नसूरि ने उन्हे वर्षो से जीर्ण–शीर्ण हो रहे शास्त्रो का पुनर्लेखन का कार्य सौपा। हुआ यो कि यति रत्नसूरी ने लोकाशाह को अच्छी, सुन्दर एव शुद्ध हस्तलिपि के कारण वर्षो से रक्षित सडते–गलते शास्त्रो के पुन लेखन का दायित्व सौपा। प्रतिलिपि करते–करते लोकाशाह ने आगमो मे उल्लेखित शुद्ध श्रमणाचार एव श्रावकाचार का अध्ययन किया। जब उन्होने देखा कि शास्त्रो मे लिखित बात और जीवन व्यवहार मे हो रही बात मे बहुत अधिक अन्तर और विसगति है तो वे एकदम सचेत हो गये। इससे उनकी आत्मा मे धर्म के नाम पर होने वाली सावद्य प्रवृत्तियों एव आडम्बरीय वृत्तियो के प्रति ग्लानि उत्पन्न हो गयी। उनके मन मे इन मान्यताओ को जडमूल से नष्ट करने की दिव्य क्रान्ति प्रस्फुटित हो उठी और उसी समय इन दूषित प्रवृत्तियो का भडाफोड करने हेतु आगम प्रमाण सहित खुलकर सचोट प्रचार करने लगे। उनके द्वारा निर्वद्य श्रमणाचार एव श्रावकाचार का प्रतिपादन सुनकर जनता मे नवीन स्फूर्ति सी जागृत हुई।

उनके उपदेश को श्रवण कर बडे–बडे श्रीमत जैसे– भाणोजी, जगोजी, लुणोजी जो कई अकबर बादशाह के नवरत्नो मे प्रसिद्ध थे – ऐसे ४५ प्रतिष्ठित श्रेष्ठिवर्य एव राज्याधिकारियो ने प्रतिबोधित होकर दीक्षा लेने की उत्कृष्ट भावना अभिव्यक्त की। यह बात सुनकर शुद्ध साधुमार्ग के आराधक ज्ञान जी ऋषि जो उस समय सिन्ध हैदराबाद की तरफ विचरण कर रहे थे और जिन्हे लोकाशाह ने गुजरात मे पधारने का निमत्रण दिया था वे कठोर परिषह एव उपसर्गो को सहन करके विचरण करते हुए गुजरात मे पधारे। उनसे विशेष प्रेरणा पाकर विक्रम सवत् १५२७ की वैशाख शुक्ला–३ (अक्षय तृतीया) को उन ४५ ही आत्माओ ने दीक्षा ग्रहण कर ली। चूकि सभी लोकाशाह से प्रतिबोधित हुए थे अत ज्ञानजी ऋषि ने लोकाशाह के नाम से ही 'लोकागच्छ' की स्थापना की। अल्पकाल मे ही भारत मे ही नहीं, यूरोप तक इस गच्छ की प्रसिद्धि फैल गई।

लगभग १०० वर्ष तक लोकागच्छ का प्रभाव अबाध गति से फैलता ही गया। लोकाशाह के अष्टम पट्टधर जीवाजी ऋषि तक परस्पर एकता बनी रही लेकिन इसके बाद यह गच्छ गुजराती, नागौरी और लाहोरी– इन तीन भागो मे विभक्त हो गया। इनमे भी सावद्य आडम्बरी प्रवृत्तियो को उत्तरोत्तर बढावा मिलने लगा। गुजराती लोकागच्छ की बडौद गादी पर वीरसिह जी को और बालापुर की गादी पर कुवर जी यति को बैठाया गया। तब इन्हीं के गच्छ मे से (जगाजी के शिष्य जीवराज जी, बजरग जी के शिष्य लवजी ऋषि और कुवर जी के शिष्य केशवजी और शिवजी एव तेजसिह जी थे। इनके शिष्य हरजी और धर्मसिह जी के साथ धर्मदास जी थे) इन जीवराज जी, लवजी ऋषि, हर जी ऋषि, धर्मसिहजी, एव धर्मदास जी– पाचो महापुरुषो ने पुन क्रियोद्धार का सिहनाद करके इस साधुमार्गी धर्म सघ रूप पावन सरिता को प्रवाहित होने मे अपना सक्रिय योगदान दिया। इन्ही के पुण्य प्रभाव से आज मुहपति मुह पर बाधकर निर्वद्य धर्माराधन करने वाला एव ३२ शास्त्रो पर आस्था रखने वाला

चतुर्विध सघ परिलक्षित हो रहा है।

पाच ऋषियो की विभाजित वर्तमान सम्प्रदाये :

१ आचार्य श्री जीवराज जी म सा के परिवार मे

अ– प्रवर्तक सोहनलाल जी म सा के साधु साध्वी

ब– अभय मुनि म के साधु साध्वी

स– अनुयोग प्रवर्तक कन्हैयालाल जी म के साधु साध्वी

द– प्रवर्तक श्री महेन्द्र मुनि जी म के साधु साध्वी

क–पजाब के पुष्फ भिक्खू के साधु साध्वी

ख– आचार्य देवेन्द्र मुनि जी म के साधु साध्वी

२ आचार्य श्री लवजी ऋषि जी म सा की सप्रदाय के–

अ– आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी म के साधु साध्वी

ब– आचार्य श्री कान्ति ऋषि जी म के साधु साध्वी

स– पजाब के भण्डारी पद्मचद्र जी म सा एव पूज्य सुदर्शन मुनि जी म सा के साधु साध्वी

द– उपाध्याय श्री अमर चदजी म सा एव सुशीलकुमार जी म

३ क्रियोद्धारक हरजी ऋषि जी म सा के सप्रदाय के–

अ– आचार्य श्री नानालाल जी म सा के साधु साध्वी

ब– प्रवर्तक रमेश मुनि जी म सा के साधु साध्वी

स– खद्दरधारी मिश्रीलाल जी म सा के साधु साध्वी

४ आचार्य धर्मसिह जी म सा के सप्रदाय के–

दरियापुर सप्रदाय के आचार्य श्री शातिलाल जी म सा के आज्ञानुवर्ती साधु– साध्वी

५ क्रियोद्धारक आचार्य श्री धर्मदास जी म सा के सप्रदाय के–

१ गोडल सप्रदाय के रतिलाल जी म के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

२ छ कोटी लींबडी कोटापक्ष के नरसिहजी म के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

३ नानापक्ष गोपाल सप्रदाय के रामजी म सा के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

४ कच्छ आठ कोटी मोटापक्ष के प छोटेलाल जी म के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

५ छोटापक्ष कच्छ छ कोटी राम जी स्वामी के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

६ बोटाद सम्प्रदाय के अमीचद जी म के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

७ गोडल सघाणी सप्रदाय के नरेद्र मुनि जी म के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

८ बरवाला सप्रदाय के गच्छाधिपति सरदारमुनि जी के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

९ सायला सप्रदाय के बलभद्र मुनि जी म सा के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

१० तपस्वीलालमुनि कानमुनि जी म सा के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

११ तपस्वीराज चपालाल जी म सा के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

१२ जयगच्छाधिपति शुभ चद जी म सा के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

१३ श्रमण सघीय उपप्रवर्तक विनय मुनि म के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

१४ श्रमण सघीय प्रवर्तक रूप चद जी म के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

१५ आचार्य श्री हस्ती मल जी म, आ हीराचन्द जी म के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

१६ प्रवर्तक उमेश मुनि जी म सा के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

१७ श्रमण सघीय महामत्री सौभाग्य मुनि जी म के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

१८ वाणीभूषण रतन मुनि जी म के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

१९ पुष्कर मुनि 'ललित'– मेवाडी के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

२० तेहरपथ के गणाधिपति तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के आज्ञानुवर्ती साधु साध्वी

स्थानकवासी एव ढूंढिया आदि शब्दो का उद्भव

लोकागच्छ से पृथक् होकर साधुमार्ग का पुनरुद्धार करने मे लवजी ऋषि जी म सा आदि को महान् कष्टो का सामना करना पडा। विद्वेषियो ने कष्ट देने मे कोई कमी नहीं रखी। आहार पानी देना तो दूर, ठहरने के लिए स्थान भी नहीं मिलता था। फिर भी आप पूर्ण निर्भीकता से शात क्राति का सिहनाद करते हुए रात्रि को पुराने ढूढो (खण्डहर) मे जहा कहीं भी जगह मिल जाती वहीं विश्राम कर लेते थे। ढूढो (खण्डहरो) मे विश्राम करने के कारण लोग उन्हे ढूढिया कहने लगे। 'ढूढिया' कहकर लोग उन्हे चिढाने का प्रयास करते रहे। परन्तु वे महापुरुष इस सबोधन से न चिढते हुए उन्हे यह उत्तर देते कि हम सचमुच ढूढिये हैं क्योकि हमने सत्य तत्व को ढूढ (खोज) लिया है। ढूढने से ही सत्य की प्राप्ति होती है। इस प्रकार जब महान् कष्टो को सहन करते हुए सत्य का प्रतिपादन करते रहने से लोगों मे धीरे–धीरे श्रद्धा जमने लगी और उनकी सख्या मे अभिवृद्धि होने लगी, तब उन लोगो ने निर्वद्य धर्म आराधना करते हुए एक स्थान की नियुक्ति करके सामूहिक रूप से वहीं पर धर्म आराधना करने का निश्चय किया परन्तु दुष्ट एव बुराई देखने वालो की इस ससार मे कमी नहीं थी और वर्तमान

मे हैं। ऐसे विद्वेषी व्यक्ति उन महापुरुषो को चिडाने के दृष्टिकोण रो कहने लगे– ये साधु तो एक स्थान के वासी हो गए हैं और धीरे–धीरे स्थानवासी शब्द स्थानकवासी के रूप मे प्रचलित होता गया।

इसी प्रकार दया–दान की आगमविरुद्ध प्ररूपणा करने के कारण तेरहपथ का उद्भव हुआ। साथ ही पोतिया बधी, कुडापथी आदि ओर भी नाम प्रचलन गे आते रहे परन्तु मूल साधुमार्ग शब्द का प्रयोग ग्रथो मे एव आचार्यो के द्वारा निरतर किया जाता रहा। उदाहरणार्थ –

१ मरुधर केशरी अभिनदन ग्रथ मे वक्कल्ल युग के तीन महापुरुष नामक लेख मे लोकाशाह द्वारा शुद्ध साधुमार्ग धर्म प्ररुपित करना बताया गया हे।

२ जयध्वज नामक ग्रथ मे भी पूज्य जयमल्ल जी म सा ने वीकानेर प्रान्त मे दण्डियो का मान मर्दन कर शुद्ध साधुमार्ग का प्रचार किया ऐसा उल्लेख प्राप्त होता हे।

३ पुरातन विभाग के सग्राहक, प्रसिद्ध साहित्यकार अगरचद नाहटा ने अपने सग्रहित ऐतिहासिक काव्य सग्रह मे साधुमार्ग का उल्लेख किया हे।

४ आचार्य हस्तीमल जी म ने एव आचार्य अमोलक ऋषि जी म ने अपने काव्यो, आगमो एव लेखो मे स्थान–स्थान पर साधुमार्ग शब्द का उल्लेख किया है।

५ गच्छाचार–पइन्ना मे तो आचार्यो के परम कर्त्तव्य का निरूपण करते हुए बतलाया हे कि अगर कोई प्रमादवश जिनोक्त क्रियाओ से विचलित होता हो तो उनको शुद्ध साधुमार्ग बताकर उसको उसमे स्थित करे। वह पाठ इस प्रकार है –

अथ कोऽपि कदाचित्प्रमाद परत्वेन न जिनोक्त क्रिया करोति परन्तु भव्याना यथोक्त जिनमार्ग दर्शयति स कस्मिन् मार्गे आत्मान स्थापयति ? तद्विपरीतश्च कीदृशो भवति ? इत्याह–

सुद्ध सुसाहुमग्ग कहमाणो ठवइ तइअ पक्खंमि।
अप्पाण इयरो पुण गिहत्थ धम्माओ चुक्कत्ति।।३२।।

–गच्छाचार पइन्ना

सुद्ध ।।शुद्ध।। आज्ञा शुद्धि सयुक्त 'सुसाधुमार्ग' सुविहित पथ 'कथयन् आकाक्षाभावेन प्ररुपयन। 'स्थापयति' रक्षयति 'आत्मान– स्वय क ? साधु श्रावक पक्षद्वयापेक्षया 'तृतीय पक्षे' सविग्नपाक्षिके सविग्नाना– मोक्षाभिलाषिसु साधूना पाक्षिक– साहाय्यकर्त्ता– सविग्नपाक्षिकस्तस्मिन् तस्येद लक्षण– सुद्ध सुसाहुधम्म कहेइ निदइ य निययमायार।

सुतवस्सियाण पुरओ होइ य सव्वोमराइणिओ।

अन्यत्र निम्नोक्त ३ गाथाओ मे साधुमार्ग की महत्ता का प्रतिपादन किया है–

पंच महव्वय सुव्वयमूल, समण मणाइल साहु सुचिण्ण।
वेर विरामण पज्जवसाण, सव्व समुद्दमहोदहि तित्थ।।
तित्थंकरेहि सुदेसिय मग्ग, नरग तिरिच्च विवज्जिय मग्ग।
सव्व पवित्त सुनिम्मिय सार, सिद्धि विमाणमवंगुयदार।।
देव नरिंद नमंसिय पूइय, सव्व जगुत्तम मगलमग्ग।
दुद्धरिसं गुणनायक मेक, मोक्ख पहस्स वडिसग भूय।।

साधुमार्गी धर्म संघ का वर्तमान रूप

वर्तमान मे तो साधुमार्गी शब्द आचार्य श्री नानालालजी म सा के धर्म सघ के साथ अविनाभाव सम्बन्ध सा ही जुड गया है और यह यथार्थ भी है क्योकि इस धर्म सध के आचार्यो ने ही अपना सब कुछ अर्पण करके भी इसका सरक्षण किया है और वर्तमान मे भी शान्त–क्रान्ति के अग्रदूत पूज्य श्री गणेशीलाल जी म सा, जिन्होने इस धर्म सघ की पुन स्थापना की व उनके शिष्य वर्तमान आचार्य श्री नानेश इसके सरक्षण मे पूर्ण सजगता से भयकर उपसर्गो एव परिषहो को सहन करते हुए भी जुटे हुए रहे हैं जिनका भव्य एव दिव्य रूप आज भी जन–जन की आशा का केन्द्र बना हुआ है।

आपके इस नेतृत्व की कालावधि मे इस धर्म सघ मे लगभग ३५० साधु साध्वियो की दीक्षाए सपन्न हुई है। आपके सघ मे कुल ३०० के लगभग साधु–साध्विया साधनारत है जो पाद विहार कर कन्याकुमारी से कश्मीर तक के क्षेत्रो मे धर्म सस्कार की अजस्र धारा प्रवाहित कर रहे है। १५० के आसपास साधु साध्वियो ने एकान्तर, बेले–बेले, तेले– तेले के तप के साथ एक माह से लगाकर ९९ दिवस तक अनेक तपस्याओ के कीर्तिमान भी स्थापित किए हैं साथ ही लगभग १५० साधु साध्वी साधुमार्गी सघ, बीकानेर की शास्त्री एव रत्नाकर जैसी उच्चतम परीक्षाए उत्तीर्ण करके अच्छे लेखक, कवि एव वक्ताओ के रूप मे समाज के सन्मुख विद्यमान हैं। समाज मे ऐसे कुशल सेवामूर्ति साधु–साध्वियो की भी कमी नहीं है जो सघपति के आदेश के साथ ही पूर्ण समर्पित भाव से सेवा देते हैं। इस प्रकार इन साधु साध्वियो के पवित्र सहयोग से साधुमार्गी सघ ने अल्पावधि मे महान् अभिवृद्धि की है।

इस धर्म सघ के अहर्निश विकास मे श्रावक श्राविकाओ का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है। उनकी सघ एव सघपति के प्रति दृढ आस्था, अविचल समर्पण भाव दूसरो के लिए प्रतिस्पर्धा का विषय बना हुआ है। समता प्रचार सघ द्वारा पर्यूषण पर्व मे धर्माराधन का सहयोग, साहित्य प्रकाशन समिति द्वारा अभिनव साहित्य प्रकाशन, श्रमणोपासक एव समता युवा सदेश जैसे पत्रो द्वारा सघ की सौरभ को सुदूर क्षेत्रो तक पहुचाना, धर्मपाल प्रवृत्ति द्वारा अछूतोद्धार, जैनोलोजी विभाग, प्राकृत शोध सस्थान, गणेश जैन ज्ञान भडार द्वारा पुरातन शास्त्रो का सरक्षण, समता भवनो के निर्माण द्वारा धर्म आराधन, परीक्षा

बोर्ड द्वारा धर्म सस्कार, वाचनालयो, छात्रावासो एव औषधालयो द्वारा राष्ट्र एव समाज की सेवा आदि विभिन्न आयामो द्वारा साधुमार्गी धर्म सघ का देश–विदेश मे प्रचार–प्रसार कर रहे है। सघ का युवा–वर्ग समता युवा सघ के रूप मे, बालक–बालिकाए समता बालक–बालिका मडल के रूप मे एव महिलाए महिला समिति के रूप मे सुसगठित होकर इसके सरक्षण एव सवर्धन मे जुटे हुए है। इन सब प्रवृत्तियो से साधुमार्गी सघ गौरवान्वित है।

साधुमार्ग की गुरु-शिष्य परम्परा

गुरु पद का महत्त्व

प्रत्येक धर्म एव सप्रदाय मे गुरु का उच्च एव महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। भारतीय चिन्तन मे यह आम धारणा है कि गुरु रहित व्यक्ति मुक्ति का अधिकारी नहीं होता है। गुरु पद का अधिकारी कौन होता है ? इस पर शास्त्रो मे कहा गया है–

अपरिस्सावी सोमो, सगह सीलो अभिग्गह मईअ।
अविकत्थणो अचवलो, पसत हियओ गुरु होई।।

किसी के दोषो को दूसरे से न कहने वाला, प्रतिभावान, शिष्यो के लिए वस्त्र पात्र एव पुस्तको का सग्रह करने वाले, किसी विषय को समझ लेने मे समर्थ बुद्धि वाले, अपनी प्रशसा न करने वाले या मितभाषी, स्थिर और प्रसन्न हृदय वाले गुरु होते है।

लेकिन आज इस पद के गौरव को न तो गुरु ने बनाये रखा है और न ही शिष्य ने। बस एक रिक्तता की पूर्ति करके इस लोकोक्ति को चरितार्थ अवश्य करते है–

कान्या मान्या कुर तू चेलो मैं गुर।
रुपयो नारेल पाट घर पछे डूब चाहे तर।।

बस यह गुरु शिष्य का सम्बन्ध केवल भेट/पूजा/ दक्षिणा तक ही सीमित रह गया है। गुरु दक्षिणा पाकर प्रसन्नता का अनुभव करता है तो शिष्य उसकी पूर्ति करके अपने आपको कृतकृत्य मान लेता है। आध्यात्मिक विकास मे गुरु–शिष्य का यह सम्बन्ध "तिन्नाण–तारयाण'' के विशिष्ट उत्तरदायित्व से सम्बन्ध रखता है। जिस प्रकार समुद्र के तैरने मे नाव का सहारा जरूरी होता है, उसी प्रकार ससार समुद्र से तिरने मे गुरु का सहारा आवश्यक होता है। शिष्य को ससार रूपी समुद्र से मोक्ष प्राप्ति के उद्देश्य की पूर्ति तो उन्हीं गुरु से हो सकती है जो तिन्नाण तारयाण गुण के धारक बारह गुण सहित अरिहत, छत्तीस गुण सहित आचार्य, पच्चीस गुण सहित उपाध्याय एव सत्ताईस गुण सहित साधु मुनिराज हो।

शिष्यो को भी गुरु बनाने से पहले गुणो का परीक्षण करके ही गुरु बनाने का निर्देश दिया गया है। जो शिष्य गुरु बनाने के पहले उनके गुणो के परीक्षण का ध्यान नहीं रखता है उन शिष्यो के लिए कहा जाता है कि–

चार पैसा मे हाडी लेवे, ठोला मारे चार।
गुरु परीक्षा करे नहीं, जावे जमारो हार।।
गुरु गुरु करता जगत् डूबो, गुण बिना गुरु दु खदायी।
धोलो जाण आकडो पीवे, जडा मूल से जाई।।

इसी प्रकार गुरु को निर्देश दिया गया है कि जो शिष्य विनीत, भद्र परिणामी, इगिताकार सपन्न, पाप भीरु, निरहकारी आदि गुणो से युक्त हो उसी को शिष्य वनाया जाय। उत्तराध्ययन सूत्र मे कहा गया है–

आणा निद्देस करे, गुरुणमुववाय कारए।
इंगियागार सपन्ने, से विणीए त्ति वुच्चइ।। अ १ गा २।।

वर्तमान मे कुछ सप्रदायो मे शिष्य शिष्याओ की लिप्सा का ऐसा भूत सवार हो गया हे कि योग्यता अयोग्यता का परीक्षण तो दूर, जो मिला उसको मूडने की तत्परता बनी रहती है। भले ही बाद मे वह अपने कुकृत्यो से शासन को कलकित ही क्यो न कर दे।

साधुमार्गी सघ मे गुरु शिष्य परपरा का एक क्रांतिकारी परिवर्तन .

साधुमार्गी धर्म सघ मे गुरु शिष्य परपरा का प्रवाह पचम पट्टधर पूज्य श्री श्रीलालजी म सा के शासनकाल तक निर्बाध रूप से चलता रहा। अच्छे चारित्र प्रिय त्यागी वैरागी आत्माओ का परीक्षण करके ही पूर्वाचार्यो द्वारा अपने–अपने प्रतिबोधित मुमुक्षुओ को दीक्षित करने की आज्ञा प्रदान की जाती थी फिर भी शिष्य ममत्व से बढने वाली स्वछदता, अव्यवस्था एव आचार शैथल्य से सघ गरिमा को सुरक्षित रखने हेतु इस परम्परा को बाधक मानकर छठे पट्टधर युगदृष्टा ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहर ने चुरू (राज) शहर मे सवत् १९८५ की फाल्गुन बदी– १३ शनिवार को एक क्रातिकारी परिवर्तन करके सर्व सतो की राय एव हस्ताक्षर सहित निर्णय लिया कि आज से सब शिष्य आचार्य श्री की नेश्राय मे ही होगे।

अपनी नेश्राय मे शिष्य बनाने का त्यागपत्र :

ॐ नमो सिद्धाणं

।। पूज्य श्री १००८ श्री हुक्मीचद जी महाराज श्री शिवलाल जी महाराज श्री उदेचद जी महाराज श्री चौथमल जी महाराज श्री श्रीलाल जी महाराज के पट्टधर श्री जवाहिरलाल जी महाराज की मौजूदगी मे शहर चुरू मध्य हाजर सब सता की राह से नीचे लिखे ठहराव पास कियो गयो है।

१ आज मिति सवत् १९८५ फागण बद १३ शनिवार के बाद जो दीक्षा आपणी सप्रदाय मे होगा वह सब नवदीक्षित शिष्य सप्रदाय का जो आचार्य विद्यमान होगा उनकी नेश्राय मे ही रहेगा आचार्य के सिवाय और कोई भी सत ने अपनी नेश्राय मे शिष्य करवा को याने चेला करवा को हक नहीं है। पूज्य जी महाराज की आज्ञा दूर या प्रत्यक्ष मे प्राप्त करके ही दीक्षा देने को हरेक सत ने अधिकार है परन्तु पूज्य श्री कि बिना आज्ञा देने को अधिकार कोई भी सत को नहीं, दीक्षा देने वाला शिष्य को पूज्य जी महाराज की नेश्राय मे करे।। ॐ शाति।।

द मोडीराम का, द चादमल का, द गब्बूलाल का, द शोभालाल का, द घासीलाल का, द कन्हैयालाल का, द गुणेशलाल का, द सरदामल का, द हरकचद का, द छगनलाल का, द श्री चद, द चादमल, द मनोहरलाल, द बगतावरमल, द गुलाबचन्द, द कपूरचन्द, द हरकचन्द, द सूरज मल, द सूर्यमल, द चोथमल, द सुदरलाल, द भीवराज, द श्रीमल, द जीवनलाल, द केशरीमल, द सागरमल, द चादमल सप्रदाय मे रेवे जीते, द सुगाल चद, द घासीलाल नया नगर वाला, द समेरमल मुनि, द परताब मल, द चत्तरसिह, द जवरीमल, द हमीरमल, द रेखचद, द नदराम का, द अम्बालाल का, द जैन बाल गब्बूलाल, द बोथलाल, द हरकचद, द पन्नालाल, द मोतीलाल, द धूलचद, द मोतीलाल, द सरदामल, द गोकुलचद। — मूल प्रति पृ ६१२

तत्पश्चात् आज तक सतो की दीक्षा आचार्यो के नेश्राय मे होती आयी है और वर्तमान मे भी हो रही है। इसी प्रकार सतियो की भी दीक्षाये अपनी–अपनी प्रवर्तिनी की नेश्राय मे ही होना निश्चित हुआ। —मूल प्रति ट ६२६

शान्त क्रान्ति के अग्रदूत आचार्य श्री गणेशलाल जी म सा ने इस परपरा को परम विदुषी महासती मनोहरकवर जी म व तपस्विनी महासती नानूकवर जी आदि के सहयोग से कुछ और नवीनीकरण दिया। जिसके आधार पर वर्तमान आचार्य श्री की नियुक्ति के साथ ही सतो की तरह सतियो ने भी हस्ताक्षर द्वारा यह प्रतिज्ञा धारण कर ली कि आज से सतियो की दीक्षाये भी आचार्य श्री जी की नेश्राय मे ही होगी। तब से लगाकर आज तक जो भी दीक्षार्थी भाई बहिन दीक्षा लेना चाहते हो वे आचार्य श्री के चरणो मे हस्ताक्षर युक्त एक प्रतिज्ञापत्र पेश करते है। उसके बाद उनकी पूर्ण समर्पणता एव योग्यता को देखकर ही दीक्षा प्रदान करने का निर्णय लिया जाता है।

क्रियोद्वारक हरजी ऋषि व उनका कोटा सप्रदाय

उपरोक्त जिन पाच क्रियोद्धारक महापुरुषो का उल्लेख किया गया है, उनमे से तेजसिह जी यति के गच्छ से निकल कर हर्षचद जी (हरजी) म सा. ने कोटा प्रान्त मे स १७८५ मे क्रियोद्धार करके शुद्ध साधुमार्ग का प्रचार–प्रसार किया। उनके ऊपर पूर्ण आस्था रखने वाला समूह कोटा सम्प्रदाय के रूप मे विख्यात हुआ। इनकी गुरु–शिष्य परम्परा निम्न प्रकार से वृद्धिगत हुई–

- पूज्य हर्षचद जी म सा के शिष्य गुलाब चद जी म सा (गोधाजी) हुए।
- गुलाबचन्द जी के शिष्य परशराम जी म सा. हुए।
- परशराम जी म सा के खेतसिह जी म सा और लोकमन जी म सा ये दो शिष्य हुए।
- खेतसिह जी म सा के जीवराज जी म सा ढोलाजी म सा, शुभराम जी म सा, थानसिह जी म सा, महाराम जी म सा, कालुराम जी म सा, शुभराम जी म सा, फकीर दास जी म सा, गगाराम जी म सा, सुखराम जी म सा, भीमराज जी म सा, खींवसी जी म सा, घासीलाल जी

इसी प्रकार गुरु को निर्देश दिया गया है कि जो शिष्य विनीत, भद्र परिणामी, इगिताकार सपन्न, पाप भीरु, निरहंकारी आदि गुणो से युक्त हो उसी को शिष्य बनाया जाय। उत्तराध्ययन सूत्र मे कहा गया है–

आणा निद्देस करे, गुरुणमुववाय कारए।
इंगियागार सपन्ने, से विणीए त्ति वुच्चइ।। अ १ गा. २।।

वर्तमान मे कुछ सप्रदायो मे शिष्य शिष्याओ की लिप्सा का ऐसा भूत सवार हो गया है कि योग्यता अयोग्यता का परीक्षण तो दूर, जो मिला उसको मूडने की तत्परता बनी रहती है। भले ही बाद मे वह अपने कुकृत्यो से शासन को कलकित ही क्यो न कर दे।

साधुमार्गी संघ मे गुरु शिष्य परपरा का एक क्रांतिकारी परिवर्तन

साधुमार्गी धर्म सघ मे गुरु शिष्य परपरा का प्रवाह पचम पट्टधर पूज्य श्री श्रीलालजी म सा के शासनकाल तक निर्बाध रूप से चलता रहा। अच्छे चारित्र प्रिय त्यागी वैरागी आत्माओ का परीक्षण करके ही पूर्वाचार्यो द्वारा अपने–अपने प्रतिबोधित मुमुक्षुओ को दीक्षित करने की आज्ञा प्रदान की जाती थी फिर भी शिष्य ममत्व से बढने वाली स्वछदता, अव्यवस्था एव आचार शैथल्य से सघ गरिमा को सुरक्षित रखने हेतु इस परम्परा को बाधक मानकर छठे पट्टधर युगदृष्टा ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहर ने चुरू (राज) शहर मे सवत् १९८५ की फाल्गुन बदी– १३ शनिवार को एक क्रातिकारी परिवर्तन करके सर्व सतो की राय एव हस्ताक्षर सहित निर्णय लिया कि आज से सब शिष्य आचार्य श्री की नेश्राय मे ही होगे।

अपनी नेश्राय मे शिष्य बनाने का त्यागपत्र

ॐ नमो सिद्धाण

।। पूज्य श्री १००८ श्री हुक्मीचद जी महाराज श्री शिवलाल जी महाराज श्री उदेचद जी महाराज श्री चौथमल जी महाराज श्री श्रीलाल जी महाराज के पट्टधर श्री जवाहिरलाल जी महाराज की मौजूदगी मे शहर चुरू मध्य हाजर सब सता की राह से नीचे लिखे ठहराव पास कियो गयो है।

१ आज मिति सवत् १९८५ फागण बद १३ शनिवार के बाद जो दीक्षा आपणी सप्रदाय मे होगा वह सब नवदीक्षित शिष्य सप्रदाय का जो आचार्य विद्यमान होगा उनकी नेश्राय मे ही रहेगा आचार्य के सिवाय और कोई भी सत ने अपनी नेश्राय मे शिष्य करवा को याने चेला करवा को हक नहीं है। पूज्य जी महाराज की आज्ञा दूर या प्रत्यक्ष मे प्राप्त करके ही दीक्षा देने को हरेक सत ने अधिकार है परन्तु पूज्य श्री कि बिना आज्ञा देने को अधिकार कोई भी सत को नहीं, दीक्षा देने वाला शिष्य को पूज्य जी महाराज की नेश्राय मे करे।। ॐ शाति।।

द मोडीराम का, द चादमल का, द गब्बूलाल का, द शोभालाल का, द घासीलाल का, द कन्हैयालाल का, द गुणेशलाल का, द सरदामल का, द हरकचद का, द छगनलाल का, द श्री चद, द चादमल, द मनोहरलाल, द बगतावरमल, द गुलाबचन्द, द कपूरचन्द, द हरकचन्द, द सूरज मल, द सूर्यमल, द चोथमल, द सुदरलाल, द भीवराज, द श्रीमल, द जीवनलाल, द केशरीमल, द सागरमल, द चादमल सप्रदाय मे रेवे जीते, द सुगाल चद, द घासीलाल नया नगर वाला, द समेरमल मुनि, द परताब मल, द चत्तरसिह, द जवरीमल, द हमीरमल, द रेखचद, द नदराम का, द अम्बालाल का, द जैन बाल गब्बूलाल, द बोथलाल, द हरकचद, द पन्नालाल, द मोतीलाल, द धूलचद, द मोतीलाल, द सरदामल, द गोकुलचद। — मूल प्रति पृ ६१२

तत्पश्चात् आज तक सतो की दीक्षा आचार्यो के नेश्राय मे होती आयी है और वर्तमान मे भी हो रही है। इसी प्रकार सतियो की भी दीक्षाये अपनी–अपनी प्रवर्तिनी की नेश्राय मे ही होना निश्चित हुआ। —मूल प्रति ट ६२६

शान्त क्रान्ति के अग्रदूत आचार्य श्री गणेशलाल जी म सा ने इस परपरा को परम विदुषी महासती मनोहरकवर जी म व तपस्विनी महासती नानूकवर जी आदि के सहयोग से कुछ और नवीनीकरण दिया। जिसके आधार पर वर्तमान आचार्य श्री की नियुक्ति के साथ ही सतो की तरह सतियो ने भी हस्ताक्षर द्वारा यह प्रतिज्ञा धारण कर ली कि आज से सतियो की दीक्षाये भी आचार्य श्री जी की नेश्राय मे ही होगी। तब से लगाकर आज तक जो भी दीक्षार्थी भाई बहिन दीक्षा लेना चाहते हो वे आचार्य श्री के चरणो मे हस्ताक्षर युक्त एक प्रतिज्ञापत्र पेश करते है। उसके बाद उनकी पूर्ण समर्पणता एव योग्यता को देखकर ही दीक्षा प्रदान करने का निर्णय लिया जाता है।

क्रियोद्वारक हरजी ऋषि व उनका कोटा सप्रदाय :

उपरोक्त जिन पाच क्रियोद्धारक महापुरुषो का उल्लेख किया गया है, उनमे से तेजसिह जी यति के गच्छ से निकल कर हर्षचद जी (हरजी) म सा ने कोटा प्रान्त मे स १७८५ मे क्रियोद्धार करके शुद्ध साधुमार्ग का प्रचार–प्रसार किया। उनके ऊपर पूर्ण आस्था रखने वाला समूह कोटा सम्प्रदाय के रूप मे विख्यात हुआ। इनकी गुरु–शिष्य परम्परा निम्न प्रकार से वृद्धिगत हुई–

- पूज्य हर्षचद जी म सा के शिष्य गुलाब चद जी म सा (गोधाजी) हुए।
- गुलाबचन्द जी के शिष्य परशराम जी म सा. हुए।
- परशराम जी म सा के खेतसिह जी म सा और लोकमन जी म सा ये दो शिष्य हुए।
- खेतसिह जी म सा के जीवराज जी म सा ढोलाजी म सा, शुभराम जी म सा, थानसिह जी म सा, महाराम जी म सा, कालुराम जी म सा, शुभराम जी म सा, फकीर दास जी म सा, गगाराम जी म सा, सुखराम जी म सा, भीमराज जी म सा, खींवसी जी म सा, घासीलाल जी

इसी प्रकार गुरु को निर्देश दिया गया है कि जो शिष्य विनीत, भद्र परिणामी, इगिताकार सपन्न, पाप भीरु, निरहकारी आदि गुणो से युक्त हो उसी को शिष्य बनाया जाय। उत्तराध्ययन सूत्र मे कहा गया है–

आणा निद्देस करे, गुरुणमुववाय कारए।
इगियागार सपन्ने, से विणीए त्ति वुच्चइ।। अ १ गा २।।

वर्तमान मे कुछ सप्रदायो मे शिष्य शिष्याओ की लिप्सा का ऐसा भूत सवार हो गया हे कि योग्यता अयोग्यता का परीक्षण तो दूर, जो मिला उसको मूडने की तत्परता बनी रहती है। भले ही बाद मे वह अपने कुकृत्यो से शासन को कलकित ही क्यो न कर दे।

साधुमार्गी संघ मे गुरु शिष्य परपरा का एक क्रांतिकारी परिवर्तन -

साधुमार्गी धर्म सघ मे गुरु शिष्य परपरा का प्रवाह पचम पट्टधर पूज्य श्री श्रीलालजी म सा के शासनकाल तक निर्बाध रूप से चलता रहा। अच्छे चारित्र प्रिय त्यागी वैरागी आत्माओ का परीक्षण करके ही पूर्वाचार्यो द्वारा अपने–अपने प्रतिबोधित मुमुक्षुओ को दीक्षित करने की आज्ञा प्रदान की जाती थी फिर भी शिष्य ममत्व से बढने वाली स्वछदता, अव्यवस्था एव आचार शैथल्य से सघ गरिमा को सुरक्षित रखने हेतु इस परम्परा को बाधक मानकर छठे पट्टधर युगदृष्टा ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहर ने चुरू (राज) शहर मे सवत् १९८५ की फाल्गुन बदी– १३ शनिवार को एक क्रातिकारी परिवर्तन करके सर्व सतो की राय एव हस्ताक्षर सहित निर्णय लिया कि आज से सब शिष्य आचार्य श्री की नेश्राय मे ही होगे।

अपनी नेश्राय मे शिष्य बनाने का त्यागपत्र ·

ॐ नमो सिद्धाण

।। पूज्य श्री १००८ श्री हुक्मीचद जी महाराज श्री शिवलाल जी महाराज श्री उदेचद जी महाराज श्री चौथमल जी महाराज श्री श्रीलाल जी महाराज के पट्टधर श्री जवाहिरलाल जी महाराज की मौजूदगी मे शहर चुरू मध्य हाजर सब सता की राह से नीचे लिखे ठहराव पास कियो गयो है।

१ आज मिति सवत् १९८५ फागण बद १३ शनिवार के बाद जो दीक्षा आपणी सप्रदाय मे होगा वह सब नवदीक्षित शिष्य सप्रदाय का जो आचार्य विद्यमान होगा उनकी नेश्राय मे ही रहेगा आचार्य के सिवाय और कोई भी सत ने अपनी नेश्राय मे शिष्य करवा को याने चेला करवा को हक नहीं है। पूज्य जी महाराज की आज्ञा दूर या प्रत्यक्ष मे प्राप्त करके ही दीक्षा देने को हरेक सत ने अधिकार है परन्तु पूज्य श्री कि बिना आज्ञा देने को अधिकार कोई भी सत को नहीं, दीक्षा देने वाला शिष्य को पूज्य जी महाराज की नेश्राय मे करे।। ॐ शाति।।

द मोडीराम का, द चादमल का, द गब्बूलाल का, द शोभालाल का, द घासीलाल का, द कन्हैयालाल का, द गुणेशलाल का, द सरदामल का, द हरकचद का, द छगनलाल का, द श्री चद, द चादमल, द मनोहरलाल, द बगतावरमल, द गुलाबचन्द, द कपूरचन्द, द हरकचन्द, द सूरज मल, द सूर्यमल, द चोथमल, द सुदरलाल, द भीवराज, द श्रीमल, द जीवनलाल, द केशरीमल, द सागरमल, द चादमल सप्रदाय मे रेवे जीते, द सुगाल चद, द घासीलाल नया नगर वाला, द समेरमल मुनि, द परताब मल, द चत्तरसिह, द जवरीमल, द हमीरमल, द रेखचद, द नदराम का, द अम्बालाल का, द जैन बाल गब्बूलाल, द बोथलाल, द हरकचद, द पन्नालाल, द मोतीलाल द धूलचद, द मोतीलाल, द सरदामल, द गोकुलचद। — मूल प्रति पृ ६१२

तत्पश्चात् आज तक सतो की दीक्षा आचार्यो के नेश्राय मे होती आयी है और वर्तमान मे भी हो रही है। इसी प्रकार सतियो की भी दीक्षाये अपनी–अपनी प्रवर्तिनी की नेश्राय मे ही होना निश्चित हुआ। –मूल प्रति ट ६२६

शान्त क्रान्ति के अग्रदूत आचार्य श्री गणेशलाल जी म सा ने इस परपरा को परम विदुषी महासती मनोहरकवर जी म व तपस्विनी महासती नानूकवर जी आदि के सहयोग से कुछ और नवीनीकरण दिया। जिसके आधार पर वर्तमान आचार्य श्री की नियुक्ति के साथ ही सतो की तरह सतियो ने भी हस्ताक्षर द्वारा यह प्रतिज्ञा धारण कर ली कि आज से सतियो की दीक्षाये भी आचार्य श्री जी की नेश्राय मे ही होगी। तब से लगाकर आज तक जो भी दीक्षार्थी भाई बहिन दीक्षा लेना चाहते हो वे आचार्य श्री के चरणो मे हस्ताक्षर युक्त एक प्रतिज्ञापत्र पेश करते है। उसके बाद उनकी पूर्ण समर्पणता एव योग्यता को देखकर ही दीक्षा प्रदान करने का निर्णय लिया जाता है।

क्रियोद्वारक हरजी ऋषि व उनका कोटा सप्रदाय .

उपरोक्त जिन पाच क्रियोद्धारक महापुरुषो का उल्लेख किया गया है, उनमे से तेजसिह जी यति के गच्छ से निकल कर हर्षचद जी (हरजी) म सा ने कोटा प्रान्त मे स १७८५ मे क्रियोद्धार करके शुद्ध साधुमार्ग का प्रचार–प्रसार किया। उनके ऊपर पूर्ण आस्था रखने वाला समूह कोटा सम्प्रदाय के रूप मे विख्यात हुआ। इनकी गुरु–शिष्य परम्परा निम्न प्रकार से वृद्धिगत हुई–

- ❑ पूज्य हर्षचद जी म सा के शिष्य गुलाब चद जी म सा (गोधाजी) हुए।
- ❑ गुलाबचन्द जी के शिष्य परशराम जी म सा हुए।
- ❑ परशराम जी म सा के खेतसिह जी म सा और लोकमन जी म सा ये दो शिष्य हुए।
- ❑ खेतसिह जी म सा के जीवराज जी म सा ढोलाजी म सा, शुभराम जी म सा, थानसिह जी म सा, महाराम जी म सा, कालुराम जी म सा, शुभराम जी म सा, फकीर दास जी म सा, गगाराम जी म सा, सुखराम जी म सा, भीमराज जी म सा, खींवसी जी म सा, घासीलाल जी

म सा, लूणकरण जी म सा, बखतराम जी म सा, मोतीराम जी म सा, गोकुलचद जी म सा, ईश्वरचन्द जी म सा ये कुल अठारह शिष्य हुए।

इनमे से केवल एक शिष्य खींवसी जी म सा का परिवार चला, जिनके परिवार का परिचय इस प्रकार है—

—खींवसी जी म सा के गुलाबचन्द जी म सा, फतहचन्द जी म सा एवचन्द्रभान जी म सा कुल तीन शिष्य हुए।

- ❑ गुलाबचन्द जी म सा के फरसराम जी म सा (द्वितीय) एव भगतराम जी म सा ये दो शिष्य हुए।
- ❑ परशराम जी म सा के भूधर जी म सा एव मगन जी म सा ये दो शिष्य हुए।
- ❑ भूधर जी म सा के कनीराम जी म सा एव कुन्दनमल जी म सा ये दो शिष्य हुए।
- ❑ कनीराम जी म सा के शिवलाल जी म सा एव माणकचन्द जी म सा ये दो शिष्य हुए।
- ❑ शिवलाल जी म सा के बच्छराज जी म सा शिष्य हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- ❑ माणकचन्द जी म सा के शिष्य जडावचन्द जी हुए।
- ❑ कुन्दनमल जी म सा के शिष्य राम प्रताप जी म सा हुए।
- ❑ राम प्रताप जी म सा के शिष्य रामलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

(इति परसराम जी के शिष्य भूधर परिवार)

फरसराम जी द्वितीय के दूसरे शिष्य मगन जी म सा का परिवार —

मगन जी म सा के रूपजी म सा, प्रतापमल जी म सा, छोटूजी ये तीन शिष्य हुए।

- ❑ प्रतापमल जी म सा के शोभाचन्द्र जी म सा हुए।
- ❑ शोभाचन्द्र जी म सा के शिवनाथ जी म सा, बखतावरमल जी म सा, केशरीमल जी म सा ये तीन शिष्य हुए।
- ❑ बख्तावरमल जी म सा के शिष्य घोडीदास जी म सा हुए।
- ❑ घोडीदास जी म सा के शिष्य ऊकार जी म सा और हरकचन्द्र जी म सा हुए।

(इति मगनलाल जी म सा का परिवार)

(इति फरसराम जी म सा का परिवार)

गुलाबचन्द्र जी म सा के द्वितीय शिष्य भगतराम जी म सा का शिष्य परिवार—

- भगतराम जी म सा के बख्तावरमल जी म सा और रामचन्द्र जी ये दो शिष्य हुए।
- रामचन्द्र जी म सा के शिष्य खेमचन्द्र जी म सा हुए।
- खेमचन्द जी म सा के शिष्यचन्द्रभाण जी म सा हुए।

(इति खीवजीं के प्रथम शिष्य गुलाबचन्द जी म सा का परिवार)

खींवसी जी म सा के द्वितीय शिष्य फतेहचन्द जी म सा का परिवार—

- फतहचन्द जी म सा के अनोपचन्द जी म सा शिष्य हुए।
- अनोपचन्द जी म सा के गोपाल जी म सा, अमीचन्द जी म सा, जयचन्द जी म सा, देवीचन्द जी म सा, शिवलाल जी म सा। बडे सदाजी म सा, नन्दराम जी म सा ये कुल सात शिष्य हुए।

इनमे से देवजी म सा और नन्दराम जी म सा का परिवार बढा।

देवजी म सा का परिवार—

देवजी म सा के पन्नालाल जी म सा, चपालाल जी म सा, वृद्धिचन्द जी म सा ये तीन शिष्य हुए।

- पन्नालाल जी म सा के खेमोजी म सा व कनीराम जी म सा हुए।
- कनीराम जी म सा के किस्तुरचन्द जी म सा, चम्पालाल जी म सा, हीरालाल जी म सा, पन्नालाल जी के चार शिष्य हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- देवजी म सा के दूसरे शिष्य चम्पालाल जी म सा के उम्मेदमल जी म सा व चुन्नीलाल जी म सा हुए।
- चुन्नीलाल जी म सा के किशनलाल जी और विशनलाल जी म सा ये दो शिष्य हुए।
- किशनलाल जी म सा के शिष्य बलदेव जी म सा हुए।
- बलदेव जी म सा के शिष्य पूज्य श्रीलाल जी म सा, राजमल जी म सा हरकचन्द जी म सा (कोटा), घासीलाल जी म सा हुए।
- पूज्य श्रीलाल जी म सा के शिष्य गूजरमल जी म सा हुए।
- हरकचन्द जी म सा के शिष्य मागीलाल जी म सा, नन्दलाल जी म सा, भूरालाल जी म सा हुए।
- मागीलाल जी म सा के शिष्य केशरी मल जी म सा व आनन्दीलाल जी म सा हुए।

देवजी म सा के तीसरे शिष्य वृद्धिचन्द जी म सा. का परिवार–

- ❑ वृद्धिचन्द जी म सा के शिवलाल जी म सा, ख्यालीलाल जी म सा, धन्नालाल जी म सा, मन्नालाल जी म सा ये चार शिष्य हुए।
- ❑ मन्नालाल जी म सा के शिष्य झूमालाल जी म सा हुए।
- ❑ झूमालाल जी म सा के शिष्य घासीलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

अनोपचन्द जी म.सा. के शिष्य नन्दराम जी म सा का परिवार–

- ❑ नन्दराम जी म सा के शिष्य चुन्नीलाल जी म सा, हीरालाल जी म सा छोटासदा जी म सा हुए।
- ❑ छोटासदा जी म सा के शिष्य किशनलाल जी म सा हुए।
- ❑ किशनलाल जी म सा के शिष्य माणकचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा

खींवसी जी म सा. के शिष्यचन्द्रभाण जी म सा का परिवार–

- ❑ चन्द्रभाण जी म सा के शिष्य जीवाजी म सा और सूरजमल जी म सा हुए।

"इति खींवसी जी म सा का परिवार"

आचार्य फरसराम जी म सा के दूसरे शिष्य लोकमत जी म सा का परिवार–

- ❑ पूज्य लोकमत जी म सा के पूज्य महाराम जी म सा शिष्य हुए।
- ❑ पूज्य महाराम जी म सा के पूज्य दौलतराम जी म सा शिष्य हुए।
- ❑ पूज्य दौलत राम जी म सा के पूज्यलालचन्द जी म सा, गणेण जी म सा, दलपतराय जी म सा, सूरजमल जी म सा, दयालचन्द जी म सा, गुलाबचन्द जी म सा, राजराम जी म सा, माणकचन्द जी म सा, कनीराम जी म सा, आदि शिष्य हुए, इनमे सेलालचन्द जी म सा, गणेश जी म सा, राजाराम जी म सा इन तीन का परिवार चला।
- ❑ पूज्यलालचन्द जी म सा के पूज्य हुक्मीचन्द जी म सा व गजाजी म सा ये दो शिष्य हुए।
- ❑ पूज्य हुक्मीचन्द जी म.सा– पूर्ण स्वतन्त्र सम्प्रदाय।

गजाजी म सा. का शिष्य परिवार–

- ❑ गजाजी म.सा के शिष्य चमनजी म सा, बाल जी म सा, बाल मुकुन्द जी म सा, सूरजमल जी म सा जीवन जी म सा।
- ❑ चमन जी म सा के शिष्य रामकुमार जी म सा हुए।
- ❑ बालजी म.सा के शिष्य रोडमल जी म सा और रामलाल जी म सा हुए।

- रोडमल जी म सा के शिष्य प्रेम राज जी म सा हुए।
- प्रेमराज जी म सा के शिष्य गणेशमल जी, चान्दमल जी म सा, हीरालाल जी म सा, जीवराज जी म सा हुए।
- गणेशमल जी (खद्दर धारी) के शिष्य मिश्रीलाल जी म सा हुए।
- मिश्रीलाल जी म सा के शिष्य सपतराज जी म सा, रतनचन्द जी म सा, कुशालचन्द जी म सा हुए।
- जीवराज जी म सा के शिष्य ऋषभ मुनि जी, कीर्ति मुनि जी म सा क्रान्ति मुनि जी हुए।
- गजाजी जी म सा के शिष्य सूरजमल जी म सा के एक शिष्य चतुर्भुज जी म सा हुए।

।। इति गजाजी म सा का परिवार।।

आचार्य दौलतराम जी म सा के शिष्य गणेश जी म सा का परिवार

- गणेश जी म सा के अमींचन्द जी म सा, जीवन जी म सा, भैरूलाल जी म सा ये तीन शिष्य हुए।
- अमीचन्द जी म सा के मगन जी म सा, बाघजी म सा, माणकचन्द जी म सा, भोलुजी म सा, भैरू जी म सा, कालूजी म सा , धन्ना जी म सा (प्रथम), धन्ना जी म सा (द्वितीय), भैरूजी जी म सा, चुन्नीलाल जी म सा, गिरधारीलाल जी म सा, धन्नालाल जी म सा आदि बारह शिष्य हुए।

इनमे से कालू जी म सा और धन्नालाल जी म सा का परिवार चला।

- कालूजी जी म सा के अमरचन्द जी म सा बख्तावरलाल जी म सा, रामकुमार जी म सा ये तीन शिष्य हुए।

इनमे से सिर्फ रामकुमार जी म सा का परिवार चला।

रामकुमार जी म सा के नानालाल जी म सा वृद्धिचन्द जी म सा, रामनिवास जी म सा, हजारी मल जी म सा ये चार शिष्य हुए। इनमे से रामनिवास जी म सा वर्तमान मे मोजूद है। आगे परिवार नहीं चला।

- धन्नालाल जी म सा के शिष्य हीरालाल जी म सा हुए, आगे परिवार नहीं बढा।
- जीवन जी म सा प्रथम के माणकचन्द जी म सा शिष्य हुए।
- माणकचन्द जी म सा के शिष्य रतनचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

।। इति गणेशजी म सा का परिवार ।।

आचार्य दौलतराम जी म सा के शिष्य राजाराम जी म सा. का परिवार–

- राजारामजी म सा के शिष्य गोविन्द राम जी म सा हुए।
- गोविन्दराम जी म सा के शिष्य फतेहचन्द जी म सा, जीवराज जी म सा, भैरूजी म सा , महाचन्द जी म सा., दयालचन्द जी म सा हुए।

गोविन्दराम जी म सा के शिष्य फतहचन्द जी म सा का शिष्य परिवार–

- फतहचन्द जी म सा के मानमल जी म सा बलदेव जी म सा शिष्य हुए।
- मानमल जी म सा के शिष्य छगनलाल जी म सा गभीरमल जी म सा, हेमराज जी म सा हुए।
- छगनमल जी म सा के बख्तावरमल जी म सा, जेठमल जी म सा, प्रेमराज जी म सा, राजमल जी म सा, गूजरमल जी म सा, मन्नालाल जी म सा, जीवन जी म सा, सूरजमल जी म सा, शकरलाल जी म सा, देवीलाल जी म सा, भारमल जी म सा आदि ग्यारह शिष्य हुए।

इनमे से बख्तावरमल जी, सूरजमल जी म सा, शकरलाल जी म सा और देवीलाल जी म सा इन चार का परिवार चला।

- बख्तावरमल जी म सा के शिष्य गुलाबचन्द जी म सा व कजोडीमल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- सूरजमल जी म सा के शिष्य चतुर्भुज जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- शकरलाल जी म सा के माधवलाल जी म सा, रूपचन्द जी म सा शिष्य हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- देवीलाल जी म सा के मागीलाल जी म सा, पृथ्वीराज जी म सा शिष्य हुए।
- पृथ्वीराज जी म सा के शिष्य जीवराज जी म सा हुए।
- मानमल जी म सा. के दूसरे शिष्य गभीरमल जी म सा के मिश्रीमल जी म सा और मोमदराम जी म सा शिष्य हुए।
- मिश्रीलाल जी म सा के शिष्य चतुरसिह जी म सा हुए।
- मानजी म सा के तीसरे शिष्य हेमराजजी म सा के मोतीलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- फतहचन्द जी म सा के दूसरे शिष्य बलदेव जी म सा के केशरीमल जी म सा और मगनमल जी म सा ये दो शिष्य हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

- गोविन्दराम जी के शिष्य दयाल जी म सा के शिष्य शिवलाल जी म सा हुए, जिनकी पूरी सप्रदाय चली।

।। इति राजाराम जी म सा का परिवार ।।

आगे चलकर यह सप्रदाय तीन विभागो मे विभक्त हो गया। पूज्य गोविन्दराम जी म सा का परिवार, दूसरा पूज्य हुक्मीचन्द जी म सा का परिवार और तीसरा अनोपचन्द जी म सा का परिवार।

उपरोक्त सारे शिष्य परिवार मे से कोटा सप्रदाय के पूज्य गोविदराम जी म सा की मूल परम्परा से सम्बन्धित वर्तमान मे केवल मिश्रीलाल जी म सा, राम निवास जी म सा, जीव राम जी म सा, सपत राज जी म सा, ऋषभ मुनि जी म सा, क्रान्ति मुनि जी म सा और कीर्ति मुनि जी म सा और गोडी दास जी की परम्परा के मोहनमुनि जी म सा आदि, सन्त तथा वृद्धि कवर जी म सा आदि महासतिया जी विचरण कर रही है और अनोपचन्द जी म सा के परिवार मे किशनलाल जी म सा एव श्री बल देवजी म सा के शिष्य पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा आदि गुरुदेव के स्वर्गवास के पश्चात् पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा के चतुर्थ पट्टधर आचार्य श्री चौथमल जी म सा के शासन मे चले गये। उसके बाद किशनलाल जी म सा के शिष्य हरखचन्द जी म सा कोटा वाले भी पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के शासन मे अपने शिष्यो के साथ सम्मिलित हो गये।

उनके द्वारा हस्त लिखित हस्ताक्षर युक्त समर्थन पत्र की नकल

-: समर्पण पत्र:-

लिखतु पूज्य हुक्मीचन्द जी महाराज की सप्रदाय का पूज्य श्री श्रीलाल जी महाराज सु पज अनोपचन्द जी महाराज का सम्प्रदाय का किशनलाल जी महाराज श्री सामी जी वीसनलाल जी, श्री बलदेव का सीष हरकचन्द, मागीलाल, नन्दलाल की वीद सहत वदामा मालूम होवे कर वो जी ठाणा तीन तो आपका सयोग मे रखकर आपकी आगना माफक चालेवो चावा सो आप करपा करे मान सभोग मे लेलो। परन्तु पक्खी छमछारी परकुणो मा की गुरु आमनाय की करता रागा वोर समाचारी कलम इकाणवे आपकी प्रवृति मापक पालागा। सभोग आप के होगा जाषु करागा ओरा सु नहीं करपा कर मासु सयोग कर लीजिये मोती चेत सुद ८ सोमवार सवत् १९७० का द हरकचन्द सादु दी पज्य जैष्ठ सुदी १ द मागीलाल हरकचन्द का दीक्षा छ आसोज वद ३ द नदला साधुत्व दीक्षा ६७ कार्तिक वद।

पूज्य हुक्मीचन्द जी म सा का परिवार पूर्ण स्वतन्त्र रूप से आगे दिया गया हे।

इसके अलावा पूज्य श्रीलाल जी म सा के व हरकचद जी म सा (कोटा वाले) के ९ बोल कलमो का परस्पर खुला सा हुआ, जो इस प्रकार है –

१ सप्रदाय का नाम

२ गुरु का नाम

३ पक्खी

४ सवत्सरी

५ दो प्रतिक्रमण

६ चेला माके साधु का माकी नेश्राय मे करना।

७ पोथा माका नेश्राय का है सो माके

८ ग्यारह सभोग आहार पानी न्यारो

९ एक वर्ष हाडोती आडी विचरणो दो वर्ष हुक्म होवे जहा चोमासो करनो है, प्रवृति पूज्य जवाहिरलाल जी म सा शासन मे चल रही हे।

—मूल प्रति पृष्ठ ६०४

क्रियोद्वारक हुक्मीचन्द जी म सा की शिष्य परम्परा—

सवत् १८८० की मिगसर वदी १ को कोटा सम्प्रदाय के पूज्य श्रीलालचन्द्र जी म सा के प्रथम शिष्य पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा ने साधुमार्गी धर्म सघ मे व्याप्त शिथिलाचार का उत्मूलन करने हेतु पुन क्रियोद्धार करके सघ रूपी पावन सरिता के प्रवाह को द्विगुणित वेग दिया और तब पूज्य गोविन्द राम जी म सा के शिष्य दयालचन्द्र जी म सा भी उनके सहयोगी बन कर साथ मे रहने लगे। जब शिवलाल जी म सा ने दीक्षा ली तो हुक्मीचन्द जी म सा ने अपने नेश्राय मे शिष्य बनाने का प्रलोभन त्याग कर के पूज्य शिवलाल जी म सा के दयालचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षित किया। उनका शिष्य परिवार इस प्रकार विकसित हुआ।

हुक्मीचन्द जी म.सा के सहयोगी दयालचन्द जी म सा. का शिष्य परिवार .—

- दयालचन्द जी म सा के शिवलाल जी म सा शिष्य हुए।
- शिवलाल जी म सा के मन्ना जी महाराज, चतुर्भुज जी महाराज, उम्मेदमल जी महाराज, उत्तमचन्द जी म सा, मगन जी म सा, हरकचन्द जी म सा ये कुल ६ शिष्य हुए। इनमे से चतुर्भुज जी म सा और हरकचन्द जी म सा का शिष्य परिवार बढा।

चतुर्भुज जी म सा. का शिष्य परिवार—

- चतुर्भुज जी म सा के सादुल जी म सा और बडेलालचन्द जी म सा ये दो शिष्य हुए।
- सादुल जी म सा के मोडसिह जी म सा, भीमराज जी म सा और बच्छराज जी म सा ये

तीन शिष्य हुए। इनमे से मोडसिह जी म सा और बच्छराज जी म सा का परिवार चला।

- मोडसिह जी म सा के मोडजी म सा, दयाराम जी म सा, मयाचन्द जी म सा और खेम जी म सा का परिवार चला।
- दयाराम जी म सा के जसराज जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा। खेमराज जी म सा के कोदर जी म सा, दयाराम जी म सा, टीकमचन्द जी म सा, हजारीमल जी म सा, ये चार शिष्य हुए। उनमे से हजारी मलजी म सा का परिवार बढा।
- हजारीमल जी म सा के चुन्नीलाल जी म सा, कर्मचन्द जी म सा, नारायणदास जी म सा ये तीन शिष्य हुए। इनमे से चुन्नीलाल जी म सा और नारायण दास जी म सा का परिवार बढा।
- चुन्नीलाल जी म सा के शिष्य राजमल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- नारायण दास जी म सा के शिष्य भागीरथ जी म सा, मूलचन्द जी म सा मुलतानमल जी म सा, भोलाराम जी म सा हुए। मुलतानचन्द जी म सा के शिष्य बने।

सादुल जी म सा के शिष्य बच्छराज जी म सा का परिवार—

- बच्छराज जी म सा के रूघनाथ जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

।। इति सादुल जी म सा का परिवार।।

चतुर्भुज जी म सा. के दूसरे शिष्य बडेलालचन्द जी म सा का परिवार—

- लालचन्द जी म सा के सालगराम जी म सा और उनके पुत्र बडे केवलचन्द जी म सा ये दो शिष्य हुए। इनमे से बडे केवलचन्द जी म सा का परिवार बढा।
- बडे केवलचन्द जी म सा के चत्रोजी (उत्कृष्ट क्षमासागर जी म सा), हसराज जी म सा, पन्नालाल जी म सा, छोटे केवलचन्द जी म सा, लक्ष्मीचन्द जी म सा, जुहारमल जी म सा, रूपचन्द जी म सा, मोतीलाल जी म सा, आदि शिष्य हुए। इनमे से चत्रोजी म सा और छोटे केवलचन्द जी म सा का परिवार आगे बढा।

चत्रोजी म सा का परिवार—

- चत्रोजी म सा के मगन जी म सा, कृपा राम जी म सा, जयचन्द जी म सा आदि शिष्य हुए। तीनो का शिष्य परिवार बढा।
- मगन जी म सा के चम्पालाल जी म सा व उत्तमचन्द जी म सा ये दो शिष्य हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

- कृपाराम जी म सा के दुलीचन्द जी म सा ,लालचन्द जी म सा, मोती जी म सा, रूप जी म सा और हुक्मीचन्द जी म सा शिष्य हुए। इनमे से रूप जी म सा और हुक्मीचन्द जी म सा इन दो का परिवार बढा।
- रूपजी म सा के पन्नालाल जी म सा, पीथाजी म सा, किस्तूरचन्द जी म सा दोलत राम जी म सा, धनराज जी म सा, गुलाब जी म सा ये शिष्य हुए। आगे परिवार नहीं बढा
- हुक्मीचन्द जी म सा के वृद्धिचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- जयचन्द जी म सा के किस्तुरचन्द जी म सा और दोलजी म सा ये दो शिष्य हुए। इनमे से किस्तूरचन्द जी म सा का परिवार बढा।
- किस्तूरचन्द जी म सा के शिष्य दौलतचन्द जी म सा, खेमराज जी म सा, नाथू जी म सा, कालू जी म सा, रामलाल जी म सा एव छीतर मल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

।। इति चतरो जी म सा का परिवार।।

छोटे केवलचन्द जी म सा का परिवार—

- छोटे केवलचन्द जी म सा के थावरचन्द जी म सा, घासीलाल जी म सा, कवर जी म सा प्यारचन्द जी म सा, रतनचन्द जी म सा ये शिष्य हुए।

  इसमे से प्यारचन्द जी म सा और रतनचन्द जी म सा का परिवार बढा।
- प्यारचन्द जी म सा के देवो जी और नाथूजी ये दो शिष्य हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- रतनचन्द जी म सा के तिलोकचन्द जी म सा, ऋषभ दास जी, खेम राज जी म सा, ताराचन्द जी म सा, अमरचन्द जी म सा, पूज्य मन्नालाल जी म सा, ख्यालीलाल जी म सा, कर्मचन्द जी म सा, रिखबचन्द जी म सा, हजारीमल जी म सा, कवर जी म सा, बीजेमल जी म सा, रतिचन्द जी म सा, राम सिह जी म सा, फतह सिह जी म सा, वीर जी म सा, बालचन्द जी म सा, माणकचन्द जी म सा, आदि शिष्य हुए। इनमे से पूज्य मन्नालाल जी म सा कर्मचन्द जी म सा, हजारीमल जी म सा, हमीरमल जी म सा, फतहसिह जी म सा, बालचन्द जी म सा, व माणकचन्द जी म सा, के शिष्य परिवार बढे।
- पूज्य मन्नालाल जी म सा के शिष्य वृद्धिचन्द जी म सा, हुक्मीचन्द जी म सा, माणकचन्द जी म सा, मोतीलाल जी म सा, घेवरचन्द जी म सा, मिश्रीलाल जी म सा, छोटेलाल जी म सा, लक्ष्मीचन्द जी म सा, इन्द्रमल जी म सा, मनोहरलाल जी म सा, चुन्नीलाल जी म सा हुए।

इनमे से मोतीलाल जी म सा, चुन्नीलाल जी म सा, मिश्रीलाल जी म सा का शिष्य परिवार बढा।

❑ मोतीलाल जी म सा के शिष्य गब्बूलाल जी म सा, विनयचद जी म सा, रोशनलाल जी म सा, सरदारमल जी म सा हुए।

❑ चुन्नीलाल जी म सा के शिष्य भैरूलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

❑ मिश्रीलाल जी म सा के शिष्य पदमचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

❑ कर्मचन्द जी म सा के बालचन्द जी म सा, हसराज जी म सा, कजोडीमल जी म सा, गभीरमल जी म सा, जुहारलाल जी म सा, सूरजमल जी म सा, हसराज जी म सा शिष्य हुए। इनमे से एक कजोडीमल जी म सा का शिष्य परिवार बढा।

❑ कजोडीमल जी म सा के मागीलाल जी म सा और मोतीलाल जी म सा ये दो शिष्य हुए। लेकिन आगे परिवार नहीं बढा।

❑ हमीरमल जी म सा के शिष्य छब्बील जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

❑ फतहसिह जी म सा के शिष्य गगाराम जी म सा, टीकमचन्द जी म सा, जडावचन्द जी म सा हुए।

❑ गगाराम जी म सा के शिष्य कनकमल जी म सा हुए।

❑ कनकमल जी म सा के शिष्य कालू जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

❑ बालचन्द जी म सा के शिष्य माणकचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

।।इति छोटे केवलचन्द जी म सा का परिवार ।।

।। इति चतुर्भुज जी म सा का परिवार ।।

पूज्य शिवलाल जी म.सा. के शिष्य हरकचन्द जी म.सा. का परिवार—

❑ हरकचन्द जी म सा के पूज्य उदय सागर जी म सा, राजमल जी म सा, छोटेलालचन्द जी म सा, पूज्य चौथमल जी म सा, जयचन्द जी म सा, चतुर्भुज जी म सा, दलोजी म सा, झवर जी म सा, रामलाल जी म सा, शिष्य हुए। इनमे से राजमलजी म सा, पूज्य चौथमल जी म सा, जयचन्द जी म सा, चतुर्भुज जी म सा, झवर जी म सा का परिवार आगे विकसित हुआ।

राजमल जी म सा. का परिवार ·

❑ राजमल जी म सा के स्वरूपचन्द जी म सा, रतनचन्द जी म सा, देवजी म सा, घासीलाल जी म सा, रिखबदास जी म सा, मेघराज जी म सा, माना जी म सा, शिष्य हुए। इनमे से रतनचन्द जी ११, देव जी म सा, घासीलाल जी म सा, मानाजी म सा (मगन) का परिवार चला।

राजमल म.सा. के शिष्य रतनचदजी का परिवार—

- ❑ रतनचन्द जी म सा के मेघराज जी म सा, जुहारलाल जी म सा, गणेश जी म सा, गभीरमल जी म सा शिष्य हुए। इनमे से जुहारलाल जी म सा का परिवार वढा।
- ❑ जुहारमल जी म सा के शिष्य हीरालाल जी म सा, नदलाल जी म सा, माणकचन्द जी म सा, चैनराम जी म सा, लक्ष्मीचन्द जी म सा हुए। इनमे से हीरालाल जी म सा, नदलाल जी म सा, माणकचन्द जी म सा व लक्ष्मीचद जी म सा का परिवार वढा।
- ❑ हीरालाल जी म सा के साकरचन्द जी म सा, दिवाकर श्री चोथमल जी म सा, हजारीमल जी म सा, गुलाबचन्द जी म सा, शोभालाल जी म सा, मयाराम जी म सा, मूलचन्द जी म सा हुए। इनमे से चौथमल जी म सा, हजारीमल जी म सा, मयाराम जी म सा का परिवार बढा।
- ❑ जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म सा के पृथ्वीराज जी म.सा, हुक्मीचन्द जी म सा, भैरूलाल जी म सा, कजोडीमल जी म सा, किशनलाल जी म सा, चादमल जी म सा, छगनलाल जी म सा, प्यारचन्द जी म सा, चम्पालाल जी म सा, भेरूलाल जी म सा, वृद्धिचन्द जी म सा, नाथूलाल जी म सा, रामलाल जी म सा, सतोष जी म सा, नन्दलाल जी म सा, सागरमल जी म सा, रतनलाल जी म सा, रिखबचन्द जी म सा, बक्तावरमल जी म सा, इन्द्रमल जी म सा, केवलचन्द जी म सा, नदलाल जी म सा, (नन्दो), सोहनलाल जी म सा, मोहनलाल जी म सा शिष्य हुए। नन्दलाल जी के श्रीचन्द जी म सा, शातिलाल जी म सा शिष्य हुए।
- ❑ प्यारचन्द जी म सा के मन्नालाल जी म सा, चान्दमल जी म सा, मणिलाल जी म सा, गणेश मुनि जी म सा, पन्नालाल जी म सा, उदयमुनि म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- ❑ छगनलाल जी म सा के शिष्य मगन मुनि जी म सा, कल्याण जी म सा, सागरमल जी, म सा, मोतीलाल जी म सा, राणीदान जी म सा, हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- ❑ चम्पालाल जी म सा के शिष्य अमरसिहजी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- ❑ बडे नाथूलाल जी म सा के शिष्य वृद्धि चद जी, छोटेचन्दन मुनि जी म सा, सुभाष मुनि जी म सा आदि वर्तमान मे हैं।
- ❑ रामलाल जी म सा के शिष्य बसतीलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- ❑ हरकचन्द जी म सा के शिष्य पूनमचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- ❑ शातिलाल जी म सा के शिष्य गुलाबचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

- हीरालाल जी म सा के शिष्य हजारीमल जी म सा के शिष्य जोरावरमल जी म सा, न्यामत जी म सा, नाथूलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- नन्दलाल जी म सा के शिष्य बलदेव सिहजी म सा हुए।
- मयाचन्द जी म सा के शिष्य राजमल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- वृद्धिचन्द जी म सा के शिष्य विमल मुनि जी, मूल मुनि जी हुए। विमल मुनि जी के वीरेन्द्र मुनि जी, मूल मुनि जी, ऋषभ मुनि जी, अजित मुनि जी आदि शिष्य हुए।
- केवल मुनि जी के पदम मुनि जी आदि शिष्य हुए। मगनलाल जी म सा के अशोक मुनि जी, सागर मल जी म सा आदि शिष्य हुए।

श्री जुहारमल जी म के शिष्य नंदलाल जी म का परिवार .

- श्री नन्दलाल जी म सा के शिष्य रूपचन्द जी म सा, भगवान जी म सा, नरसिह जी म सा, खूबचन्द जी म सा, भोपजी म सा, नाथूलाल जी म सा, मन्नालाल जी म सा, बोटूजी म सा, प्रतापमल जी म सा, लक्ष्मीचन्द जी म सा हुए। इनमे से पूज्य खूबचन्द जी म सा, बोटूजी म सा, प्रतापमल जी म सा, लक्ष्मीचन्द जी म सा के परिवार बढे।
- पूज्य खूबचन्द जी म सा के शिष्य किस्तुरचन्द जी म सा, केशरी जी म सा, सुखलाल जी म सा, हरकचन्द जी म सा, हजारीमल जी म सा, बिलासीमल जी म सा, आदि हुए। इनमे से केवल किस्तूरचन्द जी म सा के शिष्य किशनलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- बोटू जी म सा के शिष्य छब्बालाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- प्रतापमल जी म सा के बसतीलाल जी म सा, रमेश मुनि जी म सा, सुरेश मुनि जी म सा एव उनके पीछे का शिष्य परिवार वर्तमान मे है।
- हजारीमल जी म सा के शिष्य जनक जी म सा लाभचन्द जी म सा हुए। उनके दो शिष्य वर्तमान मे मौजूद है।
- लक्ष्मीचन्द जी म के शिष्य हीरालाल जी म सा हुए।
- हीरालाल जी म सा के शिष्य दीपचन्द जी म सा हुए।

जुहारमल जी म.सा. के माणकचन्द जी म सा. का परिवार .

- माणकचन्द जी म सा के शिष्य देवीलाल जी और भीमराज जी म सा हुए।
- देवीलाल जी म सा के शिष्य किस्तूरचन्द जी म सा, राधालाल जी म सा, चुन्नीलाल जी म सा, चुन्नीलाल जी म सा, नन्दलाल जी म सा शेषमल जी म सा हुए।

- ❑ शेषमल जी म सा के मिश्रीलाल जी म सा, रगमुनि जी म सा, ईश्वर मुनि जी म सा, शोभामल जी म सा, जवाहरलाल जी म सा, मिश्रीलाल जी म सा, नगराज जी म सा, रतनलाल जी म सा, आदि शिष्य हुए।
- ❑ किस्तूरचन्द जी म सा के शिष्य रामचन्द्र जी म सा हुए।
- ❑ भीमराज जी म सा के नैन सुख जी म सा व भेरूलाल जी म सा शिष्य हुए।

जुहारमल जी म.सा के शिष्य लक्ष्मीचन्द जी ग सा का परिवार -

❑ लक्ष्मीचन्द जी म सा के शिष्य हुक्मीचन्द जी म सा, पन्नालाल जी म सा, रतनलाल जी म सा हुए।

❑ पन्नालाल जी म सा के शिष्य अबालाल जी म सा हुए।

।। इति रतनचन्द जी म सा का परिवार।।

राजमल जी म के देवजी म सा. का परिवार—

- ❑ देवजी म सा के चैन जी म सा, जीवराज जी म सा, हीरालाल जी म सा, वृद्धिचन्द जी म सा आदि शिष्य हुए।
- ❑ जीवराज जी म सा के कालूजी म सा शिष्य हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

राजमल जी म सा. के शिष्य घासीलाल जी म सा का परिवार –

- ❑ घासीलाल जी म सा के शिष्यलाल जी म सा, रिखबचन्द जी म सा, देवीलाल जी म सा, मोतीलाल जी म सा हुए।
- ❑ देवीलाल जी म सा के शिष्य जगन्नाथ जी म सा, पन्नालाल जी म सा नाथूलाल जी म सा मानजी म सा, उकारलाल ज म सा लक्ष्मण जी म सा हुए।
- ❑ पन्नालाल जी म सा के शिष्य मयाचन्द जी म सा, चुन्नीलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

घासीलाल जी म सा के मोतीलाल जी म सा का परिवार—

- ❑ मोतीलाल जी म सा के शिष्य केशरीमल जी म सा, जवाहरलाल जी म सा, नाथूलाल जी म सा, राधालाल जी म सा, जसराज जी म सा, पूज्य गणेशलाल जी म सा, हुए। इनमे से राधालाल जी म सा तथा पूज्य गणेशीलाल जी म सा का परिवार बढा।
- ❑ राधालाल जी म सा के शिष्य श्रीचन्द्र जी म सा, चन्दूमल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

- पूज्य गणेशीलाल जी म सा के शिष्य फूलचन्द म सा, डूगरसिह जी म सा, रतनलाल जी म सा, करणीदान जी म सा, सुदरलाल जी म सा, चौथमल जी म सा, पूज्य नानालाल जी म सा, मगनलाल जी म सा, तपसीलाल जी म सा, नारायणलाल जी म सा, गोकुलचन्द जी म सा, सुमेरमल जी म सा, हुक्मचन्द जी म सा, ईश्वरचन्द जी म सा, नेमीचन्द जी म सा, कुदन मल जी म.सा, आईदान जी म सा, हनुमान मल जी म सा, इन्द्र चद जी म सा, तोलाराम जी म सा, कवरलाल जी म सा, घेवरचन्द जी म सा, सुमन जी म सा, बाबुलाल जी म सा आदि सत हुए। इनमे से सिर्फ पूज्य नानालाल जी म सा के नाम से ही शिष्य परिवार बढा।

राजमल जी म. के मानजी म सा. का परिवार ·

- मानजी म सा के शिष्य पूज्य जवाहरलाल जी म सा हुए।
- पूज्य जवाहरलाल जी म सा के घासीलाल जी म सा, धूलचन्द जी म सा, उदयचन्द जी म सा, इन्द्रचन्द जी म सा, पन्नालाल जी म सा, लालचन्द जी म सा, बक्तावरमल जी म सा सूरज मल जी म सा तिलोकचन्द जी म सा सुन्दरलाल जी म सा, उत्तमचन्द जी म सा, भीमराज जी म सा, सिरेमल जी म सा, जीवनमल जी म सा, जिनदास जी म सा, कल्याण जी म सा, जेठमल जी म सा बीरबल जी म सा, चुन्नीलाल जी म सा, पूनमचन्द जी म सा, समीर मल जी म सा, सुगालचन्द जी म सा, प्रतापमल जी म सा, जवरीमल जी म सा, केशरीमल जी म सा, हमीर जी म सा, रेखचन्द जी म सा, अर्जुनलाल जी म सा, मीरसिग जी म सा, चुन्नीलाल जी म सा, गोकुलचन्द जी म सा, मोतीलाल जी म सा हुए। इनमे से घासीलाल जी म सा, धूलचन्द जी म सा, उदयचन्द जी म सा, कल्याण जी म सा, ने अलग शिष्य बनाये।
- घासीलाल जी म सा के शिष्य उदयचन्द जी म सा, तेजमल जी म सा, कन्हैयालाल जी म सा, मगलचन्द जी म सा, विजयचन्द जी म सा, चादमल जी म सा, तेज मल जी म सा, हुए। आगे किसी का भी परिवार नही बढा।
- उदयचन्द जी म सा के शिष्य चुन्नीलाल जी म सा, भैरूलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- धूलजी म सा के राजमल जी म सा, बस्तीमल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- कल्याण जी म सा के अनराज जी म सा, चुन्नीलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

।। इति राजमल जी म सा का परिवार ।।

पूज्य चौथमल जी म सा का परिवार

- पूज्य चौथमल जी म सा के शिष्य वृद्धिचन्द जी म सा, ऊकारलाल जी म सा, प्रतापमलजी म सा, पीरदान जी म सा, शिवलाल जी ग सा, भीगराज जी म सा, किशनसागर जी म सा, पृथ्वीराज जी म सा, देवकरण जी म सा हुए। इनमे से वृद्धिचन्दजी म सा, प्रताप मल जी म सा, शिवलालजी म सा, किशनलाल जी म सा, देवकरण जी म सा के परिवार चले।
- वृद्धिचन्द जी म सा के शिष्य डालचन्द जी म सा, गोतीलाल जी म सा वोटूलाल जी म सा, पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा, मोडजी ग सा, शोभालाल जी म सा, चादमल जी म सा, गब्बू जी म सा हुए।

इनमे से डालचन्द जी म सा, मोतीलाल जी ग सा, मोडजी म सा, शोभालाल जी म सा, चादमल जी म सा, गब्बूलाल जी म सा, (वडे) का परिवार चला।

वृद्धिचन्द जी म सा के डालचन्द जी ग सा का परिवार

- डालचन्द जी म सा के शिष्य चुन्नीलाल जी म सा, भेरूलालजी म सा, सुगनचन्द जी म सा, हीरालाल जी म सा, हीराचन्द जी म सा, पन्नालाल जी म सा, मूलचन्द जी म सा पन्नालाल जी म सा, दयाराम जी म सा, शोभाचन्द जी म सा, हसराज जी म सा पन्नालाल जी म सा, किशनचन्द जी म सा, चादमल जी म सा, मेघराज जी म सा, मोतीलाल जी म सा, सुवालाल जी म सा, छोटा गब्बूलाल जी म सा, कपूरचन्द जी मसा, भूरजी म सा, हेमराज जी म सा, हजारी मल जी म सा, हरक कन्द जी म सा मुलतान जी म सा, हमीरमल जी म सा आदि सत हुए।
- हीरालाल जी म सा के शिष्य मनोहरलाल जी म सा हुए।
- मनोहरलाल जी म सा के शिष्य केशुलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- मूलचन्द जी म सा के शिष्य रूपचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- पन्नालाल जी म के शिष्य सरदार मल जी म सा हुए। आगे परिवार नही बढा।
- चादमल जी म सा के शिष्य बृजमोहन जी (हनुमान मल जी) म सा हुए। आगे परिवार नहीं चला।
- मेघराज जी म सा के शिष्य गुलाबचन्द जी म सा हुए।
- गुलाबचन्द जी म सा के शिष्य वृद्धिचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- चान्दमल जी म सा के शिष्यनन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

वृद्धिचन्द जी म सा. के शिष्य मोतीलाल जी म सा का परिवार–

- मोतीलाल जी म सा के शिष्य मान जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

वृद्धिचन्द जी म सा. के शिष्य मोडजी म सा का परिवार–

- मोडजी म सा के शिष्य ताराचन्द जी म सा, घेवरचन्द जी म सा, भीमराज जी म सा हुए। ताराचन्द जी म सा का परिवार बढा।
- मोडजी म सा के शिष्य ताराचन्द जी म सा के चाद मल जी म सा, नदलाल जी म सा, सागरमल जी म सा, शिष्य हुए। आगे शिष्य परिवार नहीं बढा।

वृद्धिचन्द जी म सा. के शिष्य चादमल जी म सा का परिवार

- चादमल जी म सा के शिष्य घासीलाल जी म सा, पोखर जी म सा, सरदारमल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

वृद्धिचन्द जी म सा के बडे गब्बूलाल जी म सा का परिवार

- बडे गब्बूलाल जी म सा के शिष्य तख्तमल जी म सा नन्दलाल जी म सा चौथमल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

वृद्धिचन्द जी म.सा के शिष्य शोभाचन्द जी म सा का परिवार

- शोभाचद जी म सा के शिष्य देवीलाल जी म सा, मोहनलाल जी म सा, धनराज जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

।। इति वृद्धिचन्द जी म सा का शिष्य परिवार ।।

पूज्य चौथमल जी म सा. के शिष्य प्रतापमल जी म सा का परिवार

- प्रतापमल जी म सा के शिष्य रूपचन्द जी म सा,चन्दनमल जी म सा, खेमजी म सा, शकरलाल जी म सा, मगनलाल जी म सा, पृथ्वीराज जी म सा हुए।
- इनमे से चन्दन मल जी म सा, मगनलाल जी म सा, पृथ्वीराज जी म सा, के परिवार बढे।
- चन्दनमल जी म सा के शिष्य पूनमचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- मगनलाल जी म सा के शिष्य धनराज जी म सा हुए।
- धनराज जी म सा, के शिष्य बादरमल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- फूलचन्द जी म सा के शिष्य कन्हैयालाल जी म सा, छगनलाल जी म सा, छत्रसिह जी म सा हुए।

- कन्हैयालाल जी म सा, के शिष्य सूरज मल जी म सा हुए।
- सूरजमल जी म सा के शिष्य मागीलाल जी म सा हुए।
- छगनमल जी म सा के शिष्य किस्तूरचन्द जी म सा हुए।

।। इति प्रताप मल जी म सा का परिवार।।

पूज्य चौथमल जी म सा के शिष्य शिवलाल जी म सा का परिवार -

- शिवलाल जी म सा के शिष्य सौभागमल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं वढा।

पूज्य चौथमल जी म.सा. के शिष्य किशनसागर जी म सा का परिवार

- किशन सागर जी म सा के शिष्य मयाचन्द जी म सा ओर लालचन्द जी म सा हुए।
- मयाचन्द जी म सा के शिष्य शिष्य नन्दलाल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- लालचन्द जी म सा के शिष्य सरदारमल जी म सा, नाहरमल जी म सा, फौजमल जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

पूज्य चौथमल जी म सा. के शिष्य देवकरण जी म सा का परिवार -

- देवकरण जी म सा के शिष्य टीकमचन्द जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं वढा।

हरकचन्द जी म सा के शिष्य जयचन्द जी म.सा का परिवार

- जयचन्द जी म सा के शिष्य भैरू जी म सा और रामसुख जी म सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

हरकचन्द जी म सा के शिष्य चतुर्भुज जी म सा. का परिवार

- चतुर्भुज जी म सा के शिष्य रूपजी म सा, हीरा जी म सा, इन्द्रमल जी म सा हुए। इनमे से हीरा जी म सा, इन्द्रमल जी म सा का परिवार बढा।
- हीरा जी म सा के शिष्य रामसुख जी म.सा हुए। आगे परिवार नहीं बढा।
- इन्द्रमल जी म सा के शिष्य मियाचन्द जी म सा और एक तेरापथ पडवाई शिष्य हुआ। आगे परिवार नहीं बढा।

।। इति चतुर्भुज जी म सा का परिवार।।

हरकचन्द जी म.सा के शिष्य झंवर जी म सा का परिवार

- डामर जी म सा के कालोजी व फतोजी म सा शिष्य हुए। आगे परिवार नहीं बढा।

।। इति झवर जी म सा का परिवार।।

पूज्य श्री नानालाल जी म सा का परिवार .

- सेवन्त मुनि जी म सा, वृद्धिचन्द जी म सा, अमर मुनि जी म सा, शातिमुनि जी म सा, कवरचन्द जी म सा, हरक मुनि जी म सा, माणक मुनि जी म सा, रतन मुनि जी म सा, फूल मुनि जी म सा, सपत मुनि जी म सा, प्रेम मुनि जी म सा, पारस मुनि जी म सा, धर्मेश मुनि जी म सा, सतोष मुनि जी प्रथम, सतोष मुनि जी म सा द्वितीय, रणजीत मुनि जी म सा, महेन्द्र मुनि जी म सा, गजानन्द जी म सा, सौभाग मुनि जी म सा, रमेश मुनि जी म सा, सुरेन्द्र मुनि जी म सा, रवीन्द्र मुनि जी म सा, भूपेन्द्र मुनि जी म सा, वीरेन्द्र मुनि जी म सा, हुलास मुनि जी म सा, जितेन्द्र मुनि जी म सा, राजेन्द्र मुनि जी म सा, विजय मुनि जी म सा, नरेन्द्र मुनि जी म सा, ज्ञान मुनि जी म सा, पुष्पर मुनि जी म सा, बलभद्र मुनि जी म सा, मोतीलाल जी म सा, पूज्य राम मुनि जी म सा, किस्तूरचन्द जी म सा, प्रकाश मुनि जी म सा, जयवत मुनि जी म सा, गौतम मुनि जी म सा, प्रमोद मुनि जी म सा, प्रशम मुनि जी म सा, अशोक मुनि जी म सा, मूल मुनि जी म सा, ऋषभ मुनि जी म सा, अजित मुनि जी म सा, जितेश मुनि जी म सा पदम मुनि जी म सा, विनय मुनि जी म सा, गोविन्द मुनि जी म सा, सुमति मुनि जी म सा,चन्द्रेश मुनि जी म सा,पकज मुनि जी म सा, धर्मेन्द्र मुनि जी म सा, धीरज मुनि जी म सा, काति मुनि जी म सा, विवेक मुनि जी म सा आदि शिष्य हुए।

विशेष परिचय 'सत परिचय' विभाग मे देखे–

नोट–१ परिचय विभाग सवत् १९७४ के फागण महीने के बाद पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा द्वारा जिन सतो को सघ से निष्कासित कर दिये गये उनका व उनके पास दीक्षा लेने वाले सतो के नाम तो गुरु शिष्य परपरा मे डाल दिये गये है लेकिन परिचय विभाग मे परिचय नहीं दिया गया है।

२ सत परिचय कोटा वाले मुनि श्री हरकचद जी महाराज द्वारा लिखित पत्रो व बाद के पत्रो के आधार पर लिखा गया है।

अष्टाचार्य
एक झलक

आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म.सा.

राजस्थान मे बूदी के पास 'टोडारायसिह' नाम का प्रसिद्ध कस्बा है। जो लक्षपुर की राजधानी थी जिसकी ऐश्वर्यता का परिचय वहा की ७५० पुष्करणीय थी उसी टोडा मे दिगम्बर परम्परा के मुनि चारित्र सागर जी सन्मति सागरजी जी आर्या शान्ति मतिमाताजी, साधुमार्गी परम्परा मे पूज्य अनोपचन्दजी महाराज वैष्णव परम्परा मे पुरी के पीठाधीष जगत् गुरु शकराचार्य हो गये है। वहा पर आज के लगभग पौने दो सौ वर्ष पूर्व श्रेष्ठिवर्य श्री रतनचन्द्र जी सा चपलोत निवास करते थे। उनकी धर्मपत्नी मोतीबाई सरल हृदया एव पूर्ण सात्विक वृत्ति वाली महिला थी। मोती बाई की कुक्षि से पौष शुक्ला नवमी वि स १८६० को एक दिव्य प्रतिभापुज पुत्र रत्न का जन्म हुआ। पुत्र प्राप्ति के समाचार से सारे परिवार मे अलौकिक आनन्द की लहर व्याप्त हो गई। बडे आमोद–प्रमोद के वातावरण मे बालक का नाम हुक्मीचन्द रखा गया।

पूज्य हुक्मेश के पारिवारिक सदस्य का प्राप्त पारा पूज्य श्री ने जिस स्थान मे जन्म लिया वह हजारीमलजी की साल के नाम से आज भी पहचानी जाती है। उन्हीं हजारीमलजी के पन्नालालजी उनके गोटीलालजी, लक्ष्मीचन्दजी, मोतीलालजी, नेमीचन्दजी, चार पुत्र थे उनमे सिर्फ मोतीलालजी के छगनलालजी, मूलचन्दजी, आनन्दीलालजी, गुलाबचन्दजी ४ पुत्र हुए। उनमे छगनलालजी के दो पुत्रिया एक केकडी के लोढा और एक टोक बब परिवार में परणाई। आनन्दीलालजी के वृद्धिचन्दजी, समीरमलजी, छीतरमलजी ३ पुत्र हुए। इनमे वृद्धिचन्दजी के ज्ञानचन्दजी उनके सजय, सदीप, सजय तीन पुत्र वर्तमान मे हैं। छीतरमलजी के पुत्र कोयम्बूटर रहते है। समीरमलजी के पुत्र बहादुरसिहजी जयपुर रहते हैं। गुलाबचन्दजी का परिवार टोक रहता है।

पारिवारिक सदस्यो के पूर्ण स्नेहामृत का पान करता हुआ बालक बढने लगा। माता–पिता के सुसस्कारो से सुसस्कृत होता हुआ शैशवावस्था को पार कर बालक हुक्मीचद जब बाल्यावस्था मे पहुचा तो उसको स्थानीय पाठशाला मे ज्ञानोपार्जन हेतु प्रविष्ट कराया गया। अल्पकाल मे ही बालक ने अपनी अद्‌भुत प्रतिभा का ऐसा परिचय दिया कि अध्यापक भी आश्चर्यान्वित हुए बिना नहीं रह सके। बालक हुक्मीचन्द व्यावहारिक क्षेत्र के बहुमुखी प्रशिक्षण से प्रशिक्षित होता हुआ ज्योही यौवनावस्था मे प्रविष्ट होने लगा तो माता–पिता के अन्तर्मन मे उसके विवाह की कल्पनाए हिलोरे लेने लग गई। माता–पिता हुक्मीचन्द के लिए किसी योग्य कन्या की खोज मे थे। इन्हीं दिनो किसी कारणवश' हुक्मीचन्द का बूदी जाना हुआ। उस समय बूदी मे कोटा सप्रदाय के पूज्य आचार्य श्रीलालचन्द जी म सा चातुर्मासार्थ विराजमान थे। यह समाचार विदित होते ही उस पवित्र लाभ के उपार्जन हेतु बचपन के सुसस्कारो के फलस्वरूप हुक्मीचद जी धर्मोपदेश श्रवण करने लगे। आचार्य देव के मुखारविन्द से प्रवाहित धर्मोपदेश की अमृत धारा का पान करते ही उनके उर्वर मानस मे ससार से विरक्ति का अकुर प्रस्फुटित हो उठा। अब उनको सारे ससार का सुख वैभव असार प्रतीत होने लगा। इस पवित्र मानव

जीवन को सार्थक करने हेतु उन्हीं के चरणो मे प्रव्रजित होने की उत्कृष्ट भावना जागृत हो उठी ओर वे दृढ सकल्पित होकर अपने घर टोडारायसिह पहुचे।

राग के ताने से वैराग्य के बाने मे—

पुत्र के घर पर पहुचते ही माता—पिता का हृदय प्रमुदित हो उठा। वे तो इसी समय की प्रतीक्षा मे थे कि कब हुक्मीचन्द आए क्योकि दो तीन जगह के सज्जन—स्नेही लडके को देखने के लिए आये हुए थे। उन्होने बडे स्नेह से कहा—बेटा ! जल्दी से नहा—धोकर (स्नान करके) वस्त्र एव आभूषण पहन लो और तैयार होकर, आये हुए मेहमानो का स्वागत—सत्कार करो। युवक हुक्मीचद को समझने मे देरी नहीं लगी। वे एकदम सजग हो गये ओर कहने लगे— पिताश्री ! आप जिन कल्पनाओ को सजोते हुए जो चाह रहे है उस ओर मेरी किचित् भी अभिरुचि नहीं हैं। मैंने इस असार ससार का परित्याग कर सयम ग्रहण करने का दृढ सकल्प धारण कर लिया हे और आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने की दृढ प्रतिज्ञा ग्रहण कर ली है। इस सकल्प ओर प्रतिज्ञा से मुझे कोई भी विचलित नहीं कर सकता। अब आपके चरणो मे मेरा नम्र निवेदन हे कि आप मुझे शीघ्र ही सयम पथ पर आरूढ होने की आज्ञा प्रदान करे।

पुत्र के मुह से अचानक यह अश्रुत वार्ता श्रवण कर के सारा खुशी का वातावरण दु ख रूप मे परिवर्तित हो गया। वे विभिन्न तौर—तरीको से उनको समझाने की कोशिश करने लगे लेकिन कोई भी प्रयत्न हुक्मीचद को विचलित करने मे सफल नहीं हुआ। आखिर विवश होकर माता—पिता को दीक्षा की आज्ञा देनी पडी। बडे धूमधाम से मिगसर सुदी २ सवत् १८७९ को बूदी मे ही भव्य समारोह के साथ दीक्षा सम्पन्न हुई।

मुनि हुक्मेश का साधना पथ

अब हुक्मीचन्द जी मुनि हुक्मेश के रूप मे गुरु चरणो की उपासना मे तन्मय हो कर पूर्ण विनीत भाव से ज्ञानोपार्जन करने लगे। आगमो का तल—स्पर्शी अध्ययन करते हुए उनकी तर्कणा—शक्ति इतनी तीव्र हो गई कि वे अपने आपको "बाबा वाक्य प्रमाणम्" की युक्ति तक ही सीमित न रख सके। वे अपने जीवन को भी आगमोक्त निर्देशो के अनुरूप साधने लगे, साथ ही अपने गुरु एव गुरु भाइयो के आचार—विचार को भी उसी कसौटी पर कसने लगे। अपने गुरु भाइयो का आगमोक्त विचार धारा से प्रतिकूल आचरण देखकर आपका मन उद्विग्न हो उठा। पूर्ण विनीत भाव से आपने गुरुदेव एव गुरु भ्राताओ के चरणो मे आगमानुकूल आचरण का निवेदन किया। लेकिन उसकी अनुकूल एव प्रतिकूल दोनो प्रकार की प्रतिक्रियाए हुई। अनुकूल प्रतिक्रिया वालो ने भी आपकी बातो को सही मान कर भी उसके अनुरूप पालन करने मे असमर्थता व्यक्त की।

क्रियोद्धार का दृढ सकल्प

जब गुरु एव गुरु भ्राताओ ने अपनी असमर्थता प्रगट कर दी तो आपके मन मे अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न हो गया। वे चितन करने लगे– "एक तरफ तो वीतराग की आज्ञा के आराधन की बात और दूसरी तरफ परमोपकारी गुरु का सम्बन्ध। इनमे से किसको रखा जाय और किसको छोडा जाय।" आखिर मुनि हुक्मेश की अन्तरात्मा बोल उठी– "हे मुक्ति के इच्छुक साधक ! तू यदि अपने इच्छित लक्ष्य की पूर्ति करना चाहता है तो उसका एक मात्र आधार वीतराग आज्ञा ही है। तू उसी का अनुसरण कर। गुरु आदि तो बाह्य निमित्त हैं। गुरु की सच्ची उऋणता भी उसी मे निहित है इसलिए तू उस वीतराग वाणी को ही आधार बनाकर निर्भीकता से आगे बढ और साधुमार्गी मे व्याप्त विकृति का समूल उच्छेदन कर दे।"

बस अन्तरात्मा की इस आवाज ने मुनि हुक्मेश को झकझोर दिया। सिह की तरह उनकी आत्मा जागृत हो उठी। आखो मे अपूर्व तेज और चेहरे पर गहन गभीरता धारण करके पुन विनीत भाव से पूज्य गुरुदेव के चरणो मे निवेदन करने लगे– गुरुदेव ! मेरे निवेदन पर ध्यान देकर पवित्र साधुमार्ग का सरक्षण कीजिए। इसी मे शासन का हित है। गुरुदेव मुनि हुक्मेश की इस बात को श्रवण कर नि श्वास छोडते हुए बोले– हुक्ममुनि ! बात तेरी सत्य है पर मैं तो अब वृद्ध हो चूका हू। सत भी कोई तैयार नहीं है। ऐसी दशा मे मै कर ही क्या सकता हू ? अनेक आश्वासन देने पर भी जब गुरुदेव तैयार नहीं हुए तो आखिर उन्होने स्वतत्र विचरण की आज्ञा मागी और वि स १८९० मिगसर बदि–१ को पुन वन्दन कर के निकल पडे।

क्रियोद्धारक क्राति के बढते चरण–

मुनि हुक्मेश ने अपने गुरु से विलग होते ही बेले–बेले का उग्रतप धारण किया। बारह महीने मे केवल एक ही चादर शरीर पर धारण करना, जीवन–पर्यन्त के लिए मिठाई व तली वस्तु का त्याग, जीवनभर के लिए तेरह चीजो (१३ द्रव्य) से ज्यादा नहीं खाना और दो हजार (२०००) नमोत्थुण * द्वारा देव स्तुति करना ऐसी कठोरतम प्रतिज्ञा धारण कर ली। साधुओ के निमित्त से बने हुए स्थान का एव साधुओ की व्यक्तिगत ठेकेदारी वाले स्थान मे ठहरने का परित्याग कर सजगता से विचरण करने लगे।

गाव या नगर जहा भी आप पधारते तो वहा की जनता आपकी अद्भुत त्याग भावना से प्रभावित होने लगी। आपके चारित्र की श्रेष्ठता से प्रभावित होकर पूज्य गोविदराम जी म के शिष्य दयालजी म सा ** आपके पास आ गये।

---

* पृष्ठ ३३८

** पृष्ठ ५२ पर विशेष परिचय

दोनो सन्त विचरण करते हुए जावद पधारे। जावद के श्रावक बोथलाल जी बबोरिया आदि अच्छे तत्त्वज्ञ थे। गुरु भक्ति उनके रग रग मे रमी हुई होते हुए भी वे साधु वेश के स्थान पर साधुता के मूल–गुणो को ही ज्यादा महत्त्व देते थे। उन श्रावको का कहना था–

चार पैसे मे हाडी लेवे, ढोला गारे चार।
गुरु परीक्षा करे नही, जावे जगारो हार।।

ढीले पासत्थे आदि गुरुओ को प्रोत्साहन देने वालो को भी यही समझाते कि भाई–गुरु पद का बहुत बडा महत्त्व है। गुण रहित गुरु शिष्य को गर्त मे गिरा सकता है। कहते– भैया–

गुरु गुरु करता जगत् डूबो, गुण बिना गुरु दु खदाई।
घोलो जाण आकडो पीवे, नयण ज्योति दे खोई।।

साधुओ की बढती हुई आचार हीनता को देखकर उनका अन्तर्मन बहुत उद्विग्न हो उठा था। उन बोथलालजी बबोरिया आदि प्रमुख श्रावको ने मिलकर अपनी सम्यक्त्व शुद्धि हेतु २१ नियम बनाकर यह निश्चय कर लिया कि शुद्ध श्रमणाचार पालन करने वाले सतो को ही गुरु बुद्धि से सविधि वदन करेगे, नहीं तो नही। इसी निश्चय के अनुसार जो भी साधु आते तो उनको मकान आहार आदि की व्यवस्था जुटा देते लेकिन विशेष वदन व्यवहार आदि नहीं रखते।

जब पूज्य हुक्मीचद जी म सा भी जावद पधारे तो उनके शुद्धाचार एव विचार देखकर सब श्रावकगण नत– मस्तक हो गये और गुरु धारणा ग्रहण करली। अब आप जहा भी पधारते वहा एक नूतन क्राति का सूत्रपात हो जाता था। जावद से विचरण करते हुए आप नीमच पधारे तो महासती श्री रगू जी आप से प्रेरणा पाकर परिवार की आज्ञा से स्वय प्रव्रजित होकर इस क्राति मे जुट गई। नीमच से विहार कर मुनिवर्य धामनिया पधारे तो आप के उपदेशामृत का पान करके शिवलाल जी बोडावत ने आपके चरणो मे दीक्षित होने का दृढ सकल्प धारण किया और चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् मिगसर सुदी १ विक्रम सवत् १८९१ को बडी धूमधाम से दीक्षा हुई। आपने शिवलाल जी को दीक्षित कर दयालचद जी म के नेश्राय मे सौप दिया। इसी समय आपने अपनी नेश्राय मे शिष्य बनाने का त्याग कर दिया।

देशी परदेशी परंपरा का उद्भव

पूज्य हुक्मेश के दिल मे न तो कोई पृथक् सप्रदाय के निर्माण का उद्देश्य था, न वे किसी को नीचा दिखाने के उद्देश्य से शुद्धाचार का पालन कर रहे थे। उनका तो एक ही उद्देश्य था कि पवित्र साधुमार्ग मे किसी प्रकार की विकृति का समावेश न हो। लेकिन सत्य तो सत्य ही होता है और कटु भी। आपका जहा–जहा विचरण होने लगा, वहा की जनता को सही साधुता के दर्शन होने लगे। पूज्य श्री के शुद्ध आचार–विचार को देखकर अपनी कुल परपरा से मानते चले आ रहे गुरुओ के

आचार–विचार की तुलना करने लगे और जो प्रतिकूल होता उसके बारे मे उनको प्रश्न भी पूछने लगे। वे (कुल परपरा के गुरु) अपनी भक्ति मे कमी न आ जाय इस दृष्टिकोण से यही मीठा उत्तर दे देते कि भाई ये सत परदेशी हैं और हम देशी हैं। इनके और हमारे आचार–विचार मे भेद हैं। तभी से पूज्य हुक्मी चद जी म के सतो को और आगे भी उनके साथ जिन्होने सम्बन्ध जोडा (पूज्य मोतीसिह जी, तेजसिह जी म की सप्रदाय, पूज्य श्री ज्ञानचन्द जी म की सप्रदाय, महासती श्री रगूजी म, महासती श्री खेता जी म, महासती श्री मोताजी म, महासती श्री नदकवर जी म) उन सत सतीवृद को परदेशी एव स्वय की कुल–परम्परा के साधुओ को देशी सज्ञा से सम्बोधित करने लगे।

जब निंदा, स्तुति बन गई .

जब मुनि हुक्मेश कोटा सप्रदाय से अलग हुए तब उनके गुरु सहित सघ ने उनकी अपकीर्ति/निदा/मिथ्यादोषारोपण करने मे कमी नहीं रक्खी लेकिन आपने अपनी ओर से कभी किसी पर मिथ्या दोषारोपण नहीं किया। आप तो गुणग्राही होने के कारण गुणो को ही प्रगट किया करते और यही कहते कि गुरुदेव का तो मेरे ऊपर महान् उपकार है। मै उन्हीं के द्वारा बतलाये हुए शुद्ध साधुमार्ग पर चलने का प्रयत्न कर रहा हू। यही उनके उपकार से उऋण होने का उपाय है। जन सामान्य इस प्रकार की बात श्रवण करके पास जाते और हुक्म मुनि के तप सयम की चर्चा करने लगते थे। पहले तो गुरुदेव को विश्वास नहीं हुआ लेकिन जब समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उनका गुणगान करके सारी बात रखने लगे तो गुरुदेव की विचारधारा में परिवर्तन आया और एक दिन तो भरे व्याख्यान मे अपने कृत्यो पर पश्चाताप करते हुए बोल पडे– "वास्तव मे हुक्म मुनि चौथे आरे की वानगी हैं। उनकी यश कीर्ति सुनकर मुझे पूर्ण सतोष है। मैं उनके गुणो एव साध्वाचार का प्रशसक नहीं बन सका परन्तु उनने मेरी प्रशसा अन्त करण से की है जो इसकी महानता का द्योतक है। उनके द्वारा जिन शासन की महान् कीर्ति फैलेगी।

क्रियोद्धार की पवित्र गंगा मे अनेक सरिताओ का समावेश

बस फिर क्या था, गुरुदेव से ही जब मुनि हुक्मेश की प्रशसा लोगो ने सुनी तो लोगो मे मुनि हुक्म के प्रति प्रगाढ श्रद्धा जमने लगी। आपके तप तेज के प्रभाव से रामपुरा मे मुमुक्षु सुदर बाई की बेडिया टूट गई* चित्तौड मे एक कुष्ठ रोगी की रोगमुक्ति हुई, नाथद्वारा** मे भरे व्याख्यान स्थल पर नभ से रुपयो की वर्षा आदि अनेक चमत्कारी घटनाओ से तो हर जन–मानस मे अपार श्रद्धा का सरोवर लहराने लग गया। इतना ही नहीं, बडे–बडे सन्त मुनिराजो एव महासतियो के अन्तर्मन मे भी आपके प्रति अपूर्व श्रद्धा पनपने लगी।

---

* कई जगह राजकवर जी का भी नामोल्लेख आता है लेकिन उनकी दीक्षा तो पू हुक्मेश के स्वर्गवास के बाद वि १९२० पौष सुदी ६ को हुई थी अपने तीनो पुत्रो के साथ।

** जै दि श्री चौथमल जी म द्वारा रचित गीतिका– "आते आते है महा उपकारी, जेन पूज्यवर याद।'

जीवराज जी म सा के सप्रदाय के मुनि श्रीचन्द्रभाण जी के शिष्य मुनि श्री मोती सिह जी म सा, तेजसिह जी म सा आदि सन्त महापुरुष एव महासती श्री खेताजी म[1], महासती श्री नन्द कवर जी म[2] आदि महासती वृद भी अपने शिष्य शिष्याओ सहित इस पवित्र गगा मे सरिता की तरह सम्मिलित होने लगे। इन सबने मिलकर मुनि हुक्मेश को अपना श्रद्धा केन्द्र बनाया और आपके सानिध्य मे और शिवाचार्य के निर्देशानुसार एक – ४१ कलमो की समाचारी[3] का निर्माण किया और सबने उसके ऊपर चलने का दृढ निश्चय किया।

पूज्य हुक्मेश का मरुधरा मे चरण न्यास :

जिस प्रकार पूर वाली नदी जिस भूमि पर बहती है उस भूमि को सरसब्ज बना डालती है उसी प्रकार पूज्य हुक्मेश के जहा–जहा चरण पडे, वहा–वहा की जनता मे एक अपूर्व धर्म जागरणा पैदा होने लगी। लोग शुद्ध साधुमार्ग का अनुसरण करने लगे। मालव मेवाड की धरा को पावन करते हुए जब मरुधरा मे पधारे तो उनकी कीर्ति उससे पहले ही पहुच चुकी थी। उस क्षेत्र मे विचरण करने वाले सन्तो के मन मे अनेक तरह की कल्पनाए हलचल मचाने लगी। जब पूज्य हुक्मेश जोधपुर पधारे तो वहा की धर्म श्रद्धालु जनता मे अपूर्व श्रद्धा की लहरे हिलोरे लेने लगी। सबको पूर्ण आशा थी कि इस बार चातुर्मास यहीं होगा क्योकि आषाढ महीना लग चुका है। लेकिन जिन सन्तो ने अपना चातुर्मास पहले ही जोधपुर निश्चय कर लिया था उनके मन मे यह समाचार सुनकर खलबली मच गई। वे सोचने लगे कि जिस प्रकार थोक दुकान लगते ही परचुनी व्यापारियो का व्यापार ठप्प हो जाता है उसी प्रकार हमारी भी हालत होने वाली है। यह बात ज्योही पूज्य हुक्मेश को ज्ञात हुई उन्होने बिना किसी को कुछ कहे वहा से चुपचाप विहार कर दिया और वि स १९०६ का चातुर्मास खीचन फलौदी जाकर किया। * अपूर्व धर्म जागरणा के साथ चातुर्मास सम्पन्न हुआ और वहा से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रो मे शुद्ध साधुमार्ग का स्वरूप समझाते हुए बीकानेर पधार गये।

पूज्य हुक्मेश के शुद्ध आगमानुरूप आचार विचार के पालन से बीकानेर का जनसमूह प्रमुदित हो उठा। उनके रग–रग मे इन महापुरुषो के प्रति श्रद्धा का सरोवर लहलहाने लग गया। अनेक व्यक्तियो ने शुद्ध सम्यक्त्व धारण किया और श्रावक व्रत भी ग्रहण किये। उसी चातुर्मास मे पूज्य हुक्मेश की पाप प्रक्षालिनी वाग्धारा के प्रभाव से एक साथ चार व्यक्ति– सार्दुल जी कोठारी, लालचद जी लोढा, लालचद जी डागा व उनके पुत्र केवल चद जी डागा के मन मे सयम लेने की उत्कृष्ट भावना जागृत हुई। माघ सुदी पचमी वि स १९०७ की दीक्षा तिथि निश्चित की गयी। चारो वैरागी सिर मुडाने हेतु कक्ष मे पहुचे। सयोग से वहा पाच नाई पहुच गये थे। चार तो अपने कार्य मे लग गये लेकिन

---

१ पृष्ठ ३४८ देखे। २ पृष्ठ ३५३ देखे। ३ पृष्ठ ४७१ देखे–मूल प्रति–५५३ से ५५६ पृष्ठ तक।

* पू जवाहर के वि स १९९२ के भा सु ४ रतलाम व्याख्यान की मूल प्रति पृ ७८

पाचवा मुह देखता रह गया। चार ही दीक्षार्थी देखकर उसका चित्त उदास हो गया। आखो मे अश्रु प्रवाहित होने लग गये। वह अपने भाग्य को कोसने लगा। यह दृश्य पास खडे सालगराम जी अग्रवाल ने देखा और उस नाई से पूछ बैठे – भाई ! तुम्हारी उदासी का क्या कारण है ? उसने ज्यो ही सेठजी को अपना कारण बताया, त्योही जो पहले दीक्षा लेने मे कमजोरी महसूस कर रहे थे उन सेठजी मे नया जोश पैदा हो गया। वे सोचने लगे जब साथी लालचन्द जी व उनका पुत्र भी सब कुछ छोडकर जा रहा है तो फिर मुझे पीछे रहकर क्या करना है। बस तत्क्षण नाई को बोल उठे– भाई ! छोड उदासी और मुडन कर मेरा। बस मुडा लिया सिर और पहन लिया साधु का वेश और पहुच गये गुरु चरणो मे। सबको आश्चर्य हुआ। चार की जगह एक साथ पाच मुनियो की दीक्षाए सम्पन्न हुई। तव से ही यह गीत प्रचलित हो गया–

कोटा जाजो, बूंदी जाजो, जाजो बीकानेर।
बीकानेर रा सूत्र लाजो, चेला लाजो लार।।
म्हारा महारासा ओ राज ।।

पूज्य हुक्मेश का चतुर्विध सघ को सदेश युवाचार्य पदोत्सव

दीक्षाओ के सानन्द सपन्न होने के साथ ही पूज्य हुक्मेश ने चतुर्विध सघ को सबोधित करते हुए ये भाव फरमाये– "मैने गुरुदेव से पृथक् विचरण इस उद्देश्य से नहीं किया कि हमारी कोई अलग सप्रदाय खडी हो। मेरा तो एकमात्र उद्देश्य साधुमार्ग के पवित्र सरक्षण का था और उसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु मुनि श्री दयालचन्द जी महाराज के शिष्य मुनि श्री शिवलाल जी मेरे अत्यन्त सहयोगी बने और उन्हीं के कारण महासती श्री रगू जी म सा, महासती श्री खेताजी म सा आदि भी अपनी शिष्याओ के साथ इस क्राति मे जुट गई। इनके साथ ही मुनि श्री मोती सिह जी और मुनि श्री तेजसिह जी हमारे साथ जुड गये और आज का यह जो भव्य प्रसग उपस्थित हुआ है, यह आपके ही पुरुषार्थ का फल है। इसलिए अब मै आप सबको यही उद्‌बोधन दे रहा हू कि आज से सघ व्यवस्था सम्बन्धी जो भी पूछताछ करनी हो वह सब मुनि श्री शिवलाल जी से ही करे। यह इन्हीं की सप्रदाय है और इन्ही को आप अपना आचार्य माने और मुझे मेरे लक्ष्य की पूर्ति मे सहयोग दे।"

पूज्य श्री के इस उद्‌बोधन को सबने शिरोधार्य किया और उसी समय चतुर्विध सघ ने सघ अनुशासन के रूप मे पहले पूज्य श्री हुक्मेश को वन्दना की और अपने आराध्य आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा की जय बोलकर उनकी प्रतीक रूप चादर मुनि श्री शिवलाल जी म को ओढाकर भावी आचार्य (युवाचार्य) की वदना की और जयघोष किया। साध्वी समुदाय की व्यवस्था का सारा उत्तरदायित्व उनकी प्रमुख साध्वियो पर डाल दिया ताकि सतो का उसमे हस्तक्षेप न हो। (रतलाम व्याख्यान की मूल प्रति पृ ७८। पूज्य श्री शिवाचार्य फरमाते– मेरी नेश्राय मे सतिया नही हैं।)

पूज्य हुक्मेश का निर्भीक चितन—

पूज्य हुक्मेश के जीवन मे निर्भीकता का गुण बडा प्रबल था। जो सत्य प्रतीत होता वही निर्णय लेते। अत थोथे अपवाद का भय उनको कभी विचलित नहीं कर सका।

* एक बार एक साधक को साथ वाले सतो ने उनकी तत्कालीन स्थिति देखकर सथारे के प्रत्याख्यान करवा दिये लेकिन कुछ दिन बाद वे मुनिराज नीरोगता का अनुभव करते हुए क्षुधा से पीडित हो उठे। परन्तु अपवाद फैलने के भय से भयभीत हो गये। पूज्य श्री को समाचार प्राप्त होते ही आप वहा पर पहुचे और यथार्थता का अवलोकन कर गहन चितन करते हुए विचार करने लगे कि सथारा पडित मरण का आधार है ओर पडित मरण आत्म—परिणामो की स्थिरता पर अवलम्बित है। आर्त्त—रौद्र ध्यान से तो साधक की दुर्गति सभवित है। मे पूर्ण अहिसा महाव्रत धारी हू— एक चींटी को भी तडफते हुए नहीं देख सकता तो एक साधु को इस स्थिति मे कैसे देख सकता हू— क्या यह मेरे मूल महाव्रत को दूषित नहीं करेगी ? वे मुनिराज के पास आये और बोले— मुनिराज ! यदि आपके परिणाम दृढीभूत हो, किसी प्रकार का आर्त्त ध्यान, रौद्र ध्यान नहीं हो तो आप अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ रहो। समाधि मरण इस भव परभव दोनो के लिए हितावह है। पर यदि परिणामो की धारा स्थिर नहीं हो तो अपवाद का सारा उत्तरदायित्व मुझ पर छोडकर पारणा कर लो। आखिर अपने हाथ से पारणा कराया। बाद मे कई वर्षो तक सयम का पालन करने के बाद वे मुनि सथारा सलेखना सहित पडित मरण को प्राप्त हुए। (१९९४ जामनगर व्याख्यान की मूल प्रति से उदघृत भा सु ५)

अतिम साधना में पूर्ण सजगता :

इस प्रकार सघ की सुव्यवस्था के आदेश निर्देश देने के बाद आप बिल्कुल निर्लेप बन गये। कोई भी कुछ पूछता तो सीधे युवाचार्य श्री के पास भेज देते। आप तो अपना अधिकाश समय जप तप मे लगाते और बाकी जो समय मिलता, उसको शास्त्र लेखन मे लगाते। आपके अक्षर भी बडे सुन्दर थे। आपके हस्तलिखित शास्त्र की बहुत सी प्रतिलिपियॉ अभी भी मौजूद है।

इधर सघीय व्यवस्था एव आचार— विचार की परम शुद्धता से प्रभावित होकर मुनि श्री उदयसागर जी म और मुनि श्री राजमल जी म सा —जिन्होने दीक्षा तो देशी सप्रदाय मे ली लेकिन आपके अनुशासन मे समर्पित होकर वि स १९०८ चैत्र सुदी ११ को आपके मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण करके हरक चद जी म सा का शिष्यत्व स्वीकार किया।

इस प्रकार साधुमार्ग की पावन—गगा उत्तरोत्तर विकासोन्मुख होती जा रही थी। पूज्य शिवाचार्य पर सारे सघ का भार डालकर आप पूर्ण सजगता से अपने चरम लक्ष्य को साधने मे तत्पर रहने लगे। आप न तो अपनी प्रशसा सुनकर आनन्द मानते और न किसी की हीनता ही सुनना चाहते।

*— आ जवाहर के १९९३ भा सु ४— राजकोट व्याख्यान की मूल प्रति से उधृत

सब मे समभाव और गुणदृष्टि ही रखते। एक बार दूसरी सप्रदाय के भद्रिक सत पूज्य श्री के दर्शन की भावना से स्थानक मे आ गये। उस समय पूज्य श्री बाहर पधारे हुए थे। जब पधारे तो पीछे से उन सतो मे से एक सत ने कहा गुरुदेव ! आपके बाहर पधारने के बाद वो पागल साधु आपके दर्शन की भावना से आये थे। सतो के मुह से पागल शब्द सुनते ही आपने फरमाया— भाई ! यह तो कर्मो का खेल है। किसी की इस प्रकार के शब्दो द्वारा हीलना नहीं करना चाहिये, न मालूम उसकी हूडी पहले सीकरे या मेरी ?*

अब तो शारीरिक शक्ति मे भी बहुत कमजोरी आ गई थी। लबा विहार भी नहीं हो सकता था। ऐसी स्थिति देखकर पूज्य श्री जावद पधार गये और वहीं अतिम समय तक बिराजे। जावद श्री सघ अपना अहोभाग्य मानकर पूज्य श्री की सेवा का अतिम लाभ ले रहा था कि अकस्मात् पूज्य श्री के शरीर मे असमाधि उत्पन्न हुई और आपने पूर्ण सजगतापूर्वक आलोचना करके सलेखना सथारा धारण कर लिया और वि स १९१७ की वैशाख सुदी ५ मगलवार को पिछली रात्रि मे स्वर्गवासी हो गये।

ऐसी अनुश्रुति है कि पूज्य श्री के स्वर्गवास के बाद उनकी नेश्राय के पात्र मे स्वर्णाक्षरो मे लिखा हुआ मिला कि यहा से आउष्टक विमान की स्थिति को भोगकर घातकी खड मे बलदेव की पदवी प्राप्त करके उसी भव मे मोक्ष प्राप्त करेगे। ऐसा ही उल्लेख 'सिद्ध पाहुड ग्रन्थ, मे भी किया हुआ है जिसका उल्लेख जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म सा व इनके गुरु श्री हीरालाल जी म सा ने पूज्य श्री की स्तुति मे इस प्रकार किया है—

कोई सुर ऐसी करी रेलाल, पातरा मे लिख गये लेख हो मुनिश्वर
सोहन वर्ण सुहावना रेलाल, आचार्य करी गवेश हो मुनिश्वर
श्री हुक्मीचन्द जी ने वदिये रेलाल
सवत् १९१७ भला रेलाल वैशाख सुद ५ मगलवार हो मुनिश्वर
मध्य रात्रि के मायने रेलाल, पहुच्या स्वर्ग मझार हो मुनिश्वर
श्री हुक्मीचन्द जी ने वदिये रेलाल
घातकी खड के मायने रेलाल पदवी पासी बलदेव हो मुनिश्वर
सयम लेई न साधसी रेलाल कह्यो सो सत्यमेव हो मुनिश्वर
श्री हुक्मीचन्द जी ने वदिये रेलाल

---

* आ जवाहर के वि स १९९२ के रतलाम व्याख्यान की मूल प्रति पृ ७८ से उदधृत

आचार्य श्री शिवलालजी म.सा. :

आपका जन्म मालव भू मे नीगच के पास धागनिया नागक एक छोटे रो ग्रागीणाचल गे सवत् १८६७ की पौष सुदी १० को हुआ था। आपके पिता श्री का नाग टीकगचन्द जी रा वोडावत एव मातु श्री का नाम कुदन बाई था। कुदन वाई का पीहर छोटी सादडी के नागोरी परिवार गे था। चरित्र नायक के भोलाराम जी व लक्ष्मीचन्द जी दो छोटे भाई थे। आप (शिवलाल जी) जव योवनावस्था गे थे तव एक बार सयोगवश क्रियोद्धार का सिहनाद करते हुए पूज्य हुकगेश का धागनिया पदार्पण हुआ। पूर्वोपार्जित पुण्योदय के सस्कारो से प्रेरित होकर पूज्य श्री के प्रवचन, दर्शन एव ससर्ग से आपके अन्तर्मन मे विरक्ति का अकुर प्रस्फुटित हो गया। परिवार वालो के लाख सगझाने पर भी आप अपने सकल्प से विचलित नहीं हुए। आखिर परिवार वालो को सयम की अनुमति देनी पडी। परिवार वालो की अनुमति प्राप्त होने के बाद आप पूज्य हुक्मेश की चरण शरण गे रहकर ज्ञानोपार्जन करने लगे। श्रमण साधना का प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् जव पूज्य श्री ने आपको श्रगणत्व की साधना के योग्य देखा तब वि स १८९१ की मिगसर सुदी १ को रतलाम (ग प्र) मे वडी धूमधाग से दीक्षा देकर अपने परम सहयोगी मुनि श्री दयालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे शिष्य घोपित कर दिया। पू हुक्मेश ने जीवन भर के लिए अपनी नेश्राय मे शिष्य वनाने का त्याग कर दिया था।

शिवमुनि का पूज्य हुक्मेश के चरणो मे पूर्ण समर्पण

दीक्षा ग्रहण करने के बाद अब मुनि शिवलाल जी पूर्ण समर्पण भाव से पूज्य हुक्मेश के चरणो मे रहने लगे। क्योकि आपके दीक्षा के लगभग छ महीने बाद ही आपके नेश्राय गुरु दयाल चदजी म सा का स्वर्गवास हो गया था। आपके पूर्ण सजग एव विनीत भाव से अध्ययन करने के परिणामस्वरूप अल्प समय मे ही आपकी प्रतिभा ऐसी निखर उठी कि आपका नाम अच्छे विद्वानो की गिनती मे आने लग गया। धीरे–धीरे पूज्य हुक्मेश भी प्रत्येक कार्य मे शिवमुनि को आगे करने लगे जिससे आपकी प्रतिभा और भी मुखरित हो उठी। जब शिवमुनि पूर्ण योग्य हो गये तो सवत् १९०७ की माघ सुदी पचमी को पाच दीक्षाओ के ऐतिहासिक प्रसग पर सघ का सारा उत्तदायित्व आप पर डालकर पू हुक्मेश बिल्कुल निर्लिप्त बन गये थे।

कुशल अनुशास्ता के रूप मे

पूज्य हुक्मेश द्वारा स्वय को पूर्ण उत्तरदायित्व सौप दिये जाने पर आप मारवाड के "धोरी बैल" की तरह पूर्ण सजगता से उस भार को वहन करते रहे और पूज्य श्री की अन्तरग साधना मे सहयोगी बने रहे।

सघ की सुव्यवस्था हेतु पूज्य श्री के विचारो को सम्मुख रखकर अपने दीर्घ अनुभवो के साथ बडे दीर्घ दृष्टिकोण से ७२ (बहत्तर) कलमो की समाचारी का निर्धारण किया, जो आज तक पालन

की जा रही है। बीच–बीच मे मध्यवर्ती आचार्यो के शासन मे कतिपय सशोधन के साथ कुछ कलमो मे परिवर्तन–परिवर्धन जरूर हुआ है।

आप अनुशासन मे दृढ विश्वास रखते थे। जो भी अनुशासन भग करता उसको कठोर दड देने में नहीं हिचकते। एक बार इसी बात पर कुछ सतो ने गुटबन्दी** कर ली। जब आचार्य श्री को मालूम हुआ तो उन्होने भी उनको ललकारते देरी नहीं की। जिससे वे रुष्ट होकर पृथक् हो गये तो भी आपने उसकी परवाह नहीं की। वह पृथक् हुआ गुट आज तक अपना अलग सघ ले कर चल रहा है।

आचार्य श्री हुक्मीचद जी म सा के स्वर्गवास के पश्चात् आप और अधिक सजग बन गये। आपके शासन मे सत सती परिवार की अतुल अभिवृद्धि हुई। अनेक त्यागी, तपस्वी, विद्वान् सत तैयार हुए। आपने स्वय लगातार तैतीस (३३) वर्ष तक एकान्तर तप की साधना की। आखिर अपनी वृद्धावस्था को देख कर सवत् १९२५ की पौष सुदी ७ को जावद मे पचम आरे के नेम–मुनि श्री उदयसागर जी म को युवाचार्य पद प्रदान कर किया।

अतिम लक्ष्य की सिद्धि

मुनि श्री उदयसागर जी जैसे योग्य उत्तराधिकारी का चयन करके आप अपने मन मे पूर्ण शाति की अनुभूति करने लगे। धीरे–धीरे शासन की सारी व्यवस्था का भार उन पर डालकर अपने अतिम लक्ष्य की सिद्धि मे सजग बन गये और अपना अतिम समय अति निकट जानकर आलोचना द्वारा पूर्ण आत्म शुद्धि करके सथारा सलेखना सहित सवत् १९३३ की पौष शुक्ला ६, मगलवार को जावद मे स्वर्गवासी हो गये।

विशेष टिप्पण–

भीलवाडा के श्रेष्ठिवर्य जवानमल जी नागोरी के दो पुत्र हुए। दोनो ही डेढ वर्ष की उम्र मे बीमार होकर चल बसे। जब ज्ञानमल जी का जन्म हुआ तो जवानमल जी की माता जी (दादाजी) इनको अपने पीहर जावद लेकर चली गई लेकिन वहा पर भी डेढ वर्ष की वय होते ही बीमारी का प्रभाव रग जमाने लगा। सारे परिवार मे खलबली मच गई। जावद मे पूज्य श्री शिवलाल जी म विराजमान थे। उनकी सेवा मे रुग्ण बालक की स्थिति निवेदित की। पूज्य श्री उनकी वार्ता को श्रवणकर दयार्द्र हो उठे। आहार अधूरा छोडकर वहा पधारे बालक को देखा और सब को दूर हटाकर अपना रजोहरण ज्ञानमल के पास खडा करके एकाग्रचित्त होकर मगलपाठ सुनाया और चुपचाप वापस अपने स्थान पर पधार गये। मगलपाठ श्रवण के आधे घन्टे के बाद वह बच्चा बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गया और वही बच्चा एक शासननिष्ठ श्रावक के रूप मे उभरा।

(उपरोक्त घटनाए भीलवाडा निवासी सुश्रावक शोभालाल जी सा नागौरी से प्राप्त हुई।)

आचार्य श्री उदयसागर जी म.सा. :

आपका जन्म मरुधरा की राजधानी जोधपुर मे श्रेष्ठिवर्य नथमल जी साहब खींवेसरा की धर्म–पत्नी जीवी बाई की कुक्षि से वि सवत् १८७६ की आसोज सुदी पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) को जिस समय नभ मडल मेचन्द्रमा अपनी पूर्ण कलाओ से विकसित होकर अपनी अमृतमय ज्योत्स्ना प्रसारित कर रहा था, उस समय हुआ।चन्द्र का सम्पूर्ण उदय समझकर परिवार वालो ने भी उनका नाम उदयचन्द्र रख दिया। सर्व सुख साधनो से सम्पन्न परिवार मे बालक उदयचद भी उसी चद्रमा की पूर्ण कलाओ के समान शिक्षा आदि बहुमुखी प्रतिभा से विकसित होते हुए जब योवनावस्था मे प्रविष्ट हुआ तो माता–पिता ने खूटो की पोल वाले दौलतरूपचद जी डागा परिवार की योग्य कन्या अणछी बाई के साथ सगाई का सम्बन्ध जोड दिया ओर शादी की तेयारी करने लगे गये।

बनने गये भोगी और बन गये योगी :

परिवार वाले अपने मन मे अनेक अरमानो को सजोते हुए धूम–धाम से शादी की तैयारी कर रहे थे। आखिर वह दिन भी आ गया जिस दिन १८६१ पोस सुद ११ को शादी निश्चित की गई थी। वर राजा उदयचन्द्र बरात सजाकर खूटो की पोल स्थित डागाजी के घर बने तोरण द्वार पर आये। सासुजी सुहागन बहिनो के साथ वर राजा को बधाने आई। मगल द्रव्य से आरती उतारती हुई तिलक करते–२ मजाक मे नाक पकडने की कोशिश करने लगी। वर राजा पहले से ही सजग थे। इससे बचने हेतु उन्होने अपने सिर को ऐसा हिलाया कि सिर पर बधी हुई मोड तुर्रा किलगी सहित पगडी भूमि पर गिर पडी। जिस प्रकार नेमजी ने पशुओ की करुण पुकार को श्रवण कर तोरण से मुह मोड लिया था उसी प्रकार इस गिरी हुई पगडी को देखकर आप का मन भी उद्विग्न हो उठा। तत्क्षण घोडी से उतर कर सीधे स्थानक मे आकर बैठ गये और परिवार वालो को स्पष्ट कह दिया कि "अब मैं जीवन भर ब्रह्मचर्य का पालन करूगा और सयम धारण करके जीवन को सार्थक करूगा– यह मेरा दृढ सकल्प है।"

इस आकस्मिक घटना से सबका मन खिन्न हो गया। इसके तुरत बाद आप अपने परिवार वालो से दीक्षा की अनुमति मागने लगे लेकिन बहुत प्रयत्न करने पर भी परिवार वालो ने दीक्षा हेतु आज्ञा नहीं दी तो आपने घर जाने का त्याग कर दिया और भिक्षाचरी से जीवन–यापन करते हुए धर्माराधन करने लगे। आखिर सात वर्ष बाद माता पिता ने थककर दीक्षा की आज्ञा दी तो परम्परागत देशी सप्रदाय मे वि स १८९८ की चैत्र सुदी ११ को दीक्षित हो गये।

सरिता का सागर मे प्रवेश

मुनि उदयचद जी ने दीक्षा तो ग्रहण करली लेकिन गुरुजनो की आचार–सहिता से अन्तर्मन मे सन्तुष्टि नहीं हुई। वे किसी योग्य गुरु की खोज मे तत्पर थे। सयोगवशात् पूज्य हुक्मेश का मरुधरा मे पदार्पण हुआ और जब उनकी यश कीर्ति आप तक पहुची तो आपके मन मे दर्शन की तीव्र

आकाक्षा पैदा हो गई। आप अपने प्रिय साथी मुनि राजमल जी महाराज से सलाह करके हुक्मेश मु
की सेवा मे पहुच गये और शुद्ध आचार–विचार की सौरभ पाकर धन्य हो गये।

पूर्ण अनुनय–विनय के साथ पूज्य श्री को अपनी चरण शरण मे लेने का निवेदन करने ल
पूज्य श्री ने तत्कालीन द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को देखकर स्वीकृति प्रदान की और विक्रम सवत् १९
की चैत्र सुदी ११ को बीकानेर के आस–पास पुन दीक्षा देकर दोनो को मुनि श्री हरकचद जी म
के शिष्य घोषित कर दिये। *

साधक से शासक ·

हुक्मेश सघ मे आकर आपका मन मयूर नाच उठा। कल्पतरु की छाया पाकर कौन धन्य न
होगा ? मुनि श्री उदयचन्द जी म सा भी पूर्ण विनीत भाव से पूज्य श्री की सेवा का लाभ उठाते ह
अपना ज्ञान–निधान भरने लगे। आप मे ज्ञान–पिपासा तो इतनी तीव्र थी कि सारे मानापमान
छोडकर जहा से भी ज्ञान प्राप्त होता आप लेने की कोशिश करते। रामपुरा की घटना है– वहा
पडित केदार जी गाग से ज्ञान प्राप्त करने हेतु एक दिन उनके घर पहुच गये। पडित जी ने उन
परीक्षा हेतु बहाना बनाकर टाल दिया लेकिन आप दूसरे दिन पुन चले गये। फिर भी पडित जी
टाल दिया। इस प्रकार सात बार वे टालते रहे फिर भी आप पहुच जाते। यह देख पडित जी ने यो
पात्र का परीक्षण कर के चरणो मे नमन किया और क्षमायाचना करके अपना अखूट ज्ञान खजा
खोल दिया। इस ज्ञान–पिपासा से आपकी प्रतिभा का अद्भुत विकास हुआ। जिसका परीक्षण कर
और अपनी वृद्धावस्था जानकर आचार्य श्री शिवलाल जी म सा ने सवत् १९२५ की पौष शुक्ला सप्त
को अपने भावी उत्तराधिकारी के रूप मे आपकी नियुक्ति कर जावद मे ही युवाचार्य पद प्रदान किय
उसके कुछ वर्ष बाद ही सवत् १९३३ की पौष शुक्ला ६ मगलवार को शिवाचार्य का स्वर्गवास हो जा
से सारे सघ का उत्तरदायित्व आपके सुदृढ कधो पर आ गया।

उपकारी के प्रति अटूट आदर भाव एव अनुशासन मे कठोर ·

एक साधक से जिन शासन के उच्चतम शिखर पर पहुचने पर तो आपका जीवन पहले से
अधिक विनम्र बन गया। आप छोटे बडे अनुशासन प्रिय साधको के प्रति भी अटूट स्नेह भाव वरसा
और जो अनुशासन भग करते उनको कठोर दड देने अथवा पृथक् कर देने मे भी पीछे नहीं रहते थे
चाहे कोई कितना ही प्रतिष्ठित विद्वान या साधक ही क्यो न हो। एक बार एक साधक नासव
(तम्बाखू) का आदी बन गया और उपालभ के भय से निषेध करने पर भी बिना बताये ही चुपचाप
आता। आचार्य देव को मालूम पडा तो उन्होने कठोर उपालभ दिया फिर भी वह नहीं माना तो स
से निष्कासित कर दिया। ऐसे अनुशासन प्रिय थे हमारे पूर्वाचार्य।

---

* पू मन्नालाल जी म के जीवन चरित्र मे

आप हमेशा हर साधक को उपकारी के प्रति पूर्ण आदर भाव और विनम्र रहने की शिक्षा देते रहते। इतना ही नहीं, इतने उच्च पद पर पहुच गये तो भी उपकारी के प्रति आपके मन मे सदा आदर–भाव बना रहता था। एक बार आप सोजत पधारे। हजारो की जनता के साथ नगर प्रवेश हुआ। वहा एक एकल विहारी सन्त भोपजी म विराजमान थे– उनके उपाश्रय के निकट पहुचते ही आचार्य श्री जी भीतर चले गये। लोगो को कुछ समझ मे नहीं आया और वे आपस मे कानाफूसी करने लगे कि 'कहा इतने महान् क्रियापात्र आचार्य और कहा यह ढीला पासत्था अकेला संत। आचार्य श्री भीतर क्यो पधारे ? लोग तो क्या वे मुनि भी हतप्रभ हो गये। आचार्य श्री ने उनको संबोधित करके फरमाया– महाराज श्री ! मुझे पहचाना ? मैं वही उदयचन्द हू, जिसको आपने जोधपुर मे नवकार मत्र व सामायिक सूत्र सिखाकर धर्म भाव मे प्रेरित किया। आपका मेरे पर बहुत उपकार है। यह सुनते ही सबका सिर श्रद्धा से अवनत हो गया। चारो तरफ जय जयकार की आवाज गूजने लगी। वे मुनिराज भी यह सुनकर गद्‌गद् हो गये और बोले– धन्य है आप, कहा से कहा पहुच गये और कहा म ? सयम से कितना पतित हो गया। यह कहते–कहते आखो से पश्चाताप के अश्रु प्रवाहित होने लगे और उसी दिन से उन्होने अपना जीवन ही बदल दिया। (पू मन्नालाल जी म के जीवन से)

आपके शासन मे कोदर जी महाराज जैसे उत्कृष्ट क्षमाश्रमण, पीरदान जी महाराज जैसे रसनेन्द्रिय विजेता सन्त रत्न हुए। सन्तो की विनयशीलता और अनुशासन प्रियता ने बडे–बडे अनुशासन–प्रिय मिलेट्री अफसरो को भी चकित कर दिया।

प्रतिवादियो पर विजय–पताका

आप मे गुणियो से गुण ग्रहण करने की सहजता थी उतनी ही प्रतिवादी के मान को मर्दन करने की भी पूर्ण दक्षता थी। एक बार वि स १९२८ मे पाली मे एक मूर्तिपूजक आचार्य श्री जी ने आपको शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी। हालाकि आचार्य श्री इन व्यर्थ के वाद–विवादो से दूर ही रहना पसन्द करते थे लेकिन जब उनका बहुत आग्रह देखा तो आपने एक शर्त रखी कि जो पराजित होगा उनके शिष्यो मे से विजयी होने वाले को इच्छानुसार एक शिष्य देना पडेगा। जब यह शर्त मजूर हुई तब शास्त्रार्थ प्रारभ हुआ और आपकी विजय हुई। फलस्वरूप शर्तानुसार आपको 'किशनसागर जी म सा' जैसे विद्वान् शिष्य रत्न की प्राप्ति हुई।

मिलनसारिता

पूज्यश्री मे मिलन–सारिता का भी अद्‌भुत गुण था। हर सप्रदाय के साधु साध्वी आपसे मिलने के लिए पधारते थे और आप भी उनके स्वागत मे मुखवस्त्रिका चादर आदि देकर उनको बडे प्रेम से विदा करते। आपने पजाब, कराची, रावलपिडी तक की सुदूर यात्राए की तो वहा भी पूर्ण सत्कार सन्मान प्राप्त किया। चरित्र नायक जब पजाब पधारे तो आपकी मिलन–सारिता, शुद्ध चरित्र से मायाराम जी महाराज बहुत प्रभावित हुए। जब मायाराम जी म राजस्थान मे पधारे तो आपने भी

उनका बहुत सत्कार किया और छोटेलाल जी वैरागी सागानेर भीलवाडा को चरणो मे भेट कर दिया। उसके बाद उनके शिष्य परिवार की अतुल अभिवृद्धि हुई। आज भी व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म व सुदर्शन मुनि जी म सा व उनके सन्तो का इस सप्रदाय के प्रति सौहार्द्र एव श्रद्धा भाव चला आ रहा है।

वचन–सम्पदा .

आपकी वचन–सपदा भी बडी प्रभावशाली थी। जो भी वचन निकालते, उसका सामने वाले पर बडा प्रभाव पडा। एक बार केवलचद जी कासटिया अपनी दूसरी पत्नी के गुजर जाने के बाद तीसरी शादी के उद्देश्य से रतलाम आये और वहा पूज्य श्री के दर्शन किये। जब पूज्य श्री को यह बात मालूम पडी तो बोले– क्या बात है ! वैरागी बनने के समय पुन बनडा बनने की धुन लगी है। जरा मन मे विचार करो। पूज्य श्री के इन सीमित शब्दो का भी ऐसा प्रभाव पडा कि उन्होने उसी समय आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया और बाद मे अपने पुत्र के साथ ऋषि सप्रदाय मे दीक्षित हुए जो केवल ऋषिजी और आचार्य अमोलकऋषि जी के रूप मे विख्यात हुए।

इसी प्रकार आप मे वैचारिक एकता का भी बहुत बडा गुण था। जब भी ऐसा प्रसग आता, आप पीछे नहीं रहते।

एक बार जब आप अपनी वृद्धावस्था की स्थिति मे रतलाम (म प्र) विराजमान थे उस समय वहा पर धर्मदास जी म सा की सप्रदाय के प्रमुख सन्त मोखमसिह जी म सा के प्रस्तावानुसार ही सवत्सरी मनाने का निर्णय ले लिया और रतलाम मे दोनो ने एक ही दिन सवत्सरी मनाई जबकि सप्रदाय के अन्य सब सतो ने सप्रदाय की टीप के आधार पर ही सवत्सरी मनाई जिससे सप्रदाय मे बहुत मतभेद उत्पन्न होने जैसी स्थिति बन गई फिर भी आचार्य श्री ने बडी चतुराई से उसको सभाला। आपकी धीरता एव गभीरता की अनेक बार विधर्मियो ने भी परीक्षा ली। जिसमे आप पूर्ण उत्तीर्ण हुए और वे परीक्षक चाहे मुसलमान, हिन्दू, ईसाई और जो भी थे, सदा–सदा के लिए आपके भक्त बन गये।

इस प्रकार आपके शासन काल मे सत सती परिवार की दृष्टि से, क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से सब दिशाओ मे साधुमार्ग का अतुलनीय प्रसार और प्रचार हुआ।

जीवन की अतिम अवस्था मे आपने अपनी वृद्धावस्था को देख कर सप्रदाय की सुव्यवस्था एव अखण्डता को ध्यान मे रखते हुए वि स १९५४ की आसोज पूर्णिमा को अपने भावी उत्तराधिकारी के रूप मे पडित रत्न मुनि श्री चौथमल जी म सा का चयन करके चतुर्विध सघ की साक्षी से युवाचार्य पदवी प्रदान की और आप अपनी अतिम साधना मे सजग बनकर आलोचना सथारा सलेखना सहित वि स १९५४ माघ सुदी दसमी, मगलवार को देवलोक गमन कर गये।

पहले ही सावधान हो जाते थे। धीरे–२ आपके ज्ञान–दर्शन–चारित्र की छाप सारे सघ मे जम गई। आचार्य देव भी आपकी प्रतिभा से पूर्ण सन्तुष्ट थे। मुनि श्री के मन मे भी आपके प्रति पूर्ण विश्वास जम गया। इसी कारण एक दिन आपने अपनी वृद्धावस्था को ध्यान मे रखकर भावी उत्तराधिकारी के रूप मे चतुर्विध सघ के सम्मुख तत्कालीन शासन व्यवस्था को देखते हुए वि स १९५४ आसोज शुक्ला पूर्णिमा को आपका ही नाम घोषित कर दिया जिसको श्रवणकर सारा सघ प्रमुदित हो उठा।

युवाचार्य श्री चौथमल जी म उस समय चातुर्मासार्थ जावद विराजमान थे। चातुर्मास उठते ही मुनि श्री श्रीलाल जी म सा आदि दो सन्तो के साथ आचार्य देव ने युवाचार्य की प्रतीक रूप चादर भेजी जिसे ओढा कर युवाचार्य पदोत्सव मनाया गया।

युवाचार्य की चादर धारण करके चरित्रनायक ने आचार्य श्री के दर्शन करने का विचार कर जावद से विहार किया। लम्बी बीमारी व अति वृद्धावस्था के कारण शारीरिक स्थिति अति कमजोर होते हुए भी आप धीरे–धीरे रतलाम पहुच गये और आचार्य श्री जी के सान्निध्य मे शासन सुव्यवस्था हेतु समाचारी का पुन सकलन करके सब सतो द्वारा हस्ताक्षर कराकर उनकी स्वीकृति ली। इसी बीच अकस्मात् आचार्य देव के स्वास्थ्य मे गडबडी हो गई और वि स १९५४ की माघ शुक्ला १० मगलवार को सलेखना सथारा सहित उनका स्वर्गवास हो गया। अब तो सघ का सारा उत्तरदायित्व आपके वृद्ध कधो पर आ गया।

शासन सुव्यवस्था का चितन

शारीरिक वृद्धावस्था होने पर भी आप पूर्ण सजगता से सघ की सारणा, वारणा करने लगे। सघ सुसगठित बना रहे और आबाल वृद्ध सब की साधना मे कोई न्यूनता न आवे, ऐसी भावना आपकी बनी रहती थी। आचार्य श्री शिवलाल जी म सा के समय से ही बडे जवाहरलाल जी म से मतभेद हो गया। वह अधिक से अधिक बढता ही जा रहा था। आखिर पजाब सम्प्रदाय के मायाराम जी म ने बीच मे पडकर प्रेम व्यवहार द्वारा समझौता कराकर पुन सभोग स्थापित कराये थे। उन सतो की व तेजसिह जी म सा के सन्तो की भी सुव्यवस्था आवश्यक थी लेकिन समस्या थी कि १५० के आस पास सन्तो की सुव्यवस्था कैसे बैठ सकती है। इसी चिन्तन के समाधान हेतु आपने सघ मे पाच गण और पाच गणावच्छेदक एव रगूजी सतियो मे भी पाच गण और उन पर एक एक गणावच्छेदिका की नियुक्ति करके उनके ऊपर गणो की जिम्मेदारी सौपना उपयुक्त समझा और उसका प्रारूप वनाकर सघ के सामने रखा। जिसकी सारे सघ मे अच्छी प्रतिक्रिया हुई। इस प्रकार सघ की समुचित व्यवस्था करके आचार्य श्री आत्म सन्तुष्टि का अनुभव करने लगे। आपने ९४ कलमो की समाचारी निर्धारित की जिस पर सब सन्तो के हस्ताक्षर थे।

आचार्य श्री चौथमलजी म.सा. :

आचार्य श्री चोथमल जी म सा का जन्म मरुधरा के औद्योगिक क्षेत्र पाली के सुप्रसिद्ध धाका परिवार मे श्रेष्ठिवर्य श्री पोखरदास जी (ओघजी) की धर्मपत्नी हीरा बाई की कुक्षि से वि सवत् १८८५ वैशाख शुक्ला चौथ को हुआ था। माता–पिता के आकस्मिक वियोग से आपकी अन्तरात्मा ससार से विरक्त हो उठी। आपने मन मे ससार का त्याग करके सयम ग्रहण करने का दृढ सकल्प कर लिया परन्तु आपके मानस मे यह चिन्तन था कि किन्हीं योग्य महापुरुषो का सान्निध्य प्राप्त हो जाय तो सयम लेना सार्थक बन जाय। उन्ही विचारो को मन मे सजोते हुए योग्य गुरु की खोज मे निकल पडे।

(जन्मतिथि व माता–पिता के नाम धाका वश क कुल गुरु से प्राप्त हुए)

जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ

कहते हैं कि जितना व्यक्ति गहरी खोज करता है उतनी ही बहुमूल्य वस्तु प्राप्त करता है। ठीक यही हुआ। आप योग्य गुरु की खोज मे अनेक साधुआ के पास गये लेकिन कथनी करनी की द्विरूपता देखकर आपका मन उनके पास सयमित होने के लिए तत्पर नहीं हुआ। एक दिन आपने आचार्य श्री हुक्मेश के द्वारा क्रियोद्धार और बीकानेर मे होने वाले भव्य दीक्षा महोत्सव आदि जिन शासन को गौरवान्वित करने वाले समाचार सुने तो आपका मन उनके दर्शन करने को लालायित हो उठा। आप तत्काल रवाना होकर बीकानेर पहुच गये। आचार्य श्री हुक्मेश के दर्शन करके आप कृतकृत्य हो गये। आपने अपनी भावना आचार्य देव व युवाचार्य श्री के चरणो मे मुनि श्री हरकचद जी म सा के माध्यम से पहुचाई। शिवाचार्य ने आपकी भावना को जानकर प्रसन्नता व्यक्त की ओर दीक्षा की शिक्षा देने का निर्देश मुनि श्री हरकचन्द जी महाराज को दे दिया।

बस, फिर क्या था, कल्पतरु के सान्निध्य को प्राप्त करके आप धन्य हो गये। एकाग्र चित्त से ज्ञान ध्यान करके अल्प समय मे ही आपने अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया। आचार्य श्री को भी उससे बडी सन्तुष्टि हुई और महती अनुकम्पा करके वि स १९०९ की चैत्र शुक्ला १२ को नयाशहर (ब्यावर) मे धूमधाम से दीक्षा प्रदान की और मुनि श्री हरकचन्द म के शिष्य के रूप मे घोषित कर दिया।

साधक से अनुशासक .

अब आप मुनि चौथमल जी म के रूप मे गुरु सान्निध्य को प्राप्तकर पूर्ण तन्मयतापूर्वक अपना ज्ञाननिधान भरने लगे। अल्पकाल मे ही उनकी प्रतिभा का ऐसा अचिन्त्य विकास हुआ कि जैन जगत् के मूर्धन्य विद्वानो मे आपकी गिनती होने लगी। आप केवल विद्वत् जगत् मे ही प्रसिद्ध नहीं हुए, आपकी आचार–निष्ठता की भी सारे सघ मे धाक जम गई। स्वय आचार्य देव श्री उदयसागर जी म भी जब कोई साधु चारित्र मर्यादा का उल्लघन करते तो उनको यही कहते भाई ! देखो, सावधान रहो। मुनि चौथमल जी को मालूम पडेगा तो वे कडा उपालभ देगे। सत भी आपके आगमन की खबर सुनकर

पहले ही सावधान हो जाते थे। धीरे–२ आपके ज्ञान–दर्शन–चारित्र की छाप सारे सघ मे जम गई। आचार्य देव भी आपकी प्रतिभा से पूर्ण सन्तुष्ट थे। मुनि श्री के मन मे भी आपके प्रति पूर्ण विश्वास जम गया। इसी कारण एक दिन आपने अपनी वृद्धावस्था को ध्यान मे रखकर भावी उत्तराधिकारी के रूप मे चतुर्विध सघ के सम्मुख तत्कालीन शासन व्यवस्था को देखते हुए वि स १९५४ आसोज शुक्ला पूर्णिमा को आपका ही नाम घोषित कर दिया जिसको श्रवणकर सारा सघ प्रमुदित हो उठा।

युवाचार्य श्री चौथमल जी म उस समय चातुर्मासार्थ जावद विराजमान थे। चातुर्मास उठते ही मुनि श्री श्रीलाल जी म सा आदि दो सन्तो के साथ आचार्य देव ने युवाचार्य की प्रतीक रूप चादर भेजी जिसे ओढा कर युवाचार्य पदोत्सव मनाया गया।

युवाचार्य की चादर धारण करके चरित्रनायक ने आचार्य श्री के दर्शन करने का विचार कर जावद से विहार किया। लम्बी बीमारी व अति वृद्धावस्था के कारण शारीरिक स्थिति अति कमजोर होते हुए भी आप धीरे–धीरे रतलाम पहुच गये और आचार्य श्री जी के सान्निध्य मे शासन सुव्यवस्था हेतु समाचारी का पुन सकलन करके सब सतो द्वारा हस्ताक्षर कराकर उनकी स्वीकृति ली। इसी बीच अकस्मात् आचार्य देव के स्वास्थ्य मे गडबडी हो गई और वि स १९५४ की माघ शुक्ला १० मगलवार को सलेखना सथारा सहित उनका स्वर्गवास हो गया। अब तो सघ का सारा उत्तरदायित्व आपके वृद्ध कधो पर आ गया।

शासन सुव्यवस्था का चितन

शारीरिक वृद्धावस्था होने पर भी आप पूर्ण सजगता से सघ की सारणा, वारणा करने लगे। सघ सुसगठित बना रहे और आबाल वृद्ध सब की साधना मे कोई न्यूनता न आवे, ऐसी भावना आपकी बनी रहती थी। आचार्य श्री शिवलाल जी म सा के समय से ही बडे जवाहरलाल जी म से मतभेद हो गया। वह अधिक से अधिक बढता ही जा रहा था। आखिर पजाब सम्प्रदाय के मायाराम जी म ने बीच मे पडकर प्रेम व्यवहार द्वारा समझौता कराकर पुन सभोग स्थापित कराये थे। उन सतो की व तेजसिह जी म सा के सन्तो की भी सुव्यवस्था आवश्यक थी लेकिन समस्या थी कि १५० के आस पास सन्तो की सुव्यवस्था कैसे बैठ सकती है। इसी चिन्तन के समाधान हेतु आपने सघ मे पाच गण और पाच गणावच्छेदक एव रगूजी सतियो मे भी पाच गण और उन पर एक एक गणावच्छेदिका की नियुक्ति करके उनके ऊपर गणो की जिम्मेदारी सौपना उपयुक्त समझा और उसका प्रारूप बनाकर सघ के सामने रखा। जिसकी सारे सघ मे अच्छी प्रतिक्रिया हुई। इस प्रकार सघ की समुचित व्यवस्था करके आचार्य श्री आत्म सन्तुष्टि का अनुभव करने लगे। आपने ९४ कलमो की समाचारी निर्धारित की जिस पर सब सन्तो के हस्ताक्षर थे।

निज पर शासन फिर अनुशासन ·

आचार्य श्री के अनुशासन का सारे संघ पर पूर्ण प्रभाव था फिर भी कोई साधक गलती करता या आवश्यक कार्यो मे भी लापरवाही करता तो उनको आदेशात्मक ताडना तर्जना देने के बजाय आप अपने जीवन मे विशेष अप्रमत्त भाव लाकर कुछ सुधारने की कोशिश करते। उदाहरणार्थ एक बार सत प्रतिक्रमण की आवश्यक क्रियाओ मे प्रमाद लाने लग गये, यह आपको बहुत अखरा तो आपने किसी को कुछ नहीं कहा ओर प्रतिक्रमण के समय बिना सहारे खडे रहने की ताकत न होते हुए भी पाट से नीचे उतरकर जमीन पर लकडी के सहारे खडे हो गये। यह देखकर श्रावको और साधुओ ने विराजने का आग्रह किया तो पूज्य श्री बोले भाई ! प्रतिक्रमण यह साधक की आवश्यक क्रिया है। इसको तो जितना अप्रमत्त भाव से साधेगे, उतना ही लाभप्रद है। यह शरीर तो नाशवान है। मैं इन क्रियाओ को शारीरिक कमजोरी से बैठे–बेठे करता हू तो शायद ये मेरे साथी सन्त कहीं भविष्य मे सोते–सोते करने न लग जाय। परोक्ष उपालम्भ सुनकर जो साधु प्रमाद करने लगे थे उनको ऐसी प्रेरणा मिली कि फिर कभी प्रमाद करने का नाम नहीं लिया। आप भोजन तो एक बार करते साथ ही पानी की भी ऊनोदरी करते। रात्रि मे मात्र दो प्रहर निद्रा निकालते आर सब साधुओं के ज्ञानध्यान की जानकारी लेते।

उत्तराधिकारी का चयन .

इस प्रकार सजगता से व्यवस्था करते हुए आप शासन चला रहे थे कि वृद्धावस्था ने अपना प्रभाव आप पर जमा दिया। इसी बीच एक दिन आप अपने नित्य–नियम से निवृत्त होकर शयन की तेयारी कर रहे थे कि अचानक बेहोशी आ गई। पास मे सेवारत सन्तो ने यह देखकर श्रीमान् अमरचद सा पीतलिया, बालचन्द जी सा श्रीश्रीमाल आदि प्रमुख श्रावको को सकेत किया। सकेत मिलते ही वे तुरत पास मे आये, नाडी देखकर थोडा हिलाया तो आचार्य प्रवर होश मे आ गये और आखे खोलकर अपनी आलोचना करते हुए सबसे क्षमायाचना करने लगे।

यह देखकर श्रावको ने कहा–हजूर ! आप अपना कार्य तो साध रहे है लेकिन सघ को किसके भरोसे छोडा है। श्रावको का यह शब्द सुनते ही आप एकदम सजग हो गये और बोले– आपकी बात ठीक है। जो पूज्य श्री ने मेरे पर भार डाला उसको हल्का करके ही आगे तैयारी करनी चाहिये। यह कहकर थोडी देर गहन चितन मे डूब गये और सन्त गण पर दृष्टि दौडते हुए खोजने लगे कि कौनसा सन्त इस पद के योग्य है ? पहले भी आप अनेक बार इस सदर्भ मे चिन्तन कर चुके थे अत आप की दृष्टि उस समय के जम्बू मुनि श्रीलाल जी पर टिक गई। अपनी आत्म साक्षी से पूर्ण निश्चय करके बोले– " मेरे पीछे मुनि श्री श्रीलाल जी शासन का भार सभालेगे।" यह सुनते ही सबके हृदय मे हर्ष लहर व्याप्त हो गई। मुनि श्री श्रीलाल जी ने खूब आनाकानी की फिर भी उनकी किसी ने नही सुनी और पूज्य श्री की तबीयत कुछ ठीक होते ही सवत् १९५७ कार्तिक शुक्ला एकम के दिन स्वय

पूज्य श्री ने व्याख्यान स्थल पर पधारकर अपने हाथ से युवाचार्य की प्रतीक चादर ओढाई और अमरचन्द जी पीतलिया ने भावी व्यवस्था हेतु आचार्य श्री जी के निर्देश लिखित रूप मे सघ को पढ कर सुनाये जिसको उपस्थित चतुर्विध सघ ने स्वीकार किये।

इस पुनीत कार्य की सम्पन्नता से आचार्य श्री को पूर्ण शाति की अनुभूति हुई और वे अपने अतिम लक्ष्य को साधने की तैयारी मे जुट गये और आठवे रोज कार्तिक शुक्ला ९–१० को सथारा सलेखना सहित स्वर्ग की ओर प्रयाण कर दिया।

आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. :

आपका जन्म दूढार प्रान्त के टोक शहर मे श्रेष्ठिवर्य श्री चुन्नीलाल जी बम्ब की धर्मपरायण सद्गुणो से सुसज्जित धर्मपत्नी श्री चादकवर बाई की कुक्षि से वि.स. १९२६ की आषाढ शुक्ला १२ को हुआ था। आपके गर्भ मे आते ही परिवार अन्न धन व्यापारिक दृष्टि से विपुल श्री से सवर्धित होने लगा। इस हेतु बालक का नाम श्रीलाल रखा गया। माता चादकवर बाई धर्म सस्कार सम्पन्न महिला थी। माता के सस्कार आपको जन्मजात प्राप्त हुए। इसी प्रकार लघु अवस्था मे ही आपको धर्म क्रियाओ मे अन्तरग रुचि पैदा हो गई। छ वर्ष की लघुवय मे ही आपने प्रतिक्रमण सूत्र, पच्चीस बोल आदि कठस्थ कर लिये। सामायिक साधना की भव्य मुद्रा से आपका चेहरा इतना भव्य लगता था कि देखने वाले यही सोचते–मानो कोई सन्त ही बैठे हो। आपकी (बालक श्रीलाल की) बाल क्रीडाए भी धर्म सस्कार युक्त होती थी। कभी बच्चो की टोली को लेकर व्याख्यान देते तो कभी झोली मे कटोरे लेकर भिक्षावृत्ति का अभिनय करते। साथ ही आप अपना व्यावहारिक शिक्षण भी प्राप्त करते थे।

पिता श्री का वियोग .

इस प्रकार व्यावहारिक एव धार्मिक दोनो क्षेत्रो मे आपकी प्रतिभा का अतुल विकास देखकर पारिवारिक जनो का मन आह्लादित होता था। पिता श्री चुन्नीलाल जी भी आपकी प्रतिभा को देखकर अपने मन मे अनेक कल्पनाओ के महल निर्मित करते रहते थे। उस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होने छ वर्ष की लघुवय मे ही दूनी के श्रेष्ठिवर्य बालाबक्स जी गोखरु की पुत्री मानकवर के साथ वि स १९३२ भादवा शुक्ला पचमी को सगाई कर दी थी लेकिन दशवर्षीय लघु पुत्र को छोडकर पिता श्री का वि स १९३६ आषाढ माह मे वियोग हो गया । पिता श्री के देहावसान से श्री जी का मन उदासीन बन गया। न गृहकार्य मे रुचि लेते और न अन्य बातो मे रस लेते। जब भी मन उचटता तो स्थानक मे जाकर सामायिक ले लेते या रसिया की टूक पर बनी छत्री पर जाकर बैठ जाते। श्री जी की इस वृत्ति से उनके बडे भ्राता नाथूलाल जी व मातेश्वरी श्री चाद कवर बाई के मन मे बार–बार ये विचार पैदा होते रहते कि कहीं श्री जी दीक्षा नहीं ले ले। इन्हीं विचारो से शकित होकर उन्होने श्री जी को गृहबधन मे जकडना ही उचित समझा और जिससे पूर्व मे सगाई निश्चित हो चुकी थी उसी के साथ शादी की तिथि वि स १९३६ माघ बदी २ को निश्चित कर दी। उस समय श्री जी की उम्र सिर्फ ११ वर्ष की और मानकवर बाई की उम्र ९ वर्ष लगभग थी।

तोरण की तैयारी से गुरु सेवा प्यारी

ज्यो–ज्यो शादी के दिन नजदीक आने लगे त्यो–त्यो सारे परिवार मे खुशियो की धूम मच गई। भाई नाथूलाल जी ने भी खर्चे मे कोई कसर नहीं रखी। शादी के दिन भव्य बरात सजकर दूनी पहुची। धूमधाम से तोरण पर जाने की तैयारी होने लगी, इतने मे गूजरमल जी बच्छराज जी पोरवाल जो

आपके अनन्य बालसखा थे– ने आकर श्री जी को धीरे से कहा– मित्र ! तुम्हारे भाग्य की क्या सराहना की जाय। आज मानो तुम्हारे विवाह के प्रसग पर ही गुरुदेव श्री पन्नालाल जी म सा एव गभीर मल जी म सा आज शहर मे पधारे है। यह सुनते ही श्री जी का रोम–रोम पुलकित हो उठा। शादी से भी ज्यादा उमग उनके दर्शन की जाग उठी। लेकिन करे क्या, चारो तरफ राग का ताना–बाना ऐसा तना हुआ था कि कुछ उपाय नहीं सूझ रहा था। आप घोडी पर बैठकर धूमधाम से तोरण पर जाने लगे कि अकस्मात् श्री जी की दृष्टि स्थानक के द्वार पर गिरी। बस फिर तो आप अपने मन को रोक नहीं सके और घोडी से नीचे उतर गये और सीधे उपाश्रय मे जाकर गुरु चरणो मे झुक गये। उनको उस समय यह भी भान नहीं रहा कि मेरे पास इस समय सचित वस्तुए है। सब लोग चिल्लाने लगे– श्री जी ! यह क्या कर रहे हो, महाराज श्री के सघट्टा कर दिया। लेकिन श्री जी को तो गुरु चरणो मे ऐसा आनन्द आ रहा था कि किसी की कुछ सुन ही न पाये। यह देखकर उनके *(श्री जी के) साथी व बहनोई कहने लगे, श्री जी, जल्दी करो, कितनी देरी हो गई है, शादी यहा* पर थोडी होने वाली है। साथियो के इस प्रकार चिल्लाने से आप गुरु चरणो से विलग हुए। मुनि श्री जी ने उनके अतरग मे उफान लेते धर्म राग की प्रशसा करते हुए कहा– भाई ! श्री जी के ये निकट भवी के लक्षण हैं। इनसे सब को प्ररेणा लेनी चाहिए। इतना कहकर मगल पाठ सुनाया।

श्री जी गुरुदेव के मुखारविन्द से मगल पाठ श्रवण करके पुन घोडी पर सवार हुए। तोरण पर पहुचे और बाद मे धूमधाम के साथ शादी हो गई। बरात दूनी से टोक पहुची। ससुराल के बडे बुजुर्गो का आशीर्वाद ग्रहण करके छोटी अवस्था के कारण मान कवर बाई को पुन पीहर दूनी मे पहुचा दी गई।

दु साध्य कठोरतम प्रतिज्ञा .

इधर सयोगवशात् मुनि श्री पन्नालाल जी म आदि ठाणा विचरण करते हुए टोक पधारे। बस फिर क्या था, गुरु भक्ति के कारण अब तो श्री जी का अधिकाश समय गुरु चरणो मे ही व्यतीत होने लगा। एक दिन मुनि श्री जी ने ब्रह्मचर्य के महत्त्व का इतना गहन, गभीर अनेक हेतु दृष्टातो के साथ प्रतिपादन किया, जिसको श्रवण कर श्री जी की आत्मा मे एक नई स्फुरणा पैदा हो गई। वे व्याख्यान समाप्ति के तुरन्त पश्चात् सीधे अपनी प्रिय रसिया टूक की छतरी पर जाकर बैठ गये और जो सुना, उसका गहन चितन करले लगे। चिन्तन करते–करते उनकी अन्तरात्मा जागृत हो उठी ओर तत्क्षण उसी रसिया की टूक की छतरी पर बैठे बैठे ही ऐसी दु साध्य कठोरतम प्रतिज्ञा धारण कर ली कि आज से मुझे भी जम्बू स्वामी आदि महापुरुषो की तरह पूर्ण बह्मचर्य का पालन करना है ओर स्त्री के साथ एकान्तवास व ससर्ग त्याज्य है। इस हेतु चाहे प्राणो की वाजी भी क्यो न लगानी पड जाये, मुझे दृढ रहना है।

ससार की कैद से मुक्ति का उपाय

बस फिर क्या था, श्री जी इस कठोरतम प्रतिज्ञा को धारण करके जिससे शादी की वह मानकवर बाई तो पीहर चली गई, पर अन्तर्मन से उरा दीक्षा कुमारी से शादी की अभिलाषा जागृत हुई और आप उसकी पूर्ति की साधना मे तन्मय हो गये। थोडे ही दिनो मे उनके व्यवहार से परिवार वालो को भी सशय होने लगा। वे पूर्ण सजगता वरतने लगे लेकिन श्रीजी बीच मे ही घर से विना किसी को कुछ कहे निकल गये ओर सुदूर रतलाम (मालवा) मे आचार्य श्री उदय सागर जी म सा की सेवा मे पहुच गए। जब नाथूलाल जी को खवर लगी तो वे वहा से आपको लेकर आये। अव तो एक नजर कैदी की तरह श्रीजी की पूर्ण निगरानी रखी जाने लगी लेकिन कुछ दिन के पश्चात् श्री जी मोका देखकर घर से निकलकर सुदूर काठियावाड, गुजरात मे पहुचकर अनेक महापुरुषो की चरणोपासना करके नाथद्वारा (मेवाड) मे पूज्य श्री चौथमल जी म सा की सेवा मे पहुच गये। पारिवारिक जनो को कुछ भाग दौड करने पर कुछ पता पडा तो वहा से भी पुन लेकर आए। ऐसा कठोर नियत्रण कर दिया कि आप घर के बाहर कदम भी नहीं रख सकते थे।

इस प्रकार के कठोर नियत्रण से श्री जी का मन अशात हो उठा ओर एक दिन भयकर सर्दी के दिनो मे सिर्फ एक चादर ओढकर जगल निमित्त बाहर गये और वहीं से जगल ही जगल मे होते हुए चवालीस मील निकल गये। भयकर सर्दी से आपको बुखार हो गया। जब आप कादेडा गाव शाहपुरा के पास पहुचे तो सयोग से आपके भाई नाथूलाल जी के श्वसुर जी श्रीमान् शिवदास जी रुणवाल–घटियावली वाले वसूली के उद्देश्य से वहा आये थे। ज्योही उन्होने श्री जी को पहचाना तो कुछ तत्कालीन उपचार करके एक ऊट वाले को ठहराकर पूर्ण हिदायत के साथ टोक भेज दिया। बहुत उपचार करने के बाद आप स्वस्थ हुए।

श्री जी द्वारा इतना कष्ट उठाये जाने पर भी परिवारिक जनो के हृदय मे परिवर्तन नहीं आया। विविध तरीको से श्री जी को समझाने पर भी जब श्री जी के विचारो मे कुछ परिवर्तन नहीं आया तब हैरान होकर आखिरी शस्त्र के प्रयोग रूप श्री जी की धर्मपत्नी मानकवर बाई को पीहर से ससुराल यही सोचकर ले आये कि स्त्री का अनुराग बडे–बडे व्यक्तियो को भी विचलित कर देता है लेकिन श्री जी अटी मे बधे रत्न वाले जौहरी की तरह प्रतिपल सजग थे। ज्योही यह बात मालूम हुई तो आप पहले ही सावधान हो गये और उस हवेली मे आना जाना बद कर दिया, जिससे एकान्तवास का प्रसग ही नहीं आया। मान कवर बाई को उनकी ननद मागी बाई से सारी बात मालूम हो गई थी। दोनो ननद–भौजाई इसी मौके की इन्तजार मे थी कि कब दर्शन एव बात करने का मौका मिले।

सयोगवशात एक दिन श्रीजी धूप सेवन करते हुए पडौस की हवेली की दूसरी मजिल की छत पर बैठे स्वाध्याय कर रहे थे। मौका देखकर मानकवर बाई चुपचाप वहा पहुच गयी और बडे विनय भरे शब्दो मे अपनी अन्तर्वेदना अभिव्यक्त करने लगी कि हे नाथ ! मेरा ऐसा क्या अपराध हो गया जो

मेरे साथ इस प्रकार का अन्याय किया जा रहा है। मेरी जीवन नैया को मझधार मे छिटकाया जा रहा है ? मान कवर बाई के ये मर्म को वेधने वाले करुण रस से ओतप्रोत शब्द कान मे पडते ही जैसे बिल्ली की आहट सुनते ही चूहे सावधान होकर वहा से नौ दो ग्यारह हो जाते है वैसे ही श्री जी भी वहा से शीघ्र उठकर प्रण रक्षणार्थ ज्योही सीढिये उतरने की कोशिश करने लगे, त्योही मानकवर बाई सीढियो के द्वार को रोककर खडी हो गई और पुन अपनी वेदना अभिव्यक्त करने लगी। तब श्री जी नीचे उतरने मे स्त्री स्पर्श के दोष से बचने हेतु इधर उधर दृष्टि पसारते नीचे की छत दृष्टिगत होते ही ऊपर से नीचे कूदकर हवेली से बाहर चले गये। जोर का धमाका सुनकर सब परिवार वाले एकत्रित हो गये। मानकवर बाई के तो मानो पावो तले की जमीन ही खिसक गई।

धन्य हो श्री जी को, जिन्होने स्वय प्रतिज्ञा लेकर उसके रक्षण मे प्राणो की भी बाजी लगा दी। उनकी यह व्रत पालन की उत्कृष्ट भावना उनके उज्ज्वल आत्मिक उत्थान की सूचक थी।

स्वयमेव दीक्षित :

लगभग दो वर्ष के भरसक प्रयत्नो के उपरान्त भी ससार के बधन से छुटकारा नहीं मिलते देखकर आपका अन्तर्मन पूर्ण रूप से उद्विग्न हो उठा। आपने अपने मन मे सारी योजना बनाई और अपने साथी गूजरमल जी को उस योजना से अवगत कराया। वे तो श्री जी की मानो प्रतिछाया ही थे। दोनो का एक विचार, एक सकल्प, एक ही ध्येय, एक ही पथ होने से चुपचाप घर से निकलकर राणीपुरा गाव के बाहर एक शून्य नाले मे वि स १९४४ माघ शुक्ला द्वितीया को ससारी वेश का परित्याग कर शुद्ध पवित्र श्रमण वेश धारण कर लिया और विधि सहित जीवनपर्यन्त के लिए सामायिक—चारित्र ग्रहण कर लिया।

दुकान खुलते ही व्यापार चालू :

वहा से ये दोनो वीर चलकर सुनेल गाव मे पहुचे। अकस्मात् मुनियो के दर्शन करके वहा की जनता हर्ष विभोर हो उपदेशामृत का पान कराने हेतु प्रार्थना करने लगी, दुकान खुलते ही व्यापार चालू हो जाय तो व्यापारी को कितनी हार्दिक खुशी होती है। उतनी ही खुशी श्री जी को हुई। उन्होने नि सकोच हो उपदेश देना प्रारभ कर दिया। बात ही बात मे साधिक सौ की परिषद् हो गई ओर प्रथम देशना मे अनेक प्रकार के त्याग प्रत्याख्यान की झडी लग गई।

इधर दोनो के घर से चले जाने की सूचना मिलते ही नाथूलाल जी व गूजरमल जी के भाई हरदेव जी ढूढते ढूढते वहा आ पहुचे। उन्होने देखा कि दोनो मुनि वेश मे बेठे हुए हैं ओर व्याख्यान चल रहा है तब वे दोनो भी व्याख्यान सुनने बैठ गये। दोनो को आये देख श्री जी ने ससार की असारता का ऐसा चित्रण किया कि दोनो की आखो से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगी। व्याख्यान समाप्ति के पश्चात् दोनो भाई पास आये और बोले— ये आपने क्या अनर्थ कर दिया, लोगो मे अपनी बदनामी हो रही है। अब भी कुछ नहीं बिगडा है। हमारी बात मानकर घर चलो। नाथूलाल जी की

बात सुनकर श्री जी ने कहा– अब हमने यह बाना पहनकर ससार का त्याग कर दिया है इसलिए प्राण रहते तो यह वेश उतर नहीं सकता। अब तो श्रेष्ठ यही है कि आप आज्ञा दे दो तो हम योग्य गुरु शरण मे रहकर जीवन को उन्नत करे। दीक्षा की आज्ञा मिले बिना आने के भाव नहीं हैं।

इतना निर्भीक एव स्पष्ट उत्तर श्रवण करके एक बार तो नाथूलाल जी की सारी आशा छूट गई, फिर भी अपने ममत्व को तोड नहीं पाये और वहा के सूबासाहब को जाकर सारी बात सुनाई। सूबा साहब ने भी अपनी सत्ता के बल से आप दोनो को समझाने की कोशिश की। इस पर श्री जी वहीं एक पाव पर कडी धूप मे ध्यानस्थ हो गये। यह देखकर तो सूबा साहब घबरा गये, मन ही मन सोचने लगे–कहीं क्रोधित होकर श्राप दे दिया तो अनर्थ हो जायेगा। उन्होने नाथूलाल जी को कहा–भाई ! यह हमारे वश का रोग नहीं। इन्हे यहा से प्रेम पूर्वक समझाकर ले जाओ। आखिर नाथूलाल जी हताश हो गये और आखो से आसू बहाते हुए कहने लगे– ध्यान खोलकर छाया मे विराजने की कृपा करे फिर प्रासुक आहार की दलाली कर के गोचरी कराई और अपने हाथ से आहार बहराकर पुन टोक गये और दोनो के परिवार वालो को सारी बात बताई।

इधर दोनो (भावमुनि) वहा से विहार करके आगे बढे। रास्ते मे उनको विशनलाल जी महाराज के दर्शन हुए और आप (स्वय दीक्षित मुनिद्वय) उनके साथ रहकर ज्ञानाभ्यास करते हुए माधोपुर पधारे। माधोपुर मे श्री जी का ननिहाल था। वहा आपके मामा के लडके ने सारी बात समझ कर टोक जाकर अपनी भुआ एव श्री जी की पत्नी (मान कवर बाई) को सारी बात बताकर उनसे श्री जी की दीक्षा हेतु आज्ञा प्राप्त की। आखिरकार बणेठा गाव मे सवत् १९४५ की माघ कृष्णा– ७ गुरुवार को विधिपूर्वक विशनलाल जी महाराज के मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण कर ली और बलदेव जी म सा के पास शुद्ध सयम मर्यादा के पालन की शर्त के साथ शिष्यत्व स्वीकार किया। जब गूजरमल जी को मुनि श्री श्रीलाल जी के नेश्राय मे घोषित करने लगे तो आपने जीवन पर्यन्त के लिए अपने नेश्राय मे शिष्य बनाने का परित्याग कर दिया। आखिर दोनो एक ही गुरु के शिष्य बने।

योग्य गुरु की शरण मे

अब दोनो साधक सयम साधना मे तन्मय होते हुए अपने गुरु बलदेव जी म के साथ टोक पधारे। वहा पारिवारिक जनो को दर्शन देकर चातुर्मासार्थ पाटन (झालावाड) पधार गये। दुर्भाग्य से उसी चातुर्मास मे गुरुदेव श्री बलदेव जी म का स्वर्गवास हो गया। गुरुदेव के स्वर्गवास के बाद गुरु भाइयो के स्वच्छन्द आचार–विचार को देखकर आपका मन खिन्न हो गया। चातुर्मास के पश्चात् मुनि श्री गूजरमल जी म के साथ स्वतत्र विहार किया और एक चातुर्मास रामपुरा करके वहा से सीधे कानोड पूज्य श्री चौथमल जी म सा की सेवा मे पधार गये एव अपनी चरण शरण मे लेने की प्रार्थना की।

वैराग्यावस्था से ही पूज्य श्री चौथमल जी म सा पर आपकी अटूट श्रद्धा थी और पूज्य श्री के दिल मे भी आपके प्रति कृपा भाव था। आखिर टोक समाचार देकर नाथूलाल जी को बुलाया गया और सारी परिस्थिति समझा कर आँज्ञा लेकर पुन विक्रम सवत् १९४७ मिगसर शुक्ला २ शनिवार को डूगला मे दीक्षा देकर मुनि श्री वृद्धिचन्द जी म सा की नेश्राय मे शिष्य बना दिये।

कल्पतरु के सान्निध्य से साधक शासक के रूप मे

कल्पतरु की छाया पाकर श्री जी पूर्ण आत्म शाति का अनुभव करने लगे। अल्पकाल मे ही पूज्य श्री चौथमल जी म सा एव आचार्य श्री उदयसागर जी म सा के आशीर्वाद को प्राप्त कर आपकी प्रतिभा चमक उठी। आपकी व्याख्यान छटा ने तो जनता के मन को ऐसा सम्मोहित कर दिया कि बडे–बडे सन्तो के उपस्थित होते हुए भी जनता के आग्रह एव आचार्य प्रवर के आदेश से आप को ही व्याख्यान देना पडता। आपके ओजस्वी प्रवचन को श्रवण करके श्रीमती मानकवर बाई के मन मे भी वैराग्य के अकुर प्रस्फुटित होने लगे और उसने भी अततोगत्वा दीक्षा ग्रहण कर ली। श्रीजी के गहन शास्त्रीय ज्ञान, शुद्ध चारित्राराधना एव व्याख्यान का प्रभाव देखकर सब के दिल मे इनके उज्ज्वल भविष्य की छाप अकित हो गई। वह दिन भी आ गया जब आचार्य श्री चौथमल जी म सा ने वि स १९५७ की कार्तिक सुदी १ को विशाल जनमेदिनी के समक्ष रतलाम मे हुक्म सघ का उत्तरदायित्व आप पर डाल दिया। इस दायित्व को सौंपने के ठीक आठ दिन बाद ही कार्तिक सुदी ९–१० को आ श्री चौथमल जी म सा स्वर्ग सिधार गये। उस समय आपकी वय सिर्फ ३१ वर्ष की ही थी।

आचार्य पद का उत्तरदायित्व–

आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद तो आपके अतिशय का प्रभाव दिनोदिन बढने लगा। मानो पचम आरे मे चतुर्थ आरा वर्त रहा हो। दीक्षा, जीवदया, तप–साधना आदि धर्मभावना के पोषक हर क्षेत्र मे आपका ध्यान था। हिन्दू मुसलमान राजा–महाराजा, राज्य कर्मचारी, सेठ–साहूकार, भील–कसाई आदि पर भी आपके उपदेशो की अमिट छाप पडी।

आचार्य श्री का जैन एव जैनेतर लोगो पर प्रभाव

उदयपुर के दीवान बलवन्तसिह जी कोठारी और हॉकिम गोविन्द सिह जी मेहता ने आपसे सम्यक्त्व ग्रहण किया। कोठारिया ठाकुर साहब, आमेट के ठाकुर साहब ने बलि प्रथा मे होने वाली हिसा का त्याग किया। डेह के कालूसिह जी ठाकुर साहब ने सम्यक्त्व ग्रहण करके प्रतिदिन छ सामायिक एव महीने के छ पौषध का नियम धारण किया। उदयपुर दरबार के न्यायिक सचिवलाला केशरीमल ने श्रावक व्रत धारण किया। कानोड रावजी ने अपने इलाके (क्षेत्र) मे मछली मारने का निषेध कराया। टोक के दरबार खान साहब ने शिकार का त्याग किया। रतलाम मे कदवासा ठाकुर साहब, पचेड ठाकुर साहब ने शिकार का त्याग किया। वहा दीवान जी और चीफ जज वृजमोहन जी

बात सुनकर श्री जी ने कहा– अब हमने यह बाना पहनकर शरीर का त्याग कर दिया है इसलिए प्राण रहते तो यह वेश उतर नहीं सकता। अब तो श्रेष्ठ यही है कि आप आज्ञा दे दो तो हम योग्य गुरु शरण मे रहकर जीवन को उन्नत करे। दीक्षा की आज्ञा मिले बिना आने के भाव नहीं हैं।

इतना निर्भीक एव स्पष्ट उत्तर श्रवण करके एक बार तो नाथूलाल जी की सारी आशा छूट गई, फिर भी अपने ममत्व को तोड नहीं पाये और वहा के सूबासाहब को जाकर सारी बात सुनाई। सूबा साहब ने भी अपनी सत्ता के बल से आप दोनो को समझाने की कोशिश की। इस पर श्री जी वहीं एक पाव पर कडी धूप मे ध्यानरथ हो गये। यह देखकर तो सूबा साहब घबरा गये, मन ही मन सोचने लगे–कहीं क्रोधित होकर श्राप दे दिया तो अनर्थ हो जायेगा। उन्होने नाथूलाल जी को कहा–भाई ! यह हमारे वश का रोग नहीं। इन्हे यहा से प्रेम पूर्वक समझाकर ले जाओ। आखिर नाथूलाल जी हताश हो गये और आखो से आसू बहाते हुए कहने लगे– ध्यान खोलकर छाया मे विराजने की कृपा करे फिर प्रासुक आहार की दलाली कर के गोचरी कराई ओर अपने हाथ से आहार बहराकर पुन टोक गये और दोनो के परिवार वालो को सारी बात बताई।

इधर दोनो (भावमुनि) वहा से विहार करके आगे बढे। रास्ते मे उनको विशनलाल जी महाराज के दर्शन हुए और आप (स्वय दीक्षित मुनिद्वय) उनके साथ रहकर ज्ञानाभ्यास करते हुए माधोपुर पधारे। माधोपुर मे श्री जी का ननिहाल था। वहा आपके मामा के लडके ने सारी बात समझ कर टोक जाकर अपनी भुआ एव श्री जी की पत्नी (मान कवर बाई) को सारी बात बताकर उनसे श्री जी की दीक्षा हेतु आज्ञा प्राप्त की। आखिरकार बणेठा गाव मे सवत् १९४५ की माघ कृष्णा– ७ गुरुवार को विधिपूर्वक विशनलाल जी महाराज के मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण कर ली और बलदेव जी म सा के पास शुद्ध सयम मर्यादा के पालन की शर्त के साथ शिष्यत्व स्वीकार किया। जब गूजरमल जी को मुनि श्री श्रीलाल जी के नेश्राय मे घोषित करने लगे तो आपने जीवन पर्यन्त के लिए अपने नेश्राय मे शिष्य बनाने का परित्याग कर दिया। आखिर दोनो एक ही गुरु के शिष्य बने।

योग्य गुरु की शरण मे ·

अब दोनो साधक सयम साधना मे तन्मय होते हुए अपने गुरु बलदेव जी म के साथ टोक पधारे। वहा पारिवारिक जनो को दर्शन देकर चातुर्मासार्थ पाटन (झालावाड) पधार गये। दुर्भाग्य से उसी चातुर्मास मे गुरुदेव श्री बलदेव जी म का स्वर्गवास हो गया। गुरुदेव के स्वर्गवास के बाद गुरु भाइयो के स्वच्छन्द आचार–विचार को देखकर आपका मन खिन्न हो गया। चातुर्मास के पश्चात् मुनि श्री गूजरमल जी म के साथ स्वतत्र विहार किया और एक चातुर्मास रामपुरा करके वहा से सीधे कानोड पूज्य श्री चौथमल जी म सा की सेवा मे पधार गये एव अपनी चरण शरण मे लेने की प्रार्थना की।

वैराग्यावस्था से ही पूज्य श्री चौथमल जी म सा पर आपकी अटूट श्रद्धा थी और पूज्य श्री के दिल मे भी आपके प्रति कृपा भाव था। आखिर टोक समाचार देकर नाथूलाल जी को बुलाया गया और सारी परिस्थिति समझा कर आज्ञा लेकर पुन विक्रम सवत् १९४७ मिगसर शुक्ला २ शनिवार को डूगला मे दीक्षा देकर मुनि श्री वृद्धिचन्द जी म सा की नेश्राय मे शिष्य बना दिये।

कल्पतरु के सान्निध्य से साधक शासक के रूप मे

कल्पतरु की छाया पाकर श्री जी पूर्ण आत्म शाति का अनुभव करने लगे। अल्पकाल मे ही पूज्य श्री चौथमल जी म सा एव आचार्य श्री उदयसागर जी म सा के आशीर्वाद को प्राप्त कर आपकी प्रतिभा चमक उठी। आपकी व्याख्यान छटा ने तो जनता के मन को ऐसा सम्मोहित कर दिया कि बडे–बडे सन्तो के उपस्थित होते हुए भी जनता के आग्रह एव आचार्य प्रवर के आदेश से आप को ही व्याख्यान देना पडता। आपके ओजस्वी प्रवचन को श्रवण करके श्रीमती मानकवर बाई के मन मे भी वैराग्य के अकुर प्रस्फुटित होने लगे और उसने भी अततोगत्वा दीक्षा ग्रहण कर ली। श्रीजी के गहन शास्त्रीय ज्ञान, शुद्ध चारित्राराधना एव व्याख्यान का प्रभाव देखकर सब के दिल मे इनके उज्ज्वल भविष्य की छाप अकित हो गई। वह दिन भी आ गया जब आचार्य श्री चौथमल जी म सा ने वि स १९५७ की कार्तिक सुदी १ को विशाल जनमेदिनी के समक्ष रतलाम मे हुक्म सघ का उत्तरदायित्व आप पर डाल दिया। इस दायित्व को सौंपने के ठीक आठ दिन बाद ही कार्तिक सुदी ९–१० को आ श्री चौथमल जी म सा स्वर्ग सिधार गये। उस समय आपकी वय सिर्फ ३१ वर्ष की ही थी।

आचार्य पद का उत्तरदायित्व–

आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने के बाद तो आपके अतिशय का प्रभाव दिनोदिन बढने लगा। मानो पचम आरे मे चतुर्थ आरा वर्त रहा हो। दीक्षा, जीवदया, तप–साधना आदि धर्मभावना के पोषक हर क्षेत्र मे आपका ध्यान था। हिन्दू मुसलमान राजा–महाराजा, राज्य कर्मचारी, सेठ–साहूकार, भील–कसाई आदि पर भी आपके उपदेशो की अमिट छाप पडी।

आचार्य श्री का जैन एव जैनेतर लोगो पर प्रभाव

उदयपुर के दीवान बलवन्तसिह जी कोठारी और हॉकिम गोविन्द सिह जी मेहता ने आपसे सम्यक्त्व ग्रहण किया। कोठारिया ठाकुर साहब, आमेट के ठाकुर साहब ने बलि प्रथा मे होने वाली हिंसा का त्याग किया। डेह के कालूसिह जी ठाकुर साहब ने सम्यक्त्व ग्रहण करके प्रतिदिन छ सामायिक एव महीने के छ पौषध का नियम धारण किया। उदयपुर दरबार के न्यायिक सचिवलाला केशरीमल ने श्रावक व्रत धारण किया। कानोड रावजी ने अपने इलाके (क्षेत्र) मे मछली मारने का निषेध कराया। टोक के दरबार खान साहब ने शिकार का त्याग किया। रतलाम मे कदवासा ठाकुर साहब, पचेड ठाकुर साहब ने शिकार का त्याग किया। वहा दीवान जी और चीफ जज वृजमोहन जी

और सुपरिडेन्टेण्ट ऑफ पुलिस तख्तसिह जी साहब मेहता ने सम्यक्त्व ग्रहण किया। महान् सेवा लाभ लिया। बडी सादडी के राज राणा दुलहसिह जी ने हिंसा का परित्याग किया। कोटा रावजी ने भी उपदेश श्रवण करके शिकार छोडा। मोरबी नरेश, लीमडी नरेश ने अत्याग्रह करके पूज्य श्री का गुजरात मे विचरण कराया और महान् सेवा का लाभ लिया। सादडी चातुर्मास मे आस–पास के (५२५) पाच सौ पच्चीस जागीरदारो ने सेवा का लाभ लिया और अपने–अपने राज्य मे हिंसा का निषेध कराया। गुजरात मे कश्मीर के दीवान अनन्तराज जी, एक्यूकेशनल इस्पेक्टर पोपट भाई ने महान् सेवा का लाभ उठाया। उदयपुर के महाराज कवर ने विनती करके चातुर्मास कराया। उदयपुर दरबार के यहा से रास मे बरात आई थी। तब पूज्य श्री के उपदेश से वहा मद्य मास का सेवन नहीं किया गया।

आचार्य श्री का मुस्लिम समाज व विदेशी व्यक्तियो पर प्रभाव ·

आचार्य प्रवर के प्रभाव से राजा, महाराजा एव राज्यकर्मचारी व्यसन मुक्त जीवन जीते हुए "अहिसा परमो धर्म" का यथाशक्य पालन करने मे जुटे। इसी प्रकार आचार्य देव के चरणो मे कई मुस्लिम एव विदेशी लोग भी आये तो उनके जीवन पर भी आपके उपदेशो का उतना ही प्रभाव पडा और वे भी आपके अनन्य भक्त बन गये।

भीलवाडा के डाक्टर हस्मत अलीजी ने जीव हिंसा का बिल्कुल त्याग कर दिया। टोक नवाब खान साहब ने शिकार खेलने का जीवन भर के लिए त्याग कर दिया। मुसलमान तेलियो ने चौमासे मे घाणी चलाना बद कर दिया। रतलाम के बोहरा समाज के बहुत से भाइयो के साथ हिदायतुल्ला साहब ने भी मास मद्य का त्याग किया। जार्ज स्टीवन मिश्रा– एक अग्रेज मेडम ने राजकोट मे पूज्य श्री के सत्सग से मुहपति (मुखवस्त्रिका) बाधकर सामायिक की और सवत्सरी का उपवास व प्रतिक्रमण किया। मिश्रा ने "हार्ट ऑफ जैनिज्म" नामक अपनी पुस्तक मे पूज्य श्री की खूब प्रशसा की। जोधपुर के आसद अल्ली साहब ने भी मास मदिरा का त्याग किया। एक मुसलमान की पत्नी का पूज्य श्री के वचनो से रोग नाश होते ही पूरे परिवार ने उपस्थित होकर मद्य मास का त्याग किया। उदयपुर मे एक अग्रेज टेलर साहब ने और पादरी टेवरड ने हिंसा का त्याग किया। बडी सादडी के बोहरा समाज के लोगो ने भी हिसा का त्याग कर दिया। इसी प्रकार बीकानेर की बगतावर आदि वेश्याओ ने भी अपने पाप कर्म का त्याग करके गृहस्थ जीवन व्यतीत करने का सकल्प धारण किया।

अभयदान :

आचार्य प्रवर के वचनो मे ऐसा जादू था कि पापी से पापी का भी जीवन परिवर्तित हो जाता था। आपने वल्लनगर की सीमा मे एक कसाई से अस्सी बकरो को अभयदान दिलाकर हिसा का त्याग कराया। जोधपुर चातुर्मास मे आपके उपदेशो से प्रभावित होकर दो सौ राजपूतो ने शिकार खेलने का त्याग किया। मगरे प्रान्त मे ऐहडे की हिंसा का त्याग हुआ। उदयपुर चातुर्मास के प्रवेश के समय १३१ बकरो को अभयदान मिला। महासती श्री राजकवर जी म सा के ४९ दिन के सथारे के

उपलक्ष मे २५०० बकरो, २० पाडो और एक सिह को अभयदान मिला।

आचार्य प्रवर के चातुर्मास एव धर्मसाधना

दीक्षा लेने के बाद वि स १९४६ का पाटन, स १९४७ का रामपुरा, स १९४८ का कानोड, स १९४९–१९५० का जावद, स १९५१ का निम्बाहेडा, स १९५२ का छोटी सादडी, स १९५३ का जावद, स १९५४ का उदयपुर, स १९५५, १९५६, १९५७ का रतलाम, स १९५८ का जोधपुर, स १९५९ का बीकानेर, स १९६० का उदयपुर, स १९६१ का टोक, स १९६२ का जोधपुर, स १९६३ का रतलाम, स १९६४ का अजमेर, स १९६५ का बीकानेर, स १९६६ का बडी सादडी, स १९६७ का ब्यावर, स १९६८ का राजकोट, स १९६९ का मोरबी, स १९७० का जोधपुर, स १९७१ का रतलाम, स १९७२ का उदयपुर, स १९७३ का बीकानेर स १९७४ का जयपुर, स १९७५ का उदयपुर, स १९७६ का जावरा चातुर्मास हुए।

उपरोक्त चातुर्मासो मे एव शेष काल मे जो परोपकार और त्याग तप की आराधना हुई, वह अपने आप मे अपूर्व थी। उदयपुर चातुर्मास मे सामायिक की पच्चीस रगी, मोडसिह जी ने एक साथ १५१ (एक सौ इक्कावन) सामायिक और गेहरीलाल जी व कन्हैयालाल जी ने १३१ (एक सौ इकतीस) सामायिक एक साथ करके अनुपम आदर्श उपस्थित किया। उस जमाने मे एक साथ १०८ अट्ठाइया भी अनुपम थी।

रतलाम चातुर्मास से विहार करते समय मेहताजी ने अपने समस्त सहयोगियो के साथ सरकारी बाग मे स्वागत किया। उस समय चातुर्मास मे ४६ (छियालीस) सत साथ थे। अजमेर कान्फ्रेन्स अधिवेशन पर सघ के अत्याग्रह से पधारे तो जैनियो के घर से गोचरी मे दोष लगने की सभावना समझकर त्याग कर दिया, जिसका भी जैन समाज पर भारी प्रभाव पडा। कपासन पधारने पर जीव दया फड की स्थापना हुई। गुजरात के बडे–बडे महारथी सतो का पूज्य श्री के प्रति आदर भाव रहा। जोधपुर मे बकराशाला (जो आज सिह पोल है) एव अजमेर मे पशु–शाला की स्थापना हुई। छोटी सादडी मे गोदावतजी, (जो पहले मूर्ति पूजक थे) के मकान मे पूज्य श्री के विराजने से चमत्कार हुआ और उनके हृदय मे आपके प्रति अटूट श्रद्धा जागृत हुई और सवा लाख रुपये का सहयोग करके "गोदावत गुरुकुल" की स्थापना की। बीकानेर मे जैन ट्रेनिग कॉलेज की स्थापना हुई।

पूज्य रतनचन्द जी म सा की सप्रदाय के पू शोभाचद जी म सा को अपने हाथ से आचार्य पद देना, थली प्रात मे विचरण और जीव दया मडल की स्थापना आदि जो महान् उपकार हुए वे भी आपके अनुपम त्याग वैराग्य का ही प्रभाव था।

शासन की सुदृढता एव भावी व्यवस्था .

आचार्य श्री जी स्वभाव से जितने विनम्र थे उतने ही सयम व अनुशासन मे कठोर थे। जो सत

अनुशासन भग करते उनके लिए कठोर प्रायश्चित देने मे भी नहीं हिचकते थे। शासन सुव्यवस्था हेतु आपने पूर्व समाचारी के साथ अपनी तरफ से २५ कलमे ओर चार गण एव गणी निर्धारित करके दृढता से व्यवस्था पालन करने का आदेश फरमाया। जिन सतो ने आदेश भग किया उनको सघ से निष्कासित कर दिया लेकिन उनके अमर्यादित समझौते को स्वीकार नहीं किया।

आपके शासनकाल मे ही कोटा सप्रदाय के मुनि श्री हरकचद जी म सा अपनी शिष्य मडली सहित आपके सघ मे शामिल हुए (देखे मूल प्रति) । इधर ज्ञानचद जी म सा के शिष्य रतनचन्द जी म सा भी अपनी शिष्यमडली सहित आपके साथ रहने लगे। महासती श्री मोता जी म दीक्षा लेकर आपके शासन मे समर्पित हुई, जिनका स्वतन्त्र सप्रदाय बना।

इस प्रकार आचार्य देव के नेतृत्व मे अपूर्व धर्मोद्योत के साथ शासन का अभ्युदय जारी रहा। कुछ काल पश्चात् आचार्य श्री की शारीरिक स्थिति मे थोडी रुग्णता ने जोर जमा दिया जिसको देखकर शासन सुव्यवस्था को सम्मुख रखते हुए निस्पृह भाव से वि स १९७५ की चैत्र बदी ९ को विशाल चतुर्विध सघ के समक्ष पडित रत्न मुनि श्री जवाहरलाल जी म सा (थादला वालो) को अपना भावी उत्तराधिकारी घोषित करके युवाचार्य पदवी से विभूषित किया और श्री सघ को पूर्णरुपेण जवाहरलाल जी म के प्रति समर्पण भाव से चलने का आदेश दिया। युवाचार्य श्री ने आपकी आज्ञा को शिरोधार्य कर स्वीकृति पत्र आचार्य श्री के चरणो मे समर्पित किया। साथ ही बीकानेर आदि प्रमुख श्रावक सघो ने भी सघ एव सघपति के प्रति पूर्ण समर्पण सूचक वैधानिक पत्र निर्धारित करके आप श्री के चरणो मे प्रेषित किया।

आचार्य देव का आकस्मिक अवसान -

अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति के लगभग दो वर्ष बाद आप विचरण करते हुए जैतारण पधारे। वि स १९७७ आषाढ सुदी ३ को अचानक जैतारण मे आपका स्वर्गवास हो गया। तब सबको पूज्यश्री की दूरदर्शिता का भान हुआ कि आपने सघ का भार पू श्री जवाहरलाल जी म सा को इतना जल्दी क्यो सौंपा। जिसने भी सुना आश्चर्यचकित होकर आसू बहाए बिना न रहा।

विशेष टिप्पण :

(१)

सवत् १९५१ मे पूज्य श्री श्रीलाल जी म छोटीसादडी विराज रहे थे। जीवोत्पत्ति के कारण सेठ नाथूलाल जी गोदावत की हवेली के पास वाले मकान की याचना की। सेठजी आचार्य श्री के सहज स्नेह भावना से प्रभावित हो कर समय समय पर कट्टर मदिरमार्गी होते हुए भी सेवा मे आते रहते। एक दिन सेठ जी ने विचार किया कि बम्बई मे अफीम की १५० पेटी भेजी हुई है। बम्बई जाकर उनको बेच दू। वे जाने की तैयारी करने लगे। पूज्य श्री ने यह देखकर फरमाया क्या बात है ? तब सेठ जी ने सारी बात बताई। तब पूज्य श्री ने फरमाया कि सेठजी ! अभी चातुर्मास मे धर्म ध्यान करिये। सेठजी ने बात मानकर कार्यक्रम रद्द कर दिया। कुछ दिन बाद देखा तो भावो मे एकदम तेजी आ गई। दीपावली के बाद पुन सेठजी का विचार बना। पूज्य श्री से मागलिक लेने पहुचे तो पूज्य श्री ने फरमाया सेठ जी ! अब तो हमारे भी विहार के दिन आ गये इसलिये विहार के बाद ही अवसर देख लेना। हम जब तक यहा पर हैं तब तक तो धर्मध्यान का लाभ लो। पूज्य श्री की बात शिरोधार्य कर कार्यक्रम बदल दिया। आखिर पूज्य श्री को विहार कराकर सेठ जी बम्बई पधारे और सौदा तय किया तो ७५ हजार की अफीम के साठ लाख रुपये आये। उन रुपयो से सोने चादी के पाट लेकर जिस मकान मे पूज्य श्री विराजे थे उसी मकान के गुप्त भडार मे गाड दिये।

सेठ श्री नाथूलाल जी जावद मे विराजित आचार्य श्री चौथमल जी म सा की सेवा मे पहुचे। पूछा– मेरे भगवान कहा हैं पूज्य श्रीलाल जी म सा ? तब सत उस स्थान पर ले गये। अत्यत श्रद्धा भक्ति पूर्वक नमन करने लगे तब वहा खडे चौधरी जी ने कहा– सेठजी ! यदि सच्ची श्रद्धा भक्ति हो तो यह मुहपति बाधकर इनसे गुरुमत्र लो। तत्क्षण सेठ जी ने सम्यक्त्व ग्रहण कर लिया। पूज्य श्री ने गुप्तदान की महत्ता बतलाई जिसके फलस्वरूप आपके यहा कोई छाछ लेने आता तो उसके बर्तन मे चादी के सिक्के डाल देते। गरीब बहिनो को गेहू पीसने देते तो उसमे अशर्फियॉ डाल देते। वे लोग ईमानदारी से पुन ला कर देते तो कहते ये तुम्हारे भाग्य मे लिखी है, तुम ही रखो।

(२)

भीलवाडा निवासी सेठ श्री ज्ञानमल जी नागौरी की धर्मपत्नी का वि सवत् १९७४ मे देहावसान हो गया। मृत्युभोज की इजाजत हेतु पचो को एकत्रित किया। उस समय भीलवाडा मे माहेश्वरी समाज के तीन सौ घर और ओसवाल समाज के सिर्फ २३ ही घर थे। तब माहेश्वरी समाज के अग्रगण्य काशीलाल जी ने बात उठाई कि मृत्यु भोज की स्वीकृति तब ही मिलेगी कि जव आवेदन पत्र पर 'जय चार भुजा जी' के अलावा अन्य किसी इष्ट का नाम न हो क्योकि यह माहेश्वरियो का गाव हे। तब ज्ञानमल जी साहब ने कहा– हम तो जैन है इसलिए हमारे इष्ट ऋषभदेव जी का नाम लिखेगे। इस पर काशीलाल जी रूष्ट हो गये और बोलने लगे–देखे, यह मृत्यु भोज केसे होता हे ?

यहा हर्गिज नहीं होने देगे। बात उदयपुर दरबार मे पहुची। उदयपुर से कालीचरण जी व अश्विनकुमार जी समझाने हेतु आए। दोनो तरफ के प्रमुखो को खूव समझाया किन्तु नहीं समझे। सयोगत पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा का भीलवाडा पदार्पण हुआ। सारी वार्ता सुनी। एक दिन जगल से पधारते समय काशीलाल जी पूज्य श्री को मिले। आचार्य श्री ने फरमाया–भाई ! आप समझदार हैं, व्यर्थ के झगडे मे मत पडो। इस प्रकार हठाग्रह करने से बहुत बडा नुकसान हो सकता है– समाज मे अशाति फेलाना अच्छा नहीं है। फिर भी वे नहीं माने।

पूज्य श्री श्रीलाल जी म का वि स १९७५ का चातुर्मास उदयपुर था। सेठ श्री ज्ञानमल जी सेवा मे पहुचे। व्याख्यान मे उदयपुर दीवान कोठारी बलवतसिह जी सा भी पधारे हुए थे। आचार्य श्री ने भीलवाडे की परिस्थिति बताई और कहा कि आज तो वे ऋषभदेव जी के नाम का विरोध करते हे। कल वे यह कह देगे कि जैनी लोग मुह पर मुखवस्त्रिका भी नहीं बाध सकते। इसलिए दरबार को मेरी तरफ से सकेत करना चाहिये कि इसका न्याय करो। इस बात को श्रवण करके कोठारी साहव ने सारी बात दरबार के सामने प्रस्तुत की। तब दरबार ने दोनो पक्ष को समोर बाग मे बुलाकर बात सुनी और जाहिर हुक्म फरमाया– कोई फालतू का झगडा न करे। सब अपने इष्ट का नाम लिखे। अब से यदि किसी ने झगडे किये तो डडे पडेगे, सभल के रहना। बाद मे ज्ञानमल जी साहब से मृत्युभोज की तिथि आसोज सुदी ११ की जानकारी लेकर भीलवाडा के हाकिम सा को सारी व्यवस्था का आदेश लिखित रूप से भेज दिया।

मृत्यु भोज के दिन भारी तादाद मे पुलिस की व्यवस्था हो गई। जिस समय जीमने का न्यौता देने जा रहे थे तो अचानक बडे मदिर के पास लगभग दो सौ माहेश्वरी लठ्ठ लेकर उपद्रव करने लगे। इतने मे पुलिस के सैंकडो जवान पहुच गये और बुरी तरह डडो से पीटकर कतिपय को भगाया और कतिपय व्यक्तियो को जेल मे डाल दिया। तब से ओसवाल समाज का प्रभुत्व जम गया। आज तो ओसवाल समाज भीलवाडा मे विस्तृत रूप से नजर आ रहा है।

(३)

।। श्री परमेश्वर जी।।

श्री श्री श्री श्री श्री १००८ श्री श्री बावीस समदाय का पुजी महाराज महा भागवान सत्ताईस गुणधारी विशुद्ध ब्रह्मचारी पच महाव्रतधारी, पाच सुमति सुमता तीन गुप्ति गुप्ता अनेक गुणा करी विराजमान जिणविण ग्राम नगर पुर पाटण मे भव जीवा ने तारता 'सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरई' जणा पुरुषा ने म्हारी भाव वदणा मालूम होय ने सुख, शाता बचाइजो आप धन्य हो आपरी बलिहारी आपरी अविनय आशातना हुई होवे तो माफ करावसी। मारी एक सब सता सु अर्ज है सो आपने अर्जी पर ध्यान देणो चाईजे आप पूज्य है मै हुक्म मे हू। आप पुज तारण वीरधु हू आप जे नाय करसो नाय पर चलणो नाय पर रहणो आपरो धर्म है सत से साध जेह सत से सुख सत से सुरग सत

से मोक्ष लहे सत भगवान है सत रो ही।

मे पुज महाराज श्री श्री श्री श्री श्री १००८ श्री श्री तपसी जी महाराज हुक्मीचद जी म की सम्प्रदाय का सुदी श्रीलाल माठा पापी कुबुद्धी कुपातर हू सो आप मा पर सुदृष्टि करने न्याय प्रमाणे मने सवत् १९४४ के साल मे स्वमेव साधपणो लीनो ने १९४५ के साल स्वामी जी म श्री श्री किशनलाल जी म के पास गाव बणेठा मे छ जीवनी सुणाय ने सामल करियो। स १९४७ का साल मे पुण्य महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री उदयचद जी महाराज की हैयाती मे श्री श्री श्री श्री श्री १००८ श्री चौथमल जी म करपा करने मारो सभोग करा मने सामल करी मा पर परम उपगार करो सो हु लिख सकु नहीं। स १९५४ महा सुदी १० के दिन बडा पुज महाराज देवलोग हुवा श्री श्री श्री श्री १००८ श्री श्री चौतमल जी महाराज ने रतलाम शहर मे आचारज पद पर विराजमान हुवा पछ समत १९५७ के साल कार्तिक मास मे वेदना हुई जद मे रात मे माराज की नाडी देखी जद हाथ मे नहीं आई जद भाई रीखबदास जी श्री श्रीमाल ने कया के कोई गाम मे नाडी वेद है जद भाई जाइने सेठ अमरचद जी पीतला, रामा जी मुणत, तेजपाल जी सचेती, रूपलाल जी अगरवाल, इन्द्रमल जी कावडिया और भी भाया मिलकर रात ही आया नाडी देखी, हाथ नहीं आई जद अमर चद जी अरज करी महाराज आपतो आपकी हुशियारी करली न पाछे माके काई आधार जद महाराज फरमायो के थाके श्रीलाल जी मालिक हमारे पाछे पदवी इणने दीजो यो लायक दीसे है जद सहु सुण के बोहत खुशी हुआ। अच्छो हुक्म प्रमाण माने मजूर छे पछे कार्तिक सुदी ८ की रात देवलोक हुवा। श्री सघ पेली पछेवडी ओढाई पछ बेकुण्ठी उठाइ पछे सकल सघ आचारज पद मारा पर धारण कर सेवा भक्ति खूब करवा लागा। पछे स १९६० की साल मे रतलाम सामी जी जवाहरलाल म बडा था सो तो महाभाग्यवान है परन्तु नन्दलाल जी हीरालाल जी देवीलाल जी बगेरा ठाणा ११ का सभोग सवत् १९५४ की साल मे पुज उदयचद जी जुदा कीदो जद जगा मे से निकल कर्मचन्द भोजराज की जगा मे गया। खासी सामल आवा की करी पर सामल न लीदा। दूसरे पाट सू जुदा था सो मैंने भेलप सु सामल करा मेरे कु बहुत उलट पुलट समझाया पर मै कोल करार कीधा जब तक। ताकी चौथा व्रत को दोख समधी बात महसूस।।

(देखे पृष्ठ ७०० से ७०१ मूल)

(४)

पूज्य श्रीलाल जी म से स्वय के त्याग की हस्तलिखित नोध—

खोपरा का त्याग—वधता परिठावणिया की बात न्यारी, वोहरवे की वात न्यारी। काजुकुलिया, खुरमाणी का त्याग— परणवणा का भी त्याग भूल चूक भेलसभेल की वात न्यारी। पाच पकवान मीठा सुकडी का त्याग चुरमो कोद को चूरमो गोल को कलाकद कोई भी कोरो गुल को वडा देवे तो परठावणिया की बात न्यारी जण मे काला गुल का त्याग ओखद पारणा की वात न्यारी। तीली का

दरव का त्याग तेल की वीगय का त्याग तरकारी की बात न्यारी अजाण भूल चूक भेलसभेल की वात न्यारी, कोला काचरी तली फली का त्याग, जामफल जमीकद का त्याग, भेल सभेल की वात न्यारी दूजा द्रव्य के भेले की बात न्यारी ४५ वर्ष की उमरताई १ बोल नवो सीखणो काती सुद १० को उपवासी शक्ति सह करणो ६६ का साल ताई साल का १२ तेला करणा नेसराय मे चेला करवा का त्याग विहार को मुहरत देखण का त्याग, सस्कृत भणवा का त्याग पचसधि का आगार। आगलो कया विना सजम को आदेश देवा का त्याग १ थोकडो नवो रोज करणो २ सवेया १ तवन, १ श्लोक रोज गणवो। ५०० गाथा की सज्झाय रोज करणी प्रायश्चित देई ने छोटा बडा राखणो नहीं रस्ते चलतो बात करणी नहीं करणी आवे तो १ आयबिल को डड लेणो। एक दिन मे २१ द्रव उपरात त्याग सुखे समाधे व्यावच्च करावा का त्याग, पाचो विगय एक दिन मे लगावा का त्याग– लेपालेप की बात न्यारी।

पूज्य श्री श्रीलाल जी म.सा ने जिन संतो से सबध–विच्छेद किया उन सतो की नामावली

१ श्री मन्नालाल जी म सा, २ कविवर श्री हीरालाल जी म सा, ३ श्री नदलाल जी म सा, ४ श्री देवीलाल जी म सा, ५ श्री बालचद जी म सा, ६ श्री भीमराज जी म सा, ७ श्री खूबचद जी म सा, ८ श्री जैन दिवाकर चौथमल जी म सा ९ श्री हजारी मल जी म सा, १० श्री शकरलाल जी म सा ११, श्री कस्तूर चद जी म सा, १२ श्री मोतीलाल जी म सा, १३ श्री केसरीमल जी म सा, १४ श्री हरखचद जी म सा, १५ श्री राधाकिशन जी म सा, १६ श्री मिश्रीलाल जी म सा, १७ श्री हजारीमल जी म सा, १८ श्री सुखलाल जी म सा, १९ श्री नाथूलाल जी म सा, २० श्री मन्नालाल जी म सा, २१ श्री प्यारचद जी म सा, २२ श्री मयाचन्द जी म सा, २३ श्री गुलाबचद जी म सा, २४ श्री सहस्रमल जी म सा, २५ श्री छोटेलाल जी म सा, २६ श्री कजोडीमल जी म सा

आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. :

आ जवाहर का जन्म उसी पवित्र मालव भूमि मे हुआ था जिसके लिए कहावत है

डग डग रोटी पग पग नीर।
मालव धरती गहन गंभीर।।

उस शस्य श्यामला मालव भू की झाबुआ रियासत के चारो तरफ पहाडियो से घिरे हुए, भील जाति के छोटे–छोटे गावो से सम्बद्ध थादला नामक कस्बे मे माता श्री नाथीबाई एव पिता श्री जीवराज जी कवाड के कुल मे वि स १९३२ की कार्तिक सुदी चौथ को आपका जन्म हुआ था।

नवजात बालक का भव्य ललाट, सुनहरा रग, सुदर देह यष्टि आदि सुलक्षणो को देखकर जवाहर नाम रख दिया। माता–पिता ही क्या, सारा परिवार ऐसे जवाहर को पाकर अपने आपको सौभाग्यशाली समझने लगा। माता तो अपने लाडले को निहार–निहार कर अनेक प्रकार की कल्पनाओ के महल चुनती ही रहती। लेकिन भाग्य को कौन जान सका है। बालक जवाहर दो वर्ष का ही नहीं हुआ कि अकस्मात् माता नाथी बाई काल–कवलित हो गयी। अब तो केवल पिता के साये मे बालक का लालन–पालन होने लगा लेकिन चार साल की वय मे आते ही पिता श्री का साया भी सिर से उठ गया। अब बालक जवाहर अपने मामा मूलचन्दजी धोका के यहॉ रहने लगा। व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त करके ग्यारह वर्ष की लघुवय मे ही आपने अपनी प्रतिभा का ऐसा परिचय दिया कि बडे बुजुर्ग आपकी प्रशसा करते हुए नहीं अघाते। मामीजी तो इनके लिए बिल्कुल निश्चित सी रहने लगी।

इतने मे ही अचानक मामाजी का भी देहावसान हो जाने से उसका भी सारा उत्तरदायित्व छोटी सी वय मे आप पर आ पडा। एक दिन किसी कार्यवश लीमडी–पचमहल जाने का प्रसग वन गया। वहॉ हुक्म गच्छ के मुनि पुगव श्री मगनमल जी म, घासीराम जी म सा और मोतीलाल जी म सा विराजमान थे। मुनि पुगव के दर्शन कर, उपदेश श्रवण किया तो आपकी उर्वरा मनोभूमिका मे वैराग्य का बीज अकुरित हो उठा। घर पर आये तो आपकी हर प्रवृत्ति मे उदासीनता देखकर आपके वडे पिताजी धनराज जी को कुछ शका हो गयी और वे जवाहरलाल पर कडी निगरानी रखने लगे।

इधर आपके मन मे सयम पथ पर आरूढ होने की तीव्र भावना बन गई लेकिन अपने मामा के उपकार और उनके छोटे तीन साल के लडके का स्नेह और अपने कर्त्तव्य की चितन धारा ने उनके मस्तिष्क मे द्वन्द्व पैदा कर दिया। आप किकर्तव्य विमूढ होकर चितन करने लगे। इतने मे उनकी अन्तरात्मा बोल उठी– हे मुमुक्षु ! तू किस उलझन मे उलझकर गमगीन हो रहा है क्या यह अमूल्य अवसर बार–बार हाथ मे आने वाला है। किसके सरक्षण का उत्तरदायित्व वहन करने के झूठे अहं मे बेभान हो रहा है। सब अपनी–अपनी पुण्यवानी साथ मे लेकर आते हैं। तू स्वय अपने जीवन का ही अवलोकन कर और ऐसे अमूल्य अवसर को हाथ से मत जाने दे।

बस, फिर क्या था– आपकी अन्तश्चेतना जागृत हो उठी। आत्म समाधान होते ही चुपचाप एक दिन बडे पिताजी के लडके उदयराज जी को साथ लेकर कार्यवशात् दाहोद पहुच गये और वहॉ से सीधे लीमडी खिसक गये। जब बडे पिताजी को मालूम पडा तो वे भी लीमडी पहुचे। अनेक तरह से समझाया डराया फिर भी जब किसी प्रकार आप अपने सकल्प से विचलित नहीं हुए तो दीक्षा की अनुमति प्रदान करनी पडी। वि स १९४८ की मिगसर सुदी २ को लीमडी मे ही धूमधाम से दीक्षा सपन्न हुई। नवदीक्षित जवाहर मुनि ने मुनि श्री मगनलाल जी म (मानजी) का शिष्यत्व स्वीकार किया।

गुरु वियोग का वज्रपात और चित्त की विक्षिप्तता .

अब मुनि जवाहर गुरु सान्निध्य मे मातृस्नेह एव पितृवत्सलता से भी वढकर स्नेहामृत का पान करते हुए प्रमुदित भाव से अध्ययनरत हो गये। डेढ माह के अल्पकाल मे ही आपकी प्रतिभा से गुरुदेव पूर्ण सन्तुष्ट होते हुए आपके उज्ज्वल भविष्य की कल्पना से हर्ष विभोर हो उठे। लेकिन अकस्मात् विकराल काल ने उसमे जुदाई डाल दी। गुरुदेव का अचानक देहावसान हो गया। गुरुदेव के वियोग से तो आपका मस्तिष्क ही विक्षिप्त हो गया। वार–वार गुरुदेव की याद करके ढूढने निकल पडते। तब बडी मुश्किल से मुनि श्री मोतीलाल जी म आपको सभालते। कई वार उनको भी धक्का देकर भाग जाते। एक बार भागते–भागते आपके हाथ से रजोहरण छूट गया तो आप वहीं रुक गये, एक कदम भी आगे नहीं बढाया। यह उपाय मिलते ही मोतीलाल जी म जब भी आप भागने की कोशिश करते तो रजोहरण पकडकर रख लेते। इस प्रकार लगातार छ माह तक मोतीलाल जी म सा ने मुनि जवाहर को सभालने मे कोई कसर नहीं रखी। एक दिन विशेषज्ञ डाक्टर से परामर्श करके उपचारार्थ सिर के पिछले भाग मे प्लास्टर बाधने का निश्चय किया और कैची लेकर उस (प्लास्टर बाधने की) जगह के केशो को काटने का विचार चल ही रहा था कि एकदम आपका ध्यान उधर गया। आपने देखते–देखते अपने हाथ से उन केशो का लुचन कर दिया। इस सयम सजगता से सबको बहुत आश्चर्य हुआ। आखिर प्लास्टर बाधने से उनके मस्तिष्क की नसो से लगभग तीन सेर पानी निकला, तब कहीं विक्षिप्तता दूर हुई।

पुन साधना–पथ पर सजग ·

स्वास्थ्य ठीक होने के बाद वि स १९४९ के धार चातुर्मास मे आपने अनेक शास्त्रो का अध्ययन करने के साथ ही थोकडे आदि का अच्छा अभ्यास कर लिया। आपने अनेक काव्य भी रचे। चातुर्मास पश्चात् रतलाम मे विराजित आचार्य देव उदयसागर जी म सा के दर्शन किये और वहॉ से जावद विराजित पू चौथमल जी म सा के दर्शन किये। दोनो महापुरुषो के दर्शन करके मुनि जवाहर को तो परमानद की अनुभूति हुई लेकिन उससे भी ज्यादा सुखानुभूति आपके उज्ज्वल भविष्य को देखकर उन दोनो महापुरुषो को हुई। आपका अधिकाधिक विकास हो इस हेतु आपको रामपुरा चातुर्मास करने का निर्देश दिया जिसको शिरोधार्य कर आप रामपुरा पधारे और सुश्रावक केशरीमल जी साहब के सहयोग

से अनुपम ज्ञान वृद्धि की। उसके बाद स १९५१ का चातुर्मास जावरा किया। १९५२ का चातुर्मास अपनी जन्म भूमि थादला मे किया तब तक तो आप समाज मे अच्छे प्रवचनकार के रूप मे प्रसिद्धि पा चुके थे जिसको देखकर थादला की जनता हर्ष–विभोर हो उठी। इसी विकसित प्रतिभा का अवलोकन करके मात्र २५ वर्ष की वय और आठ वर्ष की दीक्षा पर्याय मे ही आचार्य श्री चौथमल जी म सा. ने आपको गणी पद से विभूषित कर दिया था। कारणवशात् वि सवत् १९५५ व १९५६ का चातुर्मास खाचरौद और वि स १९५७ का चातुर्मास महिदपुर करके १९५८ का चातुर्मास उदयपुर किया। इसी वर्ष पडित रत्न श्री घासीलाल जी म सा की दीक्षा जसवन्तगढ–तरावली मे सम्पन्न हुई।

प्रत्युत्तर दीपिका

वि स १९५९ का चातुर्मास जोधपुर था। उस समय तेरापन्थ सप्रदाय के आचार्य श्री डालचन्द जी का चातुर्मास भी जोधपुर था। उनकी दया–दान विरोधी धारणाओ को सुनकर आपने कुछ प्रश्न पूछवाये जिसके उत्तर मे उन्होने अपनी मनगढन्त धारणाओ को डालकर "प्रश्नोत्तर समीक्षा" नामक एक पुस्तक प्रकाशित कर दी। जिसको पढकर आपने केवल १३ दिनो मे एक "प्रत्युत्तर–दीपिका" के रूप मै सचोट पुस्तिका प्रदान की। उसके बाद तो यह सिलसिला चालू ही रहा। वि स १९६० मे जैतारण मे तेरापथ के माने हुए सन्त फौजीलाल जी (फौजमल जी म सा) से चर्चा की और ब्यावर चातुर्मास किया। फिर वि स १९६१ का चातुर्मास बीकानेर व स १९६२ का चातुर्मास उदयपुर किया। उसी चातुर्मास की समाप्ति पर मिगसर बदी १ को पूज्य गणेशीलाल जी म सा की दीक्षा सपन्न हुई। दीक्षा मे बडे–बडे राज्याधिकारी एव शिक्षित लोग विशेष रूप से सम्मिलित थे। इस दिन करीब सित्तर गावो मे बलि प्रथा समाप्त हुई।

महाराष्ट्र मे विचरण :

आपके प्रवचनो का इतना प्रभाव पडने लगा कि कई पढे लिखे युवक आपके पास दीक्षित होने को तत्पर होने लगे। इस कारण समाज मे कई तरह की प्रतिक्रियाएँ होने लगी। अपने प्रतिभावान् शिष्यो के उच्च शिक्षण की प्रतिकूलता देखकर आपने महाराष्ट्र की ओर विहार कर दिया। महाराष्ट्र मे आपने अपने शिष्यो को उच्चतम अध्ययन कराया। आपके उपदेशो से महाराष्ट्र मे एक नई–चेतना जागृत हो गई। जादू, टोना, मत्र, ताबीज आदि की गलत धारणाएँ श्रावको के मन से निकलने लगी। सुदेव, सुगुरु एव सुधर्म पर श्रद्धा जमने लगी। इस प्रकार आपने महाराष्ट्र की आखिरी सीमा सतारा कराड तक विचरण कर धर्म के वास्तविक स्वरूप से जनता को अवगत कराया।

पद का प्रलोभन :

वि स १९७३ मे चातुर्मासार्थ घोड नदी मे आप विराजमान थे। उस समय आचार्य श्री श्रीलाल जी म सा ने सघीय सुव्यवस्था हेतु आचार्य श्री चोथमल जी म की तरह गण स्थापित करके नई व्यवस्था की लेकिन उसमे से बडे जवाहिरलाल जी म के एक ग्रुप को स्वच्छदता के कारण सघ से

पृथक कर दिया था। अपने ग्रुप की शक्ति को बढाने हेतु उन्होने आपको (मुनि श्री जवाहर को) आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करना चाहा और कुछ विश्वस्त व्यक्तियो के साथ समाचार भेजे लेकिन आपने सारी परिस्थिति को समझकर साफ इन्कार कर दिया हालाकि आप उसी पक्ष के सगठन मे थे।

आपके इस प्रकार निषेध कर देने पर आखिर उन्होने जम्मू की तरफ विचरण करते हुए पूज्य मन्नालाल जी म को अनुनय विनय कर अपना अलग आचार्य बनाया।

हुक्म संघ के युवाचार्य :

इधर उदयपुर (राज) मे विराजित पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा ने अपने स्वास्थ्य को देखकर श्री सघ की भावी व्यवस्था का चिन्तन करके सघ के समक्ष उत्तराधिकारी के रूप मे जवाहरलालजी म सा के नाम की घोषणा कर दी। इस घोषणा को श्रवण करके एक शिष्ट मडल आचार्य श्री के भावो को लेकर हीवडा पहुँचा और सारी बात समझाकर पूज्य मोतीलाल जी म सा को आचार्य श्री का आदेश बता दिया कि युवाचार्य–पदवी की रस्म आपके कर कमलो द्वारा यहीं सम्पन्न कर दे तब आपने (मुनि जवाहर ने) कहा–आचार्य देव की मुझ पर महती कृपा है। लेकिन में लम्बे समय से दूर विचरण कर रहा हूँ। सप्रदाय की गतिविधि का भी अभी मुझे पूरा ध्यान नहीं इसलिए में एक बार आचार्य श्री की सेवा मे पहुँचकर ही कुछ निर्णय करूगा। ऐसा कहकर उसी समय आपने विहार कर दिया और चैत्र बदी मे रतलाम पधार गये। इधर आचार्य श्री विशाल सन्त सती परिवार के साथ रतलाम पहले ही पधार चुके थे। सारे सघ मे अपूर्व हर्ष का वातावरण छाया हुआ था। आपके (मुनि श्री जवाहरलाल जी म सा के) रतलाम पधारने की खबर मिलते ही स्वय आचार्य श्री भी कुछ दूर सामने पधारे। यह दृश्य देख लोग कहने लगे कि मानो सूर्यचन्द्र एक साथ मिल रहे हो–ऐसा प्रतीत हो रहा है। आखिर सारी बातो पर चिन्तन–मनन करके वि स १९७५ की चैत्र बदी ९ बुधवार तदनुसार २९ मार्च १९१९ को आचार्य देव ने सविधि अपने हाथो से विशाल–जनमेदिनी के समक्ष युवाचार्य की प्रतीक रूप चादर ओढाई और सघ को उनकी आज्ञा मे चलने का आदेश दिया। साथ ही युवाचार्य श्री ने भी जब अपना लिखित स्वीकृति पत्र आचार्य देव को समर्पित किया तब वैसे ही चतुर्विध सघ ने अपने भावी आचार्य को वदना करके अपना अनुमोदन व्यक्त किया।

आचार्य–पदोत्सव :

इस पुनीत कार्य को सपन्न कर आचार्य श्री परम शाति का अनुभव करने लगे। साथ ही युवाचार्य को एकदम भार महसूस न हो इस उद्देश्य से सारी देख–रेख वे स्वय भी कर रहे थे। उनकी कोशिश यही थी कि सघ मे सगठन व एकता बनी रहे। आप व युवाचार्य श्री जावरा व उदयपुर का वि स १९७६ का चातुर्मास समाप्त होते ही भीलवाडा ब्यावर होकर लोगो के आग्रह से अजमेर पधारे क्योकि वहा पर सघ निष्कासित प्रमुख सत विराजमान थे। आचार्य श्री व युवाचार्य श्री दोनो ने एकता के लिए भरसक प्रयत्न किये लेकिन प्रयत्न सफल नहीं हुए आखिर युवाचार्य श्री को बीकानेर के

चातुर्मास का आदेश देकर विहार कराया और आप ब्यावर चातुर्मास को लक्ष मे रखकर मारवाड के क्षेत्रो को पावन करते हुए जैतारण पधारे। अचानक ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा के दिन व्याख्यान देते देते ही ऐसा भयकर उपसर्ग आया कि नेत्र ज्योति चली गई और आषाढ बदी ३ को आलोचना सथारा सलेखना सहित मात्र (५१) इकावन वर्ष की वय मे ही आ श्री श्रीलाल जी म सा का स्वर्गवास हो गया। उस समय आप भीनासर विराजमान थे। यह समाचार सुनते ही आपने अट्ठाई तप के प्रत्याख्यान कर लिए। चतुर्विध सघ ने युवाचार्य श्री को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। श्रावक सघ ने सघ और सघपति के प्रति पूर्ण समर्पण भाव व्यक्त करने वाले कुछ नियमो का निर्धारण करके सघ को सुरक्षित रखने का दृढ सकल्प किया।

जवाहर का शासन–काल :

आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होते ही सारे हुक्म सघ मे ही नहीं अपितु सारे राष्ट्र मे एक नई क्राति का सूत्रपात हो गया। सबसे पहले तो आपने जन–मानस को गुमराह कर रही मिथ्या धारणाओ जैसे–अल्पारम्भ महारम्भ, मील के वस्त्र, चर्बी, 'दया–दान, समयक्त्वी के मनुष्यायु बध का निषेध, फूल माला मे महापाप व मोतियो की माला मे कम पाप, मोल की वस्तु मे अल्प पाप, हाथ से करने मे ज्यादा पाप–साथ ही जादू, मत्र, टोना ताबीज जैसी मिथ्या धारणाओ पर सचोट प्रहार किया। फिर राष्ट्र धर्म की रक्षा हेतु ऐसे प्रभावशाली आदोलन मे भाग लेने वाले बडे–बडे राष्ट्रीय नेता– मदन मोहन मालवीय, बाल गगाधर तिलक, कस्तूर बा, विट्ठल भाई पटेल, महात्मा गाधी, पडित जवाहरलाल नेहरू, विनोबा भावे, सेनापति वापट जमनालाल बजाज, सरदार वल्लभ भाई पटेल, काका कालेलकर, कुरपाटी बधु, पट्टाभिसीताराम्मैया, ठक्कर बापा, रामेश्वरी नेहरु आदि बहुत प्रभावित हुए। गाधीजी ने तो– "भारत ना बे जवाहर" कहकर आपको एव जवाहरलाल नेहरु को सम्मान दिया।

सुसंगठन के पूर्ण हिमायती :

आपके प्रवचनो मे अन्यान्य विचारधाराओ के साथ धर्म की एकता के बारे मे भी समय–समय पर विचार अभिव्यक्त हुआ करते थे। आपके उपदेशो का सार एक ही था कि जो कुछ फूट परस्पर धर्म सघो मे परिलक्षित हो रही है उसका मूलाधार यह अलग–अलग शिष्य–परपरा हे। इसी से अनेक स्वच्छन्द प्रवृत्तिया पनपती जाती हैं। वि स १९९० के वृहद् साधु सम्मेलन अजमेर मे वीर वर्धमान सघ के रूप मे एक आचार्य के नेतृत्व मे ही शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित विहार की सारी व्यवस्थाए रखी गयी थी। अपनी सप्रदाय मे तो आपने वि स १९८५ मे ही इसको अमली रूप दे दिया था जिसको वहुत से सतो ने सहर्ष स्वीकार किया था। जिन सतो ने यह स्वीकार नहीं किया था उनकी सेवा आदि की व्यवस्था का उत्तरदायित्व सघ या सघपति पर नहीं रहेगा। ऐसा विधान भी निर्धारित कर लिया गया था।

साधु एव धर्म–प्रचार

आप जिनधर्म के प्रचार प्रसार के पूर्ण पक्षधर थे फिर भी आपकी यह दृढ धारणा थी कि अपनी गृहित प्रतिज्ञा का पूर्ण ईमानदारी से पालन करने वाला ही सच्चा प्रचारक वन सकता हे। इसलिए साधु साध्वी अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हुए जितना प्रचार प्रसार कर सके, करे। इसके उपरात एक ऐसा आशिक निवृत्तिमय मध्यम वर्ग तैयार हो जो इसकी पूर्ति कर सके। इसके लिए आपने समाज के सामने "वीर सघ" योजना रखी। उसी की आंशिक पूर्ति आज भी स्वाध्यायी वधु कर रहे हे।

जवाहर की साहित्य सेवा

साहित्यिक क्षेत्र मे आचार्य श्री जवाहर की वहुत वडी देन हे। आपके द्वारा रचित सद्धर्म मडन, अनुकम्पा–विचार, जवाहर–किरणावली आदि सो के लगभग पुस्तके गद्य पद्य मे सघ द्वारा प्रकाशित है। जवाहर साहित्य के समक्ष आधुनिक भाषा लालित्य एव मुद्रण की चाक चक्यता से युक्त नव प्रकाशित साहित्य भी बडे–वडे अनुभवियो को फीका प्रतीत होता हे। आपके साहित्य मे स्वय तर्क उठाकर स्वय द्वारा उसका स्पष्टीकरण बडे–वडे वकीलो की वहस को भी मात करने वाला हे। तत्कालीन परिस्थितियो का अवलोकन करते हुए पचास वर्ष पहले भावी दुष्परिणामो का जिक्र आपने अपने व्याख्यानो मे किया जिसका आज हम प्रत्यक्षीकरण कर रहे हे। आपके साहित्य मे सद्धर्म के मडन एव मिथ्या धारणाओ के खडन का स्पष्ट दर्शन होता हे।

जन–हितेच्छु सस्थान ·

आपके सचोट उपदेशो से प्रभावित होकर साधुमार्गी जैन गुरुकुल, साधुमार्गी जैन हित कारिणी सस्था बीकानेर, जीव दया मडल घाटकोपर, पनवेल–जलगाव, इगतपुरी, छोटी आदि मे शिक्षण शालाओ की शाखाए प्रशाखाए खुली थी। श्रीमान् ताराचन्द जी सा गेलडा ने आपके उपदेश से प्रेरणा पाकर मद्रास मे गेलडा हाई स्कूल एव माम्बलम (मद्रास) मे बोर्डिग आदि सस्थान खोले थे। जलगाव (महाराष्ट) मे 'शिवजी जैन छात्रावास', कानोड एव भीनासर मे "जवाहर–विद्यापीठ' की स्थापनाएँ सब आपके उपदेशो की ही देन है।

सघ की सुव्यवस्था .

जब से आपने शासन की बागडोर सभाली तब से सघीय–शक्ति को ठोस बनाने हेतु आपने अनेक नये–नये नियम प्रस्तुत किये। वि स १९७७ के आषाढ सुदी ११ शनिवार को बीकानेर चातुर्मास मे श्रावक सघ ने सघ एव सघपति के प्रति पूर्ण आस्था व्यक्त करते हुए सघ को सुरक्षित रखने हेतु तत्कालीन परिस्थिति का अवलोकन करते हुए १२ कलमो (नियमो) का एक प्रस्ताव पारित किया।

वि स १९७७ के फाल्गुन शुक्ला १३ को सघ की शास्त्रनिधि एव पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के नेश्राय के पाने पोथियो की सुरक्षा हेतु प्रस्ताव पारित हुआ और उसकी एक कमेटी बनाई गई।

वि स १९८२ फाल्गुन सुदी ५ को रतलाम मे पूर्वाचार्यो की शासन की समाचारी को सम्मुख रखते हुए ७६ कलमो की समाचारी का निर्धारण किया गया।

वि स १९८५ फाल्गुन सुदी १३ को चुरु मे १२ प्रस्ताव पारित किये, उसमे से १२ वे बोल मे सब शिष्य आचार्य की नेश्राय मे करने का लिखित निर्णय लिया गया।

वि स १९८९ की मिगसर सुदी ३ तेजसिहजी म सा की सम्प्रदाय के प्रमुख सत मुनि श्री प्यारचदजी म सा आदि सतो ने पूज्यश्री का लिखित नेतृत्व स्वीकार किया।

वि स १९९० अजमेर बृहत् साधु सम्मेलन मे पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा की सप्रदाय के दोनो भागो का पाच पचो की साक्षी से निर्णय हुआ और छठे पाट पर पूज्य मन्नालालजी म सा एव जवाहरलाल जी म सा तथा सप्तम पट्टधर युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा को मान्यता दी गई। पू मन्नालाल जी म सा का स्वर्गवास चातुर्मास के पहले आषाढ मे ही हो गया। चातुर्मास पश्चात् भावी व्यवस्था हेतु आपने सब सतो को निम्बाहेडा बुलाया लेकिन बीच मे दिवाकर जी म सा आदि सन्तो के निर्धारित नियम विरुद्ध कुछ प्रवृत्तियो के कारण आचार्य श्री ने उनसे स्पष्टीकरण मागा लेकिन योग्य समाधान प्राप्त न होने के कारण उनसे सम्बन्ध विच्छेद करना पडा।

युवाचार्य पद प्रदान

कुछ साधुओ की स्वच्छन्द वृत्ति के कारण सघ मे जब पुन मतभेद पडा तब आपने अजमेर सम्मेलन मे पचो के निर्णयानुसार वि स १९९० की फाल्गुन सुदी ३ को जावद मे विशाल चतुर्विध सघ की साक्षी मे विधिवत् युवाचार्य की प्रतीक रूप चादर पूज्य गणेशीलाल जी म सा को प्रदान कर दी। तत्पश्चात् वि स १९९२ की आसोज बदी ११ को सघ का सर्वाधिकार युवाचार्य श्री पर डालकर गुजरात–वासियो के अत्याग्रह के कारण आप गुजरात पधार गये। मोरबी, राजकोट, जामनगर, अहमदाबाद आदि क्षेत्रो मे लगभग चार साल तक विचरण करके पुन राजस्थान पधारे।

महाप्रयाण :

दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् सुदूर प्रात महाराष्ट्र, पजाव, हरियाणा, जमनापार गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश की लबी यात्राए करते हुए जब आपके शरीर पर वृद्धावस्था ने पूर्ण जोर जमा लिया था तब सेठ चपालाल जी बाठिया (भीनासर) की अत्यन्त आग्रह पूर्ण विनती को मान देकर धीरे–धीरे विहार करते हुए बीकानेर प्रात मे पधार गये। सवत् १९९८, १९९९ के चातुर्मास भीनासर मे सपन्न किये। बाठिया परिवार व त्रिवेणी सघ (गगाशहर भीनासर, बीकानेर) ही क्या पूरे थली निवासियो ने तन, मन, से पूज्य श्री की सेवा का लाभ लिया। आखिर सवत् २००० की आषाढ सुदी

८ के दिन चार बजे इस नश्वर देह का परित्याग करके आपकी आत्मा ने स्वर्ग की ओर महाप्रयाण कर दिया।

पुर मे तेरहपंथियो द्वारा उपसर्ग :

वि स १९६३ मे मुनि श्री जवाहरलाल जी म सा गगापुर चातुर्मास सपन्न कर 'पुर' पधारे। ऋषभदेव जी के मदिर मे ज्योही आज्ञा लेकर ठहरे, उसी समय पूर्व विराजित तेरहपथी सतो को मालूम पडा। जिन सतो ने जैतारण मे आप से चर्चा करके मात खाई उसका बदला लेने हेतु श्रावको को बरगलाया–भडकाया। श्रावक द्वार पर बैठ गये और बोले आप जब तक चर्चा नहीं करे तब तक अनत सिद्ध की साक्षी से आहार पानी लेने का त्याग है। सतो को आहार पानी हेतु नहीं जाने दिया ओर दरवाजा बद करके बैठ गये और कटु शब्द बोलते रहे। उस समय मुनि श्री जवाहिरलाल जी म के साथ घासीलाल जी म व गणेशीलाल जी म दोनो लघुवय के सत थे। वे प्यास से छटपटाने लगे लेकिन कोई सुनने वाला ही नहीं था। एकमात्र महामत्र नवकार का शरण था। दूसरे दिन भी बाहर नहीं निकलने दिया। एक ब्राह्मण कार्यवशात् भीलवाडा गया तो उसने इन सारी बातो का जिक्र ज्ञानमल जी सा नागौरी से किया। यह सुनकर ज्ञानमलजी ने रवाना होने की तैयारी की ओर बेलगाडी के माध्यम से पाच सात व्यक्ति सूर्योदय के पहले ही पहुच गये। दर्शन करते ही तो पहचान गये। सारी बात समझकर तेरहपथी साधुओ के पास जाकर बात की और कुछ ब्राह्मणो को सकेत करते ही सेकडो ब्राह्मण लाठिये लेकर आ गये और ललकार करने लगे कि कौन चर्चा करना चाहता है–सामने आओ। सब सुनकर अपने–अपने घर मे घुस गये और साधु तो ऐसे डरे कि बाहर निकलने का भी नाम नहीं लिया। फिर ब्राह्मणो के यहा से गोचरी कराकर साथ मे विहार कर पुर से भीलवाडा लाये। उसके बाद तेरापथियो ने कभी साधुओ से छेडखानी नहीं की।

आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. :

वीर वसुधरा मेदपाट की राजधानी उदयपुर के ही विशिष्ट राज्य कर्मचारी श्रीमान्' सायबलाल जी मारू की धर्मपत्नी इद्राबाई की कुक्षि से वि स १९४७ की श्रावण कृष्णा तृतीया को एक बालक ने जन्म लिया जिसका माता–पिता एव पारिवारिक सदस्यो ने शरीर–सपदा को देखकर गणेश नाम रखा।

कन्दराओ के मध्य जैसे चम्पक लता विकसित होती है वैसे ही माता इन्द्रा की आखो का तारा बालक गणेश शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक विकास मे उत्तरोत्तर विकसित होने लगा। बारह तेरह वर्ष की अल्पायु मे तो बालक गणेश हिन्दी, उर्दू, फारसी, महाजनी का गहन अध्ययन करते हुए कचहरी के कार्यकलाप आदि के मजमून बनाने मे पिताजी के साथ हिस्सा बटाने लग गया।

पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा की भविष्यवाणी

धर्म सस्कारमय पारिवारिक वातावरण होने के कारण जब कभी सत–समागम होता तो पिता श्री सायबलालजी के साथ गणेश भी सत दर्शन व प्रवचन का लाभ लेता। श्री सायबलालजी व्यावहारिक क्षेत्र मे लब्ध प्रतिष्ठ थे, वैसे ही धार्मिक क्षेत्र मे भी अगुआ थे।

पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा का उदयपुर चातुर्मास हुआ उस समय बालक गणेश पिता श्री के साथ प्रवचन श्रवणार्थ उपस्थित हुआ। आचार्य श्री की वैराग्य रस सयुक्त धर्म–देशना श्रवण करके सायबलालजी के मन मे विरक्ति भाव जागृत हो उठे। आचार्य श्री के चरणो मे अर्ज करने लगे– भगवान् ! ससार की दशा बडी विचित्र है, विषम है। ससार से मेरा मन उद्विग्न हो गया है। अन्तर्भावना हो रही है कि दीक्षा ले लू। पत्नी की भावना भी दीक्षा लेने की है लेकिन समस्या बच्चो की हे, क्योकि ये दोनो छोटे हैं। समीप मे बालक गणेश बैठा था, स्वाभाविक धैर्य से पिता श्री एव आचार्य प्रवर ने मद मुस्कान के साथ बालक के चेहरे पर वार्तालाप की झलकती प्रभा का अवलोकन करते हुए पूछा– क्या तुम भी दीक्षा लोगे ?

आचार्य प्रवर के वचनो को सुनते ही बालक गणेश बोल उठा– "मे तो अवश्य दीक्षा लूगा। चाहे पिता श्री ले या ना ले।' बालक गणेश की आत्मविश्वास मय वचनावली श्रवणकर पूज्य श्री को उसका उज्ज्वल भविष्य स्पष्ट झलकने लगा। पूज्य श्री सायबलालजी को फरमाने लगे– सायवलालजी ! यह बच्चा आगे जाकर समाज का कर्णधार बनेगा। इसके द्वारा सस्कृति की रक्षा होगी ओर नई क्राति होगी। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व का दर्शन इसके व्यवहार से हो रहा है। पूज्य श्री के वचनो स सायबलालजी को परमानद अनुभूति हुई। इतजार थी उन स्पर्शनामय क्षणो की !

गृह बधन एव भयकर वज्रपात

बालक गणेश की जीवन–मस्ती कुछ अलग ही ढग की थी। ईर्ष्या–क्लेश आपके जीवन की बाल्यावस्था मे ही वृद्ध हो चुके थे। इससे आपका शरीर अलमस्त गध हस्ती की तरह तेरह चोदह वर्ष की अल्पवय मे भी २० वर्ष की जवानी का दर्शन कर रहा था, जिससे अनेक व्यक्ति अपनी कन्या का सम्बन्ध करने के विचार से सायबलाल जी के पास आने लगे। आखिर स्थानीय केशरी चद जी मेहता की सुयोग्य कन्या कमलाबाई से विवाह सपन्न हो गया। अब आप एक सद्गृहस्थ का जीवन यापन करने लगे। सारा परिवार परम सतोषमय जीवन–यापन कर रहा था।

पर पूज्य श्री की भविष्यवाणी के साये मे उच्चरित भाषा–वर्गणा के पुद्गलो को पाकर प्रकृति मानो विद्रोही बन उठी।

जो कल्पद्रुम विश्व शाति का आधार हो, वह एक छोटे से परिवार मे उदयपुर तक ही आबद्ध हो जाय, वहीं तक स्वय को सीमित कर ले यह असह्य हो उठा।

प्रकृति ने भी विद्रोह का तूफान मचा दिया। सबसे पहले उसने आपकी प्राणो से वल्लभ बहिन पर आक्रमण किया। उसमे भी आपने प्रकृति के विरुद्ध अपूर्व धैर्य का परिचय दिया। जिससे प्रकृति और अधिक रुष्ट हो गई। प्लेग के रूप मे माता–पिता को दबोच दिया, इतने पर भी उसका इष्ट लक्ष्य पूरा नहीं होते देख उसने आपकी धर्मपत्नी पर भी प्रहार करके उसको भी काल के हाथो मे सोंप दिया। अब तो सिर्फ उसकी कराल चोट सहन करने हेतु धीर वीर गणेश ही बचे थे।

आसक्ति विरक्ति मे परिणत

अकस्मात् ऐसे क्रमिक वज्रपातो से बडे–बडे वीरो का भी हृदय फट जाता है। आखिर आप तो अभी पद्रह वर्ष के अल्प वयस्क थे। अभी आपने देखा ही क्या था। सहज मन मे विरक्ति हो गई। तीज के चौक स्थित तिमजिला मकान सुनसान भूतमहल के समान प्रतीत होने लगा। एक मात्र सबल मिलता तो केवल साथी स्नेहियो का। निकट सम्बन्धियो का ही एक मात्र आश्वासन था। वे भी गणेश के उजडे घर को फिर बसाने मे पूर्ण प्रयत्नशील थे। लेकिन प्रकृति तो अपने सकल्प को साधने मे लगी हुई थी। सयोगवशात् आचार्य श्री जवाहर का चातुर्मासार्थ उदयपुर पदार्पण हो गया। अब तो आपका बेचैन मन धर्म–साधना मे कुछ शान्ति का अनुभव करने लगा। आचार्य जवाहर की वैराग्य रस से अनुरजित वाग्धारा के सिचन से आपके अन्त स्तल मे वैराग्याकुर प्रस्फुटित हो उठा।

पर्युषण–पर्व की समाप्ति के साथ ही आचार्य देव के चरणो मे अकुर को पल्लवित, पुष्पित एव फलित बनाने हेतु साधना–रत हो गये। योग्य पात्र का परीक्षण कर आचार्य जवाहर ने भी अपनी ज्ञान–दर्शन चारित्रमय जवाहरात की पेटी पूर्ण विश्वास के साथ खोलकर रख दी। तो श्री गणेश भी कोई कम नहीं थे। आपने भी उन जवाहरातो को अपनी स्वर्णाभूषण रूप आत्मा मे इस प्रकार सजाया

कि जीवन का कोना–कोना प्रकाशित हो उठा। जो भी देखता–आश्चर्य से बोल उठता–गजब का परिवर्तन हुआ गणेश मे। यह तो पूर्ण विरक्त बन गया। आचार्य जवाहर ने भी पूर्ण परीक्षा की कसौटी पर कसा तो शत प्रतिशत खरा उतरा। सारा समाज एक आवाज लगाने लगा– यह दीक्षा तो उदयपुर मे ही सपन्न होनी चाहिए। सबका एक मत होते ही तो दीक्षा तिथि भी निश्चित हो गयी। पूर्ण उत्साहमय वातावरण मे वि स १९६२ की मिगसर कृष्ण एकम को दीक्षा सपन्न हुई। आचार्य जवाहर ने गणेश मुनि को अपने परमोपकारी गुरु भ्राता श्री मोतीलाल जी महाराज का शिष्य घोषित कर दिया।

मुनि गणेश की सयम यात्रा

अब श्री गणेश मुनि–गणेश बन गये थे। अपनी नेश्राय के भडोपकरण अपने कधो पर उठाकर यह मुक्ति का सेनानी सयम की पगडडी पर चल पडा। विहार का प्रथम अवसर था। एक माइल विहार के अदर पाव मे छाले एव सामान्य वजन से कधो मे सूजन आ गया। मानो आज ही क्लास मे एडमिट (प्रवेश) हुए और आज ही इस्पेक्टर इन्स्पेक्सन के लिए आ गया हो। लेकिन आखिर तो वह मेवाडी सपूत था, कब इन परिषहो से भयभीत होने वाला था। इन्सपेक्शन मे शत प्रतिशत सफल हुए। ऐसा आदर्श उपस्थित किया कि सब दग रह गये। सामान्य उपचार के साथ ही गुरुदेव के पदचिन्हो के साथ सयम यात्रा पर अपने चरण बढा दिये।

पूज्य गुरुदेव के साथ विहार करते हुए नाथद्वारा पधारे। पूज्य मन्नालाल जी म सा, पूज्य श्रीलाल जी म सा के दर्शन किये। मुनि गणेश की विनयशीलता एव एकाग्रता से पूज्य मन्नालाल जी म बहुत प्रभावित हुए। पूज्य श्रीलाल जी म सा के हृदय मे आपने बाल्यावस्था से ही स्थान पा लिया था। मुनिवेश मे देखकर पूज्य श्री का हृदय हर्ष विभोर हो उठा। अपने अन्त करण के अनन्त आशीर्वादो के साथ बोल उठे– जवाहर ! यह गणेश कल्पद्रुम है। इसको खूब पढाओ। इसके विकास मे हुक्म सघ का नहीं, सारे जैन जगत् का महान् अभ्युदय है।

आचार्य श्री के आशीर्वचनो को शिरोधार्य कर पूज्य जवाहर ने मुनि गणेश को विद्वान् वनाने के दृढ सकल्प के साथ अपने चरण महाराष्ट्र की ओर आगे बढाये। मुनि गणेश भी पूर्ण विनीत भाव से गुरुदेव की अग्लान भाव से सेवा करते हुए अपना ज्ञान कोष भरने लगे। अल्पकाल मे ही आपने आगमो का तलस्पर्शी अध्ययन करके अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया।

पूज्य जवाहर के मन मे ऐसे योग्य प्रतिभा सम्पन्न शिष्यो को देख सस्कृत, प्राकृत, न्याय व अन्य दर्शनो का गहन अध्ययन कराने के विचार पैदा हुए लेकिन तत्कालीन वातावरण मे समस्या यह थी कि कोई साधु या श्रावक ऐसा दिखाई नहीं दे रहा था जो सतो को उक्त विषयो का अध्ययन करा सके। दूसरी तरफ इनके अध्ययन को ही जैनाचार के विपरीत माना जाता था। ऐसी विषम परिस्थितियो मे एकमात्र यही चिन्तन था कि यह सकल्प कैसे पूर्ण हो। वि स १९६८ का चातुर्मास महाराष्ट्र मे अहमदनगर था। चर्चा के प्रसग से पूज्य जवाहर के समक्ष कुछ प्रमुख श्रावको ने प्रश्न रखा

ही दिया—गुरुदेव त्यागियो को गृहस्थो से ज्ञान प्राप्त करना चाहिये या नहीं। वैतनिक पडित से पढना साध्वाचार के अनुकूल है या प्रतिकूल ? आपने इसका उत्तर सर्वजन हिताय समझकर व्याख्यान मे समाधान देना ही उचित समझा। दूसरे दिन अपने प्रवचन मे ऐसा तर्क सम्मत मार्मिक उत्तर दिया कि ऋण लेना बुरा होते हुए भी भूखे मरने की अपेक्षा ऋण लेकर जीवन चलाना बुरा नहीं है। वैसे ही अध्ययन अध्यापन सावद्य कार्य नहीं है। जेसे शल्य चिकित्सा आदि मे गृहस्थ की सेवा लेने पर प्रायश्चित्त लेकर शुद्धिकरण हो सकता है। जिसको श्रवण कर भ्रात धारणाए मिटी। दोनो शिष्यो (मुनि गणेशीलाल, मुनि घासीलाल) का अध्ययन प्रारभ हुआ। वि स १९७४ मे प्रसिद्ध विद्वान् प श्री गुणे शास्त्री, एम ए, पी एच डी ओर पडित अभयकर जी 'शास्त्री' ने विशाल उपस्थिति मे परीक्षा ली जिसमे व्याकरण मे १०० नबर मे से ८२, साहित्य मे ९४ एव मौखिक मे १०० मे से १०० नम्बर प्राप्त किये। इस प्रकार अध्ययन के क्षेत्र मे अपनी प्रतिभा से विद्वत् वर्ग को चमत्कृत कर दिया।

इस प्रकार आप साधुमार्गी समाज के प्रथम विद्वत्‌रत्न होकर चमके तथा सदा के लिए विद्वानो के विकास का मार्ग खोल दिया। पूज्य जवाहर का विहार राजस्थान की ओर हो गया था। आप अध्ययन हेतु महाराष्ट्र मे ही विराजे। अपने नेश्राय गुरु मोतीलाल जी महाराज की सेवा करते हुए अतिम समय तक पूर्ण सहयोग दिया। आप अध्ययन पूर्ण कर महाराष्ट्र से विहार करते हुए रतलाम पधारे। आचार्य श्री जवाहर भी बीकानेर का चातुर्मास पूर्णकर रतलाम पधार गये। वि स १९७८ का चातुमसि समाप्त करके पुन आचार्य श्री के साथ दक्षिण की ओर पधारे। लगातार आचार्य श्री जवाहर की सेवा मे रहकर अपने—अपने जीवन का बहुमुखी विकास किया जिसको देखकर हठात् जन आकर्षण उत्तरोत्तर बढता ही जा रहा था।

गणस्य ईश- गणेश· :

माता—पिता ने तो सहज भाव से उनका नाम 'गणेश' रखा। उन्हे गणेश शब्द की व्युत्पत्ति को ज्ञान नहीं था। उन्हे क्या पता था कि जिसका नामकरण गणेश कर रहे है वह गणस्य—ईश गणेश एक दिन किसी गण का ईश यानी मालिक बनेगा। ठाणाग सूत्र के चौथे ठाणे मे चार पुरुषो मे उसी पुरुष को सर्वश्रेष्ठ बताया है जो नाम से भी उच्च हो और गुणो से भी उच्च हो।

सवत १९८१ मे चातुर्मासार्थ आचार्य श्री जवाहर जब जलगाव विराज रहे थे तब अचानक आचार्य श्री की हथेली मे एक भयकर छाला हो गया जिसकी उग्रता से सारे भारत मे अशाति छा गई। स्वय आचार्य श्री को भी अपना अतिम समय निकट प्रतीत होने लगा। वेदना को आप समभावपूर्वक सहन कर रहे थे। अपने शरीर की चिता आपको किचित् भी नहीं थी। चिता हुई तो सिर्फ अपने सघ की भावी व्यवस्था की। आचार्य जवाहर चाहते थे कि किसी योग्य उत्तराधिकारी के हाथो पर सघ व्यवस्था सौप दू, जिसके नेतृत्व मे श्री सघ उत्तरोत्तर विकासोन्मुख होता रहे।

इस लक्ष्य पूर्ति हेतु दूरस्थ सतो से विचार–विमर्श मगाया गया। सबने मुनि श्री गणेशीलाल जी म के प्रति पूर्ण श्रद्धा से सम्मति प्रदान की लेकिन आपको (मुनि श्री गणेश को) इन सब बातो की बिल्कुल जानकारी नहीं थी। अचानक वर्धमान जी सा पीतलिया (रतलाम) आपकी सेवा मे पहुँचे। औपचारिक वार्तालाप के पश्चात् उन्होने कहा कि आचार्य श्री की आज्ञा का विशेष ध्यान रखते हुए आपको उनका पालन करना चाहिए। आप अचानक हतप्रभ रह गये। बोल उठे– क्या बात कह रहे हैं। मैंने आचार्य श्री की कौन सी आज्ञा नहीं पाली, कहने लगे– महाराज श्री ! कैसे विश्वास करे कि आप हर आज्ञा का पालन करते है। यह तो तब मानेगे कि जब आप हमारे समक्ष आचार्य श्री जी जो भी आज्ञा दे, उसको स्वीकार करे।

युवाचार्य पद पर मनोनमन के रहस्य से आप बिल्कुल अनभिज्ञ थे। उठकर आचार्य प्रवर के चरणो मे पूर्ण विनय भाव से इस प्रकार निवेदन करने लगे–भगवन ! मेरा सर्वस्व आप श्री के चरणो मे समर्पित है। मेरे योग्य क्या आज्ञा है ? आचार्य श्री ने कहा– गणेश ! यह कथन तो तुम्हारे जीवन के अनुरूप्र ही है। मेरी हर आज्ञा का पालन करने के लिए सदैव तत्पर हो। लेकिन फिलहाल तुम देख रहे हो मेरी तबीयत की दशा अस्वस्थ चल रही है। जीवन का क्या भरोसा। इसलिए अब इस भार को तुम उठाकर मुझे हल्का कर देते तो मुझे अन्त शान्ति मिलेगी, यही मेरी आज्ञा है। यही चतुर्विध सघ की आशा है। अब आपको अन्तर्रहस्य समझ पडा। आप एकदम असमजस मे पड गये और असमर्थता व्यक्त करने लगे लेकिन इससे आचार्य प्रवर का मन खिन्न होता देखकर विवशतापूर्वक मौन स्वीकृति प्रदान की। जिसका प्रारूप मुनि श्री घासीलाल जी द्वारा शुद्ध प्रतिलिपि बनाके आचार्य श्री ने अपने पास मे रख ली। चिकित्सक मूल थोवकर के उपचार से तबीयत पुन सुधार पर आने लगी। उस समय घोषणा की आवश्यकता नहीं समझकर घोषणा नहीं की।

पूज्य श्री जवाहर ने मालवा की ओर विहार किया। आप श्री महाराष्ट्र मे पूज्य मोतीलाल जी म सा की सेवा मे विराजे। वि स १९८३ की फाल्गुन बदी ११ को उनका स्वर्गवास हो गया। आपने जो लगातार सेवा बजाई, वह अवर्णनीय थी। सारा महाराष्ट्र पूर्ण श्रद्धान्वित हुआ। जब आपको विहार का सकेत मिला तो श्री सघ अश्रुपूरित नयनो से उपस्थित हुआ। आप वहा से विहार करते हुए मध्यवर्ती क्षेत्रो मे धर्म गगा बहाते हुए भीनासर चातुर्मासार्थ आचार्य भगवान की सेवा मे पधारे।

स्वतंत्र विचरण एवं चातुर्मास

दीक्षा पर्याय के चौबीस वर्ष व्यतीत हो गये। ज्ञान व साधना के क्षेत्र मे आप आचार्य जस महान् पद तक पहुच गये थे। चतुर्विध सघ आपको भावी अनुशास्ता के रूप मे देखता था। लेकिन आप श्री तो एक लघु शिष्य की भाति आचार्य श्री एव गुरुदेवो के सान्निध्य मे ही रहना चाहते थे लेकिन आचार्य प्रवर की आज्ञा एव लोगो का आग्रह होने पर प्रथम चातुर्मास अग्नि परीक्षा के रूप मे चुरु मे किया। चुरु क्या, सारा थली प्रात आपके आचार एव विचार को देख इतना प्रभावित हुआ कि सारी जन

जैनेतर जनता आपको साक्षात् गणेश नारायण गणेश नारायण कहती हुई श्रद्धा से नत होती थी। साथ ही दया दान की विपरीत चर्चाओ से लोगो मे जैन धर्म के प्रति जो भ्रातियॉ थी, उनका निवारण हुआ। हजारो की सख्या मे जनता प्रवचन लाभ लेने लगी। आपके साध्वाचार की कठोर बाते श्रवण करके वहॉ की जनता मोठ बाजरे की रोटी एव फली फोफलियो का साग तो खूब देती लेकिन डर के मारे घी, दूध कभी नहीं धामती कि कहीं बाबाजी नाराज न हो जाय। आप समभाव मे मस्त थे, लेकिन शरीर पर उसका असर पडा–आखो की ज्योति मद हो गई। फिर भी आपने कभी प्रकारान्तर से भी उनकी प्राप्ति की चेष्टा नहीं की। यह आपके सयम–जीवन की उच्चता थी। चुरु की जनता को जब मालूम हुआ तो वह हार्दिक पश्चाताप करने लगी। उस पाप को धोने के लिए पुन आचार्य श्री के साथ ही दूसरा चातुर्मास आपका चुरु मे कराकर पूर्ण सेवा का लाभ लिया। उसी चातुर्मास मे मूलचद जी कोठारी ने यह घोषणा की कि मैने शास्त्रो का यथार्थ रहस्य समझकर साधुमार्गी धर्म सघ की श्रद्धा ग्रहण की है। यदि किसी को शका हो तो चर्चा करे। यदि यह पक्ष चर्चा के दोरान हार गया तो मे एक लाख रुपये गौशाला मे दान दूगा।

दूसरा चातुर्मास स्वतत्र रुप से ब्यावर मे किया। जो आशातीत सफल रहा। फिर तीसरा चातुर्मास वि स १९८८ का फलौदी किया। यहा धर्म ध्यान की अपूर्व जागरणा हुई थी। साथ ही नजदीक के गाव मे माताजी के स्थान पर प्रतिवर्ष १५०० मूक पशुओ की वलि होती थी। आपने वहॉ पधारकर उद्‌बोधन दिया। जिससे हमेशा के लिए बलि रुक गई। तिवरी मे आपसी जैन जैनेतरो का तनाव मिटाकर प्रेम की लहर पैदा की। वहा से विहारकर नागौर आचार्य श्री की सेवा मे पधार गये। वि स १९८९ का चातुर्मास जोधपुर आचार्य श्री की सेवा मे किया। तत्पश्चात् आचार्य श्री के साथ वि स १९९० चैत्र सुदी १० को बृहत् साधु सम्मेलन मे अजमेर पधारे। समस्त स्थानकवासी समाज के सगठन की चर्चा के साथ सबसे पहले हुक्म सघ जो अपने आप मे महान् गौरवशाली सघ गिना जाता था और जो पूज्य श्री श्रीलाल जी महाराज के समय मे कुछ कारणो से दो भागो मे विभक्त हो गया था एव पूज्य मन्नालाल जी म सा को अलग आचार्य नियुक्त कर दिया था उसकी एकता के लिए बहुत से प्रस्ताव प्रस्तुत हुए लेकिन सब असफल हुए। आखिर इस सम्मेलन मे दोनो तरफ की स्वीकृति के साथ पाच सत पच नियुक्त किये गये। उनके नाम इस प्रकार है – (१) कविवर्य श्री नानचन्द जी म सा, (२) मुनि श्री मणिलाल जी म सा, (३) शतावधानी श्री रतनचद जी म सा, (४) आचार्य अमोलक ऋषि जी म सा, (५) पजाब केशरी युवाचार्य श्री काशीराम जी म सा। इन्होने दोनो तरफ की बातो को तौलकर वि स १९९० के वैशाख बदी ८ तदनुसार १७/४/१९३३ को निम्न फैसला दिया। (१) मुनि गणेशीलाल जी भावी आचार्य बनेगे। (२) खूबचद जी महाराज उपाध्याय पद पर नियुक्त होगे। (३) अब जो शिष्य बनेगे वे युवाचार्य श्री की नेश्राय मे होगे (४) भविष्य का धारा धोरण दोनो पूज्य मिलकर तय करेगे (५) चातुर्मास दोष शुद्धि आदि की सत्ता दोनो आचार्यो की मजूरी के

साथ एक की अनुपस्थिति मे दूसरे की होगी। इस निर्णय पर दोनो आचार्यो की मजूरी के साथ ही बारह ही सभोग खुल गये। परस्पर वदन व्यवहार हुआ। आनन्द की लहर फैल गई। फाल्गुनी पूर्णिमा के पहले–पहले युवाचार्य चादर प्रदान करने का निश्चय हो गया लेकिन पूज्य श्री मन्नालाल जी म सा का तो आषाढ मास मे ही स्वर्गवास हो गया तत्पश्चात् प्रतिपक्षियो की स्वच्छन्द वृत्ति एव निर्धारित नियमो की अवहेलना के कारण एकता भग हो गयी, सभोग टूट गये। आखिर आचार्य श्री जवाहर ने युवाचार्य पद की घोषणा जावद सघ के आग्रह को देखकर वि स १९९० को फाल्गुन शुक्ला ३ की कर दी। सात हजार की विशाल जनमेदिनी एव ३५ सत, ६५ सतियो की उपस्थिति मे युवाचार्य की विधिवत् रस्म अदा करके चादर ओढाकर आपके नाम की सार्थकता कर दी।

युवाचार्य मुनि श्री गणेश -

युवाचार्य पद पर आसीन होने के पश्चात् वि स १९९१ का चातुर्मास रतलाम मे व्यतीत किया। स्थानीय तथा बाहर के हजारो धर्म श्रद्धालुओ नें लाभ लिया। सुख शाति से चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् आचार्य श्री की सेवा मे जावरा (म प्र) पधारे। कुछ दिन सेवा मे विराजकर देवास चातुर्मासार्थ पधारे। अनेक व्यक्तियो ने मद्य मासादि दुर्व्यसनो से मुक्ति ली। अपूर्व धर्मोद्योत पूर्वक चातुर्मास पूर्ण करके आचार्य श्री की सेवा मे रतलाम पधारे।

आचार्य जवाहर ने उत्तरदायित्व से मुक्त होकर काठियावाड निवासियो की अन्तर्भावना की पूर्ति हेतु उधर चरण बढाये। युवाचार्य श्री साडेराव तक साथ पधारे। उसके पश्चात् आचार्य भगवत को विदाई देकर आपने मेवाड की दिशा मे विहार किया। वि स १९९३ का चातुर्मास उदयपुर सपन्न किया। इस चातुर्मास मे आशातीत सफलता मिली।

तत्पश्चात् मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए आ श्री की आज्ञानुसार १९९४ के चातुर्मासार्थ बीकानेर पधारे। इस चातुर्मास मे बडे–बडे राजा रईसो ने आपके प्रवचन का लाभ लिया। अनेक उपलब्धियो के साथ चातुर्मास पूर्ण कर थली प्रात को पावन करते हुए अनेक परिषहो को सहते हुए जयपुर पधारे। १९८५ का चातुर्मास जयपुर किया। जयपुर के जौहरियो की नगरी से विहार करके कोटा पधारे। कोटा मे आपको एक शिष्य रत्न की भेट हुई जो उन्हीं के पाट पर आसीन होकर जन मन के श्रद्धा के केन्द्र बने वे थे हमारे वर्तमान शासन नायक आचार्य श्री नानेश।

युवाचार्य श्री कोटा के आसपास के क्षेत्रो को स्पर्शते हुए उदयपुर पधारे। १९९६ का चातुर्मास उदयपुर मे ही सम्पन्न हुआ।

युवाचार्य श्री से दिगंबराचार्य शाति सागर जी का मिलन -

उदयपुर से युवाचार्य श्री जी विहार करके मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए बाठेडा पधार। बाठेडा मे दिगबराचार्य श्री शाति सागर जी विराजमान थे। युवाचार्य श्री की यशोगाथा तो आपने पहले

ही सुन रखी थी, आपके मन मे मिलने की तीव्र भावना जगी। जहा बाजार मे युवाचार्य श्री प्रवचन फरमा रहे थे, वहा पर शाति सागर जी पधारे। श्रावको ने पाट बिछाया, वहा आप बैठ गये। आचार्य श्री शातिसागर जी म युवाचार्य श्री का प्रवचन श्रवणकर बहुत प्रभावित हुए। पूर्ण स्नेह पूर्वक कहने लगे– आपसे कुछ ओर भी चर्चा करने की अभिलाषा हे उसके लिए आप को कौनसा समय उपयुक्त रहेगा ? युवाचार्य श्री ने मध्याह्न का समय उपयुक्त बताया।

श्री शातिसागरजी ठीक समय पर निश्चित स्थान पर पधार गये। चर्चा के दोरान युवाचार्य श्री ने परिग्रह की व्याख्या सहित मोर पीछी, कमडलू की तरह मर्यादित वस्त्र, पात्रादि की व्यवस्था के बिना चतुर्विध–सघ नहीं बन सकता। ४७ दोष रहित भिक्षावृत्ति भी नहीं हो सकती, गृहस्थो की सेवा लेना आदि साधु धर्म के अनुकूल नहीं है। इन विषयो पर लम्बी चर्चा हुई। तत्पश्चात् पूर्ण सोहार्द व्यक्त करते हुए वे अपने स्थान पधारे।

कुछ दिन विराजकर मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए पूज्य श्री कपासन पधारे। कपासन मे पौष सुदी ८ को मुनि श्री नानालाल जी म की दीक्षा सपन्न हुई। दीक्षा सपन्न करके आप मारवाड सादडी की तरफ पधारे। इधर आचार्य श्री जवाहर भी गुजरात धरा को पावन करके सादडी पधार गये। वर्षो के बाद गुरु शिष्यो के मिलन का दृश्य अनूठा ही था। वहा से आचार्य श्री के साथ ही ब्यावर पधारे। अक्षय तृतीया महोत्सव पर अजमेर पधारे। वर्षीतप के पारणा–महोत्सव के साथ ही सतो के अत्याग्रह को देखकर आचार्य श्री का बगडी एव युवाचार्य श्री जी का फलौदी चातुर्मास निश्चित होने से वहाँ पधारे। दोनो चातुर्मास सानन्द सम्पन्न होने के पश्चात् दोनो गुरु–शिष्यो का मिलन सोजत मे हुआ। अब आचार्य श्री का स्वास्थ्य दिनो दिन कमजोर होता देखकर अनेक सघो की अत्याग्रही भरी विनतिये थी। होते हुए भी (बीकानेर गगाशहर भीनासर) त्रिवेणी सघ की विनती को स्वीकार करके धीरे–धीरे उस दिशा मे विहार करना उचित समझकर बलून्दा आदि क्षेत्रो को स्पर्शते हुए अठारह सतो सहित आगे बढे। बीकानेर क्षेत्र मे पधारे। वि सवत् १९९८ का चातुर्मास भीनासर निश्चित हुआ। इधर सरदार शहर सघ आकर अत्याग्रह करने लगा एव विद्वान् सतो के चातुर्मास की विनती करने लगा। आषाढ महीना और थली की विकटता को देख कौन हिम्मत करे, लेकिन युवाचार्य श्री ने गुरुदेव की वृद्धावस्था मे अलग रहना नहीं चाहते हुए भी एव घुटने मे दर्द होने पर भी आचार्य श्री के मन मे किसी प्रकार की असमाधि न हो इसका ध्यान रखते हुए आचार्य श्री की आज्ञा को शिरोधार्य करके उस ओर बिहार कर दिया। रास्ते की विकटता से दो सतो ने अपने समुदाय कर लिये। युवाचार्य श्री तीन सतो के साथ शीघ्र डूगरगढ पधार गये तथा मोतीलाल जी म सा आदि ठाणा ३ भी एक दो दिन के फासले से चल रहे थे। डूगरगढ से तीन कोस पहले एक गाव मे पहुचे। वहा पानी नहीं मिलने के कारण सतो ने विचार किया कि अभी बादल भी है। डूगरगढ भी तीन कोस के लगभग है। युवाचार्य

श्री भी वहा पधार चुके हैं तो क्यों नहीं– अपन भी जल्दी वहा पहुँच जाय। ऐसा सोचकर सत स्वभावानुसार "बैठे तो खैर की खूटी, और उठे तो पवन की बूटी" वाली कहावत के अनुसार सामान उठाकर चल पडे।

साधु जीवन की परीक्षा ·

साधु–जीवन तो परीक्षा की धार पर ही खडा है। मोतीलाल जी म ठाणा ३ कोस भर पधारे कि अचानक बादल फटे, सूर्य की चिलचिलाती धूप, इधर धोरो की धरती, लूओ का तूफान क्या पूछो–सन्त घबरा गये, आगे बढना कठिन हो गया। किसी तरह एक खेजडी के नीचे पहुचे। पुन तीन बजे के लगभग विहार किया। डूगरगढ–माइल भर रहा होगा कि मुनि मोतीलाल जी (अकोला महाराष्ट्र वाले) का जी घबराने लग गया, कठ सूखने लगा, चक्कर आने लगे। सतो ने किसी तरह से एक खेजडी की छाया मे बिठाया। एक सत सेवा मे ठहरे, एक सत वहा से इस आशा से रवाना हुए कि आगे युवाचार्य श्री हैं, जल्दी से पानी भिजवा दूगा। मुनि श्री आगे बढे, डूगरगढ के पास पहुचे। किसी भाई से जैनियो का मोहल्ला पूछा। उनको क्या मालूम था कि यहा के जैनी अजैनी से भी गये गुजरे हैं। मानवता के चोगे मे पशु से भी हीन मनोवृत्ति वाले है। मोहल्ले की जानकारी पाने आगे बढे–कई भाई बहिन अपने–अपने द्वार पर खडे थे। शिष्टाचार तो दूर रहा, मानवता का भी परिचय नहीं दिया। उल्टा सतो ने युवाचार्य श्री के विराजने का स्थान पूछा तो भी हसी–मजाक मे टालते रहे। समय कम था– सतो के तबीयत की चिन्ता से व्यथित दशा मे पूछा–भाई ! मुझे कोई युवाचार्य श्री के ठहरने का स्थान जल्दी बता दीजिए एव कहीं प्रासुक धोवन हो तो दिलाइये ताकि यहा से थोडी दूर पर सत विराज रहे है। एक सन्त की तबीयत पानी के बिना घबरा रही है। वे मारणातिक कष्ट मे हे। ऐसे प्रसग पर दानव ह्रदय भी पसीज सकता है, लेकिन ये जैनी कहलाने वाले, धर्म के धोरी, सगठन व एकता का ढोल पीटने वाले नहीं पसीजे। पूरे मोहल्ले के इस छोर से उस छोर आ गये लेकिन न तो पानी मिला, न ही जानकारी। मोहल्ले के बाहर निकले तो अचानक झवरजी माहेश्वरी मिल गये पूछा–आप अकेले कैसे ? कब पधारे ? यह सुनकर मानो डूबते को तिनके का सहारा मिल गया। सारी बात बताई, सम्मान रखा। युवाचार्य श्री के विहार के समाचार मिलने से पाव थक गये फिर भी हिम्मत करके पानी लेकर पुन चल पडे। साथ झवर जी भी रवाना हुए। शीघ्रातिशीघ्र चलते हुए एक फर्लांग दूर ही रहे, इतने मे तो मुनि मोतीलाल जी ने सथारा पूर्वक प्राण त्याग दिये। बस अव क्या मुर्झाये मन से सामान उठाकर गाव मे पहुचे। सारे गाव मे खबर फैली–ऐसे जैनी नाम घराने वालो से अजैनियो का ह्रदय घृणा से भर गया। वे उबल पडे। सबको सतो ने सात्वना दी। बीकानेर आदि से आये हुए दर्शनार्थी गण रवाना होने वाले ही थे, परन्तु खबर मिलते ही सब पुन लोट आये एव झवरजी के पूर्ण–सहयोग से अग्नि सस्कार किया।

सतद्वय विहार करते हुए युवाचार्य श्री की सेवा मे पहुँचे। ह्रदय खिन्न था। फिर भी वीर क अनुयायी थे, कब पीछे हटने वाले थे। सद्धर्म–मडन का दृढ निश्चय कर दया दान विरोधी गरदाग

के गढ मे जाकर बजर मनोभूमि मे भी समदर्शी मेघ की भाति जिनवाणी की रस धारा बरसाने लगे। यह चातुर्मास सपूर्ण थली प्रात के लिए वरदान सिद्ध हुआ। हुकम मुनि, सुमेर मुनि की भागवती दीक्षाए सपन्न हुई। चातुर्मास सपन्न करके अन्य क्षेत्रो को स्पर्शते हुए आचार्य श्री की सेवा मे पधार गये। अचानक आचार्य श्री जवाहर के शरीर मे पक्षाघात का आक्रमण हुआ तथा कमर के वाई ओर जहरीला फोडा हो गया। इस प्रकार क्रमश रोगाक्रमण के कारण शरीर अत्यधिक क्षीण होता गया। आखिर आषाढ सुदी ८ वि स २००० के दिन शारीरिक स्थिति मे गिरावट देख आलोचना प्रायश्चित्त के साथ सथारा ग्रहण किया। पूर्ण आत्म समाधि मे स्थित हो ज्योतिर्धर ने सथारा ग्रहण किया। आत्म समाधिस्थ ज्योतिर्धर जवाहर की, सूर्यास्त होने के साथ ही जीवन लीला समाप्त हो गई। उन्होने भौतिक देह का परित्याग कर स्वर्गारोहण किया।

आचार्य गणेश :

आचार्य श्री जवाहर के स्वर्गवास होते ही समस्त चतुर्विध सघ ने मिलकर आपको आचार्य पद से अलकृत किया। अब सारे सघ का उत्तरदायित्व आपके कधो पर आ पडा। चतुर्विध सघ की आप पर परिपूर्ण आस्था थी। आपको भी चतुर्विध सघ पर पूर्ण विश्वास था। इस विश्वास एव श्रद्धा की शक्ति ने गुरुदेव के वियोग से व्यथित मन मे नई उमग की हिलोर पैदा कर दी जिससे प्रेरित हो अपने उत्तरदायित्व को सभालने मे सजग बन गये। दिनो की वहुत कमी के कारण प्रथम चातुर्मास वि स २००० का देशनोक मे सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् थली प्रान्त मे विचरण करते हुए वि स २००१ का चातुर्मास सरदारशहर किया। जिससे दया–दान विरोधी उपासको मे खलवली मच गई। विरोधियो ने षडयत्र भी रचे। जितना कुछ दूषित वातावरण वे कर सके, करने मे कोई कसर नहीं रखी। आहार पानी के लिए पधारते समय पात्र मे कुत्ते के बच्चे को डालते हुए, पत्थर बहराते हुए, यहॉ तक कि भूल–चूक मे यदि बहरा भी देते तो मालूम पडते ही पुन आहार पात्र मे से लेने जैसी हीन वृत्ति से भी नहीं चूके। सोगरो के बीच मे सचित प्याज छिपाकर बहराने मे भी सकोच नहीं किया। सूझते को असूझता करना तो बहुत साधारण सी बात थी। इस प्रकार सतो को कई परिषह देने मे कसर नहीं रखी।

साथ ही श्रावको को जो सरल हृदय शुद्ध श्रद्धा धारण करते, व्याख्यान मे आते तो उनका बहिष्कार करने एव उनके आजीविका पर कुठाराघात करने मे भी नहीं झिझके। फिर भी वे आपके कठोर सयम से प्रभावित होकर सैद्धान्तिक उपदेशामृत का लाभ उठाते रहे। द्विगुणित उत्साह से जनता उमडने लगी। अनेक व्यक्तियो ने सम्यक् श्रद्धा ग्रहण की। इस प्रकार अपूर्व धर्मोद्योत मे चातुर्मास काल समाप्त कर आपने अन्य क्षेत्रो को पावन करते हुए अजमेर मे पदार्पण किया। अनेक क्षेत्रो मे धर्मगगा प्रवाहित करते हुए २००२ का चातुर्मास ब्यावर मे किया।

ब्यावर की जनता आपका चार बजे नगर प्रवेश कराने की प्रार्थना के साथ शकरलाल जी की बगीची मे ठहरने का आग्रह करने लगी लेकिन मार्ग मे हरियाली, की अधिकता से आने जाने वाले भाइयो द्वारा विराधना की सभावना को देखकर आप सीधे शहर मे पधार गए। लोगो मे इस बात का ऊहापोह मच गया। लेकिन चार बजे अचानक ऐसी मूसलाधार वर्षा हुई कि वह ऊहापोह सारा पूर्ण श्रद्धा मे परिवर्तित हो गया। यहॉ भी प्रतिपक्षियो की कमी नहीं रही फिर भी चातुर्मास मिथ्या भ्रम के भेदन मे सर्वथा समर्थ रहा और प्रबल विरोधी भी बलात् नत मस्तक होकर ही रहे। इस प्रकार अनेक उपलब्धियो से चातुर्मास पूर्णकर छोटे–छोटे आस पास के क्षेत्रो को पावन करते हुए २००३ का चातुर्मास बगडी किया। बगडी मे बहुत से अछूत भाइयो ने व्यसन से मुक्ति ली। चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् मेवाड पधारे। वि स २००४ का बडीसादडी चातुर्मास किया। आपके उपदेश से प्रभावित होकर ठाकुर सा भीमसिहजी ने बलि नहीं चढाने एव शिकार नहीं खेलने की आजीवन प्रतिज्ञा ग्रहण की तथा ४५ बकरो को अमरिया करके उन्हे अभय दान दिया। इस प्रकार पाप प्रक्षालिनी वाणी द्वारा अहिंसात्मक जीवन जीने का बोध देते हुए आपने चातुर्मास पूर्ण कर विहार किया। मार्गवर्ती क्षेत्रो के राजा, सेठ, ठाकुर आदि धर्म श्रद्धालुओ को सदुपदेश देते हुए मन्दसौर पधारे। वहा की जनता एव सिधी भाइयो का चातुर्मास हेतु बहुत आग्रह रहा। लेकिन प्रासुक स्थानाभाव के कारण वहॉ चातुर्मास नहीं होकर रतलाम हुआ। चातुर्मास सपन्न करके आपने जावरा की ओर विहार किया।

सघ ऐक्य योजना एवं शिष्ट मडल का आगमन ·

आचार्य श्री जब जावरा पधारे तो कुदनमल जी सा पिरोदिया, चिमनलाल चकू भाई शाह आदि प्रमुख श्रावको का एक शिष्ट मडल सघ एक्य योजना को लेकर आप श्री के चरणो मे पहुचा। अपने उद्देश्य एव प्रयत्नो से आचार्य श्री को अवगत कराया। सत समुदाय की करनी कथनी की विपरीतता के साथ ही स्वच्छन्दता, अनुशासन–हीनता तथा मूल महाव्रतो की हीनता का स्पष्टीकरण करते हुए आचार्य श्री ने फरमाया– जब तक इन सब बातो का शुद्धिकरण न हो जाय, तब तक केसे एक व्याख्यानादि साभोगिक सम्बन्ध जोडे जा सकते है। इस पर शिष्ट मडल ने कहा– आपका फरमाना उचित है। इस पर पूर्ण नियत्रण का विश्वास दिलाते है। वर्तमान मे तो जिनका आपको विश्वास हो उनके साथ बैठकर व्याख्यान दे। लेकिन कम से कम एक गाव मे एक ही चातुर्मास हो, इतनी तो हमारी विनती अवश्य स्वीकार करे। इस पर आचार्य श्री ने फरमाया–आपकी भावना को मान देने हेतु परीक्षण के तौर पर तीन साल तक एक चातुर्मास ही होगा। आप लोग इस विषय मे निष्पक्ष रहे। जहॉ सयम–स्खलना परिलक्षित हो वहा कठोर वृत्ति अपनाओगे तो सुपरिणाम निकल सकता ह। उपर्युक्त स्वीकृति प्राप्त कर शिष्ट मडल आगे बढा।

भूदानी नेता आचार्य श्री के चरणो मे

आचार्य श्री जावरा से विचरण करते हुए जब इदोर पधारे तब राहू गाव मे सर्वोदय मडल का अधिवेशन होने के कारण मडल के प्रमुख प्रेरक विनोबाजी अपने साथियो सहित इन्दोर पधारे। जब उनको आचार्य श्री के इन्दौर विराजने की जानकारी मिली तो अपने साथियो सहित महाराजा तुकोजी राव क्लाथ मार्केट सभा भवन मे जहॉ आचार्य श्री विराजमान थे, वहा पधारे। पोन घटे तक अनेक विषयो पर चर्चा की। आचार्य श्री से प्रभु महावीर के सर्वोदय सिद्धान्त की महत्ता श्रवण कर हार्दिक श्रद्धा व्यक्त की तथा बोले आचार्य श्री ! भूल जाइये कि, जेनो की सख्या कम है। जैन आचार व विचार तो विश्व की समस्त विचारधाराओ मे मिश्री की तरह घुले मिले है। यदि जेनी अहिसा के बराबर सत्य को भी जीवन मे महत्त्व दे तो यह विश्व की धारा मे बिल्कुल अलग ही दिखाई देगे। चर्चा की परिसमाप्ति होने पर वे अपने स्थान पर गये।

प्रथम ग्रासे मक्षिका :

कान्फ्रेन्स के प्रतिनिधि सघ सगठन की भूमिका प्रशस्त बनाने हेतु समाज के मुख्य–मुख्य सतो से वचन लेकर वातावरण को प्रोत्साहित कर रहे थे कि एक चातुर्मास, एक व्याख्यान हो ताकि एक दूसरे के निकट आने का प्रसग बने।

आचार्य श्री के चरणो मे जावरा श्री सघ इन्दोर मे चातुर्मास की विनती लेकर उपस्थित हुआ। उनके उत्साह को देखते हुए चातुर्मास की सागार स्वीकृति दे दी थी, जिसकी खबर चारो तरफ फेल गई थी। इसके बाद आचार्य श्री विहार करके उज्जेन तक पधार गये। इधर जावरा श्री सघ के कुछ विघ्न सतोषियो ने अन्य सतो की भी चातुर्मास की स्वीकृति ले ली।

जब आचार्य श्री को यह ज्ञात हुआ तो विचारने लगे कि ऐसी कुटिल नीति मे क्या सघ ऐक्य सभव है ? आपने कर्त्तव्य दृष्टि को सम्मुख रखते हुए काफ्रेन्स के अधिकारियो को जो प्रमुख रूप से एकता के लिए प्रयत्नशील थे, उनके पास सारी स्थिति पहुचाई भी, लेकिन वे भी उदासीन ही रहे। फिर भी आचार्य श्री ने सोचा–कोई भी नियम तोडे मुझे वैसा बिल्कुल नहीं करना है। ऐसा सोच ही रहे थे, उसी समय जयपुर सघ आ पहुचा। जयपुर सघ चातुर्मास हेतु आग्रहपूर्ण विनती करने लगा। भयकर गर्मी का वातावरण होने पर भी आपने जयपुर चातुर्मास की स्वीकृति दे दी तथा जयपुर की ओर विहार कर दिया। रास्ते के भयकर परिषहो को सहन करके आषाढ सुदी १२ को जयपुर पधारे।

विद्वेष भावो की ज्वालाए

जयपुर मे आपके प्रवचनो से प्रबुद्ध बहुत प्रभावित था क्योकि आचार्य श्री की प्रवचन–शैली समयानुकूल एव सैद्धान्तिक थी। उनकी वचनामृत धारा तो आकाश के निर्मल जल के समान स्वच्छ थी फिर भी श्रोताओ की पात्रता के अनुसार उनका असर होना स्वाभाविक था।

आपके प्रवचन सचोट शास्त्रीय प्रमाण युक्त साध्वाचार, श्रावकाचार व श्रावको के कर्त्तव्य, दीक्षा–शिक्षा का महत्त्व, उसकी योग्य वय, पुण्य–पाप–धर्म आदि विभिन्न विषयो पर किसी व्यक्ति या समूह पर आक्षेप किये बिना होते थे। जिसको श्रवण कर प्रबुद्ध वर्ग तो सत्याश की खोज मे जागरुक हो रहा था। लेकिन मताग्रह वाले व्यक्तियो को वह सहन नहीं हो रहा था। वे अपने मनसूबो पर कुठाराघात होते देख अपने बाप–दादो से चली आ रही पद्धति का प्रदर्शन करने लगे। मनगडन्त मिथ्या आरापो से युक्त पेम्पलेट वितरित करने लगे। बाल दीक्षा के वातावरण ने तो उनके मन मे ऐसी खलबली मचा दी कि सभलना कठिन हो गया। बडे–बडे राष्ट्र नेताओ की शक्ति का भी सहयोग लिया गया। लेकिन सब विपरीत ही पडा, जिससे वे दुबारा साहस ही नहीं कर सके।

दया दान के परिपोषक आचार्य गणेश एवं उसके विध्वंसक आचार्य तुलसी का साक्षात्कार ·

तेरहपथ के आचार्य तुलसी अपनी असफलता का सारा आधार "हारी बिल्ली खम्भा नोचे" वाली कहावत के अनुसार आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा को मान रहे थे। उन्ही के कारण यह वातावरण बना है। ऐसे रोषमय वातावरण मे सवत्सरी क्षमायाचना के दिन आचार्य श्री जब राम निवास बाग की तरफ जगल पधारे तो सहज आचार्य श्री तुलसी से साक्षात्कार हो गया। पारस्परिक क्षमायाचना के साथ यकायक आचार्य तुलसी ने कहा– "गणेशीलाल जी ! थारो रवैयो ठीक कोनी है। इस अप्रासगिक बात को श्रवण करके आचार्य श्री ने फरमाया–"कौन सा रवैया" आचार्य तुलसी ने कहा– आपकी तरफ सू छींटाकसी हुई है। पेम्पलेट बटाओ– आ ठीक कोयनी। तब आचार्य श्री ने फरमाया– इन कार्यो मे हमारा कोई सहयोग नहीं। श्रावको द्वारा लाये हुए पर्चे देखे जरूर है उनमे ऐसी कोई आपत्ति जनक बात परिलक्षित नहीं हुई है। उनमे तो सिर्फ आपके द्वारा मान्य प्रकाशित ग्रथो के उद्धरण है। क्या आपकी ये धारणाए नहीं है ? यदि ऐसा हो तो आप स्पष्ट कर दीजिए कि मेरे पूर्वाचार्यो ने दया–दान विरोधी जो मान्यताए प्रतिपादित की हैं वे भूल भरी है, जैन सिद्धान्त से विपरीत हे।

यदि ऐसा नहीं है तो शास्त्रो की सही स्थिति सबको स्पष्ट करने का अधिकार हे। ऐसी मानवता–विरोधी बाते आपकी व्यक्तिगत हो तो कोई हर्ज नहीं, लेकिन यदि जैनागमो के आधार से होती है तो इससे जैनधर्म के प्रति जन–मानस मे घृणा फैलती है।

आचार्य श्री की इन सचोट बातो से आचार्य तुलसी को पसीना–पसीना हो गया। चेहरे का रग बदल गया। बिना उत्तर दिये ही 'थे थाने–थे थाने' करते हुए आगे बढने का उपक्रम करने लगे। आचार्य श्री ने फरमाया–आप अपने पथ के आचार्य माने जाते हैं। यह अन्य पदो मे श्रेष्ठ पद माना जाता हे। इस गौरवमय पद पर आसीन व्यक्ति मे वचन शिष्टता तो कम से कम होनी ही चाहिए। मुझे तो आप किन्हीं शब्दो से सबोधित कर सकते है, उस बारे मे मुझे कुछ नहीं कहना हे। आपके अर हमारे मे सैद्धातिक मतभेद हो सकता है, लेकिन मन भेद नहीं हो सकता। यदि मेरे कथन से कुछ अटपटा लगा हो तो क्षमायाचना करता हूँ।

इस पर आचार्य तुलसी कहने लगे– "या तो गारे थली री ऊची वोली है।" यह सुन आचार्य श्री ने फरमाया– अब आप थली से वाहर आ गये है। अव इन देशो के अनुरूप ही भाषा व्यवहार सीखिए। इस बात पर अपनी ऊची वोली का त्याग कर कहने लगे– आपकी तरफ से "सुपात्र कुपात्र चर्चा" पुस्तक प्रकाशित हुई है। उसके मुख–पृष्ठ पर छपा है "तेरह पथी साधु अपने सिवाय सवको कुपात्र मानते हैं। क्या यह छींटाकसी नहीं है ?

तब आचार्य श्री ने फरमाया– क्या आपकी यह मान्यता नहीं है ? क्या आप जीव रक्षा मे पाप नहीं मानते है। क्या भगवान् महावीर को चूका नहीं मानते है। यदि ऐसा नहीं है तो ये मेरे साधु–ये सुपात्र हैं या कुपात्र ? इनको अथवा अन्य किसी को दान देने वाला पाप, पुण्य या धर्म मे से किस फल की प्राप्ति करेगा ? इतना पूछते ही खमतखामणा–२ का जोर–जोर से उच्चारण करने लगे एव आगे बढ गए।

इसके बाद पूज्य आचार्य श्री लालभवन पधार गये। अनेक उपलब्धियो के साथ चातुर्मास सपन्न कर ढूढार एव पल्लीवाल क्षेत्रो को पावन करते हुए आगे बढे। आगरा सघ का आग्रह देखकर आचार्य भगवन् आगरा पधारे। लोहामण्डी स्थानक मे विराजे। पूज्य श्री पृथ्वीचन्द जी महाराज से मधुरमिलन हुआ। आप आचार्य श्री के जीवन से वहुत प्रभावित हुए। वहा से कुछ दिन पश्चात् अलवर पधारे। चातुर्मास की आग्रह भरी विनती होने से स्वीकृति दे दी गई।

आचार्य श्री गणेश का दिल्ली पदार्पण

अलवर चातुर्मास की स्वीकृति होते ही दिल्ली सघ सेवा मे उपस्थित होकर क्षेत्र स्पर्शन का अत्याग्रह करने लगा। अत्याग्रह होने पर दिल्ली की दिशा मे विहार किया। आचार्य श्री का दिल्ली पहुचने का पूर्व सकेत नहीं होने पर भी जब आचार्य श्री अचानक दिल्ली पधारे तो पडित रत्न श्री सुदर्शन मुनिजी, कवि श्री अमर मुनि जी आदि पहले ही अगवानी के लिए पधार गए थे। जनता की तो इतनी भीड उमड पडी कि मोटर, ट्राम, बसे इत्यादि यातायात के साधन सब वहीं रुक गये। आचार्य श्री महावीर भवन मे विराजे। दिल्ली की जैन जैनेतर जनता प्रवचनो का लाभ पूर्ण उत्साह से लेने लगी। जनता की इस उमडती भीड को देखकर जिज्ञासा पैदा हुई कि क्या बात है–अभी कुछ दिन पहले आचार्य तुलसी नामक जैन साधु आये थे। साथ मे विशाल साधु–साध्वियो का समूह, धनी मानी लोगो की आगे–पीछे टहल बदगी। प्रचार प्रसार भी पूरा, फिर भी कोई विशेष आकर्षण नहीं था। लेकिन यहॉ कोई ऐसा आडम्बर नहीं होते हुए भी हजारो व्यक्तियो तथा विद्वानो का प्रवचन स्थल एव तत्त्व चर्चा मे जमघट लगा रहता है। इसका चितन करते हुए इन जैनाचार्यो मे क्या मतभेद है– इसको जानने की जिज्ञासा पैदा हुई।

तुलनात्मक चितन से जब यह ज्ञान हुआ कि तेरह पथी जीवरक्षा मे तथा साधु के अलावा अन्य किसी को भी किसी प्रकार का सहयोग देने मे एकान्त पाप मानते हैं। जबकि कोई भी धर्मावलम्बी इन

मानवता विरोधी मान्यताओ को मानने के लिए तैयार नहीं है। साथ ही समय–समय पर आचार्य श्री के सचोट शास्त्रीय प्रमाणो सहित वस्तु तत्त्व का प्रतिपादन रूप प्रवचन श्रवण करके तो प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक था। तेरहपथियो ने खतरा समझ कर अनेक प्रयास किये लेकिन जब सफलता नहीं मिली तो अमर भारत मे शुभकरण जी सुराणा चुरू वालो ने एक लेख मे आचार्य श्री पर मन चाहे आरोप लगाते हुए यह चेलेज भी दे दिया कि यदि कोई बात समझ मे नहीं आती हो तो आचार्य तुलसी से मिलकर समाधान कर ले यही श्रेयस्कर है।

समाज के प्रबुद्ध जनो ने इन लेखो का स्पष्टीकरण करने हेतु पूज्य श्री से आग्रह किया जिसे मान देकर पूज्य श्री ने अपनी मर्यादा मे फरमाया–मरते प्राणी की रक्षा मे महान् धर्म है। हम साधु भी मर्यादानुसार जलते, डूबते प्राणी को बचा सकते है। कोई पत्थर हृदय वाला ही इसमे पाप बता सकता है। रक्षा मे पाप का कथन करना शास्त्र तथा अनुभव से विरूद्ध है।

आचार्य श्री का स्पष्टीकरण सुनकर श्रोताओ मे से प्रमुख नागरिको ने चर्चा के माध्यम से निर्णय लेने की जिज्ञासा प्रगट की। बहुत प्रयत्नपूर्वक जैनेद्रकुमार जी, राजेन्द्र कुमार जी, श्री राजकृष्ण जी, कुदनलाल जी, श्री मोहनलाल जी कठोतिया (तेरहपथी) की एक समिति बनी। लिखित चर्चा हुई जो "दिल्ली–चर्चा" के रूप मे प्रकाशित है।

आचार्य श्री को राष्ट्रपति डा राजेद्र प्रसाद का निवेदन आया कि आचार्य श्री राष्ट्रपति भवन पधार कर प्रवचन देवे। ऐसे ही उदयपुर दरबार, देवगढ राव सा आदि के भी कई बार अपने स्थान के आग्रह आने पर भी आप यही उत्तर देते कि उनके हर समय शासकीय आवश्यक कार्य रहते हे। उसमे व्यवधान डालना मै अपनी दृष्टि से उचित नहीं समझता। यहॉ सब व्यवस्था है– यह कहकर टाल देते। लेकिन लोकेषणा से आप हमेशा बचने की कोशिश करते। हा यदि कोई स्थान पर पहुच जाते तो उनसे अवश्य वार्तालाप करते। आपकी इस निस्पृहता एव सयम सजगता से सारा जन–समुदाय बहुत प्रभावित था। शेषकाल कैसे व्यतीत हुआ, कुछ मालूम नहीं पडा। आचार्य श्री ने हिलवाडी, यमुना पार के क्षेत्रो की ओर विहार किया। बडोतमडी का आग्रह देखकर वहा पधारे। वहा से टिटरीमडी पधारते ही गर्मी की अति तीव्रता से मूत्रकृच्छ रोग पैदा हो गया। एक कदम पैदल चलना जीवन का खतरा जैसा बन गया। दिल्ली से डाक्टर आये, जाच की और यथाशीघ्र दिल्ली पहुचने की सलाह दी।

आखिर सब सतो ने डोली से कधो पर उठाकर ले जाने का निश्चय किया। एक ही लक्ष्य था कि जल्दी से जल्दी आचार्य श्री को दिल्ली पहुचाया जाय। मन मे पूर्ण उत्साह था लेकिन शरीर ने साथ नहीं दिया। कुछ दूर भी नहीं पहुचे कि कधो ने जबाव दे दिया। वार–वार कधे अदला–वदली करते देखकर आचार्य श्री का हृदय दयार्द्र हो उठा। अपने रोग की असह्यता होने पर भी दु ख कातरता एक दम उमड पडी। सतो को कहा– थोडा रुको, सतो ने डोली रोकी आप नीचे उतरे। सन्त तथा

अन्य व्यक्ति सोचने लगे– शारीरिक बाधा निवृत्त करनी होगी। इसलिए सब एक तरफ हो गये। लेकिन थोडी देर बाद देखते ही देखते आचार्य श्री तो आगे बढते ही गये। सब डाक्टर अवाक् थे। सतो एव भक्तो का हृदय अदर ही अन्दर व्याकुल हो रहा था। फिर भी आप मद मुस्कान भरी मुद्रा मे आगे बढते ही गये। आखिर दिल्ली पहुच ही गये। जिसने सुना, सब आश्चर्य चकित थे। जाच कराई गयी। सबकी यथाशीघ्र आपरेशन कराने की राय बनी, लेकिन आप शल्य–चिकित्सा से बने वहा तब बचना चाहते थे। विचार–विमर्श के साथ एक यूनानी हकीम प्रेमचद जी से सलाह ली एव उनकी दवाई से बिना ऑपरेशन के ही रोग शमन हो गया। शारीरिक कमजोरी के कारण वह चातुर्मास अलवर न होकर दिल्ली ही हुआ। फिर भी प्रतिदिन प्रवचन मे पधारते। हगरी के विदेशी बौद्ध विद्वान् डा फेलिक्स वेली ने आचार्य श्री से स्यादवाद जेसे अनेक गूढतम रहस्य समझे। चातुर्मास काल अपूर्व धर्म जागरणा के साथ पूर्ण हुआ। कुछ दिन, उपनगरो मे विराजे, पाच सात दीक्षार्थियो की दीक्षा लेने की भावना बनी, पारिवार वाले भी दीक्षा देने हेतु तत्पर हो गये। लेकिन उस निर्लेप महापुरुष ने उनको परीक्षा की कसौटी पर कसा। कसौटी पर खरे नहीं उतरने से दीक्षा नहीं दी गयी। सब लोग कहने लगे– कहा अन्य साधु शिष्यो के लोभ मे कितने हथकण्डे करते है और कहा ये महापुरुष जो इतने व्यक्ति तेयार होने पर भी उनकी अयोग्यता को देखकर दीक्षा देने से इन्कार कर दिया। दिल्ली की जनता के समक्ष बीमारी के उपचार मे लगे दोष की शुद्धि हेतु प्रायश्चित्त लिया। उस समय जनता के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

आचार्य श्री अलवर मे ·

दिल्ली से विहार कर आचार्य श्री अलवर पधारे। आचार्य श्री जी महावीर भवन मे विराजे। समस्त जैन जैनेतर जनता प्रवचन का यथासमय लाभ लेने लगी। महावीर भवन भी छोटा प्रतीत होने लगा। अलवर–नरेश ने भी आपकी सेवा का लाभ उठाने हेतु निवेदन कराया कि आप महलो मे पधारकर दर्शन दिलावे तथा उपदेश का लाभ दे। उत्तर मे आचार्य श्री ने फरमाया– अलवर नरेश की भावना श्रेष्ठ है फिर भी मेरे लिए तो राजा तथा रक सभी समान हैं। सब यहा नि सकोच लाभ ले सकते हैं ऐसी स्थिति मे बिना विशेष कारण के अन्यत्र जाना नहीं चाहता। उपयुक्त समाचार श्रवण करके विजयादशमी के दिन स्वय वे महावीर भवन मे पधारे। ऐसी स्पष्टता देखकर सारा जन समुदाय श्रद्धा से अवनत हो उठा।

"चाह गई चिता मिटी, मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछु नहीं चाहिए, वे शाहन के शाह।।"

संगठन हेतु आचार्य श्री की घोषणा

अलवर चातुर्मास मे ही कान्फ्रेन्स का शिष्ट मडल सेवा मे उपस्थित हुआ। आचार्य श्री के सामने एक चातुर्मास की पूर्व स्वीकृति के पश्चात् होने वाली प्रगति एव श्रमण सम्मेलन की भूमिका

रखी। आचार्य श्री जी ने सब बातो को श्रवण कर अपने अभिप्राय अभिव्यक्त करते हुए फरमाया। यदि समस्त स्थानकवासी समाज एक समाचारी के साथ शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित्त विहार आदि की एकरूपता के साथ एक आचार्य की नेश्राय मे अनुशासन बद्ध होकर जीवन साधना हेतु सगठित होता हो तो मैं सबसे पहला साधु होऊगा जो अपने आचार्य पद का त्याग कर के सघ–सेवा के लिए एक साधारण सेवक के रूप मे मैं मेरी नेश्राय वाले साधुसाध्वियो सहित इस सगठन मे सम्मिलित होऊगा।

आचार्य श्री की उक्त घोषणा से सबका मन–मयूर नाच उठा। सगठन की क्राति का प्रथम सूत्रपात हुआ।

गजब की सहनशीलता

आचार्य श्री के शरीर पर पुन रोग का आक्रमण हुआ। श्री सघ के आग्रह से ऑपरेशन क्लोरोफार्म सूघे बिना ही इतने बडे ऑपरेशन को सहन किया, जिसमे तेरह (१३) तोले की बडी गॉठ निकली। डाक्टर स्वय आश्चर्य चकित रह गया। उसने हजारो की जनमेदिनी मे कहा–मैने मेरी जिन्दगी मे अनेक ऑपरेशन किये, बडे–बडे सहनशील व्यक्ति देखे लेकिन ऐसे आत्मबली, अजेय महापुरुष देखने मे नहीं आये। ऑपरेशन की सफलता की खबर आकाशवाणी से प्रसारित हुई, जिसको सुनते ही श्रद्धालु भक्तो ने हजारो रुपयो का दान दिया, धीरे–धीरे घाव भरा। शारीरिक रोगता होते ही चातुर्मास समाप्ति पर विहार किया। अतिम विदाई–प्रवचन मे आचार्य श्री जी ने लगे हुए दोषो की शुद्धि हेतु चार माह का दीक्षा छेद प्रायश्चित जनता के समक्ष लिया जबकि पजाब सप्रदाय के आचार्य श्री से प्रायश्चित्त मगाने पर उन्होने १२० उपवास लघु चौमासी प्रायश्चित्त ही भेजा था। इस प्रकार आचार्य श्री ने अलवर की जनता को आत्मोत्थान हेतु अपने वचनामृत का पान कराकर जयपुर की दिशा मे विहार किया।

बृहत्साधु–सम्मेलन ·

आचार्य श्री के उदात्त विचारो की घोषणा से समस्त स्थानकवासी समाज मे एक नई चेतना जागृत हो गई। सबके दिल मे एक ही लगन थी कि सम्मेलन बुलाया जाय लेकिन उसमे समस्या अटक रही थी दो विचार धाराओ की (१) कुछ सन्तो का अभिप्राय यह रहा कि पूर्व सप्रदायो को कायम रखते हुए पारस्परिक प्रेम सबधमय सगठन कायम किया जाय। उसकी सफलता के पश्चात सघ एक्य का आदर्श रखा जाय। (२) दूसरी विचार धारा थी कि अजमेर सम्मेलन पूर्व मे हो चुका। अब इतना समय व्यतीत होने के पश्चात् भी यदि कुछ नहीं कर सके तो श्रावक वर्ग मे तथा अन्यो मे उग्र प्रतिक्रिया होना सभव है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य हमको समझ लेना चाहिए ताकि आने वाली पीढी उसका सकुशल अनुसरण कर सके। इन्हीं दो विचारधाराओ के चलते आचार्य श्री की घोषणा ने नूतन वातावरण पैदा कर दिया। क्योकि सबकी दृष्टि आप पर ही लगी थी। सबके दिल मे आपकी सैद्वातिक दृढता एव अनुशासन प्रियता तथा स्पष्टता से एक शका सी बनी रहती थी कि ये तथा इनके

श्रावक स्वप्न मे भी सगठन मे शामिल नहीं हो सकते। लेकिन उनको जब आचार्य श्री की घोषणा मालूम हुई तो वे आश्चर्य करने लगे कि वास्तव मे सैद्धातिक भूमिका तथा अनुशासन की दृढता मे ये वज्र से भी कठोर है तो सदाचारमय सुसगठन की भूमिका मे पुष्पो से भी अधिक कोमल है। इसका प्रत्यक्ष दर्शन होने लगा। आखिर अथक प्रयास पूर्वक घाणेराव सादडी मे वि स २००९ को अक्षय तृतीया के दिन सम्मेलन की प्रारभिक तिथि निश्चित हुई। सब सत उसी दिशा मे उग्र विहार करके पहुचने लगे। आचार्य श्री भी सम्मेलन की तिथि को लक्ष्य मे रखकर जयपुर पधारे थे। वहा कवि अमर चद जी म, पडित सिरेमल जी म आदि का मिलन हुआ। वहा से अजमेर पधारे– पूरण बाबा, इद्रचद जी महाराज तथा पजाब केशरी प्रेमचन्द जी महाराज से मिलना हुआ। अजमेर से आचार्य श्री ब्यावर पधारे। वहा पारस्परिक कलह मे स्नेहामृत बरसाकर आचार्य श्री सादडी की ओर प्रस्थित हुए।

विशाल श्रमण सम्मेलन के सभापति आचार्य श्री गणेश ·

ब्यावर से विहार करके आचार्य श्री सादडी पधार चुके थे। सतो के पारस्परिक सौहार्द्रपूर्ण सहयोग से दूर के सन्तो का भी पदार्पण हो चुका था। कुल बावीस सम्प्रदायो के त्रेपन (५३) प्रतिनिधि सहित ३४१ सन्त एव ७०९ महासतिया पधारीं। ठीक अक्षय तृतीया के दिन सम्मेलन का शुभारभ हुआ। सम्मेलन की अध्यक्षता एव शाति रक्षक के रूप मे आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा तथा सहयोगी मदनलाल जी म सा की नियुक्ति हुई। मगलाचरण के पश्चात् कार्यक्रम प्रारभ हुआ। विभिन्न मुनिराजो के सघ ऐक्य सम्बधी वक्तव्य हुए एव सर्वानुमति से एक आचार्य के नेतृत्व मे श्रमण सघ की स्थापना हुई। सर्वप्रथम पूज्य आचार्य श्री ने सबकी भावना को दृष्टिगत रखते हुए अपनी योजना को तत्काल ही समग्र रूप से स्वीकार कराने पर बल नहीं देते हुए सशर्त (सघ ऐक्य योजना अखण्ड रहे तब तक के लिए) नूतन श्रमण सघ मे प्रविष्ट होने की स्वीकृति प्रदान की।

गणानाम् ईश गणेश .

पहले यह स्पष्ट कर दिया गया है कि गणेश शब्द के दो अर्थ है। पहले गणस्य–ईश गणेश ओर गणानाम् ईश गणेश। एक गण के मालिक गणेश और बहुत से गणो के मालिक को भी गणेश कहते हैं। यथा नाम तथा गुण । इस प्रकार आचार्य श्री गणेशीलाल जी महाराज ने हुक्मगण के मालिक बनकर प्रथम अर्थ को सार्थक कर ही दिया। अब बहुत सारे गणो से ईश बनकर दूसरे अर्थ को भी सार्थक कर दिया। सम्मेलन मे सगठन सम्बन्धी मुख्य–मुख्य विषयो पर गभीरता से विचार विमर्श हुआ। उसको क्रियात्मक रूप देने हेतु नवनिर्मित श्रमण सघ को सुचारू रूप से सचालित करने की क्षमता वाले, किन महापुरुष को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जाय, इस पर चितन चला। प्राचीन एव अर्वाचीन विचारधारा के टकराव के बीच पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज द्वारा आचार्य श्री गणेशीलाल जी महाराज का नाम प्रस्तावित किया गया। आचार्य श्री की तनिक भी इच्छा नहीं होते हुए भी सर्वानुमति से प्रस्ताव पारित कर दिया। अन्तत आचार्य श्री को स्वीकृति देनी पडी। आप वि

स २००९ की वैशाख सुदी १३ के दिन ग्यारह बजे श्रमण सघ के सर्व सत्ता सम्पन्न आचार्य बने। पैंतीस से चालीस हजार लगभग जनता, ३४१ सन्त और ७६८ साध्वीगण की सम्मति से चादर ओढाई गई।

नोट– विशेष जानकारी हेतु "गणेशाचार्य जीवन–चरित्र" देखे। पृष्ठ २६४ से ३८४ तक।

आधुनिक गर्गाचार्य

जैनागमो मे उत्तराध्ययन सूत्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह निर्विवाद एव सर्वमान्य है। क्योकि प्रभु महावीर के द्वारा यह हमको अपुट्ठ वागरणा के रूप मे उपलब्ध हुआ। बिना मागे पिता द्वारा दी जाने वाली पूजी के तुल्य यह चारो अनुयोगो से युक्त आगम जैनियो की अनुपम धरोहर है। इसी उत्तराध्ययन सूत्र मे अन्य शिक्षाओ के साथ सत्ताईसवे अध्ययन मे गर्गाचार्य का उल्लेख है। वे पाच सौ साधुओ का नेतृत्व कर रहे थे। इतने विशाल शिष्य समूह के आचार्य होते हुए भी वे शिष्य मोह से निर्लिप्त थे। अपने शिष्यो को सुसस्कार एव लक्ष्यपूर्ति की प्रेरणा देना अपना कर्त्तव्य समझते थे। वे अनुशासन हीनता एव सयम की शिथिलता बर्दास्त नहीं करते हुए स्व–साधना मे पूर्ण सजग थे।

पूर्ण सजग रहते हुए भी समय–समय पर साधुओ द्वारा होने वाली असयमित प्रवृत्तिया उनको बर्दास्त नहीं हो सकी। सुधारने का पूर्ण प्रयत्न करने पर जब देखा कि ये मेरे साधु गलियार बैल की तरह ढीठ हो गये है। इन पर शिक्षाओ का प्रभाव ही नहीं पडता है। इनको सुधारने का प्रयत्न बालू मे से तेल निकालने की तरह नि सार है। इसे मेरी आत्म साधना भी बाधित होती हे तथा श्रमण सस्कृति की भी लघुता होती है। श्रमण सस्कृति की सुरक्षा शुद्ध सयम की, आराधना मे हे, सख्या की विपुलता मे नहीं। ऐसा चितन कर सस्कृति रक्षा एव सयम शुद्धता को सम्मुख रखकर उन्होने उन शिथिल शिष्यो का परित्याग कर दिया।

चितनीय विषय यह है कि अपुट्ठ–वागरणा के रूप मे भगवान् महावीर ने गर्गाचार्य का अध्ययन प्रस्तुत करके चतुर्विध सघ को यह प्रेरणा दी है कि यदि इस पवित्र श्रमण सस्कृति का गोरव घटता हो तो गर्गाचार्य का अध्ययन सम्मुख रखकर आचार–विचार शून्य सगठन को कभी महत्त्व नहीं देना चाहे एकाकी क्यो न रहना पडे।

आचार्य श्री श्रमण सस्कृति की रक्षा को महत्त्व देते हुए पदारूढ हुए थे। उन्होने उस समय स्पष्ट चेता दिया था कि मै सघ ऐक्य योजना अखड रहे, तब तक ही इससे वाध्य हूँ, नहीं तो मे मेरी पूर्व स्थिति मे जा सकता हूँ। मुझे पद प्यारा नहीं है, सस्कृति प्यारी हे। चाहे अकेला ही क्यो न रहना पडे।

आचार्य श्री ने पहले सब सन्त सती वर्ग से अपने–अपने गुरु की साक्षी पूर्वक आलोचना प्रायश्चित्त द्वारा शुद्धि करा ली थी तथा आगे भी उसी शुद्धता को कायम रखवाकर अपने कर्त्तव्य का पालन् करते रहे।

श्रमण संघ मे विघटन

भवितव्यता कहिये या इस हुडा अवसर्पिणी काल का प्रभाव या संघ का दुर्भाग्य कहिये कि संगठन की भूमिका, आचार्य पद की नियुक्ति तथा नियमो के बचारण के समय जो उदारता एव आग्रह भरा उत्साह दिखाया गया था वह अधिक टिकाऊ नहीं रहा। वह एकता सेव की तरह अंदर–बाहर से एक रूप न रहकर सतरे की तरह बाहर से एक व सुन्दर रस वाली लेकिन अदर से अलग–अलग फांको के समान सिद्ध हुई। वह एकता मिठास भरी न होकर खट रस प्रदायक ही रही। शिष्य, शिष्याओ, श्रावक और श्राविकाओ का ममत्व हटना मुश्किल प्रतीत होने लगा। अनुशासन की जगह स्वच्छन्दता का पोषण होने लगा। अपनी–अपनी पूर्व साप्रदायिक धारणा, प्ररूपणा के अनुसार ही चलना चाहते थे। दो प्रतिक्रमण एक सवत्सरी, सचित्ताचित्त की धारणाओ के झगडो ने तो सबके मन का उत्साह ही मार दिया। सोजत मत्री मंडल की बैठक और जोधपुर में सयुक्त चातुर्मास के समय पुन प्रबल पुरुषार्थ किया गया। समस्याएं एक–एक करके सुलझने के बजाय उलझती ही गई। आखिर वि स २०१३ मे पुन भीनासर–सम्मेलन बुलाया। उसमे ध्वनिवर्धक यत्र के लिए इतना तूफान मचा कि दो टुकडो की नौबत आ गई। फिर भी पूर्ण धैर्य से आचार्य श्री ने उसको सभाला एव उपाध्याय श्री हस्तीमल जी म सा, प्रान्त मत्री श्री पन्नालाल जी म सा, पडित मुनि श्री नानालाल जी म की तटस्थता तथा पडितलालचन्द जी म सा के विरोध में यह प्रस्ताव पारित किया गया कि 'ध्वनिवर्धक यत्र मे बोलना मुनि धर्म की परम्परा नहीं है। यदि अपवाद मे बोलना पडे तो प्रायश्चित लेना किंतु स्वच्छन्द रूप से ध्वनिवर्धक यत्र का उपयोग नहीं करना चाहिए।" इसमे अपवाद एव प्रायश्चित का उल्लेख होने पर भी आचार्य श्री आत्मारामजी म सा के विराजते हुए लुधियाना मे ही थोडी सी जनता मे स्वच्छन्द रूप से ध्वनिवर्धक यत्र का उपयोग किया गया। प्रधानमत्री श्री मदनलाल जी म सा ने इसके विरोध मे पत्र व्यवहार किया। उचित परिणाम न आने पर उन्होने प्रधानमत्री पद का त्याग कर दिया। साथ ही आचार्य आत्माराम जी म सा द्वारा काफ्रेन्स के अनधिकृत एव अवैधानिक निर्णय की घोषणा ने तो चारो तरफ अशान्ति फैला दी।

इधर आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के शिष्य आईदान जी म जब तक अपनी स्वच्छन्द प्रवृत्ति का प्रायश्चित्त नहीं ले तब तक सम्बन्ध विच्छेद की घोषणा होने पर भी उनके साथ यथावत् सबध चालू रखने से भी कटुता का वातावरण बनने लगा।

इधर पाली मे चातुर्मास स्थित साधु साध्वियो के साथ ही एक ऐसे समूह के पापाचार का भडा फूटा, जिससे समाज मे कलक का टीका लग गया। समाज मे भयकर रोष व्याप्त हो गया। भावी पीढी तो धर्म एव धर्मगुरुओ के नाम से घृणा करने लग गई। समाज के प्रमुखो ने उनका सारा सामान जब्त करके सूची उतारी। इस प्रकार सारा विवरण आचार्य श्री के चरणो मे प्रस्तुत किया।

(नोट – उनके पापाचरण से युक्त पत्राचार की फाइले, जमाबदिये, श्रृगार के अमर्यादित साधन तथा उनके नाम का यहाँ उल्लेख करना अनुपयुक्त समझता हूँ। गणेशाचार्य जीवन चरित्र एव उस समय के प्रकाशित पेम्पलेटो से पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते है। यह तो शिथिलाचार का सकेत मात्र है।)

आचार्य श्री ने मूर्धन्य सत मुनिराजो की सहमति के साथ तथा काफ्रेन्स के अत्याग्रह के कारण वेश को कलकित करने वालो का वेश उतार लेने की घोषणा की। लेकिन उसको क्रियान्वित नहीं किया गया जिससे सगठन मे कई नई बाधाएँ उपस्थित हुई। साथ ही सुत्तागमे मे मूल पाठो के घटाने बढाने के कारण भी अनेक व्यवधान पैदा होते गये। श्री आत्माराम जी म सा का उपाचार्य के अधिकार लेने सम्बन्धी घोषणा पत्र, कान्फ्रेन्स की ढुलमिल नीति तथा जैन–प्रकाश के माध्यम से उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा को पदलोलुपी, हठाग्रही, सगठन मे बाधक आदि शब्दो से युक्त पेम्पलेट ने तो आग मे घी का काम किया।

फिर भी आचार्य श्री पूर्ण धैर्यपूर्वक व्यवस्था सभालते हुए पूर्ण प्रयत्नशील थे कि सगठन बना रहे। लेकिन परिणाम बिलकुल विपरित आ रहा था। स्वच्छन्दता और असयमित प्रवृत्तियो का रोग इतना बढ गया कि जिससे स्वय की नेश्राय मे रहने वाले अच्छे क्रिया पात्र त्यागी वैरागी कहलाने वाले आत्मार्थी सत भी ग्रसित होने लगे। जिससे स्वय के जीवन मे असमाधि रहने लगी।

इधर तो असाता वेदनीय का तीव्र प्रकोप, कैन्सर जैसी भयकर बीमारी, हजार बिच्छू डक मारे उतनी भयकर वेदना, और इधर आए दिनो सतो की असयमित प्रवृत्तियो का वातावरण। फिर भी आचार्य श्री को अपनी शारीरिक स्थिति की जितनी चिता नहीं सताती थी, उतनी इस श्रमण सस्कृति के रक्षण की चिन्ता थी। जिसके लिए आपने बहुत प्रयास किया था। अपने शिष्यो मे से जिन्होने सयम एव अनुशासनहीनता का दोष सेवन किया, उनको कठोर चेतावनी देते हुए फरमाया– मेरा आपसे सयम का सम्बन्ध है, आप सयम एव अनुशासन मे है, तब तक मेरे गले के हार हो लेकिन इससे विपरीत आचरण को मैं एक मिनट भी सहन नहीं कर सकता। चाहे मुझे अकेला ही क्यो न रहना पडे। आपने कहा ही नहीं, समय आने पर १५ शिष्यो को निष्कासित (आज्ञा बाहर) करते भी सकोच नहीं किया। साथ ही जब देखा कि यह तथाकथित श्रमण सघ अनुशासन हीनता की पराकाष्ठा पर पहुच गया हे। अनेक बार विनम्र निवेदन करने पर भी कोई सुधार परिलक्षित नहीं हो रहा है। इसके विपरीत सत्य का गला घोटकर जन–जन मे भ्रम फैलाया जा रहा है। विशेषता तो यह है कि मेरी व्यवस्थाए प्रामाणिक मानकर भी उपेक्षा कर रहे हैं। ऐसी दशा मे ग्यारह सौ साधु साध्वियो का यह विराट उत्तरदायित्व, मेरे आत्म कल्याण के लिए कैसे हितकर हो सकता है ? साथ ही मेरे प्रवेशकालीन नोट के अनुसार सघ एक्य योजना भी अखड नहीं है। ऐसी दशा मे इस प्रपच से मुक्त होने मे ही मेरा हित है। ऐसा चितन करते हुए अचानक आचार्य श्री ने दिनाक ३०/११/१९६० को व्याख्यान मे चतुर्विध सघ के समक्ष श्रमण सघ से पृथक होने की घोषणा कर दी।

घोषणा

सिद्धान्त व चारित्र के सरक्षण के साथ–साथ साधु समाज का सगठन सुदृढ होकर सघ की उन्नति हो, इस उद्देश्य को लेकर मैं सादडी (मारवाड) साधु सम्मेलन मे गठित श्री वर्धमान स्थानकवासी

जैन श्रमण सघ मे सम्मिलित हुआ था। जहाँ राव प्रतिनिधि मुनिवरो ने मिलकर मुझको आग्रह से उपाचार्य पद दिया तथा श्रमण सघ का कार्य भार सोपा। मैने अपनी आत्म साक्षी से एव निष्पक्ष रूप से अपना कर्त्तव्य बजाया। उद्देश्य के अनुसार श्रमण सघ का सुसगठन बना रहे, जिससे शासनोन्नति हो और जनता की श्रद्धा मे वृद्धि होकर आत्म–कल्याण की प्रेरणा मिले, यह मेरी आन्तरिक भावना रही और अब भी है। मगर उचित बात को भी मताग्रह का रूप देकर भ्रम फेलाया जा रहा है, ऐसा प्रदर्शित किया जा रहा है मानो मै सघ उन्नति मे गत्यवरोध का कारण हूं। इस पर मैने स्वय भी सोचा तो मुझे ऐसा नहीं लगा। बल्कि मुझे तो ऐसा अनुभव हो रहा है कि जिस उद्देश्य को लेकर मै सम्मिलित हुआ था, उस उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो रही है। व्यर्थ मे वाद–विवाद मे न पडता हुआ वर्तमान परिस्थिति मे सादडी सम्मेलन मे गठित श्रमण–सघ द्वारा प्रदत्त उपाचार्य पद का त्याग करके अपने को श्रमण सघ से अलग घोषित करता हूँ। रहा प्रश्न श्रमण वर्ग के साथ साभोगिक सम्बन्ध आदि व्यवस्था का, मुझे जिनके साथ जैसा योग्य जान पडेगा, वेसा सम्बन्धादि रखने के भाव है।

सादडी–सम्मेलन से लगातार अब तक के कार्यकाल मे कर्त्तव्य दृष्टि के कार्य करने मे किसी को दु ख पहुँचाने की भावना न होने पर भी जिन किन्हीं भी साधु साध्वी, श्रावक श्राविका का मन दु खित हुआ हो तो उसके लिए सबको खमाता हूँ।

इस अचानक की गई घोषणा ने सबको असमजस मे डाल दिया। श्रमण सस्कृति के रक्षण के लिए ऐसे गौरवमय पद को भी एक क्षण मे आचार्य श्री ने ठुकरा दिया। सबकी आखे खुल गई। स्वय आचार्य श्री आत्मारामजी म सा , पन्नालाल जी म सा , हस्तीमल जी म सा , पुष्कर मुनि जी म सा , आनन्दऋषि जी म सा आदि अनेक मूर्धन्य सतो के तथा श्रावको के विनती पत्र आये कि आप श्री यह घोषणा पुन ले ले। सबने आचार्य श्री के प्रति श्रद्धा एव प्रेमभाव तो दर्शाया लेकिन सगठन मे बाधक कारणो के निराकरण का कहीं से किसी का उल्लेख नहीं आया। उसके बाद समय–समय पर पद पर स्थित होकर श्रमण सघ का पूर्ववत् सचालन की अपीले आती रही। इस पर मैं अपने कुछ भाव व्यक्त करना आवश्यक समझता हुआ यह कहना चाहता हूँ कि शासनोन्नति को लक्ष्य मे रखकर मे सादडी–सम्मेलन मे गया। हमारा सगठन कैसा हो ? इसकी मेरी अपनी कल्पना थी– एक आचार्य के नेतृत्व मे शिक्षा–दीक्षा प्रायश्चित्त–विहार आदि हो तथा प्ररूपणा स्पर्शना की एकरूपता हो। इस बारे मे समय–समय पर अपने विचार व्यक्त करता रहा हूँ। बहुत दिन से बिछुडे हुए मिल रहे है तो सब धीरे–धीरे आपकी कल्पना का साकार दर्शन होगा, ऐसा मूर्धन्य मनिराजो की तरफ से सोत्साह आश्वासन मिलने पर मै सम्मेलन मे पहुचा। तत्पश्चात् मेरी इच्छा नहीं होने पर भी प्रतिनिधि मुनिवरो के अत्याग्रह से श्रमण सघ सचालन का भार ग्रहण करना पडा। कर्त्तव्य–दृष्टि से सस्कृति रक्षणार्थ अधिकारी मुनिवरो के परामर्श–पूर्वक शिथिलाचार स्वच्छन्दाचार को रोकने हेतु व्यवस्था दी। जिसको मेरा अन्तर्मन सघ–हित मे आवश्यक मानता है। मेरे स्वभावानुसार अपने शिष्य की छोटी सी गलती

के लिए भी अनुशासन पूर्वक कारवाई की गई। महाव्रत सम्बधी दोष कैसे बर्दाश्त हो सकते हैं ? लेकिन उसमे भी राजनैतिक ढग अपनाते हुए जो वातावरण पैदा किया है उसको देखते हुए अब मेरी कल्पनाओ का सगठन सुव्यवस्थित नहीं रह सकता।

मैं यह स्पष्ट बता देना चाहता हूँ कि मै सुसगठन का किसी से कम हिमायती नहीं हूँ। मै हृदय से चाहता हूँ कि सगठन के आधार से साधु सस्था उन्नति के शिखर पर चढे, न कि नीचे गिरे। मेरा विरोध सगठन की ओट मे होने वाले स्वच्छन्दाचार से है न कि सगठन से। स्वच्छन्दाकार से विरोध है और प्राण रहते रहेगा।

आचार्य श्री के इतने स्पष्ट विचार होते हुए भी उनके विचारो को नहीं समझकर उनके ऊपर श्रमण सघ को तोडने एव हठधर्मी आदि आरोपो को भी लगाने मे कसर नहीं रखी गई। सच यह हे कि आरोप लगाने वाले ही श्रमण सघ को तोडने की प्रवृत्तियो के सूत्रधार बने हुए थे।

सुसगठन प्रेमी चतुर्विध संघ की श्री चरणो मे विनती

आचार्य श्री की शल्य चिकित्सा के पश्चात् गिरती हुई शारीरिक परिस्थिति को देखकर चतुर्विध सघ मे चिन्ता होना स्वाभाविक था। उसी चितित मन को सात्वना देने हेतु अनुशासन प्रिय–श्रमण श्रमणी वर्ग ने निवेदन किया। भगवन् आपकी सघ ऐक्य योजनानुसार शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित्त, विहार, चातुर्मास शिष्य शिष्यादि की व्यवस्थाए एक आचार्य की नेश्राय स्वीकार करते हुए सादडी सम्मेलन आदि मे तथा बाद मे भी जो आदेश दिये अथवा देगे उनको हम श्रमण श्रमणी वर्ग जीवन मे उतारने के लिए हर समय तैयार है और रहेगे। आप श्री की छत्र–छाया दीर्घकाल तक चतुर्विध सघ पर बनी रहे, यह शुभकामनाएँ करते हैं। साथ ही आपकी शारीरिक कमजोरी एव वृद्धावस्था को देखते हुए यह आपका चतुर्विध सघ भविष्य मे किसके नेतृत्व का आधार ले ? श्रावक सघ का भी अभिप्राय है कि कम से कम चरित्रवान् सभी प्रमुख सतो को एकत्र होकर शासन व्यवस्था व्यवस्थित करके किसी एक चरित्र निष्ठ प्रभावशाली सन्त को उत्तरदायित्व सौपकर समाज के भविष्य को उज्ज्वल बनाना चाहिए। इसके लिए व्याख्यान वाचस्पति मदनलाल जी म सा, उपाध्याय श्री आनन्द ऋषि जी म सा, उपाध्याय श्री हस्तीमल जी म सा से विचार–विमर्श किया गया लेकिन कोई उत्साहवर्धक ठोस उत्तर नहीं मिला। पडित श्री समर्थमल जी महाराज उदयपुर पधारे। समाचारी का मिलान एव मौलिक श्रद्धा प्ररूपणा पर खुलकर विचार–विमर्श भी हुआ। स्वीकृति पत्र भी तेयार हुए। लेकिन सतियो की आड मे वे अधूरे के अधूरे रह गये। कोई ठोस नतीजा नहीं निकला।

चतुर्विध सघ की विनती को ध्यान मे लेते हुए आचार्य श्री ने फरमाया– मेरी कल्पना व भावनानुसार सुसगठन की सुव्यवस्था मेरे जीवन मे न बन सके तो मेरे पश्चात् चतुर्विध सघ की व्यवस्था का सर्वाधिकार तथा पूर्ण उत्तरदायित्व भविष्य के लिए पडित मुनि श्री नानालाल जी म को सोंपता हूँ। साथ ही उनको भी यह निर्देश देता हूँ कि वे यथासभव मेरी कल्पना आदि के अनुसार

सुसगठन बनाने मे सदैव पयत्नशील रहे और चतुर्विध राघ उनकी आज्ञाओ को शिरोधार्य करता हुआ ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अभिवृद्धि करता रहे। दिनाक– १८–४–१९६१

इसके पीछे भी आचार्य श्री की सुसगठन के प्रति निष्ठा ही रही लेकिन कोई सतोषजनक आसार नहीं दिखे तो पुन चतुर्विध सघ की अत्याग्रह भरी विनती को ध्यान गे लेकर वि सवत् २०१९ के आसोज सुदी द्वितीया को राजराणा भगवतसिह जी प्रमुख तीस हजार की जनमेदिनी तथा पजानी मुनि श्री सत्येद्र मुनि जी आदि सन्त एव सतियो की अनुमोदना के साथ पूज्य हुक्मेश के अष्टम पट्टधर के रूप मे श्री नानालाल जी म सा को युवाचार्य की चादर अपने ही कर कमलो द्वारा प्रदान की।

आचार्य श्री का पूर्ण समाधि युक्त पडित मरण .

योग्य उत्तराधिकारी के चयन से आचार्य श्री को पूर्ण मानसिक शाति का अनुभव हुआ। अब तो आपके मस्तिष्क मे एक ही चितन चलता रहा। वह सलेखना सहित पडित मरण के वरण का। पूर्ण समाधियुक्त चितन मे लीन होते हुए भी शारीरिक बल प्रतिदिन क्षीण होता हुआ जा रहा था। लेकिन आत्मिक तेज फानूस मे रखे दीपक की भाति अधिक निखार पा रहा था। आखो से पूर्ण स्नेहामृत झलकने लगा। चाहे शत्रु हो या मित्र– सबके प्रति मेत्री भावो मे रमण करने लगे। खान–पान से रुचि हटती गई। अहर्निश आत्मचितन, स्वाध्याय श्रवण मे ही प्रसन्नता का अनुभव होता। अचानक माघ बदी एकम को प्रात कालीन प्रतिक्रमण के पश्चात् आखे खोली तो वे अपूर्व तेज युक्त थी। युवाचार्य श्री को नजदीक बुलाकर कहने लगे–अब मुझे अतिम कार्य (सथारा) करना उपयुक्त लग रहा है। मे स्वय सावधान हूँ, आप सावधानी रखना, डाक्टर शूरवीरसिह जी से सलाह ले लेना। इतने मे डाक्टर साहब आ गये। स्वय ने बातचीत की। डाक्टर साहब ने कहा–हमारी "डाक्टरी थ्योरी" आपके आगे फैल हो गई हे।

आखिर आचार्य श्री ने पूर्ण सावधानीपूर्वक एक बजकर २० मिनिट पर तिविहार सथारा ग्रहण किया। थोडी देर बाद चौविहार सथारा कर लिया। शास्त्रीय गाथाओ का उच्चारण युवाचार्य श्री कर रहे थे–दर्शनार्थियो को "दयापालो" का ईशारा करते हुए एक गाथा पुन बोलने मे आ गई। तो आचार्य श्री ने कहा– एकाग्रता पूर्वक सुनाइये। थोडी देर बाद महासती श्री सोहनकँवर जी दर्शनार्थ पधारी। उनको पहचान कर क्षमायाचना की। ठीक १० मिनिट पश्चात् ही आत्मा आखो के रास्ते भौतिक देह का परित्याग कर के स्वर्ग की ओर कूच कर गई।

विशेष टिप्पणी –

अपूर्व धैर्य निधि आचार्य श्री गणेश ·

सतपुडा की तलहटियो मे विहार करते हुए जा रहे थे। मुनि श्री जेठमल जी एव श्रेमल (सिरेमल) जी आपके साथ थे। चलते–चलते सिर्फ चालीस पचास कदम की दूरी पर दो खूखार शेर दिखे। फिर भी आपने निडरतापूर्वक उन पर दृष्टि डाली। हिसा व करुणा आर्द्र दोनो दृष्टियॉ आपस

मे टकराई हिसा पर अहिसा की विजय हुई। वनराज चुपचाप चले गये तथा आप अपने सहवर्ती मुनियो के साथ निर्भयतापूर्वक आगे बढ गये।

रात की ड्यूटी और मुसलमान ·

एक बार आचार्य श्री गणेश सारण से विहार करके जामुडे की नाल पधार रहे थे। जगल मध्य चौकी पर विराजे। वहॉ दो पुलिस रहते थे– एक राजपूत, एक मुसलमान। जिस समय आचार्य श्री वहा पधारे तो राजपूत पुलिस पहरे पर था उसने ठहरने की इजाजत दे दी और शाम होते ही राजपूत पुलिस घर चला गया। रात्रि की ड्यूटी पर मुसलमान भाई पहुचा। सन्तो को देखकर वह झल्ला उठा बोला– अभी के अभी यहा से सामान उठाकर चलते बनो उसको खूब समझाया। आखिर नहीं मानने पर नजदीक के मकान मे पधार गये। इधर वह मुसलमान भाई रात मे सोया–सोया बहुत भयभीत होकर चिल्लाने लगा। बहुत घबराया। तुरत आचार्य श्री के चरणो मे आकर वन्दना करता हुआ अपने अपराध की माफी मॉगने लगा। अपने किये हुए अपराध के प्रायश्चित के लिए चालीस मील तक आचार्य श्री की सेवा मे साथ रहा और दुर्व्यसनो से मुक्त बना।

आचार्य श्री नानालालजी म.सा. :

आपका जन्म स्थान आत्मिक आदर्शो के पराग रो आप्लावित शौर्य की अद्भुत प्रतिमा, भारतीय सस्कृति की प्राचीनता की प्रतीक वीर भूमि राजरथान के अन्तर्गत मेदपाट (मेवाड) की पुण्य धरा है। इसके प्रागण मे राणा प्रताप जैसे कर्मवीर ने जन्म लेकर इराकी आन–वान की रक्षा हेतु वन–वन की खाक छानी। घास की रोटिये खाकर दिन बिताये, लेकिन मेवाड की शान को ऑच नहीं आने दी। दानवीर भामाशाह ने अपनी सपूर्ण धनराशि देकर मेदपाट का सरक्षण किया। रानी पद्मावती ने जलती/दहकती हुई चिता मे कूदकर शील रक्षा करके इराके गौरव मे चार चाद लगाये। धर्मवीर गणेशाचार्य ने पद की कुर्बानी करके धर्म क्राति का सिहनाद करके सच्चे मेवाडी सपूत का आदर्श प्रस्तुत किया। इसी पवित्र धरा पर उदयपुर राज्यान्तर्गत कपासन तहसील के एक ग्रामीणाचल दाता ग्राम मे आपका जन्म हुआ।

दांता ·

दाता अपने नाम से ही अपनी महत्ता का परिचायक हे। चारो तरफ से सफेद पत्थर के निकले हुए नुकीले दातो अर्थात छोटी–छोटी पहाडियो से घिरा हुआ यह छोटा सा ग्राम दाता। जिसमे मुश्किल से पचास घरो की बस्ती, उसमे भी अधिक कृषक वर्ग। जहॉ व्यावहारिक शिक्षा के अभाव के साथ ही गरीबी फैली हुई थी। उसी दाता मे केवल एक ही ओसवाल जातीय पोखरना परिवार वहा के जन समुदाय की आवश्यकता का आधार वना हुआ था। हर जीवनोपयोगी आवश्यक वस्तुओ की कमी महसूस होते ही हर बाल–वृद्ध सेठ–बा सेठ–बा कहते हुए द्वार पर पहुच जाते। इस प्रकार उन ग्रामीण जनता के साथ इस परिवार का घनिष्ठ अपनत्व का सम्बन्ध जुडा हुआ था। एक दूसरे के सुख–दु ख मे हिस्सा बटाते हुए निष्कपट जीवन व्यतीत हो रहा था।

उसी परिवार मे सरलमना सेठ मोडीलाल जी अपनी धर्म परायणा पत्नी सिणगार बाई, अपने सुपुत्र मिट्ठालाल जी तथा भूरी बाई, छगनी बाई, मोतिया बाई, धापूबाई आदि सुपुत्रियो युक्त परिवार का सुखमय परिपालन करते थे। धार्मिक सस्कारो की भले ही कमी हो, लेकिन इस परिवार की व्यावहारिकता, सरलता, सभ्यता और सौहार्द्रता बडे–बडे धर्मनिष्ठ परिवारो से कम नहीं थी। आर्थिक स्थिति सामान्य होते हुए भी आगतुको के मान सम्मान की उमडती हुई भावना बडे–बडे धनाढ्यो को भी मात करती थी। उनकी अतिथि सत्कार की भावना से कोई उनकी आर्थिक कमजोरी का अन्दाज नहीं लगा पाता था। जहा कहीं आपका पारिवारिक सदस्य पहुच जाता, सर्वत्र पूर्ण आदर सत्कार पाता था। सरलता की साकार मूर्ति सिणगार बाई जिनका पीहर भदेसर के नाहर परिवार मे होने के कारण सन्त समागम से आपके अन्तरग मे धर्म अनुष्ठान के प्रति थोडी बहुत रुचि जागृत थी। पर्व तिथि का पालन सामायिक आदि सामान्य क्रियाओ का पालन करती हुई वे अपने पारिवारिक उत्तर दायित्व को वहन कर रही थी।

अचानक एक समय रात्रि को अर्ध निद्रितावस्था मे सोये हुए आपने आकाश मार्ग से रग बिरगे प्रकाश पुज को उतरते देखा साथ ही नीचे आते–आते तो वह विस्तृत होता हुआ सारे वातावरण को प्रकाशित करने लग गया। सिणगार बाई की निद्रा टूटी। उठते ही आज एक अलौकिक आनन्दानुभूति करने लगी। माता के शरीर का अग प्रत्यग प्रफुल्लित हो उठा। बार–बार ऐसा अनुभव होने लगा मानो आज कोई अलौकिक निधि प्राप्त हुई हो। उनको अपनी गोद भरी–भरी सी महसूस होने लगी। ठीक हुआ भी यही, सवा नव माह व्यतीत होते ही सवत् १९७७ की जेठ सुदी २ को आपकी कुक्षि से सामुद्रिक लक्षणो से सम्पन्न एक दिव्य पुत्र–रत्न का जन्म हुआ। सारे परिवार मे हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। सहज भाव से पारिवारिक सदस्यो ने उस नवजात शिशु का गोवर्धन नामकरण कर दिया।

गोवर्धन नाना रूप मे

हर्षोल्लास के वातावरण मे परिवार वालो ने औपचारिकता के तौर पर गोवर्धन नामकरण कर दिया। आखिर औपचारिकता तो औपचारिकता है। उसके स्थायित्व को गुजाईश ही कहाँ ? पारिवारिक सदस्यो द्वारा औपचारिकता के तौर पर किया गया नामकरण उपचार तक ही सीमित रह गया।

वह शिशु मातृ–वात्सल्यामृत का पान करता हुआ विकसित होने लगा। माता सिणगार बाई अपने लाडले की बाल–सुलभ क्रीडाओ को निहारती हुई गोदी मे उठाती, खान–पान कराती हुई अपने अरमानो की पूर्ति करती। धीरे–धीरे नाना बडा होता हुआ घर बाहर निकलने लगा तो क्या आस पडौसी आबाल वृद्ध बडे स्नेह पूर्वक नाना नाम से सबोधित करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करते। आपके बाल्य सस्कारो मे ही ऐसी कुछ विशेषता थी कि जिनके पास भी पहुच जाते उनके मन को हर लेते। अब तो पूरा गाव नानालाल के नाम से जानने लग गया।

बालको की टोली का नेता नानालाल

ज्यो–ज्यो आपकी उम्र बढती गई, मोडीलाल जी ने विचार किया कि अब नानालाल को कुछ व्यावहारिक शिक्षा दिलानी चाहिये। यह सोचकर वहीं पर स्थानीय एक पडित जी के पास भेज दिया जो महीने का एक भीलोडी पैसा लेकर बच्चो को महाजनी पढाते, जिससे सामान्य लिखना पढना व पहाडे आदि सीख जाय ताकि अपने जीवन की आवश्यक समस्याओ को सुलझा सके। बालक नानालाल एक लकडी की पट्टी पर ईट का बुरादा घिसने व पोतने के बाद सूख जाने पर एक तिनके से पडितजी के निर्देशानुसार स्वर, व्यजन लिखने लगा। थोडे समय मे स्वर व्यजन का ज्ञान प्राप्त कर लेने के कारण पडित जी बहुत प्रभावित हुए एव अपनी अनुपस्थिति मे बच्चो के नियत्रण का भार साप दिया। महीने का पैसा ये ही लेते और पूर्ण ईमानदारीपूर्वक पडित जी को सोप देते। नाना के विलक्षण गुणो से पडित बहुत प्रसन्न थे। इनके प्रेम पूर्ण व्यवहार से सारे बच्चे उनको अपना नेता मानते। क्या खेल, क्या कूद सबमे बच्चे आप के इशारे पर नाचते। कहावत है–

" होनहार विरवान के, होत चीकने पात।"

पितृ–वियोग एव गृह कार्य मे सहयोग

बालक नानालाल निश्चित होकर बाल्य जीवन व्यतीत कर रहा था। अचानक मोडीलाल जी कालधर्म (मृत्यु) को प्राप्त हो गए। पिताजी की मृत्यु से आपका मन उद्विग्न हो उठा। धीरे–धीरे बाल्य सस्कार गभीरता मे परिवर्तित होने लगे। गृहभार के उत्तरदायित्त्व को महसूस करके धीरे–धीरे आप अपने भाई साहब के कार्य मे हिस्सा बटाने लगे। खेती की देखरेख करने लगे और व्यापारिक कार्य मे भाग लेने लगे। आपके चाचाजी उदयरामजी के लडके कन्हैयालाल जी (जो आपके समवयस्क ही थे) के साथ मिलकर व्यापार करने का भी विचार किया। अपने कर्त्तव्यपालन मे आपका आत्म–विश्वास भी बढने लगा।

मातृ–ममता का आदर्श :

माता सिणगार बाई का तो आपके प्रति पूरा वात्सल्य भाव था और आपकी भी माताजी के प्रति ममता कम नहीं थी। बचपन मे तो आप माताजी की प्रतिच्छाया के रूप मे पीछे–पीछे घूमते रहते, बडे होने के पश्चात् भी आपका यही लक्ष्य रहता कि माताजी को किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं हो। पिताश्री के स्वर्गवास के बाद तो आप हर तरह से माताजी की खुशी मे ही अपनी खुशी मानते। माताजी की थोडी सी उदासी भी आपके लिए असह्य हो उठती। थोडी देर भी माताजी नहीं बोलती तो आप विह्वल हो उठते। कभी व्रत उपवास होने पर माताजी भोजन नहीं करती तो आग्रह करके आप भोजन के लिए विवश करते। असस्कारित वातावरण के कारण व्रत उपवास का माहात्म्य नहीं जानते थे। सिर्फ आग्रह था तो यही कि माताजी भूखी क्यो रहती है ? कभी सोचते–भाभीजी ने कुछ कह दिया होगा या आर्थिक चिता के कारण यह भोजन नहीं करती है। इसीलिए कभी भाभीजी को भी उपालभ देते तो कभी माताजी को कहते–तुझे चिता किस बात की है ? अभी तो हम दो–दो व्यक्ति कमाने वाले हैं । तू भूखी क्यो रहती है ?

आपको अपनी मा के हाथ से परोसा हुआ भोजन खाने की ज्यादा इच्छा रहती, तो आप जब भोजन के लिए घर आते तो माताजी अपनी रेती की घडी लेकर बैठका (आसन) बिछाकर मुहपति (मुखवस्त्रिका) बाधे सामायिक मे बैठी रहती तो आपको बडा अटपटा लगता। भोजन करते फिर भी आपको पूर्ण सतोष नहीं होता। आपका यही आग्रह रहता कि माताजी भोजन परोसे, इस प्रकार दो चार बार माताजी को इसी प्रकार बैठे देखकर आपके मन मे आवेग आ गया। सामायिक क्या होती है, उसके क्या नियम हैं ? ये तो जानते ही नहीं थे। केवल इन सामायिक के साधनो को ही आधार मानकर एक दिन मन मे यह निश्चय कर लिया कि ये साधन ही नहीं रहे तो फिर माताजी सामायिक मे बैठेगी ही नहीं। माताजी के हाथ से परोसे जाते हुए भोजनामृत मे ये साधन ही बाधक है। "न रहे बास, न बजे बासुरी" बस एक दिन उसी आवेश मे इन साधनो को खूब ढूढने की कोशिश की लेकिन माताजी तो इनको अपनी जीवन की जडी मानकर पूर्ण व्यवस्थित रखती थीं। इस कारण मिलने का

सवाल ही नहीं था। दूसरे दिन ज्योही घर आये, माताजी को सामायिक मे बैठे देखा तो मौका देखकर उन साधनो पर लपक पडे, लेकिन माताजी ने 'अरे नाना, उ काई करे रे' कहती हुई घडी अपनी गोद मे छिपा दी एव दु खानुभूति व्यक्त करने लगी। माताजी के हृदय को दु खित देखकर आपका मन पिघल गया लेकिन उस हरकत से आपके दिल पर गहरी चोट पहुची और पश्चाताप करने लगे। उसी पश्चात्ताप ने आपको ससार बधन से मुक्ति दिलाई। उस चोट् का प्रभाव अभी तक आपके मन को कोसता रहता है। जब कभी पावन प्रसगो पर चतुर्विध सघ गुण गाथाए अभिव्यक्त करता है तब आप श्री उत्तर मे यही फरमाते है– भाई ! गुणगान तो उन महापुरुषो का करना चाहिए, जिन्होने मुझ जैसे ग्रामीण बालक के (धर्मसस्कार रहित, माता जी की धर्म क्रियाओ का भी उपहास करने वाले के) असस्कारित जीवन को सद् सस्कार के आभूषणो से सजाया। यह सब गुरुदेव की ही परम कृपा का फल है, यह कहते कठ अवरूद्ध हो जाते।

असंस्कारित भूमि मे धर्म–सस्कार की प्रथम वर्षा :

ऊसर क्षेत्र को मूसलधार वर्षा भी सरसब्ज बनाने मे सफल नहीं बन सकती, जबकि उर्वरा भूमि अल्प प्रथम वर्षा मे ही अकुरित हो जाती है। इसी प्रकार जो आत्म भूमि मोहकर्म के दलिको के कारण वजर बनी हुई है, उस पर सर्वज्ञ देवो की वाणी रूप मूसलाधार वर्षा भी विरक्ति के अकुर प्रस्फुटित नहीं कर सकती तो छद्मस्थो की वचन धारा का तो प्रभाव ही क्या ? कहा भी है–

चार कोस का माडला, वे वाणी का धोरा।
भारी कर्मा जीवडा, उठे भी रह गया कोरा।।

इसके सिवाय जो आत्म भूमि उर्वरा बन चुकी है अर्थात् मोहकर्मरूपी ऊसरता, वजरता का क्षयोपशम हो चुका है, उस आत्मा मे थोडे से उपदेश की धारा का ससर्ग होते ही सद्ज्ञान की ज्योति जगमगाने लग जाती है वह अध्यात्म साधना के मार्ग पर अग्रसर होती हुई उन्नति के शेल शिखर पर पहुच जाती है।

छोटे से दाता ग्राम के असस्कारित वातावरण मे जन्म लेने वाला वह वालक नानालाल वाल्यावस्था को पार कर युवावस्था मे प्रवेश कर चुका था। जेन कुल मे पैदा होकर भी जैन सस्कारा से पूर्ण अनभिज्ञ था, क्योकि मार्ग की विकटता के कारण लबे काल से सतो का सयोग उस दाता गाव वासियो को नहीं मिल पाया था।

अचानक सयोग ऐसा बना कि भादसोडा मे एकल बिहारी मुनि श्री चोथमल जी 'मेवाडी' का चातुर्मास होने के कारण बहिन मोतिया बाई के पचोले की तपस्या के समाचार आए। ऋजुमना सिणगार बाई ने ज्योही समाचार सुने, ज्येष्ठ पुत्र मिट्ठालाल जी की अनुपस्थिति के कारण लघुपुत्र नाना को सबोधित करके कहने लगी– अरे नाना ! बाई मोत्या के पाच की तपस्या ह, अणी वास्ते आपणे अठा की चूदडी ओढाणी है, मीठूलाल पण अठे कोनी हे, अणी वास्ते तू झट त्यार वईने भादोडा जा।

माताजी की इस बात को श्रवण करके पहले तो जाने से विल्कुल इन्कार कर दिया, क्योकि आपको कहीं बाहर किसी के यहॉ जाना आना पसन्द ही नहीं था। फिर भी माताजी के आग्रह को टाल नहीं सके। जल्दी से घोडी पर सवार होकर भादसोडा पहुचे। उस दिन सवत्सरी महापर्व था, चारो तरफ से लोग धर्म ध्यान के लिए आ रहे थे। आप भी वहॉ पहुंचे। माताजी के द्वारा भेजी हुई चूदडी निकाल मोत्या बाई के सासूजी को दे दी एव रवाना होने की तेयारी करने लगे। यह देख उन्होने कहा— यह चून्दडी ऐसे नहीं ली जाती है यह तो आपकी वहिन व्याख्यान मे प्रत्याख्यान करेगी तव अपने हाथ से वहॉ ओढाना। आप श्री तो व्याख्यानादि से अनभिज्ञ थे। फिर भी मन नहीं होते हुए भी रुकना पडा और व्याख्यान मे भी जाना पडा। आप सवके साथ व्याख्यान मे गये एव सवसे पीछे जाकर बैठ गये।

मुनि श्री सवत्सरी पर्व की महत्ता पर विवेचना करते हुए जव से इस पर्व का प्रारभ हुआ उन कारणो का प्रतिपादन करते हुए, पचम आरे की दयनीय दशा की विवेचना करते हुए छठे आरे की भयकरता, मनुष्य का स्वरूप, उसके खान–पान की दशा, पृथ्वी का तलवार के समान कठोर–स्पर्श आदि विषयो पर प्रकाश डाल रहे थे। साथ ही भव्यात्माओ को इन भयकर यातनाओ से वचने के लिए जो यह नर भव (अमूल्य जीवन) मिला हे, उसको सार्थक केसे किया जाय, उसके वारे मे उपदेश दे रहे थे। अपने व्यवहार से किसी के दिल को भी यदि थोडी वहुत चोट पहुचाई हो तो उनसे आज के दिन हार्दिक क्षमायाचना करके आत्म शुद्धि करने मे मनुष्य जीवन की सार्थकता है, ऐसा भी मुनि श्री ने फरमाया।

आपके लिए वीतराग वाणी श्रवण करने का यह प्रथम अवसर था। यह उपदेश आपको अत्यधिक रूचिकर लगा। आपके मन मे इस उपदेश ने उथल पुथल मचा दी। व्याख्यान पूर्ण हुआ। पच्चक्खाण के समय चूदड ओढा दी। सब घर पर आये। आपने अपनी घोडी सभाली एव गाव जाने की पुन तैयारी करने लगे। सगे सम्बन्धियो ने बहुत समझाया— आज सवत्सरी है किसी को तकलीफ नहीं देनी है कम से कम आज तो सामायिक प्रतिक्रमण करना चाहिये— जैन होने के नाते। लेकिन आपने किसी की नहीं सुनी— सब लोग तरह–तरह से हसी मजाक करने लगे। कहने लगे 'आखिर तो किसानो की ही सगत की है, क्या जाने धर्म कर्म मे। लेकिन उनको क्या मालूम था कि आज हम जिनकी हसी मजाक उडा रहे हैं, धर्म कर्म को लेकर ताने कस रहे हैं, वे ही भविष्य मे हमारे धर्म सघ के नायक बन जायेगे, हमको भी उनके चरणो मे मस्तक झुकाना पडेगा। हमारे धर्म सघ की सच्ची रक्षा भी इन्हीं से होगी।

आज के उपदेश ने आपके मन मे एक रोशनी (चिनगारी) पैदा कर दी थी। सब की बातो को सुनी अन सुनी करते हुए आप रवाना हो गए।

स्वप्नदर्शन तथा आत्मोत्थान का दृढ संकल्प .

घोडी पर सवार होकर लगाम हाथ मे थामे आप आगे बढने लगे। रास्ता कैसे कट रहा था, कुछ

मालूम ही नहीं पडा। आपको आज के उपदेश ने ज्ञान रूपी चाबुक के साथ मनरूपी घोडे पर सवार होने की शक्ति प्रदान कर दी थी। आप उपदेश के एक–एक शब्द पर विचार करते हुए अपनी शक्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने लगे। साथ ही अपनी अज्ञानता से धर्म क्रिया की उपेक्षा एव माताजी की आशातना का चितन करते हुए फूट–फूट कर रोने लग गये। आपके अन्तर्मन मे इस असार ससार से ग्लानि हो गई। आपके मन ने आत्मोत्कर्ष का दृढ सकल्प धारण कर लिया। निर्जन वन का भयकर मार्ग पार करके गॉव के निकट क्या पहुचे, मानो ससार की भयकर अटवी का मार्ग पार करके शाश्वत निवास स्थल ही निकट कर लिया।

घर कारागृहवत् एव वैराग्यावस्था :

भादसोडा से चलकर नाना दाता तो पहुच गये लेकिन आज घर सूना–सूना सा प्रतीत होने लगा। न पहले की तरह लगाव और नहीं आनन्द। जो घर जीवन का आधार था, वही अब कारागृह सा भयावना लगने लग गया। बारम्बार अन्तर्मन यही चाहता है कि इस कारागृह से निकल कर भाग जाऊ। न खाने मे रुचि, न गृहकार्य मे रुचि। सारा दिन चितन ही चितन मे व्यतीत होने लगा।

उन्हीं दिनो सयोगवशात् मेवाड पूज्य मोतीलाल जी महाराज का पदार्पण हो गया। उस दिन के उपदेश के सहज आपका मन सतो के प्रति अनुरक्त हुआ तथा चल पडे उन्ही के साथ। पूज्य श्री ने भी भावनानुसार ज्ञान दान देना प्रारभ किया। अल्पकाल मे आपने अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया। सामायिक सूत्र, श्रमण प्रतिक्रमण सूत्र, पच्चीस बोल, दशवैकालिक सूत्र आदि कठस्थ कर लिये। पूज्य श्री को भी आपकी प्रतिभा से पूर्ण सतोष हुआ। साथ ही आपके शारीरिक सुलक्षणो को देख कर वे प्रभावित हुए। किसी भी प्रकार से इनको खान–पान का कष्ट न हो, इसका पूर्ण ध्यान रखा जाता। पूज्य श्री बडे स्नेह के साथ कभी–कभी तो इतना भी फरमा देते– तुम जल्दी दीक्षा ले लो तो फिर अच्छा होशियार बनाकर तुम्हे अपना उत्तराधिकारी बनाऊगा। आप सविनय मस्तक झुका देते। आपकी सरलता ने सबके दिल मे विश्वसनीय स्थान प्राप्त कर लिया था।

जिन खोजा तिन पाइयाँ ·

सतो के सान्निध्य मे आपने जो कुछ भी ज्ञानार्जन किया वह कठाग्र तक ही सीमित नहीं रहा। आपके अन्तर्मन मे सत्यासत्य के परीक्षण की जिज्ञासा उत्पन्न कर दी। अव आपका मन "वावा वाक्य प्रमाणम्' तक सीमित न रहा। जो कुछ साध्वाचार की शिक्षा पाई उसके अनुरूप आप सूक्ष्म दृष्टि से सन्त मुनिराजो की चर्या का सूक्ष्मावलोकन भी करने लगे। अनेक सतो के सम्पर्क मे आये पर कथनी करनी के भेद को देखकर आपका मन सतुष्ट नहीं हुआ। आपकी दृष्टि ऐसे गुरु की खोज मे लग गई जिनके सान्निध्य से जीवन लक्ष्य की पूर्ण जागरुकता के साथ कुछ कर गुजरने की क्षमता प्राप्त हो। बदनोर सतो की सेवा मे रहते हुए आपकी मोतीलाल जी वाफना से वातचीत हुई। उस सिलसिले मे उनकी ब्यावर जाने की भावना को जानकर आपने प्रश्न किया कि क्या वहॉ साधुमार्गी धर्मसघ के [illegible]

पट्टघर आचार्य श्री जवाहर के स्थविर सत बोथलाल जी म सा आदि विराजते है।

यह सुनकर आपके मन मे सतो के दर्शन की भावना पैदा हुई तथा उन्हीं के साथ घर जाने की अनुमति लेकर रवाना होकर व्यावर पहुँचे। विराजित सतो के दर्शन करके सेवारत पडित मुनि जवरीमल जी म सा के दर्शन किये। सामान्य परिचय मे ही आप पूर्ण प्रभावित हो गये। मन मे कुछ दिन उनके सान्निध्य का लाभ लेने की भावना हुई। भावनानुसार आप वहाँ पर रहे। उनकी चर्या का अवलोकन करते हुए कथनी के अनुरूप आचरण प्राप्त कर आपके मन मे हार्दिक सतोष तो हुआ लेकिन आश्चर्य इस बात का हुआ कि इतने दिनो के वावजूद भी कभी यह नहीं पूछा कि क्या आपके दीक्षा के भाव हैं या आप किनके पास दीक्षा लेगे ? उल्टा जव आपने एक दिन वात चलाकर कहा– मै वैरागी हूँ, मेरी भावना है कि आपके पास दीक्षित होऊँ। यह सुनकर मुनि श्री ने तुरत उत्तर दिया, भाई ! आपकी भावना प्रशस्त है। लेकिन हमारे धर्म सघ मे हर व्यक्ति दीक्षा देने का अधिकारी नहीं हे। एक ही आचार्य के शिष्य होते हैं। अभी हमारे धर्म सघ के आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा हे जो शुद्ध खद्दर के परिधान को धारण करते हैं। जिन्होने वडे–वडे राजा महाराजाओ एव राष्ट्रीय नेताओ को जेन तत्त्व ज्ञान से प्रभावित किया है। जवाहराचार्य ने अपनी वृद्धावस्था के कारण अपना सपूर्ण उत्तरदायित्व युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा को सोप रखा है, जो फिलहाल कोटा (राज) विराजमान हे। युवाचार्य श्री भी आचार्य श्री की तरह शुद्ध खादी को धारण करते हुए महान् विद्वान एव मृदुभाषी हे। आपको यदि दीक्षा लेनी है तो ज्ञान ध्यान हम सिखा सकते हे। मगर दीक्षा तो वे ही प्रदान करेगे। मुनि श्री की वार्तालाप से आपके मन मे आचार्य श्री, युवाचार्य श्री एव धर्म सघ के प्रति श्रद्धा भाव उमड पडा एव दर्शन की तीव्र तमन्ना लेकर एक बार परिवार वालो के आग्रह के कारण पुन दाता आ गये।

गुरु गणेश की चरण शरण .

जब से आपके कानो मे युवाचार्य श्री की गुण गाथाएँ गूजी वह गूजती ही रही एव आपके मन को प्रेरणा देती रही। उठते बैठते, सोते समय आपके मन मे एक ही उमग कि कब मैं उस महिमा मडित मूर्ति का प्रत्यक्ष दर्शन करू। पर समस्या यह थी कि वहाँ पहुचने मे कौन सहयोगी बने ? कहावत है–

> **"कुमुदिनी जल मांही बसे,चन्दा बसे आकाश।**
> **जो जांही को भावता, सो ताही के पास।।"**

दिल की अन्तर भावना थी तो सयोग भी अपने आप जुड गया। विरक्तमना नाना कपासन आये। कपासन मे आचार्य श्री जवाहर के अनन्य भक्त मीठूलाल जी उगमराज जी साहब चडालिया से भेट हुई। बातचीत के दौरान चडालिया जी समझ गये एव समुचित व्यवस्था बैठा दी। आपके सहयोग को पाकर विरक्तमना नाना कोटा पहुच गये।

आराध्य के प्रथम दर्शन

तीव्र तमन्ना के साथ वैरागी बधु नाना ने कोटा के धर्मस्थान मे प्रवेश किया। सामने देखा तो देखते ही रह गये। उन्हे लगा मानो विशालकाय गधहस्ती राजसमूह मे सुशोभित हो, तारागण के मध्य चद्र अपनी ज्योत्सना प्रवाहित कर रहा हो। जो श्याम सलोनी मोहिनी मुद्रा के धारक है, जिनके नेत्रो से अनुकम्पा का वात्सल्यमय अमृत प्रवाहित हो रहा है, जिनकी ओजस्वी वाणी कर्णप्रिय होते हुए भी मन को झकझोर रही है, जो बब्बर शेर की तरह दहाड रहे हो ऐसे गणनायक गुरु गणेश उच्च पट्टासीन सारी परिषद् को पाप प्रक्षालिनी प्रवचनामृत धारा का पान करा रहे थे। बिना पूर्व परिचय ही के ऐसा प्रतीत होने लगा मानो अपने निकट सम्बन्धी हो। विधि युक्त वदन करके चरण स्पर्श किया। प्रथम दर्शन मे ही अन्तरात्मा बोल उठी– " यही जीवन नैय्या के खिवैया है।" इन्ही के चरणो मे जीवन रूपी लोहा स्वर्ण रूप मे रुपान्तरण पा सकता है। बस कर दे अपने को चरणो मे समर्पण। "

व्याख्यान पूर्ण हुआ। भाव विह्वलता के साथ चरणो मे झुकते हुए निवेदन किया– हे भगवन् ! कृपा दृष्टि पसारिये, तारिये, उबारिये मै आपके चरणो मे प्रव्रजित होने की आशा से आया हूँ। अचानक दीक्षार्थी के आगमन से परिषद् मे हर्ष की लहर प्रवाहित हो गई। अन्तर्भावाभिव्यक्ति के साथ ही आखे टकटकी लगाने लगी, कर्णेद्रिय मे पूर्ण उत्सुकता जगी कि कब श्रीमुख से स्वीकृति युक्त वचनामृत बरसे। लेकिन हुआ कुछ उल्टा ही। उत्तर मिला आशा से विपरीत। उस निर्लेपता के समुद्र ने अपनी गभीर मुद्रा मे फरमाया भाई ! आप कौन है ? कहॉ से आये हैं ? अभी न मै आपको जानता हूँ, न आप मुझे। दीक्षा कोई सुनहरी खिलौना नहीं है जो मैं आप को पकडाकर आपका मन प्रसन्न कर दू। तलवार की धार पर चलने से भी अधिक कठिन जिन शासन की दीक्षा है। इसलिए पहले आवश्यकता है इसकी शिक्षा की। आपकी भावना अच्छी है, परन्तु केवल भावुकता से काम नहीं चलता। आप सतो के पास आइये, सयमी जीवन की शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन को परखिये कि मे इस पर कितना चल सकता हूँ। यह कोई दो चार दिन, महीने–दो महीने का खेल नहीं, आजीवन की साधना हे। जिनके साथ जीवन निर्वाह करना है उनको भी देखिए कि मेरा जीवन इनके साथ निभ सकेगा या नहीं। इन सब बातो का गहनतापूर्वक चिन्तन मनन करने के बाद ही कुछ निर्णय लेना उपयुक्त ह।

सुनने वाले भी आश्चर्यचकित रह गये। चारो ओर कानाफूसी होने लगी। कोई कहता– यह है सच्चा साधुत्व, कोई कहने लगे– देखो, कहॉ यह महात्मा और कहॉ अन्य साधु। जो शिष्य के लोभ मे आज आया और कल मुडित करने की तत्परता। न जाति एव कुल का पता, नहीं देखत नाई–कुभार–तेली–तबोली, न जैनत्व का सस्कार। इतने मे तीसरा व्यक्ति बोल पडा–रे भाई ! ऐसे गैरो को मूडने से क्या ? जब तक मौज घुटती है, तब तक तो मौज उडाते हे। नहीं तो थोडी सी कमी पडते ही कपडे ओघे पात्र फैक रवाना हो जाते हैं। फिर नाक तो हमारे जेन समाज की ही कटती है पेसा और इज्जत दोनो का घाटा।

मुमुक्षु नाना के मन मे भी विचारो की उथल–पुथल मच गई। चिंतन करने लगे–कहॉ तो थोडी दीक्षा की भावना होते ही अन्य साधुजी आगे होकर के अपने पास दीक्षित होने हेतु अनेक प्रलोभनो द्वारा आकर्षण पैदा करने की चेष्टा करते है। लेकिन यहा तो मेरे द्वारा निवेदन करने पर भी निर्लिप्त उत्तर मिला। वास्तव मे ऐसे निर्लिप्त महापुरुष ही सच्चे मार्गदर्शक हो सकते है। आखिर दृढ निश्चय के साथ पूर्ण समर्पण भाव से श्री चरणो मे साधनारत हो गये।

वैराग्यावस्था के उत्कृष्ट आदर्श :

साधनारत पूज्य श्री के सान्निध्य मे आपके वेराग्यभावो की अनुपम वृद्धि होने लगी। एक सच्चे भाव साधु की तरह आपकी जीवन चर्या पूर्ण नियमित एव सयमित वन गई। जिसको देखकर बडे–बडे अनुभवी आपके भविष्य की उज्ज्वलता का अनुमान करने लगे। आप प्रत्येक क्रिया मे पूर्ण विवेक रखते। सरलता एव सादगी तो आपका स्वाभाविक गुण वन गया। आपकी सादगी इतनी थी कि आवश्यक वस्त्रो के अलावा यदि कोई आग्रह करता तो भी कभी कुछ लेने की इच्छा ही नहीं रहती। आपकी सादगीमय वेशभूषा से कोई पहचान ही नहीं सकता कि ये वेरागी हैं। साधना सुमेरू गुरु गणेश भी ऐसे निर्लिप्त थे कि उन्होने भी कभी किसी से परिचय भी नहीं कराया कि ये वैरागी है जिसके फलस्वरूप कई बार विहार मार्ग मे चने खाकर ही दिन निकालने पडे। उदयपुर जेसे शहर मे जब युवाचार्य श्री गणेश का पदार्पण हुआ, आप भी साथ मे ही थे। लेकिन किसी ने भोजन के लिए पूछा ही नहीं। विहार की थकान, भूख भी तीव्र होते हुए आपने सतो को भी पता नहीं पडने दिया कि भोजन किया या नहीं। ज्ञान ध्यान करते हुए जब देखा कि चार बजने आ रहे है तो एक समय खाने के बजाय उपवास कर लेना उपयुक्त है, यह निश्चय करके पूज्य गुरुदेव के चरणो मे आकर वन्दन करके उपवास पच्चक्खाने की अर्ज करने लगे। पास मे ही सुश्रावक गेहरीलाल जी खीमेसरा आदि पूज्य श्री की सेवा मे उपस्थित थे– इस प्रकार आपको उपवास पच्चक्खते देख पास मे खडे सन्तो ने कहा– आज विहार की थकान है तो उपवास का क्या कारण ? बस फिर क्या था– खीमेसरा जी को अनुमान लगाते देरी नहीं लगी कि इस उपवास का कारण हमारी लापरवाही ही है। आखिर विचक्षण आचार्य के चतुर उपासक ही तो थे। उस दिन आपको तो उपवास का सहज लाभ हो गया। लेकिन खीमेसरा जी को सारी रात पश्चाताप रहा। सवेरे उठते ही पूज्य श्री के दर्शन करके आपके (वैरागी श्री नाना) पास आये एव अपने साथ ही पारणे हेतु लेकर अपने घर पहुचे। आप मे शासननिष्ठा अटूट होते हुए भी अधभक्ति नहीं थी, शासन वृद्धि की अटूट भावना होते हुए भी सख्या की अपेक्षा गुणवत्ता को ज्यादा महत्त्व देते चाहे वह थोडी ही क्यो न हो। खीमेसरा जी के मन मे विरक्तात्माओ के प्रति आदर भाव होते हुए भी उनका परीक्षण करने मे भी नहीं हिचकते। सहयोग भी उतना ही देते जिससे कि उनके विरक्त भाव की उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहे। यही अन्य सघो से हुक्मसघ के श्रावको मे विशेषता है कि चाहे साधु हो या वैरागी– उनकी सयम साधना मे पूर्ण समर्पण भाव होते हुए भी असयमित प्रवृत्तियो

का कट्टर विरोध करते है। समाज के विकास कार्यो मे भी जहॉ आरभ परिग्रह का सम्बन्ध जुडता हो उसमे कभी साधु सतो का प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध जोडने की कोशिश नहीं करते। साधु सतो के निर्वद्य उपदेश से ही कर्त्तव्य बोध प्राप्त करके उसकी पूर्ति मे सलग्न हो जाना ही अपने आप मे अनूठा आदर्श है। स्वय भगवान् महावीर की वाणी कहती है–

'इंगियागारे संपण्णे, से विणीए त्ति वुच्चई।।"

आराध्य के इगिताकार को समझकर प्रवृत्ति करने वाला ही सच्चा विनीत उपासक है। उसका हर कार्य चाहे थोडा हो लेकिन ठोस एव स्थायी प्रभाव वाला होता है। आदेश के डण्डे या भय के भूत से डरकर कार्य करने वाला भक्त ही कैसा ?

जैसा कि कहा है–

" बिना कहे करे सो देवता, कहा करे इन्सान।
कहने पर भी न करे, वह पूरा हैवान।।"

गेहरीलाल जी खीमेसरा आपकी चालढाल का बारीकी सूक्ष्मता से परीक्षण करते हुए अपनी हवेली मे लेकर गये एव पानी का लोटा भरकर प्रस्तुत किया। लेकिन वैरागी जी ने हाथ मे लेने के पहले ही प्रश्न किया– यह धोवन है या कच्चा पानी ? श्रावकजी ने कहा– यह कच्चा पानी है। विरक्तमना ने कहा– मेरे कच्चे पानी पीने के त्याग है। यह सुनकर धोवन पानी मगाया गया फिर आपने पूछा कि यह कितनी देर का बना हुआ है ? पूर्ण स्पर्शा हुआ है या नहीं ? इस प्रकार पूर्ण शका समाधान होने पर ही पानी का लोटा हाथ मे लिया। धोवन पानी लेकर नीचे उतरने लगे तो खीमेसरा जी बोले– आप नीचे क्यो पधारते हैं ? इस बारी मे ही नालदा (नाली) है आप इस बारी मे ही धो लीजिए। हम सब यहीं धोते हैं।

आपने उत्तर दिया–नालदे मे समूर्च्छिम जीवो की हिसा की सभावना रहती है। ऊपर से पानी गिरने पर अयतना भी होगी इसलिए मैं नीचे ही जाकर निपट लूगा। इस प्रकार कहते हुए नीचे पधारे। सूखी जगह पर नीचे बैठकर थोडे पानी द्वारा आवश्यक क्रिया निपट आए। पारणा करके शीघ्र यह कहते हुए रवाना होने लगे कि समय अधिक लग गया।

ज्योही आप रवाना होने लगे तो खीमेसरा जी आपको रोकते हुए अपने खास कमरे मे ले जाकर कुछ नये वस्त्र एव नगदी रुपये देने लगे। लेकिन आपने यह कहते हुए स्पष्ट इकार कर दिया कि अभी मेरे पास दो जोडी हैं। इससे ज्यादा वस्त्रो की कोई आवश्यकता महसूस नहीं हो रही है। साथ ही रुपयो की जरुरत ही क्या है। समय पर भोजन कर ही लेता हूँ। तब खीमेसरा जी बोले– कभी कोई भोजन के लिए नहीं कहे या रास्ते मे घर नहीं हो तो मौके पर काम आयेगे, ये रुपये तो आपके पास मे रख लीजिए। यह सुनकर आपने कहा– अभी तो रास्ते की तकलीफ के लिए आप रुपये दे

देगे। लेकिन दीक्षा लेने के बाद कौन देगा, उस समय तो इन सब कष्टो को समभाव से सहना ही होगा। इसी शक्ति को तोलने के लिए ही तो साथ मे रह रहा हूँ ताकि दीक्षा लेने के बाद परिषह उत्पन्न होने पर मन सयम से विचलित न हो जाय। यह उत्तर सुनते ही खीमेसरा जी मोन हो गये। आप तो चलकर गुरु सेवा मे पधार गए लेकिन आपके उत्तर ने खीमेसरा जी के मन पर ऐसी छाप छोड दी कि वे सोचते ही रह गये कि इसे कहते है वैराग्य। ऐसी आत्माओ से ही शासन गौरवान्वित हो सकता है। बारम्बार भावी अरमानो के चित्र मस्तिष्क मे उभरने लगे। समय देखकर पूज्य श्री की सेवा मे उपस्थित हुए एव अर्ज करने लगे– भगवन ! वेरागी तो इस शासन मे बहुत देखे। लेकिन ऐसे विवेकी विक्तमना बहुत कम देखे। मैंने पूर्ण परीक्षा कर ली है– यह शत प्रतिशत उत्तीर्ण हे। मे आत्म विश्वास के साथ अर्ज करता हूँ कि यही आपके सच्चे उत्तराधिकारी बनेगे। युवाचार्य श्री बात सुनकर मुस्कराने लग गए।

मुनि जीवन मे प्रवेश ·

आपकी उत्कृष्ट विरक्त भावना, प्रखर बुद्धि तथा सयम की सजगता ने उदयपुर के प्रमुख श्रावको पर ऐसा प्रभाव डाला कि सब मिलकर इस निश्चय पर पहुचे कि इस दीक्षा के महान् लाभ को हाथ से जाने नहीं देना है। पूज्य श्री के चरणो मे अपना विचार अभिव्यक्त किया एव अपने पवित्र मनोरथ को सफल करने मे जुट गए। एक प्रतिनिधि मडल दाता पहुचा एव इस पुनीत लाभ की प्राप्ति हेतु भरसक प्रयत्न करने लगा। पारिवारिकजनो ने दीक्षा की अनुमति तो दे दी परन्तु अपने गाव मे दीक्षा देने का आग्रह किया। दीक्षा पौष शुक्ला अष्टमी वि स १९९६ को निश्चित हो गई लेकिन समस्या सामने उपस्थित थी कि आचार्य श्री के पास मे दीक्षा, दूर देशान्तरो से लोगो का आगमन, इतना विशाल आयोजन ! इसकी व्यवस्था छोटे से दाता गाव मे कैसे बैठेगी ?

कपासन– जो दाता का निकटवर्ती क्षेत्र है, जहा यातायात की सुविधा है और अनुशासन बद्ध श्रावको का विशाल समूह है। जिसकी आठ वर्ष पूर्व ही जवाहराचार्य के चातुर्मास से ख्याति फैली हुई थी। उस कपासन के सघ प्रमुखो के ज्योही इस पुनीत समाचार की महक मिली वे कहॉ चुप बैठने वाले–तुरत विचार विनिमय हुआ एव पहुचे गये दाता मे। यह दीक्षा का कार्य कपासन मे ही सम्पन्न हो, यह हमारी भावना है। कपासन एव दाता कोई अलग नहीं है। यहॉ पर भी तो हमको ही कार्य निपटाना होगा। इसमे आप तो साथ है ही, कपासन सघ का आबालवृद्ध तन, मन, धन से आपका सहयोगी है। पोखरना परिवार के हृदय मे बात जॅच गई एव कपासन श्री सघ को सफलता मिल गई।

इस अनमोल अवसर की प्राप्ति से कपासन का बच्चा–बच्चा क्या जैन, क्या जैनेतर पूर्ण उत्साहित हो उठा। जहा देखो एक ही चर्चा, एक ही उत्साह। पूर्ण पोखरना परिवार भी कपासन पहुच गया। सबकी सहमति पूर्वक युवाचार्य श्री के चरणो मे भी दीक्षा पर पधारने की विनती कर दी गई एव चौतरफ सब श्री सघो को दीक्षा महोत्सव का निमत्रण पहुचा दिया गया।

ज्यो–ज्यो दीक्षा का दिन निकट आने लगा, लोगो मे उत्साह का वेग बढता ही गया। घर–घर, गली–गली मे दीक्षा के गीतो की मगल 'ध्वनि गूज उठी। विशाल सत सती परिवार सहित युवाचार्य श्री का पदार्पण होते ही तो उत्साह द्विगुणित हो गया। चारो दिशाओ के देश देशान्तरो से जनमेदिनी दीक्षा महोत्सव मे सम्मिलित होने हेतु उमड पडी। पौष शुक्ला अष्टमी के दिन तो कपासन की गली–गली मे जहॉ देखो, वहॉ प्रान्तीय रग बिरगी वेशभूषाओ से सुसज्जित जन समूह ही जन समूह परिलक्षित होने लगा। पोखरना कुल भूषण वैरागी जी का अभिनिष्क्रमण चल समारोह अपने निवास स्थल से प्रारम्भ होकर मध्य बाजार मे पहुच गया। मेवाडी वेशभूषा मे सुसज्जित 'श्रृगार' मॉ की मुखमुद्रा पर मद मुस्कान खेल रही थी। चारो तरफ से जैनधर्म की जय, भगवान महावीर स्वामी की जय, आचार्य श्री जवाहर की जय, गणनायक युवाचार्य श्री गणेश की जय के गगनभेदी नारो से नभोमडल गूज उठा। बडी ही श्रद्धा से कोई वैरागी बधु पर चवर ढोलने लगे। कोई खोल भरने लगे। इस प्रकार चल समारोह मन्थर गति से बढता हुआ दीक्षा स्थल पर पहुचा। एक तरफ तो उछलती हुई तरगो से युक्त सरोवर, ठीक उसके समीप ही विशाल आम्र उपवन एव रगबिरगे शामियानो से वना दीक्षा मडप सब के मन को आह्लादित कर रहा था। एक उच्च पट्ट पर आसीन युवाचार्य श्री चतुर्विध सघ के मध्य तारागण मे चन्द्रसम सुशोभित हो रहे थे। जयनाद एव मगल गीत से गूजित अभिनिष्क्रमण जुलूस सभा मडप मे पहुचा। वैरागी बधु ने युवाचार्य श्री के चरणो मे पहुचकर विधि युक्त वदन किया। मगल पाठ श्रवण कर वेष परिवर्तन हेतु पास की ही पाठशाला मे पहुच गये। नाई ने मस्तक का मुडन किया। सासारिक वेश का परित्याग कर शुद्ध श्वेत केसर से मडित स्वलिग सूचक निर्मल चोलपट्टक, चादर, मुखवस्त्रिका, रजोहरण, पात्र सहित झोली आदि साधन से युक्त श्रमण परिधान को धारण किया। समग्र परिजनो के मगल आशीर्वादो के साथ गज गति से चलकर वैरागी बधु दीक्षा मडप मे पहुच गये। युवाचार्य श्री आदि सब सतो को वन्दन करके दीक्षा के मगल दान की अभ्यर्थना करने लगे।

युवाचार्य श्री ने सर्वानुमति से दीक्षा विधि प्रारभ की। सर्वप्रथम नवकार महामत्र के उच्चारण के साथ इच्छाकारेण के पाठ का उच्चारण किया, तदनन्तर 'तस्स उत्तरी करणेण, के पाठ का उच्चारण करके एक इच्छाकारेण एव दो लोगस्स के ध्यान का निर्देश दिया। ध्यान समाप्ति के बाद ही नवकार–महामत्र का उच्चारण कर ध्यान शुद्धि के पाठ का उच्चारण किया तत्पश्चात् लोगस्स के पाठ का प्रगट उच्चारण करके पुन सर्वानुमतिपूर्वक सर्वसावद्य योग की निवृत्ति रूप प्रतिक्रमण सूत्र का (करेमि भते की पाटी का) तीन बार उच्चारण करके मुनि धर्म मे प्रवेश कराया। फिर नमोत्थुण के पाठ से सिद्ध अरिहत की स्तुति करके शिखा लूचन किया। ज्योही अपनी पक्ति मे बिठाया तो चारो ओर से नवदीक्षित मुनि श्री नानालाल जी महाराज की जय से आकाश गूज उठा। युवाचार्य श्री के अन्तर्मन मे अलौकिक आह्लादमय अनुभूति हो रही थी मानो अपने उत्तराधिकारी की चिता से मुक्ति का आधार मिल गया।

नवदीक्षित मुनि–जीवन .

एकान्त कर्मबधन से विमुक्त इस मुनि जीवन को पाकर के नवदीक्षित मुनि नाना के अन्तर्मन मे परमानन्दानुभूति होने लगी। साथ ही मन मे बार–वार अनेक प्रश्न उभरते रहते कि इस मुनि जीवन को धारण करने के पीछे क्या उद्देश्य है ? उद्देश्य की सपूर्ति किस प्रकार हो ? गृहस्थो का पूर्ण आदर सत्कार युक्त सहयोग प्राप्त हो रहा है– उससे उऋण कैसे हुआ जाय ? ली गई प्रतिज्ञाओ का केसे सरक्षण हो ? इस प्रकार अनेकविध विचारो से मन मे उथल पुथल मचने लगी। उसके यथार्थ समाधान हेतु पूर्ण विनीत भाव से गुरुदेव को अर्ज करते–गुरुदेव भी अन्त वात्सल्यामृत का सींचन करते हुए योग्य समाधान देते। आप योग्य समाधान पाकर परम सतुष्ट होते हुए गुरुदेव के अभिप्रायो के अनुरूप ही जीवन को ढालने के लिए तत्पर रहते। गुरुदेव की आज्ञा को ही अपना जीवन धन मान लिया था। हर समय उठते–बैठते सोते जागते गुरुदेव की परछाई की तरह सच्चे अन्तेवासी के रूप मे अपने जीवन को ढालने को ध्येय सा बना लिया था।

गुरुदेव की कृपा दृष्टि से अल्पकाल मे ही अच्छा ज्ञानाभ्यास कर लिया। सैकडो थोकडे कण्ठस्थ करने के साथ ही हिदी, सस्कृत व प्राकृत आदि भाषाओ के ज्ञान मे भी अनुपम वृद्धि होने लगी। अनेक शास्त्रो के कठाग्र ज्ञान के साथ ही धीरे–धीरे टीका, चूर्णी, टब्बा आदि शास्त्रो का गहनता से अध्ययन करने लगे। 'लधु सिद्धात– कौमुदी' के साथ ही सस्कृत साहित्य का भी गहनतम अध्ययन किया। आपकी प्रतिभा एव तर्क शक्ति से अबिकादत्त जी जैसे विद्वान भी अच्छे प्रभावित थे। न्याय दर्शन के क्षेत्र मे प्रमाणनय तत्त्वालोक, षट्दर्शन समुच्चय, स्याद्वाद मजरी, स्याद्वाद– रत्नाकर रत्नाकरावतारिका आदि अनेक गहन ग्रन्थो का अध्ययन, कर्मग्रन्थ, कर्मकाण्ड आदि अनेक दिगम्बर, श्वेताबर मान्य ग्रन्थो का अध्ययन किया, पर दर्शनो का भी अच्छा अध्ययन करके आपने अपनी अलौकिक प्रतिभा का परिचय दिया।

निर्लिप्त साधना के आदर्श

इतनी उच्चकोटि की विद्वता प्राप्त कर लेने पर भी आपका जीवन अत्यत सरल सादा प्रतीत होता था। 'न किसी से दोस्ती, नहीं किसी से बैर' इस माध्यस्थ वृत्ति के कारण आप सबके प्रिय थे। आप साधकावस्था मे अल्प भाषी थे। गुरुदेव के इगिताकार पर चलना एव अपनी ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साधना मे सजग रहना– ये दो ही जीवन सूत्र निर्धारित कर लिये थे। आप उसमे इतने एकाग्र थे कि आपके पास बैठे सतो मे भी कभी विवाद हो जाता तो भी आपको मालूम नहीं पडता। कोई गुरुदेव के समक्ष आपकी साक्षी के लिए पूछ लेते तो सीधा सा उत्तर देते कि मेरा उपयोग नहीं था। कोई साध्विया या श्रावक श्राविकाए यदि आपकी सेवा करने की भावना व्यक्त करते तो आप उत्तर देते– आचार्य श्रीजी की सेवा कीजिए, इसमे महान लाभ है। ससारपक्षीय माताजी या अन्य कोई दर्शन हेतु आ जाते तो औपचारिक 'दया पालो' के अलावा उनके निकट सपर्क से हमेशा बचते ही रहना

चाहते थे। बडे सतो के पूछने पर भी कभी बोलने का प्रसग आता तो पूर्ण नपे तुले शब्दो का प्रयोग करते जिससे बडो की आशातना भी न हो तथा समाधान भी हो जाय— इस वृत्ति को देखकर बडे सत फरमाया करते— मुनि नानालाल जी तो घडी है। घडी की जब आवाज निकलती है तव सब लोग एकाग्रतापूर्वक सुनते हैं। क्योकि वह घडी सीमित आवाज देती है लेकिन फूटी झालर की आवाज को कोई एकाग्रता से नहीं सुनता क्योकि एक प्रहार पडने पर अनेक आवाज निकलती है।

प्रयोगात्मक साधना पथ :

सयमी जीवन मे प्रवेश के पश्चात् मुनि नाना ने ज्ञानार्जन मे अनुपम विकास किया। साथ ही साथ तप की आराधना मे भी आपने कमी नहीं रखी। उपवास, बेले, तेले, पचोले, अठाई आदि अनेक अनशन तप की आराधना की। साथ ही ऊनोदरी, रस—परित्याग आदि तप—साधना करते हुए एक—एक रोटी पर जीवन टिकाने का लबे समय तक प्रयोग करने लगे। अनेक बार आयबिल तप की साधना करने लगे। इस प्रकार के लबे प्रयोग से सग्रहणी जैसे भयकर रोग की उत्पत्ति मे आठ—आठ महीनो तक पानी की घूट भी नहीं ली केवल डाक्टर के निर्देशानुसार औषधोपचार चलता। मोन, स्वाध्याय, ध्यान, वैयावृत्य आदि तप तो आपका स्वाभाविक गुण बन गया था। उपधि की इतनी अल्प रखते जिससे आवश्यक कार्य निकल जाय। कभी—कभी बोरी (बारदान) के टाट को ही सर्दी मे ओढकर सो जाते। कपडे धोने का काम पडता तो उसी को पहन लेते। इस प्रकार अनेक पयोगो से साधना के मार्ग को प्रशस्त बनाने लगे।

अनुशास्ता के प्रति अटल श्रद्धा तथा पूर्ण समर्पण भाव :

साधक की साधना का मार्ग आराध्य के प्रति पूर्ण आस्था एव समर्पण भाव से प्रशस्त हो सकता हे। आपका यह दृढ विश्वास था। अनुशास्ता के प्रति चाहे कोई कितना ही अनर्गल प्रलाप करता तथा आपको भी उस ओर आकर्षित करने की कोशिश करता तो आप उसमे कभी रस नहीं लेते। आपकी साधना का दीर्घकाल तो आचार्य श्री की सेवा मे बीता, सिर्फ दो चातुर्मास सेवा एव औषधोपचार के कारण अलग करने पडे। उसमे बीकानेर विराजित सतो की सेवा मे रहने का प्रसग आया तो एक सन्त आपको आचार्य श्री के विपरीत बनाने हेतु मीठा बोलना, अच्छी वस्तुओ का आमत्रण करना आदि प्रलोभनो के साथ आपको विचलित करने का यत्न करने लगा। एक दिन वुखार आ गया तथा बहुत समय तक तबीयत ठीक नहीं होने के कारण थोडे सुस्त रहने लगे, तो अवसर देखकर उन साधु जी ने कहा— देखो, आचार्य श्री को तुम्हारी कोई चिता ही नहीं हे। नये साधु हो, अकेले छोड गये। यह सुनकर मुनि नाना ने कहा— हुजूर ! आचार्य हर समय कहाँ साथ रहेगे, अकेले कहाँ छोड गये— [illegible] सभालने वाले है ही। सत तो सतो के साथ रहते हें। यह उत्तर सुन उनका मुह बन्द हो गया। [illegible] से ऐसी प्रवृत्ति नहीं हुई। आपकी इतनी दृढ आस्था एव पूर्ण समर्पण भाव ने ही आपको उन्नति [illegible] शिखर पर चढाया है।

आचार्य श्री के अन्तरग कार्यो गे राहयोग

वि स २००० की आषाढ सुदी अष्टमी को ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज का स्वर्गवास हुआ। तव आप श्री भी अतिम समय तक सेवारत थे। आपकी गभीरता, सुलक्षणता से जवाहराचार्य को भी पूर्ण सतोष था। कभी–कभी युवाचार्य श्री गणेश को इनके गुणो का सकेत करते थे। इस प्रकार जवाहराचार्य के स्वर्गवास के पश्चात् सव उत्तरदायित्व युवाचार्य श्री पर आ गया। युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा आचार्य पद पर सुशोभित हुए। आप आचार्य श्री जी की सेवा मे अहर्निश रहते थे। आचार्य श्री को हर तरह से शाति मिले, यह आपका सजग ध्येय था। आपकी सेवा भावना, श्रद्धा, सजगता ने आचार्य श्री के अन्तर्हृदय मे स्थान जमा लिया था। धीरे–धीरे आपकी कार्य कुशलता से आचार्य श्री निश्चितता का अनुभव करने लगे। आचार्य श्री पर जव विराट श्रमण सघ का उत्तरदायित्व आ पडा तो उगकी सारी सुव्यवस्था मे आपका पूर्ण सहयोग रहा। श्रमण सघ की डावाडोल स्थिति मे अनेक अतेवासी सतो की मन स्थिति विषम वन गई। बडे–वडे सतो को आज्ञा वाहर भी घोषित करना पडा लेकिन आपने अपनी अटूट आस्था का परिचय दिया। वह साधुमार्गी धर्मसघ के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो से मडित रहेगा। आचार्य श्री गणेशीलाल जी म श्रमण सघ के उपाचार्य पद की प्राप्ति से लगाकर पद त्याग की विषम परिस्थिति तक आपने तन तोडकर परिश्रम किया। बडे–बडे सतो ने मुह मोड लिया पर आप अटल रहे। इधर उपाचार्य श्री की शारीरिक अस्वस्थता, इधर सघ की विषम स्थिति। सेठ छगनलाल जी मूथा (बैंगलोर) कहा करते थे कि समस्याओ के सुलझने के चितन मे रात्रि के बारह–बारह बज जाते– आज वह डेपुटेशन आया कल दूसरा आया काफ्रेन्स को जवाब देना, सतो के लफडो को मिटाना जैसी कई उलझने आई फिर भी आपने हिम्मत नहीं हारते हुए पूज्य श्री को पूर्ण निश्चित रखा। आपकी कार्य–कुशलता से पूज्य श्री पूर्ण विश्वस्त हो गये। जो भी विवाद होता, कोई सघ प्रमुख आते तो वे आपके पास भेज देते। आप उन मामलो को निपटाते हुए पूज्य श्री को अर्ज कर देते। इस प्रकार आचार्य श्री ने एक दिन शारीरिक अस्वस्थता को देखकर अपने प्रतिनिधि के रूप मे आपका नाम घोषित कर दिया।

श्रमण सघ की बिगडती हुई परिस्थिति को सभालने मे आचार्य श्री ने खून पसीना एक कर दिया। अपनी शारीरिक कमजोरी का भी ध्यान नहीं रखा। लेकिन किसी भी परिस्थिति मे सुधार का कोई लक्षण नहीं देखकर सस्कृति की सुरक्षा हेतु मानापमान की परवाह न करते हुए विराट श्रमण सघ के सर्व अधिकारो से परिपूर्ण उपाचार्य पद का सकारण त्याग कर दिया। इसमे भी सुधार की प्रशस्त भावना काम कर रही थी कि अब भी समाज की ऑख खुले। लगातार तीन वर्षो के लम्बे इतजार मे भी कोई आशाजनक प्रतिक्रिया परिलक्षित नहीं हुई। इधर आचार्य श्री के शरीर मे भी रोग ने अड्डा जमा लिया।

इस परिस्थिति को देखकर आपके चतुर्विध सघ मे एक चिता सी व्याप्त हो गई। पूज्य श्री के चरणो मे अपनी फरियाद करने लगा—नाथ ! आपने क्राति तो मचा दी लेकिन अव दिनोदिन आपकी शारीरिक कमजोरी को देखते हुए भविष्य मे हमारा नेतृत्व कोन सभाले ? किससे हम विचार विमर्श करे ? चतुर्विध सघ की भावना का आदर करते हुए आचार्य श्री ने गहन चितन किया। साधु साध्वियो पर दृष्टि डाली, तत्कालीन दुरुह परिस्थिति का गहनता से चितन किया। व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म सा, पडित रत्न श्री समर्थमल जी म सा, बहुश्रुत श्री पन्नालाल जी म सा आदि अनुभवी अन्य सत मुनिराजो एव महासतियो, श्रावक—श्राविकाओ की सहमति ली गई। आपकी अन्तरात्मा ने प मुनि श्री नानालाल जी म को यह भार सोंपना उचित माना। यथायोग्य अवसर देखकर चतुर्विध सघ के समक्ष आपने पडित मुनि श्री नानालाल जी म सा को अपने उत्तराधिकारी के रूप मे घोषित कर दिया। इस घोषणा से सर्वत्र हर्ष की लहर व्याप्त हो गई।

घोषणा की प्रतिक्रिया

उपरोक्त घोषणा होते ही समस्त चतुर्विध सघ मे अनेकविध प्रतिक्रियाएँ उभर आई। कोई श्रमण अपनी अभिलाषा पर तुषाराघात समझकर विमुख बनने लगे तो कोई अपने शिष्य—शिष्या के मोह मे पडकर विपरीत वातावरण पैदा करने लगे। कई इस घोषणा से प्रसन्न होते हुए भी आपकी निर्लिप्त वृत्ति से चिंतित थे। क्योकि आपको अन्य वाते तो दूर, सघ के साधु साध्वियो का भी पूरा परिचय नहीं था। अपनी धुन मे ही मस्त रहने की वृत्ति ही ज्यादा प्रिय थी। चारो तरफ से विरोधी वातावरण की ज्वालाए भी लपटे उडा रही थी। श्रमण सघीय शिथिलाचार के विष का प्रभाव हुक्म सघ के साधको पर भी कोई कम नहीं पडा। आचार्य श्री ने तो इस सगठन के नाम पर स्वच्छदाचार व शिथिलाचार का मूल से उच्छेदन करने का सकल्प धारण कर लिया था। उनकी तो एक ही तमन्ना थी कि अपने जीवन काल मे आचार्य श्री जवाहर की कल्पना के अनुसार एक आचार्य के नेतृत्व मे शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित्त, विहार, श्रद्धा, प्ररुपणा आदि समग्र सयमोचित क्रियाओ को पूर्ण अनुशासन बद्ध साधने के सकल्प वाले साधक वर्ग का, चाहे सख्या मे अल्प ही क्यो न हो सुसगठित समूह देखना चाहता हूँ। कई साधु साध्वियो ने आचार्य श्री के अरमानो का सत्कार करते हुए आलोचना प्रायश्चित्त करके शुद्धिकरण के साथ अनुशासन बद्ध चलने की स्वीकृति दी। जिनकी ऐसी तेयारी नहीं देखी चाहे स्वय के शिष्य भी थे, उनके साथ भी सम्बन्ध—विच्छेद की घोषणा करने मे कुछ भी नहीं हिचकिचाये। फलत पूर्ण निष्ठावान साधु—साध्वियो का अल्प समूह ही अवशेष रह गया।

यह देखकर कई वृद्ध श्रावको ने निवेदन किया गुरुदेव ! आपने युवाचार्य की घोषणा तो कर दी है लेकिन सन्त तो थोडे ही रहे हैं। उसमे भी अधिकाश स्थविर सन्त हैं, कैसे गाडी [illegible] चलेगी ?

आचार्य श्री ने मुस्कान भरे शब्दो मे फरमाया— श्रावक जी ! [illegible]

आचार्य श्री के अन्तरग कार्यो मे सहयोग

वि स २००० की आषाढ सुदी अष्टमी को ज्योतिर्धर आचार्य श्री जवाहरलाल जी महाराज का स्वर्गवास हुआ। तव आप श्री भी अतिम समय तक सेवारत थे। आपकी गभीरता, सुलक्षणता से जवाहराचार्य को भी पूर्ण सतोष था। कभी-कभी युवाचार्य श्री गणेश को इनके गुणो का सकेत करते थे। इस प्रकार जवाहराचार्य के स्वर्गवास के पश्चात् सब उत्तरदायित्व युवाचार्य श्री पर आ गया। युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा आचार्य पद पर सुशोभित हुए। आप आचार्य श्री जी की सेवा मे अहर्निश रहते थे। आचार्य श्री को हर तरह से शाति मिले, यह आपका सजग ध्येय था। आपकी सेवा भावना, श्रद्धा, सजगता ने आचार्य श्री के अन्तर्हृदय मे स्थान जमा लिया था। धीरे-धीरे आपकी कार्य कुशलता से आचार्य श्री निश्चितता का अनुभव करने लगे। आचार्य श्री पर जव विराट श्रमण सघ का उत्तरदायित्व आ पडा तो उसकी सारी सुव्यवस्था मे आपका पूर्ण सहयोग रहा। श्रमण सघ की डावाडोल स्थिति मे अनेक अतेवासी सतो की मन स्थिति विषम वन गई। वडे-वडे सतो को आज्ञा वाहर भी घोषित करना पडा लेकिन आपने अपनी अटूट आस्था का परिचय दिया। वह साधुमार्गी धर्मसघ के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो से मडित रहेगा। आचार्य श्री गणेशीलाल जी म श्रमण सघ के उपाचार्य पद की प्राप्ति से लगाकर पद त्याग की विषम परिस्थिति तक आपने तन तोडकर परिश्रम किया। बडे-बडे सतो ने मुह मोड लिया पर आप अटल रहे। इधर उपाचार्य श्री की शारीरिक अस्वस्थता, इधर सघ की विषम स्थिति। सेठ छगनलाल जी मूथा (वैगलोर) कहा करते थे कि समस्याओ के सुलझने के चितन मे रात्रि के बारह-बारह वज जाते- आज वह डेपुटेशन आया कल दूसरा आया कान्फ्रेन्स को जवाब देना, सतो के लफडो को मिटाना जेसी कई उलझने आई फिर भी आपने हिम्मत नहीं हारते हुए पूज्य श्री को पूर्ण निश्चित रखा। आपकी कार्य-कुशलता से पूज्य श्री पूर्ण विश्वस्त हो गये। जो भी विवाद होता, कोई सघ प्रमुख आते तो वे आपके पास भेज देते। आप उन मामलो को निपटाते हुए पूज्य श्री को अर्ज कर देते। इस प्रकार आचार्य श्री ने एक दिन शारीरिक अस्वस्थता को देखकर अपने प्रतिनिधि के रूप मे आपका नाम घोषित कर दिया।

श्रमण सघ की बिगडती हुई परिस्थिति को सभालने मे आचार्य श्री ने खून पसीना एक कर दिया। अपनी शारीरिक कमजोरी का भी ध्यान नही रखा। लेकिन किसी भी परिस्थिति मे सुधार का कोई लक्षण नहीं देखकर सस्कृति की सुरक्षा हेतु मानापमान की परवाह न करते हुए विराट श्रमण सघ के सर्व अधिकारो से परिपूर्ण उपाचार्य पद का सकारण त्याग कर दिया। इसमे भी सुधार की प्रशस्त भावना काम कर रही थी कि अब भी समाज की ऑख खुले। लगातार तीन वर्षो के लम्बे इतजार मे भी कोई आशाजनक प्रतिक्रिया परिलक्षित नही हुई। इधर आचार्य श्री के शरीर मे भी रोग ने अड्डा जमा लिया।

इस परिस्थिति को देखकर आपके चतुर्विध सघ मे एक चिता सी व्याप्त हो गई। पूज्य श्री के चरणो मे अपनी फरियाद करने लगा—नाथ ! आपने क्राति तो मचा दी लेकिन अब दिनोदिन आपकी शारीरिक कमजोरी को देखते हुए भविष्य मे हमारा नेतृत्व कौन सभाले ? किससे हम विचार विमर्श करे ? चतुर्विध सघ की भावना का आदर करते हुए आचार्य श्री ने गहन चितन किया। साधु साध्वियो पर दृष्टि डाली, तत्कालीन दुरुह परिस्थिति का गहनता से चितन किया। व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म सा, पडित रत्न श्री समर्थमल जी म सा, बहुश्रुत श्री पन्नालाल जी म सा आदि अनुभवी अन्य सत मुनिराजो एव महासतियो, श्रावक—श्राविकाओ की सहमति ली गई। आपकी अन्तरात्मा ने प मुनि श्री नानालाल जी म को यह भार सौपना उचित माना। यथायोग्य अवसर देखकर चतुर्विध सघ के समक्ष आपने पडित मुनि श्री नानालाल जी म सा को अपने उत्तराधिकारी के रूप मे घोषित कर दिया। इस घोषणा से सर्वत्र हर्ष की लहर व्याप्त हो गई।

घोषणा की प्रतिक्रिया

उपरोक्त घोषणा होते ही समस्त चतुर्विध सघ मे अनेकविध प्रतिक्रियाएँ उभर आई। कोई श्रमण अपनी अभिलाषा पर तुषाराघात समझकर विमुख बनने लगे तो कोई अपने शिष्य—शिष्या के मोह मे पडकर विपरीत वातावरण पैदा करने लगे। कई इस घोषणा से प्रसन्न होते हुए भी आपकी निर्लिप्त वृत्ति से चितित थे। क्योकि आपको अन्य बाते तो दूर, सघ के साधु साध्वियो का भी पूरा परिचय नहीं था। अपनी धुन मे ही मस्त रहने की वृत्ति ही ज्यादा प्रिय थी। चारो तरफ से विरोधी वातावरण की ज्वालाए भी लपटे उडा रही थी। श्रमण सघीय शिथिलाचार के विष का प्रभाव हुक्म सघ के साधको पर भी कोई कम नहीं पडा। आचार्य श्री ने तो इस सगठन के नाम पर स्वच्छदाचार व शिथिलाचार का मूल से उच्छेदन करने का सकल्प धारण कर लिया था। उनकी तो एक ही तमन्ना थी कि अपने जीवन काल मे आचार्य श्री जवाहर की कल्पना के अनुसार एक आचार्य के नेतृत्व मे शिक्षा, दीक्षा, प्रायश्चित्त, विहार, श्रद्धा, प्ररुपणा आदि समग्र सयमोचित क्रियाओ को पूर्ण अनुशासन बद्ध साधने के सकल्प वाले साधक वर्ग का, चाहे सख्या मे अल्प ही क्यो न हो, सुसगठित समूह देखना चाहता हूँ। कई साधु साध्वियो ने आचार्य श्री के अरमानो का सत्कार करते हुए आलोचना प्रायश्चित करके शुद्धिकरण के साथ अनुशासन बद्ध चलने की स्वीकृति दी। जिनकी ऐसी तैयारी नहीं देखी, चाहे स्वय के शिष्य भी थे, उनके साथ भी सम्बन्ध—विच्छेद की घोषणा करने मे कुछ भी नहीं हिचकिचाये। फलत पूर्ण निष्ठावान साधु—साध्वियो का अल्प समूह ही अवशेष रह गया।

यह देखकर कई वृद्ध श्रावको ने निवेदन किया गुरुदेव ! आपने युवाचार्य की घोषणा तो कर दी है लेकिन सन्त तो थोडे ही रहे हैं। उसमे भी अधिकाश स्थविर सत हैं, कैसे गाडी आगे चलेगी ?

आचार्य श्री ने मुस्कान भरे शब्दो मे फरमाया— "श्रावक जी ! हीरे थोडे हो तो भी करोड पति

बनते देर नहीं लगगी। मैने वहुत चितन करके निर्णय लिया है, न कि स्वार्थ वुद्धि से। इस पूजी का मूल्याकन अभी मेरे रहते नहीं होगा परन्तु बाद मे आप मुझे ही क्या, पूर्वजो को भूल जायेगे। यह ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अलौकिक निधि हे। इन्होने मेरी अनन्य सेवा की है, मुझे हाथो मे थुकाया है। ये शासन को खूब चमकायेगे। इनके पीछे शिष्यो की कतार लग जायेगी। आप भी आश्चर्य करने लगेगे। आचार्य श्री के इन वचनो ने चतुर्विध– सघ मे अपूर्व श्रद्धा की धारा प्रवाहित कर दी लेकिन इन सव बातो मे आप बिल्कुल असहमत थे। समय–समय पर गुरुदेव एव वुजुर्ग श्रावको को अर्ज करते रहते कि मेरा नाम इस चित्र से हटा दिया जाय लेकिन कहावत हे– 'त्यागे सो आगे।' आप ज्यो–ज्यो आग्रह करते, आचार्य श्री का एक ही उत्तर होता था। आपको किसने पूछा ? आपका काम तो आज्ञा पालन का है। इससे आगे कुछ बोलने की आवश्यकता अभी नहीं। किन्हीं श्रावको ने आपको ननुनच करते देख यहॉ तक कह दिया कि आप आचार्य श्री को क्यो अशाति पहुचाते हो। आखिर आपको भी मौन साधना पडा। समस्त चतुर्विध सघ ने मिलकर यह निर्णय किया– आचार्य श्री की तवीयत को देखते यथाशीघ्र आपके कर कमलो द्वारा ही इस रस्म की पूर्ति कर दी जाय। वस फिर क्या था सबसे विचार विमर्श से जो तिथि निश्चित हुई– वह पवित्र तिथि वि सवत् २०१९ की आसोज शुक्ला द्वितीया थी।

युवाचार्य चादर महोत्सव :

ज्योही इस पावन पद महोत्सव की सूचना प्रसारित हुई, देश देशान्तरो से श्रद्धालु जनता उमड पडी। आसोज सुदी द्वितीया के दिन तो लगभग तीस हजार की जनता इकट्ठी हो गई। चादर महोत्सव का भव्य आयोजन राजमहल के विशाल प्रागण मे, जहॉ खडी रहकर जनता हिन्दू कुल सूर्य महाराणा के सूरज गोखडे से दर्शन करती थी उसी सूर्य गोखडे के ठीक नीचे ही पाट सुशोभित था। रग बिरगे शामियानो से मैदान सुसज्जित था, जिसमे सबसे आगे अपने उमरावो सहित महाराणा भगवतसिह जी अन्य प्रतिष्ठित सज्जनो के साथ विराजित थे। पीछे तीस हजार की विशाल जनमेदिनी थी। इधर आचार्य श्री के चलने की असमर्थता के कारण पालकी मे बिठाकर सतो का समूह युवाचार्य श्री के साथ सभा स्थल पर पहुचा। पीछे साध्वी मडल भी आ पहुचा। पीछे युवाचार्य श्री की ससार पक्षीय मातेश्वरी सिणगारबाई को पारिवारिक सदस्य पालकी मे बैठाकर ले आये। वह माता भी आज बहुत हर्षित थी, कि उसकालाल जिनशासन के सम्राट पद पर सुशोभित होने जा रहा था। सारी जनता अन्तर्हृदय से धन्य–धन्य की आवाज निकाल रही थी– धन्य हो इस रत्नकुक्ष धारिणी माता को। आचार्य श्री के मुखारविन्द से मगलाचरण के पश्चात् नदीसूत्र का स्वाध्याय किया गया। उसके बाद आचार्यश्री का प्रासगिक प्रवचन हुआ तदनन्तर चतुर्विध सघ ने मिलकर केशर से मडित श्वेत चादर पहले आचार्य श्री को ओढाकर अपनी पूर्ण श्रद्धा भक्ति समर्पित की तत्पश्चात् वही चादर आचार्य श्री ने चतुर्विध सघ की सहमतिपूर्वक अपने शरीर से उतार कर युवाचार्य श्री नानालालजी म सा की

जय से गगन मडल गूज उठा। तत्क्षण आवाज उठी–

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना।
लाल चमकसी भानु समाना।।

समस्त चतुर्विध सघ ने एक साथ युवाचार्य श्री को वदन करके पूर्ण श्रद्धा भाव समर्पण करते हुए आपके अनुशासन मे चलने की दृढ प्रतिज्ञा दोहराई। आचार्य श्री ने भी चतुर्विध सघ को उद्बोधन देते हुए फरमाया कि जिस प्रकार मेरे प्रति श्रद्धा भाव रखते हुए शासन का गौरव रखा वैसी ही युवाचार्य श्री की आज्ञा पर पूर्ण चतुर्विध सघ चले, यही मेरा निर्देश है। युवाचार्य श्री जी पूर्वजो की परम्परा का गौरव रखते हुए शासन की अनुपम वृद्धि करे। आपके शासन की अधिक से अधिक अभिवृद्धि हो, इसी शुभकामना के साथ हार्दिक आशीर्वाद है। युवाचार्य श्री ने भी अपने प्रासगिक प्रवचन मे कहा– इस गौरवपूर्ण उत्तरदायित्व के वहन मे समस्त चतुर्विध सघ का हार्दिक सहयोग अपेक्षित है। अनुशासन बद्ध होते हुए ही हम सब आचार्य श्री के स्वप्न को साकार कर सकते है। मगल पाठ श्रवण कर सभा विसर्जित हुई। ठीक उसी पावन प्रसग पर अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन सघ की विधिवत् स्थापना हुई।

साधुमार्गी जैन सघ .

साधुमार्गी जैन सघ का नामकरण ही अन्तर्निहित भावो की अभिव्यक्ति का द्योतक है। साथ ही उसकी अपनी प्राचीनता के एव वर्तमान वातावरण के परिप्रेक्ष्य मे प्रचलित धर्म सघ के अर्वाचीन का परिपोषक है क्योकि हमारा सर्वमान्य महामत्र–नवकार अनादि सिद्ध है। उसके पाच पदो मे से चार पद साधु के है और एक साधना की सिद्धि का द्योतक सिद्ध पद है।

साधुत्व की साधना को ग्रहण करने वाली साधक आत्माओ मे से जिन नाम कर्म की पुण्य निधि के उदय से युक्त आत्माएँ उत्तरोत्तर वृद्धि करती हुई साधुत्व की उच्च भूमिका रूप अरिहत पद पर पहुचकर भव्यो को आत्मोद्धार का मार्ग प्रदर्शित करती है, वही साधुमार्ग है। उसी साधुमार्ग का अनुसरण करने वाला उपासक वर्ग साधुमार्गी कहलाता है। उन्हीं साधुमार्गियो का समूह साधुमार्गी सघ के रूप मे निर्धारित होता है। उस साधुमार्गी सघ मे श्रमण, श्रमणी, श्रमणोपासक, श्रमणोपासिका या प्रचलित भाषा मे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप चारो तीर्थो का समावेश हो जाता है– यह हुई साधुमार्गी जैन सघ की अनादि अनत परिभाषा।

साथ ही जब–जब जिस क्षेत्र मे नये तीर्थकरो द्वारा इसकी स्थापना होती है तो उस समय उस क्षेत्राश्रित साधुमार्गी सघ की सादि अनत सिद्धि हुई।

आसन्न भूतकाल मे भी हमारे धर्म का साधुमार्गी जैन सघ नामकरण था। इसकी प्रामाणिकता की पुष्टि अनेक महत्वपूर्ण ग्रथो से मिलती है। जैसे–जयध्वज। जिसमे पूज्य श्री जयमलजी महाराज

ने दडियो का मान मर्दन करते हुए शुद्ध साधुमार्गी धर्म का प्रचार किया। 'मरुधर केशरी अभिनन्दन ग्रन्थ'' मे भी 'वलकल युग के तीन महापुरुष' – लेख मे लोकाशाह ने शुद्ध साधुमार्ग प्ररुपित किया, ऐसा उल्लेख है। अगरचद नाहटा (वीकानेर) द्वारा लिखित ''ऐतिहासिक काव्य सग्रह'', सैद्धातिक प्रश्नोत्तरी, आचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज द्वारा लिखित– 'दण्डी दर्पण,' 'दिवाकर दिव्य ज्योति, ''जवाहराचार्य जीवन चरित्र'' आचार्य अमोलक ऋषिजी द्वारा लिखित शास्त्र एव ग्रन्थो मे साधुमार्गी सघ की ही पुष्टि मिलती है। लेकिन समय–समय पर धर्म सघ मे अनेक सेद्धातिक आचार विचार एव कल्प व्यवस्था मे मतभेदो का प्रादुर्भाव हुआ। प्रभु ऋषभ के शासनकाल मे ही तीन सो त्रेसठ पाखण्ड मत बन गये। स्वय प्रभु महावीर की उपस्थिति मे ही साधको मे जिनकल्प एव स्थविर कल्प के रूप मे विभाजन हुआ। फिर एकान्त पक्षान्धता के कारण त्रैराशिक, दो क्रियावादी आजीवक आदि अनेकमत एव सप्रदाएँ खडी हो गई। प्रभु महावीर निर्वाण के छ सो नव (६०९) वर्ष पश्चात् तो शिवभूति के वस्त्र त्याग के हठाग्रह से दिगम्बर सम्प्रदाय बना। छ सो सत्तर (६७०) मे द्वादश वर्षीय दुष्काल के प्रभाव से अन्य मतियो के आडम्बरमय आकर्षण से बचाने हेतु जिनविम्ब की स्थापना हुई तो मूर्तिपूजक सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ। उसके भी अनेक गच्छ विकसित हो गये। भस्म ग्रह के प्रभाव की मदता होने पर पुन लोकाशाह ने क्राति की। शुद्ध साधुमार्ग का स्वरूप जनता के समक्ष रखा जिससे प्रभावित होकर जगोजी आदि पैतालीस व्यक्तियो ने ज्ञान जी ऋषि के पास दीक्षा ली एव बावीस विभागो मे विचरने लगे तो उनका लूका गच्छ नाम दे दिया। धर्म प्रचार करते हुए साधुओ के ठहरने को मकान आदि मिलने मे बहुत कठिनाई को देखकर पुराने ढूढो– (खडहरो) मे दिनरात व्यतीत करने पडते तो उनको चिढाने हेतु 'ढूढिया' शब्द की रचना हुई। जीवराज जी, हरजी, धर्मसिह जी, धर्मदासजी, लवजी ऋषि इन पच क्रियोद्धारो के तप तेज से प्रभावित होकर लोगो मे पुन जागृति आई। लोगो ने जड पूजा का परित्याग कर निरवद्य गुणपूजा की साधना हेतु सब एक स्थान पर एकत्रित होने लगे। वे साधु सत भी वहाँ निवास करने लगे तो उनको भी उकसाने हेतु ''स्थानकवासी'' कहा जाने लगा।

फिर आचार्य रुघनाथजी ने अपने शिष्य भीकमजी को दया दान की मिथ्या प्ररुपणा से तेरह (१३) व्यक्तियो के साथ सघ से निष्कासित किया, उसका ''तेरहपन्थ'' के नाम से प्रचलन हो गया। कुल सरलता एव कुछ हठाग्रह के कारण वे नाम रुढ हो गये जो वर्तमान समय तक चले आ रहे है। हुआ, यही, मूल साधुमार्ग नाम गौण हो गया।

पुन विक्रम की उन्नीसवीं सदी मे पूज्य हुक्मेश ने शुद्ध साधुमार्ग का प्ररूपण करते हुए साधु जीवन मे व्याप्त विकृति का प्रतिकार करते हुए क्रियोद्धार किया तब से उनके मार्ग निर्देशन पर चलने वाला उपासक वर्ग साधुमार्गी सघ के नाम से पहचाना जाने लगा। ऐसा कान्फ्रेन्स के स्वर्ण–जयन्ती विशेषाक आदि महत्त्वपूर्ण अनेक ग्रन्थो से प्रमाणित होता है। उन ग्रन्थो मे उल्लेख है कि साधुमार्गी सघ के आचार्य हुकमीचद जी म सा आदि।

पुन सघ मे सगठन की आवाज उठी। सम्मेलन हुए। एक अविभाज्य श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण सघ की स्थापना हुई। जिसमे सम्मानार्थ आचार्य पद पर आत्माराम जी महाराज एव सर्व सत्ताधिकारी उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी महाराज का निर्वाचन हुआ। बडी आशाए उमगे थी, सगठन की स्थिति पक गई, ऐसा आभास परिलक्षित हो रहा था। लेकिन सगठन की भूमिका मे बाधक विकारी तत्त्व पूर्ण शल्य चिकित्सा की कमी के कारण समय देख पुन उभर आये। हुआ यही, बना बनाया महल ढहने लग गया। विकारी तत्वो की सक्रामकता इतनी बढ गई कि बडे–बडे कर्णधारो को अपनी सयम सुरक्षा हेतु इससे किनारा लेना पडा। स्वय उपाचार्य श्री ने खूब प्रयत्न पूर्वक आठ–नव वर्ष तक सभालने की कोशिश की, लेकिन दिनो दिन बढती हुई स्वच्छन्द वृत्ति, शिथिलाचार तथा भ्रष्ट वातावरण को देखकर अपनी व सस्कृति की सुरक्षा हेतु सबको सजग रहने हेतु ललकारते हुए अपने विशिष्ट गौरवमय पद को त्याग दिया। भविष्य की सुसगठित भूमिका का द्वार खुला रखते हुए उन्होने पद त्यागपत्र दे दिया। इस सक्रामक रोग ने हमारी सस्कृति की रक्षा करने वाली सस्था अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन काफ्रेन्स को भी धर दबोचा। स्थिति यह बनी कि रक्षक ही सस्कृति के भक्षक बनने लगे। समाज के अग्रगण्य जिन्होने सस्कृति रक्षण के उद्देश्य से सुसगठन को मजबूत बनाने हेतु कान्फ्रेन्स की स्थापना की थी। उसके वर्तमान पदाधिकारी ही वाहवाही के लोभ मे बढते शिथिलाचार को बढाने मे सहयोगी बनने लगे। आखिर कान्फ्रेन्स के भी टुकडे हो गये। समाज प्रमुख सेठ छगनलाल जी मूथा, हीरालाल जी सा नादेचा, नाथूलाल जी सेठिया आदि अनेक व्यक्तियो ने भी आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की शात क्राति को आगे बढाने हेतु जिस दिन पडित मुनि श्री नानालालजी म सा को युवाचार्य पद प्रदान किया गया, उसी पावन दिवस सवत् २०१९ आसोज सुदी २ को एक विराट् सुसगठन के रूप मे अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन सघ की विधिवत् स्थापना की जिसका पवित्र उद्देश्य सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अभिवृद्धि करते हुए इनका सरक्षण करना था। आज यह सघ अपनी अतुलनीय अभिवृद्धि करता हुआ जन–जन के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। अल्पावधि मे इस धर्मसघ मे दो सौ से अधिक मुमुक्षु आत्माए दीक्षित हो चुकी है। अनेकानेक दीक्षित होने के लिये उत्सुक हो रही हैं। यह सब अपने आप मे महान् ऐतिहासिक उपलब्धि है। वे अपनी अल्प दीक्षा पर्याय मे भी अपनी विद्वत्ता, आचार, साहित्य, मिलनसारिता एव सघ व सघपति के प्रति पूर्ण समर्पित होते हुए मर्यादानुसार अपने धर्मसघ की अभिवृद्धि मे अनुपम सहयोग दे रहे है।

ऐसे ही श्रावक श्राविका वर्ग भी पूर्ण विवेक सहित अपनी कर्त्तव्यपरायणता से सस्कृति की अक्षुण्णता के साथ तन, मन, धन से इस धर्म सघ की अभिवृद्धि मे जी जान से तत्पर है।

सघ वरिष्ठो के कुशल नेतृत्व मे साहित्य प्रकाशन समिति, धार्मिक परीक्षा बोर्ड–बीकानेर, धार्मिक शिक्षणशालाए, छात्रवृत्ति, छात्रावास, जैनोलोजी, शिक्षा–सोसाइटी, महिला समिति, आर्ट प्रेस, स्वधर्मी–सहयोग, जीवदया, समता प्रचार सघ, धर्मपाल प्रचार–प्रसार समिति, वीर सघ, समता युवा सघ,

महिला युवती सघ, समता बालक–बालिका मण्डल, मूथा योजना, आगम प्रकाशन, अनेक लाइब्रेरी एव गणेश ज्ञान भडार, उद्योग मदिर आदि अनेक वहुआयामी सस्थाए प्रगति पथ पर आरूढ होती हुई समाज, राष्ट्र एव धर्म के गौरव की अभिवृद्धि मे पूर्ण सहयोग दे रही है।

इस धर्म सघ का प्रतिवर्ष उसके स्थापना दिवस पर अधिवेशन आयोजित होता है, जिसमे भारत के कोने–कोने से हजारो श्रद्धालुगण एकत्र होते हैं। उसी समय महिला सघ, युवा सघ आदि का भी अधिवेशन होता है, जिसमे गत वर्ष की आय व्यय के साथ ही आगामी वजट पास किया जाता है। सब छोटे–बडे, अमीर–गरीव सघ सदस्यो का मधुर मिलन होता है। एक दूसरे के दिल मे पूर्ण सौहार्द्र की भावना परिलक्षित होती है। कभी भी आपसी वेमनस्य का प्रसग ही प्रस्तुत नहीं होता हे। सबकी एक ही भावना रहती हे– हमारा धर्म सघ दिन प्रतिदिन वृद्धिगत हो।

आचार्य पद ·

युवाचार्य के उत्तरदायित्व को वहन करते ही आपके कधो पर पूर्ण जिम्मेवारी आ पडी। चारो तरफ से विरोध के काले बादल उमड–घुमडकर मडरा रहे थे, तो दूसरी तरफ आचार्य श्री गणेश की शारीरिक स्थिति प्रतिदिन कमजोर होती जा रही थी। चतुर्विध सघ वडी विचित्र परिस्थिति से गुजर रहा था। जिनको मित्र माना जा रहा था, वे ही परिस्थिति का नाजायज लाभ उठाने मे अपनी अन्तरग शत्रुवृत्ति का परिचय दे रहे थे। ऐसी विकट परिस्थिति मे भी आपने पूर्ण धैर्य के साथ विचक्षणतापूर्वक सघ की बागडोर सभाल ली। स्थविर पद विभूषित सूरजमल जी म सा तथा कर्मठ सेवाभावी, धायमातृ पदालकृत इन्द्रचन्द जी म सा का सहयोग भुलाया नहीं जा सकता। आपके अतुल सहयोग से ही कार्तिक सुदी १३ वि स २०१९ को पडित रत्न श्री सेवन्त मुनि जी महाराज की दीक्षा सम्पन्न हुई।

चातुर्मास की परिसमाप्ति के साथ ही तो अपने आराध्य की शारीरिक अस्वस्थता के समाचार सुनकर चारो ओर से साधु साध्वी विहार करके उदयपुर पहुँचने लगे। दिनो दिन आचार्य श्री की शारीरिक स्थिति कमजोर होती गई। माघ बदी एकम के रोज पूर्ण सचेतन अवस्था मे सथारा ग्रहण किया। सथारा की अवस्था के अतिम समय मे आचार्य श्री की स्मरण शक्ति इतनी तेज हो गई कि मूल गाथाओ का स्वाध्याय सुनाते समय एक मात्रा या अनुस्वार के ह्रस्व, दीर्घ उच्चारण को भी पकडने लग गये मानो किसी विशिष्ट ज्ञान की झलक उन्हे प्राप्त हुई हो। अन्तत पूर्ण आत्म समाधि पूर्वक माघ सुदी दूज को चार बजे के लगभग पूज्य श्री की आत्मा ने चक्षु द्वार से स्वर्ग की ओर प्रयाण कर ही दिया। अब तो केवल भौतिक पिण्ड ही अवशेष रह गया। तुरत चतुर्विध सघ एकत्र हो गया। युवाचार्य श्री को केशर से सुमडित श्वेत आचार्य पद सूचक चादर ओढाकर स्वर्गीय आचार्य श्री के पार्थिव शरीर को पाट से उतारकर श्रावक सघ को वोसिरा दिया गया एव उसी पाट पर आचार्य श्री नानालालजी म सा को विराजित किया गया। समस्त चतुर्विध सघ ने आचार्य श्री नानालाल जी महाराज की जय बोलकर विधि युक्त वदना की। एक तरफ नवीन आचार्य श्री नानेश का आचार्य पद

महोत्सव का हर्ष था तो दूसरी तरफ आचार्य श्री गणेश का वियोग रूप दु ख। माघ बदी ३ (तृतीया) को अतिम सस्कार की तैयारी चल रही थी। स्वर्ण गुबजमय विशाल रजत विमान तैयार किया गया था। स्वर्गीय आचार्य देव के पार्थिव देह को उसमे प्रतिष्ठापित किया गया। एक लाख के लगभग श्रद्धालु जनता आसू बहाती हुई पूज्य श्री की शव यात्रा मे सम्मिलित हुई। जुलूस प्रमुख मार्गो से होता हुआ गगू पर पहुँचा। जहॉ बडे–बडे दरबारो के अतिम सस्कार हुए थे, वहीं पर इन धर्म दरबार का भी अग्नि सस्कार करके जनता पुन उदयपुर शहर मे पहुची तथा विशाल पचायती नोहरे के प्रागण मे शोक–सभा के रूप मे परिणत हुई। पजाबी सत सत्येद्र मुनि जी म सा आदि सत, धर्मदास जी म सा की सप्रदाय के तपस्वीलालचद जी आदि ठाणा, गोडल सप्रदाय के जनक मुनिजी, जगदीश मुनि जी आदि ठाणा, साधुमार्गी धर्म सघ के स्थविर पद विभूषित श्री सूरजमलजी म सा, केसूलाल जी म सा आदि सत एव महासतियॉ जी महाराज सहित नवीन आचार्य श्री नानेश शोक सभा मे पधारे। ज्योही आचार्य देव पाट पर विराजे, सारी सभा हतप्रभ सी रह गई। ऑखे विश्वास ही नहीं कर रही थी कि हमारे समक्ष कौन विराजे है– आचार्य गणेश या नानेश ? मानो कोई उत्तर वैक्रिय हुआ हो या सारी मुखाकृति ही परिवर्तित हो गई। आचार्य पद की प्रथम देशना ने तो जन–जन के मन मे आशा के नये दीप जगा दिये। सबको पूर्ण विश्वास हो गया कि यह शक्ति सबको झुकाकर रहेगी।

उदयपुर से विहार एव शिष्य शिष्याओ की भेट

जब से आचार्य श्री ने सथारा ग्रहण किया तब से ही सत सतियो ने तपस्या पच्चक्ख ली थी। स्वय आचार्य श्री के तेले का तप था, दूसरे दिन पारणा किया। कल्प मर्यादा का ध्यान रखते हुए विहार के बारे मे चितन मनन हुआ। आज दोपहर को ही दो बजे के लगभग विहार करने का निर्णय लिया गया। ज्योही यह हलचल लोगो को मालूम पडी तो सब आचार्य श्री की सेवा मे उपस्थित हुए तथा आसू बहाते हुए अर्ज करने लगे– भगवन ! चार वर्ष उदयपुर विराजे, अब तो आप विहार करेगे ही, लेकिन आज दिशाशूल सामने है। इसलिए कल विहार करने की कृपा करे। आचार्य पद का प्रथम विहार है। बडे–बडे राज ज्योतिषी जी आदि सबकी यही राय है।

आचार्य श्री ने सबकी बातो को सुनी लेकिन अन्त चितन से यही निर्णय हुआ कि कल्प एव मर्यादा की रक्षा ही साधुओ का प्रथम लक्ष्य है। बस फिर क्या था, वही दिशा और वही सभावित काल। साधुमार्गी धर्म सघ का सम्राट, पूर्वजो की आन–मान–मर्यादा का झण्डा लहराने, समता का कवच धारण करके सत्य सिद्धात का शखनाद गुजाता हुआ, शिथिलाचार के चक्रव्यूह कों भेदने का दृढ सकल्प धारण करके निकल पडा। चेहरे पर अलौकिक ब्रह्म तेज, मानो बादलो की घटा को चीरकर सहस्र रश्मि–सूर्य निकला हो, केशरीसिह दहाड मारता हुआ गुफा से बाहर आया हो।

आगे–आगे सघनायक, पीछे सत सती गण, साथ ही हजारो भक्तो का विशाल समूह–सबके मुख से एक ही नारा मुखरित हो रहा था–

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना।

लाल चगकसी भानु सगाना ।।

विदाई–समारोह बडा ही दर्शनीय था। अन्य ग्राम नगरवासियो के मुख मडल हर्ष विभोर थे। उनके अन्तर्मन मे नवीन आचार्य को अपने क्षेत्रो मे पदार्पण की तीव्र आशा लहलहा रही थी लेकिन उदयपुर वासी श्रावको के चेहरे पर उदासी थी। चार वर्ष का सत्सान्निध्य आज उठ गया था, फिर भी मन सतुष्ट था। क्योकि वे अपनी कर्त्तव्य कसोटी पर खरे उतरे थे।

जुलूस मुख्य मार्गो से होता हुआ उदयपुर के बाहर मधुवन मे पहुचा। वहां पहुँचकर एक धर्म सभा मे परिणत हो गया। आचार्य श्री पाट पर विराजे एव सिद्ध स्तुति करते हुए उदयपुर सघ को विदाई रूप मे दो शब्द फरमाने लगे। इतने मे मोतीलाल जी कोठारी सपरिवार उपस्थित होकर निवेदन करने लगे– गुरुदेव ! मेरी लडकी सुशीला दीर्घकाल से विरक्त जीवन व्यतीत कर रही है। कई बार उसने दीक्षा हेतु आग्रह किया लेकिन हम टालते रहे। लेकिन गणेशाचार्य के स्वर्गवास एव आपश्री के विहार से अब तो वह बहुत उद्विग्न हो उठी है। अन्न जल का भी त्याग करके एक ही आग्रह पर अटल है कि आचार्य श्री के मुखारविन्द से उदयपुर मे ही मेरी यथा शीघ्र दीक्षा सम्पन्न हो। बहुत–बहुत समझाने पर भी किसी तरह से मानने के लिए तत्पर नहीं है। इसलिए हमारे परिवार की आप के चरणो मे विनम्र विनती है कि यदि अष्टमी तक आप यहीं विराज जावे तो आपके चरणो मे ही दीक्षा का मगल कार्य सपन्न हो सके।

चितन मनन करके आचार्य श्री ने विराजने की अनुमति प्रदान की। दीक्षा की तैयारी होने लगी।

इधर पीपल्यामडी (म प्र) निवासी अमरचद जी सा पामेचा व उनकी धर्मपत्नी कस्तूरबाई अपनी विशाल सपत्ति का एव अपने तीन व सात वर्षीय नन्हे मुन्हे दो पुत्र एव ग्यारह वर्षीय सुपुत्री चदनबाला का मोह ममत्व त्यागकर दीक्षित होने के लिए बहुत समय से साधनारत थे। इस दीक्षा की अनुमति से आपके भी मन मे उत्सुकता पैदा हुई। अपने पिता सेठ वृद्धिचद जी के चरणो मे अनुमति का आग्रह करने लगे।

सेठ वृद्धिचद जी अपने पुत्र के इस अनुनय, आग्रह से उत्तेजित होते हुए बोल पडे– अमरचन्द ! तुझे दीक्षा की अनुमति देकर फिर मै तेरे पाव पडूगा– यह मेरे से नहीं होगा। सेठ वृद्धिचद जी के इन वचनो को सुनकर पास मे खडे सतीजी बोल पडे– बासा ! जो दीक्षा लेगा, उसके चरणो मे तो झुकना पडेगा ही, यदि नहीं झुकना है तो आप इनसे पहले दीक्षा ले लो।

बस फिर क्या था, सुभद्रा के वचन का तीर जैसे सेठ धन्ना जी को लगा था, वैसे ही सतीजी का वचन वृद्धिचद जी सेठ को भी लग गया। उसी समय पगडी उतार दी, जूते फैक दिये, जेब मे जो रुपये थे उसके अलावा परिग्रह का त्याग करके यह कहते हुए निकल पडे– सतीजी ! अब तो दीक्षा

लेकर ही मिलूगा। अमरचद जी आदि तो दीक्षा की धूमधाम मे लग गये, इधर आप अपने चौके पर गये, देखा— बगडी वाले सेठानी लक्ष्मी बाई की सयमोचित्त भडोपकरण की पेटिया जो वे सभला के गई थी, पडी है। पेटी खोली, अदर से सिले हुए चादर, चोलपट्टा निकला। ओघा व डडी की और कुछ पात्र लेकर चुपचाप निकल गये। एकान्त स्थान मे जाकर गृहस्थ वेश का परित्याग कर साधुवेश धारण कर लिया। न सिर मुडाया, न दाढी घोटाई। पहुचे आचार्य श्री के चरणो मे, अर्ज करने लगे— भगवन् ! यावज्जीवन (जावजीव) की सामायिक पच्चक्खाइए। सब आश्चर्यचकित— ये कौन है, क्या कर रहे है ? आचार्य श्री ने उत्तर दिया— सामायिक ऐसे नहीं पच्चक्खाई जाती है, परिवार वालो की आज्ञा के बिना। पर एक बार, दो बार आग्रह किया— आशा नहीं फलते देख सेठ वृद्धिचद जी स्वत ही जावज्जीव की सामायिक के प्रतिज्ञा पाठ का उच्चारण करते हुए "अप्पाण वोसिरामि' बोल पडे।

चारो तरफ हाहाकार मच गया। बडे पुत्र माणकलाल जी आये, खूब समझाने की कोशिश की लेकिन किसी भी तरह से अपने लक्ष्य से नहीं हटते देख आज्ञा दी। प्रतिक्रमण पूर्ण होने पर डबोक मे विधियुक्त दीक्षा सपन्न हुई। इधर सुशीला जी की दीक्षा के सम्पन्न होते–होते तो वैरागी शातिलाल जी सरुपरिया के दीक्षा प्रसग को लेकर भदेसर की दिशा मे विहार का निश्चय हुआ। मध्यवर्ती क्षेत्रो को स्पर्शते हुए भदेसर पधारे। भदेसर मे दीक्षा महोत्सव चल ही रहा था, इतने मे बडीसादडी श्री सघ वैरागी कवर चदजी सहलोत की दीक्षा का आज्ञापत्र लेकर प्रस्तुत हुआ। बडीसादडी मे दीक्षा सपन्न हो— यह विनती प्रस्तुत करने लगा। आखिर दीक्षा तिथि निश्चित होते ही भदेसर मे दीक्षा वि स २०१९ फाल्गुन शुक्ला १ तदनुसार २४ फरवरी, १९६३ को सपन्न करके बडीसादडी पधारे। विरोधी वातावरण उग्रतम होते हुए भी आपके पुण्य प्रभाव से वि स २०१९ फाल्गुन शुक्ला पचमी तदनुसार २८ फरवरी, १९६३ गुरुवार को कवरचन्दजी की दीक्षा सानन्द सपन्न हुई। इधर पीपल्यामडी वाले वैरागी अमरचद जी पामेचा व कस्तूरबाई पामेचा का आज्ञापत्र पेश करके अक्षय तृतीया के दिन पीपल्यामडी मे दीक्षा सपन्न हो, ऐसा आग्रह करने लगे। आचार्य श्री ने उनकी प्रबल भावना को देखकर स्वीकृति दे दी। आचार्य श्री ने मालवे की ओर विहार किया। सजोडे दीक्षा का उत्साहमय वातावरण पहली बार ही देखने को मिला। हजारो लोगो की उपस्थिति मे दीक्षा कार्य सपन्न हुआ। इसी के पूर्व लसडावन मे हरक मुनिजी की दीक्षा सपन्न हुई। लोग कहने लगे— शालिभद्र के पिता अपने पुत्र के लिए देवलोक से पेटिया भेजते थे, क्या गुरु गणेश भी इसी प्रकार शिष्य शिष्या रूप रत्नो की पेटिएँ भेज रहे है।

पूज्य श्रीलाल जी म सा की भविष्य वाणी

अष्टम पाट पर विराजते ही दीक्षाओ की धूमधाम को देखकर बडे बुजूर्ग चर्चा करने लगे— भाई साहब ! जो बात पचास वर्ष पूर्व पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज जब बीकानेर विराजते थे, तब उनके अतिश्य एव शासन–प्रभावना को देखकर लोग निवेदन करने लगे— भगवन् ! आपके शासन मे तो चौथा आरा वर्त रहा है। उत्तर मे पूज्य श्री ने फरमाया— श्रावक जी ! यह तो परम प्रतापी पूज्य हुक्मेश की

गादी है, जिन्होने इस पवित्र साधुमार्ग को अक्षुण्ण रखने मे कोई कसर नहीं रखी है। अभी तो आपने देखा ही क्या है। इसके अष्टम पट्टधर के शासन–काल मे धर्म प्रभावना के अलोकिक वातावरण को देखना। वास्तव मे यह भविष्यवाणी सही सिद्ध होने जा रही है।

कहा भी है–

"के भाखे वर कामणी, के भाखे अणगार।
के भाखे वालक कथा, फिरे न दूजी वार।।"

कोई सच्ची पतिव्रता नारी या सच्चा साधु या दूधमुंहा वालक जो वात मुंह से निकाल देता है, वह सिद्ध होकर ही रहती है। हुआ यह जव यह वात हुई तव आप श्री (आचार्य श्री नानेश) का जन्म ही नहीं हुआ था, फिर हुक्म सघ के तीन विभाग हो गये। आपकी दीक्षा तो श्रमण सघ वनने के वाद हुई तब अन्य सप्रदायो के समान हुक्म सघ का भी विलीनीकरण हो गया था। कोई स्वप्न मे भी कल्पना नहीं कर रहा था कि पुन पूज्य हुक्म सघ स्थापित होगा। लेकिन श्रमण सघ मे स्वच्छन्दता का पनपना, आचार्यश्री गणेश का उपाचार्य पद त्यागना लोगो की दृष्टि मे ऊहापोह का कारण बना। लेकिन महापुरुषो की भविष्यवाणी खाली केसे जा सकती हे। जो कुछ बना व वन रहा हे– इतने विरोधी वातावरण मे भी धर्मसघ उत्तरोत्तर उन्नति के शिखर पर पहुच रहा है वह सव उस वाणी का ही पुण्य प्रभाव है।

आचार्य श्री नानेश का मध्यप्रदेश मे प्रवेश

ज्यो–ज्यो आचार्य श्री नानेश के चरण आगे वढने लगे 'विरोधी वातावरण भी वल पकडने लगा। जहॉ पधारते, वहॉ यही प्रचार था– 'ये श्रमण सघ से वाहर हैं," ये समाज मे फूट पैदा करने वाले है,' 'इनका सत्कार सम्मान नहीं करना चाहिए।' कहीं–कहीं तो आहार पानी स्थानादि के लिए भी विरोधी वातावरण होने लगा। लेकिन ये सब ओस–बिदु की तरह तब तक ही रहते, जब तक आपके तपतेजमय पुण्य प्रकाश की किरण नहीं पाते।

रतलाम चातुर्मासार्थ पदार्पण हुआ। विरोधी शक्तियो का पूर्ण प्राबल्य होने पर भी अपूर्व धर्मोद्योत हुआ। हजारो की सख्या मे श्रोताओ की उपस्थिति होती थी। विरोधी से विरोधी भी निकट सम्पर्क मे आते ही परम भक्त बन जाता। मूर्तिपूजक परम विदुषी साध्वी श्री विचक्षण श्री जी तो आपके तप सयम से इतनी प्रभावित थी कि समय–समय पर सेवा मे उपस्थित होती एव ज्ञान–चर्चा करके परम श्रद्धा अभिव्यक्त करती, जो उनके जीवन सध्याकाल तक बनी रही। इसी चातुर्मास मे धर्मदास जी की सप्रदाय की साध्वी जी–जो बेहोशी मे सथारा करने के बाद, सथारे मे परिणामो की डावाडोल स्थिति मे चल रही थी। इस विषय पर जब आपसे विचार विमर्श मागा तो आपने उनकी शारीरिक दशा को देखकर अपना सचोट मन्तव्य व्यक्त किया कि सथारा जल्दी पूर्ण हो, ऐसा मुझे नहीं लगता– यदि इन

सथारासीन साध्वी जी की अस्थिरता मे स्थिर रहने का दबाव डाला जाय तो मूल महाव्रत खण्डित होने की सभावना है। यदि यह पारणा कर भी ले तो इनके उत्तरगुण ही खडित होगे। आचार्य श्री के युक्तिपूर्ण वचन श्रवण करके पारणा करा दिया गया, जिसके फलस्वरूप वह स्वस्थ होकर बहुत समय तक सयम पालती रही। यह था आचार्य श्री का दिव्य चिन्तन ! आचार्य पद का प्रथम चातुर्मास सफलतापूर्वक सम्पन्न करके अनेक मध्यवर्ती क्षेत्रो के भ्रम निवारण के साथ ही पाप–प्रक्षालिनी वाग्धारा से उन्हे अभिसिचित करते हुए मालव धरा पर विचरण करने लगे।

धर्मपाल समाज का अभ्युदय :

मालव–धरा पर विचरण करते हुए आप नागदा स्टेशन पधारे। वहाँ की जैन जैनेतर जनता आपके दर्शन एव वाणी श्रवण का लाभ प्राप्तकर धन्य हो उठी। विरोधी वातावरण तो इतना प्रबल था कि कहीं आपको ठहरने के लिए जगह न मिले, इस लक्ष्य से आपके पधारने के पूर्व ही यह प्रयत्न रहता था कि हर धर्म स्थान मे कोई न कोई साधु साध्वी पहले ही विराजित हो जाय। चाहे वे कितनी ही दूर हो और चाहे कैसी भी स्थिति मे कैसे ही सहयोगी साधनो से पहुंचे। यह हरकते धर्म–स्थानो तक सीमित नहीं रहीं, रेल्वे स्टेशनो–छोटे बडे गावो मे भी की गई। लेकिन सत्य है जितनी अग्नि की आच तेज होती है, उतना ही सोना चमक को प्राप्त करता है।

यही हुआ, एक तरफ धर्म के ठेकेदार कहलाने वाले तो कर्मबधन को प्रगाढ करने मे अपनी वीरता बतला रहे थे, तो दूसरी तरफ पापी नीच कहलाने वाले आपके प्रवचनो का लाभ लेकर अन्तर चितन करने लगे कि क्यो नहीं, हम पारस मणि का ससर्ग करे ताकि इस लोहमय जीवन को स्वर्णमय बनाने का सौभाग्य प्राप्त कर सके। अपनी हार्दिक वेदना को भाई सीताराम जी बलाई आदि ने व्यक्त करते हुए कहा– नाथ ! उर्वर भूमि मे जैसे वर्षा आवश्यक है, उसी प्रकार आपके इन उपदेशो की सच्वी आवश्यकता हम पापियो को है। आज हमारे समाज को उपदेश की आवश्यकता है। जो जहाँ तहाँ घृणित एव तिरस्कृत होने से प्रतिदिन घटती जा रही है। कोई ईसाई, सिक्ख, मुसलमान बनते जा रहे है। आपके करुणामय वचनामृत से ही उसका उत्थान है। कुछ करुणा दृष्टि पसारिए। हम पतितो के बीच पधारिए, पतितोद्धारक का सुयश प्राप्त कीजिये। हमारी सैकडो पीढिएँ आपकी आभारी रहेगी, यह हमारी करुण पुकार है।

नि स्वार्थ भक्तो की अन्तर्भावाभिव्यक्ति भगवान् को भी वश मे कर देती है, फिर गुरु को क्यो नहीं। स्वय आचार्य श्री की भी लबे समय से दलितोद्धार की भावना चल ही रही थी।

उस भावना को मूर्तरूप देने का काल परिपक्व हो गया। सीतारामजी बलाई की प्रार्थना से द्रवित होकर नागदा से छ मील विहार कर आचार्य श्री 'गुराडिया' गाव पधारे। विवाह प्रसग पर हजारो लोग एकत्रित थे। आचार्य श्री ने ग्रामीणो को उद्‌बोधन देने के पूर्व नवकार मत्र का उच्चारण कर धर्मनाथ भगवान की स्तुति की–

धर्म जिनेश्वर गुझ हिवडे वसो, प्यारा प्राण सगान।।

आचार्य श्री ने मानव जीवन की महता प्रगट करते हुए उन वलाई जाति के लोगो को सप्त कुव्यसन पर इतना मार्मिक उदबोधन दिया कि सेकडो भाइयो ने उसी समय सभा मे कुव्यसनो के त्याग कर दिये। इस पर आपने इस वलाई जाति को "धर्मपाल" सज्ञा से सबोधित किया और स्वधर्मी कहकर पुकारा। वह दिवस था– वि स २०२१ चैत्र सुदी ९ तदनुसार २३ मार्च, १९६४ का। आज वे ही धर्मपाल बधु हजारो की सख्या मे सगठित होकर धर्माराधन करते हुए सुखमय गौरवशाली जीवन व्यतीत कर रहे है।

आचार्य देव धर्मपाल समाज का अभ्युदय करके मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए अहिल्या नगरी–इदौर मे पधारे। अल्पकालीन प्रवास मे ही आपके प्रवचनो से अनेको की भ्रात धारणाओ का सामना हुआ और इन्दौर की धर्मप्रेमी जनता आपके चातुर्मास की जोर शोर से विनती करने लगी। आचार्य देव ने उज्जेन विराजते समय अति उत्साह को देखते हुए इन्दौर चातुर्मास की घोषणा कर दी। इन्दौर निवासी फूले नहीं समा रहे थे। यह समाचार जब शहर मे फेला तब यह बात विरोधियो के हृदय मे धधकती अग्नि की ज्वाला मे घी का काम कर गई। विरोधी सतो ने महावीर भवन मे अपना चातुर्मास घोषित कर दिया और उनके कुछ श्रावको ने अखबारो मे घोषणा जाहिर कर दी कि "महावीर भवन मे श्रमण सघ के सन्त सतियो का ही चातुर्मास होगा, अन्य का नहीं।"

इस घोषणा से श्रद्धालु श्रावको के दिल मे भारी चोट पहुची। उन्होने सकल्प किया– चाहे कुछ भी हो– आचार्य प्रवर का यह चातुर्मास तो इन्दौर ही होगा। इन्दोर मे विरोधियो ने एक स्थान भी खाली नहीं छोडा फिर भी दस–बारह परिवार वालो ने मिलकर वहाँ पर खालसा स्कूल मागकर चातुर्मास की सारी व्यवस्था जुटा दी ओर आचार्य देव को किसी तरह से •मनाकर इन्दौर ले ही आये। ज्योही आचार्य देव का इदौर शहर मे पदार्पण हुआ और प्रवचन धारा प्रवाहित होने लगी तो हजारो की तादाद मे जनता उमड पडी। अपूर्व धर्मोद्योत के साथ चातुर्मास सम्पन्न हुआ। घोर तपस्विनी श्री सोहन बाई बोहरा (महासती श्री सोहन कवर जी म सा) की दीक्षा सानद सपन्न हुई।

विरोधी देखते ही रह गये। आचार्य देव ने अपने चरण छत्तीसगढ की दिशा मे बढा दिये। भोपाल, इटारसी होते हुए बैतुल पधारे तो तत्कालीन स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के उपाध्यक्ष श्री जवाहरलाल जी मुणोत आये और अनेक तरह के कुतर्को से आप से बात करने लगे। उनका उद्देश्य था कि मेरे रहते श्रमण सघ के अतिरिक्त बाहर के साधु महाराष्ट्र मे कैसे प्रवेश कर सकते है। आचार्य श्री ने तो उनके कुतर्को का समभाव से ही समाधान करने की कोशिश की लेकिन यह बात वहाँ के युवको को बहुत बुरी लगी तो उन्होने मुणोत सा को हाथ पकडकर वहाँ से उठा दिया और गाडी मे बिठाकर रवाना कर दिया। रास्ते मे इन सारी बातो का चितन करते हुए मुणोत सा को भारी पश्चाताप हुआ। बहुत दूर चले जाने पर भी पुन गाडी को घुमाकर रात को बारह बजे के आस–पास

आचार्य श्री की सेवा मे आकर फूट–फूट कर रोने लगे और क्षमायाचना की। बाद मे तो उन्होने अपनी भूमि अमरावती (महाराष्ट्र) मे चातुर्मास भी कराया और भारी सेवा का लाभ लिया– ऐसा था आचार्य देव का प्रभाव।

आचार्य देव भयकर भूख प्यास आदि कष्टो को सहन करते हुए उग्र विहार कर छत्तीसगढ के सिहद्वार राजनान्द गाव, दुर्ग होते हुए महावीर जयती के पावन प्रसग पर रायपुर पधारे। उन्हीं दिनो मुसलमानो के ताजिये निकलते थे। एक बार एक ताजिया ऊचा होने के कारण बाजार मे "महावीर स्वामी की जय" के पर्दे मे अटकता देखकर एक मुसलमान ने उसको तोड दिया। यह देखकर कुछ जैन भाइयो मे रोष आ गया और बात की बात मे साम्प्रदायिक झगडे का माहौल बन गया। यह देख मुसलमानो मे घबराहट मच गई। तुरत उनके कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति आचार्य श्री की सेवा मे आये। भूल की क्षमायाचना करने लगे। आचार्य श्री ने उनकी बात को श्रवण करके फरमाया "मै यहॉ जोडने आया हूॅ, तोडने के लिए नहीं।' प्रत्येक धर्म का आदर करना हम सबका कर्त्तव्य है। आपने अपनी भूल महसूस करके क्षमा माग ली। यह ठीक हुआ, नहीं तो आगे इसका दुष्परिणाम आ सकता था। आगे से आप इसका पूर्ण ध्यान रखे। आचार्य श्री के इस मार्मिक उद्बोधन से सबको बडी शान्ति मिली और सद्भावना कायम हुई।

इसके बाद जब वि स २०२२ का चातुर्मास रायपुर हुआ तो बहुत से मुसलमान भाई व्याख्यान मे आते थे। एक मुसलमान ट्राफिक पुलिस वाला तो इतना प्रभावित हुआ कि पूरे चातुर्मास मे ट्राफिक के कारण बिल्कुल अशान्ति नहीं होने दी। पूर्ण उत्साहमय वातावरण मे चातुर्मास सपन्न हुआ। सेठ लक्ष्मीचदजी धारीवाल एव उनकी धर्मपत्नी सुश्राविका लक्ष्मी बाई की दीर्घकालीन भावना पूर्ण हुई।

आचार्य देव ने सुदूर उडीसा प्रान्त की ओर पधार कर राजनान्दगाव के चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की।

वि स २०२३ का राजनादगाव चातुर्मास

उडीसा प्रान्त का विचरण करके पधारते समय आचार्य देव के हाथ मे फ्रेक्चर हो गया था। इधर चार पाच दिन पहले ही सेठ श्री लक्ष्मीचद जी सा धारीवाल का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया था। फिर भी सेठानी लक्ष्मी बाई को फ्रेक्चर की खबर पडी तो तुरत दर्शन करने आई। आग्रह पूर्वक रायपुर लेकर गई और योग्योपचार कराया। रायपुर से विहार करते हुए वि स २०२३ जेठ सुदी १० को चेरोदा ग्राम मे तपस्वी श्री वृद्धिचद जी महाराज का स्वर्गवास हो गया। उसके बाद आचार्य श्री जी दुर्ग से राजनादगाव चातुर्मासार्थ पधारे। चातुर्मास काल मे अपूर्व ठाठ रहा।

इस ग्रन्थ के लेखक श्री धर्मेश मुनि ने अपनी गृहस्थ अवस्था मे शादी के दो माह पश्चात् ही सजोडे आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर लिया था और आसोज सुदी २ को होने वाली छ दीक्षाओ– १ रायपुर के सपतलाल जी धारीवाल (सम्प्रति सपत मुनि जी म) २ भोपाल के प्रेमचन्द जी कक्कड

धर्म जिनेश्वर मुझ हिवडे बसो, प्यारा प्राण समान।।

आचार्य श्री ने मानव जीवन की महता प्रगट करते हुए उन बलाई जाति के लोगो को सप्त कुव्यसन पर इतना मार्मिक उद्‌बोधन दिया कि सैकडो भाइयो ने उसी समय सभा मे कुव्यसनो के त्याग कर दिये। इस पर आपने इस बलाई जाति को "धर्मपाल" सज्ञा से सबोधित किया और स्वधर्मी कहकर पुकारा। वह दिवस था– वि स २०२१ चैत्र सुदी ९ तदनुसार २३ मार्च, १९६४ का। आज वे ही धर्मपाल बधु हजारो की सख्या मे सगठित होकर धर्माराधन करते हुए सुखमय गौरवशाली जीवन व्यतीत कर रहे है।

आचार्य देव धर्मपाल समाज का अभ्युदय करके मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए अहिल्या नगरी–इदौर मे पधारे। अल्पकालीन प्रवास मे ही आपके प्रवचनो से अनेको की भ्रात धारणाओ का सामना हुआ और इन्दौर की धर्मप्रेमी जनता आपके चातुर्मास की जोर शोर से विनती करने लगी। आचार्य देव ने उज्जैन विराजते समय अति उत्साह को देखते हुए इन्दौर चातुर्मास की घोषणा कर दी। इन्दौर निवासी फूले नहीं समा रहे थे। यह समाचार जब शहर मे फैला तब यह बात विरोधियो के हृदय मे धधकती अग्नि की ज्वाला मे घी का काम कर गई। विरोधी सतो ने महावीर भवन मे अपना चातुर्मास घोषित कर दिया और उनके कुछ श्रावको ने अखबारो मे घोषणा जाहिर कर दी कि "महावीर भवन मे श्रमण सघ के सन्त सतियो का ही चातुर्मास होगा, अन्य का नहीं।"

इस घोषणा से श्रद्धालु श्रावको के दिल मे भारी चोट पहुची। उन्होने सकल्प किया– चाहे कुछ भी हो– आचार्य प्रवर का यह चातुर्मास तो इन्दौर ही होगा। इन्दौर मे विरोधियो ने एक स्थान भी खाली नहीं छोडा फिर भी दस–बारह परिवार वालो ने मिलकर वहॉ पर खालसा स्कूल मागकर चातुर्मास की सारी व्यवस्था जुटा दी और आचार्य देव को किसी तरह रो•मनाकर इन्दौर ले ही आये। ज्योही आचार्य देव का इदौर शहर मे पदार्पण हुआ और प्रवचन धारा प्रवाहित होने लगी तो हजारो की तादाद मे जनता उमड पडी। अपूर्व धर्मोद्योत के साथ चातुर्मास सम्पन्न हुआ। घोर तपस्विनी श्री सोहन बाई बोहरा (महासती श्री सोहन कवर जी म सा) की दीक्षा सानद सपन्न हुई।

विरोधी देखते ही रह गये। आचार्य देव ने अपने चरण छत्तीसगढ की दिशा मे बढा दिये। भोपाल, इटारसी होते हुए बैतुल पधारे तो तत्कालीन स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के उपाध्यक्ष श्री जवाहरलाल जी मुणोत आये और अनेक तरह के कुतर्को से आप से बात करने लगे। उनका उद्देश्य था कि मेरे रहते श्रमण सघ के अतिरिक्त बाहर के साधु महाराष्ट्र मे कैसे प्रवेश कर सकते हैं। आचार्य श्री ने तो उनके कुतर्को का समभाव से ही समाधान करने की कोशिश की लेकिन यह बात वहॉ के युवको को बहुत बुरी लगी तो उन्होने मुणोत सा को हाथ पकडकर वहॉ से उठा दिया और गाडी मे बिठाकर रवाना कर दिया। रास्ते मे इन सारी बातो का चितन करते हुए मुणोत सा को भारी पश्चाताप हुआ। बहुत दूर चले जाने पर भी पुन गाडी को घुमाकर रात को बारह बजे के आस–पास

आचार्य श्री की सेवा मे आकर फूट–फूट कर रोने लगे और क्षमायाचना की। बाद मे तो उन्होने अपनी भूमि अमरावती (महाराष्ट्र) मे चातुर्मास भी कराया और भारी सेवा का लाभ लिया– ऐसा था आचार्य देव का प्रभाव।

आचार्य देव भयकर भूख प्यास आदि कष्टो को सहन करते हुए उग्र विहार कर छत्तीसगढ के सिहद्वार राजनान्द गाव, दुर्ग होते हुए महावीर जयती के पावन प्रसग पर रायपुर पधारे। उन्हीं दिनो मुसलमानो के ताजिये निकलते थे। एक बार एक ताजिया ऊचा होने के कारण बाजार मे "महावीर स्वामी की जय" के पर्दे मे अटकता देखकर एक मुसलमान ने उसको तोड दिया। यह देखकर कुछ जैन भाइयो मे रोष आ गया और बात की बात मे साम्प्रदायिक झगडे का माहौल बन गया। यह देख मुसलमानो मे घबराहट मच गई। तुरत उनके कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति आचार्य श्री की सेवा मे आये। भूल की क्षमायाचना करने लगे। आचार्य श्री ने उनकी बात को श्रवण करके फरमाया "मै यहॉ जोडने आया हूँ, तोडने के लिए नहीं।' प्रत्येक धर्म का आदर करना हम सबका कर्त्तव्य है। आपने अपनी भूल महसूस करके क्षमा माग ली। यह ठीक हुआ, नहीं तो आगे इसका दुष्परिणाम आ सकता था। आगे से आप इसका पूर्ण ध्यान रखे। आचार्य श्री के इस मार्मिक उद्बोधन से सबको बडी शान्ति मिली और सद्भावना कायम हुई।

इसके बाद जब वि स २०२२ का चातुर्मास रायपुर हुआ तो बहुत से मुसलमान भाई व्याख्यान मे आते थे। एक मुसलमान ट्राफिक पुलिस वाला तो इतना प्रभावित हुआ कि पूरे चातुर्मास मे ट्राफिक के कारण बिल्कुल अशान्ति नहीं होने दी। पूर्ण उत्साहमय वातावरण मे चातुर्मास सपन्न हुआ। सेठ लक्ष्मीचदजी धारीवाल एव उनकी धर्मपत्नी सुश्राविका लक्ष्मी बाई की दीर्घकालीन भावना पूर्ण हुई।

आचार्य देव ने सुदूर उडीसा प्रान्त की ओर पधार कर राजनान्दगाव के चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की।

वि स २०२३ का राजनादगाव चातुर्मास

उडीसा प्रान्त का विचरण करके पधारते समय आचार्य देव के हाथ मे फ्रेक्चर हो गया था। इधर चार पाच दिन पहले ही सेठ श्री लक्ष्मीचद जी सा धारीवाल का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया था। फिर भी सेठानी लक्ष्मी बाई को फ्रेक्चर की खबर पडी तो तुरत दर्शन करने आई। आग्रह पूर्वक रायपुर लेकर गई और योग्योपचार कराया। रायपुर से विहार करते हुए वि स २०२३ जेठ सुदी १० को चेरोदा ग्राम मे तपस्वी श्री वृद्धिचद जी महाराज का स्वर्गवास हो गया। उसके बाद आचार्य श्री जी दुर्ग से राजनादगाव चातुर्मासार्थ पधारे। चातुर्मास काल मे अपूर्व ठाठ रहा।

इस ग्रन्थ के लेखक श्री धर्मेश मुनि ने अपनी गृहस्थ अवस्था मे शादी के दो माह पश्चात् ही सजोडे आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत ग्रहण कर लिया था और आसोज सुदी २ को होने वाली छ दीक्षाओ– १ रायपुर के सपतलाल जी धारीवाल (सम्प्रति सपत मुनि जी म) २ भोपाल के प्रेमचन्द जी कक्कड

(सप्रति प्रेम मुनि जी म) ३ दलौदा के पारसकुमार जी भडारी (सप्रति पारसमुनि जी म) ४ राणावास की ज्ञान बाई गाधी (सम्प्रति महासती श्री ज्ञान कवर जी म) ५ रायपुर की बहन प्रेमलता कोठारी (सप्रति महासती श्री प्रेमलता जी म) ६ राजनादगाव की इन्द्रकुमारी श्रीश्रीमाल सम्प्रति (महासती श्री इन्दुबाला जी म) के साथ दीक्षित होने की तैयारी थी लेकिन अतराय कर्म के उदय भाव से धर्मचन्द्र जी एव जय श्री बाई की दीक्षा उस समय नहीं हो सकी। छ दीक्षाओ के ऐतिहासिक कार्यक्रम के उत्साहित वातावरण मे चातुर्मास सम्पन्न हुआ।

चातुर्मास पूर्णकर पूज्य गुरुदेव वि स २०२३ मिगसर सुदी ३ को पारसबाई एव गगावती बाई की दीक्षा डोगर गाव मे होनी निश्चित होने से विहार किया। वहा एक बार आचार्य श्री जी रात्रि को चौकी पर विराजकर प्रश्नोत्तर कर रहे थे। एक काला सर्प दो घडी तक बैठा रहा। आचार्य श्री ने चरण नीचे किया तो कुछ ठडे स्पर्श का अहसास हुआ। आपने नीचे देखा तो वहा सर्प को बैठे पाया। वहा पर उपस्थित सब लोग भयभीत हो गये लेकिन आचार्य श्री ने ज्योही मगल–पाठ सुनाया, सर्प चुपचाप बाहर निकल गया।

पूर्ण उत्साह के साथ दोनो भव्यात्माओ (महा पारस कवरजी म, महा गागावती जी म) की दीक्षा सपन्न कर मध्यवर्ती क्षेत्र को पावन करते हुए आचार्य प्रवर धमतरी पधारे। धमतरी मे मद्रास निवासी दपति धर्मचन्द जी धोका व जय श्री बाई धोका की दीक्षा वि सि २०२३ फाल्गुन बदी ९ को रायपुर मे होनी निश्चित हुई। इसी के मध्य आचार्य श्री की विशेष आज्ञा से २०२३ माघ सुदी १० को पीपल्या मडी मे चदन बालाजी म की दीक्षा सपन्न हुई। पूज्य गुरुदेव धमतरी से विहार करते हुए रायपुर पधारे। २०२३ फाल्गुन बदी ९ को धर्मचद धोका सम्प्रति धर्मेशमुनि व जय श्री बाई धोका (महासती जय श्रीजी) मद्रास की दीक्षा होने जा रही थी उस प्रसग पर वैरागी धर्मचद की दादीसा जो पहले तेरापथी थी, को सम्यक्त्व प्रदान कर पूज्य गुरुदेव ने दपति को दीक्षा प्रदान कर अपने सघ मे सम्मिलित किया।

होली चातुर्मास, महावीर जयती एव अक्षय तृतीया तक शारीरिक कारण से आचार्य श्री जी रायपुर बिराजे तत्पश्चात् दुर्ग सघ को चातुर्मास की स्वीकृति देने से दुर्ग की ओर विहार किया।

आचार्य श्री जी की विशेष आज्ञा से जावरा (म प्र) मे आषाढ सुदी २ को मालदाबाडी (महाराष्ट्र) निवासी सुशीलाबाई मुणत की दीक्षा हुई।

वि. सं. २०२४ का दुर्ग चातुर्मास ·

चातुर्मास हेतु रायपुर से भिलाई होते हुए दुर्ग (म प्र) मे पूज्य श्री का प्रवेश हुआ। जैन सघ दुर्ग सबके लिए अनुकरणीय है। वहॉ का पूरा जैन समाज मिलकर एक ही चातुर्मास कराता है। सघ के वार्षिक अधिवेशन पर ४ अक्टूबर १९६७ को बडावदा (म प्र) निवासी मगलाबाई साड (महासती मगला कवर जी म) की दीक्षा सम्पन्न हुई।

चातुर्मास के पश्चात् बीजा (म प्र) निवासी शकुन्तला कुमारी साखला (महासती
जी म) की वि स २०२४ मिगसर बदी ६ को दुर्ग (म प्र) मे दीक्षा सम्पन्न हुई।

तत्पश्चात् आचार्य श्री ने छत्तीसगढ क्षेत्र से विहार कर दिया और महाराष्ट्र मे

वि.सं. २०२५ का अमरावती चातुर्मास :

आचार्य प्रवर छत्तीसगढवासियो से भावभीनी विदाई लेकर मध्यवर्ती क्षेत्रो को पा
नागपुर पधारे। नागपुर से हिगणघाट आदि मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए अमरावत
क्षेत्रो मे जिसने भी आचार्य श्री जी को सुना व देखा सबके दिल मे अथाह श्रद्धा भाव
बहुत से लोगो ने आपके शुद्ध श्रमणाचार से प्रभावित होकर सुगुरु के रूप मे आ
धारण किया।

आचार्य देव होली चातुर्मास पर अमरावती बिराजे। अनेक गावो के साथ ही मे
मरुधरा आदि बहुत से प्रान्तो व शहरो से जन समूह उपस्थित हुआ और अपने-अपने क्षे
प्रवर एव सत सती वर्ग के चातुर्मास की आग्रहपूर्वक विनती करने लगा। आचार्य श्री
विनती को ध्यान से श्रवण कर अपने चातुर्मास की स्वीकृति बडीसादडी (राज) सघ क
दी। ज्योही यह बात अमरावती सघ ने सुनी त्योही अमरावती सघ ने सत्याग्रह का रू
लिया। आखिर अनेक प्रयत्न करके स्वय जवाहरलाल जी मुणेत आदि ने बडीसादडी स
अपनी झोली फैला दी और वह चातुर्मास बडीसादडी की जगह अमरावती करने की घोषणा

आचार्य देव आस-पास के अनेक क्षेत्रो मे विचरण करके अमरावती (महाराष्ट्र)
पधार गये। अपूर्व धर्मोद्योत हुआ। तीन माह तक लगातार कर्फ्यू लगने पर भी दर्शनार्थियो
निरतर होता रहा, लेकिन कोई अव्यवस्था नहीं हुई जिसका सबको सुखद आश्चर्य हुआ
इस बात का रहा कि पाच पीढियो से जो ज्ञानचन्द जी महाराज की सप्रदाय
सम्बन्ध चल रहा था, वह पडित श्री समर्थमल जी म द्वारा दिया गया पत्र-जिसमे आ
शिथिलाचार पर आवरण डालकर दूसरो पर दोषारोपण करने की चेष्टा जैसी प्रवृत्ति
सम्बन्ध-विच्छेद किया गया।

चातुर्मास परिसम्पन्न कर आचार्य देव ने येवतमाल मे वि स २०२५ मिगसर
जतन बाई गान्धी-येवतमाल (महासती श्री जतन कवर जी म सा) तथा बाबूलाल ज
केसिगा (श्री सतोषमुनि जी महाराज) को दीक्षित कर आकोला, धूलिया आदि मध्यवर्ती क्षे
करते हुए पुन मध्यप्रदेश मे प्रवेश किया। विशेष आज्ञा से वि स २०२५ फाल्गुन बदी ५
मे श्री चमेलीबाई बॉठिया- (महासती श्री चमेली कवरजी म सा) की तथा सुशीला
बीकानेर (महासती श्री सुशीला कवर जी म) की दीक्षा सम्पन्न हुई। वि स २०२६ की

६ को कानोड मे छगन बाई बोहरा– रून्डेडा (महासती श्री छगनकवर जी म) की तथा ब्यावर मे चन्द्रा बाई मेहता रतलाम (महासती श्रीचन्द्रकान्ता जी म सा) की दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई।

वि सं २०२६ का मन्दसौर चातुर्मास

दीर्घकाल की पिपासा की पूर्ति होने से मालव भूमि का कण–कण प्रमुदित हो उठा। मन्दसौर सघ की तीव्र तमन्ना की पूर्ति हेतु चातुर्मासार्थ पदार्पण हुआ। श्री कुसुम लता कुदाल (महासती श्री कुसुमलता जी म) व प्रेमलता कुदाल (महासती श्री प्रेमलता जी म) की अपनी जन्म भूमि मन्दसोर मे ही वि स २०२६ आसोज सुदी ४ को दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। चातुर्मास पूर्ण होते ही आचार्य श्री जी ने राजस्थान की ओर विहार किया।

वि स. २०२७ का बडीसादडी चातुर्मास :

राजस्थान की भूमि तो वर्षो से पलक पावडे बिछाए बैठी थी। अपने आराध्य के दर्शन पाकर धन्य हो गई। मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए उदयपुर पधारे। उदयपुर मे लगभग सत्तर साधु साध्वी एकत्रित हुए। पुन साधु समाचारी का वाचन हुआ। आचार्य देव ने बडीसादडी श्री सघ को चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की। महाराणा भगवतसिह जी स्वय प्रवचन मे पधारे। आस–पास के क्षेत्रो को पावन करते हुए बडीसादडी चातुर्मासार्थ पूज्य गुरुदेव पधारे। हजारो की जनमेदिनी के साथ राजराणा दुलेहसिह जी साहब ने भी समय–समय पर सेवा का लाभ लिया। बडीसादडी मे एक साथ सात (३ भाई व ४ बहिनो –१ श्री ताराचन्द जी–बैद मूथा– अमलनेर (श्री सतोषमुनि जी म सा), २ श्री रणजीतमल जी भडारी, कजार्डा– (श्री रणजीत मुनि जी म सा), ३ माणकचद चौरडिया –गोगुदा (श्री महेद्रमुनि जी म) तथा ४ विमला बाई भडारी धर्मपत्नी रणजीतमल जी भडारी– कजार्डा (महासती श्री विमला कवर जी म) ५–कमलाबाई डूगरवाल– जेठाना (महासती श्री कमल प्रभाजी म) ६ कुमारी पुष्पा जारोली– बडीसादडी (महासती श्री पुष्पलता जी म) ७ सुमतिकुमारी मुणोत– बडीसादडी– (महासती श्री सुमतिकवर जी म) की दीक्षा वि स २०२७ कार्तिक बदी ८ तदनुसार २२ अक्टूबर १९७० को सम्पन्न हुई।

मेवाड क्षेत्र मे धर्म ध्यान की विशेष लहर व्याप्त हुई। साथ ही दीक्षा भी अपने आप मे ऐतिहासिक रही। एक साथ सात दीक्षा प्रथम बार सम्पन्न हुई।

तत्कालीन राष्ट्रपति वी वी गिरि के सुपुत्र शकर गिरि, मद्रास निवासी श्री जुगराज जी धोका के पुत्र मागीलाल जी धोका के साथ आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म के दर्शनार्थ उपस्थित हुए और प्रवचन श्रवण कर बडे प्रभावित हुए।

इस प्रकार जैनेतर मे धर्म का बीज वपन कर आचार्य श्री चातुर्मास समाप्ति के साथ ही कपासन आदि मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए मोडी पधारे। स्थानीय वैरागन विमला नपावलिया को

वि स २०२७ फागण सुदी १२ को दीक्षा प्रदान की। वहॉ से मेवाड के क्षेत्रो को पावन करते हुए चातुर्मासार्थ ब्यावर पधारे।

वि स २०२८ का ब्यावर चातुर्मास ·

आचार्य देव के पधारते ही सारे शहर मे एक नई रौनक आ गई। देवगढ निवासी गणेशीलाल जी देशलहरा (गजानन्द जी म) ने वि २०२८ भादवा सुदी १४ को ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। वि स २०२८ कार्तिक सुदी १२, रविवार, ३१ अक्टूबर १९७१ को – १ मोतीलाल जी साड–बडावदा (सौभागमुनि जी म), २ रमेश कुमार जी बाफना– उदयपुर (रमेश मुनि जी म), ३ सुरेद्र कमार जी साड– बडावदा (सुरेन्द्रमुनि जी म) ४ सूरज बाई साड– बडावदा (सूरज कवर जी म), ५ तारा कुमारी पिरोदिया, रतलाम (तारा कवर जी म), ६ कल्याण कुमारी बाठिया, बीकानेर (कल्याण श्री) ७ काता बाई साड– बडावदा (श्री कॉता जी म), ८ कुमारी केशर कटारिया– रावटी (कुसुमलता जी म), ९ चदना कुमारी साड– बडावदा (चदन बाला जी म) की दीक्षा सपन्न हुई। अपूर्व धर्मोद्योत के साथ चातुर्मास सपन्न हुआ। वहा से आचार्य देव विहार कर लीडी पधारे। दो परिवारो मे चल रहा साठ वर्षीय मनमुटाव दूर हुआ। इसी प्रकार अनेक गावो के आपसी मनमुटावो को शमन करते हुए आप अजमेर पधारे।

अजमेर से जयपुर पधारे। जयपुर मे होली चातुर्मास व्यतीत किया। वहा पर भी स्थानीय भाइयो का आपसी मनमुटाव दूर हुआ। वैराग्यवती तारा कुमारी राका (रतलाम) की दीक्षा वि स २०२८ चैत्र बदी २ को सम्पन्न हुई।

वि. सं २०२९ का जयपुर चातुर्मास

जयपुरवासियो के आग्रह से वि स २०२९ का चातुर्मास जयपुर का खोलकर गुरुदेव टोक पधारे। महावीर जयती के पावन प्रसग पर वैराग्यवती बहिन चचल बाई गाधी, कानोड (महासती चेतन श्री जी) की दीक्षा सपन्न हुई। कोटा, बूदी, सवाई माधोपुर, चौथ का बरवाडा आदि क्षेत्र स्पर्श कर जयपुर चातुर्मासार्थ पधारे।

जयपुर के विद्वानो ने आचार्य देव के चरणो मे– "कि जीवनम् ? " की समस्या पर समाधान मागा, तो पूरे चातुर्मास मे इसी विषय पर प्रवचन फरमाकर समाधान दिया। वैरागी भाई रेखचद जी गोखरू निवासी कानवन– (रवीन्द्र मुनि जी महाराज) की दीक्षा भादवा बदी १२ को एव वेरागी भवरलाल जी सहलोत निवासी निकुम्भ (भूपेद्र मुनि जी म) की दीक्षा आसोज सुदी ३ को राजस्थान की राजधानी जयपुर मे सम्पन्न हुई। चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् बीकानेर की ओर विहार किया।

साधुमार्गी धर्म संघ की राजधानी–बीकानेर प्रान्त

आचार्य पद की प्राप्ति के पश्चात् प्रथम बार आचार्य देव के चरण बीकानेर की तरफ बढे। ये

समाचार श्रवण करते ही बीकानेर प्रान्त के श्रावक–श्राविकाओ मे एक अपूर्व हर्ष की लहर पैदा हो गई। बहुत से भाई तो जयपुर से ही पैदल–पैदल आचार्य श्री के साथ हो गये। मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए ज्योही राजधानी के द्वार रूप गोगोलाव क्षेत्र मे प्रवेश किया त्योही बीकानेर प्रात की जनता उमड पडी। प्रतिदिन सैकडो व्यक्तियो के आने जाने का ताता लग गया। आचार्य देव अलाय, नोखामडी, नोखा गाव, रासीसर, देशनोक, उदयरामसर, भीनासर, गगाशहर स्पर्शते हुए वीकानेर पधारे और पुन बीकानेर से माघ सुदी १३ को होने वाली दीक्षाओ के प्रसग से गगाशहर भीनासर पधार गये।

एक साथ चार भाई १ हुलासमल जी सेठिया– गगाशहर (हुलास मुनि जी म), २ जतनलाल जी सोनावत– बीकानेर (जितेद्र मुनि जी म), ३ राजेन्द्र कुमार सेठिया– गगाशहर (राजेन्द्र मुनि जी म सा) ४ विजय कुमार सोनावत– बीकानेर (विजय मुनि जी म) तथा आठ बहिनो– १ भवरी बाई सोनावत– बीकानेर (महा भवर कवर जी म), २ तीजाबाई बैद– अजमेर (महा तेज प्रभाजी म), ३ कुसुम बाई पगारिया–जावरा (महा कुसुम काता जी म), ४ बसता बाई पुगलिया, बीकानेर (महा वसुमती जी म), ५ पुष्पा बाई बोथरा– देशनोक (महा पुष्पलता जी म), ६ मजू कुमारी सेठिया– बीकानेर (मजू बाला जी म), ७ राज कुमारी भडारी– दलौदा (महा राजमती जी म), ८ कुसुम कुमारी सोनावत, बीकानेर (महा प्रभावती जी म) की दीक्षा सानन्द सपन्न हुई। इसके पहले वैरागी राजेन्द्र सचेती, आष्टा (म प्र) (वीरेंद्रमुनि जी म) की दीक्षा सपन्न हुई और बाद मे बीकानेर मे रुक्मिणी बाई सेठिया, गगाशहर (महा ललित प्रभा जी म) की दीक्षा वि स २०२९ फागण सुदी ११ को सम्पन्न हुई अर्थात् एक माह मे चौदह दीक्षाएँ सपन्न हुई। वैशाख सुदी ३ को नोखामडी मे वैराग्यवती सुशीला नपावलिया– मोडी (महासती सुशीला कवर जी म, और ममता कोठारी– अजमेर (महासती श्री समता कवर जी) की दीक्षा सपन्न हुई।

वि. स २०३० का बीकानेर चातुर्मास

अपूर्व धर्मोत्थान के साथ चातुर्मास सम्पन्न हुआ। इसी चातुर्मास मे मुनि धर्मेश की ससार पक्षीय मातुश्री पानबाई धोका (मद्रास) का सलेखना सथारा सहित स्वर्गवास हुआ। वैराग्यवती निर्मला पामेचा– बडीसादडी (महासती श्री निरजना श्री जी म) और शान्ता कोठारी– ब्यावर (महासती सुधा श्री जी म) की आसोज सुदी १३ को दीक्षा सपन्न हुई।

चातुर्मास सम्पन्न कर आचार्य श्री जी भीनासर पधारे। बागेडा (मेवाड) निवासिनी पारस बाई जारौली (महासती श्री पारस कवर जी म) ने अपनी सुपुत्री सुशीला कुमारी (महासती श्री सुमनलता जी म सा) के साथ मिगसर सुदी नवमी को भागवती दीक्षा ग्रहण की। दीक्षोपरात थली प्रान्त मे विचरण किया और सरदारशहर पधारे। पूर्वपेक्षा इस क्षेत्र मे कुछ सुधार परिलक्षित हुआ है– लोग सपर्क मे आने लगे, इस बढते हुए सम्पर्क को खतरा समझकर बाद मे कुछ ब्रेक भी लग गया, फिर भी पूर्वापेक्षा कुछ ठीक रहा।

सरदारशहर मे वि स २०३० माघ सुदी ५ को बबोरा निवासी नानालाल जी पीतलिया (नरेद्रमुनि जी म), २ सूरज बाई पारख– सरदारशहर (महासती श्री स्नेहलता जी म) और उदयपुर निवासी श्री विजय लक्ष्मी तलेसरा (महासती श्री विजय लक्ष्मी जी म) की दीक्षा सपन्न हुई।

वि स २०३१ का चातुर्मास सरदारशहर के लिए घोषित हुआ।

मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए गोगेलाव (नागौर) पधारे। गोगोलाव मे वि स २०३१ जेठ सुदी ५ तदनुसार २६ मई १९७४ को ब्यावर निवासी ज्ञानचद जी मेहता (ज्ञान मुनि जी म), आजाद कुमारी चपलोत, मगलवाड (अजना श्री जी म), राजकुमारी चपलोत, मगलवाड (रजना श्री जी म), लाडकुमारी मेहता, ब्यावर (महासती श्री ललिता श्री) की दीक्षा सपन्न हुई। गोगोलाव दीक्षा महोत्सव के बाद मध्यवर्ती क्षेत्रो को स्पर्शते हुए आपने सरदारशहर मे चातुर्मासार्थ प्रवेश किया।

वि स २०३१ का सरदारशहर चातुर्मास ·

आचार्य श्री ने ज्योही सरदारशहर मे चातुर्मासार्थ प्रवेश किया, त्योही नाई, सुनार, माहेश्वरी आदि कई परिवार जिन्होने जवाहराचार्य से श्रद्धा ग्रहण की थी वे सब धर्म ध्यान मे जुट गये। तेरापथ समाज के प्रमुख व्यक्ति भी आचार्य देव एव सतो की सयम चर्या देखकर बहुत प्रभावित हुए। कइयो ने तो सम्यक्त्व भी ग्रहण की।

चातुर्मास काल मे आसोज सुदी द्वितीया को फूलचद जी गोयल (अग्रवाल) मडी डब्बवाली (श्री पुष्प मुनि जी म), बापूलाल जी पामेचा– पीपल्यामडी– (श्री बलभद्रमुनि जी म), श्री सुशीला पामेचा B A – पीपल्या मडी (महा विचक्षणा श्री जी म) की सुशीला कछारा–पीपल्यामडी (महासती श्री सुलक्षणा श्री जी म सा), पुष्पा पामेचा पीपल्या मडी (महासती श्री प्रियलक्षणा श्री जी म) ने जैन दीक्षा ग्रहण की।

चातुर्मास समाप्ति के बाद आचार्य श्री जी रतनगढ, लाडनू, छापर, पडिहारा, बिदासर आदि क्षेत्रो मे धर्म प्रभावना करते हुए देशनोक पधारे। देशनोक मे वि स २०३१ माघ सुदी १२ को मोतीलाल जी सुराना– गगाशहर (मोतीलाल जी महाराज सा), वै रामलाल जी भूरा–देशनोक (श्री राममुनि जी म), प्रेम बाई खिदावत– निकुम्भ (महासती श्री प्रीति सुधाजी म), सुशीला कुमारी देरासरिया, देवगढ (महासती श्री सुमन प्रभाजी म), कु सोमलता कटारिया, रावटी (महा सोमलता जी म), कु किरण पटवा, बीकानेर (महासती श्री किरण प्रभा जी म) की दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई।

देशनोक से विहार कर मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए होली चौमासे पर पाचू पधारे। देशनोक के लिए चातुर्मास घोषित हुआ। पाचू से झझू हुए वि स २०३२ वैशाख बदी १३ को होने वाली दीक्षाओ पर गगाशहर–भीनासर पधारे। महासती श्री पानकवर जी म – रामपुरियावाला का सथारा– सलेखना सहित स्वर्गवास हुआ। वैशाख बदी १३, ९ मई १९७५ को किस्तूर चद जी सुराना,

गगाशहर (श्री किस्तूर मुनि जी म), मजूला बाई भूरा– देशनोक (महासती श्री मजुला श्री जी म सा), लीला कुमारी सहलोत, कानोड (महासती श्री सुलोचना श्री जी म) फूल कुमारी सेठिया– बीकानेर (महासती श्री प्रतिभा श्री जी म), वनिता कुमारी गुलगुलिया, बीकानेर (महासती श्री वनिता श्री जी म) लीला कुमारी काकरिया– गोगोलाव (महासती श्री सुप्रभा श्री जी म) की आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा सम्पन्न हुई। शारीरिक उपचारार्थ आचार्य श्री कुछ दिन बीकानेर विराजे। बाद मे विहार करते हुए चातुर्मासार्थ देशनोक पधारे।

वि स २०३२ का देशनोक चातुर्मास

चातुर्मास हेतु पधारते ही धर्म ध्यान त्याग तप की धारा प्रवाहित हो उठी। आसोज सुदी ५ को वैरागी प्रकाश चद भूरा, देशनोक (प्रकाश मुनि जी म), वै झवरलाल भूरा, देशनोक (जयवतमुनि जी म), वैरागन कुसुम पारख, बीकानेर (महासती श्री जयन्त श्री जी म) की भागवती दीक्षा सपन्न हुई।

विविध आयामो के साथ जवाहर जन्म शताब्दी मनाई गई।

चातुर्मास काल मे स्वाध्याय प्रशिक्षण शिविर भी लगाया गया।

चातुर्मास पूर्ण होने पर आचार्य देव रासीसर पधारे। उसी समय गौतम मुनि जी म सा (बीकानेर निवासी B सतोष कुमार सेठिया) देशनोक मे आसोज सुदी ६ को स्वय दीक्षित हुए थे, उनके परिवार वालो ने बीकानेर पधारकर दीक्षा देने का आग्रह किया तो पुन पूज्य श्री का बीकानेर पदार्पण हुआ। सयोगवश आचार्य श्री के लबे समय तक शारीरिक उपचार के कारण बीकानेर मे रुकना हुआ। तदनन्तर नोखामडी चौमासा घोषित हुआ।

वि. स. २०३३ का नोखामण्डी चातुर्मास

नोखामडी चातुर्मास पधारते ही वैरागन सूवा पारख, नोखामडी (महा श्री सुदर्शना श्री जी म सा) की आषाढ सुदी पचमी, शुक्रवार को दीक्षा सम्पन्न हुई। इसी के साथ हस कवर जी म सा, रम्भा देवी धारीवाल रायपुर (महासती श्री निरूपमा श्री जी म सा) की दीक्षा आसोज सुदी पूर्णिमा को सम्पन्न हुई।

नोखामडी चातुर्मास मे तोलाराम जी लुणावत की मातु श्री को आचार्य श्री के मुख से मागलिक श्रवण करते ही नेत्र ज्योति प्राप्त हुई। सिल्चर निवासी श्री नथमल जी सिपाणी की नौका नदी मे डूबने लगी, गुरुदेव के नाम का स्मरण करते ही डूबते–डूबते बच गये। नोखा आकर दर्शन सेवा का लाभ लिया। नोखामडी चौमासे के बाद मिगसर सुदी १३ को विरक्तमना श्रीचन्दा बाई ललवानी, मेडता सिटी (महासती श्रीचन्द्र प्रभा जी म सा) की दीक्षा सम्पन्न हुई।

नोखामडी से विहार कर शारीरिक उपचारार्थ गगाशहर भीनासर पधारे। हासी निवासी श्री प्रमोद चद गर्ग (प्रमोद मुनि जी म) की वि स २०३३ माघ बदी १ को भीनासर मे दीक्षा सपन्न हुई।

महावीर जयती अक्षय तृतीया गगाशहर भीनासर मे हुई और वि स २०३४ का चातुर्मास भी गगाशहर भीनासर घोषित हुआ।

गर्मी के भीषण प्रकोप मे आचार्य श्री नानेश की सासारिक बहिन महासती छगन कवर जी म का गगाशहर मे स्वर्गारोहण हुआ।

बरवाला सप्रदाय के आचार्य श्री चपक मुनि जी म सा के सुशिष्य विद्वान श्री सरदार मुनि जी म, सवाई मुनि म, तरुण मुनि जी म ठाणा ३ गुजरात से आचार्य प्रवर के दर्शनार्थ भीनासर पधारे।

वि स २०३४ वैशाख बदी ७, रविवार, १० अप्रैल १९७७ को मुमुक्षु ताराचन्द छल्लानी– गगाशहर (प्रशम मुनि जी म), वैरागन सरोज सेठिया, उदासर (महासती श्री आदर्श प्रभा जी म), काता कुमारी लुणावत– भीनासर (महासती श्री कीर्ति श्री जी म), हुलास कुमारी सोनावत गगाशहर (महा हर्षिला श्री जी म), शाता कुमारी भूरा– गगाशहर (महासती श्री साधना श्री जी म सा) की दीक्षा सपन्न हुई।

स २०३४, वैशाख सुदी १५ को विरक्तमना आरती सुराना, गगाशहर (महासती श्री अर्चना श्री जी म सा) की दीक्षा सपन्न हुई। उपचारार्थ आचार्य देव का गगाशहर भीनासर ही विराजना हुआ और चातुर्मास काल सन्निकट आ गया।

वि. सं. २०३४ गगाशहर–भीनासर चातुर्मास .

तप त्याग के साथ चातुर्मास काल सानन्द व्यतीत हो रहा था। इधर आचार्य श्री विशेष आज्ञा से दुर्ग (म प्र) मे वि स २०३४ भादवा बदी ११ को घोर तपस्वी श्री अमरचद जी म के मुखार विन्द से चार बहिनों १ सज्जन बाई राखेचा, धमतरी (महासती श्री सरोज कवर जी म), २ मनोरमा कुमारी मेहता, रतलाम (महासती श्री मनोरमा श्री जी म), ३ चचल कुमारी गाधी, काकेर (महासती श्री चचल कवर श्री जी म), ४ कुसुम कुमारी नाहटा, निवारी (महासती श्री कुसुम कान्ता जी म सा) की दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। इधर आचार्य श्री के पास भीनासर मे अशोक कुमार नवलखा, जावरा (अशोक मुनि जी म सा), मजू बाला बाफना– उदयपुर (महासती श्री सुप्रतिभा श्री जी म), शाता सिरोहिया– बीकानेर (महासती श्री शातप्रभा जी म) की दीक्षा सम्पन्न हुई।

पूज्य गुरुदेव जवाहराचार्य की पुण्य धरा पर लगभग लगातार ग्यारह माह विराजे।

गगाशहर भीनासर का चातुर्मास परिसम्पन्न कर पूज्य गुरुदेव बीकानेर पधारे। तीन वैराग्यवती बहिनो– मुन्नी नपावलिया, मोडी (महासती मुक्ति प्रभाजी म), गुलाब कुमारी सेठिया–ऊदासर (महासती श्री गुण सुदरी जी म), मधुबाला नागौरी– छोटी सादडी (महासती श्री मधुबाला जी म) ने वि स २०३४ मिगसर बदी ५, गुरुवार १ दिसम्बर, १९७७ को जैन भगवती दीक्षा ग्रहण की। बीकानेर से विहार करते हुए पूज्य श्री नोखामडी पधारे। नोखामडी मे मिगसर सुदी पचमी को तपस्वी श्री मूलचन्द जी काकरिया–नोखामडी (मूल मुनि जी म सा) ने प्रव्रज्या ग्रहण की।

नोखामडी से अलाय, गोगोलाव, नागौर स्पर्शते हुए पूज्य श्री नानेश भोपालगढ पधारे। पूज्य श्री तथा आचार्य श्री हस्तीमल जी म सा का मधुर मिलन हुआ। आचार्य द्वय ने चर्चा करके एक सवत्सरी , एक चातुर्मास, एक व्याख्यान के साथ ऐच्छिक वदन व्यवहार आदि परस्पर सभोग स्थापित किये। भोपालगढ से आचार्य द्वय जोधपुर पधारे। जोधपुर मे वि स २०३४ माघ सुदी १० को पाच दीक्षा सपन्न हुई। दीक्षार्थी थे– १ पडित माधवलाल जी वया–वम्बोरा (श्री ऋषभ मुनि जी म) २ राजकुमारी कोठारी– उदयपुर (महासती राज श्री जी म), ३ कमला कुमारी पिरोदिया–रतलाम (महासती श्री कनक श्री जी), ४ सुशीला कुमारी गदिया– उदयपुर (महासती श्री शशिकाता जी म), ५ सुशीला कुमारी बोथरा–देशनोक (सुलभा श्री जी महाराज)।

जोधपुर से विहार करके आचार्य श्री होली चातुर्मास पर बालेसर पधारे। जोधपुर चातुर्मास घोषित हुआ। मध्यवर्ती क्षेत्रो मे अनेक भ्रात धारणाओ का समाधान करते हुए अक्षय तृतीया के पावन प्रसग पर बालोतरा पधारे। त्रेसठ तपस्वी आत्माओ के पारणे सपन्न हुए। बालोतरा से विहार कर पूज्य गुरुदेव गढ सिवाना पधारे। श्रमण सघीय उपाध्याय श्री पुष्कर मुनि जी म सा की आज्ञानुवर्ती महासती श्री शीलकवर जी म सा की नेश्राय मे कुमारी सुमित्रा की दीक्षा आचार्य श्री के मुखारविन्द से सानन्द सपन्न हुई। मध्यवर्ती क्षेत्रो को स्पर्शते हुए चातुर्मास हेतु जोधपुर पधारे।

वि स. २०३५ का जोधपुर चातुर्मास :

चातुर्मास के लिए आचार्य प्रवर अपनी शिष्य मडली सहित घोडो का चौक स्थित स्थानक मे विराजे। उसी स्थानक मे आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म सा के शिष्य बडे लक्ष्मीचन्द जी म सा आदि सन्त वृन्द विराजमान थे। बुद्धिजीवी श्रोताओ की भीड उमडने लगी। पचायती नोहरा भी छोटा पड गया। वि स २०३५ आसोज सुदी २ को विरक्तमना रतनलाल चत्तर, रतलाम (अजित मुनि जी म सा), निर्मला देवी सेठिया– गगाशहर (महासती श्री निर्मला श्री जी म), चद्रकला बावेल कानोड, (महासती श्री चेलना श्री जी म), कमला कुमारी बोथरा– गगाशहर (महासती श्री कुमुद श्री जी म सा) की धूमधाम से दीक्षा सम्पन्न हुई। अनेक उपलब्धियो के साथ चातुर्मास सपन्न करके लोहावट, तिवरी, फलौदी होते हुए खीचन पधारे। अनेक भ्रान्त धारणाओ का निराकरण हुआ। अपने पूर्वाचार्यो की परम्परा को पूर्ण सुरक्षित देखकर सबको गौरव की अनुभूति हुई। अनेक लघुकर्मी ससर्ग मे आये तो अनेक हठधर्मियो के हथकडो में भी कमी नहीं रही। आचार्य देव क्रमिक रूप से मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए होली चातुर्मासार्थ मेडता सिटी पधारे। अजमेर सघ को भावी चातुर्मास की स्वीकृति देकर लाबिया रास, बाबरा होते हुए ब्यावर पधारे।

महावीर जयन्ती के पर्व के साथ ब्यावर मे चैत्र सुदी पूनम को एक साथ १५ बाल ब्रह्मचारी (३ वैरागी, १२ वैरागन)– १ उदयराज पटवा– पूना (श्री जितेशमुनि जी म सा), २ शान्तिलाल चौरडिया– नीमगाव खेडी (श्री पद्‌ममुनि जी म) ३ विनयकुमार जी बाठिया– ब्यावर (श्री विनय मुनि

जी म) ४ पुखराज जी बुरड– महिदपुर (महासती श्री पद्म श्री जी म), ५ मधुबाला सुराणा– इन्दौर (महासती श्री मधु श्री जी म), ६ कमला कुमारी कोठारी– उदयपुर (महासती श्री कमल श्री जी म), ७ कुमारी विजया छिगावत– पीपल्या मडी (महासती श्री अरूणा श्री जी म.), ८ कुमारी कान्ता भूरा– देशनोक (महासती श्री कल्पना श्री जी म), ९ लक्ष्मी कुमारी छल्लानी, देशनोक (महासती श्री दर्शना श्री जी म), १० कुमारी स्नहेलता सेठिया– गगाशहर (महासती श्री ज्योत्स्ना श्री जी म), ११ शकुन्तला कुमारी सुखाणी– बीकानेर (महासती श्री पकज श्री जी म), १२ प्रेम कुमारी जैन– मदसौर (महासती श्री प्रवीणा श्री जी म), १३ पुष्पा कुमारी मुणोत– बडीसादडी (महासती श्री पूर्णिमा श्री जी), १४ कुमारी मूली सोनावत– गगाशहर (महासती श्री वदना श्री जी म), १५ जतन कुमारी कोठारी– ब्यावर (महासती श्री प्रमोद श्री जी म सा) इन आत्माओ की ऐतिहासिक दीक्षा सम्पन्न हुई। दीक्षा के बाद ब्यावर से विहार कर अक्षय तृतीया पर पीपल्या कला पधारे। त्रेसठ वर्षीतप के पारणे हुए। सेठ गणपतराज जी बोहरा ने पीपल्या के विकास हेतु दस लाख रुपये देने की घोषणा की।

वि. सं. २०३६ का चातुर्मास अजमेर :

अक्षय तृतीया के पश्चात् मध्यवर्ती क्षेत्रो को स्पर्शते हुए चातुर्मासार्थ अजमेर पधारे। आचार्य देव के मार्मिक उद्बोधन, दर्शनार्थियो का उमडता विशाल जनसमूह– यह सब अजमेर सघ के लिए अभूतपूर्व था। बाल सस्कार शिक्षा, साहित्य सगोष्ठी, जैन विद्वत परिषद् एव साधुमार्गी सघ का वार्षिक अधिवेशन आदि प्रवृत्तियो से जैन जैनेतर जनता की आचार्य प्रवर के प्रति बहुत श्रद्धा जागृत हुई तो कुछ अनैतिक व्यक्तियो ने अनैतिकता का भी परिचय दिया। इस प्रकार अपूर्व धर्मोद्योत के साथ चातुर्मास सपन्न हुआ और आचार्य देव कुछेक दिन गुमानमल जी नाहटा के बगले मे उपचारार्थ विराजे और वहा से मध्यवर्ती क्षेत्रो को धर्मलाभ देते हुए होली चौमासी पर सोजत रोड पधारे। सारे काठे प्रात मे अपूर्व धर्म जागृति फैल गई।

राणावास छात्रावास एव कटारिया परिवार के साथ काठा प्रात निवासियो के आग्रह से राणावास हेतु चातुर्मास घोषित हुआ। सोजत रोड से सोजत सिटी की ओर विहार हुआ। अनेक भ्रात धारणाओ की निवृत्ति हुई। साथ ही बम्बई निवासी चुन्नीलाल जी मेहता एव अहमदाबाद निवासीलालचद जी मेहता– जिनके आपस मे कई वर्षो से मनमुटाव चल रहा था, आचार्य श्री के अतिशय प्रभाव से दोनो का पारस्परिक मनमुटाव मिट गया और मेहता द्वय राम–भरत की तरह गले मिल गये।

सोजत सिटी से विहार कर महावीर जयती के पर्व पर पूज्य गुरुदेव का पाली पदार्पण हुआ। पूज्य श्री के सदुपदेश से पाली की धार्मिक जनता बहुत प्रभावित हुई। पाली से विहारकर अक्षय तृतीया के पावन प्रसग पर राणावास पधारे। सडसठ तपस्वी भाई बहिनो के वर्षीतप पारणे सानन्द सपन्न हुए। आचार्य देव ने अक्षय सुख की प्राप्ति हेतु प्रारभिक साधना के नव–सूत्र प्रदान किये।

अक्षय तृतीया के पश्चात् राणावास से विहारकर गादाणा, रडावास स्पर्श कर बुसी पधारे। बुसी मे वैराग्यवती नीता झाबक, रायपुर (म प्र) (महासती उर्मिला श्री जी म सा) की दीक्षा वि स २०३७ जेठ सुदी ३ को सम्पन्न हुई। आसपास के क्षेत्रो को स्पर्श कर चातुर्मास हेतु राणावास पधारे।

वि सं २०३७ का राणावास चातुर्मास ·

राणावास के प्राकृतिक वातावरण मे हजारो भक्तो का आना जाना प्रारभ हो गया। सघ की सुव्यवस्था, शुद्ध जलवायु, छात्रावास के विद्यार्थियो की चहलपहल आदि अपने आप मे महत्त्वपूर्ण रही, जिसकी आज तक लोग प्रशसा करते नहीं थकते। चातुर्मास काल मे सावन सुदी ११ को वैराग्यवती शाता कुमारी पुगलिया– बीकानेर (महासती सुभद्रा श्री जी म सा) तथा आसोज सुदी ३ रविवार १२ अक्टूबर, १९८० को विरक्तमना हेमप्रभा बरडिया–केसिगा (महासती श्री हेमप्रभा श्री जी म) की दीक्षा सानन्द सपन्न हुई।

धर्म ध्यान, ज्ञान–क्रिया की भव्य आराधना के साथ चोमासा सपन्न हुआ।

आचार्य देव राणावास से विहार कर काली घाटी के रास्ते से मारवाड से मेवाड मे पधार गये। भीम मे वि स २०३७ पोष सुदी ३ शुक्रवार को नोखामडी निवासी बाबूलाल लुणिया (सुमति मुनि जी म सा) की दीक्षा सपन्न हुई।

भीलवाडा मे होली चातुर्मास के पावन प्रसग पर उदयपुर चौमासे की घोषणा हुई। मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए अक्षय तृतीया पर गगापुर पधारे। अक्षय तृतीया के शुभ दिन राजेद्र कुमार चौरडिया–फलौदी (चद्रेशमुनि जी म सा) तथा लीला कुमारी डोसी–विनोता (महासती ललिता श्री जी म) की दीक्षा एव सत्तर (७०) पारणे वर्षीतप के सम्पन्न हुए। चित्तौड, कपासन, दाता, करुकडा आदि क्षेत्रो को पावन करते हुए फतहनगर पधारे। ज्ञान गच्छीय श्री लालचद जी म सा आदि का मधुर मिलन हुआ। फतहनगर से विहार करते हुए उदयपुर पधारे। आषाढ सुदी ८ को आचार्य श्री की विशेष आज्ञा से अलाय निवासी बसतमाला सकलेचा (महासती श्री वसुमती जी म सा) की दीक्षा ईश्वर मुनि जी म के मुखार विन्द से अलाय मे सपन्न हुई।

वि स २०३८ का उदयपुर चातुर्मास

उदयपुर की बुद्धिजीवी जनता आचार्य प्रवर को पाकर धन्य हो गई। मन की एकाग्रता कैसे हो ? इस प्रश्न के समाधान हेतु आचार्य देव ने समीक्षण ध्यान की पद्धति बताई। भील जाति के अनेक भाइयो को व्यसन मुक्त बनाकर धर्मभाई के नाम से घोषित किया। दहेज प्रथा को लेकर अनेक युवतियो ने दहेज लेने वालो से शादी नहीं करेगी, ऐसी प्रतिज्ञा ली। प्रवचन सभा मे हजारो की जनमेदिनी मे आचार्य देव का प्रवचन बराबर सुनाई देता। आगम अहिसा समता प्राकृत शोध सस्थान की स्थापना हुई। कार्तिक सुदी १२ को छ बहिनो– १ इन्दु बोथरा– बीकानेर (महासती इन्दुप्रभा जी म), २ जेठी छाजेड– गगाशहर (महासती ज्योति प्रभा जी म) ३ राजकुमारी गदिया– उदयपुर

(महारचना श्री जी म सा), ४ रेखा कुमारी मेहता– जोधपुर (महा सुरेखा श्री जी म सा), ५ चद्रकला कोटडिया– लोहावट (महासती श्री चित्रा श्री जी म), ६ लीला कुमारी बोथरा, गगाशहर (महासती श्री लब्धि श्री जी म) की भागवती दीक्षा सपन्न हुई।

अनेक उपलब्धियो के साथ चातुर्मास पूर्णकर उपनगर हिरणमगरी सेक्टर न १३ मे पधारे। सवत् २०३८ मिगसर सुदी १० को विद्याबाई जैन, आदर्शनगर, सवाई माधोपुर (महासती विद्यावती जी म) की दीक्षा सपन्न हुई।

अहमदाबादवासियो के प्रतिनिधिमडल की भावना को सम्मुख रखकर गुजरात की ओर विहार किया। उदयपुर से विहार कर पूज्य गुरुदेव बम्बोरा पधारे। स २०३८ माघ बदी ७ को बसता कुमारी लोढा– विनोता (महासती श्री विरक्ता श्री जी म) की दीक्षा सपन्न हुई। मध्यवर्ती क्षेत्र को स्पर्शते हुए राजस्थान से गुजरात मे पूज्य गुरुदेव ने प्रवेश किया।

होली चातुर्मास के शुभ प्रसग पर वि स २०३८ का चातुर्मास अहमदाबाद घोषित हुआ।

वि स २०३८ चैत्र बदी ३ तदनुसार १२ मार्च १९८२ को अहमदाबाद मे ऐतिहासिक १५ दीक्षा सपन्न हुई। दीक्षार्थी थे। १ चपालाल टाटिया–राजनादगाव (श्री पकज मुनि जी म), २ धनराज जी देशलहरा– साकरा (श्री धर्मेन्द्र मुनि जी म), ३ विमला कुमारी साखला– छुईखदान (महासती श्री विनय श्री जी म), ४ सुप्रतिभा ओस्तवाल– राजनादगाव (महा सुप्रतिभा श्री जी म), ५ अगूरबाला श्रीश्रीमाल–रतलाम (महा अमिता श्री जी म), ६ सुमनबाला श्री श्रीमाल– रतलाम (महा शुचिता श्री जी म), ७ कमला कुमारी बुरड–केशकाल (महा श्वेता श्री जी म), ८ सरोज कुमारी नाहर– जगदलपुर (महा नम्रता श्री जी म), ९ काता कुमारी चडालिया–कपासन (महा मुक्ति श्री जी म), १० जमुना कुमारी गिडिया– राजनादगाव (महा जिनप्रभाजी म), ११ सरला कुमारी पींचा– नागौर (महासती श्री सिद्ध प्रभा जी म), १२ मणि कुमारी बैद– गगाशहर (महा मणिप्रभा जी म), १३ कुमारी विजयाकुमारी भसाली– गगाशहर (महा विशाल प्रभा जी म), १४ कुसुम कुमारी गुलगुलिया– बीकानेर (महा कनकप्रभा जी म), १५ सुनीता कुमारी गुलगुलिया– बीकानेर (महा सत्यप्रभा जी म)।

महावीर जयती व अक्षय तृतीया पर्व की आराधना के साथ–साथ आचार्य श्री जी ने छोटे–बडे सभी स्थानक स्पर्शे और बाद मे चातुर्मासार्थ राजस्थानी उपाश्रय मे पधारे। सारा चातुर्मास पूर्ण उत्साह व उमग के साथ सम्पन्न हुआ।

सौराष्ट्र सघ के अत्याग्रह से आचार्य प्रवर ने उस तरफ विहार किया। लीमडी आदि क्षेत्रो को पावन करते हुए सुरेद्रनगर पधारे। वयोवृद्धा परम विदुषी महासती श्री लीलावती बाई का सतीमडल सहित दर्शनार्थ आगमन हुआ। अगला चौमासा सौराष्ट्र काठियावाड मे करने हेतु अत्यन्त विनम्र आग्रह किया। इधर बरवाला सम्प्रदाय के आचार्य श्री चम्पक मुनि जी म व पडित श्री सरदार मुनि जी म का भी अत्याग्रह होने से भावनगर चातुर्मास घोषित हुआ और महावीर जयती के कार्यक्रम के पश्चात्

अक्षय तृतीया के पावन प्रसग पर धधुका पधारे। उनसठ (५९) भाई वहिनो के वर्षीतप के पारणे सपन्न हुए।

धधुका से २ जून १९८३ को विहार किया। धर्मदास जी म सा. की सप्रदाय के मानमुनि जी म तथा पारस मुनि जी म से मधुर मिलन हुआ। वहा से मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए राणपुर पधारे। राणपुर मे बोटाद सप्रदाय के मनसुखलाल जी म सा ठाणा ३ से मिलन हुआ। भीखा भाई ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। आचार्य देव का जन्म दिवस (जेठ सुदी २ का दिन) धूमधाम से प्रचुर तप त्याग के साथ मनाया गया। आगे बोटाद पधारे। पुन मनसुखलाल जी म एव लिबडी सप्रदाय के उत्तमचद जी महाराज आदि सन्त व अनेक महासतियां जी म ने अगवानी की। बहुत ही सौहार्द्रमय वातावरण रहा। मध्यवर्ती क्षेत्रो को धर्मलाभ देते हुए १० जुलाई, १९८३ सोनगढ पधारे। महावीर जैन चारित्र कल्याण आश्रम मे पूज्य गुरुदेव का विराजना हुआ। आश्रम के सस्थापक यति श्री केशरीचद जी ने ज्ञानचर्चा करके बडी प्रसन्नता व्यक्त की और अहमदाबाद आते समय जिदगी मे प्रथम बार मगल पाठ आचार्य श्री से श्रवण किया।

सोनागढ से विहार किया। वहा आचार्य श्री चपक मुनि जी म सा का भी पदार्पण हो गया। आचार्य द्वय ने १७ जुलाई, १९८३ को मालवा, मेवाड, दक्षिण के हजारो नर नारियो के साथ भावनगर मेहतासेरी उपाश्रय मे चातुर्मासार्थ प्रवेश किया। चातुर्मास काल पूर्ण सौहार्द्रमय वातावरण के साथ अपूर्व त्याग तप की आराधना के साथ सपन्न हुआ। आचार्य द्वय ने एक सयुक्त श्रमणाचार की सक्षिप्त नियमावली प्रस्तुत की। (देखे पृष्ठ ६३४ से ६३८ तक) श्रावक श्राविकाओ मे २९ मासखमण सानन्द सम्पन्न हुए। आसोज सुदी २ तदनुसार ८ अक्टूबर, १९८३ को आचार्य श्री नानेश के सान्निध्य मे रक्षा देवी कवाड, पाली (महासती रक्षिता श्री जी म), कुमारी कुसुम मुकीम– अहमदाबाद (महासती महिमा श्री जी म), कुमारी मजुलता पटवा– भिलाई (महासती श्री मृदुला श्री जी म) कुमारी वीणा पटवा– भिलाई (महासती वीणा श्री जी म) की भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई।

गोडल सप्रदाय के जनक मुनि जी म का राजकोट चातुर्मास करने हेतु अत्याग्रह भरा पत्र आया। इधर मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के सुप्रभ विजय जी म का पालीताणा तीर्थ पर पधारने का पूर्ण आग्रह भरा निमत्रण आया। दूसरी तरफ मद्रास बैगलोर की तरफ विहार की भी पूरजोर विनती चल रही थी। भविष्य मे (४ मार्च, १९८४) होने वाली दीक्षाओ के प्रसग को लेकर रतलाम सघ विनती लेकर प्रस्तुत हुआ। आखिर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को मध्य नजर रखते हुए सुखे समाधे रतलाम पहुचने की स्वीकृति प्रदान की और मालवे की तरफ विहार कर दिया।

आचार्य श्री की विशेष आज्ञा से वि स २०४० पौ ब १० को ललिता कुमारी सकलेचा–अलाय (महासती श्री लक्ष प्रभाजी म) की दीक्षा बीकानेर मे सम्पन्न हुई।

रतलाम मे अपूर्व दीक्षा महोत्सव–

आचार्य देव भावनगर का यशस्वी सयुक्त चातुर्मास सम्पन्न कर वीरसद शाहपुर पेटलाद पधारे। बीच मे अचानक ऑखो मे असह्य दर्द हो उठा। कुछ उपचार के बाद पुन विहार करके रविपुरा, बालासण, करमसद, आणद पधारे। मार्ग मे रतलाम के युवक व अनेक गावो एव नगरो के सैकडो भाई बहिनो ने सेवा का लाभ लिया। वहा से बगनपुर, बावडी, खुर्द होते हुए गोधरा पहुचे। गोधरा मे प्रवचनादि का अच्छा ठाठ रहा। गोधरा से विहार करते–करते आचार्य श्री जवाहर की दीक्षा स्थली लीमडी पचमहल पधारे। लीमडी मे माघ बदी २ को गणेशाचार्य की पुण्यतिथि मनायी गयी तथा मरुधर केशरी श्री मिश्रीलालजी म के स्वर्गवास के समाचार मिलने पर शोकसभा रखी। लीमडी से विहार करते करते आचार्य श्री जवाहर की जन्मस्थली थादला पधारे– पर्युषण सा ठाठ लग गया। थादला से बामनिया, पेटलावद, खवासा, रावटी आदि क्षेत्रो को पावन करते हुए आचार्य श्री नानेश रतलाम (रत्नपुरी) पधारे।

उल्लासमय वातावरण मे सागोद रोड से नगर मे प्रवेश हुआ। दस हजार से अधिक जन समूह, ३० सत और १२१ सतियो के साथ मुख्य मार्गो से होते हुए नौलाईपुरा स्थित् समता भवन मे पधारे। रतलाम के जैन–जैनेतर आबाल वृद्ध मे अपार खुशी थी। सब अपने धर्म और जातीय मतभेद को भुलाकर इस महोत्सव को सफल बनाने मे जुटे हुए थे। प्रत्येक एसोसिएशन वाले अपने–अपने क्षेत्र मे उत्साहपूर्वक सेवा दे रहे थे। २६ फरवरी, १९८४ को वैदिक सस्कृति के उद्भट विद्वान शकराचार्य जी एव महामडलेश्वर जी के ससर्ग मे रहने वाले डा कुलकर्णी ने आचार्य देव से ज्ञान चर्चा करके बडी प्रसन्नता का अनुभव किया और श्रद्धा से प्रेरित होकर गुरुमत्र धारण किया।

३ मार्च, १९८४ को २५ दीक्षार्थियो की शोभा यात्रा भी अपने आप मे ऐतिहासिक थी। ५० हजार की जनता के साथ शोभायात्रा जब मुख्य मार्गो से निकली तो सबके आश्चर्य का पार नहीं रहा। दि ४ मार्च १९८४, वि स २०४१ फागण सुदी २ को डेढ लाख लोगो की उपस्थिति मे ऐतिहासिक दीक्षा सपन्न हुई। दीक्षार्थी थे– १ धनपाल जी काठेड– जावद (श्री धीरजमुनि जी म), २ कातिलाल चौरडिया, नीमगाव खेडी (श्री कातिमुनि जी म), ३ पुष्पा बाई बाठिया– बीकानेर (महासती श्री प्रेरणा श्री जी म), ४ गुणरजना नलवाया, उदयपुर (महा गुणरजना श्रीजी), ५ सरोजबाला जैन– मन्दसौर (महा सूर्य मणिजी म), ६ कुमारी सरिता दस्साणी– कलकत्ता (महा सरिता श्री जी), ७ शकुन्तला गाधी– रतलाम (महा श्री सुवर्णा श्री जी म), ८ निर्मला दोसी– उदयपुर (महा निरुपणा श्री जी म), ९ शारदा भसाली, डोडीलोहारा– (महा शारदा श्रीजी), १० रेणुका गोलछा– बीकानेर (महा विकास श्री जी), ११ तारा कमारी अब्बानी– चित्तौडगढ (महा तरूलता जी म), १२ काता कुमारी नपावलिया–मोडी (महा श्री करुणा श्री जी म) १३ पुष्पाबाई भडारी बैंगलोर (महा प्रभावना श्री जी म), १४ सतोष कुमारी लुणावत– भीनासर (महा सुयशमणि जी म), १५ राजकुमारी पिरोदिया– रतलाम (महा चित्तरजना श्री जी म), १६ कुमारी मुक्ता बाठिया– बीकानेर (महा मुक्ता श्री जी म), १७

सगीता कुमारी पोखरना– बेगू–(महा सिद्धमणिजी म), १८ राजकुमारी गर्ग बगुमुडा– (महा रजतमणि जी म), १९ आजाद कुमारी भणावत, कानोड (महा अर्पणा श्री जी म), २० मजू कुमारी सेठिया– भीनासर (महा श्री मजुला श्री जी म), २१ गुण श्री जी जैन– चौथ का बरवाडा (महा गरिमा श्री जी म), २२ कुमारी हर्ष काकरिया–नोखामडी (महा हेम श्री जी म), २३ किरणकुमारी कछारा– पीपल्यामडी (महा कल्पमणि जी म सा), २४ कुमारी अनिता काठेड– जावरा (महा. रवि प्रभाजी म), २५ किरणकुमारी पीतलिया–पीपल्यामण्डी (महा श्री मयक मणि जी म)।

लगभग २०० के आसपास सब सप्रदाय के साधु साध्वियो के साथ आचार्य देव दीक्षा स्थल पर विराजमान थे। एक लाख से भी ऊपर लोगो के आवास–निवास, भोजन आदि की सुव्यवस्था अपने आप मे सराहनीय थी। पी सी चौपडा एव रतलाम के कार्यकर्त्ताओ की कार्य कुशलता की सब लोग सराहना किये बिना नहीं रहे।

होली चौमासे के पावन प्रसग पर बोरीवली–बबई चौमासे की घोषणा की।

चदाकुमारी मारू, बडीसादडी (महा चदनबाला जी म) की दीक्षा आचार्य श्री की विशेष आज्ञा से ६ दिसम्बर, १९८४ को बडीसादडी मे सपन्न हुई।

आचार्य श्री नानेश मध्यप्रदेश से महाराष्ट्र मे .

दिलीपनगर, बिरमावल, बदनावर होते हुए मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए अक्षय तृतीया के प्रसग पर धूलिया (महाराष्ट्र) पधार गये। धूलिया मे ५७ भाई बहिनो के वर्षीतप के पारणे सपन्न हुए। धूलिया से मार्गवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए नासिक सिटी पधारे। सघ के आग्रह से जेठ सुदी २ (आचार्य श्री नानेश की जन्म जयती) तक विराजने की स्वीकृति प्रदान की, लेकिन दूसरे दिन व्याख्यान स्थल पर ध्वनि वर्धक यत्र आदि विद्युत सचालित साधन देखकर अपनी सयमीय मर्यादा मे संघ प्रमुखो को सकेत किया। तब सघ प्रमखो ने सुव्यवस्था करने का आश्वासन दिया लेकिन दूसरे दिन तदनुरूप व्यवस्था नहीं जमी तो आचार्य श्री ने सोचा– सघ मे किसी प्रकार का विभेद न पडे– इस उद्देश्य से नासिक सिटी से विहार कर 'सिडको' पधार गये।

नासिक सघ मे खेद की लहर व्याप्त हो गई। कइयो की आख मे आसू आ गये। सिडको मे आचार्य देव तेरापथी सभा भवन मे विराजे। उन श्रावको ने कल्पानुसार सम्पूर्ण सुव्यवस्था करके आचार्य देव का जन्म दिन खूब ठाठ बाट के साथ मनाया। नासिक से भी सैंकडो भाई–बहिन सिडको पहुचे। शाहदा बबई आदि से सैंकडो भाई–बहिन पहुचे। सिडकोवासी तो अपना अहोभाग्य मानने लगे।

आचार्य श्रीजी सिडको से घोटी, इगतपुरी, कसाराघाट होते हुए भीवडी पधार गये। बबई से सैकडो भाई बहिन दर्शनार्थ पहुचे। महाराष्ट्र के मुख्यमत्री बसत दादा पाटिल अपनी पत्नी के साथ हेलीकाप्टर द्वारा दर्शनार्थ पहुचे। इसी सभा मे हाईकोर्ट जज श्रीमान् आशकरण जी तातेड भी

पधारे। आचार्य श्री के समता समाज रचना के विचार श्रवण कर बहुत प्रभावित हुए। करीब २००० गरीबो मे वस्त्र वितरित किये गये।

वि सं २०४१ का बोरीवली चौमासा :

भीवडी से बबई के उपनगर थाणा, मलुण्ड, भाडूप, विक्रोली होते हुए घाटकोपर पधारे। घाटकोपर से बोरीवली वेस्ट होते हुए राजेन्द्र नगर चातुर्मास स्थल पर पधारे। अनेक सस्थाओ एव सघो द्वारा भावभीना स्वागत हुआ। स्वागताध्यक्ष पद से बबई महासघ के अध्यक्ष गीजू भाई ने भाव भरे शब्दो मे स्वागत किया। चातुर्मास काल मे आदर्श त्यागिनी महासती श्री कस्तूर कवर जी म ने इक्यासी (८१) दिन का दीर्घ तप किया। अनेक सत महासती जी म ने मासखमण आदि की तपस्या की। मद्रास से पूरी स्पेशल ट्रेन व बैगलोर से २०० व्यक्तियो ने पहुचकर दक्षिण की तरफ पधारने की पूरजोर विनती की।

२४ सितबर, १९८४ को ऐलाचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज (दिगबराचार्य) का पदार्पण हुआ। आचार्य श्री नानेश से चर्चा करके हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। २६ सितबर १९८४ को आचार्य देव का 'युवाचार्य पदोत्सव'' धूमधाम से मनाया गया। इस पावन प्रसग पर राजस्थान के भूतपूर्व मुख्यमत्री श्री भैरोसिह शेखावत और भाजपा के अध्यक्ष श्री सुन्दर सिह जी भडारी दर्शनार्थ आये और आचार्य देव के प्रवचन सुनकर बहुत प्रभावित हुए। घाटकोपर सघ ने चातुर्मास की पूरजोर विनती प्रस्तुत की। पूर्ण धर्मध्यान की आराधना मे चातुर्मास सपन्न हुआ। चातुर्मास को सफल बनाने मे मेहता परिवार का विशेष योगदान रहा।

बबई के उपनगरो मे विचरते हुए बालकेश्वर पधारे। आचार्य देव उदर रोग व पैर दर्द के उपचारार्थ विराजे। आखिर वि सं २०४२ का चातुर्मास घाटकोपर स्वीकृत हुआ। सन्निकट क्षेत्रो को स्पर्शते हुए चातुर्मासार्थ घाटकोपर पधारे। वि स २०४१ माघ सुदी १० को भीनासर मे वै ममोल सुराना– गगाशहर (महासती सीता श्री जी म) की दीक्षा विशेषाज्ञा से सम्पन्न हुई।

वि स २०४२ का घाटकोपर चातुर्मास .

आचार्य श्री के सान्निध्य मे सारे कार्यक्रम अपूर्व एव अनुपम प्रतीत हो रहे थे। दीर्घ तपस्या के साथ–साथ ज्ञान चर्चा भी अपने आप मे अनूठी थी। इस घाटकोपर सघ की मूल स्थापना जवाहराचार्य के चातुर्मास मे हुई थी। पर्वाधिराज सवत्सरी पर्व पर वर्षो से ध्वनि वर्धक यत्र के सहयोग से प्रतिक्रमण कराया जाता था लेकिन आचार्य देव के मार्मिक स्पष्टीकरण से वह सदा सर्वदा के लिए रुक गया और भव्य शाति एव शुद्धि से प्रतिक्रमण हुआ। जिसको देखकर कॉदिवली आदि अनेक उपसघो ने भी अपने सघ मे ध्वनि वर्धक यत्र पर प्रतिक्रमण नहीं करने का निर्णय ले लिया।

वि स २०४२ मे १७ नवम्बर १९८५, को घाटकोपर मे विरक्तात्माओ १ प्रेमलता बच्छावत–बीकानेर (महासती पीयूष प्रभाजी), २ शोभना कोटडिया–शाहदा (महा सयम प्रभाजी म), ३ रेखा चौरडिया– शाहदा (महा श्री रिद्धि प्रभाजी म), ४ विमला बोहरा– शाहदा (महा वैभव प्रभाजी म), ५ पद्मा कोटडिया– अक्कल कुआ (महा पुण्य प्रभाजी म), ६ ललिता कमारी भूरा–जागलू (महा श्री सुबोध प्रभाजी म) की दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। इस प्रकार अनेक नये कीर्तिमान स्थापित करते हुए चातुर्मास सम्पन्न हुआ। मुनि श्री राम के उपचारार्थ आचार्य देव का कुछ दिन और विराजना हुआ। तदनन्तर उपनगरो मे विचरण कर पूना की दिशा मे विहार किया। मार्गवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए आचार्य देव पूना पधारे। पूना शहर मे एक तहलका मच गया। आचार्य देव के बढते हुए प्रभाव को सहन नहीं करने वाले लोगो ने आहार, स्थान देने तक का निषेध कर अपना ओछापन प्रगट कर दिया, फिर भी आचार्य देव का प्रभाव उससे ज्यादा ही बढा।

शारीरिक उपचारार्थ आचार्य श्री का डा सचेती हॉस्पीटल मे विराजना हुआ। डा सचेती, पटवा व तलेसरा परिवार व उनके सहयोगियो की सेवा भावना सराहनीय रही। अखिर शारीरिक स्थिति को देखकर दक्षिणवासियो की विनती पूरजोर होते हुए भी आचार्य श्री ने जलगाव (महाराष्ट्र) का चातुर्मास घोषित कर दिया। होली चातुर्मास, महावीर जयती व अक्षय तृतीया के प्रसग के बाद विहारकर मध्यवर्ती क्षेत्रो को पावन करते हुए चातुर्मासार्थ जलगाव पधारे।

वि स २०४३ का जलगाव चातुर्मास ·

जलगाव सघ की सेवा भावना प्रशसनीय रही। ज्ञान ध्यान, तप त्याग के साथ चातुर्मास पूर्ण हो रहा था लेकिन अकस्मात् आचार्य देव के आख पर मोतिया छा जाने से ऑपरेशन हुआ। कुछ समय बाद शारीरिक स्थिति अनुकूल देखकर आचार्य देव ने विहार कर दिया लेकिन रास्ते मे ऑख का रेटीना खिसक जाने के कारण आख की ज्योति मद पड गई फिर भी आचार्य देव पूर्ण समता भाव से विहार करते हुए महाराष्ट्र से मध्यप्रदेश मे प्रवेश करते हुए लगभग पाच सौ किलोमीटर का विहार करके इन्दौर पधारे।

मैने (मुनि धर्मेश) भी अपने सहयोगी सत मुनि गौतम व मुनि प्रशम के साथ दक्षिण प्रवास के पश्चात् लगभग दस वर्ष बाद आचार्य देव के दर्शन प्राप्त किये। इन्दौर मे लगभग सौ साधु साध्वी विराज रहे थे। इन्दौर मे इन्दुप्रभा काड को लेकर चारो तरफ अशात वातावरण बना हुआ था। उसी समय समता विभूति आचार्य श्री नानेश का भव्य स्वागत के साथ प्रवेश हुआ। आचार्य देव के पद न्यास होते ही सारा आक्रोशमय वातावरण शातिमय बन गया। इसी इन्दौर मे कचन बाग मे चैत्र सुदी १३ महावीर जयती पर वैराग्यवती मधु दुग्गड–कपासन (महासती पराग श्री जी) एव कुमारी भवरी गन्ना, भीम (महासती भावना श्री जी म) की दीक्षा सानन्द सपन्न हुई और अक्षय तृतीया के शुभ प्रसग के पूर्व वैशाख सुदी २ को विरक्तमना सरिता भसाली– डोडी लोहारा (महा श्री दिव्य प्रभाजी म), ऊषा

कुमारी सुराना– राजनादगाव (महासती श्री उज्ज्वल प्रभा जी म), कुमारी छोटी झाबक–रायपुर (महासती श्री कल्पलता जी म) की दीक्षा सानन्द सपन्न हुई।

आचार्य देव के रेटीना का पुन सफल ऑपरेशन हुआ और इसी कारण वि स २०४३ का चातुर्मास भी इन्दौर ही सपन्न हुआ। लगातार एक वर्ष तक आचार्य देव का विराजना इदौरवासियो के भाग्योदय का ही सुफल था। अपूर्व धर्मोद्योत के साथ चातुर्मास पश्चात् भी विराजना हुआ। इसके बाद डाक्टर के परामर्श पर विहार हुआ।

होली चातुर्मास, महावीर जयती और अक्षय तृतीया पर्व पर उज्जैन विराजना हुआ। सूर्या परिवार व अन्य श्रद्धालुओ की सेवा भावना सराहनीय रही। चातुर्मास रतलाम के लिए घोषित हुआ।

मध्यवर्ती नागदा खाचरौद इत्यादि क्षेत्रो को स्पर्शते हुए जावरा पधारे। जावरा मे वि स २०४५ जेठ सुदी ५ को अरविदा मारु–बडीसादडी (महासती अक्षय प्रभा जी म), सरोज मेहता–उदयपुर (महा सरोज श्री जी म), उषा पगारिया– उदयपुर (महा श्रद्धा श्री जी म), ममता लोढा–खण्डेला (महासती समर्पिता श्री जी म), लीला कुमारी पीतलिया–बबोरा (महासती अर्पिता श्री जी म)–पाच मुमुक्षु आत्माओ की दीक्षा सम्पन्न हुई। कल्प काल तक विराज कर रतलाम की ओर विहार किया।

२०४५ का चातुर्मास रतलाम .

रतलाम स्टेशन से रतलाम शहर मे आचार्य श्री का भव्य प्रवेश हुआ। जैन, जैनेत्तर सब ने पूर्णोत्साह के साथ सेवा, दर्शन, प्रवचन का लाभ लिया। साठ के लगभग मासखमण व मासखमण से ऊपर की तपस्या तथा साठ के लगभग आजीवन शीलव्रत धारण के पच्चक्खाण हुए। विविध उपलब्धियो के साथ चातुर्मास सपन्न हुआ।

आचार्य देव ने सैलाना, ताल, आलोट आदि क्षेत्रो को पावन करते हुए मदसौर पदार्पण किया। वि स २०४५ माघ सुदी १० को मदनलाल जी गदिया– उदयपुर (श्री विवेक मुनि जी म), कुमारी किरण काठेड–नीमच (महासती किरण प्रभा जी म) की जैन भागवती दीक्षा– गौतम नगर मे सपन्न हुई। मन्दसौर से विहार कर प्रतापगढ, धमोत्तर आदि क्षेत्रो को पावन करते हुए होली चातुर्मासार्थ पीपल्यामडी पदार्पण हुआ। मगलमय पुनीत अवसर पर कानोड चातुर्मास की घोषणा हुई। पीपल्या मडी से विहार कर नारायणगढ, मनासा, रामपुरा आदि क्षेत्रो को पावन करते हुए नीमच सघ को महावीर जयती एव जावद सघ को अक्षय तृतीया का लाभ देकर मध्यप्रदेश से राजस्थान की सीमा मे प्रवेश करके निम्बाहेडा पधारे।

वि स २०४६ वैशाख सुदी ७, गुरुवार १० मई, १९८९ को आचार्य श्री नानेश के सान्निध्य मे निम्बाहेडा मे गगाबाई सुराणा –राजनादगाव (महासती गरिमा श्री जी) रेखा दरडा– नादगाव (महा) (महासती रेखा श्री जी म), कल्पना छाजेड–नादगाव (महा कल्पना श्री), शोभा बाई लोढा–

रूई, नासिक (महासती शोभा श्री जी) की भागवती दीक्षा सपन्न हुई। इसी शुभ मुहूर्त मे आचार्य श्री की विशेष आज्ञा से बालोतरा मे सेवतमुनि जी म के मुखारविन्द से वैरा विमला वाघमार– पाटोदी (महा विवेक श्री जी म), पुष्पा चौपडा–बाडमेर (महा पुनीता श्री जी म), पुष्पा चोपडा–वायतु (महा श्री पुजिता श्रीजी) की दीक्षा सपन्न हुई। इसी शुभ प्रसग पर परम विदुषी महासती श्री नानूकवर जी म सा के मुखारविद से विल्लिपुरम मे आचार्य श्री की विशेष आज्ञा से चदावाई बोहरा–नेली कुप्पम (महासती चारित्र प्रभा जी म), पुष्पा कुमारी डोसी–विल्लिपुरम् (महासती पुण्य प्रभाजी म) की दीक्षा सम्पन्न हुई।

मेवाड अचल मे विचरण करते हुए आचार्य देव का कानोड चातुर्मासार्थ भव्य प्रवेश हुआ।

कानोड श्री सघ आचार्य देव की दीक्षा स्वर्ण जयती पर तन, मन, धन से लाभ लेने मे जुट पडा।

सन्त-परिचय
झलक

(१) पूज्य श्री हुक्मी चंद जी महाराज .

आप टोडारायसिह (ढूढार) निवासी थे। आपका जन्म वि स १८६० के पौष सुदी ९ को हुआ था। आपकी माता का नाम मोतीया बाई व पिता श्री का नाम रतनलाल जी चपलोत था। एक बार आप व्यापारार्थ बूदी पधारे तो वहा पर कोटा सप्रदाय के पूज्य श्री लालचद जी म सा विराजमान थे। उनका उपदेश श्रवण कर के अन्तर्मन मे ससार से विरक्ति पैदा हो गई। आखिर सवत् १८७९ की मिगसर सुदी १ को बूदी मे ही दीक्षा ग्रहण की। गहन शास्त्रीय अध्ययन करने के पश्चात् साधुओ की करनी व कथनी मे वैपरीत्य देखकर शुद्ध सयम पालन करने हेतु गुरुदेव के चरणो मे प्रार्थना की। पर गुरुदेव ने उस ओर ध्यान नहीं दिया तब अपने सयमी जीवन को प्रशस्त बनाने हेतु बेले–बेले का कठोर तप धारण कर विचरने लगे जो लगभग २१ वर्ष तक चला। पारणे मे सर्व प्रकार के मिष्ठान्न व तली वस्तु का त्याग कर दिया। जीवन भर के लिए सिर्फ तेरह द्रव्य ही रखे। भयकर सर्दी मे भी केवल एक चादर ओढने का सकल्प धारण किया। बाद मे वि स १८९० मिगसर बदी १ को एकाकी विचरण करने लग गये। आपके तप त्याग से प्रभावित होकर पूज्य गोविदराम जी म के शिष्य दयालचद जी महाराज भी बाद मे आपके पास आ गये। बाद मे धामनिया निवासी शिवलाल जी की दीक्षा हुई और सती–शिरोमणि रगूजी महासती की भी दीक्षा हुई और महासती खेतुजी भी आपकी आज्ञा मे विचरण करने लगी।

पूज्य हुक्मेश के तप के प्रभाव से रामपुरा (म प्र) मे सुदर कवर की बेडिये टूटी, वही बहिन आगे चलकर साध्वी बनी। चित्तौड मे एक कुष्ट रोग पीडित भाई का कुष्ट रोग समाप्त हुआ। नाथद्वारा (मेवाड) मे व्याख्यान मे रुपयो की वर्षा हुई–आदि चमत्कारमय घटनाओ से जन मन मे अपूर्व श्रद्धा जागृत हुई। वि स १९०७ माघसुदी ५ को बीकानेर मे एक साथ ५ दीक्षा सपन्न हुई तब आपने सारी सघीय व्यवस्था का भार मुनि श्री शिवलाल जी को सौप कर अपना जीवन शास्त्र लेखन, स्वाध्याय मौन आदि साधना के साथ प्रतिदिन २००० नमोत्थुण के जाप करते हुए व्यतीत करने लगे। तात्कालीन चतुर्विध सघ ने आपको अपना आचार्य व शिव मुनि जी म सा को युवाचार्य स्वीकार करके वदना की। आप जितने–जितने निर्लेप रहने लगे, उतनी ही चतुर्विध सघ की श्रद्धा आपके प्रति प्रगाढ होने लगी। सघ पचम आरे मे भी चौथे आरे के परमानन्द की अनुभूति करने लगा। आपके हस्तलिखित शास्त्र आज भी मौजूद है। आपने अपनी नेश्राय मे शिष्य शिष्या रखने का त्याग कर दिया फिर भी आपके नाम से ही आज सबसे बडा साधुमार्गी सप्रदाय प्रख्यात है। आखिर वि स १९१७ वैशाख सुदी–५ मगलवार को रात्रि के पिछले प्रहर मे सथारा सलेखना सहित जावद मे स्वर्गवास हो गया।

(२) दयालचन्द जी महाराज

आप चोरू (ढूढार) के निवासी पोरवाल जैन थे। आपने पूज्य गोविन्द राम जी म के पास दीक्षा ग्रहण की और बाद मे पूज्य श्री हुक्मीचद जी म के साथ विचरण करने लगे। पूज्य शिवाचार्य जैसे

प्रतिभावान शिष्य की प्राप्ति हुई। दीक्षा के बाद स १८९१ के जेठ महीने मे ही आपका स्वर्गवास हो गया था।

(३) पूज्य श्री शिवलाल जी महाराज

आपका जन्म वि स १८६७ पोष सुदी १० को ग्राम धामनिया तत्कालीन मेवाड के श्रेष्ठिवर्य टीकमदास जी बोडावत की धर्मपत्नी कुदन बाई की कुक्षि से हुआ। सत समागम से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स १८९१ मिगसर सुदी–१ को रतलाम (म प्र) मे पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी म के मुखारविन्द से दीक्षा स्वीकार की और मुनि श्री दयालचद जी म के शिष्य बने और पूर्ण समर्पण भाव से पूज्य हुक्मेश के अतेवासी बनकर रहे। जिसके फलस्वरूप वि स १९०७ माघ सुदी ५ को बीकानेर मे चतुर्विध सघ की साक्षी से सघ का सारा उत्तरदायित्व आपको सोप दिया। बाद मे वि स १९१७ की वैशाख सुदी ५ को जावद मे पूज्य हुक्मेश के स्वर्गवास होने के पश्चात् आचार्य पद से सुशोभित हुए। आपने ३३ वर्ष तक लगातार एकान्तर तपाराधन किया। आपके शासन काल मे अनेक सत सती दीक्षित हुए। अपनी वृद्धावस्था को देखकर वि स १९२५ पोष सुदी ७ को मुनि श्री उदयसागर जी महाराज को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करके वि स १९३३ के पोष सुदी ६ मगलवार को जावद मे ही स्वर्गवास हो गया।

(४) मनाजी म. :

आपने शिवाचार्य के पास दीक्षा ली। विशेष परिचय अज्ञात।

(५) चतुर्भुज जी महाराज

आप सिगोली (मेवाड) निवासी ओसवाल लसोड परिवार के थे। शिवाचार्य के नेश्राय मे शिष्य बने और वि स १९२१ मे जावद मे स्वर्गवास हुआ। सादुलसिह जी और लालचद जी म बीकानेर वाले आपके शिष्य थे। विशेष परिचय अज्ञात है।

(६) उम्मेदमल जी महाराज :

आपश्री शिवाचार्य के शिष्य थे। विशेष परिचय अज्ञात है।

(७) उत्तमचन्द जी महाराज :

आप भी शिवाचार्य के शिष्य थे। विशेष परिचय अज्ञात है।

(८) मगनमल जी महाराज :

आप श्री शिवाचार्य के शिष्य थे। विशेष परिचय अज्ञात है।

(९) हरकचन्द जी महाराज

आप मालव प्रान्त मे सजीत गाव के निवासी थे। कटारिया ओसवाल परिवार मे जन्म लिया था और शिवाचार्य की नेश्राय मे दीक्षित हुए थे। आप श्री की नेश्राय मे पूज्य उदयसागर जी म, पूज्य

चौथमल जी म आदि नौ शिष्य दीक्षित हुए थे। उत्कृष्ट तप सयम की आराधना करते वि स १९४२ के कार्तिक माह मे ब्यावर मे स्वर्गवासी हुए।

(१०) मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज

आप अलवर निवासी थे। ओसवाल पूगलिया परिवार मे आपका जन्म हुआ और वि स १९१७ मे पोष बदी ९ को बीकानेर मे दीक्षा सपन्न हुई और बडे केवलचद जी म के शिष्य बने और बाद मे पडवाई बन गये।

(११) मुनि श्री सार्दुल सिंहजी महाराज

आपका जन्म बीकानेर (थली प्रात) कोठारी परिवार मे हुआ था और आपने वि स १९०७ माघ सुदी ५ के ऐतिहासिक दीक्षा दिवस पर पूज्य हुक्मीचद जी म के मुखारविन्द से दीक्षा हुई थी और चतुर्भुज जी म की नेश्राय मे शिष्य बने थे और उत्कृष्ट तप सयम की विशुद्ध साधना करते हुए वि स १९४२ की माघ बदी १३ को बीकानेर मे ही स्वर्गवास हुआ। आपकी नेश्राय मे मोडसिह जी, भीमराज जी, गजराज जी नामक तीन शिष्य हुए थे।

(१२) छोटे लालचन्द जी महाराज .

आप बीकानेर निवासी थे। ओसवाल लोढा परिवार मे आपका जन्म हुआ था। आपकी दीक्षा भी वि स १९०७ की माघ सुदी ५ को पूज्य हुक्मीचद जी म के मुखारविन्द से बीकानेर के ऐतिहासिक प्रसग पर हुई थी और हरकचन्द जी म की नेश्राय मे शिष्य बने थे। उत्कृष्ट तप सयम का आराधन करते हुए वि स १९३३ मे बनेडा पधारे और चित्तौड मे स्वर्गवासी हुए।

(१३) बडे लालचद जी महाराज

आपने बीकानेर के डागा (रामसर वाला) परिवार मे जन्म लिया और वि स १९०७ माघ सुदी ५ को अपने पुत्र केवलचन्द के साथ पूज्य हुक्मीचद जी म के मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण की और चतुर्भुजजी म के शिष्य बने। आपके सालगराम जी व अपने पुत्र केवलचन्द जी बडे शिष्य हुए।

सालगराम जी महाराज

आप बीकानेर के अग्रवाल परिवार के थे। जैसा कि सुना जाता है कि वि स १९०७ माघ सुदी ५ के दिन दीक्षा तो चार ही निश्चित हुई थी लेकिन सिर मुडन हेतु नाई पाच आ गये थे। चार नाई तो वैरागियो का सिर मुडने बैठ गये लेकिन पाचवा नाई उदासीन होकर अपने भाग्य को कोसने लगा। सालगराम जी उस समय वहीं खडे थे। उसको उदासीन देखकर पूछ बैठे– उदासीनता का कारण। ज्योही उसने कारण बताया तो सुनकर बोल उठे– यार ! छोड उदासी और मूड मुझे। और बैठ गये सिर मुडाने और वैसे आपके मन मे अपने स्नेही लालचद जी व उनके पुत्र केवलचन्द जी दीक्षा लेते देखकर मन तो उद्विग्न था ही, फिर यह निमित्त मिल गया। बस फिर क्या था– साधुवेष पहन कर

पूज्य श्री के सामने खडे हो गये। उनकी उत्कृष्ट भावना को देखकर दीक्षा पच्चक्खा दी गई और लालचद जी म के शिष्य घोषित हुए। उत्कृष्ट तप सयम का आराधन करते हुए विचरते–विचरते दिल्ली पधारे और वहीं स्वर्गवास हो गया।

बडे केवलचद जी महाराज .

आप भी बीकानेर के ही निवासी थे। रामसर वाले डागा– ओसवाल परिवार मे आपका जन्म हुआ। आपने भी उत्कृष्ट वैराग्य से वि स १९०७ माघ सुदी– ५ को अपने पिता श्री बडे लालचन्द जी म के साथ पूज्य श्री हुक्मीचन्द म के मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण की ओर लालचद जी म के शिष्य घोषित हुए। आपके सदुपदेश से प्रभावित होकर चतरो जी (उत्कृष्ट क्षमा सागर), हसराजजी, पन्नालाल जी, तपस्वी केवलचद जी छोटा, लक्ष्मीचद जी, जुवारमल जी, रूपजी, मोतीलाल जी आदि शिष्य बने। उत्कृष्ट तप सयम का आराधन करते हुए वि स १९५० मे रतलाम पधारे और सलेखना सथारा सहित स्वर्ग पधारे।

आचार्य श्री उदय सागर जी महाराज :

आप जोधपुर निवासी थे। नथमलजी खींवेसरा की धर्मपत्नी जीवी बाई की कुक्षि से वि स १८७६ आसोज सुदी पूर्णिमा को आपने जन्म पाया। यौवनवय मे प्रवेश होते ही आपकी शादी तय हो गई। बरात तोरण पर पहुची और सासूजी द्वारा तिलक करते समय झटके से पगडी नीचे गिर गई और उसी समय वापस मुड (लौट) गये। दीक्षा लेने का सकल्प धारण करके घर से निकल पडे। परिवार वालो की अनुमति नहीं मिलने के कारण सात वर्ष तक भिक्षाचरी करते हुए जीवन यापन किया। आपके साथी राजमल जी बोरा ने भी आपके साथ मारवाड की सप्रदाय मे आज्ञा पाकर वि स १८९८ चैत्र सुदी ११ को दीक्षा ग्रहण की। बाद मे विचरते हुए बीकानेर पधारे और वि स १९०८ चैत्र सुदी ११ को पूज्य श्री हुक्मीचद जी म के मुखारविन्द से छ जीवनिकाय श्रवण कर पुन दीक्षा ग्रहण की और दोनो मुनि श्री हरकचद जी म के शिष्य बने। आपने सुदूर प्रातो मे पजाब, रावलपिडी तक विचरण किया। आचार्य श्री शिवलाल जी म ने वि स १९२५ पोष सुदी ७ को अपने उत्तराधिकारी के रूप मे आपकी नियुक्ति की। बाद मे वि स १९३३ पोष सुद ६ मगलवार को शिवाचार्य के स्वर्गवास के पश्चात् आप श्री आचार्य बने। आपको अपने नेश्राय मे शिष्य बनाने का त्याग था, आपका अनुशासन बडा कठोर था। आपकी मिलनसार वृत्ति ऐसी थी कि सारा जैन समाज आपको अपना नेता मानता था। उपकारी के उपकार को कभी नहीं भूलते थे। आपके शासनकाल मे शासन की महान् अभिवृद्धि हुई थी। अतिम अवस्था मे आपने अपने गण (सघ) की चार भागो मे सुव्यवस्था करके मुनि श्री चौथमल जी को उत्तराधिकारी के रूप मे नियुक्ति करके वि स १९५४ की माघ सुदी १० मगलवार को सथारा सलेखना सहित रतलाम मे स्वर्ग प्रयाण किया।

मुनि श्री राजमल जी म. :

आपश्री जोधपुर निवासी थे। ओसवाल बोहरा परिवार मे जन्मे और यौवनावस्था मे आचार्य श्री उदयसागर जी म के साथ ही १८९८ की चैत्र शुक्ला ११ को दीक्षा ग्रहण की। बाद मे सवत् १९०८ की चैत्र सुदी–११ को बीकानेर मे पूज्य श्री हुक्मीचद जी म के पास छ जीवनिकाय श्रवणकर पुन दीक्षा ग्रहण की और हरकचद जी म के शिष्य बने। आपके तप–तेज से प्रभावित होकर स्वरूपचद जी, रतनचद जी, देवजी, घासीलाल जी, रिखबदास जी, मेघराज जी, मन्ना जी आदि प्रमुख शिष्य हुए और उत्कृष्ट तप सयम साधना करते हुए वि स १९४७ के मिगसर महीने मे जावद मे स्वर्गवास हुआ।

आचार्य श्री चौथमल जी महाराज :

आप मारवाड मे पाली के निवासी थे। ओसवाल धोकाकुल मे आपका जन्म वि स १८८५ वैशाख सुदी ४ को हुआ। आपके पिता श्री का नाम पोखरदास जी (ओघजी) व मातु श्री का नाम हीरा बाई था। आपने वि स १९०९ की चैत्र सुदी १२ को नयाशहर (ब्यावर) मे उत्कृष्ट वैराग्य भाव से दीक्षा ग्रहण की और हरकचद जी म के शिष्य बने। आप अपने समय के धुरधर विद्वान् और उत्कृष्ट क्रिया पात्र सत थे। आचार्य श्री उदयसागर जी महाराज ने अपनी वृद्धावस्था मे वि स १९५४ की आसोज सुदी १५ को रतलाम मे युवाचार्य नियुक्त किया था और वि स १९५४ के माघ सुदी १० को आचार्य श्री उदयसागर जी महाराज के स्वर्गवास के पश्चात् हुक्म सघ के आचार्य बने और १९५७ के कार्तिक सुदी १ को रतलाम मे ही मुनि श्री श्रीलाल जी महाराज को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर स्वर्ग पधारे। वृद्धि चदजी, ऊकार लाल जी, प्रतापमल जी, पीरदान जी, शिवलाल जी, भीमराज जी, किशनसागर जी, पृथ्वीराज जी, देवकरण जी आदि प्रमुख शिष्य हुए।

मुनि श्री जयचन्दलाल जी महाराज ·

आपने ओसवाल कुल मे जन्म लिया था और वि स १९०९ की वैशाख शुक्ला २ को हरकचन्दजी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आगे विशेष परिचय अनुपलब्ध है। आप श्री के भैरूजी और रामसुख जी ये दो शिष्य हुए।

मुनि श्री प्यार चद जी महाराज

आप मध्यप्रदेश बडौद (सुडावद) के निवासी थे और ओसवाल चोरडिया गोत्र था। आपने वि स १९१२ चैत्र सुदी १ को रतलाम मे छोटे केवलचद जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आपके मुनि श्री नाथूलाल जी और मुनि श्री देवोजी ये दो शिष्य हुए थे। आप उत्कृष्ट तप सयम आराधन करते हुए वि स १९७० कार्तिक बदी १३ सोमवार को रामपुरा मे स्वर्गस्थ हुए।

मुनि श्री चतुर्भुज जी म. द्वितीय

आप मध्यप्रदेश की झाबुआ रियासत मे थादला निवासी थे। आपका जन्म ओसवाल भसाली परिवार मे हुआ था। सवत् १९१२ सावन बदी ५ को अपने छोटे भाई रूपचद जी के साथ रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की थी और मुनिश्री हरक चद जी म सा के शिष्य बने थे। विशुद्ध तप सयमाराधन करते हुए वि स १९४५ की जेठ सुदी २ को खाचरोद (म प्र) मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री रूप चन्द जी महाराज

आप मध्यप्रदेश झाबुआ रियासत मे थादला निवासी थे। आपका जन्म ओसवाल भसाली परिवार मे हुआ था। सवत् १९१२ सावन बदी ५ को अपने बडे भ्राता चतुर्भुज जी के साथ रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप अपने बडे भाई चतुर्भुज जी महाराज द्वितीय के शिष्य बने। सवत् १९६४ के मिगसर माह मे मलकापुर (महाराष्ट्र) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री दलीचन्द जी महाराज ·

आप मालवा मे सैलाना निवासी थे। आपने ओसवाल पूगलिया कुल मे जन्म लिया था। आपने १९१२ मे दीक्षा ली और हरकचन्द जी महाराज के शिष्य बने और १९२२ मे पडवाई होने की सभावना है। विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री हसराज जी महाराज

आप मालवा मे सैलाना निवासी थे। ओसवाल सोनी परिवार मे जन्म लिया और सवत् १९१२ मे बडे केवलचन्द जी महाराज के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आगे विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री केवलचन्द जी महाराज (छोटे) .

आप बडोद सुडावाड के निवासी थे। ओसवाल परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९१२ मे रतलाम (म प्र) मे बडे केवलचन्दजी म सा की नेश्राय मे दीक्षित हुए थे। उत्कृष्ट परिणामो से तप सयम की आराधना करते हुए सवत् १९२७ मे बखतगढ (म प्र) मे स्वर्गवासी हुए। आपके थावरचन्द जी म, घासीलाल जी म, कवरलाल जी म, प्यारचद जी म, रतनचन्द जी म आदि प्रमुख शिष्य हुए।

तपस्वी मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज ·

आप मध्यप्रदेश मे रामपुरा के निवासी थे। आपका जन्म ओसवाल श्रीश्रीमाल परिवार में हुआ था। सवत् १९१२ पौष सुद ३ गुरुवार को बडे केवल चन्द जी म सा के नेश्राय मे दीक्षित हुए थे। आप घोर तपस्वी थे। आपके ही उपदेश को श्रवण करके पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा ने ब्रह्मचर्य की कठोरतम प्रतिज्ञा धारण की थी और शादी के समय तोरण जाते समय भी घोडी से नीचे उतरकर स्थानक मे जाकर दर्शन किये और मगल पाठ श्रवण किया था। पूज्य श्री का आपके प्रति विशेष राग भाव था। आपने शासन की वहुत प्रभावना की और सवत् १९५४ के आषाढ महीने मे टोक मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री थावर चन्दजी महाराज

आप मालवा के बडौद सुडावाड निवासी थे। ओसवाल राठौड परिवार मे आपने जन्म लिया था। सवत् १९१२ मे अपने भाई कुवर जी के साथ रतलाम मे दीक्षित हुए और छोटे केवलचन्द जी म सा के शिष्य बने। आप दोनो भाई सवत् १९२९ को मारवाड मे विचरण करते हुए पाली पधार रहे थे। रास्ते मे भयकर दुर्घटना से अकस्मात् काल कर गये।

मुनि श्री कुवर जी महाराज

आप मालवा के बडौद सुडावाड निवासी थे। ओसवाल राठौड परिवार मे आपने जन्म लिया था। सवत् १९१२ मे अपने भाई थावर चदजी महाराज के साथ रतलाम मे दीक्षित हुए। अपने बडे भाई थावर चन्द जी महाराज के शिष्य थे।

मुनि श्री घासीलाल जी महाराज

आप छोटे केवलचन्द जी म सा के शिष्य थे। इसके अलावा विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री चतरोजी :

आप मालवा मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल राका परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९१२ की कार्तिक सुदी ८ को रतलाम मे ही दीक्षा हुई थी और बडे केवल चद जी म के शिष्य बने थे। आप बहुत सरलात्मा एव विनय की साकार मूर्ति थे। आप को कोई बिना अपराध के भी उपालम्भ दे देते तो भी कभी रोष प्रगट नहीं करते। एक दिन आपके हाथ मे एक फूटा हुआ पात्र देखकर तृतीय पट्टधर आचार्य श्री उदयसागरजी म सा ने इनको उपालम्भ दिया, लेकिन आप ने यह भी नहीं कहा कि यह पात्र मेरे से नहीं फूटा। आप मुझे क्यो उपालम्भ दे रहे है। बाद मे यथार्थता प्रगट होने पर आचार्य को बहुत पश्चाताप हुआ और वे क्षमायाचना करने लगे और बोले भाई ! तूने क्यो नहीं बताया कि यह पात्र मेरे से नहीं फूटा, मैने निष्कारण ही आपको टोका। आचार्य देव के इन वचनो को सुनकर मुनि श्री बोले–कृपानाथ ! इसमे क्या हुआ। यदि मै बोल देता तो सत्गुरुदेव के शिक्षाप्रद वचन श्रवण का लाभ मुझे कैसे प्राप्त होता। यह बात सुनकर आचार्य देव उनको उत्कृष्ट क्षमासागर जी के नाम से ही सबोधित करने लगे। इस प्रकार आप तप सयम एव क्षमा के उच्चतम आदर्शो को साधते १९४१ छोटीसादडी (मेवाड) चातुर्मास मे भादवा सुदी ८ मगलवार को स्वर्गवास हो गया। आपके मगनमुनि जी म, कृपाराम जी म, जयचन्द जी म आदि ३ शिष्य हुए थे।

मुनि श्री रामलाल जी महाराज :

आपने मुनि हरक चन्द जी म सा के नेश्राय मे सवत् १९१३ मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे मति भ्रमणा के कारण तेरापथी बन गये। इसके अलावा विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री झंवरलाल जी महाराज :

आप मारवाड मे कालू निवासी थे और सरावगी छगडा परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९१३ की मिति माह बद ५ को हरकचन्दजी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और आपके कालोजी और फत्तोजी नाम के दो शिष्य हुए थे।

मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज .

आप तत्कालीन मेवाड (वर्तमान मे मालवा) मे कजार्डा निवासी थे और ओसवाल भडारी कुल मे आपका जन्म हुआ था। आपने अपनी पत्नी, तीन बच्चो (हीरालाल, जुहारलाल, नदलाल) को छोडकर अपने साले देवीचन्द जी के साथ सवत् १९१४ जेठ सुद ५ को सरवानिया मे मुनि श्री राजमल जी म के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे पत्नी और तीनो पुत्रो ने भी दीक्षा ग्रहण कर ली थी। तप सयम साधना करते हुए सवत् १९५० आषाढ बदी २ शनिवार को जावरा (म प्र) मे स्वर्गस्थ हुए। आपके जुहार लाल जी म, गणेशमल जी, गभीरमल जी म ये तीन शिष्य हुए।

मुनि श्री देवीलाल जी महाराज :

आप मेवाड मे बडकुआ निवासी थे। आपने अपने बहनोई जी के साथ सवत् १९१४ जेठ सुदी ५ को सरवानिया मे मुनिश्री राजमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सयम साधना करते हुए सवत् १९५७ मे खाचरौद (म प्र) मे स्वर्गवास हुआ। आपके शिष्य रत्न– चैनराम जी म, जीवराज जी महाराज, हीरालाल जी महाराज, वृद्धिचन्द जी महाराज हुए।

मुनि श्री स्वरूप चन्द जी :

आप मूल निवासी रतलाम (म प्र) के थे। बाद मे नीमच रहने लग गये। ओसवाल गोला थे। सवत् १९१४ मे राजमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आगे इससे विशेष परिचय उपलब्ध नहीं है।

मुनि श्री रिखबदास जी महाराज ·

आप तत्कालीन मेवाड वर्तमानिक मालवा मे कजार्डा निवासी थे। आपने ओसवाल भडारी टीकरिया परिवार मे जन्म लिया था। आपने सवत् १९१४ मिगसर बदी २ को रतलाम मे राजमल जी महाराज के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। तप सयम आराधना करते हुए १९४३ के माघ महीने मे बडीसादडी (मेवाड) मे आपका स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री वृद्धिचन्द जी महाराज :

आप मेवाड मे मोरवन निवासी थे। ओसवाल मोगरा परिवार मे आपका जन्म हुआ था। आपने सवत् १९१६ मिति फागण सुदी ३ बडीसादडी (मेवाड) मे पूज्य श्री चौथमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। सवत् १९५९ के चैत्र सुदी १३ सोमवार को जावरा मे स्वर्गवास हुआ। आपके

डालचन्द जी म, मोतीलाल जी म, छोटूलाल जी म, लालचन्दजी म, पूज्य श्री श्रीलाल जी महाराज, मोडीलाल जी म, शोभालाल जी म, चान्दमल जी म, गब्बूलाल जी म आदि शिष्य बने।

मुनि श्री हीराचन्द जी महाराज

आप मेवाड मे कजार्डा निवासी थे। ओसवाल भडारी घर परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९१६ मिगसर सुदी १३ को मुनि श्री चतुर्भुज जी म सा के चरणो मे बडीसादडी मे दीक्षा ग्रहण की। आपके मुनि श्री रामसुखजी शिष्य बने। बाद मे आप मूर्तिपूजक साधु बन गये।

मुनि श्री घासीलाल जी महाराज द्वितीय

आप मेवाड मे मोरवन निवासी थे। ओसवाल मोगरा परिवार मे जन्म लिया था और सवत् १९१६ फागण सुदी ३ को बडीसादडी मे दीक्षा ग्रहण की और राजमल जी महाराज के शिष्य बने। सयम साधना करते–करते सवत् १९५६ के माघ सुदी १० को खाचरौद मे सूत्र पढते–२ स्वर्गवास हो गया। आपके लालचन्द जी म, तपस्वी रिखबचन्द जी म, देवीलाल जी म, और मोतीलाल जी महाराज शिष्य थे।

मुनि श्री मेघराज जी (मगन जी)

आपने ओसवाल सोनी परिवार मे जन्म लिया और स १९१७ की मिति जेठ सुदी ५ को शिवाचार्य के शासन काल मे राजमल जी महाराज के शिष्य बने। ज्यादा परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री हीरालाल जी महाराज ·

आप ढूढार प्रान्त के चाडसो गाव के ओसवाल परिवार मे जन्मे थे और स १९१७ जेठ सुदी ५ को दीक्षा ग्रहण की और देवीलाल जी म सा के शिष्य बने और चाडसो मे ही स्वर्गवास हुआ। इससे ज्यादा परिचय उपलब्ध नहीं है।

मुनि श्री मगनलाल जी महाराज ·

आपने मालवा प्रान्त मे कजार्डा ग्राम मे जन्म लिया था। सवत् १९१७ जेठ सुदी ५ को कजार्डा मे चतरो जी (उत्कृष्ट क्षमा सागर जी महाराज) की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। १९५७ माघ सुदी ९ रविवार को मदसौर मे आपका स्वर्गवास हुआ। आपके मुनि श्री चम्पालाल जी व मुनि श्री उत्तमचन्द जी महाराज शिष्य बने।

मुनि श्री बादरमल जी महाराज :

आपश्री की स १९१८ की चैत्र सुदी १२ को दीक्षा हुई। विशेष कोई परिचय उपलब्ध नहीं है।

मुनि श्री कालूराम जी महाराज

आपकी दीक्षा सवत् १९१८ आषाढ सुदी १२ को हुई थी। इसके अलावा विशेष कोई परिचय उपलब्ध नहीं है।

मुनि श्री कृपाराम जी महाराज .

आप मेवाड मे कजार्डा के निवासी थे ओर ओसवाल नलवाया परिवार मे आपने जन्म लिया था। सवत् १९१८ मिगसर सुदी ९ को कजार्डा मे ही चतरो जी (उत्कृष्ट क्षमा सागर जी) महाराज के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। उत्कृष्ट सयम साधना करते हुए सवत् १९४७ मे मदसोर (म प्र) मे स्वर्गवास हुआ। आप श्री के दलीचन्द जी महाराज, तपस्वी श्री लालचन्द जी महाराज, मोतीलाल जी महाराज, रूपचन्द जी महाराज, हुक्मीचन्द जी महाराज आदि शिष्य हुए।

मुनि श्री मोडसिह जी महाराज :

आप पजाब मे अम्बाला निवासी थे। आपने ओसवाल लोढा परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९१८ माघ बदी ५ को शार्दुलसिह जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९४६ मे सजीत (मालवा) मे स्वर्गवास हुआ। आपके मोड जी महाराज, दयाराम जी महाराज, खेमराज जी महाराज आदि शिष्य हुए थे।

मुनि श्री मेघराज जी महाराज .

आप मालवा प्रान्त मे सरवानिया ग्राम के निवासी थे और ओसवाल नपावलिया परिवार मे जन्म लिया था। आपने १९१८ के फागण सुदी ९ को रतनचद जी महाराज द्वितीय के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और तप सयम की साधना करते हुए १९३३ मे मन्दसौर (म प्र) मे काल धर्म को प्राप्त हुए।

मुनि श्री जयचन्द लाल जी महाराज– द्वितीय .

आप कजार्डा निवासी थे और ओसवाल राठौड कुल मे जन्मे थे। आपने अपने पुत्र पत्नी आदि को छोडकर सवत् १९१९ कीर्तिक सुदी ७ को कजार्डा मे ही चतरो जी (उत्कृष्ट क्षमासागर) की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। उत्कृष्ट तप सयम की आराधना करते हुए १९५५ चेत सुदी ४ शनिवार को नीमच मे स्वर्गलोक पधारे। आपके पुत्र कस्तूरचन्द जी व दौलजी ये दो शिष्य हुए थे।

मुनि श्री बच्छराज जी महाराज :

आप मालवा प्रान्त के नीमच शहर के वासी और ओसवाल कोठारी परिवार मे जन्मे थे। सवत् १९१९ मिगसर बदी ७ को शार्दुलसिह जी म सा की नेश्राय मे भाणपुरा में दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९२६ मे कानोड मे स्वर्गवास हुआ था। आपके रुघनाथजी नाम के शिष्य हुए।

मुनि श्री भीमराज जी महाराज .

आप मेवाड मे मागरोल निवासी थे। ओसवाल चडालिया परिवार मे आपने जन्म लिया। सवत् १९१९ मे शार्दुलसिह जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। कवलियास मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री गुलाब चन्द जी महाराज

आप आगर बडौद सुडावाद निवासी थे। ओसवाल नलवाया परिवार मे जन्म लिया था और सवत् १९१९ फागण सुदी ७ को चतुर्भुज जी म द्वितीय के शिष्य बने और बडौद मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री जवाहरलाल जी महाराज

आप कजार्डा निवासी थे। ओसवाल भडारी घर परिवार मे जन्म लिया था। आपके पिताजी रतनचन्द जी और मामाजी देवीलाल जी ने तो पहले ही दीक्षा ले ली थी। बाद मे आपने अपने भाई हीरालाल जी, नन्दलाल जी व माताजी राजीबाई के साथ कजार्डा मे ही सवत् १९२० पोष सुद ६ को दीक्षा ग्रहण की और अपने पिता मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज के शिष्य बने। आपसे शासन की बहुत बडी प्रभावना हुई थी। खूब धर्मोद्योत करते हुए स १९७२ कार्तिक सुदी ६ शुक्रवार को मन्दसौर मे आपका स्वर्गवास हुआ था। आपके हीरालाल जी म, नन्दलाल जी म, मानकचन्द जी म, चैनरामजी म, लक्ष्मीचन्द जी म आदि शिष्य बने थे।

मुनि श्री हीरालाल जी महाराज

आप कजार्डा निवासी थे। रतनचन्द जी भडारी के घर राजी बाई की कुक्षि मे जन्म ग्रहण किया। आपके पिता श्री व मामाजी देवीलाल जी ने पहले दीक्षा ले रखी थी। आपने युगल भ्राता (जवाहरलाल जी व नन्दलाल जी) तथा मातु श्री के साथ सवत् १९२० पोष सुद ६ को कजार्डा मे दीक्षा ग्रहण की। आपश्री अपने भ्राता मुनि श्री जवाहरलाल जी के शिष्य बने। शासन प्रभावना के साथ सम्वत् १९७४ आसोज बदी २ बुधवार को अजमेर (राज) मे स्वर्गवासी हुए। आप श्री के मुनि श्री साकरचन्द जी, प्रसिद्ध वक्ता श्री चौथमल जी म, मुनि श्री हजारीमल जी म मुनि श्री गुलाब चन्द जी म, तपस्वी मुनि श्री हजारी मल जी म, मुनि श्री शोभालाल जी म, मुनि श्री मयाराम जी म, मुनि श्री मूलचन्द जी म शिष्य रत्न हुए।

मुनि श्री नन्दलाल जी महाराज

आप कजार्डा निवासी थे। भडारी परिवार के रत्न रतनचन्द जी आप के पिताश्री थे। मातु श्री का नाम राजी बाई था। पिता श्री की दीक्षा के बाद भ्राता युगल (जवाहरलाल जी व हीरालाल जी) व मातु श्री राजी बाई के साथ स १९२० पोष सुदी ६ को कजार्डा मे भागवती दीक्षा अगीकार की। अपने भ्राता मुनि श्री जवाहरलाल जी का शिष्यत्व अगीकार किया। रत्नत्रय की साधना करते हुए १९९३ सावन बदी ३ मगलवार को रतलाम मे स्वर्ग पधारे। आपके मुनि श्री रायचन्द जी म, मुनि श्री भगवान जी, मुनि श्री नरसिह जी म, मुनि श्री धनचन्द्र जी म, मुनि श्री भोप जी, मुनि श्री नाथूलाल जी म, मुनि श्री मन्नालाल जी म, मुनि श्री बोटूलाल जी म आदि शिष्य वृन्द हुए।

मुनि श्री पूषालाल जी महाराज .

आप श्री ने १९२० मे पोष सुदी ८ को दीक्षा अगीकार की। विशेष परिचय उपलब्ध नहीं है।

मुनि श्री इन्द्रमल जी महाराज .

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। आपने ओसवाल गाधी परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९२१ मिगसर बदी ७ को चतुरभुज जी महाराज ॥ की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आगर मे आपका स्वर्गवास हुआ। आपश्री के मुनि श्री मियाचन्द जी और एक तेरापन्थी साधु– ये दो शिष्य हुए।

मुनि श्री दयाराम जी (दयाचन्द जी म.) महाराज :

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल छाजेड परिवार मे आपका जन्म हुआ था और १९२२ आषाढ सुदी १२ को रतलाम मे ही दीक्षा ग्रहण की थी और मोडसिह जी महाराज के नेश्राय मे शिष्यत्व स्वीकार किया। १९४० के वैशाख बदी ५ को रतलाम मे ही स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री रुघनाथ जी महाराज :

आप मारवाड मे मायासर निवासी थे। ओसवाल श्रीश्रीमाल परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९२२ मिति मिगसर बदी ७ को बच्छराज जी म सा के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और सवत् १९५७ मे बीकानेर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री प्रतापमल जी महाराज :

आप मारवाड मे नागौर निवासी थे। कासलीवाल सरावगी परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९२४ वैशाख सुदी ५ को जावद मे पूज्य श्री चौथमल जी म सा के नेश्राय मे दीक्षा स्वीकार की। सवत् १९६१ माघ सुदी ५ गुरुवार को रतलाम मे स्वर्गवास हुआ। आपके मुनि श्री रूपचन्द जी म, मुनि श्री चन्दनमल जी म, मुनि श्री खेमराज जी म, मुनि श्री शकरलाल जी म, मुनिश्री मगनलाल जी म, मुनि श्री पृथ्वीराज जी म सा आदि शिष्य हुए।

मुनि श्री राम सुख जी महाराज .

आपने सवत् १९२५ वैशाख सुद १५ को दीक्षा ग्रहण की थी और जयचन्द जी महाराज । के शिष्य बने थे। इससे ज्यादा परिचय उपलब्ध नहीं हुआ।

मुनि श्री भैरूलाल जी महाराज :

आप मुनि श्री जयचन्द जी म सा के शिष्य बने। विशेष परिचय उपलब्ध नहीं।

मुनि श्री मोडसिंह जी (मोडजी) महाराज :

आप मेवाड मे भाटखेडी निवासी थे। ओसवाल भडारी कुल मे आपने जन्म लिया था और

सवत् १९२५ आषाढ सुदी ८ को दीक्षा ग्रहण की और मुनि श्री मोडसिह जी प्रथम के शिष्य बने और सवत् १९३२ मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री किस्तुर चन्द जी महाराज

आप मालवा मे कजार्डा निवासी थे ओसवाल राठौड परिवार मे जन्मे थे। सवत् १९२५ भादवा बदी ७ को जावद मे मुनि श्री जयचद जी II के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९७३ के पौष सुदी १३ को चित्तौड मे स्वर्गवास हुआ। आपके मुनि श्री दौलतराम जी म, खेमचन्द जी म, नाथूजी म, कालूजी म, रामलाल जी म, छीतरमल जी म आदि शिष्य बने थे।

मुनि श्री ऊकारलाल जी महाराज

आप मालव प्रान्त जमुनिया निवासी थे। आपने भानावत कुल मे जन्म लिया था। आपने सवत् १९२५ फागण बद ७ को जावद मे पूज्य श्री चौथमल जी म सा के नेश्राय मे भागवती दीक्षा ग्रहण की थी और १९२६ मे जयपुर विहार करते समय मार्ग मे अकस्मात स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज

आप मेवाड मे छोटीसादडी निवासी थे। ओसवाल वया परिवार मे जन्म लिया था और सवत् १९२६ की मिगसर बदी ५ को नीमच मे बडे केवलचन्द जी म सा की नेश्राय मे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की। कर्मयोग से पडवाई बन गये। पुन १९४१ मे नई दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री चैन जी -

आप मालव प्रान्त मे भाटखेडी निवासी थे। ओसवाल भडारी परिवार मे जन्म लिया था। सम्वत् १९२६ की मिगसर बदी ९ को जावद मे सयमी बने और मुनि श्री देवीलाल जी म सा का शिष्यत्व स्वीकार किया। सवत् १९६३ मिगसर बदी २ शनिवार को नगरी (मालवा) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री हीरालाल जी म.सा.

आपने १९२६ फाल्गुन सुदी ३ को दीक्षा ग्रहण की। विशेष परिचय अज्ञात।

मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज -

आप मालव प्रान्त मे लोद निवासी थे। आप का जन्म पोरवाड धानुता परिवार मे हुआ। सवत् १९२७ की माघ बदी १२ को धार बखतगढ मे दीक्षा ग्रहण की और छोटे केवलचन्द जी म सा के शिष्य बने। दोनो गुरु शिष्य ने बखतगढ मे ही चातुर्मास किया। चातुर्मास काल मे केवलचन्द जी म सा (छोटे) का अकस्मात् देहावसान हो गया। इधर धर्मदास जी महाराज की सम्प्रदाय के ज्ञानचन्द जी महाराज वहा विहार करके आये और अत्यन्त सात्वना देते हुए सभाला। बाद मे चातुर्मासोपरान्त विहार करके पूज्य श्री उदयसागर जी म सा की सेवा मे रतलाम आये। पूज्य श्री की सेवा मे रहने लगे। सेवा भावना को देखकर सभी उनको धायमाता पद से सबोधित करने लगे। अत मे सवत् १९५८

के कार्तिक बद १४ शनिवार को रतलाम मे सथारा सलेखना सहित स्वर्गवास हो गया। आपके मुनि श्री तिलोकचन्द जी म, रिखबदासजी महाराज, खेमराज जी महाराज, ताराचन्द जी महाराज, अमरचद जी महाराज, मन्नालाल जी महाराज, ख्यालीलाल जी महाराज, कर्मचन्द जी महाराज रिखबचन्दजी महाराज, हजारीमल जी महाराज, कुवरजी महाराज (गुजराती) हमीरमलजी महाराज, विजयमल जी महाराज, रतिचन्दजी महाराज, रामसिहजी महाराज, फतहसिह जी महाराज, वीरजी महाराज, वालचन्द जी महाराज, माणक चन्दजी महाराज आदि शिष्य वने।

मुनि श्री नाथूलाल जी महाराज

आप वया परिवार से थे। आपश्री की दीक्षा १९२७ फागण बदी १ को सम्पन्न हुई। विशेष परिचय उपलब्ध नहीं।

मुनि श्री मियाचन्दजी महाराज .

आप मध्य प्रदेश मे थादला निवासी थे। बीसा पोरवाड परिवार मे जन्म लिया था। सवत १९२८ वैशाख बदी ६ को मुनि श्री मोडसिह जी की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। जुड मारवाड मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री जीवराज जी महाराज .

आप मालवा मे भाटखेडी निवासी थे। भडारी (ओसवाल) परिवार मे आपका जन्म हुआ। सवत् १९२८ आषाढ सुदी–१२ को मदसौर (म प्र) मे अपने पुत्र कालू जी के साथ देवीलाल जी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। कालू जी आपके शिष्य बने और सवत् १९५१ मे मदसौर मे ही आपका स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री कालूजी महाराज

आप मालवा मे भाटखेडी निवासी थे। जीवराज जी भडारी के आप पुत्र रत्न थे। सवत् १९२८ आषाढ सुदी १२ को मदसौर मे अपने पूज्य पिता श्री के साथ देवीलाल जी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। मुनि श्री जीवराज जी को गुरु रूप से स्वीकार किया। माहगढ मे आपका स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री पृथ्वीराज जी महाराज ·

आप मारवाड मे जोधपुर निवासी थे। ओसवाल पटवा यानी भाडावत परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९२८ माघ बदी ७ को आचार्य श्री चौथमल जी म सा की नेश्राय मे जावद मे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की। सयम आराधना करते हुए सवत् १९५७ आसोज सुदी १३ मगलवार को चित्तौड मे स्वर्गवासी हुए।

मुनि श्री मगनजी महाराज

आपने मुणोत परिवार मे जन्म लिया। आपकी दीक्षा सवत् १९२८ माघ सुदी १२ को सपन्न हुई। विशेष परिचय अनुपलब्ध।

मुनि श्री पीरदान जी महाराज .

आप मारवाड मे तिवरी निवासी थे। ओसवाल बोथरा कुल मे आपका जन्म हुआ। आपकी त्याग वैराग्यमन भावना बहुत उच्च थी। सासारिक काल मे आप बहुत बडे इद्रिय (रसनेन्द्रिय) जयी बन गये थे। एक बार आपकी पत्नी कुए पर पानी भरने गई हुई थी। पीछे से आप घर पर आये और माताजी को भोजन परोसने को कहा। माता नजर से लाचार (अधी) थी। रसोई घर मे बैठे–२ उन्होने खीचडे के बदले पशुओ का बाटा (गवार सीझा हुआ) परोस दिया। भोजन कर आप अपने काम पर चल पडे लेकिन जरा भी ऊचे नीचे परिणाम नहीं लाये, आखिर मालूम पडने पर सबको बडा दु ख हुआ। आखिर सयम की अनुमति प्राप्त कर सवत् १९२९ मिगसर बदी १० को जोधपुर मे पूज्य श्री चौथमल जी म सा के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आपको एक बार जगल मे शेर ने उपसर्ग दिया। उसको भी अपनी शक्ति से स्तब्ध कर दिया और उत्कृष्ट सयम का पालन करते हुए सवत् १९५३ वैशाख सुद ५ शनिवार को तबीजी (अजमेर) मे अचानक स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री भीमराज जी महाराज :

सवत् १९२९ की पोष सुदी ३ की दीक्षा का उल्लेख है और पुन १९९४ की दीक्षा का भी उल्लेख है।

मुनि श्री हीरालाल जी महाराज :

सवत् १९२९ की फागण सुदी ५ को दीक्षा हुई। विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री जसराज जी महाराज .

आप मालव प्रान्त के तिलगारा निवासी थे। ओस्तवाल परिवार मे जन्म लिया था और सवत् १९३० की आषाढ सुदी ९ को दयाराम ज़ी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९४२ के अन्दर नीमच मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री किशनसागर जी महाराज

आप मारवाड मे सोजत निवासी थे। ओसवाल बैद मूथा परिवार मे जन्म लिया ओर मूर्तिपूजक साधु बने थे। सवत् १९२८ की साल आचार्य श्री उदयसागर जी म सा पाली पधारे थे उस समय किशन सागर जी के गुरु से शर्त पर शास्त्रार्थ हुआ कि जो पराजित हो उसके शिष्यो मे से विजयी होने वाले अपनी इच्छानुसार कोई एक शिष्य को ले सकते है। जब वे हार गये तो पूज्य उदयसागर जी म सा ने आपको अपने साथ लिया और बाद मे १९३० मिति मिगसर सुदी ७ को पाली मे पूज्य चौथमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

इसी बात का उपाध्याय श्री अमर मुनि जी म सा ने पूज्य श्री खूब चन्द जी महाराज चरित्र मे सप्तम प्रकरण के अन्दर आचार्य क्रमावली मे पद्य मे उल्लेख किया है–

"उन्नीस सौ अट्ठाईस मे मुनि राज थे पाली गये।
थे एक सम्वेगी मुनि शास्त्रार्थ मे खाली गये।।
निश्चय हुआ था आज जो शास्त्रार्थ मे जय पायगा।
बस वह पराजित पक्ष का इक शिष्य लेकर जायगा।।
विजयी हुए मुनिराज सवेगी पराजित हो गये।।
श्रीकृष्णा सागर नाम अपने शिष्य को वे खो गये।।
दीक्षित किया था किशन सागर को पुन मुनि राज ने।
आनन्द का अनुभव किया स्थानीय जैन समाज ने।।

इस प्रकार सत्सान्निध्य को पाकर ज्ञान दर्शन चारित्र की शुद्ध साधना करते हुए सवत् १९५१ वैशाख मास मे रतलाम मे स्वर्गवास हुआ। आपके मुनि श्री मयाचन्द जी महाराज और मुनि श्री लालचन्द जी महाराज– ये २ शिष्य हुए।

तपस्वी मुनि श्री रिखबोजी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे पेटलावद निवासी थे। आपका जन्म ओसवाल पीतलिया परिवार मे हुआ था। सवत् १९३० के मिगसर सुदी ५ को पेटलावद मे ही घासीलाल जी महाराज प्रथम के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और सवत् १९४६ मे जावरा (म प्र) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री मियाचन्द जी महाराज

आप मारवाड मे साथीन निवासी थे। ओसवाल धोका परिवार मे जन्म हुआ। सवत् १९३० के पौष सुदी १ को किशनसागर जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और पीपल गाव (महाराष्ट्र) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री मियाचन्द जी महाराज . III

आपकी दीक्षा सवत् १९३१ वैशाख सुदी ७ को मुनि श्री इन्द्रमल जी महाराज की नेश्राय मे हुई। इसके अलावा परिचय नहीं मिलता। एक तेरापथी साधु जी ने आप के नेतृत्व को स्वीकार किया।

मुनि श्री शिवलाल जी महाराज :

आप मारवाड मे ब्यावर निवासी थे और ओसवाल पदावत परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९३१ फागण सुदी ८ को पूज्य श्री चौथमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९५० मे जयपुर मे स्वर्गवास हुआ। आपके मुनि श्री सौभागमल जी महाराज शिष्य थे।

मुनि श्री लालचन्द जी महाराज .

आप मेवाड मे कणेरा निवासी थे। धाकड परिवार मे जन्म लिया था। स १९३१ जावद मे घासीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। कजार्डा मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री देवकरण जी महाराज :

आप मारवाड मे नया शहर (ब्यावर) निवासी थे। ओसवाल साड परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९३१ चैत बदी ३ को आचार्य श्री चौथमल जी म सा के पास दीक्षा ग्रहण की। बाद मे टीकमचन्द जी महाराज आपके शिष्य बने। बाद मे आप लिग धारी बन गये। सवत् १९६७ मे मिगसर सुदी २ को ब्यावर मे स्वर्गवास हो गया।

तपस्वी मुनि श्री बालचन्द जी महाराज ·

आप मालव प्रदेश मे नीमच के निवासी थे। ओसवाल सचेती (सींगी) परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९३१ मिगसर बदी ३ को कृपाराम जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। १९३५ मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री दलीचन्द जी महाराज :

आप मालवा मे कजार्डा निवासी थे। ओसवाल भडारी परिवार मे जन्म लिया था और सवत् १९३१ का आषाढ बदी ११ को कृपाराम जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९५७ मे जावरा (म प्र) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री रामसुख जी महाराज .

आप उरासी बराड निवासी थे। बगेरवाल सेठी परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९३२ मे हीरालाल जी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की थी। १९५५ माघ बदी मे अलोई मे स्वर्गवासी हुए। आपके धनराज जी महाराज शिष्य बने।

मुनि श्री नन्दलाल जी महाराज

आप खानदेश मे पीपल गाव निवासी थे। ओसवाल हिरन परिवार मे जन्म लिया था और सवत् १९३२ आषाढ बदी १ को मयाचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा हुई और १९४४ के कार्तिक माह मे मनमाड (महाराष्ट्र) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री खेमराज जी महाराज

आप मारवाड मे डागीयास निवासी थे। ओसवाल डागलिया परिवार मे जन्म लिया। सवत् १९३२ के आषाढ बदी १ को मोडसिह जी की नेश्राय मे दीक्षा हुई। १९४९ मे भीनासर मे स्वर्गवास हुआ। आपके कोदर जी महाराज, दयाराम जी महाराज, टीकमचन्द जी महाराज, हजारीमल जी महाराज आदि शिष्य हुए।

मुनि श्री कालूराम जी महाराज ·

आप मालवा मे रतलाम के निवासी थे। ओसवाल कटारिया परिवार मे जन्मे थे ओर सवत् १९३२ मिगसर सुदी १३ को रतलाम मे ही झवर जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज

आप मेवाड मे सिगोली निवासी थे। आपने ओसवाल कटारिया परिवार मे जन्म लिया था ओर सवत् १९३२ फागण बद ३ को कणेरा मे बडा घासीलालजी । के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आपके केशरीमल जी महाराज, जुहारमल जी महाराज, नाथूलाल जी महाराज, राधालाल जी महाराज, जसराज जी महाराज, पूज्य गणेशीलाल जी महाराज आदि शिष्य हुए। आपकी सेवा भावना का ही फल है कि विक्षिप्त दशा मे जवाहराचार्य की सार सभाल इतनी आत्मीयता से की थी जिसके कारण ही समाज को ऐसे दिव्य पुरुष की प्राप्ति हुई। आखिर १९८३ मे जलगाव (महाराष्ट्र) मे पडित मरण सहित स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री जुहारमल जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। आपने ओसवाल कटारिया परिवार मे जन्म लिया था। आपने सवत् १९३२ फागण बदी ४ को रतलाम मे बडे केवलचद जी म सा के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और सवत् १९६१ फागण सुद ११ शुक्रवार को बडीसादडी मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री देव जी महाराज ·

आप मालव प्रदेश में बडोद निवासी थे। सवत् १९३३ मिगसर माह मे प्यारचन्दजी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। ज्यादा परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री कोदर जी महाराज ·

आप मुनि श्री खेमराज जी महाराज के शिष्य बने थे। इसके अलावा विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री फत्तोजी महाराज :

आप मालव प्रान्त के नीमच शहर के निवासी थे। ओसवाल कोठीफोडा परिवार मे जन्म लिया था। सम्वत् १९३३ पौष सुदी ११ को जावद मे झवर जी महाराज के नेश्राय 'मे भागवती दीक्षा ग्रहण की थी लेकिन कर्मयोग से पडवाई बन गये।

मुनि श्री गणेशमल जी महाराज .

आप मालव प्रान्त मे कजार्डा निवासी थे। ओसवाल भडारी घर परिवार मे जन्म लिया था। सम्वत् १९३४ के कार्तिक सुदी १२ को प्रतापगढ मे मुनि श्री रतनचन्दजी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९५४ के मिगसर महीने मे जावरा मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री वृद्धिचन्द जी महाराज .

आप मालवा मे कजार्डा निवासी थे। ओसवाल रेखावत परिवार मे आपने जन्म लिया था ओर १९३४ जेठ बद ५ को कजार्डा मे देवीलाल जी महाराज की नेश्राय में दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री माणकचन्द जी महाराज

आप मेवाड मे केली ग्राम निवासी थे। ओसवाल बोरदिया परिवार मे जन्म लिया था और सवत् १९३५ माघ बदी ५ को अपने पुत्र देवीलाल जी महाराज के साथ जवाहरलाल जी म । के पास बडीसादडी मे दीक्षा ग्रहण की थी और सवत् १९६० मे दिल्ली मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री देवीलाल जी महाराज

आप मेवाड मे केली ग्राम निवासी थे। ओसवाल बोरदिया परिवार मे जन्म लिया था और सवत् १९३५ की माह बदी ५ को अपने पिता जी माणक चन्द जी के साथ बडीसादडी मे दीक्षा ग्रहण की और उन्हीं के शिष्य बने। तप सयम साधना करते हुए स १९८६ आसोज बदी ९ को कोटा (राज) मे स्वर्गवास हुआ। आप के किस्तूरचद जी महाराज, राधालालजी महाराज, चुन्नीलाल जी महाराज I, चुन्नीलाल जी महाराज II, नन्दलाल जी महाराज, शेषमल जी महाराज शिष्य बने।

मुनि श्री साकर चन्द जी महाराज

आप मालवा मे कजार्डा निवासी थे और ओसवाल भडारी परिवार मे जन्म लिया था। आपकी दीक्षा सवत् १९३५ फागण सुदी १० को मुनि श्री हीरालाल जी महाराज की नेश्राय में हुई थी और १९५४ की साल जावरा मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री तोलाराम जी महाराज :

आपकी सवत् १९३६ अषाढ सुदी ९ को दीक्षा हुई। विशेष परिचय अनुपलब्ध।

मुनि श्री भारमल जी महाराज

आप महाराष्ट्र मे अहमदनगर निवासी थे। ओसवाल गाधी परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९३६ आषाढ सुदी ११ रविवार को छगनलाल जी महाराज की नेश्राय मे अहमदनगर मे दीक्षा हुई।

मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज

आपने १९३६ चैत सुदी ११ को दीक्षा ग्रहण की। विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री तिलोक चन्द जी महाराज ·

आप मालव प्रान्त मे तारापुर निवासी थे। प्रजापत कुल मे जन्म लिया था। सवत् १९३६ आषाढ सुदी ९ को जावद मे रतनचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। पुन १९४७ मे माघ वदी १० को पुन दीक्षा हुई और जयपुर मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री भीमराज जी महाराज :

आप नाहर परिवार से थे। आपने १९३६ वैशाख सुदी ५ को दीक्षा ली।

मुनि श्री रिखबचन्द जी महाराज ·

आप मालव प्रान्त मे खाचरौद निवासी थे। ओसवाल सालेचा वोहरा (दलाल) परिवार मे आपने जन्म लिया था। सवत् १९३६ आषाढ बदी ७ को जावद मे रतनचन्द जी म सा के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९६८ मे बम्बोरा (मेवाड) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री मानाजी महाराज (मगनजी म.) :

आप मालवा मे प्रतापगढ निवासी थे। नरसिहपुरा परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९३६ मिगसर बदी १३ को सजीत मे मुनि श्री राजमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप का स्वर्गवास १९४८ की पौष सुदी १५ गुरुवार को पेटलावद मे हुआ। पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज आदि आपके शिष्य थे।

मुनि श्री गभीरमल जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे रामपुरा निवासी थे। ओसवाल भडारी परिवार मे जन्म लिया था। १९३६ फाल्गुन सुदी १२ को रामपुरा मे रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९४७ मे भाटखेडी मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री देवीलाल जी महाराज :

आप मालवा मे प्रतापगढ निवासी थे। सरावगी बडजात्या परिवार मे आप ने जन्म लिया था। सवत् १९३७ चैत्र सुदी १० मगलवार को सजीत मे बडे घासीलालजी म सा के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप के मुनि श्री जगन्नाथ जी महाराज, पन्नालाल जी महाराज, नाथूलाल जी महाराज, मनजी महाराज, ऊकार लाल जी महाराज, लक्ष्मण जी महाराज आदि शिष्य हुए।

मुनि श्री खेमराज जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे नाहरगढ निवासी थे। आपने ओसवाल सुराना परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९३७ आषाढ सुदी ९ शुक्रवार को जावद मे रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे भागवती दीक्षा ग्रहण की और १९७२ आषाढ सुदी २ को नगरी मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री चन्दनमल जी महाराज :

आप मारवाड मे चडावल निवासी थे। आपने ओस्तवाल कुल मे जन्म लिया था। सवत १९३७ मिगसर सुदी ५ सोमवार को प्रतापमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। पूनमचन्दजी महाराज आपके शिष्य हुए। शिष्य गुरु दोनो पडवाई बने और पुन १९४५ फाल्गुन बदी १० को दीक्षा ग्रहण की। सवत् १९४९ पाली मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री रूपचन्द जी महाराज

आपने भडारी परिवार मे जन्म लिया और १९३८ की वैशाख बदी १० को बडे केवलचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। इसके अलावा विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री ताराचन्द जी महाराज

आप मालव प्रान्त मे खाचरौद निवासी थे। ओसवाल श्रीश्रीमाल परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९३८ आषाढ़ सुदी २ शनिवार को रतलाम मे मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९५७ आसोज महीने मे बडीसादडी मेवाड मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री अमरचन्द जी महाराज ·

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल बोरा (नागौरी) परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९३८ की आषाढ सुदी १० को रतलाम मे मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे अपने पुत्र मन्नालाल जी के साथ दीक्षा ग्रहण की और कर्मोदय से पुन पडवाई बन गये।

मुनि श्री मन्नालाल जी महाराज .

आप मालव प्रान्त रतलाम शहर निवासी थे। आपका जन्म अमरचन्द जी बोहरा नागौरी की धर्मपत्नी नानी बाई की कुक्षि से हुआ था। आपने लघुवय मे ही सम्वत् १९३८ आषाढ सुदी १० को अपने पूज्य पिताजी के साथ ही दीक्षा ग्रहण की थी और रतनचन्द जी महाराज के शिष्य बने। पिताजी तो पडवाई बन गये पर आप बडे प्रतिभावान निकले। आपके ज्ञानावरणीय कर्म का विशेष क्षयोपशम था एक दिन मे ५० गाथा कठस्थ कर लेते थे। आपको सवत् १९७५ मे वैशाख सुदी १० को जावरावाले सन्तो ने अपना अलग आचार्य नियुक्त किया। आपका सवत् १९९० की आषाढ बद १२ सोमवार को ब्यावर मे स्वर्गवास हो गया। आपके मुनि श्री वृद्धि चन्द जी महाराज, श्री हुक्मीचन्द जी महाराज, श्री चुन्नीलाल जी महाराज, श्री माणक चन्द जी महाराज, श्री मोतीलाल जी महाराज, श्री घेवरचन्द जी महाराज, श्री मिश्रीलाल जी महाराज, श्री छोटेलाल जी महाराज आदि शिष्य हुए।

मुनि श्री डालचन्द जी महाराज ·

आप मेवाड मे गुडली निवासी थे। ओसवाल सुराना परिवार मे जन्म लिया था। स १९३९ मिगसर बदी ३ को गोगुन्दा (मेवाड) मे मुनि श्री वृद्धिचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। सवत् १९७३ भादवा सुदी १३ को ४ बजे दिन को सथारे सहित ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ। आपकी नेश्राय मे मुनिश्री चुन्नीलाल जी महाराज, भैरूलाल जी महाराज, सुगनचन्द जी महाराज, हीरालाल जी महाराज, हीराचन्द जी महाराज, मन्नालाल जी महाराज, मूलचन्द जी महाराज, पन्नालाल जी महाराज, दयाराम जी महाराज, शोभाचन्द जी महाराज, हसराज जी महाराज, पन्नालाल जी महाराज, किशनचन्द जी महाराज, चान्दमल जी महाराज, मेघराज जी महाराज, मोतीलाल जी महाराज,

सुवालाल जी महाराज आदि महामुनियो की दीक्षा सम्पन्न हुई।

मुनि श्री ख्यालीलाल जी महाराज

आप तत्कालीन मेवाड राज्यान्तर्गत सरवानिया (वर्तमान मे मालवा) निवासी थे। पाचावत पोरवाड के घर परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। सवत् १९३८ फाल्गुन सुदी १३ को मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की लेकिन कर्मयोग से फिर पडवाई बन गये।

मुनि श्री कर्मचन्द जी महाराज :

आप मालव प्रदेश मे रतलाम (करवड) निवासी थे। आपने ओसवाल गाधी हीरालाल जी के धर्म परिवार मे साकरबाई की कुक्षि से जन्म लिया। सवत् १९३९ की आसोज सुदी १३ को रतलाम मे ही मुनि श्री रतनचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आखिर १९८२ के माघ बदी ८ को ब्यावर (राज) मे स्वर्गवास हुआ था। आपके नेश्राय मे मुनि श्री बालचन्द जी म सा, मुनि श्री हसराज जी महाराज, मुनि श्री कजोडीमल जी म सा, मुनि श्री गभीरमल जी म सा, मुनि श्री जुवाहरमल जी म सा, मुनि श्री सूरजमल जी म सा, मुनि श्री हसराज जी म सा आदि सन्त महापुरुषो ने दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री शेरचन्द जी म.सा. .

आपने सवत् १९३९ मिगसर बदी २ को भागवती दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री छोटूलाल जी महाराज :

आप मेवाड मे निम्बाहेडा नबाब के निवासी थे। ओसवाल का घर अब्बानी परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। सवत् १९३९ माघ सुदी ५ को चित्तौड मे मुनिश्री बरदी चन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। रत्नत्रय की आराधना करते हुए सवत् १९४७ के अन्दर भदेसर (मेवाड) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री भीमराज जी महाराज .

आप मारवाड मे पाली निवासी थे। ओस्तवाल परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया था। सवत् १९३९ फागण बदी १० बुधवार को पूज्य श्री चौथमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९४५ के अन्दर ब्यावर (राज) मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री दौलतराम जी महाराज

आप मालव प्रान्त मे उज्जैन निवासी थे। आपने ओसवाल परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९३९ फागण सुदी २ को किस्तूर चन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और कर्मयोग से पडवाई बन गये।

मुनि श्री कुवर जी महाराज .

आप गुजरात के ओसवाल थे। सवत् १९४० पोष सुदी ३ को रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री रिखबदास जी महाराज :

आप कजार्डा निवासी थे। ओसवाल भडारी परिवार मे जन्म ले कर आपने १९४० माघ सुदी ५ को रतलाम शहर मे रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। १९४८ के रतलाम चातुर्मास मे कार्तिक माह मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री हमीरमल जी महाराज ·

आप मालवा मे रभापुर निवासी थे। आपने ओसवाल बाफना परिवार मे जन्म धारण किया था और सवत् १९४० चैत्र बदी ६ को रतलाम मे मुनि श्री रतनचद जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे आपके पुत्र छब्बील जी ने आपकी नेश्राय में दीक्षा ग्रहण की और सवत् १९५७ के माघ बदी ६ शनिवार को जावद मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री खेमराज जी महाराज ·

आप मालवा मे नाहरगढ निवासी थे। ओसवाल बडवचा परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४० कार्तिक सुदी ८ को किस्तूर चन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और पुन १९५४ मे नई दीक्षा जावरा (म प्र) मे आई और फिर स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री रूपचन्द जी महराज .

आप मारवाड मे कुचेरा निवासी थे। आपने ओसवाल भडारी परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४० मे कुचेरा (मारवाड) मे ही मुनि श्री प्रतापमल जी म सा के पास दीक्षा ग्रहण की थी और सवत् १९४८ मे कुचेरा मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज ·

आप मेवाड मे गुडली निवासी थे। आपने ओसवाल सुराना परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४० की मिगसर बदी ४ को उदयपुर (राज) मे वृद्धिचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। इसके पहले आपके भाई डालचन्द जी म सा ने भी दीक्षा ग्रहण की थी और १९५९ आसोज सुदी १० को रतलाम मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री हजारीमल जी महाराज ·

आप मारवाड मे बडलू–भोपालगढ निवासी थे। आपने ओसवाल चौरडिया परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४० पौष सुदी ७ को रतलाम मे मुनिश्री रतनचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा

ग्रहण की। १९५७ की आसोज सुदी ९ गुरुवार को उदयपुर मे आपका स्वर्गवास हुआ था। आपके मुनि श्री राजमल जी म सा कुडछी वाले शिष्य बने थे।

मुनि श्री बीजेमल जी महाराज

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। आपने ओसवाल डागा परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४० पौष बदी ९ को रतलाम मे रतनचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। १९५० के भादवा महीने मे रतलाम मे ही स्वर्गवास हो गया था।

मुनि श्री दयाराम जी महाराज

आप मारवाड मे जसवन्ताबाद निवासी थे। ओस्तवाल परिवार मे आपश्री ने जन्म लिया था। सम्वत् १९४० की माघ सुदी ५ को मुनि श्री खेमराज जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९५३ मे ग्रामानुग्राम विहार करते हुए मारवाड से घाट चढकर देवगढ आ रहे थे। रास्ते मे चोरो ने मार दिया।

मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज

आप अलवर निवासी थे। आपने ओसवाल पुगलिया परिवार मे जन्म लिया था और १९४१ पौष बदी ९ को बीकानेर मे मुनि श्री केवलचन्द जी म सा (बडे) की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे कर्मयोग से पडवाई बन गये।

मुनि श्री दौलतराम जी महाराज

आप मालव प्रान्त मे इन्दौर निवासी थे। ओसवाल श्रीश्रीमाल परिवार में जन्म लेकर १९४२ पौष सुदी १५ को मुनि श्री जयचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और जावद मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज

आप मालव प्रान्त मे जावरा निवासी थे और ओसवाल पुगलिया परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४२ मे कृपाराम जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और सवत् १९४६ मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री छब्बील जी महाराज

आप मालव प्रान्त मे रभापुर निवासी थे। आपके पिताजी का नाम हमीर मल जी बाफना था। पिता श्री ने १९४० चैतबदी ६ को रतलाम मे दीक्षा ली। पिता श्री की दीक्षा के बाद सवत् १९४३ जेठ बद २ को सैलाना मे अपने पिताजी हमीरमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९५७ मिगसर बदी ३ शुक्रवार को कानोड मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री राजमल जी म.सा. :

आपने स १९४३ जेठ बदी २ को दीक्षा ली। विशेष परिचय अज्ञात।

मुनि श्री रामसिह जी महाराज ·

आप मालव प्रान्त मे रभापुर निवासी थे। आपने ओसवाल मतावद परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४३ के जेठ बदी २ शुक्रवार को सैलाना मे मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज द्वितीय की नेश्राय में दीक्षा ग्रहण की। सवत् १९५३ मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री चम्पालाल जी महाराज

आप मालवा मे नाहरगढ निवासी थे। ओसवाल सचेती परिवार मे जन्म लेकर सवत् १९४३ फाल्गुन शुक्ला ३ को मुनि श्री मगनलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे पडवाई बने थे।

मुनि श्री गुलाब चन्द जी म.सा. .

सवत् १९४४ जेठ सुदी १० को आपने दीक्षा ग्रहण की।

तपस्वी मुनि श्री हजारीमल जी महाराज ·

आप जयनगर निवासी थे। आपने ओसवाल राका परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४४ आषाढ सुदी १३ रविवार को ब्यावर (राज) मे खेमराज जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आप १९६४ माघसुदी १४ रविवार को भीनासर मे स्वर्गवासी हुए। आपके चुन्नीलाल जी महाराज, करमचन्द जी महाराज, नारायण सिह जी महाराज आदि शिष्य हुए।

मुनि श्री टीकमचन्द जी महाराज

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। आपने ओसवाल सावनसुखा परिवार मे जन्म लिया था और १९४५ मिगसर सुदी १२ को बीकानेर मे खेमराज जी म सा के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और भीनासर मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री रतिचन्द जी महाराज .

आप मालवा प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। आपने ओसवाल चतर परिवार मे जन्म पाया और सवत् १९४५ मिगसर सुदी ९ को मुनि श्री रतनलाल जी म सा के नेश्राय मे रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री धन्नालाल जी महाराज .

आप लाखरी सकावदा (वराड) निवासी थे और बगेरवाल बडसुदा परिवार मे आपने जन्म लिया था और १९४४ आषाढ सुद ७ शनिवार को बणजारी मे दीक्षा ग्रहण की थी और रामसुख जी म सा के शिष्य बने थे। सवत् १९६४ के कार्तिक मास मे नोगाव मे स्वर्गवास हुआ था। आपके राजमल जी म सा शिष्य हुए थे।

पूज्य श्री श्रीलाल जी म.सा. ·

आप ढूढार प्रान्त मे टोक निवासी थे। ओसवाल बब परिवार मे श्री चुन्नीलाल जी सा की धर्मपत्नी चाद कवर बाई की कुक्षि से सवत् १९२६ की आषाढ सुदी १२ को जन्म ग्रहण किया था। अपने पूर्व पुण्योदय से ऐसे सम्पन्न परिवार मे जन्म मिला, साथ ही मातेश्वरी के धर्म सस्कार के प्रभाव से आपने ६ वर्ष की लघुवय मे ही प्रतिक्रमण कठस्थ कर लिया था। ११ वर्ष की वय मे ही आपकी शादी दूनी ग्राम के गोखरू परिवार की सुकन्या मानकवर बाई से हो गई थी। आपने १६ वर्ष की वय मे ही ब्रह्मचर्य की कठोरतम प्रतिज्ञा के साथ ही स्त्री स्पर्श एव एकान्तवास का भी त्याग कर दिया, जिसका आपने तीसरी मजिल से कूद कर भी पालन किया। परिवार वालो की तरफ से आज्ञा प्राप्त नहीं होने पर आपने अपने साथी गूजरमल जी पोरवाड के साथ स्वयमेव दीक्षा धारण कर ली थी, बाद मे सवत् १९४५ माघ बदी ५ गुरुवार को बनेठा मे बलदेव जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और गूजरमल जी को श्री जी का शिष्य किया। रायपुर झालावाड चातुर्मास मे गुरुदेव का अकस्मात स्वर्गवास हो गया। तब आपने अपने गुरु भाइयो का आचार शैथिल्य देखकर गूजरमल जी म के साथ अलग विहार करके कानोड विराजित पण्डित रत्न मुनि श्री चौथमल जी म सा की सेवा मे आ गये। पुन १९४७ मिगसर सुदी १ को विरदीचन्द जी म सा की नेश्राय मे शिष्यत्व स्वीकार किया और १९५७ कार्तिक सुदी ९ गुरुवार को रतलाम मे सघ के आचार्य बने। आप ने अपने शिष्य बनाने का त्याग कर लिया था। आपके उपेदश से बडे–बडे राजा महाराजा अहिसक बने और जीव दया का कार्य जोर शोर से हुआ। साथ ही सैकडो भव्यात्माओ ने सयम पथ स्वीकार किया। अनेक विदेशी पदाधिकारी भी आपके सानिध्य को पाकर जिन धर्म के सस्कारी बने। आपके उपदेश से आपकी धर्मपत्नी मानकवर बाई ने भी दीक्षा ग्रहण की। आप देश देशातर मे विचरते हुए १९७७ आषाढ सुद ३ को जयतारण (जैतारण) विराज रहे थे, आकस्मिक वेदना से काल कवलित हो गये। (विशेष जानकारी के लिए पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा का जीवन वृत्त पढिये।)

मुनि श्री गूजरमल जी महाराज ·

आप ढूढार प्रान्त मे टोक निवासी थे। वीसा पोरवाल कचोरिया परिवार मे आपका जन्म हुआ था। आप पूज्य श्री श्रीलाल जी महाराज के बाल–साथी थे और पूज्य श्री की त्याग भावना से प्रेरित होकर पत्नी का परित्याग कर के उन्ही के साथ दीक्षा ग्रहण करके दूध पानी की तरह सच्ची प्रीत निभाई थी। कर्मयोग से पडवाई हो गये। पुन छगनमल जी महाराज के शिष्य बने।

मुनि श्री पूनमचन्द जी महाराज .

आप मारवाड मे चडावल निवासी थे। आपने ओसवाल धोका परिवार मे जन्म लिया था ओर सम्वत् १९४५ की फाल्गुन बदी १२ को चन्दनमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की ओर १९५० मे जैतारण मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री रूपचन्द जी महाराज .

आप मालवा प्रान्त मे नगरी निवासी थे। बीसा पोरवाल परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया और सवत् १९४५ फाल्गुन सुदी ९ को नगरी मे मुनि श्री कृपाराम जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। रत्नत्रय की साधना करते हुए १९७५ मे बुसी– मारवाड मे स्वर्गवास हुआ। आपके मुनि श्री पन्नालाल जी, मुनि श्री पीथाजी महाराज, मुनि श्री किस्तूर चन्द जी, मुनि श्री दौलतराम जी महाराज, मुनि श्री धनराज जी महाराज, मुनि श्री गुलाब चन्द जी महाराज आदि शिष्य हुए थे।

मुनि श्री फतह सिंह जी महाराज

आप मारवाड मे खवासपुरा निवासी थे। ओसवाल बाफना परिवार मे आपका जन्म हुआ। सवत् १९४६ भादवा बदी १३ को रतलाम मे मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आपके सासारिक भ्राता गगाराम जी और सुपुत्र श्री कनकमल ने भी १९५१ माघ बदी १३ को रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की थी। ज्ञान क्रिया साधते हुए १९६५ कार्तिक बदी १३ गुरुवार को नीमच मे स्वर्गवासी हुए। आपके मुनि श्री गगाराम जी, मुनि श्री टीकमचद जी, मुनि श्री जडाव चन्द जी महाराज आदि शिष्य हुए।

मुनि श्री वीरजी

आप श्री मालवा मे रतलाम निवासी थे। आपने ओसवाल मुरडिया परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४६ मिगसर माह मे मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री रायचन्द जी :

आप रतलाम शहर मे ओसवाल परिवार मे जन्मे। सवत् १९४६ मे मुनि श्री नन्दलाल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री हुकमीचन्द जी महाराज

आप मालवा प्रान्त मे नगरी निवासी थे। आपका जन्म भटेवरा (राज) परिवार मे हुआ और सवत् १९४६ की पौष बदी ५, शनिवार को मुनि श्री कृपाराम जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आपश्री का १९७१ कार्तिक सुदी ४ गुरुवार को नगरी मे ही स्वर्गवास हुआ था। वृद्धिचन्द जी महाराज आपके शिष्य थे।

मुनि श्री जोधराज जी म.सा.

आपने स १९४७ भादवा बदी ८ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री बालचन्द जी महाराज ·

आप मालवा प्रान्त में रतलाम निवासी थे। ओसवाल मुरडिया परिवार मे आपका जन्म हुआ। आपने अपने भाई माणकचन्द जी के साथ सवत् १९४७ आसोज सुदी १५ को रतलाम में मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और सवत् १९८४ चैत्र बदी ४ शनिवार को रतलाम मे स्वर्गवास हो गया था। आपके सासारिक भ्राता माणक चन्द जी शिष्य बने।

मुनि श्री खेमराज जी महाराज :

आप मारवाड मे बिलाडा निवासी थे। ओसवाल चोरडिया परिवार मे आपने जन्म लिया। मुनि श्री प्रतापमलजी महाराज की नेश्राय मे सवत् १९४७ मिगसर बदी २ शुक्रवार को दीक्षा ग्रहण की और १९६३ भादवा बदी १३ को रतलाम मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री भीमराज जी महाराज :

आपने स १९४७ मिगसर बदी २ शुक्रवार को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री त्रिलोक चन्द जी महाराज ·

आपने स १९४७ मिगसर बदी १० को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री कंचन जी महाराज .

आपने स १९४७ फाल्गुन बदी ५ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री टीकमचन्द जी महाराज :

आप मारवाड मे उदयरामसर निवासी थे। ओसवाल सिपाणी परिवार मे आपका जन्म हुआ। सवत् १९४७ फागण बदी'१० को देवकरण जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और ब्यावर (राज) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री चैनाराम जी महाराज :

आप ढूढार प्रान्त के थे। प्रजापत परिवार मे आपने जन्म लिया। सत् सगत के प्रभाव से वैराग्य भावना जागृत हुई और जवाहरलाल जी महाराज के पास सवत् १९४७ माघ बदी १ जावरा मे भागवती दीक्षा अगीकार की। १९५६ के अन्दर ताल मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री भगवान जी महाराज :

आप मालवा मे भाटखेडी (नगरी) निवासी थे। आपने वीसा पोरवाड परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४७ आषाढ सुदी ५ रविवार को जावरा मे मुनि श्री नन्दलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९७७ कार्तिक बदी १२ को जावरा मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री सौभागमल जी महाराज

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। आपका जन्म ओसवाल परिवार मे हुआ था। सवत् १९४७ फाल्गुन बदी १० को शिवलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और भीनासर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री शंकरलाल जी महाराज

आप करोली जादुवाडी निवासी थे। खडेलवाल (रन पलीवाल) परिवार मे आपका जन्म हुआ था। सवत् १९४८ चैत्र बदी ९ मगलवार को अजमेर मे मुनि श्री प्रतापमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९६४ पौष सुदी १ को सथारा सहित अलवर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज ·

आप मेवाड मे चित्तौड निवासी थे। आपने ओसवाल पोखरना परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९४८ चैत्र सुदी ५ गुरुवार को चित्तौड मे मुनि श्री डालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और सवत् १९५० मे जावद मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि (पूज्य) श्री जवाहरलाल जी महाराज ·

आप मालवा मे थादला निवासी थे। श्रीमान् जीवराज जी कवाड की धर्मपत्नी नाथी बाई की कुक्षि से सम्वत् १९३६ कार्तिक सुदी ४ को जन्म हुआ था। दो वर्ष की वय मे माताजी का, चार वर्ष की वय मे पिताजी का, वियोग हो गया तब मामाजी के यहा पर बडे हुए, ससार से विरक्ति पैदा हुई और १९४८ मिगसर सुदी २ गुरुवार को लीमडी मे मानाजी महाराज की नेश्राय मे दीक्षित हुए। सवत् १९७६ की फाल्गुन सुदी ११ को रतलाम मे युवाचार्य पद प्राप्त हुआ और १९७७ आषाढ सुदी ३ को आचार्य पद पर विराजे। आपने सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय क्षेत्र मे अनेक क्रातिकारी कार्य किये। आप ओजस्वी प्रवक्ता थे—जो जवाहर किरणावली के रूप मे आज भी विद्यमान हैं। आपका २००० की साल आषाढ सुदी ८ को स्वर्गवास हुआ। आपके मुनि श्री घासीलाल जी म , मुनि श्री धूल चन्द जी महाराज, मुनि श्री उदयचन्द जी महाराज, मुनि श्री इन्द्रमल जी महाराज, मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज, मुनि श्री लालचन्द जी महाराज, मुनि श्री बगतावर मल जी महाराज, मुनि श्री हरक चन्द जी महाराज आदि शिष्य हुए।

मुनि श्री भीमराज जी महाराज

आप मेवाड मे केली निवासी थे। आपका ओसवाल बोरदिया परिवार मे जन्म हुआ था। सवत् १९४९ चैत्र सुदी ३ सोमवार को जावद मे आपने पिता श्री माणकचद जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आपके मुनि श्री नैनसुख जी और भैरूलाल जी शिष्य बने थे। आपके भाई देवीलाल जी ने भी १९३५ माघ बदी ५ को बडीसादडी मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री पन्नालालजी महाराज

आप मालव प्रान्त मे गाडरवाडा निवासी थे। ओसवाल खारीवाल परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया था। सवत् १९४९ मिति चैत्र सुदी ३ को जावद मे मुनि श्री रूपचन्दजी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री पीथा जी महाराज .

आपने १९४९ जेठ सुदी ५ को मुनि श्री रूपचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। इसके अलावा विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री बजरगलाल जी महाराज :

आपने स १९४९ फाल्गुन सुदी ७ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री नरसिह जी महाराज .

आप मालव प्रान्त मे लूणदा निवासी थे। नरसिहपुरा जैन परिवार मे आपने जन्म लिया था। सवत् १९५० जेठ सुदी ३ रविवार को नन्दलाल जी महाराज की नेश्राय मे जावरा मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री कर्मचन्द जी महाराज :

आप मारवाड प्रान्त मे बीकानेर निवासी थे। ओसवाल डागा परिवार मे आपका जन्म हुआ। सवत् १९५० मिगसर सुदी ३ को हजारीमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और सवत् १९६१ भादवा सुदी ६ गुरुवार को रतलाम मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री राजमल जी महाराज .

आप मारवाड मे कुडछी निवासी थे। ओसवाल छाजेड परिवार मे आपका जन्म हुआ। सवत् १९५१ मिगसर सुदी ३ को मोमासर में हजारीमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९९२ के आसोज मे बीकानेर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री राधालाल जी म.सा. ·

सवत् १९५१ मिगसर सुदी ३ को आपने दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री गगाराम जी महाराज :

आप मारवाड मे खवासपुरा निवासी थे। ओसवाल बाफना परिवार मे आपने जन्म पाया। सवत् १९५१ माघ बदी १३ बुधवार को अपने भाई फतहसिह जी म सा के नेश्राय मे अपने पुत्र कनकमल जी के साथ रतलाम मे दीक्षित हुए थे। कनकमल जी महाराज आपके शिष्य हुए। रत्नत्रय की आराधना करते हुए १९९१ के भादवा महीने मे ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री कनकमल जी महाराज :

आप (खवासपुरा–मारवाड) निवासी श्री गगाराम जी बाफना (मुनि श्री गगाराम जी महाराज) के सुपुत्र थे और सवत् १९५१ माघ बदी १३ को पूज्य पिताजी के साथ दीक्षा ग्रहण की और पूज्य पिताजी के ही शिष्य बने। सयम की साधना करते हुए १९७५ कार्तिक बदी ८ रविवार को ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ था। आपके मुनि श्री कालू राम जी शिष्य हुए।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज ·

आपने खीचन (मारवाड) मे गोलेछा परिवार मे जन्म पाया और हजारीमल जी महाराज की नेश्राय मे सवत् १९५१ फाल्गुन सुदी ७ को खीचन मे दीक्षा ग्रहण की। तप सयम साधते हुए १९६१ फाल्गुन बदी ७ सोमवार को भीनासर मे स्वर्गवासी हुए।

पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज .

आप मेवाड मे निम्बाहेडा निवासी थे। टेकचन्द जी ओसवाल (अरनोद का जेतावत) की धर्मपत्नी गेदी बाई की कुक्षि से आपने जन्म पाया और आपकी शादी सवत् १९४६ माघ सुदी १५ को साकर बाई के साथ सम्पन्न हुई। आपने सपत्नीक १९५२ आषाढ बदी ३ को नीमच मे मुनि श्री नदलाल जी महाराज की नेश्राय में दीक्षा ग्रहण की थी। १९९१ माघ सुदी १२ को जावरा वाले सन्तो के पूज्य मन्नालाल जी महाराज के पाट पर आचार्य बने। आपके किस्तूर चन्द जी महाराज, केशरीमल जी महाराज, सुखलाल जी महाराज, हरकचन्दजी महाराज, हजारीमल जी महाराज आदि शिष्य हुए।

मुनि श्री धनचन्द्रजी .

सवत् १९५२ आषाढ बदी ३ को दीक्षित हुए।

मुनि श्री पूनमचंद जी .

सवत् १९५२ आषाढ बदी ३ को दीक्षित हए। गोदावत परिवार से थे।

मुनि श्री लालचन्द जी महाराज :

आप मेवाड मे देवगढ निवासी थे। ओसवाल भडारी परिवार मे आपने जन्म लिया था और सवत् १९५२ माघ बदी २ गुरुवार को जावद मे मुनि श्री किशन सागर जी महाराज के नेश्राय मे दीक्षित हुए। सवत् १९८४ चैत्र बदी ५ को उदयपुर मे स्वर्गवास हुआ था। आपके मुनि श्री सरदारमल जी महाराज, नाहरमल जी महाराज, फौजमल जी महाराज शिष्य बने थे।

जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमल जी महाराज :

आप मालवा मे नीमच निवासी थे। आपने ऊकार जी के पुत्र गगाराम जी चोरडिया की धर्मपत्नी केसर बाई की कुक्षि से स १९३४ कार्तिक सुदी १३ रविवार को जन्म ग्रहण किया था। बडे

भ्राता कालूराम जी थे। कालूराम जी जुए के व्यसनी थे। एक दिन धन की बाजी जीतकर घर आ रहे थे। जुआरियो ने गला दबोचकर धन हरण कर लिया जिससे पिता के हृदय पर गहरा आघात लगा और मृत्यु को प्राप्त हो गए। १६ वर्ष की लघुवय मे स १९५० मे प्रतापगढ निवासी श्री पूनमचन्द जी की सुपुत्री मानकवर बाई के साथ शादी हुई। कुछ आकस्मिक घटनाओ से वैराग्य भाव अकुरित हुआ। बहुत उपसर्ग सहन करने के पश्चात् स १९५२ फाल्गुन सुदी १२ रविवार को बोल्या ग्राम मे दीक्षा ग्रहण की। कविवर्य श्री हीरालाल जी म सा के शिष्य बने। आपकी मातु श्री ने भी दीक्षा ली। आपके उपदेश से ही प्रेरित होकर मानकवर बाई जो सयमवेष छीनकर पुन घर ले जाने के प्रयत्न मे थी वही स १९६७ विजयादशमी को दीक्षित हो गई। ६ वर्ष तक सयम पालकर स्वर्ग पधारी। आपकी वाणी मे ओजस्विता थी। अनेक राजा महाराजा सपर्क मे आकर व्यसन मुक्त बने। स २००७ मिगसर सुदी ९ रविवार को कोटा मे स्वर्गवास हुआ। आपके अनेक शिष्य प्रशिष्य हुए। आप कवि रत्न थे।

मुनि श्री भोपजी महाराज .

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। आपने ओसवाल नलवाया परिवार मे जन्म पाया था। सवत् १९५३ चैत्र सुदी १३ (महावीर–जयन्ती) शुक्रवार को खाचरौद मे मुनि नन्दलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री हजारीमल जी महाराज .

आप मालवा प्रान्त मे अरनोद निवासी थे। ओसवाल पटवारी परिवार मे आपने जन्म लिया था और १९५३ जेठ सुदी ३ को निम्बाहेडा में पण्डित हीरालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। सवत् १९७६ भादवा सुदी १ को मदसौर मे स्वर्गवास हुआ। आपके जोरावरमल जी महाराज, नामत जी महाराज शिष्य हुए।

मुनि श्री नाथूलाल जी महाराज

आप मालवा मे सीतामऊ (सालमगढ) के निवासी थे। आपने सरावगी जैन परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९५३ आषाढ सुदी ११ मगलवार को खाचरोद मे देवीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। पीछे आप पडवाई बन गये।

मुनि श्री जुहारमल जी महाराज .

आप रोहतक (पजाब) निवासी थे। अग्रवाल परिवार मे आपने जन्म धारण किया था। सवत् १९५३ आषाढ बदी १३ बुधवार को जावरा मे मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री माणक चन्द जी महाराज .

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल मुरडिया परिवार मे आपने जन्म लिया था

एव १९५३ पौष सुदी ५ शुक्रवार को रतलाम मे रतनचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आपके सासारिक बडे भ्राता बालचन्द जी महाराज ने भी १९४७ मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री नारायणसिंह जी महाराज

आप मारवाड मे भूमलिया निवासी थे। ओसवाल बैद मूथा परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया था। सवत् १९५३ फाल्गुन बदी ६ मगलवार को तिवरी (मारवाड) मे मुनि श्री हजारीमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९९६ अषाढ सुदी ६ को नागौर मे आपका स्वर्गवास हुआ था। आपश्री के मुनि श्री भागीरथ जी महाराज, मुनि श्री मूलचन्द जी महाराज मुलतानमल जी महाराज, भगवान जी महाराज आदि शिष्य हुए।

तपस्वी मुनि श्री उत्तमचन्द जी महाराज

आप कजार्डा निवासी थे। ओसवाल भडारी परिवार मे आप श्री का जन्म हुआ। सवत् १९५४ जेठ सदी २ बुधवार को कजार्डा मे ही मुनि श्री मगनलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९९५ मिगसर बदी १३ को उदयपुर मे स्वर्गवास हुआ। आप तपस्वी थे।

मुनि श्री दोल जी महाराज

आप मालव प्रान्त मे इन्दौर निवासी थे। ओसवाल श्रीश्रीमाल परिवार मे आपने जन्म लिया था। सवत् १९५४ जेठ सुदी २ को मुनि श्री जयचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और जावद मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज

आपने १९५४ माघ सुदी १० को प्रव्रज्या अगीकार की। विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री मगनलाल जी महाराज

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। आपने सुमड वागडा मत्रसीर परिवार मे जन्म पाया और १९५४ माघ बदी १० सोमवार को रतलाम मे मुनि श्री प्रतापमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९७५ आसोज सुदी ६ को कसरावद मे आपका स्वर्गवास हुआ। आपके मुनि श्री धनराज जी (सारण वाले) शिष्य बने।

मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज

आप मालव प्रान्त मे जावरा निवासी थे। ओसवाल नलवाया परिवार मे आप श्री का जन्म हुआ। वैराग्य भाव से आपने सम्वत् १९५४ मिगसर बदी १३ सोमवार को जावरा मे मुनि श्री देवीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। कालान्तर मे इन्दौर से पडवाई बन गये। आपके मयाचन्द जी महाराज शिष्य बने।

मुनि श्री वृद्धिचन्द जी महाराज ·

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल पीपाडा परिवार मे आपने जन्म लिया था। सवत् १९५४ फाल्गुन बदी ४ गुरुवार को रतलाम मे पूज्य श्री मन्नालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की, कालान्तर मे आप पडवाई बन गये।

मुनि श्री भैरूलाल जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे प्रतापगढ निवासी थे। बीसा पोरवाड परिवार मे आपने जन्म लिया था। सवत् १९५४ फाल्गुन सुदी ४ गुरुवार को मुनि श्री डालचन्द जी महाराज सा की नेश्राय मे रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की और बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री धनराज जी महाराज :

आपने १९५५ चैत्र बदी २ को मुनि श्री रूपचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। विशेष परिचय अनुपलब्ध है।

मुनि श्री दौलत राम जी महाराज

आपकी दीक्षा पीधाजी महाराज के पास हुई। विशेष परिचय नहीं है।

मुनि श्री बालचन्द जी महाराज ·

आप मालवा मे सजीत निवासी थे। ओसवाल मतावत परिवार मे आपका जन्म हुआ। सवत् १९५५ सावन बदी ४ रविवार को सजीत मे मुनि श्री कर्मचन्द जी महाराज की नेश्राय मे आपने दीक्षा अगीकार की। रत्नत्रय की आराधना करते हुए सवत् १९८७ जेठ सुदी ४ शुक्रवार को बीकानेर मे आपका स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री पृथ्वीराज जी महाराज ·

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। ओसवाल गलुडिया परिवार मे जन्म हुआ। वि स १९५५ आषाढ बदी ३ मगलवार को प्रतापमल जी महाराज की नेश्राय मे उदयपुर मे दीक्षा ली। १९६१ भादवा सुदी मे रतलाम मे स्वर्गवास हुआ। आपके फूलचन्द जी महाराज शिष्य बने।

मुनि श्री गुलाब चन्द जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे कजार्डा निवासी थे। आपका जन्म ओसवाल भडारी परिवार मे हुआ और विक्रम सवत् १९५५ की जेठ सुदी १०, सोमवार को रामपुरा मे मुनि श्री हीरालाल जी महाराज की नेश्राय मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की। मुनि श्री का १९६३ मे खाचरौद मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री फूलचन्द जी महाराज .

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। ओसवाल कालूराम जी सघवी पोखरना के पुत्र रत्न थे।

विक्रम सवत् १९५५ की आषाढ बदी ३ को उदयपुर मे मुनि श्री पृथ्वीराज जी महाराज की नेश्राय मे जैनेश्वरी प्रव्रज्या अगीकार की। रत्नत्रय की आराधना करते हुए सजीत मे १९७५ कार्तिक बदी ११ को आपका स्वर्गवास हुआ। आपके भ्राता मुनि कन्हैयालाल जी आपके शिष्य बने, साथ ही छगनलाल जी महाराज एव छत्रसिह जी महाराज भी शिष्य रत्न थे।

मुनि श्री बाल चन्द जी महाराज

आपने विक्रम सवत् १९५५ सावन बदी १४ को प्रवृज्या अगीकार की। वि स १९८६ जेठ बदी ४ को रात्रि ९ बजे गगाशहर मे स्वर्गस्थ हुए।

मुनि श्री बोटु जी महाराज :

आप निम्बाहेडा निवासी थे। ओसवाल सींगी परिवार मे आपका जन्म हुआ था। विक्रम सवत् १९५५ वैशाख सुदी ५ गुरुवार को मुनि श्री नदलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ली। सम्वत् १९८८ जेठ सुदी ११ को इन्दौर मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री हुकमीचन्द जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। आपने ओसवाल चानोदिया परिवार मे जन्म लिया और विक्रम सवत् १९५५ पौष बदी ८ गुरुवार को जावरा मे मन्नालाल जी महाराज की नेश्राय मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की और वि स १९९८ जेठ बदी १२ बुधवार को बडीसादडी मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री केशरीमल जी महाराज ·

आप मालव प्रान्त में शिवगढ निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे आपने जन्म लिया था। सवत् १९५५ पौष बदी १४ मगलवार को खाचरौद मे मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री राधालाल जी महाराज ·

आप मालव प्रान्त मे खाचरौद निवासी थे। भटेवरा जेलावत परिवार मे आप श्री ने जन्म लिया था और विक्रम सवत् १९५५ पौष सुदी–१५ गुरुवार को मोतीलाल जी महाराज की नेश्राय मे खाचरौद मे सयमी जीवन अगीकार किया। रत्नत्रय की आराधना करते हुए सवत् १९६७ फाल्गुन बदी ११ को बीकानेर मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री बडे चादमल जी महाराज :

आप मेवाड मे डासरिया– मेडिया (भीम टाटगढ रोड पर) निवासी थे। ओसवाल मुणोत परिवार मे आपका जन्म हुआ था। विक्रम सवत् १९५५ माघ बदी ३ रविवार को जावद मे मुनि श्री वृद्धिचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ था। आपके घासीलाल जी महाराज, पोखर जी महाराज, सरदामल जी महाराज शिष्य हुए।

मुनि श्री जगन्नाथ जी महाराज (उर्फ नाम जीवाजी, रुघनाथ जी) .

आपने मालव प्रान्त के अन्दर जावरा मे अग्रवाल परिवार मे जन्म ग्रहण किया। विक्रम सवत् १९५५ मे प्रतापगढ मे दीक्षा ग्रहण की और जावरा मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री चादमल जी महाराज ·

आपने स १९५५ मिगसर बदी ८ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री हसराज जी महाराज

आप मालव प्रान्त मे रतलाम के निवासी थे। ओसवाल गाधी परिवार मे आपने जन्म लिया और विक्रम १९५६ मिगसर सुदी २ सोमवार को जावद मे मुनि श्री कर्मचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९५७ मिगसर बदी १३ मगलवार को चित्तौड मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री गब्बूलाल जी महाराज :

आप जावद निवासी थे। ओसवाल काठेड परिवार मे आपने जन्म लिया था। विक्रम सवत् १९५६ पौष सुदी १० को जावद मे मुनि श्री वृद्धिचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९९१ कार्तिक बदी ९ बुधवार को बालोतरा मे स्वर्गवास हुआ था। आपके तख्तमल जी महाराज और नन्दलाल जी महाराज शिष्य हुए थे।

मुनि श्री मोडीलाल जी महाराज

आप जावद निवासी थे। ओसवाल पटवा परिवार मे आप श्री का जन्म हुआ। वि स १९५६ की पौष सुदी १० बुधवार को जावद मे मुनि श्री वृद्धिचन्द जी म सा की नेश्राय मे जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की थी। आपश्री के ताराचन्द जी महाराज, घेवरचन्द जी महाराज, भीमराज जी महाराज आदि शिष्य हुए थे।

मुनि श्री हसराज जी महाराज .

आपने सवत् १९५६ पोष सुदी ११ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री भैरूलाल जी महाराज .

आपने सवत् १९५६ पौष सुदी ११ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री बाबूलाल जी म.सा.

आपने सवत् १९५६ पौष सुदी ११ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री शोभालाल जी महाराज

आप जावद निवासी थे। ओसवाल राका (चौधरी) परिवार मे आपने पिता नानालालजी माता जडाव बाई की कुक्षि मे जन्म लिया था। आपने वि स १९५६ माघ बदी २ बुधवार को करडावद मे

वृद्धिचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९८९ पौष सुदी मे ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ। आपके देवीलाल जी महाराज, मोहनलाल जी महाराज, धनराज जी महाराज आपके शिष्य हुए। भाई ज्ञानमल जी व इन्द्रचन्द जी थे नीमच शादी हुई लेकिन आपके अतर मन मे विरक्ति पैदा हुई। ५५ की साल मे बीकानेर मे स्वय दीक्षित हो गये।

मुनि श्री राधालाल जी महाराज :

आप अजमेर निवासी थे। माँहेश्वरी सोमाणी परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९५६ माघ बदी १३ सोमवार को आकोदडा मे मुनि श्री देवीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा हुई थी। स १९८६ माघ बदी ५ को रतलाम मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री गुलाबचन्द जी महाराज :

आप मालवा निवासी थे। ओसवाल परिवार मे आपका जन्म हुआ। वि स १९५६ फाल्गुन सुदी १३ को रूपचन्द जी महाराज की नेश्राय मे सयम ग्रहण किया और कर्मोदय से पडवाई बन गये।

मुनि श्री जसराज जी महाराज :

आप मालवा मे राजगढ निवासी थे। ओसवाल डोसी परिवार में आपका जन्म हुआ था। सवत् १९५७ माघ बदी ७ बुधवार को कानवन मे मुनि श्री मोतीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और बाद मे पडवाई बन गये थे।

मुनि श्री टीकमचन्द जी महाराज

आप मालवा मे खाचरौद निवासी थे। ओसवाल श्रीश्रीमाल परिवार मे आपका जन्म हुआ था। विक्रम सवत् १९५७ कार्तिक सुदी ११ शनिवार को रतलाम मे फतहचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा हुई। वि स १९६९ कार्तिक सुद मगलवार को ब्यावर मे आपका स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री सुखलाल जी महाराज ·

आप मालव प्रान्त मे जीरन निवासी थे। ओसवाल चावत भडारी परिवार मे आपका जन्म हुआ और विक्रम सवत् १९५७ वैशाख बदी १ रविवार को जीरन मे खूबचन्द जी महाराज की नेश्राय मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की।

मुनि श्री मन जी ·

आपने १९५७ के पौष महीने मे मुनि श्री देवीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और डेढ माह बाद पडवाई हो गये।

मुनि श्री राजमल जी महाराज ·

आप बराड प्रान्त मे आलोई निवासी थे। प्रजापत परिवार मे आपका जन्म हुआ था। विक्रम

सवत् १९५७ चैत्र बदी १ को देई मे धनलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और तपस्वी हजारी मलजी महाराज के साथ चला गया और वि स १९९२ मे पीपाड मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री कल्लू जी महाराज :

आपने स १९५० चैत्र बदी १ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री नाथू जी महाराज :

आप मेवाड मे दमोरी निवासी थे। राजपूत परिवार मे आपने जन्म लिया और वि स १९५७ फाल्गुन सुदी १५ मगलवार को किस्तूर चन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे पडवाई बन गये थे।

मुनि श्री कजोड़ीमल जी महाराज ·

आप मेवाड मे भीलवाडा निवासी थे। ओसवाल सुराना परिवार मे आपने जन्म लिया था और स १९५८ सावन बदी १ गुरुवार को भीलवाडा मे कर्मचन्द जी महाराज की नेश्राय मे सयम पथ स्वीकार किया और विक्रम सवत् १९८७ आषाढ सुदी मे बीकानेर मे स्वर्गवास हुआ। आप के मुनि श्री मागीलाल जी महाराज एव मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज शिष्य रत्न थे।

मुनि श्री हसराज जी महाराज ·

आपने स १९५८ मिगसर बदी २ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री उदयचद जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे और ओसवाल बुरड परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। सवत् १९५८ जेठ बदी ३ सोमवार को माणकचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री पृथ्वीराज जी महाराज :

आप मालवा प्रान्त मे कुकडेश्वर निवासी थे। जाति के कुभार थे। वि स १९५८ आषाढ सुदी ११ शनिवार को कुकडेश्वर मे जैन दिवाकर श्री चौथमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९८२ के चैत्र बदी मे रतलाम मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री कालूराम जी महाराज

आप कजार्डा निवासी थे ओसवाल परिवार मे जन्म लिया। और वि स १९५८ आसोज सुदी २ सोमवार को किस्तूर चद जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री गंभीरमल जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल राका परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया

था और १९५८ सावन बदी ४ शुक्रवार को जोधपुर मे मुनि श्री कर्मचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। स १९८६ आसोज मे निकुभ (मेवाड) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज ·

आप मालवा मे पेडसी गाव के निवासी थे। जाति के खाती (सुथार) थे। वि स १९५८ कार्तिक सुदी ७ सोमवार को इन्दौर मे पू मन्नालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री जुहारमल जी महाराज ·

आप मेवाड मे बनेडा निवासी थे। ओसवाल गोखरू परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया था और वि स १९५८ मिगसर बदी १ मगलवार को बनेडा मे कर्मचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। १९९० की साल कार्तिक सुदी मे ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज :

आप मेवाड मे बडीसादडी निवासी थे। ओसवाल माडोत परिवार\मे आपका जन्म हुआ था। वि स १९५८ फाल्गुन सुदी १० को बडीसादडी मे ही पूज्य श्री श्रीलाल जी महाराज के मुखारविन्द से जुहारलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। वि स १९८४ मिगसर सुदी ५ सोमवार को स्वर्गवास हुआ। आपके मुनि श्री हुक्मीचन्द जी महाराज तथा सासारिक पुत्र श्री पन्नालाल जी (मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज) व रतनलाल जी (मुनि श्री रतनलाल जी) शिष्य बने।

तपस्वी मुनि श्री धूलचन्द जी महाराज .

आप मारवाड मे निबाज निवासी थे। सरावगी ढोला परिवार मे आपने जन्म लिया था। सवत् १९५९ मिगसर बदी ५ को सालावास (मारवाड) मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। वि स १९९६ जेठ सुदी मे ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ। आपके मुनि श्री अनराज जी शिष्य हुए।

मुनि श्री ऊकार जी महाराज :

आप मालवा प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। ब्राह्मण परिवार मे आपका जन्म हुआ था। वि स १९५९ मिगसर महीने मे मुलतान मे देवीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी, बाद मे पडवाई बन गये थे।

तपस्वी मुनि श्री हजारीमल जी म.सा. :

आप मालव प्रान्त मे खानपुरा निवासी थे। ओसवाल पालावत परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९५८ मिगसर सुदी ३ शनिवार को जावरा मे मुनि श्री हीरालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री हुकमीचन्द जी महाराज .

आप मेवाड मे बडीसादडी निवासी थे। ओसवाल मारु (पारलेचा) परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९५८ मिगसर सुदी ६ बुधवार को बडीसादडी मे लक्ष्मीचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९८९ माघ बदी १० को बीकानेर मे स्वर्गवास हो गया था।

मुनि श्री मानजी महाराज ·

आप मेवाड ने नयी चगेरी निवासी थे। ओसवाल सींगी परिवार मे जन्म ग्रहण किया था और १९५८ माघ सुदी १३ सोमवार को रतलाम मे मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। विक्रम सवत् १९६५ के मिगसर माह मे रतलाम मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री घासीलाल जी महाराज :

आप मेवाड मे तरावली निवासी थे। वैरागी रामावत परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९५८ माघ सुदी १३ गुरुवार को तरावली गढ मे ही पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे ९ ठाणो से उदयपुर मे गण बाहर कर दिया। आपने ३२ सूत्रो का अनुवाद किया। अहमदाबाद मे आपका स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री घेवरचन्द जी महाराज :

आपने स १९५८ माघ सुदी १३ गुरुवार को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री जड़ावचन्द जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे पेटलावद निवासी थे और ओसवाल गुगलिया परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। सवत् १९५८ फाल्गुन सुदी १० गुरुवार को सारण मे फतहचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री धनराज जी महाराज .

आप मारवाड मे सारण निवासी थे। ओसवाल डागा परिवार मे आपने जन्म धारण किया था। सवत् १९५८ फाल्गुन सुदी ८ सोमवार को बीकानेर मे दीक्षा ग्रहण की थी। मगनलाल जी महाराज की नेश्राय मे। १९७५ आषाढ सुद २ को बर मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री भागीरथ जी महाराज :

आप जयनगर निवासी थे। ब्राह्मण परिवार मे आपका जन्म हुआ। स १९५८ चैत्र बदी १३ को जयनगर मे ही नारायण दास जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। स १९६० मे गिलूण्ड मेवाड मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री वृद्धिचन्द जी महाराज

आप निमोद (पजाब) निवासी थे। लुहार परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। स १९५९ वैशाख बदी ५ को नगरी (मालवा) मे चुन्नीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री राजमल जी महाराज III .

आप अलोई (बराड) निवासी थे, जाति के प्रजापत थे। सवत् १९५९ वैशाख बदी ४ चुन्नीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे प्रतापमल जी महाराज अलग ले गये।

मुनि श्री उदयचन्द जी महाराज

आप मेवाड मे सालेरा तथा गोगुदा निवासी थे। ओसवाल राका परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया था और सवत् १९५८ मे माघ सुदी ५ मगलवार को गोगुन्दा मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९७८ आसोज मे गया।

मुनि श्री हुक्मीचन्द जी महाराज ·

आप मालवा में नीमच निवासी थे। आपने ओसवाल काठेड परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। स १९५९ मिगसर बदी १ को नीमच मे जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म सा के पास दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री राधाकिशन जी म.सा.

स १९५९ माघ सुदी १३ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री लक्ष्मण जी महाराज :

आप मारवाड मे पाली निवासी थे। गोत्र के खाती थे। स १९५८ माघ सुदी ५ को चित्तौड मे देवीलाल जी महाराज की नेश्राय में दीक्षा ग्रहण की और घासा पलाना मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री किस्तूर चन्द जी महाराज .

आप मालवा मे मन्दसौर निवासी थे। ओसवाल तलेसरा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था और वि स १९६० आषाढ बदी २ शुक्रवार को मन्दसौर मे देवीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री हीरालाल जी महाराज ·

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। आपने पोरवाड ताकडिया परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। आप बहुत बडे वकील थे। पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के सदुपदेश से विरक्त बन कर आपने विक्रम सवत् १९६० मिगसर बदी ३, शनिवार को उदयपुर मे डालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे जैन

भागवती दीक्षा अगीकार की थी। स १९८३ फाल्गुन सुदी १ को कपासन मे स्वर्गवास हुआ। आपके सासारिक दोहित्र मनोहरलाल जी ने शिष्यत्व स्वीकार किया।

मुनि श्री हीरालाल जी महाराज

आप मालवा मे जावरा निवासी थे। ओसवाल पामेचा परिवार मे आपका जन्म हुआ था और वि स १९६० मिगसर बदी ३ शनिवार को उदयपुर मे मुनि श्री डालचन्द जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। १९६८ के आषाढ महीने मे ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री इन्द्रचन्द जी महाराज

आप मारवाड मे ब्यावर निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे आपका जन्म हुआ था। स १९६० मिगसर बदी ६ को जैतारण मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९६७ मे पडवाई बन गये थे।

मुनि श्री सुगन चन्द जी महाराज

आप भीयानी (पजाब) निवासी थे। अग्रवाल परिवार मे आपका जन्म हुआ था। वि स १९६० मिगसर सुदी मे जावद मे मुनि श्री डालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे सयम पथ स्वीकार किया। १९६५ मे आप अमरसिह जी महाराज की सम्प्रदाय मे चले गये।

मुनि श्री शातिलाल जी महाराज .

आपने स १९६१ जेठ सुदी १३ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री अनराज जी महाराज

आप मारवाड मे गिरी निवासी थे। ओसवाल रणजीत कोठारी परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया था। सवत् १९६१ पौष बदी ९ शुक्रवार को मुनि श्री धूलचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा धारण की थी लेकिन बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री नाथूलाल जी महाराज

आप मेवाड मे बबोरी निवासी थे। राजपूज परिवार मे जन्म लिया था। स १९६१ फाल्गुन माह मे मोतीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ली, पडवाई बन गये। पुन प्यारचन्द जी महाराज के शिष्य बने।

मुनि श्री सतीदान जी महाराज .

सवत् १९६१ फाल्गुन सुदी मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री भैरूलाल जी महाराज (उर्फ शकरलाल जी महाराज) :

आप मेवाड मे धरियावद निवासी थे। राजपूत चौहान परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९६१ वैशाख बदी ७ बुधवार को डूगला मे जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा

ग्रहण की और १९९७ की आषाढ सुदी ६ गुरुवार को अमलनेर (महाराष्ट्र) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री माणकचन्द जी महाराज .

आप मालवा मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल मुरडिया परिवार मे आपका जन्म हुआ था। सवत् १९६१ भादवा बदी ११ मगलवार को पाली मे पूज्य श्री मन्नालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री मूलचन्द जी महाराज ·

आप मारवाड मे सोयला निवासी थे। ओसवाल चोरडिया परिवार मे आप श्री का जन्म हुआ था। स १९६१ कार्तिक सुदी ३ गुरुवार को भीनासर मे नारायण दास जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। वि स १९६८ वैशाख सुदी मे राजयावास ब्यावर के पास स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री मयाचन्द जी महाराज

आप मेवाड मे मोटा गाव तलावडी निवासी थे। ओसवाल परिवार मे आपश्री का जन्म हुआ था। विक्रम सवत् १९६२ आषाढ बदी १३ शनिवार को मोटा गाव मे पन्नालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। सवत् १९६३ आसोज सुदी ३ शुक्रवार को रायपुर (बोराना) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री शंकरलाल जी महाराज .

आपने स १९६२ भादवा बदी ६ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री किस्तूर चन्द जी महाराज ·

आप मालव प्रान्त मे जावरा निवासी थे। ओसवाल चपलोत परिवार मे आपने जन्म लिया और वि स १९६२ कार्तिक सुदी १३ गुरुवार को रामपुरा मे पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे आपके बडे भ्राता केशरीमल जी ने १९६३ मे दीक्षा ली थी। आपके गुलाबचन्द जी महाराज शिष्य बने थे। आप ज्योतिषाचार्य के नाम से विख्यात थे। श्रमण सघ ने आपको उपाध्याय पद से सुशोभित किया। आप रतलाम नीम चौक मे स्थिरवास रहे। रतलाम मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री मांगीलाल जी महाराज .

सवत् १९६२ मिगसर सुदी १३ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि (पूज्य) श्री गणेशीलाल जी म.सा. :

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। आपका जन्म सवत् १९४७ सावन बदी ३ को श्रीमान् सायबलाल जी मारु की धर्मपत्नी इन्द्रा बाई की कुक्षि से हुआ। १६ वर्ष की अल्पवय मे माताजी, पिताजी, बहिन एव धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया। पूज्य जवाहराचार्य का उपदेश श्रवण करके सयम

भावना पैदा हुई और वि स १९६२ मिगसर बदी १ को उदयपुर मे मुनि श्री मोतीलाल जी म सा के नेतृत्व मे दीक्षा अगीकार की। वि स १९९० फाल्गुन सुदी १५ को जावद मे युवाचार्य पद तथा वि स २००० आषाढ सुदी ८ को हुक्म सघ का आचार्य पद प्राप्त हुआ। २००९ मे श्रमण सघ के सर्व सत्ताधिकारी आचार्य नियुक्त हुए। २०१६ मे स्वछन्दता के कारण आचार्य पद का त्याग कर दिया और २०१९ माघबदी २ को उदयपुर मे स्वर्गवास हुआ। आपके नेश्राय मे मुनि श्री गोकुलचन्द जी महाराज, फूलचन्द जी महाराज, डूगरसिहजी महाराज, रतनलाल जी महाराज, करणीदान जी महाराज, सुन्दरलाल जी महाराज, चौथमल जी महाराज, नानालाल जी महाराज, मगनलाल जी महाराज, तपसीलाल जी महाराज, नारायण लाल जी महाराज, सुमेर मुनि जी महाराज, हुक्मीचद जी महाराज, ईश्वर चन्द जी महाराज, नेमीचद जी महाराज, कुन्दनमल जी महाराज, आईदान जी महाराज, गोपीलाल जी महाराज, इन्द्रचद जी महाराज, हनुमानमल जी महाराज, कवरलाल जी महाराज, तोलाराम जी महाराज, घेवरचद जी महाराज, सुमन कुमार जी महाराज, और बाबूलाल जी महाराज आदि शिष्य वृन्द हुए।

मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज :

आप मेवाड मे गोगुन्दा निवासी थे। ओसवाल बडोला परिवार मे आपने जन्म लिया था। स १९६२ मिगसर बदी १ सोमवार को पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज की नेश्राय मे उदयपुर मे भागवती दीक्षा सपन्न हुई और १९६४ आषाढ सुदी १३ मगलवार को रतलाम मे स्वर्गवासी हुए।

मुनि श्री सरदारमल जी महाराज ·

आप मेवाड मे गगापुर निवासी थे। ओसवाल पिछोलिया परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १६६२ मिगसर बदी १ को गगापुर मे श्री लालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा सपन्न हुई। सवत् १९९६ मे आप साधुमार्गी से आप मन्दिरमार्गी बन गये।

मुनि श्री कन्हैयालाल जी महाराज

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। ओसवाल सघवी पोखरना परिवार मे आपका जन्म हुआ। वि स १९६२ मिगसर बदी १ सोमवार को गगापुर मे अपने भाई फूलचन्द जी महाराज की नेश्राय मे भागवती दीक्षा सपन्न हुई।

मुनि श्री मुलतानमल जी महाराज (भोलाराम जी महाराज) .

आप मारवाड मे केरु निवासी थे। ओसवाल श्रीश्रीमाल परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६२ मिगसर बदी १२ गुरुवार को नारायण दास जी महाराज की नेश्राय मे उदयरामसर मे भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई।

मुनि श्री सूरजमल जी महाराज

आप मारवाड मे खीचन निवासी थे। ओसवाल राखेचा परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९६२ मिगसर बदी ५ शुक्रवार को खीचन मे ही कर्मचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री छगनलाल जी महाराज

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। ओसवाल बोला परिवार मे जन्म लिया। सवत् १९६२ फाल्गुन सुदी ७ गुरुवार को उदयपुर में फूलचद जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। १९८८ आसोज सुदी १५ को निबाज मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री भैरूलाल जी महाराज :

आप प्रतापगढ निवासी थे। पोरवाड परिवार मे आपका जन्म हुआ। वि स १९६२ फाल्गुन सुदी मे चुन्नीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री मांगीलाल जी महाराज

आप ढूढार प्रान्त मे उकलाना निवासी थे। आपने मीना गोठवाल परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६२ मिगसर सुदी १३ शनिवार को तिवरी मे कजोडीमल जी म सा की नेश्राय मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की। बीच मे पडवाई होने के बाद वापिस दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री मन्नालाल जी महाराज

आप मारवाड मे जोधपुर निवासी थे। ओसवाल गोलेछा परिवार मे आपने जन्म लिया था। स १९६३ आषाढ सुदी ४ रविवार का जावरा मे मुनि श्री डालचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा हुई थी। सवत् १९६७ मे पाली से दूसरी सम्प्रदाय मे गये।

मुनि श्री कालूराम जी महाराज .

आप मेवाड मे रायपुर वोराणा निवासी थे। ओसवाल परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६३ जेठ बदी १२ रविवार को रायपुर मे कनकमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज

आप मेवाड मे कदवासा निवासी थे। ओसवाल बोहरा परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६३ वैशाख सुदी ३ गुरुवार को जावरा मे मुनि श्री कजोडीमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। वि स १९८२ आषाढ बदी मे जावरा मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री हजारीमल जी महाराज

अपने स १९६३ वैशाख सुदी १० को दीक्षा ली।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज :

आपने स १९६३ वैशाख सुदी १० को दीक्षा ली।

मुनि श्री कटगरा वाला महाराज :

आपने स १९६३ वैशाख सुदी १० को दीक्षा ली।

मुनि श्री केशरीमल जी महाराज :

आप मालवा मे जावरा निवासी थे। ओसवाल चपलोत परिवार मे आपका जन्म हुआ। ज्योतिषाचार्य श्री किस्तूर चन्द जी महाराज के आप लघु भ्राता थे। सवत् १९६३ कार्तिक सुदी १३ मगलवार को बडीसादडी मे खूबचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज

आप फैजापुर– खानदेश (महाराष्ट्र) निवासी थे। ओसवाल परिवार मे जन्म पाया था। वि स १९६३ कार्तिक सुदी १३ को बडीसादडी मे देवीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। ओसवाल मारु परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६३ मिगसर बदी ३ रविवार को उदयपुर मे पूज्य मन्नालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज :

आप मेवाड मे बडीसादडी निवासी थे। ओसवाल माडोत परिवार मे आपका जन्म हुआ था। स १९६३ पोष बद ४ बुधवार को बडीसादडी मे अपने पिताश्री लक्ष्मीचन्द जी महाराज की नेश्राय मे अपने भाई रतनलाल जी के साथ दीक्षा ग्रहण की। बाद मे अहमदाबाद मे स १९९६ कार्तिक सुदी मे अर्जुनलाल जी म के साथ सवेगी बने।

मुनि श्री रतनलाल जी महाराज .

आप मेवाड मे बडीसादडी निवासी थे। ओसवाल माडोत परिवार मे आपका जन्म हुआ था। वि स १९६३ पोष बदी ४ बुधवार को बडीसादडी मे अपने पिता लक्ष्मीचन्द जी म सा की नेश्राय मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। स १९७४ मिगसर सुदी ४ को चौविहार सथारा सहित ६ बजे बीकानेर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री नेणसुख जी महाराज .

आप जावद निवासी थे। ओसवाल मुरडिया परिवार मे आपका जन्म हुआ था। विक्रम सवत्

१९६३ पौष सुदी १३, शुक्रवार को भीमराज जी महाराज की नेश्राय मे डूगला (मेवाड) मे भागवती दीक्षा अगीकार की।

मुनि श्री कालू जी महाराज :

आपने स १९६३ जेठ बदी २ बुधवार को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री देवीलाल जी महाराज :

आप कजार्डा निवासी थे। ओसवाल नलवाया परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६४ जेठ बदी २ बुधवार को कजार्डा मे अपने भाई श्री शोभाचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री नाहरमल जी महाराज :

आपने स १९६४ जेठ बदी १३ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री हरकचंद जी महाराज .

आपने स १९६४ मिगसर बदी ९ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री हरकचन्द जी महाराज :

आप मेवाड मे बडीसादडी निवासी थे। अग्रवाल परिवार मे आपका जन्म हुआ था। वि स १९६४ मिगसर सुदी ५ सोमवार को छोटीसादडी मे खूबचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री घेवरचन्द जी महाराज

आप मारवाड मे विसलपुर निवासी थे। ओसवाल पदावत परिवार मे आपका जन्म हुआ था। विक्रम सवत् १९६४ मे जम्मू में पू मन्नालाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। मोड जी महाराज काका थे।

मुनि श्री तखतमल जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल चपलोत परिवार मे आपने जन्म पाया था। विक्रम सवत् १९६४ मिगसर बदी २ गुरुवार को अजमेर मे पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के मुखारविन्द से गब्बूलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९७३ भादवा सुदी १३ को गगापुर (मेवाड) मे सथारा सहित स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री कजोडीमल जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे मनासा निवासी थे। ओसवाल बोथरा परिवार मे आपश्री का जन्म हुआ था। विक्रम सवत् १९६४ माघ बदी ५ गुरुवार को नीमच मे जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। सवत् १९७४ वैशाख सुदी में जावरा मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री मनोहरलाल जी महाराज

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। पोरवाल पारख परिवार मे आप ने जन्म लिया था। वि स १९६४ फाल्गुन सुदी १ रविवार को पाली मे पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के मुखारविन्द से अपने काकाजी हीरालाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

तपस्वी मुनि श्री मयाचन्द जी महाराज .

आप मेवाड मे ताल निवासी थे। ओसवाल दलाल परिवार मे आपका जन्म हुआ। आपके पिता श्री का नाम दौलतराम जी व मातु श्री का नाम घीसी बाई था। थाणा निवासी डालचद जी के यहा शादी हुई। पत्नी का नाम गेन्दी बाई था। पत्नी और पुत्र की मृत्यु के बाद आपने १९६४ फाल्गुन सुदी २ सोमवार को ताल मे नन्दलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आप घोर तपस्वी थे।

मुनि श्री शोभाचन्द जी महाराज .

आप मारवाड मे जोधपुर निवासी थे। ओसवाल डोशी परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६५ चैत्र सुदी २ शुक्रवार को अजमेर मे पूज्य श्रीलाल जी म सा के मुखारविन्द से डालचन्द जी म सा की नेश्राय मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की।

मुनि श्री राम लाल जी महाराज :

आप ढूढार मे ककोड निवासी थे। जाति के मीना थे। वि स १९६५ चैत्र सुदी ९ शुक्रवार को टोक मे किस्तूर चन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। वि स १९८३ चैत्र सुदी ९ को दाता मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज :

आप पजाब मे अमृतसर निवासी थे। ओसवाल परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६५ चैत्र सुदी १५ गुरुवार को जावरा मे मुनि श्री देवीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और पुन पडवाई बन गये।

मुनि श्री तख्तमल जी महाराज एव जड़ावचंद जी महाराज :

आपने स १९६५ वै सु ७ को दीक्षा ली।

मुनि श्री मिश्रीलाल जी महाराज :

आप दिल्ली अलवर निवासी थे। ओसवाल शिशोदिया परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६५ वैशाख सुदी १० रविवार को दिल्ली मे पू मन्नालाल जी म सा के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। परमचन्द जी महाराज शिष्य हुए।

मुनि श्री तपसी जी महाराज

आपने स १९६५ आषाढ सुदी मे दीक्षा ली।

मुनि श्री जोरावरमल जी महाराज :

आप मारवाड मे बिलाडा निवासी थे। ओसवाल आचलिया परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६५ सावन सुदी १३ सोमवार को कूकडेश्वर मे हजारीमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९६८ मे लोद में स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज :

आपने वि स १९६५ सावन सुदी १३ सोमवार को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री न्यामत जी महाराज :

आप पजाब लुधियाना निवासी थे। ओसवाल परिवार मे आपका जन्म हुआ। वि स १९६५ आसोज सुदी १३ बुधवार को जावरा मे हजारीमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा हुई और पडवाई बन गये।

मुनि श्री ताराचन्द जी महाराज :

आप मालवा मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल राका परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६५ कार्तिक बदी २ रविवार को बीकानेर मे मोडीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और वि स १९७७ पौष बदी ५ को सारगी मे स्वर्गवास हुआ था। आपकी नेश्राय मे आपके पुत्र व भाणेज (चादमल जी व नदलाल जी) दो शिष्य हुए।

मुनि श्री उम्मेदमल जी (उदयचंद जी) महाराज :

आप मालव प्रान्त मे खाचरौद निवासी थे। गूजर परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६५ कार्तिक बदी १३ शुक्रवार को येवला (महाराष्ट्र) मे घासीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। एक बार पडवाई बन कर पुन उदयचन्द जी के नाम से नन्दलाल जी के पास दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री चान्दमल जी महाराज :

आप मालवा मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल राका परिवार मे आपने जन्म लिया था। आपने आपने पिता श्री ताराचन्द जी म सा के साथ उनकी नेश्राय मे वि स १९६५ कार्तिक बदी २ रविवार को बीकानेर मे पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण की थी। कर्मयोग से पडवाई बन गये। पुन दीक्षा ली।

मुनि श्री रामजी महाराज :

स १९६५ कार्तिक सुदी १३ (धनतेरस) को आपने दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री बालजी महाराज

परिचय उपलब्ध नही है।

मुनि श्री हजारी मल जी महाराज

आप मालवा मे जावरा निवासी थे। ओसवाल कटारिया परिवार मे आपका जन्म हुआ था। वि स १९६५ कार्तिक सुदी १५ रविवार को छोटीसादडी मे पू खूबचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। वि स १९९६ पौष सुदी ११ को दिल्ली मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री नाथूलाल जी महाराज ·

आप मालवा मे कुणी निवासी थे। ओसवाल कावडिया परिवार मे जन्म हुआ था। वि स १९६५ मिगसर सुदी ५, शनिवार को मदसौर मे नन्दलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। वि स १९९६ आसोज सुदी ५ सोमवार को जावरा मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री श्रीचन्द जी महाराज :

आप मालव प्रान्त मे कोद बिडवाल निवासी थे। ओसवाल मतावद परिवार मे आपका जन्म हुआ था। वि स १९६५ माघ सुदी ५ मगलवार को कोद बिडवाल मे राधालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। वि स २००५ आषाढ सुदी १ को बीकानेर मे स्वर्गवासी हुए।

मुनि श्री लालचन्द जी महाराज .

आप मालवा मे कोद बिडवाल निवासी थे। ओसवाल कुचेरिया परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६७ चैत्र सुदी १३ गुरुवार को कोद बिडवाल मे ही पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। वि स १९७८ माघ सुदी ७ को चाराली पाटकी मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री मूलचन्द जी महाराज .

आप मेवाड मे कोशीथल निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे आपकां जन्म हुआ था। वि स १९६६ वैशाख सुदी ३ गुरुवार को ब्यावर मे पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के मुखारविन्द से डालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा हुई। १९८५ मिगसर सुदी ४ रविवार को अपने शिष्य रूपचन्द जी महाराज के साथ सवेगी बन गये।

मुनि श्री पन्नालाल जी महाराज ·

आप मालवा मे मन्दसौर निवासी थे। ओसवाल नाहटा परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६६ वैशाख सुदी ३ गुरुवार को मन्दसौर मे पूज्य श्री मन्नालाल जी म सा के पास दीक्षा ग्रहण की।

वि सवत् १९७५ आसोज सुदी ९ सोमवार को नीमच मे काल धर्म को प्राप्त हुए।

मुनि श्री दयाराम जी महाराज

आप मेवाड मे कोशीथल निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६६ जेठ सुदी १० को कोशीथल मे ही पूज्य श्री श्रीलाल जी महाराज सा के मुखारविन्द से डालचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। वि स १९७३ मिगसर सुदी ४ मगलवार को ब्यावर के पास कालधर्म को प्राप्त हुए।

मुनि श्री नाहरमल जी महाराज

आप मारवाड मे सोजत नगर निवासी थे। ओसवाल श्रीश्रीमाल परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६६ भादवा सुदी ३ गुरुवार को सोजत मे ही मुनि श्री बालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। विक्रम सवत् १९७२ मिगसर सुदी ५ शुक्रवार को उदयपुर मे पडवाई बने।

मुनि श्री धनराज जी महाराज ·

आप मेवाड मे कानोड निवासी थे। शिवलाल जी मुरडिया की धर्मपत्नी सरदार बाई की कुक्षि से वि स १९४२ भादवा सुदी ६ को जन्मे। यौवनावस्था मे २ बार सगाई होकर छूट गई तब तीसरी बार एक काली कुरूप लडकी के साथ सगाई पक्की हुई। आपको मालूम पडते ही सगाई त्यागकर बडीसादडी मे विराजित पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के मुखारविन्द से शोभालाल जी महाराज की नेश्राय मे वि स १९६६ कार्तिक सुदी १३ गुरुवार को जैन भागवती दीक्षा अगीकार की। आप घोर तपस्वी महात्मा थे। अतिम समय तक आप एकान्तर तप करते रहे। उपवास से लेकर बडी तपस्या भी चौविहार करते थे। जीवन की साध्य वेला मे लगभग १३ वर्ष तक कपासन विराजे। वि स २०३४ भादवा सुदी १३ तदनुसार २५ सितम्बर १९७७ को कपासन मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री नन्दलाल जी महाराज ·

आप मालवा मे जावरा निवासी थे। ओसवाल बाफना परिवार मे आपश्री का जन्म हुआ था। वि स १९६६ कार्तिक सुदी १३ को बडीसादडी मे अपने मामा जी श्री ताराचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा हुई और स १९७३ वैशाख बदी ७ को कूकडेश्वर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री छीतरमल जी महाराज .

आप ढूढार प्रान्त मे माधोपुर निवासी थे। पोरवाल उजल धोला परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६६ पौष सुदी १० गुरुवार को टोक मे मुनि श्री किस्तूर चन्द जी महाराज की नेश्राय मे आपने दीक्षा ग्रहण की। विक्रम सवत् १९७६ मे इन्द्रगढ मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री मोहनलाल जी महाराज :

आप मोरवी काठियावाड निवासी थे। श्रीमाल डोसी परिवार मे आपने जन्म पाया था। वि स १९६६ माघ सुदी १२ सोमवार को रतलाम मे शोभालाल जी महाराज की नेश्राय में दीक्षा ग्रहण की थी और पुन १९९० मे नई दीक्षा ली। वि स २०२४ मे ब्यावर– कुदन भवन मे आपका स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री शोभालाल जी महाराज .

आप मालवा मे नीमच निवासी थे। ओसवाल कटारिया परिवार में जन्म लिया था। वि स १९६६ माघ बदी १ गुरुवार को आत्री मे मुनि श्री हीरालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९७८ माघ बदी १० को कानोड मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री रूपचन्द जी महाराज .

आप मेवाड मे रेलमगरा निवासी थे। ओसवाल मेहता परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९६६ फाल्गुन सुदी ३ सोमवार को रेलमगरा मे मूलचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी ओर १९७२ मे गुरु शिष्य दोनो सवेगी साधु बन गये।

मुनि श्री फौजमल जी महाराज

आप मेवाड मे नेगडिया निवासी थे। ओसवाल मरलेचा परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६७ आषाढ सुदी १५ शनिवार को रावलामाल ग्राम मे मुनि श्री लालचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप घोर तपस्वी थे।

मुनि श्री हंसराज जी महाराज :

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल पारख परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६७ भादवा बदी १३ गुरुवार को ब्यावर मे पूज्य श्रीश्रीलाल जी महाराज सा के मुखारविन्द से डालचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा हुई। १९८० मिगसर बदी ८ को पाली मे स्वर्गवास हुआ। हरकचन्द जी म सा आपके भाई थे।

मुनि श्री पन्नालाल जी म.सा. :

आप मेवाड मे वल्लभनगर निवासी थे। ओसवाल लोढा परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९६७ भादवा बदी १३ गुरुवार को ब्यावर मे मुनि श्री डालचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा सपन्न हुई और २०२४ मे बीकानेर मे स्वर्गवास हुआ था। आप बहुश्रुत, थोकडा मर्मज्ञ थे। माता–ज्ञान बाई, पिता–अंबालालजी थे।

मुनि श्री किशनचन्द जी महाराज :

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल बाफना परिवार मे जन्म लिया था और वि

स १९६७ भादवा बदी १३ गुरुवार को ब्यावर मे डालचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। ओसवाल डोशी परिवार मे आपका जन्म हुआ था। स १९६७ भादवा बदी ६ शुक्रवार को ब्यावर मे डालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा सपन्न हुई।

मुनि श्री मेघराज जी महाराज .

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल साखला परिवार मे जन्म लिया था। स १९६७ भादवा बदी १३ गुरुवार को ब्यावर मे डालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आपके सासारिक पुत्र गुलाबचन्द जी ने आपकी नेश्राय मे भागवती दीक्षा अगीकार की। वि स १९७६ भादवा सुदी १ शनिवार को ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री गुलाबचन्द जी महाराज ·

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। मेघराज जी साखला (मेघ मुनि जी महाराज) के आप सुपुत्र थे। वि स १९६७ भादवा बदी १३ गुरुवार को पिताश्री के साथ ब्यावर मे भागवती दीक्षा अगीकार की। आप मेघमुनि जी महाराज के शिष्य बने।

मुनि श्री चांदमल जी महाराज :

आप मालवा मे जावरा निवासी थे। ओसवाल सचेती परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६७ कार्तिक सुदी ८ गुरुवार को ब्यावर मे डालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा हुई। वृजमोहन जी (हनुमानमल जी) आपके शिष्य बने।

मुनि श्री छगनलाल जी महाराज ·

आप मालवा मे मदसौर निवासी रतनलाल जी दाणी के पुत्र थे। वि स १९६७ मिगसर सुदी १० रविवार को मन्दसौर मे जै दि श्री चौथमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आपके भाई मगनलाल जी ने १९७९ मे आपके पास दीक्षा ली और पिता श्री ने वि स १९८१ चैत्र सुदी १३ को दीक्षा ली। वि १९८१ मे मन्दसौर से आप पडवाई बन गये।

मुनि श्री चपालाल जी महाराज :

आप मालवा मे ताल निवासी थे। ओसवाल बटकद परिवार मे जन्म हुआ था। वि स १९६७ फाल्गुन बदी ४ सोमवार को रतलाम मे जै दि श्री चौथमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा हुई। १९८८ मे पुन दीक्षा हुई। २०१५ के आसपास स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री चांदमल जी महाराज :

आप मेवाड मे भीलवाडा निवासी थे। ओसवाल गान्धी परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६७ फाल्गुन सुदी ४ को जावद मे जै दि श्री चौथमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा हुई। बाद

मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री भैंरूलाल जी महाराज

आप मालवा मे चपलाना– सजीत निवासी थे। नाई गोत्र था। वि स १९६७ मे भीमराज जी म की नेश्राय मे सजीत मे दीक्षा ली।

मुनि श्री गुलाबचन्द जी महाराज ·

आप मालवा मे जावरा निवासी थे। ओसवाल कान्ठेड परिवार मे आपका जन्म हुआ था। वि स १९६८ आषाढ बदी ११ गुरुवार को किस्तूर चन्द जी म की नेश्राय मे जावरा मे दीक्षा ली।

मुनि श्री फौजमल जी महाराज :

आपने वि स १९६८ भादवा सुदी ५ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री हंसराज जी महाराज :

आप मालवा मे रतलाम निवासी थे। ओसवाल गाधी परिवार मे आपने जन्म लिया था। स १९६८ कार्तिक सुदी–१ सोमवार को रतलाम मे कर्मचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। वि स १९७० पौष सुदी ४ को रतलाम मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री नाथूलाल जी महाराज .

आप मालवा मे नीमच निवासी थे। ओसवाल खमेसरा परिवार मे आपका जन्म हुआ था। स १९६८ मिगसर सुदी १५ को हजारीमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री हरकचद जी महाराज :

आपने स १९६९ चैत्र सुदी ३ को दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री सुवालाल जी महाराज :

आप ढूढार प्रान्त मे चाकसु ग्राम के निवासी थे। आपने ओसवाल लूकड परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६९ चैत्र बदी ५ गुरुवार को डालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे ब्यावर मे दीक्षा हुई। एक बार पडवाई बन गये फिर स १९७३ मे पुन दीक्षा ली।

मुनि श्री परमचन्द जी महाराज .

आप जम्बू (पजाब) निवासी थे। क्षत्रिय परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९६९ जेठ सुदी १४ शनिवार को जम्मू मे मिश्रीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री किशनलाल जी महाराज .

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। मेणारिया ब्राह्मण परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९६९ भादवा सुदी ५ शुक्रवार को बडीसादडी मे जैन दिवाकर श्री चौथमल जी महाराज की

नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९८४ मे नगरी मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री बगतावर मल जी महाराज

आप मारवाड मे सोजत निवासी थे। अग्रवाल विजन परिवार मे आपने जन्म लिया था। स १९६९ फाल्गुन सुदी २ गुरुवार को चिचवड (महाराष्ट्र) मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और वि स २०२५ मे भीनासर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री प्यार चन्द जी महाराज :

आप मालवा मे धानासुता निवासी थे। ओसवाल बोथरा परिवार मे जन्म लिया था और १९६९ फाल्गुन सुदी ५ गुरुवार को चित्तौड मे चौथमल जी म सा (जै दि) की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। वि स १९९० मे आपको गणी पद एव २००९ मे उपाध्याय पद से विभूषित किया गया। दक्षिण यात्रा मे आपश्री का गजेन्द्रगढ (कर्नाटक) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री चतर सिंह जी महाराज

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। ओसवाल सिघवी पोखरना परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७० वैशाख सुदी १० को पाली मे अपने काका फूलचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आपके पिता श्री का नाम कल्याणमल जी था। १९८२ मे पुन दीक्षा हुई।

मुनि श्री हरकचन्द जी महाराज .

आप मेवाड मे देवगढ निवासी थे। ओसवाल मारु परिवार मे जन्म हुआ था। स १९७० जेठ सुदी ३ रविवार को घोड नदी (महाराष्ट्र) में पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा सम्पन्न हुई। रामपुरा से पडवाई बन गये।

मुनि श्री मयाचद जी महाराज :

आपने स १९७० आषाढ सुदी २ को दीक्षा ली।

मुनि श्री छोटे लाल जी महाराज .

आप मेवाडं मे निम्बाहेडा निवासी थे। ओसवाल परिवार मे जन्म लिया था और १९७० आषाढ सुदी ६ बुधवार को जम्मू मे पूज्य मन्नालाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री बादरमल जी महाराज ·

आप मारवाड मे बिलाडा निवासी थे। ओसवाल राका परिवार मे जन्म लिया था। १९७० आषाढ सुदी १३ को बुधवार को बिलाडा मे तपस्वी धनराज जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। १९७८ वैशाख सुदी ७ शुक्रवार को कुकडा मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री घासीलाल जी महाराज

आप मारवाड मे ब्यावर निवासी थे। ओसवाल सचेती परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७० पौष बदी १३ गुरुवार को ब्यावर मे चादमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। वि स १९८३ मे बीकानेर मे देवलोक हुए।

मुनि श्री मूलचन्द जी महाराज :

आप मेवाड मे आमेट निवासी थे। ओसवाल रोठागण कोठारी परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७० पौष बदी १३ को जोधपुर मे मुनि श्री हीरालाल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। १९७३ मे अजमेर से पडवाई बन गये।

मुनि श्री गब्बूलाल जी महाराज .

आप मालव प्रात मे कजार्डा निवासी थे। ओसवाल काठेड परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७१ चैत्र बदी ३ गुरुवार को कजार्डा मे डालचन्द जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और बडे पूज्य महाराज की सेवा मे चले गये।

मुनि श्री वृजमोहन जी (हनुमानमल जी) महाराज :

आप पूर्वाचल मे सीसापुर निवासी थे। अग्रवाल (मित्तल) परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७२ मिगसर बदी १ सोमवार को उदयपुर मे चादमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी सवत् १९७३ माघ सुदी ४ गुरुवार को खीचन में स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री पोखरमल जी महाराज :

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। ओसवाल बोथरा परिवार मे जन्म लिया था। स १९७२ फाल्गुन सुदी ६ शुक्रवार को सुजानगढ मे पूज्य श्री श्रीलालजी म सा के मुखारविन्द से चादमल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। स १९७५ कार्तिक सुदी ८ सोमवार को जावद मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री सरदारमल जी महाराज .

आप मेवाड मे आमेट निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७३ कार्तिक सुदी ७ गुरुवार को ब्यावर मे पूज्य श्री श्रीलाल जी म के मुखारविन्द से चादमल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। १९९४ कार्तिक सुदी २ गुरुवार को ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री कपूर चन्द जी महाराज ·

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल पारख परिवार मे जन्म लिया था। स १९७३ कार्तिक सुदी १३ मगलवार को बीकानेर मे पूज्य श्री श्रीलाल जी म के मुखारविन्द से डालचन्द जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। वि स १९९५ मिगसर सुदी ६ सोमवार को बीकानेर मे स्वर्गवास हुआ। मुनि श्री हजारीमल जी म बडे भ्राता थे।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज .

आप पजाब के थे। ओसवाल दुग्गड परिवार मे जन्म लेकर वि स १९७३ मिगसर माह मे पुरासगम मे उदयचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री वृद्धिचन्द जी महाराज .

आप मारवाड मे फलौदी निवासी थे। ओसवाल लोढा परिवार मे जन्म लिया था। स १९७३ फाल्गुन बदी ८ गुरुवार को फलौदी मे गुलाबचद जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ली। १९८२ माघ बदी ३ को सोजत मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री भूरालाल जी महाराज :

आप मेवाड मे बनेडा निवासी थे। ओसवाल पानगडिया परिवार मे जन्म लिया था। १९७४ जेठ सुदी ८ गुरुवार को मुनि श्री डालचन्द जी म की नेश्राय मे दीक्षा ली थी। १९८४ भादवा को ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री हेमराज जी महाराज ·

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल साखला परिवार मे जन्म लिया था। स १९७४ आषाढ बदी ५ को बालेसर मे मुनि श्री डालचन्द जी म की नेश्राय मे दीक्षा ली। १९९६ फाल्गुन सुदी ३ को बीकानेर मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री हजारीमल जी महाराज ·

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल पारख परिवार मे जन्म लिया था। स १९७४ आषाढ बदी ५ शनिवार को बालेसर मे मुनि श्री डालचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप कपूर चन्द जी महाराज सा के सासारिक भाई थे। स १९९७ कार्तिक बदी ४ बुधवार को ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री हरकचन्द जी महाराज :

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल पारख परिवार मे जन्म लिया था। स १९७४ आषाढ सुदी ८ शनिवार को बालेसर मे ही डालचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। हसराज जी महाराज आपके भाई थे।

मुनि श्री मुलतानमल जी महाराज

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल चौपडा परिवार मे जन्म लिया था। स १९७४ आषाढ सुदी १० मगलवार को बालेसर मे डालचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। १९९१ पौष सुदी ६ को बीकानेर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री हमीरमल जी महराज .

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल पारख परिवार मे जन्म लिया था। १९७४ आषाढ सुदी ८ शनिवार को बालेसर मे डालचन्द जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री मूलचन्द जी महाराज .

आप मेवाड मे आमेट निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे जन्म लिया था। पहले १९७० मे दीक्षा ग्रहण की। १९७३ मे अजमेर से पडवाई बन गये। पुन १९७४ वैशाख सुदी ४ को जोधपुर मे हीरालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ली और १९७४ माघ सुदी २ को जोधपुर मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री शेषमल जी महाराज :

आप मेवाड मे बरार निवासी थे। ओसवाल पीतलिया परिवार मे जन्म लिया था। पहले आपने तेरापथ सम्प्रदाय मे आचार्य श्री कालूराम जी म के पास दीक्षा ली थी बाद मे १९७४ आसोज बदी ३ को दिल्ली मे देवीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री भीमराज जी महाराज

आप मारवाड मे देशनोक निवासी थे। नवलचन्द जी साड की धर्मपत्नी अमानी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। वि स १९७४ मिगसर बदी ३ शुक्रवार को देशनोक मे मोडीराम जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। स १९७५ जेठ बदी ६ शुक्रवार को जावद मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री नन्दलाल जी महाराज :

आप मालवा मे सजीत निवासी थे। ओसवाल भागोरा परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७४ मिगसर सुदी ३ शुक्रवार को रामपुरा मे गब्बूलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री किस्तूर चन्द जी महाराज

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल सिगी परिवार मे जन्म लिया था। स १९७५ चैत्र सुदी १३ सोमवार को जावद मे छगनलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। १९७९ भादवा बदी ६ को बीकानेर मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री सूरजमल जी महाराज

आप महाराष्ट्र मे बडलोचगुली निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे जन्म लिया था। स १९७५ भादवा सुदी ७ गुरुवार को हिवडा खानदेश मे पूज्य जवाहरलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री चंदुमल जी महाराज :

आप महाराष्ट्र मे बडलोच गुली निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे जन्म लिया था। सूरजमल जी महाराज आपके भाई थे। स १९७५ भादवा सुदी ५ को राधालाल जी महाराज की नेश्राय मे रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की, पडवाई बन गये।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज :

आप गुजरात मे कलोल निवासी थे। कुलमीलेवा परिवार मे जन्म लिया था। स १९७५ सावन बदी १ को हिवडा (महाराष्ट्र) मे पन्नालालजी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री सूरजमल जी महाराज :

आप मालवा मे मन्दसौर निवासी थे। पोरवाड पलाणा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। स १९७६ चैत्र सुदी १ मगलवार को रतलाम मे कन्हैयालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बीकानेर मे स २०२९ माघ बदी ७ को स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री चौथमल जी महाराज .

आप जयपुर निवासी थे। खडेलवाल (कुलवाल) परिवार मे जन्म लिया था। स १९७६ आषाढ सुदी १० सोमवार को जावरा मे गब्बूलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री तेजमल जी महाराज .

आप महाराष्ट्र मे भीमगाव निवासी थे। ओसवाल परिवार मे जन्म लिया था। स१९७६ कार्तिक बदी १३ मगलवार को चिचवड मे घासीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री सागरमल जी महराज

आप मालवा मे रतलाम निवासी थे। ताराचन्द जी राका की धर्मपत्नी जडाव बाई की कुक्षि से स १९५८ वैशाख बदी १५ को जन्म लिया। सत्सगति से आपने १९७६ कार्तिक बदी १३ मगलवार को प्रतापगढ मे अपने पिता श्री ताराचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। वृद्धावस्था मे कपासन स्थिरवास रहे और वि स २०३० पौष बदी १ को स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री तिलोकचन्द जी महाराज :

आप रिठोडा पजाब निवासी थे। अग्रवाल गर्ग परिवार मे जन्म लिया था। स १९७७ वैशाख सुदी ७ को फलौदी मे पूज्य जवाहरलाल जी म सा के नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। वि स १९८२ आसोज सुदी ३ को जलगाव मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री राजमल जी महाराज .

आप मारवाड मे कालू निवासी थे। श्रावगी पाटनी परिवार मे आपने जन्म लिया था ओर वि स १९७७ भादवा बदी ११ गुरुवार को ब्यावर मे धूलचद जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और वि स १९८६ में रतलाम मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री सरदारमल जी महाराज :

आप मेवाड मे ऊटाला (वल्लभनगर) निवासी थे और भादसोडा मे रहते थे। वि स १९७७ आसोज सुदी १० शुक्रवार को बीकानेर मे अपने भाई श्री पन्नालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और वि स १९९६ आषाढ बद ९ को पीपलिया कला (मारवाड) मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री सुन्दरलाल जी महाराज :

आप शेखावटी अलवर निवासी थे। ओसवाल सचेती परिवार मे जन्म लिया था और वि स १९७७ मिगसर सुदी २ रविवार को कुचेरा मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और वि स १९९३ की आसोज सुदी ९, गुरुवार को बालोतरा मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री हणुतमल जी महाराज :

आप मारवाड मे कुचेरा निवासी थे। ओसवाल भडारी निमावत परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७७ के मिगसर सुदी २ रविवार को कुचेरा मे पूज्य श्री जवाहिरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और वि स १९७८ की पौष बदी १३ बुधवार को जयपुर मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री उत्तमचन्द जी महाराज :

आप महाराष्ट्र मे टाकली खडाकी निवासी थे। आपने ओसवाल गाधी परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७८ की सावन सुदी १५ को रतलाम मे पूज्य श्री शेषमल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और वि स १९७८ असोज सुदी २ को रतलाम मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री भीमराज जी महाराज ·

आप महाराष्ट्र के कूड गाव निवासी थे। आपश्री ने गुगलिया परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९७९ की जेठ सुदी १ शुक्रवार को सतारा (महाराष्ट्र) मे अपने भतीजे श्री सिरेमल जी महाराज के साथ पूज्य श्री जवाहिरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और वि स १९८४ वैशाख बदी ८ रविवार को जावद मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री सिरेमल जी महाराज

आप महाराष्ट्र मे कूडगाव निवासी थे। आपश्री ने गुगलिया परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७९ की जेठ सुदी १ शुक्रवार को सतारा (महाराष्ट्र) मे अपने काकाजी श्री भीमराज जी

महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आपकी मातेश्वरी ने पहले ही ऋषि सप्रदाय मे दीक्षा ग्रहण कर ली थी। आप अच्छे विद्वान् एव वक्ता थे परन्तु बाद मे सघ से पृथक् हो गये। वि स २०२४ मे पूना (महाराष्ट्र) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री देवीलाल जी महराज :

आप मेवाड मे गगापुर निवासी थे। ओसवाल पिछोलिया परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९७९ की जेठ सुदी ५ गुरुवार को अजमेर (राज) मे सरदारमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे मिथ्यात्व मोहोदय से सरदारमल जी आदि के साथ सघ से निष्कासित कर दिये गये और फिर सवेगी बन गये।

मुनि श्री जीवनमल जी महाराज :

आप महाराष्ट्र मे बम्बई निवासी थे। श्रीमाल देसाई परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९७९ मिगसर सुदी १५ को पूज्य श्री जवाहिरलाल जी म सा की नेश्राय में दीक्षा ग्रहण की और वि स १९९७ की भादवा सुदी ७ को बीकानेर मे स्वर्गवासी हुए।

मुनि श्री जिनदास जी महाराज .

आप मेवाड मे उदयपुर निवासी थे। ओसवाल सरूपरिया मे जन्म लेकर वि स १९७९ मि १५ को पूना (महाराष्ट्र) मे पूज्य जवाहिरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और वि स १९८७ मिगसर बदी ११ को भीनासर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज

आपने उज्जैन (मालवा) निवासी श्री कल्याणमल जी बोहरा (ओसवाल–दशा) के यहा जन्म ग्रहण किया था और वि स १९८० वैशाख सुदी ७ को बीकानेर मे अपने पिता श्री कल्याणमल जी बोहरा के साथ पूज्य श्री जवाहिरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

श्री कल्याणमुनि जी महाराज .

आप उज्जैन निवासी थे। बोहरा (१०) ओसवाल परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८० वैशाख सुदी ७ को बीकानेर मे अपने पुत्र चुन्नीलाल जी के साथ पूज्य श्री जवाहिरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री केशरीमल जी महाराज :

आप मेवाड मे छोटीसादडी निवासी थे। आपश्री ने ओसवाल सिगी परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८० कार्तिक बदी ७ को छगनलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और १९८७ आसोज सुदी ७ को कजार्डा मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री जेठमल जी महाराज

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। ओसवाल सखलेचा परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९८० कार्तिक सुदी ६ को सोजत मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप बहुत प्रतिभावान सत थे। सघ को आप से वडी आशाए थी लेकिन अकस्मात् १९९३ पौष सुदी ८ को तिवरी (मारवाड) मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री वीरबल जी महाराज .

आप पजाब निवासी थे। अग्रवाल गर्ग परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८१ मिगसर सुदी ५ रविवार को जलगाव (महाराष्ट्र) मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। किन्तु कर्मोदय से १९८३ मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज .

आप मारवाड मे बालोतरा निवासी थे। ओसवाल तातेड परिवार मे आपने जन्म लिया था। वि स १९८१ मिगसर बदी ५ को जलगाव मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९८३ की आषाढ सुदी पक्ष मे बीकानेर मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री पूनमचन्द जी महाराज

आप मूल मे जुड – मारवाड निवासी थे, बाद मे जालना (महाराष्ट्र) मे रहने लग गये थे। आप ने ओसवाल बोहरा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८१ माघ सुदी ५ गुरुवार को जलगाव मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और १९८५ की पौष सुदी ४ रविवार को चुरु मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री समीरमल जी महाराज .

आप मेवाड मे नबाव निम्बाहेडा निवासी थे। ओसवाल सघवी परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९८१ माघ सुदी ५ को अपने माताजी गट्टु कवर जी के साथ पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप वीरलाल जैन समाज के सस्थापक थे लेकिन आरभ परिग्रह के प्रपच व नामबरी की भावना के कारण सघ से निष्कासित कर दिये गये और बाद मे गुजरात मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री बस्तीमल जी महाराज .

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। ओसवाल डागा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८१ चैत्र बदी २ गुरुवार को बलवाडी–खानदेश मे तपस्वी श्री धूलचद जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी।

मुनि श्री सुगालचन्द जी महाराज

आप मारवाड मे हाजी जैतारण निवासी थे। ओसवाल मकाणा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८३ की भादवा सुदी ६ सोमवार को ब्यावर मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री प्रतापमलजी महाराज

आप मारवाड मे पादरु निवासी थे। ओसवाल बालर परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८४ की माघ सुदी ५ शुक्रवार को पादरु मे ही पूज्य श्री जवाहरलाल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। स २००२ दूसरा चेत सुदी १४ को बीकानेर मे स्वर्गवासी हुए।

मुनि श्री जवरीमल जी महाराज

आप मारवाड मे बालेसर निवासी थे। ओसवाल पारख परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८४ चैत्र बदी ३ शुक्रवार को बालेसर मे श्री जवाहराचार्य की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आप प्रकाड विद्वान् थे लेकिन अशुभ कर्मोदय से भयकर बीमारी के उपचारार्थ पडवाई बन गये।

मुनि श्री केशरीमल जी महाराज .

आप मारवाड मे ब्यावर निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८५ जेठ बदी १४ शुक्रवार को बीकानेर मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की लेकिन बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री अम्बालाल जी महाराज .

आप मेवाड मे बडीसादडी निवासी थे। ओसवाल दसोरा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८५ मिगसर बदी ५ शनिवार को बडीसादडी मे ही पन्नालाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और उन्ही के साथ मिथ्यात्वोदय से सघ निष्कासित कर दिये गये।

मुनि श्री भैरुलाल जी महाराज :

आप सुगरवाड (महाराष्ट्र) निवासी थे। ओसवाल कटारिया परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९८५ फाल्गुन सुदी मे कुडगाव मे उदयचन्द जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री हमीरमल जी महाराज .

आप मारवाड मे गगाशहर निवासी थे। ओसवाल दुग्गड परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९८५ फागण बदी ५ रविवार को चुरू मे तेरहपथी धर्म सघ का परित्याग करके आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की लेकिन सघ की कठोर आचार सहिता देखकर चौदस के दिन चले गये।

मुनि श्री रेखचन्द जी महाराज :

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। ओसवाल फलोदिया परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८५ फागण बदी ११ रविवार को चुरू मे पूज्य श्री जवाहर की नेश्राय मे दीक्षा ली।

मुनि श्री अर्जुनलाल जी महाराज

आप मेवाड मे बबोरा निवासी थे। ओसवाल मुरडिया परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८६ मिगसर सुदी– ५ शुक्रवार को उदयपुर मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षित हुए। लेकिन अबालाल जी आदि के साथ मिथ्यात्वोदय के कारण सघ से निष्कासित कर दिये। बाद मे वे सवेगी बन गये।

मुनि श्री केशरीमल जी महाराज :

आप मारवाड मे खीचन निवासी थे। अग्रवाल डाडा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८६ फागण बाद १२ को नागौर मे, पुन १९८७ मिगसर सुदी २ को धनोप मे मुनि श्री मुलतानमल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की फिर पडवाई बन गये।

मुनि श्री कन्हैयालाल जी महाराज ·

आप मेवाड मे गुडली निवासी थे। ओसवाल बागरेचा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८८ वैशाख सुदी ३ मगलवार को घाणेराव–सादडी मे घासीलाल जी महाराज की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और उन्हीं के साथ सघ से पृथक् हो गये। फिर बीमारी के कारण सघ के सत सतिया जी म ने आचार्य श्री की आज्ञासे सेवा की वि स २०४५ के पोष माह मे एक्सीडेट होने से बबई मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री मीर सिंह जी महाराज .

आप गिरवड (जमुना पार) निवासी थे। अग्रवाल गर्ग परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८८ की पौष सुदी १२ को अलाय मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी और वि स १९९२ के पोष महीने मे गगाशहर मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री केसुलाल जी महाराज ·

आप उदयपुर के पास नाई के निवासी थे। ओसवाल बाफना परिवार मे जन्म ग्रहण किया था और १९८९ भादवा सुदी ५ को गोगुदा मे मनोहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। बाद मे आचार्य श्री गणेशीलाल जी म की नेश्राय मे आ गये। बाद मे वि स २०२० मे क्षेत्रीय ममत्व भाव के कारण सघ निष्कासित कर दिये गये जो अब तक एकाकी ही उदयपुर परिसर मे विचरण कर रहे है।

मुनि श्री चुन्नीलाल जी महाराज :

आप महाराष्ट्र मे तेलकूड निवासी थे। ओसवाल गुगलिया परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९८९ की कार्तिक सुदी १२, बुधवार को गोदिया (महाराष्ट्र) मे पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। बाद मे सिरेमल जी म के साथ सघ से पृथक् हो गये।

मुनि श्री गोकुल चन्द जी महाराज :

आप भी महाराष्ट्र मे तेलकुड के गुगलिया परिवार मे जन्मे थे। वि स १९८९ की कार्तिक सुदी १२ को अपने भ्राता चुन्नीलाल जी के साथ ही गोदिया (महाराष्ट्र) मे दीक्षा ग्रहण की और उन्हीं के साथ पृथक् होकर पडवाई बने।

मुनि श्री मंगलचन्द जी महाराज

आप मेवाड मे झाडोल निवासी थे। ओसवाल सीनोदा परिवार मे जन्म लिया था। सवत् १९८९ मिगसर सुदी ४ गुरुवार को देवास (म प्र) मे घासीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षित हुए, उन्ही के साथ सघ से पृथक् हुए।

मुनि श्री मागीलाल जी महाराज

आप मेवाड मे देवरिया ग्राम के कास्टिया परिवार मे जन्मे थे। वि स १९८९ माघ सुदी १० रविवार को नाथद्वारा मे सूरजमल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। पुन १९९७ भादवा बदी १० को रतलाम मे दीक्षा हुई।

मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज :

आप मलकापुर (महाराष्ट्र) मे कोटेचा परिवार मे जन्मे थे। वि स १९८९ की माघ सुदी १० को जैतारण मे उत्कृष्ट वैराग्य भाव से पत्नी, पुत्र, पौत्रादि विशाल परिवार का परित्याग करके श्री जवाहराचार्य की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। सवत् १९८४ की साल युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के साथ सरदार चातुर्मासार्थ पधार रहे थे। बीच मे श्री डूगरगढ से १ मील दूर ही पिपासा–परिषह से आषाढ सुदी ७ को स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री फूलचन्द जी महाराज :

आप मेवाड के बूड गाव मे छगनलाल जी रातडिया की धर्मपत्नी हगामी बाई की कुक्षि मे जन्मे। वि स १९९१ कार्तिक बदी ५ रविवार को जवाहराचार्य की नेश्राय मे कपासन मे दीक्षा ग्रहण की। कर्म योग से दो बार मस्तिष्क विकार के कारण पडवाई बन गये और उदयपुर (मेवाड) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री डूगरसिह जी महाराज .

आप जगल देश के कुराहवाल निवासी थे। आपने ओसवाल छाजेड परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९९१ मिगसर बदी ३ रविवार को नाथद्वारा मे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की लेकिन बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री रतनलाल जी महाराज

आपने मालवा मे महागढ निवासी ओसवाल वीरानी परिवार मे जन्म लिया था। वि स १९९२ वैशाख सुदी ७ को यवुाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे महागढ मे ही दीक्षा ग्रहण की थी। वि स १९९७ पौष सुदी ११ को जैतारण मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री करणीदान जी महाराज :

आप मारवाड मे गगाशहर निवासी थे। ओसवाल सोनावत परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९९३ आषाढ सुदी १० को बीकानेर मे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप सेवाभावी, रसनेन्द्रिय– विजेता और गुरु आज्ञा मे पूर्ण समर्पित महापुरुष थे। वि स २०२७ मे गगाशहर मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री सुदरलालजी महाराज .

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। ओसवाल मुकीम परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९९५ जेठ सुदी ५ को बीकानेर मे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे सघ से पृथक् हो गये।

मुनि श्री चौथमल जी महाराज .

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। आपने वि स १९९६ आषाढ सुदी ३ को बीकानेर मे ही पुत्र पुत्रियो की ममता मारकर उत्कृष्ट वैराग्य भाव से अपनी धर्मपत्नी राजकवर जी के साथ युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और बीकानेर मे वि स २००५ आषाढ बदी ८ को स्वर्गस्थ हुए।

पूज्य श्री नानालाल जी महाराज :

आप मेवाड मे कपासन के पास दाता के निवासी थे। श्रीमान् मोडीलाल जी पोखरना की धर्मपत्नी सिणगार बाई की कुक्षि से वि स १९७७ जेठ सुदी २ को जन्म ग्रहण किया था। यौवनवय मे वि स १९९६ पौष सुदी ८ को कपासन मे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। वि स २०१९ आसोज सुदी २ को युवाचार्य पद एव २०१९ माघ बदी २ को आचार्य पद प्राप्त किया। विशेष जीवन–परिचय मे देखिए।

मुनि श्री मगनलाल जी महाराज ·

आप मेवाड मे निम्बाहेडा निवासी थे। ओसवाल चौपडा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९९६ माघ सुदी ११ सोमवार को जावद मे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। अनुशासन–हीनता के कारण सघ से निष्कासित कर दिये गये।

मुनि श्री तपसीलाल जी महाराज :

आप जोधपुर निवासी थे। आपका डागा परिवार मे जन्म हुआ था। वि स १९९६ की माघ सुदी ११ को जावद मे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री शम्भूलालजी महाराज

आप मारवाड मे जोधपुर निवासी थे। ओसवाल परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९९६ चैत्र सुदी मे रेखचन्द जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। बाद मे सघ से निष्कासित कर दिये गये।

मुनि श्री नारायणलाल जी महाराज :

आप फलौदी निवासी ओसवाल कुल के थे। आपने वि स १९९७ के आसोज मे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा से दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री सुमेरचंद जी महाराज .

आप थली प्रात मे सरदारशहर निवासी थे। ओसवाल सेठिया परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९९८ मिगसर सुदी ५ रविवार को सरदारशहर मे ही युवाचार्य श्री गणेशीलालजी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आप अच्छे कवि एव व्याख्याता थे पर स्वच्छन्द वृत्ति के कारण सघ से निष्कासित कर दिये। गौहाटी (आसाम) मे स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री हुक्मीचन्द जी महाराज ·

आप मालव प्रान्त मे बदनावर निवासी थे। ओसवाल गादिया परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९९८ मिगसर सुदी ५ रविवार को सरदार शहर मे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। बाद मे कर्म योग से पडवाई बन गये।

मुनि श्री ईश्वरचन्द जी महाराज .

आप मारवाड मे देशनोक निवासी थे। वि स १९७२ चैत्र सुदी ३ को जोरावरमल जी सुराणा की धर्मपत्नी हरक बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था। वि स १९९९ मिगसर बदी ४ को भीनासर मे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आप घोर तपस्वी एव महान त्यागी है।

मुनि श्री नेमीचन्द जी महाराज

आप गगाशहर निवासी थे। ओसवाल सेठिया परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स १९९९ मिगसर बदी ४ को भीनासर मे युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप अच्छे लेखक व विद्वान् है लेकिन स्वच्छद विचारो के कारण सघ से पृथक् है।

मुनि श्री कुन्दनमल जी महाराज

आप मारवाड मे गगाशहर निवासी थे। ओसवाल सुराणा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। आपने वि स २००० पौष सुदी ३ को युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की और कई वर्ष सयम पालन कर स्वर्ग पधार गये। आप करणीदान जी म सा के सासारिक सालाजी थे।

मुनि श्री आईदान जी महाराज .

आप मारवाड मे देशनोक निवासी थे। ओसवाल धाडेवा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स २००१ जेठ बदी ११ को आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आप अच्छे लेखक एव विद्वान थे लेकिन असयमित एव स्वच्छन्द प्रवृत्तियो के कारण सघ से निष्कासित कर दिये। अब वीरायतन मे समदर्शीजी के नाम से कार्यरत हैं।

मुनि श्री गोपीलाल जी महाराज .

आप ढूढार प्रात मे सवाई माधोपुर निवासी थे। भूरालाल जी पोरवाल की धर्मपत्नी कस्तूर बाई की कुक्षि से वि स १९७० को जन्म ग्रहण किया था। यौवनवय मे अलीगढ (रामपुरा) निवासी मोतीलाल जी पोरवाल की पुत्री कचन बाई से विवाह किया। बाद मे दोनो का मन ससार से विरक्त हो गया तब वि स २००१ वैशाख सुदी २ को ब्यावर मे महासती श्री राजकवर जी (खेताजी वाले) की नेश्राय मे कचन बाई को दीक्षा दिलाकर वि स २००१ की कार्तिक बदी ९ को सरदारशहर मे आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आप मधुर गायक एव अच्छे व्याख्याता थे। सवत् २०३१ मिगसर बदी १० को बीकानेर मे आपका स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री हनुमानमल जी महाराज .

आप मारवाड मे गगाशहर निवासी थे। ओसवाल सिपाणी परिवार मे आपने जन्म ग्रहण किया था। वि स २००२ वैशाख सुदी ६ को गोगोलाव मे आचार्य श्री गणेशीलालजी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। वि स २०१३ मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री इन्द्रचन्द जी महाराज :

आप मारवाड मे माडपुरा निवासी थे। श्रीमान रूपचन्द जी चोरडिया की धर्मपत्नी वरजु बाई की

कुक्षि से वि सवत् १९७६ जेठ सुदी ११ को जन्म ग्रहण किया था। वि स २००२ वैशाख सुदी ६ को गोगोलाव मे आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। कई वर्षो से आप बीकानेर मे विराजमान थे। आप कर्मठ सेवाभावी व धायमातृ पदालकृत थे।

मुनि श्री तोलाराम जी महाराज

आप गगाशहर निवासी थे। ओसवाल सेठिया परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स २००४ कार्तिक बदी ७ को बडीसादडी मे आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे आपकी माताजी प्रेमकवर जी और बहिन भवर कवर जी ने भी नन्द कवर जी की सप्रदाय मे दीक्षा ग्रहण की। लेकिन बाद मे सुमेर मुनिजी आदि के साथ आप मुनिश्री को भी सघ से निष्कासित कर दिया गया था।

मुनि श्री कवरलाल जी महाराज .

आप मारवाड मे मथानिया निवासी थे। श्री जुगराज जी सचेती की धर्मपत्नी रमकू बाई की कुक्षि से वि स १९८१ मे जन्म लिया था। वि स २००२ फागण सुदी ५ को अपनी धर्मपत्नी कस्तूराजी के साथ समर्थमल जी म की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। बाद मे प्रकृति के नहीं मिलने के कारण आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे आ गये। आप घोर तपस्वी थे परन्तु स्वच्छद प्रकृति के कारण यहा से भी निष्कासित करना पडा।

मुनि श्री सुमन कुमार जी महाराज :

आपने वि स २०१० मिगसर सुदी ३ को जोधपुर मे आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। विशेष परिचय अज्ञात।

मुनि श्री घेवरचद जी महाराज .

आप मारवाड मे खीचन निवासी थे। ओसवाल गोलेछा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। वि स २०१० मिगसर सुदी ३ को महामदिर जोधपुर मे आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप कुशल सेवा मूर्ति थे। गुर्वाज्ञा से आपने पूर्ण बाबा की जोधपुर मे व बीकानेर विराजित सतो की अतिम समय तक सेवा की थी। आखिर बीकानेर मे वि स २०२४ मे स्वर्गवास हो गया।

मुनि श्री बाबूलाल जी महाराज

आप ब्यावर–खरवा निवासी थे। श्री कानमल जी बोगावत आपके पिताजी थे। वि स २०१६ कार्तिक बदी ८ को आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नेश्राय मे उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। लेकिन प्रकृति की उग्रता के कारण वि स २०२० मे सघ से निष्कासित कर दिये गये। सघ बाहर होकर महाराष्ट्र मे विचरण कर रहे है।

मुनि श्री सेवन्त कुमार जी महाराज

आप मेवाड मे कन्नौज निवासी थे। देवीलाल जी ढाबरिया (ओसवाल) की धर्मपत्नी सुदर बाई की कुक्षि से स २००० कार्तिक सुदी १५ को जन्म ग्रहण किया था। योवनवय मे सत्सगत से वेराग्य भाव जागृत हुआ और स २०१९ कार्तिक सुदी ३ को उदयपुर मे युवाचार्य श्री नानेश के चरणो मे भागवती दीक्षा अगीकार की। आप तपस्वी है। जैन सिद्धान्त रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हे।

मुनि श्री वृद्धिचन्द जी महाराज :

आप मालवा मे मूल सजीत (वर्तमान मे पीपल्यामडी) निवासी थे। केशरीमल जी पामेचा (ओसवाल) की धर्मपत्नी कस्तूर बाई की कुक्षि से स १९५० मे जन्म पाया। आपका विवाह टाकुबाई के साथ हुआ। पुत्र पौत्र से घर भरा हुआ था। पुत्र (अमरचन्द जी) एव पुत्रवधू (कस्तूर बाई) के मन मे वैराग्य भाव हो जाने से दीक्षा की अनुमति लेने हेतु आपके पास मे आये। उसी समय वृद्धिचन्द जी को गुस्सा आया– "तू दीक्षा लेकर मुझे झुकायेगा ?" पडौस मे खडे व्यक्तियो ने कहा– दीक्षा लेगा, उसको झुकना पडेगा। नहीं झुकना है तो आप दीक्षा ले लो। इसी बात की बात मे स २०१९ माघ सुदी २ को डबोक मे दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के बाद लम्बे विहार किये। मासखमण से भी ऊपर की तपस्या की। छत्तीसगढ प्रवास मे आचार्य श्री के साथ विचरते–२ दुर्ग के पास चेरोदा ग्राम मे स २०२३ जेठ सुदी १० को स्वर्ग पधारे। आपके परिवार से अनेक भव्य आत्माओ ने दीक्षा ग्रहण की है।

मुनि श्री शांतिलाल जी महाराज :

आप मेवाड मे भदेसर निवासी थे। डालचन्द जी सुरपुरिया की धर्मपत्नी लहरबाई की कुक्षि से स २००३ जेठ बदी १२ को जन्म ग्रहण किया। सत्सगत से वैराग्य भाव जागृत हुआ और स २०१९ फाल्गुन सुदी १ तदनुसार २४ फरवरी १९६३ को भदेसर मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। आप उग्रविहारी एव तपस्वी रत्न हैं। जैन सिद्धात रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण हैं। ओजस्वी प्रवक्ता एव मधुर कवि है। झमकुकवर जी म सासारिक काकीजी हैं।

मुनि श्री कवरलाल जी महाराज ·

आप मेवाड मे निकुभ निवासी थे। तोरीलाल जी सहलोत की धर्मपत्नी दाखा बाई की कोख से वि स १९९२ पौष सुदी १४ को जन्म लिया था। बडीसादडी मे व्यवसाय रत थे। स २०१९ फाल्गुन सुदी ५ को बडीसादडी मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। आप आगम व्याख्याता एव निर्भीक वक्ता है। स्व भूपेन्द्र मुनि जी महाराज आपके भतीजे थे। बहिन भाणेज भी धर्म सघ मे दीक्षित है।

मुनि श्री हरकचन्द जी महाराज

आप मेवाड मे लसडावन निवासी थे। ओसवाल कोठारी परिवार मे जन्म ग्रहण किया था।

वि स २०१९ फाल्गुन मास मे बडीसादडी मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। अल्पकाल के बाद पडवाई बन गये।

मुनि श्री अमरचन्द जी महाराज ·

आप मालवा मे सजीत निवासी थे। वृद्धिचन्द जी पामेचा की धर्मपत्नी टाकुबाई की कुक्षि से वि स १९८६ मे जन्म ग्रहण किया। बाद मे सपरिवार पीपल्यामडी रहने लग गये। पन्नालाल जी मेहता की सुपुत्री कस्तूर बाई के साथ पाणिग्रहण हुआ। दो पुत्र एव एक पुत्री की आपको प्राप्ति हुई। सत्सगति से आपको उदासीनता आ गई। पुत्र पुत्री और परिवार के मोह को छोडकर धर्मपत्नी सहित आचार्य श्री नानेश के चरणो मे स २०२० वैशाख सुदी ३ (अक्षय तृतीया) को दीक्षा अगीकार की। आदर्श त्यागी के साथ–२ आप घोर तपस्वी है। ६१ से ऊपर तक की आप तपस्या कर चुके है। १ से ५१ उपवास तक आपने लडी पूरी की है। आपकी पुत्री चन्दनबाला ने भी बाद मे सयम स्वीकार किया। आपके परिवार से १५ आत्माएँ धर्म सघ मे दीक्षित है।

मुनि श्री माणकचन्द जी महाराज ·

आपने स २०२० मे दीक्षा ग्रहण की। बाद मे पडवाई बन गये।

मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज ·

आप महाराष्ट्र मे अमलनेर निवासी थे। रामचन्द्र जी बैद (मूथा) की धर्मपत्नी लाडबाई की कुक्षि से स १९९० कार्तिक सुदी ५ को जन्म लिया था। स २०१४ भादवा सुदी १३ को लोणार (महाराष्ट्र) मे खद्दरधारी गणेशीलाल जी महाराज के शिष्य मिश्रीलाल जी महाराज के पास दीक्षा ग्रहण की। प्रकृति का मेल नहीं खाने से आप एकाकी विचरने लगे। आचार्य श्री नानेश का जब महाराष्ट्र मे पधारना हुआ तब श्रावको के सहयोग से आप आचार्य श्री की सेवा मे आए। अल्पकालीन परीक्षा देने के बाद दीक्षा छेद लेकर आचार्य श्री की आज्ञा मे विचरने लगे। आप तपस्वी सत हैं। भद्रिक मना हैं। अच्छे गायक हैं। धर्म सघ को पाकर आप धन्य–धन्य है।

मुनि श्री फूलचद जी महाराज .

आप मेवाड मे बूड निवासी थे। छगनलाल जी रातडिया (मूथा) की धर्मपत्नी हगामी वाई की कुक्षि से सवत् १९६२ मे जन्म लिया। आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ली। अशुभ कर्म योग से वेदनीय कर्म के उदय से पडवाई बन गये।

मुनि श्री सम्पतराज जी महाराज

आप मध्यप्रदेश मे रायपुर निवासी थे। नथमल जी धाडीवाल की धर्मपत्नी पानबाई की कुक्षि से सवत् १९७८ कार्तिक सुदी ८ को जन्म लिया। यौवनवय मे छोटूमल जी कोठारी की सुपुत्री रभावाई

के साथ आपका विवाह हुआ। पुत्र पुत्रियो से घर भरा हुआ था। छत्तीसगढ प्रात के आप अध्यक्ष एव रायपुर सघ के मत्री पद पर थे। ससार को असार जानकर आपने आचार्य श्री नानेश के चरणो मे सम्वत् २०२३ आसोज सुदी ४ को राजनादगाव मे दीक्षा ग्रहण की। आप आदर्श त्यागी है। तपस्वी हैं। जैन सिद्धात रत्नाकर उत्तीर्ण कर चुके हैं। आपकी पढने पढाने की बहुत रुचि हे। विदुषी महासती सूरजकवर जी म सा ससार पक्षीय बहिन थी तथा साध्वी निरूपमा श्रीजी ससार पक्षीय धर्मपत्नी हैं।

मुनि श्री प्रेमचन्द जी महाराज .

आप मालवा मे भोपाल निवासी थे। मगलचन्द जी कक्कड की धर्मपत्नी छोटी बाई की कुक्षि से सवत् २००१ आसोज सुदी १० को जन्म ग्रहण किया। आप यौवन वय मे दलाली का काम करते थे। ससार को असार समझकर आपने स २०२३ आसोज सुदी ४ को राजनादगाव मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे भागवती दीक्षा अगीकार की। आप तपस्वीरत्न हैं। जैन सिद्धान्त रत्नाकार उत्तीर्ण हैं। प्रखर प्रतिभा धनी हैं।

मुनि श्री पारस कुमार जी महाराज .

आप मालवा मे दलौदा निवासी थे। भवरलाल जी भडारी की धर्मपत्नी मोहनबाई की कुक्षि से आपने सवत् २००६ पौष सुदी १० को जन्म ग्रहण किया। ससार की नश्वरता क्षण भगुरता जानकर आपने आचार्य श्री नानेश के चरणो मे सवत् २०२३ आसोज सुदी ४ को राजनादगाव मे भागवती दीक्षा अगीकार की। आप मधुर व्याख्यानी हैं एव उग्र विहारी है। आपने जैन सिद्धातशास्त्री उत्तीर्ण की है। महासती श्री राजमती जी म सा आपकी ससार पक्षीय बहिन है।

मुनि श्री धर्मेश प्रकाश जी महाराज :

आप मगरा प्रात मे गोदाजी गाव के निवासी थे। अनराज जी धोका की धर्मपत्नी पानी बाई की कुक्षि से सवत् १९९८ भादवा सुदी ६ को जन्म ग्रहण किया। विद्याध्ययन व व्यावसायिक क्षेत्र– बैगलोर मद्रास रहा। प्रथम शादी होने के बाद धर्मपत्नी का वियोग हो जाने से बैगलोर निवासी हमीरमलजी सेठिया की सुपुत्री जयश्री बाई के साथ दूसरी बार शादी हुई। शुभ सयोग से दम्पति के मन मे वैराग्य भाव जागृत हुआ और घर धन सबका परित्याग कर स २०२३ फाल्गुन बदी ९ को रायपुर (म प्र) मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षित हुए। आप कवि एव मधुर व्याख्यानी है। तपस्वी एव उग्र विहारी है। जैन सिद्धात शास्त्री उत्तीर्ण हैं।

मुनि श्री सतोष कुमार जी महाराज ·

आप केसिगा (उडीसा) तथा मूल से टोहानामडी (पजाब) निवासी थे। ज्योति प्रसाद जी गर्ग (अग्रवाल) की धर्मपत्नी परमेश्वरी देवी की कुक्षि से स १९७१ भादवा सुदी ११ को जन्म ग्रहण किया।

स २०२५ मिगसर सुदी १५ को येवतमाल (महाराष्ट्र) मे आपने आचार्य श्री नानेश के श्री चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। महाराष्ट्र से विचरण करते–करते मध्यप्रदेश राजस्थान मे सतो के साथ पधारे। धर्मेश मुनि जी महाराज के साथ ब्यावर से भीलवाडा की दिशा मे (आचार्य श्री भीलवाडा विराज रहे थे) विहार चल रहा था। भीलवाडा के आर्जिया फॉर्म के निकट तबीयत बिगड जाने से सवत् २०२७ वैशाख सुदी १५ को स्वर्गवासी हुए। शवयात्रा भीलवाडा सघ ने भीलवाडा मे निकाली।

मुनि श्री संतोष कुमार जी महाराज

आप महाराष्ट्र मे अमलनेर निवासी थे। रामचन्द्र जी बैद (मूथा) की धर्मपत्नी लाडबाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम ताराचन्द था। आचार्य श्री नानेश के चरणो मे स २०२७ कार्तिक बदी ८ तदनुसार २२–१०–१९७० को बडी सादडी मे दीक्षा ग्रहण की। सेवाभावी श्री रतनमुनि जी म सा सासारिक भाई हैं। सवत् २०२८ मे उदयपुर से पडवाई बन गये।

मुनि श्री रणजीतमल जी महाराज

आप कजार्डा निवासी थे। मोतीलाल जी भडारी की धर्मपत्नी भूरीबाई की कुक्षि से आपने सवत् १९८५ फाल्गुन सुदी ५ को जन्म ग्रहण किया। यौवनवय मे चादमल जी खिदावत की सुपुत्री विमलाबाई के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। आप विशेषकर पीपल्यामडी मे रहते थे। सत समागम से वैराग्य की लौ प्रज्वलित हुई और आचार्य श्री नानेश के श्री चरणो मे सपत्नीक सम्वत् २०२७ कार्तिक बदी ८ तदनुसार २२ अक्टूबर १९७० को बडीसादडी मे दीक्षित हुए। आप तपस्वी हैं। आप वृद्धिचन्द जी म सा के भाणजे एव अमर मुनि जी म सा आदि के ससारपक्षीय बूआ के लडके है।

मुनि श्री महेन्द्र कुमार जी महाराज

आप मेवाड मे गोगूदा निवासी थे। देवीलाल जी चौरडिया की धर्मपत्नी मोहन बाई की कुक्षि से स १९९९ को जन्म ग्रहण किया। वहॉ से आप फूलचन्द के गोद आ गये। स्वप्न दर्शन से वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ और सत्सान्निध्य से आपने स २०२७ कार्तिक बदी ८ तदनुसार २२ अक्टूबर १६७० को आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। आप सेवाभावी एव उग्रविहारी सत है।

मुनि श्री गजानन्द जी महाराज

आप मेवाड मे देवगढ निवासी थे। शिवराम जी देशलहरा की धर्मपत्नी गट्टूबाई की कुक्षि से सवत् १९६७ फाल्गुन बदी ८ को जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम गणेशीलाल था। आप विवाहित थे। सन्तान नहीं होने से चन्दनमल जी को दत्तक पुत्र के रूप मे रखा। सत समागम मे रहते–रहते सवत् २०२८ भादवा सुदी १४ को ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा पर्याय मे पक्षाघात (लकवे) की बीमारी होने पर भी सतो ने बहुत सेवा की। आप उदयपुर कारण से विराज रहे थे। प्रवल मोह के कारण आप पडवाई बन गये।

मुनि श्री सोभागमल जी महाराज ·

आप निम्बाहेडा निवासी थे। केशरीचन्द जी साड की धर्मपत्नी गुलाबवाई की कुक्षि से सवत् १९७८ फाल्गुन सुदी २ को जन्म लिया था। आपका नाम मोतीलाल था। योवनवय मे आप वडावदा निवासी चम्पालाल जी साड के यहॉ गोद आ गये। दूसरी माता का नाम झमकू वाई था। तदनन्तर ताल (मालवा) निवासी श्री चादमल जी ओस्तवाल की सुपुत्री सूरज बाई के साथ आपका विवाह सपन्न हुआ। आपके ३ पुत्र, ३ पुत्रियॉ थी। बडी पुत्री मगला कुमारी ने आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दुर्ग मे ४ अप्रैल १९६७ को दीक्षा ग्रहण की। घर धन परिवार छोडकर तदनन्तर आप्ने धर्मपत्नी (सूरज बाई), १ पुत्र (सुरेन्द्र कुमार), २ पुत्रियो (श्रीकाता एव चदनबाला) सहित स २०२८ कार्तिक सुदी १२ को ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। आप तपस्वी रत्न है। मिलनसार वृत्ति के सत हैं।

मुनि श्री रमेश कुमार जी महाराज ·

आप उदयपुर निवासी थे। रगलाल जी बाफना की धर्मपत्नी प्रतापबाई की कुक्षि से सवत् २०१० माघ बदी ६ तदनुसार २५ जनवरी, १९५४ को जन्म ग्रहण किया। सत समागम से वैराग्य भाव जागृत हुआ और कठिन परिषह सहने के बाद सवत् २०२८ कार्तिक सुदी १२ को ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। आप बडे भद्रिक मना हैं। जैन सिद्धान्त रत्नाकार की परीक्षा अच्छे नम्बरो से उत्तीर्ण की है। सघ मे आप देवताजी महाराज के नाम से भी पहचाने जाते हैं।

मुनि श्री सुरेन्द्र कुमार जी महाराज

आप मालवा मे बडावदा निवासी थे। सौभागमलजी साड की धर्मपत्नी सूरज बाई की कुक्षि से स २०१२ जेठ बदी १२ को जन्म ग्रहण किया था। माता, पिता एव भगिनियो के साथ मे आपने सवत् २०२८ कार्तिक सुदी १२ को ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। पिता श्री सौभागमल जी ने दीक्षा की स्मृति मे सुरेन्द्र कुमार साड शिक्षा सोसायटी नामक फड बनाकर उदारता का परिचय दिया। आपने अल्पकाल मे जैन सिद्धात रत्नाकर की परीक्षा उत्तीर्ण की। सवत् २०३७ आषाढ बदी १० को मोहोदय के कारण पडवाई बन गये।

मुनि श्री रवीन्द्र कुमार जी महाराज .

आप मालवा मे कानवन निवासी थे। कवरचद जी गोखरू की धर्मपत्नी प्यारी बाई की कुक्षि से सवत् १९६५ कार्तिक सुदी ३ को जन्म ग्रहण किया था। आप विवाहित थे। आचार्य श्री नानेश के स २०२९ के जयपुर चातुर्मास मे भादवा बदी १२ को प्रव्रज्या अगीकार की। " पच्छावि ते पयाया, खिप्प गच्छति अमर भवणाइ" वाक्य को आपने सार्थक किया। स २०४४ को जावद मे आपका स्वर्गवास हुआ।

मुनि श्री भूपेन्द्र कुमार जी महाराज ·

आप मेवाड मे निकुभ निवासी थे। ऊकारलाल जी सहलोत की धर्मपत्नी कचन बाई की कुक्षि से स २००८ वैशाख सुदी १५ को जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम भवरलाल था। स २०२९ आसोज सुदी ३ को जयपुर मे आचार्य श्री नानेश के चरणों मे दीक्षा ग्रहण की। विद्वद्वर्य श्री शाति मुनि जी म सा के साथ २०४५ के वर्षावास मे जम्मूतवी थे। किडनी की खराबी, सास एव टीबी की बीमारी के कारण जम्मूतवी मे स २०४५ को स्वर्गवास हुआ। आप तपस्वी सन्त थे। कवर मुनि जी महाराज सा आपके सासारिक काकाजी है।

मुनि श्री वीरेन्द्र कुमार जी महाराज :

आप मालवा मे आष्टा निवासी थे। बख्तावरमल जी सचेती की धर्मपत्नी सीता बाई की कुक्षि से २ जून १९५२ को जन्म ग्रहण किया था। प्रबल पुण्योदय से सत समागम मे आकर स २०२९ माघ सुदी २, सन् १९६८ मे देशनोक मे दीक्षा ग्रहण की। आप सुमधुर गायक एव उच्च कवि हैं। जैन सिद्धात रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। आप सेवाभावी सत हैं। अनेक वर्षो से बीकानेर मे वृद्ध सतो की सेवा मे जुटे हुए है।

मुनि श्री हुलास मल जी महाराज

आप मारवाड मे गगाशहर निवासी थे। जीवनराम जी सेठिया की धर्मपत्नी बाली बाई की कुक्षि से सवत् १९६८ मिगसर बदी ५ को जन्म ग्रहण किया था। यौवनवय मे वरजू बाई के साथ आपका विवाह सपन्न हुआ। आप आसाम बगाल मे व्यवसाय रत थे। पुत्र, पुत्री, पौत्रियो से घर भरा हुआ था। आप थोकडे के अच्छे ज्ञाता थे। सैकडो भजन कठाग्र थे। ज्ञान के साथ क्रिया की पूर्ण आराधना हेतु आपने अपने लघुपुत्र राजेन्द्र कुमार के साथ गगाशहर भीनासर भव्य दीक्षा समारोह मे स २०२९ माघ सुदी १३ सन् १९७३ मे दीक्षा ग्रहण की। वृद्धावस्था के कारण आप बीकानेर प्रात मे विराज रहे हैं।

मुनि श्री जितेन्द्र कुमार जी महाराज

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। रूपचन्द जी सोनावत की धर्मपत्नी धाईबाई की कुक्षि से सवत् १९८२ चैत्र सुदी ७ को जन्म ग्रहण किया। सासारिक नाम जतनलाल था। यौवनवय मे बीकानेर निवासी श्रीमान् हीरालाल जी बोथरा की सुपुत्री भवरीबाई के साथ विवाह सपन्न हुआ। १ पुत्र, २ पुत्री का आपको लाभ मिला। पुत्र विजय कुमार के मन मे गुरु सम्पर्क से वेराग्य की लो जागृत हुई, ब्रह्मचर्य व्रत ले लिया। माता एव बहिन ने समझाया। विजय अपने सकल्प पर दृढ रहा तव माता बहन के मन मे त्याग अगीकार करने की भावना हुई। तब आपने (जतनलाल जी) विचार किया पत्नी पुत्र–पुत्री त्याग धर्म स्वीकार कर रहे हैं अगर मेरे अशुभ कर्म का नाश हो गया, वेदना दूर गई तो मे भी सयम ले लूगा। धर्म भावना से शारीरिक बीमारी नष्ट हो गई और आपने सपरिवार स २०२९ माघ

सुदी १३ को जैन जवाहर विद्यापीठ भीनासर मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की।

मुनि श्री राजेन्द्र कुगार जी महाराज

आप मारवाड मे गगाशहर निवासी थे। हुलासमल जी सेठिया की धर्मपत्नी वरजूबाई की कुक्षि से आपने २१ मार्च १९५३ को जन्म ग्रहण किया। पिता जी की धर्म भावना को देखकर आप मे त्याग भाव जागृत हुए और स २०२९ माघ सुदी १३ सन् १९७३ को जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर मे पिता श्री हुलासमल जी के साथ दीक्षा सपन्न हुई। होनहार सत थे, लेकिन अल्प सयम पर्याय मे रेल दुर्घटना मे बीकानेर मे स २०३१ भादवा बदी १ को स्वर्गस्थ हुए।

मुनि श्री विजयकुमार जी महाराज

आप मारवाड में बीकानेर निवासी थे। जतनलाल जी सोनावत की धर्मपत्नी भवरीबाई की कुक्षि से स २०१५ आसोज सुदी २ को जन्म ग्रहण किया। गुरुदर्शन से वैराग्य भाव जागृत हुआ ओर सपरिवार (माता– भवरीबाई, पिता– जतनलाल जी, बहिन– प्रभावती)। के साथ भीनासर मे २०१९ माघ सुदी १३ को दीक्षित हुए। आप सुमधुर गायक एव कवि है। जैन सिद्धात रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण हैं। ओजस्वी प्रवक्ता हैं। सघ के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं।

मुनि श्री नरेन्द्र कुमार जी महाराज

आप मेवाड मे बम्बोरा निवासी थे। अर्जुनलाल जी पीतलिया की धर्मपत्नी गमेर बाई की कुक्षि से स २००७ मे जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम नानालाल था। सवत् २०३० माघ सुदी ५ को सरदारशहर मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप सेवाभावी सत हैं। जैन सिद्धात रत्नाकर का अध्ययन चालू है।

मुनि श्री ज्ञानचंद जी महाराज

आप मारवाड मे ब्यावर निवासी थे। मागीलाल जी मेहता की धर्मपत्नी सौरभबाई की कुक्षि से स २०१७ आसोज सुदी १२ को जन्म ग्रहण किया था। सत्सगत से ज्ञान ज्योति जागृत हुई और बहिन ललिता के साथ स २०३१ जेठ सुदी ५ तदनुसार २६ मई १९७४ को गोगोलाव मे दीक्षा ग्रहण की। जैन सिद्धान्त रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अच्छे लेखक एव सम्पादक हैं। ओजस्वी वक्ता है।

मुनि श्री पुष्पकुमार जी महाराज

आप हरियाणा मे मडीडब्बावाली निवासी थे। मगतराम जी गोयल (अग्रवाल) की धर्मपत्नी जानकी देवी की कुक्षि से सवत् १९७३ भादवावदी ८ को जन्म ग्रहण किया था। आपने पत्नी, पुत्र, पुत्रियो, पौत्र, पौत्रियो से भरे–पूरे परिवार को त्यागकर सरदारशहर मे स २०३१ आसोज सुदी २ को आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप आदर्श त्यागी के साथ–साथ दीर्घ तपस्वी भी हैं।

मुनि श्री बलभद्रजी महाराज :

आप मालवा पीपल्या मडी निवासी थे। विरदीचन्द जी पामेचा की धर्मपत्नी टाकुबाई की कुक्षि से सवत् १९८३ मे जन्म लिया था। आपका सासारिक नाम बापूलाल था। यौवन मे मोहनबाई से आपका विवाह हुआ। पुत्र–पुत्री की प्राप्ति के बाद धर्म की प्राप्ति हेतु आप तत्पर बने। कुमारी पुष्पा (साध्वी श्री प्रिय लक्षणा जी) के साथ आप सवत् २०३१ आसोज सुदी २ को सरदारशहर मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षित हुए। आपके परिवार से लगभग १५ दीक्षा सपन्न हो चुकी है। आप घोर तपस्वी है। अमर मुनि जी म सा के आप सासारिक बडे भ्राता हैं।

मुनि श्री मोतीलाल जी महाराज

आप मारवाड मे गगाशहर निवासी थे। तनसुखदास जी सुराना की धर्मपत्नी नवला बाई की कुक्षि से सवत् १९७२ पौष बदी ७ को जन्म ग्रहण किया था। यौवनवय मे गगाशहर निवासी सुवटी बाई भसाली के साथ पाणिग्रहण हुआ। धन परिवार को पाकर भी धर्मप्राप्ति हेतु आप तत्पर बने रहते पारिवारिक आज्ञा न मिलने पर स्वय दीक्षित हो गये। तत्पश्चात् स २०३१ माघ सुदी १२ को देशनोक मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आपके परिवार से ७–८ आत्माएँ दीक्षित हैं। उसमे मीता श्री जी आपकी सासारिक पुत्री है। आप तपस्वी हैं।

मुनि श्री रामलाल जी महाराज

आप मारवाड मे देशनोक निवासी थे। नेमीचन्द जी भूरा की धर्मपत्नी गवरादेवी की कुक्षि से स २००९ चैत्र सुदी १४ को जन्म ग्रहण किया था। आप आसाम मे व्यवसायरत थे। एकदम वैराग्य भावना जागृत हुई और आचार्य श्री की सेवा मे ज्ञान ध्यान सीखने लगे। सवत् २०३१ माघ सुदी १२ को देशनोक मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्वी हैं। शास्त्रो के अच्छे ज्ञाता हैं। आचार्य श्री नानेश के अन्तेवासी शिष्य रहे।

मुनि श्री किस्तूरचन्द जी महाराज .

आप मारवाड मे गगाशहर निवासी थे। फतहचन्द जी सुराना की धर्मपत्नी सुगन बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था। यौवनवय मे शादी के बधन मे भी बधे। पुत्री श्री केशरबाई ने महासती नदकवर जी सप्रदाय मे दीक्षा ली। घर मे रहते हुए भी आप साधु जीवन लेकर चल रहे थे। पुत्र हनुमानमल जी की तरफ से आज्ञा न मिलने पर साधु वेश धारण कर लिया। आखिर अनुमति मिलने पर सवत् २०३२ वैशाख बदी १३ तदनुसार ९ मई १९७५ को जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप घोर तपस्वी थे। फक्कड बाबा के नाम से पहचाने जाते थे। वि स २०३४ को भीनासर मे स्वर्गवास हुआ था।

मुनि श्री प्रकाशचन्द जी महाराज

आप मारवाड मे देशनोक निवासी थे। सपतराज जी भूरा की धर्मपत्नी भूरी वाई की कुक्षि से सवत् २०१३ माघ सुदी ११ को जन्म ग्रहण किया था। सन्त समागम से धर्म भावना वृद्धिगत हुई और सवत् २०३२ आसोज सुदी ५ को देशनोक मे लघुभ्राता जयवत मुनि के साथ आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। आप विद्वान् एव ओजस्वी वक्ता हैं। तन–मन द्वारा अग्लान भाव से सेवा मे जुटे रहते है।

मुनि श्री जयवन्त कुमार जी महाराज ·

आप मारवाड मे देशनोक निवासी थे। सपतराज जी भूरा की धर्मपत्नी भूरी बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया था। सत्सगत से वैराग्य अकुर प्रस्फुटित हुआ और सवत् २०३२ आसोज सुदी ५ को देशनोक मे अग्रज प्रकाश मुनि जी महाराज के साथ आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। सासारिक नाम झवरलाल था। आप सेवाभावी एव मधुर व्याख्यानी थे।

मुनि श्री गौतम कुमार जी महाराज ·

आप मारवाड मे बीकानेर निवासी थे। बसतराज जी सेठिया की धर्मपत्नी शाता बाई की कुक्षि से सवत् २०१३ मिगसर बदी ६ को जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम सतोष कुमार था। सत्सगत से वैराग्य भावना जागृत हुई और ज्ञान ध्यान सीखने लगे। आज्ञा पत्र, दीक्षा तिथि निश्चित होने के बाद भी परिवार वाले लोगो ने अन्तराय देनी शुरु कर दी। तब आप स २०३२ आसोज सुदी ६ को देशनोक मे स्वय दीक्षित हो गये। अनेक कष्ट आये फिर पारिवारिक आज्ञा होने पर भीनासर मे स २०३२ मिगसर सुदी ३ को आचार्य श्री नानेश ने दीक्षा प्रदान की। आप मधुर कवि एव लेखक हैं। उग्र विहारी एव चित्रकार भी हैं। जैन सिद्धान्त विशारद उत्तीर्ण है।

मुनि श्री प्रमोद कुमार जी महाराज ·

आप पजाब मे हासी निवासी थे। पारिवारिक व्यक्ति बीकानेर मे भी रहते हैं। महावीर सिह जी गर्ग के यहॉ आपका जन्म हुआ। यौवनवय मे आप पजाब मे स्थानकवासी मुनि बने। माता–पिता के राग के कारण पुन घर आ गये। फिर चारित्र मोहनीय का क्षयोपशम हुआ, दीक्षा ग्रहण की। शिष्य की उपलब्धि हुई। योग्यता हासिल होने के बाद एकाकी छोडकर चला गया इससे दिमाग पर असर हुआ। परिवार के व्यक्तियो ने सतो से सेवा की प्रार्थना की। सतो ने ना मे उत्तर दिया। तभी मूर्तिपूजक साधु ने कहा– अगर इनका भविष्य सुधारना है, सेवा करानी है तो आचार्य श्री नानालाल जी महाराज के वहॉ समुचित व्यवस्था है, सम्पर्क करे। साधन द्वारा मुनि श्री को भाई धर्मपाल जी आदि आचार्य श्री की सेवा मे लेकर आये। तब आचार्य श्री ने सवत् २०३३ माघ बदी १ को नूतन दीक्षा देकर सघ मे शामिल किया। आप तपस्वी हैं। शास्त्रो के अच्छे ज्ञाता है। हसमुख एव सुखमय जीवन जी रहे हैं।

मुनि श्री प्रशम कुमार जी महाराज

आप मारवाड मे गगाशहर निवासी थे। गोपीचन्द जी छल्लानी की धर्मपत्नी ऊदी बाई की कुक्षि से स २०१७ चैत्र सुदी १ तदनुसार २८ मार्च, १९६०, सोमवार को बदोटी जिला नोर्थ लखीमपुर (आसाम) मे जन्म ग्रहण किया। सासारिक नाम ताराचन्द था। बाल्यावस्था मे गठियावात का प्रकोप था। धर्म की कृपा से ठीक हो जाने पर सवत् २०३४ वैशाख बदी ७ तदनुसार १० अप्रैल, १९७७ रविवार को आचार्य श्री नानेश से भीनासर मे दीक्षा ग्रहण की। आप जैन आगम रत्नाकार परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। उग्र विहारी एव सेवाभावी है।

मुनि श्री अशोक कुमार जी महाराज

आप मालवा मे जावरा निवासी थे। सौभागमल जी नवलखा की धर्मपत्नी सोहनबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। सवत् २०३४ आसोज सुदी २ तदनुसार १४ अक्टूबर, १९७७ को भीनासर मे दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्वी एव मधुर व्याख्यानी हैं। स्वच्छद–प्रवृत्ति के कारण स २०४५ मिगसर बदी १ को मदसौर से आज्ञा बाहर कर दिये गये। अब एकाकी विचरण कर रहे है।

मुनि श्री मूलचन्द जी महाराज .

आप मारवाड मे नोखामडी निवासी थे। बीजराज जी काकरिया की धर्मपत्नी जेठी बाई की कुक्षि से सवत् १९७७ फाल्गुन सुदी १५ को जैसलसर मे जन्म ग्रहण किया। व्यवसाय के कारण नोखामडी मे पत्नी, भाई एव परिवार के साथ रहने लग गये। आप बोल थोकडो के जानकार थे। सन्तान नही होने से भाई की सतान को गोद लेकर स २०३४ मिगसर सुदी ५ तदनुसार १५ दिसम्बर १९७७ गुरुवार को आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। आप तपस्वी हैं। आपकी भाणेज एव भाई की पुत्री (सुदर्शनाजी और हेम श्री) भी दीक्षित है।

मुनि श्री ऋषभकुमार जी महाराज .

आप मेवाड मे बबोरा निवासी थे। गोकुलचद जी वया की धर्मपत्नी मोडी बाई की कुक्षि से वि स १९६४ कार्तिक बदी ८ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम माधवलाल था। योवनवय मे शादी हुई। आप धार्मिक अध्ययन–अध्यापन का कार्य करते थे। पडित साहब के मन मे त्यागियो को पढाते–पढाते त्याग की इच्छा जागृत हुई ओर स २०३४ माघ सुदी १० तदनुसार १७ फरवरी, १९७८ को जोधपुर मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप तपस्वी एव सेवाभावी थे।

मुनि श्री अजितकुमार जी महाराज ·

आप मालवा मे रतलाम निवासी थे। दाडमचन्द जी चत्तर की धर्मपत्नी रोशनबाई की कुक्षि से स २०१२ आषाढ सुदी ५ तदनुसार १० जून, १९५५ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम रतनलाल था। यौवन वय मे आपने स २०३५ आसोज सुदी २ को जोधपुर मे आचार्य श्री नानेश से

दीक्षा ग्रहण की। आप मधुर व्याख्यानी एव उग्र विहारी हैं।

मुनि श्री जितेशकुमार जी महाराज

आप महाराष्ट्र मे पूना निवासी थे। नेमीचन्द जी पटवा की धर्मपत्नी कुसुम वाई की कुक्षि से सन् २३ अप्रैल, १९५८ तदनुसार स २०१५ वेशाख सुदी ३ को जन्म ग्रहण किया। सत सगत से ६ र्म भावना बनी और दीक्षा के लिए अनेक महापुरुषो की सगति मे जाने के बाद आचार्य श्री नानेश की शरण मे आए और स २०३६ चैत्र सुदी १५ तदनुसार १२ अप्रैल, १९७९ को ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। आप सेवाभावी एव मधुर व्याख्यानी हैं।

मुनि श्री पद्मकुमार जी महाराज ·

आप महाराष्ट्र मे नीम गाव खेडी के है। नगराज जी चौरडिया की धर्मपत्नी मिश्री बाई की कुक्षि से स २०१७ चैत्र सुदी ५ को जन्म लिया था। आपका सासारिक नाम शातिलाल था। स २०३६ चैत्र सुदी १५ तदनुसार १२ अप्रैल, १९७९ को ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्वी एव सेवामूर्ति हैं। धायमातृ इन्द्रचन्द जी म सा आपके सासारिक बाबाजी थे और कान्ति मुनि ससारपक्षीय भाई है।

मुनि श्री विनयकुमार जी महाराज :

आप मारवाड मे ब्यावर निवासी थे। मोहनलाल जी बाठिया की धर्मपत्नी छोटियाबाई की कुक्षि से सवत् २०१७ पौष बदी १ को जन्म ग्रहण किया। सत्सगत से धर्म भावना बनी और स २०३६ चैत्र सुदी १५ तदनुसार १२ अप्रैल, १९७९ को ब्यावर मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप जैन आगम रत्नाकर परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। सेवाभावी सत हैं।

मुनि श्री गोविन्द कुमार जी महाराज .

आप मारवाड मे ब्यावर निवासी थे। पूनमचन्द जी बोहरा की धर्मपत्नी हजा बाई की कुक्षि से सवत् १९७१ माघ सुदी २ को जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम गिरधारी लाल था। सन्त समागम से वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ और स २०३७ जेठ सुदी १३ तदनुसार २६ जून, १९८० मे जगदलपुर मे आचार्य श्री नानेश की नेश्राय मे विद्वद्वर्य श्री शातिमुनि जी म सा, तप अमर मुनि जी से सयम ग्रहण किया। आप सेवाभावी है।

मुनि श्री सुमतिकुमार जी महाराज

आप मारवाड मे नोखामडी निवासी थे। चादमल जी लूणिया की धर्मपत्नी राजी बाई की कुक्षि से स २०२० मे जन्म हुआ। जीवन की अनित्यता को सत्सगत से जानकर स २०३७ पौष सुदी ३ शुक्रवार तदनुसार ९ जनवरी, १९८१ को भीम मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की । बडी दीक्षा देवगढ मे हुई। आप जैन आगम रत्नाकर की तैयारी मे सलग्न है।

मुनि श्री चन्द्रेश कुमार जी महाराज .

आप मारवाड मे फलौदी निवासी थे। पारिवारिक व्यक्ति कून्नूर (तमिलनाडू) मे भी रहते हैं। भीखमचन्द जी चौरडिया की धर्मपत्नी मनोहरी बाई की कुक्षि से स २०२२ पौष सुदी १२ को जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम राजेन्द्र कुमार था। सन्त समागम से वैराग्य भावना जागृत हुई और सवत् २०३८ वैशाख सुदी ३ को गगापुर (मेवाड) मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की । आप श्री सेवाभावी हैं। जैन सिद्धान्त विशारद परीक्षा की तैयारी मे सलग्न हैं।

मुनि श्री पंकज कुमार जी महाराज

आप छत्तीसगढ मे राजनादगाव निवासी थे। राणुलाल जी टाटिया की धर्मपत्नी कुसुम्बी बाई की कुक्षि से स १९८४ चैत्र बदी ३ को जन्म ग्रहण किया। आप धन--वैभव, परिवार युक्त थे। वैराग्य भाव से स २०३८ चैत्र बदी ३ तदनुसार १२ मार्च, १९८२ को अहमदाबाद (गुजरात) मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आपका सासारिक नाम चपालाल था। घोर तपस्वी थे। सयम विरुद्ध प्रवृत्ति के कारण स २०४५ भादवा बदी को रतलाम मे आज्ञा बाहर घोषित हुए। एकाकी विचरण कर रहे हैं।

मुनि श्री धर्मेन्द्र कुमार जी महाराज

आप महाराष्ट्र मे साकरा निवासी थे। हेमराज जी देशलहरा की धर्मपत्नी बदामी बाई की कुक्षि से सन् १९७२ मे जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम धनराज था। स २०३८ चैत्र बदी ३ तदनुसार १२ मार्च, १९८२ को अहमदाबाद (गुजरात) मे दीक्षा ग्रहण की। आप सेवाभावी सत हैं।

मुनि श्री धीरज कुमार जी महाराज ·

आप मालवा मे जावद निवासी थे। कारूलाल जी काठेड की धर्मपत्नी राजी बाई की कुक्षि से १६ अक्टूबर, १९६१ को जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम धनपाल था। वि स २०४१, ४ अप्रैल, १९८४ को रतलाम मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्वी एव सेवाभावी है।

मुनि श्री क्राति कुमार जी महाराज ·

आप महाराष्ट्र मे नीमगाव खेडी निवासी थे। नगराज जी चौरडिया की धर्मपत्नी मिश्रीबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था। स २०४१, ४ अप्रैल, १९८४ को रतलाम मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप सेवाभावी सत हैं। इन्द्रचन्द जी म सा आपके सासारिक बाबाजी एव श्री पद्म मुनि जी महाराज बडे भ्राता हैं।

मुनि श्री विवेक कुमार जी महाराज

आप मेवाड मे उदयपुर (मूल से बडीसादडी) निवासी थे। केशरीमल जी गदिया की धर्मपत्नी मोड बाई की कुक्षि से स १९८६ आषाढ सुदी १५ तदनुसार २७ जुलाई, १९३० को जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम मदनलाल जी था। यौवनवय मे कानोड नि कमला बाई भणावत से

विवाह सपन्न हुआ। आप बी कॉम पास थे। २ पुत्र पुत्रियो से घर भरा हुआ था। आपकी सुपुत्री सुशीला (महासती श्री शशिकाता जी) ने स २०३४ माघ सुदी १० को जोधपुर मे तथा सुपुत्री राजकुमारी (महा श्री रचना श्रीजी) ने स २०३८ कार्तिक सुदी १२ को उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आपकी भावना भी त्यागमय चल रही थी। आखिर स २०४५ माघ सुदी १० तदनुसार १५ फरवरी १९८९ बुधवार को मन्दसौर-- गौतम नगर मे आचार्य श्री नानेश के हाथो से दीक्षा सपन्न हुई। आप शास्त्रो के अच्छे ज्ञाता है।

साधु-मार्ग की पावन सरिता में साध्वी समुदाय का योगदान व उनका प्राप्त परिचय

सर्वज्ञ सर्वदर्शी वीतराग देवो ने अपने दिव्य ज्ञानालोक मे देखा कि नारी जगत मे अध्यात्म विकास की पूर्णता विद्यमान है। पुरुषो की तरह यदि इनको भी प्रेरित किया जाय और विकास के सूत्र प्रदान किये जाये तो महिलाए पुरुषो से भी आगे नम्बर ले सकती हैं। हुआ यही, ज्योही महापुरुषो ने प्रेरणा का सिहनाद गूजाया त्योही नारी जगत ने अगडाई ली तो हमारा इतिहास साक्षी है कि अध्यात्म विकास की भूमिका के हर क्षेत्र मे आज तक नारी जगत ही आगे रहा है। दूर क्यो जाये, भगवान महावीर के शासनकाल मे ही दृष्टिपात करे तो साध्वी समुदाय की सख्या ३६००० थी, वहा साधुओ की सख्या १४००० ही रही। इतना ही नहीं, प्रभु निर्वाण के बाद जब–जब श्रमण सस्कृति मे शिथिलाचार एव बाह्याडम्बर ने जोर जमाया तो जिस प्रकार श्रमणो ने क्रियोद्धार कर के उसको दूर हटाने की चेष्टा की, उसमे साध्वी समुदाय का योगदान भी कम नहीं रहा। उन्होने भी कष्ट उठाने मे कसर नहीं रखी। उन्हीं साध्वी समूह मे महासती रगूजी, श्री नन्दकवर जी म सा , महासती श्री खेता जी म सा और महासती श्री मोताजी म सा का नाम उल्लेखनीय है।

महासती श्री रंगूजी म.सा. :

आचार्य श्री हुक्मी चन्द जी म सा क्रियोद्धार का सिहनाद गूजित करते हुए, नीमच पधारे। उसी समय की एक घटना है। नीमच के हजारीमल जी पोरवाल छोटे साजनात परिवार की सुपुत्री रगूजी–जिनको प्रतापगढ और छोटीसादडी के बीच धमोतर गॉव मे परणाई गई थी। लेकिन कुछ समय बाद ही उनके ऊपर बाल वैधव्यता का पहाड टूट पडा। साथ ही कुछ समय पश्चात् ही पुत्र वियोग से दुखित होकर उनके सास–ससुर भी चल बसे। अब तो केवल सब तरफ से निसहाय एकमात्र रगूजी ही उस परिवार मे रह गई, फिर भी उन्होने अपनी अपूर्व धैर्यता का परिचय दिया।

धर्माराधन मे रमण करती हुई रगूबाई जीवन–यापन करने लगी। उनकी शारीरिक रूप सम्पन्नता अनुपम थी ही, लेकिन शुद्ध शीलरत्न की आराधना से तो वह द्विगुणित दमक उठी। दीप की ज्योति को लखकर पतगे जैसे मडराने लगते हैं, उसी प्रकार वहा के ठाकुर शेरसिह की दृष्टि एक बार रगूजी पर पड गई। रगूजी को देखते ही वह काम ज्वर से पीडित हो उठा और अपनी वासना की पूर्ति के हथकडे लगाने लगा।

उसका खाना–पीना, नींद सब हराम होने लगे। रातदिन यही चितन करता कि, किस प्रकार उनको अपने चगुल मे फसाऊ। आखिर अडखजे लगाते–लगाते युक्ति निकाल ही ली। उसने सोचा–पहली बात तो यहॉ इसका है कौन ? और होगा भी तो मै यहॉ का ठाकुर हूॅ। मेरा सामना करने की ताकत किसमे है। जो टकरायेगा उसको मिट्टी मे मिलाना मेरा बाया हाथ का खेल है। बस फिर क्या था। सत्ता के मद मे उन्मत्त होकर उसने कुछ सिपाहियो को उसके घर के चारो ओर घेरा डालकर येन–केन प्रकारेण उसको अपने गढ मे लाने का आदेश दे दिया।

ठाकुर का आदेश पाकर सिपाही लोगो ने रगूजी की हवेली को घेर लिया। उस समय वह रगू बाई सामायिक की साधना मे तन्मय थी। अकस्मात् उसके अन्तरमन मे खल–वली पेदा हुई। बाहर झाक कर देखते ही उसको समझते देर नहीं लगी कि अवश्य आज मेरे शील पर सकट उपस्थित हो सकता है। उसका मानस कपित हो उठा। वह विचार करने लगी। अव मेरा क्या होगा, मेरे शील की रक्षा कैसे होगी ? कौन मेरा रक्षक होगा ? इसी चिन्ता मे वह चिंतित हो उठी ओर महामत्र का सुमिरण करने लगी।

तत्क्षण उसके अन्तरमन मे एक नई स्फुरण पैदा हुई। उसके सामने एक–एक करके उन शील की देवियो– महासती सीता, राजमती, धारणी, पद्मावती आदि की झाकिया प्रस्तुत होने लगी जिन्होने अपने शील की रक्षा हेतु अपने प्राणो की भी बाजी लगा दी थी। बस फिर क्या था। रगूजी मे भी एक नया जोश आ गया। वह नमस्कार मत्र का सुमिरण करते हुए उठी और अपने प्राणो का उत्सर्ग करके भी शील के रक्षण का दृढ सकल्प धारण करके पिछली खिडकी से कूदने के लिए तत्पर हो उठी।

धर्मो रक्षति रक्षित :–

कहते है जो धर्म की रक्षा करता है, उसी की धर्मरक्षा करता है। रगूजी शील धर्म के रक्षण हेतु ज्योही अपने प्राणो का उत्सर्ग करने के लिए तत्पर बनी, त्योही ठीक खिडकी के नीचे ही एक व्यक्ति ऊट लेकर खडा हुआ– कहने लगा बहन ! घबराओ मत, आप निश्चित होकर इस ऊट पर सवार हो जाओ। मै अभी आपको सुरक्षित स्थान पर पहुचा देता हू।

उसकी बात को श्रवण कर पहले तो रगूजी सहमी। फिर महामत्र का सुमिरण कर आत्म–विश्वास के साथ ऊँट पर सवार हो गई। इधर सवार हुई थी ही कि इतने मे ऊटवाला बोला–बहिन सामने देखो, यह कौनसा गाव है ? रगूजी ने उस भाई के कथनानुसार सामने देखा तो अपने को अपनी जन्मभूमि मे पाकर हतप्रभ सी रह गई। विचार करने लगी क्या बात है ! इतने मे उस भाई ने कहा– बहिन ! अब सब चिता छोडो और अपने पिताजी के घर चली जाओ और फिर कभी सेवा का काम पडे तो सेवक सेवा मे हर समय हाजिर रहेगा। इतना कहने के साथ ऊँट और सवार दोनो गायब ! रगूजी हतप्रभ सी सीधी मायके पहुँच गई। घर वाले अकस्मात् सामायिक साधनो से युक्त रगूजी को देखकर विचार मग्न हो गये। रगूजी ने आपबीती सारी बात माता–पिता को सुनाई और नम्र निवेदन करने लगी कि अब मेरा मन ससार से उचक (ऊब) गया है। मैं सयम पथ पर आरूढ होना चाहती हू। इसी मे मेरा उद्धार है। रगूजी की सारी बात श्रवण कर माता–पिता ने इसी मे सार समझा और सहर्ष सयम ग्रहण करने की अनुमति दे दी।

सयम की अनुमति मिलते ही रगूजी को बडी प्रसन्नता हुई। साथ ही जब यह सुना कि क्रियोद्धारक हुक्मीचन्द जी म सा यहीं विराज रहे है तो उसकी खुशी का पार ही नहीं रहा। रगू बाई

पूज्य श्री की सेवा मे पहुची और सारी घटित घटना सुनाकर चरण–शरण मे लेने का विनम्र निवेदन करने लगी। पूज्य श्री ने उसकी आतरिक भावना को श्रवण करके फरमाया कि आपकी भावना श्रेष्ठ है। मेरे तो शिष्य–शिष्या बनाने का त्याग है। यदि आप इन निर्धारित मर्यादाओ का पालन कर सको तो स्वय दीक्षित होकर कल्प पूरा (तीन महासतिया) होने पर महासती श्री मगन कवर जी म सा की नेश्राय मे विचरण करना।

रगूजी पूज्य श्री का हुक्म शिरोधार्य करके स्वय दीक्षित हो गई और जब तक कल्प की पूर्ति नहीं होगी तब तक के लिए आटा, आवला, हल्दी, छाछ व धोवन– इन पाच द्रव्यो के उपरान्त सब पदार्थो का त्याग कर दिया और पूर्ण सजगता से सयम का पालन करने मे तन्मय बन गई। पूज्य श्री के वचनातिशय का ही कुछ ऐसा प्रभाव पडा कि थोडे ही दिनो मे नवल कवर बाई और रामपुरा निवासी सुदरबाई दीक्षित होने के लिएं तैयार हो गई। सुन्दर बाई की विरक्त भावना को देखकर परिवार वालो ने उनके पावो मे बधन डाल दिये। पूज्य श्री के मुखारविन्द से मगल पाठ श्रवण करते ही बधन तडातड टूट गये और दीक्षा की अनुमति प्राप्त हो गई।

रामपुरा में दोनो भव्यात्माओ की दीक्षाए सानन्द सम्पन्न हो गई, तो विधि युक्त पुन दीक्षा ग्रहण करके विहार कर मगन कवर जी म सा की सेवा मे पहुच गई। तीनो महासतिया जी पहुँची ही नहीं, उसके पहले ही उनकी कीर्ति पहुच चुकी थी। जिसको श्रवण करके महासती श्री मगन कवर जी म सा बहुत प्रभावित हुई और कहने लगी हे भाग्यवान ! मरे पास मे सेवा मे सतिये हैं ही तुम्हारे से जिनशासन की महान अभिवृद्धि होगी इसलिए मेरी आज्ञा है, आप भूतल पर खूब विचरण करके भव्यात्माओ का उद्धार करो। अपनी गुरुणी प्रवर के आशीर्वचन शिरोधार्य करके कुछ दिन सेवा मे ठहरी, उसके पश्चात् भूतल पर विचरण करने लगी।

आपके तपतेज का अतिशय प्रभाव पडा जिससे आपके पास मे अनेक आत्माओ ने सयम पथ ग्रहण किया और सतियो का बहुत बडा समूह आप के नाम से ही एक सम्प्रदाय के रूप मे प्रख्यात हो गया। जो आज भी विशाल मात्रा मे सयम पथ प्रशस्त करता हुआ शासन को गौरवान्वित कर रहा है। आपने अपनी व्यवस्था का सारा उत्तरदायित्व वृद्धावस्था को देखकर अपने हाथो से महासती राजकवर जी म सा को सौप कर सवत १९४० मे स्वर्गवासी हो गई।

प्रवर्तनी श्री राजकंवरजी म सा. :

आपका जन्म मेवाड के बडकुआ ग्राम मे हुआ था। देवीलाल जी भाई थे। यौवनावस्था मे कजार्डा निवासी रतनचन्द जी सा भडारी के साथ शादी हुई। जवाहिरलाल, हीरालाल ओर नन्दलाल तीन पुत्र हुए। तीनो पुत्र लघुवय मे थे, उसी समय भाई देवीलाल जी और पति रतनचन्द जी इन को ससार से विरक्ति हो गई। आपकी भी भावना दीक्षाग्रहण करने की बन गई। लेकिन बच्चे छोटे होने के कारण दीक्षा नहीं ले सके। लेकिन आपने पतिदेव और भाई के सयम मार्ग मे बाधा पदा नहीं की।

उनको सहर्ष आज्ञा दे दी। बाद मे सवत् १९२० मे पौष सुदी ६ को अपने तीनो पुत्रो के साथ आपने भी दीक्षा ग्रहण की। आपकी ज्ञान–गरिमा विनयशीलता अनुशासन, दृढता देखकर महासती श्री रगूकवर जी ने अपनी उत्तराधिकारिणी घोषित की। कुशलतापूर्वक शासन सचालन करते हुए वि स १९४८ को अपना उत्तरदायित्व साध्वी श्री रत्नकवर जी म सा को सौपकर स्वर्गवासी हो गई।

प्रवर्तनी श्री रत्नकुमारी जी महाराज

आपका जन्म मालव प्रान्त मे भाटखेडी ग्राम मे हुआ था। आपकी मातेश्वरी का नाम तुलसा बाई और पिताश्री का नाम सुखलाल जी था। जब आपने यौवनावस्था मे प्रवेश किया तब माता–पिता ने बडे ही उत्साह उमग के साथ नीमच सिटी के कोठीफोडा परिवार मे आपका विवाह कर दिया था। लेकिन बाल वैधव्यता का दु ख आ जाने से आप ससार से उदासीन हो गई और महासती श्री रगूजी म सा के अपूर्व त्याग एव उपदेशामृत का पान कर पूर्ण विरक्त वन गई और महान त्याग वैराग्य भावना से ओत–प्रोत होकर प्रवज्या अगीकार की। पूर्ण विनयभाव से साधना करते हुए जीवन को समुज्ज्वल बनाने लगी।

आप प्रसिद्ध वक्ता, जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म सा की ससार पक्षीय मौसी थी। आपके पास मे दिवाकर जी म सा की ससार पक्षीय मातु श्री केशर कवर जी म सा ने दीक्षा ग्रहण की थी। सवत १९४८ मे प्रवर्तनी श्री राजकवर जी म सा ने महासती श्री रत्नकुमारी जी म सा की गुण–गरिमा का मूल्याकन कर के अपनी उत्तराधिकारी नियुक्त की। जिस भार को आपने पूर्ण पुरुषार्थ के साथ सभाला। जिस प्रकार आचार्य श्री १००८ श्री चौथमल जी म सा ने सतो की व्यवस्था के लिए ५ गण एव ५ गणावच्छेदक की व्यवस्था की उसी प्रकार आपने अपने अनुशासन काल मे महासती रगू मडल मे ५ गण एव ५ गणावच्छेदिका की नियुक्ति करके साध्वी समूह की सुव्यवस्था की थी। जिसका प्रपत्र निम्न प्रकार है–

"साध्वी प्रमुख श्री रंगू जी म.सा. की महासतियों के ५ गण और ५ गणावच्छेदिका का व्यवस्था प्रपत्र"

श्रीमती महासती श्री जी श्री श्री पूज्य दौलतराम जी म सा की परम्परागत श्री श्री रगू जी महासती तत् सीक्षणी श्री मति प्रवर्तनी जी श्री रत्न जी महासती जी विराजे जिन्होने सप्रदाय मे पाच गण और पाच साध्वी कु गणावच्छेदिणी स्थापी और प्रर्वतनी का हुक्म व कानून की कारवाई नीचे मुजब सब आर्या कु वा गणावच्छेदणी कु वर्तणी।

।।श्री।। अचारक उपाध्याय श्री श्री महानुभाग श्री मत माराजा धीराज् हुक्मचद जी माराज की सप्रदाय का सता के अचारज उपाध्याय हुवे उनी कु अगीकार कर के विचरना और वदणा बेवार सुख सतादीक का सभोग हुक्मीचन्द जी म सा का सता के हुवे उन सता से करणा और से नहीं करणा।

पॉच गणावच्छेदणी का नाम १ सिरेकवर जी २ ककूजी, ३ राजा जी, ४ आणदकवर जी, ५ फुला जी।

ऊपर की पाच आरज्या कु गणावच्छेदिणी थापी और पाच गण बनाए। अब सप्रदाय की सब आय्या कु चाहिये के अपणी इच्छा व स्वभाव प्रकृति जिस आर्या से मिले उस आर्या का गण मे जमा हो जाणी और नीचे लिखी कारवाई ऊपर दस्तखत कर देवे।

अब जो जो आर्या अपनी खुशी से जिस–जिस गण मे जमा हुई है उन सर्व कु गणावच्छेदणी के हुक्म बिना कोई काम करणी नहीं पावे और गणावच्छेदणी को जो हुक्म प्रवर्तनी जी फरमावे या पूज्य माराजाधिराज श्रीमान् हुक्मीचद जी म की सप्रदाय का पूज्य श्री १००८ श्री चौथमल जी को एकाणवे कलम की मरजाद मे व छानवे हाथ कपडा की सर्वगण मे जितनी आर्या होवे उनकी मुरजाद मे व अगवाणी होय विचरे जिसके अचाराग व निशीथ को जाणपणो चाहिये व ऐकली अथवा दो बिना कारण से विचरे अथवा गणी व थोडी बिना आज्ञा से विचरे तो विचरे जिता दिन को छेद देणो और जितनी आर्या गण मे होवे उन सर्व को निभाव करणो। इसमे किचित् मात्र फरक पाडने पावे नहीं और जो आरज्या गणावच्छदणी की राह वीना कोई भी काम करेगा तो वा प्रवर्तनी जी की व सर्व गणावच्छेणी जी की कसूर दार होवेगा और जो गणावच्छेदणी आचार गोचर बिना की प्रवृत्तिया या एकाणवे कलम की मुरजाद से नहीं चलावेगा। आरज्या कु तो सर्व गणावच्छेदणी जी व प्रवर्तनी जी की कसूरदार होवेगा और प्रवर्तनी जी फुरमावे तो सर्व गणावच्छेदणी जी कु हिस्सा सर सेवा करणी और सर्व काम लेणा और जो गणावच्छेदणी बनाई है उनकी उत्तमता प्रवर्तणी जी आगे पीछे देखेगा, सुनेगा, निर्णय करेगा तब तो वह मालकण ही है। या ज्यादा कसूर देखेगा तो उसका गणावच्छेदणी पद उतार लेवे तो उसमे कोई कुतर्क नहीं करणी, किचित् मात्र विषम भाव नहीं रखणा, मन को नहीं दु खाना। क्यू के ये कानून व्यवहार सूत्र की राह (राय) से है, इसमे किसी एक के लिए नहीं और पाचो गण मे से कोई आरज्या एक से दूसरे गण मे आवे तो गणावच्छेदणी की आज्ञा बिना नहीं रखणी आपस मे आरज्या चाइये तो गणावच्छेदणी पास से मागणी और गणावच्छेदणी की रजा से रखणी, क्लेशादि करके आवे तो जाह से आई वाहा आरज्या भेज देगी। सूत्र युक्त दण्ड दे के भेजणी बिना रज्या रखणी नहीं और पाचो गुण कु आपस मे हेत प्रीत बिनो भक्ति बच्छलताई बोत रखणी और सरद्धा फरसणा बरोबर करणी और सबी बेवार प्रवृत्ति समदाय की मुरजाद बरोबर राखणी और आपस मे गणावच्छेदणी का कारण विशेष मे आरज्या भेजणी और ब्यावच्च करणी, भणने को साज देणो ओर की आरज्या स्थविर होवे तो वारी सर साज देणो प्रीती भाव हितारथ के साथ करणो के जिससे आरज्या निभ जावे।"

आखिर आपने (महासती श्री रत्न कुमारी जी म सा) अपनी वृद्धावस्था मे आपकी ही गुरु वहिन महासती श्री सिरेकवर जी म सा को अपनी उत्तराधिकारणी नियुक्त कर के पूर्ण समाधि भाव से वि सवत् १९६३ मे स्वर्ग पधार गई।

प्रवर्तनी श्री सिरेकवर जी म सा.

आपका जन्म जावरा (मध्यप्रदेश) मे हुआ था। पिता श्री का नाम लक्ष्मीचन्द ओर माताजी का नाम नगीना बाई था। सिरे कवर बाई का योवनावस्था वदनावर मे योग्यवर के साथ शादी हुई। लेकिन पति वियोग के पश्चात सिरेकवर बाई जावरा ही रहने लगी। महासती जी श्री रगूजी म सा के सान्निध्य मे वर्धमान तप की आराधना की और बाद मे गुरुणी प्रवर के उपदेश से विरक्त बनकर वि स १९२५ मे दीक्षा ग्रहण की और पूर्ण विनय भाव से, मोक्ष मार्ग (ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप) का आराधन करती हुई, अपने जीवन को विशुद्ध बनाने लगी। जिसके प्रभाव से अनेक भव्यात्माए प्रतिबोधित हुई। आपकी शिष्या मे राधाजी महाराज घोर तपस्विनी थे। जिन्होने मास खमण एव पैतालीस के बडे–बडे थोक किये। ऐसे प्यारादाना जी, रक्मा जी, सरसा जी, हीरा जी, गट्टू जी, जडाव कवर जी, सुगन कवर जी आदि कई सतिये हुई। आपकी प्रतिभा एव गुण–गरिमा का मूल्याकन कर महासती प्रवर्तनी श्री रतन कवर जी म ने अपनी उत्तराधिकारिणी नियुक्त की। उसके बाद १९६२ मे उनके स्वर्गवास के बाद सारी सती मडल का भार आप पर आ गया, जिसको १५ वर्ष तक पूर्ण निर्भयता से सभाला। जिससे साध्वी समूह का अच्छा विकास हुआ। उसके बाद अपनी वृद्धावस्था को देखकर आपने स १९७४ जेठ सुदी ४ के दिन महासती श्री आनद कवर जी को अपनी उत्तराधिकारणी नियुक्त की और उसी वर्ष ब्यावर मे स्वर्गवास हो गई।

प्रवर्तनी श्री आनन्द कवर जी म सा

मरूधरा के सोजत शहर मे श्रेष्ठिवर्य श्री प्रभुदान जी सिघवी के सुपुत्र किशनलाल जी की धर्मपत्नी अमृत कवर बाई की कुक्षि से आपका जन्म हुआ। आपके बडे पाच भाई और पाच बहिने थीं। जब छठी पुत्री के रूप मे आपका जन्म हुआ तो सारा परिवार उदास हो गया और इसी उदासी मे आपका नाम भी धापी बाई रख दिया। लेकिन जन्मते ही सारे परिवार के वातावरण मे एक नया परिवर्तन आ गया। सब दृष्टियो से पहले की अपेक्षा आनन्द की अनुभूति करने लगे। इस अकस्मात् परिवर्तन का कारण निमित्तज्ञो ने इस पुण्यात्मा धापी बाई को ही बताया तो सबने उनका नाम आनद कवर ही रख दिया और यही नाम प्रचलित हो गया। १२–१३ वर्ष की वय मे ही आपका विवाह सोजत के ही निवासी श्री सलराज जी मूथा हाकिम हेमराज जी मूथा के सुपुत्र (राम राम वालो) के साथ हो गया। लेकिन लघुवय मे ही पति वियोग के कारण बाल वैधव्य का पहाड टूट पडा। परिवार वालो ने उनके दु खी मन को सात्वना देने हेतु हरजस और सत्सग मे जाने की प्रेरणा दी क्योकि उनका परिवार राम स्नेही था।

बाद मे आपकी बहिन फूलकवर बाई के सहयोग एव प्रेरणा से महासती जी बडे आनन्द कवर जी, लक्ष्मी कवर जी के पवित्र सान्निध्य को प्राप्त करने लगी। ससार की असारता के स्वरूप को

समझकर उससे विरक्त बन गई और अनेक बाधाओ और उपसर्गो का सामना करके स १९५० पौष बदी १३ को सोजत मे ही दीक्षा ग्रहण की।

उसके बाद अल्पकाल मे ही आपने अपनी विनयशीलता, शुद्ध चारित्रिक निष्ठा और गहन तात्विक चितन का अपूर्व परिचय दिया। जिसके फलस्वरूप कई भव्यात्माए आपकी चरण शरण मे दीक्षित होने लगी। साथ ही इस विविध प्रभाओ से प्रभावित होकर प्रवर्तनी श्री सिरे कवर जी म सा ने ब्यावर मे स १९७४ के जेठ सुदी ४ को अपनी उत्तराधिकारणी के रूप मे प्रवर्तनी पद प्रदान किया। जिसका कि आपने पूर्ण कुशलता से वहन किया। आपकी वृद्धावस्था को देखकर सब सतियो ने भावी प्रवर्तनी की नियुक्ति हेतु पूर्ण समर्पित भाव से प्रतिज्ञा बद्ध होकर एक निवेदन पत्र पेश किया। पत्र की नकल निम्न प्रकार है–

"ॐ नमो भगवते वर्द्धमानाय"

प्रवर्तिनी श्री १०८ रगू जी महासती जी की समप्रदाय के पाटानुपाट विराजत प्रवर्तिनी जी श्री आनन्द कवर जी महासती की आज्ञा मे प्रर्वतने वाली सब सतीये प्रवर्तिनी जी महासती आनन्द कुवर जी को विधिपूर्ण वदना करके अर्ज करती है, कि आप अपना भार "प्रवर्तिनी पदवी का भार" हममे से जिस किसी सती को देगे। उस महासती को हम सब सती ये सहर्ष प्रवर्तिनी मानेगी और तक जैसा आपको मानती आई हैं वैसा उनको मानेगी। आज्ञा धारणा भी उनके जैसी होगी, वैसे ही हम सब रखेगी व पालेगी अर्थात वे प्रवर्तिनी जी हमको जहा चातुर्मास करने को भेजेगी वहीं जायेगे। जिन सतिया की सेवा करने का हुक्म देगे उनकी सेवा प्रेम पूर्वक बजायेगी। जिस सती को जिसके साथ रखेगे, वह उसी के साथ रहेगी और भी जहा–जहा जो जो आज्ञा होगी वहा–वहा वह–वह आज्ञा शिरोधार्य करके पालेगी। कोई भी सती आज्ञा विरूद्ध व सम्प्रदाय की रीति विरूद्ध करेगी नहीं। इतने पर भी कोई सती कर बैठे तो उसका दण्ड उस सती को जैसा वे देगे, वैसा मन्जूर करना होगा। यदि वह मजूर न करे तो हम सब सतिये उसका साथ छोड देगी यानि प्रवर्तिनी जी के विरुद्ध चलने वाली सती के साथ हम कोई तरह का सम्भोग नहीं रखेगी। यह वार्ता नीचे सही करने वाली सतिये आत्म–विश्वास के साथ मन्जूर करती है।"

लेकिन प्रवर्तिनी जी का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया। बाद मे सब सतिये स्वर्गीय आचार्य श्री की क्राति मे सहयोगी बनकर आचार्य श्री के नेतृत्व मे पूर्व सप्रदायो का विलीनीकरण करके पूर्ण समर्पित हो गई।

प्रवर्तिनी श्री रगूं जी महाराज का शिष्या परिवार ·

रगूजी म सा की नेश्राय मे नवलकवर जी म सा, सुदर कवर जी म सा हुए। नवल कवर जी म सा के महासती प्रवर्तिनी राजकवर जी म सा के महासती प्रवर्तिनी सिरेकवर जी म सा, महासती श्री धूला जी महाराज, श्री हरकू जी, महासती श्री फूला जी हुए। इनमे से प्रवर्तिनी महासती राजकवर जी म सा व प्रवर्तिनी महासती श्री सिरेकवर जी म सा एव महासती हरकूजी का शिष्या परिवार वढा।

प्रवर्तिनी राजकंवर जी म.सा. का परिवार ·

प्रवर्तिनी महासती राजकवर के महासती सिरेकवर जी के महासती प्यारा जी, महासती दाना जी, महासती सरसा जी, महासती श्री हीरा जी, महासती श्री गट्टा जी, महासती श्री जीवा जी, महासती श्री चाद कवर जी, महासती श्री माणक कवर जी, महासती श्री सौभाग कवर जी (बडीसादडी), महासती श्री शोभाकवर जी (गिलूड), महासती श्री शोभाग जी (भदेसर), महासती श्री जीवणा जी (बीकानेर), महासती टिपूजी, महासती श्री गोगा जी, महासती श्री जडावकवर जी (कूकडा), महासती श्री सुगन कवर जी (ब्यावर) आदि।

- ❑ महासती श्री हरकू जी के– महासती श्री केशर कवर जी (जयपुर), महासती श्री चम्पाकवर जी म, महासती श्री फूला जी म सा हुए।
- ❑ महासती श्री चम्पाजी म सा के महासती चौथा जी म सा, महासती जवरा जी म सा हुए।
- ❑ महासती चौथा जी म सा के महासती चुना जी, महासती श्री मोडा जी, महासती बडा आनन्द कवर जी म, महासती श्री लिछमा जी म सा हुए।
- ❑ महासती श्री लिछमा जी के प्रवर्तनी महासती आनन्द कवर जी म सा हुए।
- ❑ महासती श्री जवरा के महासती रूपाजी महाराज, महासती सोनाजी महाराज, महासती श्री सोहन जी हुए।

महासती श्री रंगूजी म.सा. की शिष्या सुन्दर कंवर जी म.सा. का परिवार

- ❑ महासती श्री सुदर कवर जी म के प्रवर्तनी श्री रत्न कवर जी म सा हुए।
- ❑ प्रवर्तनी रत्न कवर जी म सा के महासती केशर कवर जी और महासती श्री ककू जी म सा हुए।
- ❑ महासती ककू जी म सा के राजकवर जी और महासती श्री धापू जी म सा हुए।
- ❑ महासती श्री राजकवर जी म सा के महासती श्री सूरजकवर जी म सा, महासती श्री हगाम कवर जी म सा, महासती श्री अम्बा जी म सा, महासती श्री शोभाग कवर जी म सा, महासती श्री मान कवर जी म सा, महासती श्री भूरा जी म सा, महासती श्री गुलाब

कवर जी म सा, महासती श्री कस्तूरा जी म सा, महासती श्री अमृता जी म सा, महासती श्री सले कवर जी म सा, महासती श्री फूल कवर जी म सा, महासती श्री नाथा जी म सा, महासती श्री हगाम जी म सा, महासती श्री गब्बू जी म सा, महासती श्री सज्जन कवर जी म सा हुए।

- महासती श्री सूरज कवर जी म के महासती जैठा जी म सा और महासती श्री राजाजी म हुए।
- महासती श्री हगाम कवर जी म सा के महासती श्री हुलासा जी म सा, महासती बजे कवर जी म सा, महासती श्री झूमा जी म सा हुए।
- महासती श्री तीजा जी म के महासती माणक कवर जी म सा, महासती श्री काला जी म सा, महासती श्री छोटा जी म सा, महासती श्री पन्ना कवर जी म सा शिष्या बनी।
- महासती श्री सुगनकवर जी म के महासती श्री हमीरा जी महाराज , महासती श्री सुहागा जी म सा, महासती श्री धापू कवर जी म सा, महासती श्री लिछमा कवर जी म सा, महासती श्री पन्ना कवर जी म सा, महासती श्री प्यार कवर जी म सा, महासती श्री जतन कवर जी म सा शिष्या बनी।
- महासती श्री लाडा जी सरदार कवर जी म सा शिष्या बनी।
- महासती श्री शोभाग कवर जी म सा के महासती श्री सूरज कवर जी म सा, महासती श्री गगा जी महाराज, महासती श्री सुदर कवर जी म सा, महासती श्री देऊजी म सा, महासती श्री मगन कवर जी म सा शिष्या बनी।
- महासती श्री भूरा जी म सा के महासती श्री अजित कवर जी म सा, महासती श्री केशर कवर जी म सा, महासती श्री इन्द्र कवर जी म, महासती श्री पानकवर जी म सा (वडा) महासती श्री पान कवर जी म सा (छोटा), महासती श्री अणछा जी म सा महासती श्री सुगन कवर जी म सा, महासती श्री धापू कवर जी म सा, महासती श्री गुलाब कवर जी म सा, महासती श्री शाता जी म सा शिष्या बनी।
- छोटा पान कवर जी म सा के महासती श्री पेपकवर जी म सा, महासती श्री नानूकवर जी म सा, महासती श्री फूलकवर जी म सा, महासती श्री इन्द्र कुवर जी म सा, महासती श्री रोशन कवर जी म सा, महासती श्री अनोखा कवर जी म सा, महासती श्री सूर्य कान्ता जी म सा आदि शिष्या बनी।
- महासती श्री गुलाब कवर जी म सा के महासती बख्तावर कवर जी म सा एव महासती श्री पान कवर जी शिष्या बनी।

- महासती श्री फूल कवर जी म सा के महासती फकीरा जी म सा हुए।
- महासती श्री नाथा जी म सा के महासती सूरज कवर जी म सा, महासती श्री सोहन कवर जी म सा शिष्या बनी।
- महासती श्री हगाम कवर जी म सा के महासती श्री चाद कवर जी म सा, महासती श्री नानू कवर जी म सा शिष्या बनी।
- महासती श्री सज्जन कवर जी म सा के महासती श्री मोहन कवर जी म सा, महासती श्री छोटा कवर जी म सा, महासती श्री रसाल कवर जी म सा, महासती श्री लाड कवर जी म सा, महासती श्री सरदार कवर जी म सा आदि शिष्या बनी।

इसके बाद की सभी सतिया आचार्य श्री की नैश्राय मे है।

महासती कंकू जी म.सा. की शिष्या धापू जी म.सा. का परिवार

महासती धापू जी म सा (ब्यावर) के महासती श्री माणक कवर जी म सा, महासती श्री राजकवर जी म सा, (निकुभ वाला), महासती श्री इन्द्र कवर जी म सा, महासती श्री भूरा कवर जी म सा, महासती श्री केशर कवर जी म सा (भीम), केशर कवर जी म सा (रतलाम वाले), महासती श्री सूरज कवर जी म सा (रतलाम वाले), महासती श्री सौभाग कवर जी म सा (बम्बोरा वाले), महासती श्री राजकवर जी म सा (पेटलावद वाले), महासती श्री शोभाग कवर जी म सा (लसडावन वाला), महासती श्री गोगा जी म सा) (रतलाम वाले), महासती श्री चम्पा कवर जी म सा (रतलाम वाले), महासती श्री भूरा कवर जी म सा (उदयपुर वाले), महासती श्री सलेकवर जी म सा (उदयपुर), महासती श्री पानकवर जी म सा (उदयपुर), महासती श्री मनोहर कवर जी म सा (उदयपुर), महासती श्री सायर कवर जी म सा (रडावास), महासती श्री बसन्ता जी म सा (बम्बोरा वाले), महासती श्री चन्द्र कवर जी म सा (रामपुरा वाले), महासती श्री धीरज कवर जी म सा (भदेसर वाले) शिष्या बनी।

रंगूजी महासतियां जी की सम्प्रदाय के दो विभाग

आद्य प्रवर्तनी महासती रगूजी के बाद प्रवर्तनी राजकवर जी म सा हुए और महासती श्री राजकवर जी म सा के बाद महासती रत्न कवर जी म सा हुए और उन के बाद प्रवर्तनी सिरेकवर जी म सा हुए। सिरेकवर जी म सा के बाद सप्रदाय के दो हिस्से हो गये।

एक तरफ प्रवर्तनी छोटे आनन्द कवर जी म सा और दूसरी तरफ प्रवर्तनी प्यारा जी म सा हुए। उनका सती मडल आचार्य मन्नालाल जी की आज्ञा मे विचरने लगा।

प्रवर्तनी महासती श्री आनन्द कवर जी म के पदासीन होते समय उपरोक्त तीनो प्रवर्तनियो का जो परिवार इनके पक्ष मे रहा। उनके नाम इस प्रकार है—

महासती श्री सोना जी महाराज (बीकानेर वाला), महासती श्री राजकवर जी म सा (खवासा वाला), महासती श्री सौभाग कवर जी म सा, महासती श्री रत्नकवर जी महाराज (बीकानेर वाला सेठिया महाराज), महासती श्री सौभाग कवर जी म, महासती श्री हगाम कवर जी म (जावरा वाला), महासती श्री सूरज कवर जी महाराज, महासती श्री केशर कवर जी म सा, महासती श्री महताब कवर जी म सा, महासती श्री बख्तावर कवर जी म सा, महासती श्री चम्पाकवर जी म सा, महासती श्री धापू कवर जी म सा, महासती श्री राजकवर जी म सा, महासती श्री चतर कवर जी म सा, महासती श्री चूना जी म सा, महासती श्री छोटा जी म सा, महासती श्री जडाव कवर जी म सा, महासती श्री सुगन कवर जी महाराज, महासती श्री छगन कवर जी महाराज, महासती श्री बादाम कवर जी महाराज, महासती श्री भवर कवर जी महाराज, महासती श्री रतन कवर जी महाराज, महासती श्री वरजू जी महाराज, महासती श्री गट्टू जी महाराज, महासती श्री धापू कवर जी महाराज (दाता वाला), महासती श्री सरदार कवर जी महाराज, महासती श्री सूरज कवर जी महाराज, महासती श्री सौभाग कवर जी म सा, महासती श्री जीवणा जी महाराज, महासती श्री टीपू जी महाराज, महासती श्री नगीना कवर जी महाराज, महासती श्री धापू जी महाराज (आमेट वाला)।

महासती श्री आनन्द कंवर जी म.सा. की शिष्याओ के नाम

महासती श्री मूला जी महाराज (थादला), महासती श्री चादकवर जी और श्री केशर कवर जी म (मा–बेटी–साथिन वाला), महासती श्री महताब कवर जी म सा एव महासती श्री जतन कवर जी म सा (मा–बेटी पीपाड वाला), महासती श्री रतन कवर जी महाराज, महासती श्री अचरज कवर जी म सा (पीपाड़ा वाला), महासती श्री चाद कवर जी महाराज (मदसौर), महासती श्री दाखकवर जी महाराज, (सोजत सिटी) महासती श्री हमीर कवर जी महाराज (छोटीसादडी वाला), महासती श्री नगीना कवर जी (छोटीसादडी), महासती श्री सरदार कवर जी महाराज (थादला वाला), महासती श्री मैदाजी महाराज (थादला वाला), महासती श्री राजकवर जी (रतलाम) महासती श्री सिरेकवर जी (सोजत सिटी) महासती श्री सुगन कवर जी म सा (रतलाम), महासती श्री झमकु कवर जी महाराज (उदयपुरवाला), महासती श्री सपत कवर जी महाराज I (रतलाम), महासती श्री गुलाव कवर जी महाराज (खाचरौदवाला), महासती श्री इन्द्र कवर जी म सा (मन्दसौर), महासती श्री ककू जी महाराज (देवगढ), महासती श्री सपतकवर जी महाराज II (जावरा वाला), महासती श्री सूरज कवर जी म (विरमावल वाला), महासती श्री सायर कवर जी महाराज (ब्यावर वाला) महासती श्री रोशन कवर जी

महाराज (बडीसादडी), महासती श्री कमला कवर जी महाराज (कानोड), महासती श्री गुलाब कवर जी म सा (रतलामवाला) आदि शिष्याए हुई।

प्रवर्तनी महासती श्री खेताजी महाराज

आपका जन्म थली प्रान्त मे कोटासर निवासी टीकम चन्द जी मालू की धर्मपत्नी जेता बाई की कुक्षि से हुआ था। यौवनावस्था मे प्रवेश पाते ही धूमधाम से शादी हो गई। इसके बाद उत्कृष्ट वैराग्य रग से अनुरजित होकर महासती श्री रगू कवर जी महाराज की तरह पूज्य हुक्मीचन्द जी म सा की क्रियोद्धारक क्राति मे सयम लेकर सहयोगी बने। आपने जीवन भर के लिए दिन मे १ बार भोजन, दो बार पानी पीने के उपरात त्याग कर दिया। आपको देवता सम्बन्धी भी अनेक उपसर्ग आये, लेकिन बिल्कुल विचलित नहीं हुए। आपने अपने पीछे राजकवर जी म सा को प्रवर्तनी पद पर नियुक्त किया। सब सतियो के प्राय पोरसी रहती थी। चौथे प्रहर मे गरम–आहार का तो बिना कारण प्राय निषेध ही था। धोवन पानी भी सीमित मात्रा मे लाना और प्रयोग करने का पूर्ण विवेक रखा जाता था। विहार मे भी गाव मे पोरसी से पहले प्रवेश नहीं करते थे। ऐसे ही सस्कार पीछे आने वाली परम्परा मे चलते रहे। बाद मे इन्होने भी आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के चरणो मे अपना पूर्ण रूपेण समर्पण कर दिया। आगे जो भी दिक्षाए हुई वे सब आचार्य श्री नानालाल जी म सा के नेश्राय मे हुई और हो रही है।

इनकी (खेताजी की म सा) की परम्परा मे पुरानी साध्वियो को प्राप्त जानकारी इस प्रकार है–

खेताजी महाराज, जडाव कवर जी म, दीप कवर जी म, बसता कवर जी म सा, राजकवर जी म सा, सुगन कवर जी म, छोटा किस्तूरा जी म सा, बडा पान कवर जी म सा, चम्पाकवर जी म, लिछमा कवर जी म सा घीसा जी म सा, जीवणा कवर जी म सा, रूप कवर जी म सा, मान कवर जी म सा, किस्तूरा जी म सा, धापू कवर जी म सा, मगन कवर जी म सा, रूक्माकवर जी म सा, पार्वता कवर जी म, पान कवर जी म सा, सूरज कवर जी म सा, मोहन कवर जी म सा, प्यार कवर जी म सा, केशर कवर जी म सा, कचन कवर जी म सा, आनन्द कवर जी म सा, चाद कवर जी म सा, बिदाम कवर जी म सा, सुमति कवर जी म सा, बल्लभ कवर जी म सा, नन्द कवर जी म सा, झमकू कवर जी म सा।

सादडी सम्मेलन मे पधारते समय पूज्य श्री गणेशीलाल जी म सा को अपना समर्पण पत्र पेश किया उसकी प्रतिलिपि–

"पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा के सप्तम पदाधिष्ठित श्री मज्जैनाचार्य श्री १००८ श्री गणेशीलाल जी म सा को सविधि वन्दना करके हम यह प्रार्थना करती हैं कि आप सम्वत् २००९ के वैशाख माह मे जो घानेराव सादडी मे सम्मेलन होने जा रहा है, उसमे पधार रहे है। उस सम्मेलन मे

आप जो विधान और जो समाचारी स्वीकृत करेगे, उस विधान और समाचारी को खेता जी म सा की सम्प्रदाय की नीचे हस्ताक्षर करने वाली हम सब सतिया स्वीकार करेगी।

१	द	१००७	श्री चम्पा कवर जी म सा
२	द		श्री लिछम कवर जी म सा
३	द		श्री जीवन कवर जी म सा
४	द		श्री रूप कवर जी म सा
५	द		श्री सूरज कवर जी म सा
६	द		श्री मोहनकवर जी म सा
७	द		श्री पान कवर जी म सा
८	द		श्री मान कवर जी म सा
९	द		श्री मान कवर जी म सा
१०	द		श्री कस्तूर कवर जी म सा
११	द		श्री प्यार कवर जी म सा
१२	द		श्री केसर कवर जी म सा
१३	द		श्री पारपतो जी म सा
१४	द		श्री पान कवर जी म सा
१५	द		श्री कचन कवर जी म सा
१६	द		श्री रूक्म कवर जी म सा
१७	द		आनन्द कवर जी म सा
१८	द		श्री चाद कवर जी म सा

पूज्य श्री श्री श्री १००८ श्री गणेशीलाल जी म सा के चरण कमलो मे भेजी। आप हुक्म फरमावे सो हम सब १७ ही सतिया को मजूर है।

प्रवर्तनी सुगन कंवर जी म.सा.

आपने मारवाड मे देणोक निवासी रावतमल जी ओसवाल की धर्मपत्नी मगनी बाई की कुक्षि से जन्म धारण किया था। सवत् १९६० के लगभग आपने सयम धारण किया था। आप अपने जमाने की महान विदुषी साध्वी थी। प्रवर्तनी राजकवर जी म सा के पश्चात् खेताजी म सा की सप्रदाय की

सतियो की सार सभलाकर आप ही करती थी। आप मे सयम आराधना बहुत विशेष गुण था। सयमोचित हर क्रिया का बडी सजगता से पालन करती थी। आपने अपनी वृद्धावस्था मे महासती चम्पा जी म सा को सारा भार सभालकर २००७ की पौष सुदी ४ को स्वर्ग पधार गई।

प्रवर्तनी श्री मोता जी महाराज

आप मालव प्रान्त मे रतलाम निवासी थे। पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के पूर्ण वैराग्य रस से ओतप्रोत उपदेशो को श्रवण कर के ससार से विरक्ति हो गई थी। पारिवारिक जन धर्मदास जी महाराज की सप्रदाय के मानने वाले थे। अत्याग्रह लखकर धर्मदास जी महाराज की सप्रदाय मे दीक्षा लेनी पडी। आपके साथ आपकी सहेली उमा जी और उनकी पुत्री ने भी दीक्षा ली थी। तीनो आत्माओ ने दीक्षा तो उस सप्रदाय मे ग्रहण कर ली लेकिन आपकी अन्तर्श्रद्धा तो पूज्य श्री श्रीलाल जी महाराज पर ही थी। वहा आचार–विचार की ढीलता देखकर आखिर तीनो ही पूज्य श्री श्री लाल जी म सा की सेवा मे आ गई और स्वतत्र सिघाडे के रूप मे पूज्य श्री की आज्ञा मे विचरने लगी। आपके शुद्ध चारित्रिक प्रभाव से थोडे समय मे ही शिष्या परिवार अच्छा बढ गया। जितनी सतियो का थोडा बहुत जो कुछ परिचय प्राप्त हुआ वह इस प्रकार है–

प्रवर्तनी श्री मोता जी महाराज (रतलाम), उमा जी महाराज (रतलाम), गेदा जी महाराज (रतलाम), केशर कवर जी महाराज (जावरा), मेहताब कवर जी महाराज (श्यामपुरा) (इनका ससुराल अरनोद था) सुन्दर कवर जी महाराज (रभापुर–आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा के मौसी की लडकी थी) नदू जी महाराज, चम्पा कवर जी महाराज, श्रेय कवर जी महाराज, भूरा जी महाराज I, भूरा जी म सा II, सिणगार कवर जी महाराज I, हुडा जी महाराज, नानू कवर जी महाराज, मैनाकवर जी महाराज, अजय कवर जी महाराज, मान कवर जी महाराज, झमकू जी महाराज, आनन्द कवर जी महाराज, वल्लभ कवर जी महाराज (जावरा), धापू कवर जी महाराज, चाद कवर जी महाराज, तेज कवर जी महाराज (जावरा–छाजेड परिवार से थी), गुलाब कवर जी महाराज (बडावदा), सरदार कवर जी महाराज (उमाकोट), मोताजी म सा II (धानासुता), बादाम कवर जी महाराज (जावरा), गुलाब कवर जी महाराज, शीलकवर जी महाराज, फूल कवर जी महाराज (उज्जैन–गादिया परिवार से थे), कचन कवर जी म सा (बदनावर), सूरज कवर जी महाराज (बदनावर), गुलाब कवर जी महाराज (जावरा–सागरमल जी बाफना की धर्मपत्नी सजोडे मे दीक्षा ली), किस्तूर कवर जी महाराज, शोभाग कवर जी महाराज, धापू कवर जी महाराज, चाद कवर जी महाराज, पान कवर जी म सा, राज कवर जी महाराज, हसकवर जी महाराज, सिरेकवर जी म सा, दाख कवर जी म सा, रतन कवर जी महाराज, चम्पाकवर जी म सा, सिणगार कवर जी म सा, सरदार कवर जी महाराज, उम्मेद कवर जी महाराज, श्रृगार कवर जी म सा II, सुहाग कवर जी म सा, गुलाब कवर जी म सा, कस्तूर कवर जी

म सा, पान कवर जी म सा (बीकानेर), रस कवर जी म सा, राना जी म सा, टाकू जी म सा, चाद कवर जी म सा ।

यह सती मण्डल मोताजी म सा की सप्रदाय के रूप मे प्रख्यात हुआ। बाद मे महासती श्री रगू जी म सा व महासती श्री खेताजी म सा की सप्रदाय की साध्वी समूह के अनुसार इस सप्रदाय की साध्वियो ने भी आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के चरणो मे समर्पण कर दिया उसके बाद जो भी महासतिये दीक्षित हुई वे सब आचार्य श्री नानालाल जी म सा के नेश्राय मे हुई।

महासती श्री नन्दकंवर जी म.सा.

आपका जन्म बीकानेर निवासी श्रीमान् पन्नालाल जी साहब पूगलिया की धर्मपत्नी मैना बाई की कुक्षि से हुआ था। यौवनावस्था मे प्रवेश होने पर बीकानेर निवासी श्री अभय चन्द जी सुराणा के सुपुत्र श्री गभीरमल जी सुराणा के साथ शादी सपन्न हुई। आपके अन्तर्मन मे विरक्ति पैदा हुई और उत्कृष्ट वैराग्य से सवत् १९१० के जेठ सुदी १० को धर्मदास जी महाराज की सप्रदाय के महासती श्री रायकवर जी म सा के पास इन्दौर मे दीक्षा ग्रहण की थी। लेकिन आचार–विचार की अनमेलता के कारण आप एकाकी विचरण करती हुई, बीकानेर प्रान्त की ओर पधार गई और महासती श्री रगू जी महाराज की तरह ही क्रियोद्धारक पूज्य हुक्मेश की यश सौरभ तप तेज से प्रभावित होकर उन पर अटूट आस्था रखते हुए विचरण करने लगी।

उसके बाद ही आपके पास महासती श्री जडाव कवर जी म सा, महासती श्री गुलाब कवर जी म सा, तपस्विनी महासती श्री नानू कवर जी म सा, महासती श्री सदा कवर जी म सा, महासती श्री मूला कवर जी म सा, महासती श्री सुगन कवर जी म सा आदि शिष्याए हुई थीं।

आपके स्वर्गवास के पश्चात भी आपकी शिष्याए तपस्विनी महासती श्री नानू कवर जी म सा, परम विदुषी महासती श्री पानकवर जी म सा आदि व तत्पश्चात महासती श्री किस्तूरा जी म सा, महासती श्री अनोप कवर जी म सा आदि की पूज्य हुक्मेश व उसके पश्चात्वर्ती आचार्यो पर कैसी अटूट श्रद्धा थी, कितनी विनय भक्ति रखती थी, जिसका परम विदुषी महासती श्री पानकवर जी म सा का जीवन चारित्र जो बीकानेर निवासी श्रीमान बुद्धसिह जी सा बैद द्वारा स १९८८ मे लिखकर छपाया हुआ है। उसको पढने से ही ज्ञात हो सकता है और पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के जीवन चारित्र मे जिसका कई जगह उल्लेख प्रस्तुत है–

लेकिन पूज्य ज्ञानचन्द जी म सा, रतन चन्द जी म, मुलतान मल जी म सा, सिरेमल जी म सा आदि सन्त जो पूर्व मे धर्मदास जी महाराज की सप्रदाय के थे। लेकिन आपसी मनमुटाव के कारण वहा से पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा की सेवा मे आये और उनके साथ विचरण करने लगे। उसके बाद मुनि समर्थमल जी म सा के दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् इन सन्तो का उस (नारवाड

के) क्षेत्र मे लगातार विचरण खीचन मे स्थिरवास के कारण व अध्ययन–अध्यापन की निकटता के कारण धीरे–धीरे अन्दर ही अन्दर मे सबध मजवूत होते गये ओर आचार्य श्री नानेश के शासन काल मे स २०२५ के चातुर्मास मे कुछ विचार भेद के कारण पडित श्री समर्थमल जी म सा से सम्बन्ध विच्छेद हो जाने पर यह सती समुदाय भी उनके साथ पूर्ण रूप से जुड गया। जो आज इन्हीं की आज्ञा मे चल रहा है। जिससे आज भी ५० प्रतिशत लगभग साधु–साध्विया आचार्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा की सप्रदाय के श्रावको के परिवार से निकले हुए है।

❑❑❑

नोट – लोहावट निवासी सुखलाल जी ओस्तवाल कहा करते कि जब रतनचन्द जी म पूज्य श्री श्रीलाल जी म के सान्निध्य मे आये तब नदकवर जी की सतिया इनको वदन करने के लिए भी तत्पर नहीं थी लेकिन पूज्य श्री के दबाव से वदन व्यवहार चालू किया। फिर भी अधिक से अधिक घनिष्ठ श्रद्धा इस शासन के साथ बनी रही। उसी का श्रेय था कि मुनि तोलाराम जी को छोटी वय मे पूज्य श्री गणेशीलाल जी म की नेश्राय मे दीक्षित कर माता श्री व भगिनी ने रामकवर जी म के पास दीक्षा ली और रामकवर जी म तो स्पष्ट कहते कि मैं तो पू श्री गणेशीलाल जी म की नेश्राय मे हूँ साथ ही पानकवर जी म का जीवन भी स्पष्ट बताता है कि उनका इस परम्परा के साथ कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है।

आचार्य नानेश के पूर्व की दीक्षित सतियों का प्राप्त परिचय

महासती श्री तेज कवर जी म.सा.

आपने जावरा निवासी श्रीमान बाल चन्द जी छाजेड की धर्मपत्नी श्रीमती नन्द कवर बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। दीक्षा काल के पश्चात् अतिम अवस्था मे जावरा मे स्थिरवास रही ओर वि स २०३२ आसोज सुदी १० तदनुसार १४ अक्टूबर १९७५ को जावरा मे स्वर्ग पधारीं।

महासती श्री सुगन कवर जी महाराज ·

आपने ब्यावर निवासी श्रीमान गुलावचन्द जी मकाणा की धर्मपत्नी श्रीमती राजकवर बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। वि स १९६४ की मिगसर बदी ६ को जेन भागवती दीक्षा अगीकार की। मरुधर प्रान्त मे सिहनी की भाति आपने विचरण किया। अजमेर के सन्निकट विचरण करते हुए, शरीर मे लकवा (पक्षाघात) होने से आप ब्यावर मे स्थिरवास रही। वि स २०३४ सावन सुदी १५ (रक्षा बन्धन) तदनुसार २८ अगस्त १९७७ को स्वर्ग पधारी।

महासती श्री गट्टू कवर जी म.सा.

आपने अरनोद निवासी श्री मान् भागीरथ जी डागी की धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्रा बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। यौवनवय मे निम्बाहेडा (नबाव) निवासी श्रीमान् कृतमलजी सिघवी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग के पश्चात् अपने पुत्र समीरमल (वीरवाल जैन समाज के सस्थापक) के साथ उत्कृष्ट वैराग्य के साथ सवत् १६८१ माघ सुदी ५ को आचार्य श्री जवाहरलालजी म सा के शासन मे दीक्षा ग्रहण की। दीर्घकाल तक शासन की सेवा करती रही। साध्यकाल मे कानोड मे स्थिरवास विराजी और वि स २०३२ माघ बदी ५ तदनुसार २२ जनवरी १६७६ को कानोड मे स्वर्ग सिधारी।

महासती श्री जीवना जी म.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् हमीरमल जी पारख की धर्मपत्नी श्रीमती मघाबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। वि स १८७६ मिगसर सुदी १३ को आपने जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की। दीर्घकाल तक आपने शासन की सेवा की। वृद्धावस्था मे आप बीकानेर मे ही वि स २०३४ चैत्र सुदी ५ तदनुसार २५ मार्च, १९७७ को स्वर्ग प्रयाण किया।

महासती श्री सूरज कंवर जी म.सा.

आपने दासोडी निवासी श्रीमान् आज्ञाराम जी सचेती की धर्मपत्नी गवराबाई की कुक्षि से वि स १९५८ मिगसर की ११ को जन्म ग्रहण किया। भीनासर निवासी श्रीमान् लालचन्द जी चौरडिया के साथ आपका विवाह सम्पन्न हुआ। ससार को असार समझकर वि स १९८४ मिगसर बदी ७ को चुरु (थली प्रात) मे आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा के द्वारा भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप अनुशासन प्रिय व मधुर व्याख्यात्री थी। अतिम समय मे भीनासर मे विराजते–विराजते २५ मई, १९८३ को स्वर्ग पधारीं।

महासती श्री मोहन कंवर जी म.सा. -

आपने देशनोक निवासी श्री मोहनलाल जी गोलछा की धर्मपत्नी श्रीमती धापू बाई की कुक्षि से वि स १९६९ को जन्म ग्रहण किया। सूरतमल जी भूरा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। ससार वैचित्र्य को लखकर आपने चुरु मे आचार्य श्री जवाहरलाल के पास वि स १९८४ मिगसर बदी ७ को दीक्षा ग्रहण की। आप मृदृ भाषी व भद्रिक मना थी। १२ मई, १९८४ शनिवार को भीनासर मे देह त्यागकर स्वर्गधाम पहुची।

महासती श्री छोटा कंवर जी म.सा. :

आपने भिणाय निवासी श्रीमान् मूलचन्द जी लोढा की धर्मपत्नी श्रीमती भूरी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। जेठाणा निवासी बालचन्द जी कोठारी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। वि स १९८४ मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। दीर्घकाल तक शासन की सेवा करती हुई ब्यावर मे वि स २०३४ आसोज बदी ७ तदनुसार ४ सितम्बर १९७७ को स्वर्ग की ओर प्रयाण किया।

महासती श्री सुगन कंवर जी म.सा. :

आपने झडाऊ निवासी श्रीमान् सिद्धकरण जी तातेड की धर्मपत्नी श्रीमती फताबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। बीकानेर निवासी श्रीमान् बीजराज जी सेठिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। वि स १९८४ फाल्गुन बदी ९ को जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की। धर्म साधना करती–करती बीकानेर मे ५ जून, १९७५ वि स २०३२ जेठ बदी ११ गुरुवार को स्वर्ग पधारीं।

महासती श्री सिरेकवर जी म.सा.

आपने सोजत नगर निवासी श्रीमान् पूनमचन्द जी श्रीश्रीमाल की धर्मपत्नी श्रीमती सीताबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। सोजत निवासी श्रीमान गुलाबचन्द जी सियाल के साथ आपका विवाह सम्पन्न हुआ। वि स १९८४ को चुरु मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की। ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना करती हुई वर्तमान मे आप बीकानेर मे स्थिरवास विराजमान रही हैं।

महासती श्री मान कवर जी म.सा. -

आपने अलाय निवासी श्रीमान मघराज जी बैद की धर्मपत्नी श्रीमती रूक्मा देवी की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। सत्सगति से प्रभावित होकर आपने भागवती दीक्षा ग्रहण की। आत्मिक साधना करते–करते अन्त मे भीनासर मे काल धर्म को प्राप्त हुई।

महासती श्री छगन कंवर जी म.सा. -

आपने नागेलाव (ब्यावर) निवासी श्रीमान् राजमल जी खींवसरा की धर्मपत्नी श्रीमती हुलास बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका बिडकचावास निवासी श्री तेजकरण कोठारी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। सत्सगत से धर्म भाव जागृत हुआ और भागवती दीक्षा ग्रहण की। धर्म साधनामय

जीवन व्यतीत करती हुई उदयपुर मे १६ फरवरी, १९७२ को स्वर्गधाम पहुची।

महासती श्री टीपू कवर जी म.सा.

आपने डूगला (मेवाड) निवासी श्रीमान् धनराज जी बम्ब की धर्मपत्नी श्रीमती धूल बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। यौवनवय मे भैरूलाल जी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। वि स १९८८ माघ सुदी पचमी को बडीसादडी मे जेन भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप मधुर व्याख्यानी व तेजस्वी साध्वी रत्न थी। वृद्धावस्था मे ब्यावर के आस–पास विचरण करती रही, आखिर मे २३ अक्टूबर, १९८१ को ब्यावर मे स्वर्गधाम मे पहुचीं।

महासती श्री वल्लभ कंवर जी म .

आपने जावरा निवासी श्रीमान् रूपचन्द जी खीमेसरा की धर्मपत्नी श्रीमती जडाव बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया और जावरा मे ही रतनलाल जी मेहता से विवाह हुआ और १९८७ पौष सुद २ को निसलपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आप अच्छी सेवाभाविनी ओर शासन प्रभाविका हैं। वर्तमान मे वृद्ध सतियो की सेवा के कारण कई वर्षो से मदसौर नई आवादी मे विराज रही हैं। वर्तमान साध्वी समूह मे आपका दूसरा नम्बर है।

महासती श्री रसाल कंवर जी म सा. .

आपने भिणाय निवासी श्रीमान् मूल चन्द जी लोढा की धर्मपत्नी श्रीमती भूरीबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था और किसनगढ निवासी अमरचन्द जी लुणावत से विवाह हुआ और सवत् १९८९ चैत्रवद ३ को किसनगढ मे ही दीक्षा सम्पन्न हुई थी। आपने कई वर्षो तक सयम का पालन करके शासन की अच्छी प्रभावना की। महासती छोटा जी म सा आपकी ससारपक्षीय बडी बहिन थी। जिनकी आपने अतिम समय तक सेवा की और बाद मे ब्यावर मे स्थिरवास विराजीं और वहीं पर स्वर्गवास हुआ।

महासती श्री पान कवर जी म.सा.

आपने उदयपुर निवासी गेंगराज जी हीगड की धर्मपत्नी सलेकवर जी की कुक्षि से स १९८० कार्तिक सुद ५ को जन्म ग्रहण किया। बाद मे अपने पिताश्री के सयम मे अन्तराय देने के त्याग होने के कारण सवत् १९९१ चैत्र सुदी १३ को अपनी माताजी व छोटी बहिन मनोहर कवर जी के साथ १० वर्ष की लघुवय मे ही भीण्डर मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप वर्तमान मे अच्छी विदुषी शासन प्रभाविका महासती जी हैं और सघ सघपति पर पूर्ण समर्पित है।

महासती श्री मनोहर कंवर जी म सा.

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान गेगराज जी हींगड की धर्मपत्नी श्री सलेकवर जी की कुक्षि से स १९८२ पोष सुदी १ को जन्म ग्रहण किया। आपने माताजी व बडी बहिन पान कवर जी के साथ

९ वर्ष की लघुवय मे ही १९९१ चैत्र सुदी ३ को भीण्डर मे दीक्षित होकर आपने गहन अध्ययन किया और शासन मे परम विदुषी ओजस्वी वक्त्री एव महान शासन प्रभाविका बनीं। अतिम समय तक सिहनी की भाति विचरण करते हुए अकस्मात् स २०३९ की चैत्र सुदी ७ को सुवासरा मडी मध्यप्रदेश मे स्वर्गवास हो गया।

महासती श्री सपत कुंवर जी म.सा. :

आपने रतलाम निवासी श्रीमान् रिखबचन्द जी शिशोदिया की धर्मपत्नी गुलाब कवर बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया और यौवनावस्था मे प्रवेश करते ही वि स १९८२ चैत्र सुदी ९ को उत्कृष्ट वैराग्य से दीक्षा ग्रहण की थी। दीक्षा रतलाम मे हुई। आप अच्छी विदुषी एव उत्कृष्ट सेवा–भावी साध्वी रत्न हैं। शासन की हर रूग्ण साध्वियो की इस अवस्था मे भी सेवा हेतु तत्पर रहती हैं। आपकी सेवा भावना ने ही आपकी ससार पक्षीय माताजी को ७० वर्ष की वृद्धावस्था मे दीक्षा प्रदान कराई व अतिम समय तक उनको पूर्ण साथ देकर, उनका अतिम जीवन सुधारा। आपके ससार पक्षीय नानाजी (तारा चन्द जी म सा), मामाजी (चादमल जी म सा व सागरमल जी म सा) भी शासन मे दीक्षित थे।

महासती श्री गुलाब कवर जी म.सा. :

आपने खाचरोद निवासी श्रीमान् प्यारचन्द जी सा मेहता की धर्मपत्नी कस्तुर बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया और श्रीमान् चम्पालाल जी माडोत रिंगणिया वालो के साथ विवाह सम्पन्न हुआ था। अकस्मात् पति वियोग के पश्चात् स १९९२ वैशाख बदी ६ को खाचरोद मे उत्कृष्ट विरक्त भाव से दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान मे आप सकारण ब्यावर विराज रही हैं। आपने शासन की सुदूर क्षेत्रो मे विचरण कर शासन की महान प्रभावना की। आपकी बोली मे बहुत माधुर्यता है।

महासती श्री प्यार कंवर जी म.सा. :

आपने अलाय निवासी श्रीमान् किशनलाल सखलेचा की धर्मपत्नी श्रीमती मूली बाई की कुक्षि से स १९६७ पौष बदी १० को जन्म ग्रहण किया था और गोगोलाव निवासी जेठमल जी काकरिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। लेकिन अकस्मात पति वियोग से आपका अतरमन विरक्त हो उठा। अपने हिस्से की लाखो की सम्पत्ति का परित्याग कर स १९९५ वैशाख सुदी ३ को गोगोलाव मे दीक्षा ग्रहण की। आप बोल–थोकडो की अच्छी ज्ञाता एव कथाओ की भडार थी। आपकी व्याख्यान शैली मारवाडी भाषा मे बहुत मर्मस्पर्शी थी। आपने भी सुदूर क्षेत्रो मे विचरण कर अच्छी शासन प्रभावना की और अतिम समय भीनासर मे ९–११–८४ की सायकाल ६ बजे स्वर्गवास हो गई।

महासती श्री केशर कवर जी म.सा. :

आपने सुरपुरा निवासी श्रीमान् शिवदास जी डागा की धर्मपत्नी तुलसी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था और बीकानेर निवासी पानमल जी गोलछा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग

के बाद १९९५ जेठ सुदी ४ को बीकानेर मे ही दीक्षा ग्रहण की। बाद मे कुछ बोल–थोकडो का ज्ञान प्राप्त कर शास्त्रो की वाचनी की। आप मारवाडी भाषा मे व्याख्यान देती हैं और अभी सकारण नोखामडी विराजमान है।

महासती श्री राज कंवर जी म.सा. ·

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् मुन्नीलाल जी दस्साणी की धर्मपत्नी सिरिया बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया और वहीं पर श्रीमान् चौथमल जी कोठारी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। दो पुत्र भवरलाल जी और झवरलाल जी ओर पुत्रियो के ममत्व को त्याग कर आपने अपने पतिदेव के साथ ही उत्कृष्ट भाव से बीकानेर मे ही १९९६ आषाढ सुदी ३ को आदर्श त्याग के साथ ही दीक्षा ग्रहण की। आप सरलमना स्वाध्याय प्रिय और शासन समर्पित महा तपस्विनी साध्वी रत्ना थीं। वृद्धावस्था मे भी छत्तीसगढ जैसे दुरूह क्षेत्रो मे विचरण किया और बाद मे बीकानेर स्थिरवास विराज कर वहा स्वर्गवास हो गई।

महासती श्री गुलाब कंवर जी म.सा.

आपने जावरा निवासी श्रीमान् रिखब चन्द जी मेहता की धर्मपत्नी केशर बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया और जावरा मे ही सागरमल जी बाफना के साथ विवाह सम्पन्न किया। लेकिन आपके दोनो के अन्तर मन मे विरक्ति पैदा होने से सागरमल जी ने तो समर्थमल जी म सा के पास दीक्षा ग्रहण की। बाद मे अकेले ही विचरे और आपने १६६७ पोष सुदी २ को दीक्षा ग्रहण की। आप अत्यधिक स्वाध्याय प्रेमी हैं और अभी इस वृद्धावस्था मे खडी–खडी लम्बे समय तक स्वाध्याय करती रहती हैं और सकारण मदसौर विराजमान हैं।

महासती श्री धापूकंवर जी म.सा. ·

आपने भीनासर निवासी श्रीमान् रगलाल जी पटवा की धर्मपत्नी गगाबाई की कुक्षि से जन्म लिया और बाठिया परिवार मे विवाह हुआ था। पति वियोग के पश्चात् १९९८ भादवा बदी ११ को भीनासर मे दीक्षा सम्पन्न हुई।

महासती श्री कंकूजी म.सा.

आपने देवगढ निवासी श्रीमान् रगलाल जी पोखरना की धर्मपत्नी कोमल बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था और देवगढ के ही श्रीमान् तोलाराम जी गाधी के साथ विवाह हुआ। उसके बाद अपने पुत्र की ममता मारकर पति वियोग के पश्चात १९९८ मिगसर सुदी ६ को देवगढ मे ही दीक्षा ग्रहण की। आप स्पष्ट भाषी और तपस्विनी हैं। वर्तमान मे ब्यावर सकारण विराजमान है।

महासती पेप कवर जी म.सा. ·

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् सोहनलाल जी सा कोठारी की धर्मपत्नी श्रीमती जतनबाई

की कुक्षि से स १९७६ पौष सुद ८ को जन्म ग्रहण किया था। यौवनावस्था मे बीकानेर के श्रीमान भवरलाल जी नाहटा के साथ विवाह हुआ। लेकिन अकस्मात् पति वियोग से आपके मन मे ससार से विरक्ति हो गई और १९९९ जेठ बदी ७ को बीकानेर मे दीक्षा ग्रहण की। आप सघ मे कर्मठ सेवाभाविनी एव प्रमुख सलाहकार है। सुदूर प्रान्तो मे विचरण करके शासन की महान प्रभावना कर रही हैं।

महासती श्री नानू कवर जी म.सा.

आपने देशनोक निवासी श्रीमान् किशनलाल जी बोथरा की धर्मपत्नी पार्वती बाई की कुक्षि से वि स १९८४ मे जन्म ग्रहण किया था। यौवनावस्था मे प्रवेश होते ही देशनोक निवासी श्रीमान् सूरजमल जी छाजेड के साथ खूब धूमधाम से विवाह हुआ। लेकिन कर्मयोग से कुछ दिन बाद ही पतिदेव का आकस्मिक वियोग हो गया। इस दुखद वातावरण से आपका मन ससार से विरक्त हो गया और १९९९ आषाढ सुदी ३ को देशनोक मे दीक्षा ग्रहण की, उसके पश्चात् आपने बोल, थोकडो के साथ सस्कृत, प्राकृत, न्याय व्याकरण आदि का गहन अध्ययन किया। आप शासन मे एक दिव्यमान परम विदुषी एव ओजस्वी व्याख्यात्री है, साथ ही प्रमुख सलाहकार भी। आप सुदूर उडीसा, छत्तीसगढ, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, आध्र प्रदेश मे विचरण कर शासन की महान प्रभावना कर रही हैं।

महासती श्री पान कवर जी म.सा.

आपने भीनासर निवासी श्रीमान् लाभचन्द जी रामपुरिया की धर्मपत्नी लक्ष्मी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था और यौवनावस्था मे लूणकरणसर निवासी कालूराम जी बोथरा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ था। आपने १९९९ माघ सुदी ५ को देशनोक मे दीक्षा ग्रहण की। उसके पश्चात बोल, थोकडे व शास्त्रो का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और निर्मल तप सयम की आराधना करते हुए भीनासर मे दिनाक ३०–४–१९७५ को स्वर्गवासी हो गई।

महासती श्री लाडकवरजी म.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् लाभचन्द बडेर की धर्मपत्नी लक्ष्मी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था और वहीं पर जेठमल जी मुकीम से विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग के पश्चात् पुत्र पुत्रियो का ममत्व त्याग कर २००० की चैत्र बदी १० को बीकानेर मे ही दीक्षा ग्रहण की। निर्मल तप सयम का आराधन करके २०४६ वैशाख सुदी १२ को दिनाक १८–५–८९ ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ।

महासती श्री धापू कवर जी म.सा.

आपने दाता (नानेश नगर) निवासी श्रीमान् मोडीलाल जी पोखरना की धर्मपत्नी श्रृगार बाई की कुक्षि से जन्म लिया था। यौवनावस्था मे चिकारडा निवासी प्यारचन्द जी कोठारी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री नानालाल जी आपके सहोदर भाई है। भाई की दीक्षा के पश्चात् आपको भी ससार से विरक्ति हो गई और २००१ मे चैत्र सुदी १३ को भीलवाडा मे दीक्षा ग्रहण की। आप महान्

भाग्यशाली एव ऋजुमना साध्वी हैं। अभी सकारण बीकानेर मे विराजमान हैं।

महासती श्री कचन कवर जी म.सा.

आपने अलीगढ निवासी श्रीमान् मोतीलाल जी पोरवाल की धर्मपत्नी केसर बाई की कुक्षि से जन्म लिया। योवनावस्था मे सवाई माधोपुर निवासी गोपीलालजी पोरवाड के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। लेकिन कुछ ही समय पश्चात् आप दोनो के मन मे विरक्ति पैदा हो गई और २००१ वैशाख सुदी २ को दीक्षा ग्रहण की। उसके बाद आपके पति ने भी दीक्षा ग्रहण की। आप भी अच्छी विदुषी एव व्याख्यात्री साध्वी हैं और सुदूर प्रान्तो मे विचरण करके अच्छी शासन प्रभावना कर रही हैं।

महासती श्री सूरज कंवर जी म.सा.

आपने रिंगनोद निवासी श्रीमान् राजमल जी पगारिया की धर्मपत्नी धापू बाई की कुक्षि से १९७८ को पौष सुदी ८ को जन्म ग्रहण किया था और योवनावस्था मे बिरमावल निवासी घेवरचद जी सोनी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग के पश्चात् आपका मन ससार से विरक्त हो गया। तब सवत् २००२ का माघ सुदी १३ को बिरमावल मे ही दीक्षा ग्रहण की। आप भी सरल स्वाभावी साध्वी रत्ना है।

महासती श्री भवर कंवर जी म.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् मगलचन्द जी सोनावत की धर्मपत्नी पानी बाई की कुक्षि से वि स १९८८ आषाढ बदी १ को जन्म ग्रहण किया। यौवनावस्था मे बीकानेर निवासी नथमल जी बाठिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। लेकिन कुछ ही समय पश्चात् पति वियोग से आपकी ससार से विरक्ति हो गई और वि स २००३ वैशाख बदी १० को बीकानेर मे ही दीक्षा ग्रहण की। आप अच्छी विदुषी मिलन–सारणी और व्याख्यात्री साध्वी रत्न हैं और सुदूर प्रातो मे विचरण कर शासन प्रभावना कर रही है।

महासती श्री फूल कंवर जी म.सा.

आपने कुस्तला निवासी बजरगलाल जी पोरवाल की धर्मपत्नी भूरी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया और यौवनावस्था मे नरसिह जी पोरवाल के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। अकस्मात् पति वियोग हो जाने से ससार से उदासीनता आ गई और सत–सगत के योग से मन मे विरक्त भाव की उत्पत्ति हुई और २००३ चैत्र सुदी ९ को सवाई माधोपुर मे दीक्षित हुई। आपके कठ मे बडी माधुर्यता है और कथा का विशाल भडार है। जिससे आप ग्रामीणवासियो को सहज धर्म की ओर उन्मुख करती हुई सुदूर प्रान्तो मे विचरण कर धर्म व शासन की प्रभावना कर रही है।

महासती सपत कंवर जी म.सा.

आपने जावरा निवासी श्रीमान् मिश्रीलाल जी बोहरा की धर्मपत्नी सज्जन बाई की कुक्षि से वि स १९८० आसोज बदी ११ को जन्म ग्रहण किया था। झमकलाल जी श्रीश्री माल के साथ विवाह

सम्पन्न हुआ और पति वियोग हो जाने से २००३ आषाढ बदी १० को ब्यावर मे दीक्षा सम्पन्न हुई। आप शात स्वभावी विदुषी और व्याख्यात्री साध्वी हैं और सुदूर प्रान्तो मे विचरण कर शासन प्रभावना कर रही है।

महासती श्री सायर कवर जी म.सा. ·

आपने केशरी सिह जी का गुडा मारवाड निवासी श्रीमान् शेषमल जी गाधी की धर्मपत्नी मगन बाई की कुक्षि से १९८३ माघ सुदी १३ को जन्म धारण किया था और रडावास निवासी श्रीमान् नेमीचन्द जी गुलगुलिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग पश्चात् पूर्ण वैराग्य भाव से २००४ चैत्र सुदी २ को राणावास मे धूमधाम से दीक्षा ग्रहण की। आप भी सरल–स्वभावी, मिलनसार व्याख्यात्री साध्वी है और सुदूर प्रातो मे विचरण कर शासन प्रभावना कर रही है।

महासती श्री नगीना जी म.सा. .

आपने वासनी (मारवाड) निवासी श्रीमान् दौलतराम जी गुलगुलिया की धर्मपत्नी डगरी बाई की कुक्षि से जन्म धारण किया था और राणावास निवासी गुलाबचन्द जी डूगरवाल के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। उसके पश्चात् पति वियोग होने के कारण २००४ मिगसर सुदी ५ को राणावास मे दीक्षा ग्रहण की और तप सयम का आराधना करते हुए सवत् २०४२ सावन सुदी दिनाक २६–७–८५ को ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ।

महासती श्री आणद कवर जी म.सा. :

आपने देशनोक निवासी श्रीमान् लक्ष्मीचन्द जी दुगड की धर्मपत्नी सुगनी बाई की कुक्षि से वि स १९९५ कार्तिक बदी १५ दीपावली को जन्म धारण किया और देशनोक निवासी अमरचन्द जी धाडीवाल के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग पश्चात् २००३ चैत्र सुद १३ को देशनोक मे ही दीक्षा सम्पन्न हुई और निर्मल तप सयम का आराधन करते हुए दिनाक २६–४–८३ को बीकानेर मे स्वर्गवास हो गया।

महासती श्री गुलाबकंवर जी म.सा. .

आपने उदयपुर (खेमली) निवासी श्रीमान् पन्नालाल जी धर्मावत की धर्मपत्नी नानी बाई की कुक्षि से वि स १९८२ चैत्र बदी ४ को जन्म ग्रहण किया था और उदयपुर मे ही तख्तमल जी पोरवाल से विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग पश्चात् वि स २००६ माघ सुदी १ को उदयपुर मे ही दीक्षा सम्पन्न हुई। आप सरल स्वभाविनी व सेवाभाविनी साध्वी रत्ना है और अच्छी शासन प्रभावना कर रही हैं।

महासती श्री कस्तूर कंवर जी म.सा.

आपने कुकडेश्वर निवासी श्रीमान् हजारीमल जी बोहरा की धर्मपत्नी मोती बाई जी कुक्षि से १९६५ चैत्र बदी ३ को जन्म धारण किया था और वि स २००७ पौष बदी ९ को खाचरोद मे दीक्षा

ग्रहण की। आप सरल स्वभावी एव साधना प्रिय साध्वी हैं।

महासती श्री सायरकवर जी म सा. ·

आपने ब्यावर निवासी श्रीमान् मिश्रीलालजी गुलेछा की धर्मपत्नी मिश्री बाई की कुक्षि से वि स १९८१ माघ सुदी ५ को जन्म धारण किया था और ब्यावर मे ही शातिलाल जी कोठारी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। लेकिन अकस्मात् पति वियोग से विरक्त बनकर वि स २००७ जेठ सुदी ५ को ब्यावर मे ही दीक्षा ग्रहण की। आप अच्छी विदुषी एव व्याख्यानी साध्वी है, जहा भी पधारती हैं, वहा अच्छी शासन प्रभावना करती हैं।

महासती श्री चाद कंवर जी म.सा. ·

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् डूगरमलजी डागा की धर्मपत्नी मक्खू बाई की कुक्षि से स १९८१ जेठ सुदी ५ को जन्म लिया था। फिर बीकानेर निवासी भवरलाल जी तातेड के साथ विवाह सम्पन्न होने के पश्चात् पति वियोग हो जाने से वि स २००८ फाल्गण बदी ८ को दीक्षा ग्रहण की थी। आप शान्त प्रिय एव तत्त्वज्ञा साध्वी है और वर्तमान मे शासन की अच्छी प्रभावना कर रही हैं।

महासती श्री पान कंवर जी म.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् राजमल जी बोथरा की धर्मपत्नी इन्द्रा बाई की कुक्षि से जन्म धारण किया था और बीकानेर निवासी फतेहचन्द जी कोठारी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। सवत् २००९ जेठ बदी ६ को बीकानेर मे दीक्षा सम्पन्न हुई। आप अच्छी स्वाध्याय प्रेमी है और वर्तमान मे मदसौर स्थिरवास विराजमान है।

महासती श्री सूरजकवर जी म.सा. ·

आपने बगडी (रायपुर M P) निवासी श्रीमान् नथमल जी धाडीवाल की धर्मपत्नी पानी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था और नागौर (मद्रास निवासी) श्रीमान् कन्हैयालाल जी बैद मूथा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग के पश्चात् स २००९ आसोज सुदी ४ को उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। बाद मे प्राकृत, सस्कृत आदि का गहन अध्ययन किया और सुदूर प्रान्तो मे विचरण किया और अच्छी शासन प्रभावना करते हुए, अकस्मात् ब्यावर मे स्वर्गवास हो गया। आपके ससार पक्षीय भाई सम्पतराज जी म और भाभीजी निरूपमा श्री जी म सा हैं।

महासती श्री उगम कवर जी म.सा. :

आपने मसुदा निवासी श्रीमान् रगलाल जी डोसी की धर्मपत्नी धापू बाई की कुक्षि से जन्म धारण किया था और बाबरा खीवेसरा परिवार मे विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग के पश्चात् वि स २०१० मे दीक्षा ग्रहण की थी और तप सयम की आराधना करते हुए वि स २०४२ में ब्यावर मे स्वर्गवास हुआ।

महासती श्री इन्द्र कवर जी म.सा. .

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् हनुमान मल जी बच्छावत की धर्मपत्नी गगा बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था। बीकानेर निवासी दीपचन्द जी बेगानी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ और कुछ दिनो बाद ही पति वियोग से मन उद्वेलित हो गया। ससार की असारता को समझ वि स २००९ चैत्र बदी ५ को बीकानेर मे दीक्षा ग्रहण की। उसके पश्चात् हिन्दी, सस्कृत व प्राकृत का गहन अध्ययन किया। साथ ही शास्त्रो का तलस्पर्शी अध्ययन किया। आप शासन मे परन विदुषी और व्याख्यात्री साध्वी रत्ना है और शासन की महाप्रभावना कर रही हैं।

महासती श्री बादाम कवर जी म सा.

आपने मेडतासिटी निवासी श्रीमान् सूरजमलजी कोठारी की धर्मपत्नी सुगनी बाई की कुक्षि से वि स १९८१ माघ बदी ११ को जन्म ग्रहण किया और कडलु निवासी दुलीचन्द जी पीपाडा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ और पति वियोग पश्चात् वि स २०१० जेठ बदी ३ को बीकानेर मे दीक्षा ग्रहण सम्पन्न हुई। आप मिलनसार एव समर्पित साध्वी हैं और शासन प्रभावना कर रही हैं।

महासती श्री सुमति कंवर जी म.सा. .

आपने झझू निवासी श्रीमान् गुणचन्द जी सेठिया की धर्मपत्नी वल्लभ बाई की कुक्षि स १९९२ आसोज सुदी ३ को जन्म ग्रहण किया था और गगाशहर निवासी छगनमल जी सुराणा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग के पश्चात् वि स २०११ वैशाख सुदी ५ को भीनासर मे दीक्षा ग्रहण की। आप अच्छी विदुषी व्याख्यात्री साध्वी है और शासन प्रभावना कर रही हैं। आपके माताजी वल्लभ कवर जी, देवर जेठुती शाता कवर जी, पोती आरती जी और नणदोई करणी दान जी म सा ने भी दीक्षा ग्रहण की।

महासती श्री इचरज कवर जी म सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् फूसराज जी बाठिया की धर्मपत्नी भवरी बाई की कुक्षि से वि स १९९४ आषाढ सुदी ९ को जन्म ग्रहण किया था और बाद मे यौवनावस्था मे बीकानेर निवासी भवरलाल जी डागा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग के पश्चात् वि स २०१३ की आसोज सुदी १० को गोगोलाव मे दीक्षा ग्रहण की। आप सेवाभावी साध्वी रत्ना है और तपस्विनी है।

महासती श्री वल्लभ कवर जी म.सा.

आपने देशनोक (गुडा) निवासी श्रीमान् बुधमल जी छल्लाणी की धर्मपत्नी सुरती बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था और झझु निवासी गुणचन्द जी सेठिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। अकस्मात् पुत्र, पति, जवाई जी के वियोग से आपके मन मे ससार से विरक्ति उत्पन्न हो गई और वि स २०१३ मि सु ११ को भीनासर मे दीक्षा ग्रहण की और अनेक क्षेत्रो मे विचरण करके शासन

प्रभावना करते हुए, भीनासर मे ही ७२ दिन के सथारे सहित वि स २०४२ सावण सुदी १० को स्वर्गवास हुई।

महासती श्री चन्द्र कवर जी म.सा ·

आपने रामपुरा निवासी श्रीमान् रतनलाल जी धाकड की धर्मपत्नी रूपा बाई की कुक्षि से वि स १९७२ सावण सुदी १५ को जन्म लिया था। कुकडेश्वर निवासी श्रीमान् कन्हैयालाल जी जोधावत के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। उनके वियोग के वाद मे वि स २०१४ फाल्गुण सुदी ३ को कुकडेश्वर मे दीक्षा ग्रहण की थी। आप सरल स्वभावी और सेवाभावी साध्वीरत्ना हैं।

महासती श्री सरदार कवर जी म सा

आपने अजमेर निवासी श्रीमान् कस्तूरचन्द जी सेठिया की धर्मपत्नी चूकीबाई की कुक्षि से वि स १९८६ माघ बदी ८ को जन्म ग्रहण किया था और वि स २०१५ वैशाख सुदी ६ को उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आप अच्छी विदुषी, मिलनसार एव शासन प्रभाविका साध्वी है।

महासती श्री शान्ता कवर जी म सा ·

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् ख्यालीलाल जी बाफना की धर्मपत्नी मोहनबाई की कुक्षि से वि स १९९७ वैशाख बदी ७ को जन्म ग्रहण किया था और श्रीमान् शोभालाल जी सा मेहता के पुत्र से उदयपुर मे ही विवाह सम्पन्न हुआ। मगर अकस्मात् पति देव के वियोग से आपके दिल मे ससार से अरुचि पैदा हो गई और वि स २०१६ जेठ सुदी ११ को उदयपुर मे ही दीक्षा ग्रहण की। आप सेवाभाविनी मिलनसार साध्वी जी हैं।

महासती श्री रोशन कवर जी म सा

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् मनोहर सिह जी हिरण की धर्मपत्नी (प्रथम) प्रेमबाई की कुक्षि से वि स १९८८ माघ सुदी ११ को जन्म ग्रहण किया था और युवावस्था मे नरपतसिह जी मुर्डिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पर आपके अन्तर–मन से ससार से उदासीनता आ गई और पतिदेव एव पुत्री के ममत्व का परित्याग कर उत्कृष्ट वैराग्य के साथ स २०१७ आ सु १५ को कानोड मे दीक्षा ग्रहण की। आप अच्छी विदुषी साध्वी हैं और सुदूर विचरण करके शासन की अच्छी प्रभावना की है व कर रही है।

महासती धीरज कवर जी म सा

आपने भदेसर निवासी श्रीमान् कजोडीमल जी हिगड की धर्मपत्नी सज्जनबाई की कुक्षि से वि स १९९३ मिगसर सुदी ३ को जन्म ग्रहण किया था ओर युवावस्था मे वही पर हरकचन्द जी गेलडा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। मगर पतिदेव का अकस्मात् वियोग हो जाने से आपके अतरमन मे विरक्ति भाव जागृत हुए और वि स २०१६ भादवा बदी ८ को उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आप सरल स्वाभाविनी मिलनसार साध्वी थीं। शासन की अच्छी प्रभावना करते हुए वि स २०४१ भादवा सुदी १४

रविवार को रतलाम मे स्वर्गवास हुआ।

महासती श्री अनोखा जी म.सा. :

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान बख्तावरमल जी लखेसरा की धर्मपत्नी राधा बाई की कुक्षि से वि स १९९७ भादवा सुदी ११ को जन्म ग्रहण किया और युवावस्था मे ही वि स २०१६ कार्तिक वदी ८ को उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आप महान विदुषी, गभीर और आत्मबली साध्वी हैं। शरीर से कृश होते हुए भी बहुत हिम्मत से सुदूर प्रान्तो मे विचरण करते हुए शासन की प्रभावना कर रही है।

महासती श्री गुलाब कवर जी म सा

आपने रतलाम निवासी श्रीमान् मोतीलाल जी चडालिया की धर्मपत्नी इन्द्रा बाई की कुक्षि से सन् १९०३ मे जन्म ग्रहण किया था। यौवनावस्था मे प्रवेश होते ही रतलाम मे ही कस्तूर चन्द जी सिसोदिया के सुपुत्र रखब चन्द जी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। गृहस्थाश्रम मे ही आपको शास्त्र व बोल थोकडो की जानकारी थी, अनेक बहिनो एव साध्वियो को शास्त्र की वाचनी दी और अध्ययन कराई। आप अध्यापिका का कार्य करती थी। इन्दौर मे आपकी पुत्री सपत कवर जी ने वि स १९९० मे दीक्षा ग्रहण कर ली थी। बाद मे सन् १९६० मे पति वियोग हो गया। सवत् २०१७ मे उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की और वृद्धावस्था मे भी खूब तपस्या करते हुए सयम आराधना पूर्ण सजग रही और सवत् २०३१ को ब्यावर मे स्वर्गवास हो गई।

महासती श्री कमला जी म सा ·

आपने कानोड निवासी श्रीमान् भैरूलाल जी नदावत की धर्मपत्नी शाकुबाई की कुक्षि से वि स २००३ मे जन्म ग्रहण किया। युवावस्था मे कानोड मे ही सवाईलाल जी नागौरी से विवाह सम्पन्न हुआ। लेकिन पतिदेव के अकस्मात् वियोग से आप विरक्त बन गई और वि स २०१६ कार्तिक सुदी १३ को प्रतापगढ मे दीक्षा ग्रहण की। आप भी अच्छी मिलनसार एव शासन प्रभाविका हैं।

महासती श्री नन्द कवर जी म.सा.

आपने बडीसादडी निवासी श्रीमान् भूरालाल जी निमावत (साध) की धर्मपत्नी भगवती बाई की कुक्षि से स २००३ जेठ सुदी ११ को जन्म ग्रहण किया था। कानोड मे शादी हुई। लेकिन आपने पति का त्याग करके स २०१६ फागन वद १० को छोटी सादडी मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी सेवाभाविनी और व्याख्यात्री है।

महासती श्री रोशनकवर जी म.सा.

आपने बडीसादडी निवासी श्रीमान् गोटीलाल जी कोठारी की धर्मपत्नी मोहन बाई की कुक्षि से वि स १९९३ पौष बदी ३ को जन्म लिया था और यौवनावस्था मे रगलाल जी दक के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पति देव के वियोग के पश्चात् वि स २०१८ वैशाख सुदी ८ की बडीसादडी मे दीक्षा सम्पन्न हुई। आप अच्छी सेवाभाविनी हैं।

महासती सूर्य कान्ता जी म.सा.

आपने उदयपुर निवासी चदनमल जी धर्मावत् की धर्मपत्नी बदन बाई की कुक्षि से सवत् २००० आषाढ सुदी ११ को जन्म ग्रहण किया था और वि स २०१९ वैशाख सुदी ७ को उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आप अच्छी विदुषी एव व्याख्यात्री साध्वी रत्ना हैं। आपके द्वारा अच्छी शासन प्रभावना हो रही है। सुदूर दक्षिण प्रान्त मे।

महासती श्री झमकू जी म.सा. :

आपके मावली निवासी श्रीमान् फौजमल जी कोठारी की धर्मपत्नी धापू बाई की कुक्षि से वि स १९७१ सावन सुदी ५ को जन्म ग्रहण किया था। युवावस्था मे भदेसर निवासी मोहनलाल जी सरूपरिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। आपने वृद्धावस्था मे स २०१८ मिगसर सुदी ५ को उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। इसके बाद अनेक मासखमण किये। आप सरल स्वभावी साध्वी जी हैं। विद्वद्वर्य शाति मुनि जी म सा आपके ससारपक्षीय जेठ के लडके हैं।

आचार्य श्री नानेश के शासन में दीक्षित सतियों का परिचय

महासती श्री सुशीला कवर जी म सा. ·

उदयपुर निवासी श्रीमान् मोतीलाल जी कोठारी की धर्मपत्नी श्री चेतन वाई की कुक्षि से आपने वि स २००३ मे जन्म लिया। स २०१९ माघ बदी १२ को उदयपुर (मेवाड) मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की और प्रथम शिष्या वनने का सोभाग्य प्राप्त हुआ। महासती जी विदुषी एव तरूण तपस्विनी है। महासती श्री कमल श्री जी आपकी सासारिक सहोदरा है।

महासती श्री शान्ता कवर जी म.सा. :

गगाशहर निवासी श्रीमान् रावतमल जी सुराना की धर्मपत्नी अमानी बाई की कुक्षि से आपने जन्म पाया। योवनवय मे गगाशहर निवासी श्री तोलाराम जी फलोदिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। सत समागम से वेराग्य भाव जागृत हुआ और स २०२० फाल्गुन बदी १२ को गगाशहर मे दीक्षा सम्पन्न हुई। आप सेवाभाविनी महासती हैं। महासती श्री अर्चना श्री जी म आपकी भतीजी है।

महासती श्री लीलावती जी म.सा. :

निकुभ निवासी श्री मोतीलाल जी मोगरा की धर्मपत्नी झमकू बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। केसुन्दा (नीमच) निवासी श्री शोभालाल जी सोनी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। स २०२० की फाल्गुन शुक्ला २ को निकुम्भ (मेवाड) मे दीक्षा सम्पन्न हुई। महासती जी सेवाभाविनी हैं।

महासती श्री कस्तूर कंवर जी म.सा. :

सुवासरा मडी निवासी श्रीमान् पन्नालाल जी मेहता की धर्मपत्नी राज बाई की कुक्षि से स १९९२ चैत्र शुक्ला ४ को आपने जन्म ग्रहण किया। तारुण्यावस्था मे पीपल्यामडी निवासी श्री अमरचन्द जी पामेचा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और २ पुत्र, १ पुत्री के ममत्व को छोडकर पतिदेव के साथ स २०२० वैशाख शुक्ला ३ को पीपल्या मडी मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। आप तपो–तेजस्विता महासती हैं। आपके पामेचा परिवार से अमर मुनि जी म (पति), बलभद्र मुनि जी म (ज्येष्ठ), चदनबाला जी म (पुत्री) आदि अनेक आत्माए शासन मे समर्पित हैं।

महासती श्री हुलास कवर जी म.सा. :

कपासन निवासी श्रीमान् फूलचन्द जी चडालिया की धर्मपत्नी गट्टू बाई की कुक्षि से स १९८८ मे जन्म ग्रहण किया। चिकारडा निवासी श्रीमान् दीपचन्द जी धींग के साथ हुलास बाई का विवाह सम्पन्न हुआ। स २०२० वैशाख शुक्ला १० को चिकारडा मे आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। स २०४८ द्वितीय वैशाख शुक्ला ५ शनिवार, १८ जून १९९१ को इन्दौर मे सथारा पूर्वक स्वर्गस्थ हुई।

महासती श्री ज्ञान कवर जी म.सा. .

मालदावाडी (जलगाव–महाराष्ट्र) निवासी श्रीमान् चपालालजी मुणोत की धर्मपत्नी घीसीवाई

की कुक्षि से स २००३ फाल्गुन शुक्ला ८ को जन्म पाया। सम्वत् २०२१ आषाढ शुक्ला ९ को पीपल्याकला मे आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। आप ओजस्वी व्याख्यात्री, कवयित्री एव निर्भीक साध्वी रत्ना है। सुदूर प्रान्तो मे विचरण कर शासन की भव्य प्रभावना कर रही हैं। विदुषी महासती सुशीला कवर जी म आपकी सासारिक सहोदरा है।

महासती श्री सोहन कवर जी म सा. :

श्रीमान् नाथूलाल जी की धर्मपत्नी छोगी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। इन्दौर निवासी श्रीमान् गभीरमल जी बोहरा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री नानेश के इन्दौर चातुर्मास मे आपकी दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। महासती जी घोर तपस्विनी थी। ब्यावर मे १० अक्टूबर १९७३ को महासती जी स्वर्गस्थ हुई।

महासती श्री वृद्धि कंवर जी म.सा. :

बीकानेर निवासी श्रीमान् रावतमल जी सेठिया की धर्मपत्नी चुन्नी बाई की कुक्षि से आपने वि स १९६१ को जन्म पाया। आशकरण जी सिरोहिया (बीकानेर निवासी) के साथ आपका विवाह सम्पन्न हुआ। स २०२३ वैशाख शुक्ला ८ को बीकानेर मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। वृद्धावस्था के कारण गगाशहर मे स्थिरवास रहकर ७ दिसम्बर, १९८८, सवत् २०४५ मि बदी १३ को गगाशहर मे स्वर्गस्थ हुई।

महासती श्री ज्ञान कंवर जी म.सा. :

निमली निवासी श्रीमान् वीर भाणजी की आप सुपुत्री हैं। मातुश्री का नाम धापूबाई है। राणावास निवासी श्री हजारीमल जी गाधी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पति वियोग के पश्चात् पिछली अवस्था मे सवत् २०२३ आसोज सुदी ४ (१७ अक्टूबर १९६६) को राजनादगाव मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षित हुई। नेत्र ज्योति क्षीण होने के कारण ब्यावर मे स्थिरवास करते हुए ५ मई १९९३ को रात्रि मे ३ बजकर १५ मिनट पर स्वर्गवास पधारी।

महासती श्री प्रेमलता जी म.सा. :

सुरेन्द्र नगर–गुजरात (हाल मुकाम रायपुर) निवासी श्री चम्मन भाई मेहता की सुपुत्री हैं। आपकी माता का नाम जवेरी बहन है। सवत् २०२३ आसोज सुदी ४ (दि १७–१०–१९६६) को राजनान्दगाव (M P) मे आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। आप विदुषी, मधुर व्याख्यानी, तपस्विनी साध्वी हैं। बीकानेर धार्मिक परीक्षा बोर्ड की उच्च परीक्षा उच्च श्रेणी मे उत्तीर्ण की है।

महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा.

आप राजनान्दगाव (म प्र) निवासी श्री भवरलाल जी श्रीश्रीमाल की सुपुत्री हैं। मातेश्वरी का नाम कमला बाई है। कौमार्य अवस्था मे स २०२३ आसोज सुदी ४ (दि १७–१०–१९६६) को राजनादगाव मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षित हुई। जैन सिद्वात रत्नाकर परीक्षा उत्तीर्ण है तथा मधुर व्याख्यानी, सेवाभाविनी, तपस्विनी सती रत्ना है।

महासती श्री गगावती जी म.सा. :

डोगर गाव निवासी श्रीमान् हमीरमल जी लोढा की धर्मपत्नी गट्टू बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। आसरा (M P) निवासी श्रीमान् भीखमचन्द जी श्रीमाल के साथ गगावती बाई का विवाह सम्पन्न हुआ। सत्सगत् से वैराग्य की लौ जागृत हुई और स २०२३ मिगसर सुदी ३ को डोगर गाव मे दीक्षा सम्पन्न हुई। आप सेवाभाविनी तथा तपस्विनी साध्वी है।

महासती श्री पारस कवर जी म.सा. :

कलगपुर निवासी श्रीमान् हीरालाल जी पारख की धर्म पत्नी श्री मोडी बाई ने पुत्री रत्न पारस को जन्म दिया। तरुणवय मे पारस बहन का माहरूमकला निवासी श्रीमान् जीवनलाल जी ओस्तवाल के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। स २०२३ मिगसर सुदी ३ को डोगरगाव मे जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की। जेन सिद्धान्त शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण है और सुदूर प्रान्तो मे विचरण कर शासन की भव्य प्रभावना कर रही हैं।

महासती श्री चन्दनबाला जी म.सा. ·

पीपल्यामडी निवासी श्रीमान् अमरचद जी पामेचा की धर्मपत्नी कस्तूरबाई की कुक्षि से सवत् २००९ सावन बदी १ को जन्म ग्रहण किया। बचपन से ही माता–पिता व पारिवारिक व्यक्तियो के धर्म सस्कार से वैराग्य भाव जागृत हुआ। आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से सवत् २०२३ माघ सुदी १० को पीपल्या मडी मे ऐतिहासिक दीक्षा सम्पन्न हुई। आप विदुषी, मधुर व्याख्यात्री व तपस्विनी महासती हैं। आपके परिवार से दादा, बाबा, पिता, माता, बहिने गुरु शासन मे दीक्षित हैं।

महासती श्री जयश्री जी म.सा. :

बैगलोर (मूल मे–भावी मारवाड) निवासी श्रीमान् हमीरमल जी सेठिया की आप सुपुत्री हैं। माता का नाम पान बाई था। व्यावहारिक शिक्षण के साथ मद्रास निवासी श्री धर्मीचन्द जी धोका के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। सुहागरात की बात मे ही दीक्षा की भावना मजबूत हो गई। पतिदेव के साथ पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य मे पहुचकर शीलव्रत ग्रहण किया और वि स २०२३ फाल्गुन बदी ९ (दि ४ मार्च १९६७ शनिवार) को रायपुर (M P) मे दीक्षा ग्रहण की। आदर्श त्यागिनी के साथ–साथ विदुषी व तपस्विनी हैं।

महासती श्री चमेली श्री जी म.सा. :

बीकानेर निवासी श्रीमान् किशनलाल जी गोलछा की धर्मपत्नी राज बाई की कुक्षि से स १९९८ को जन्म ग्रहण किया। बीकानेर निवासी श्री आसकरण जी बाठिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। वि स २०२५ फाल्गुन सुदी ५ को पूज्य श्री गुरुदेव की विशेष आज्ञा से बीकानेर मे दीक्षा सम्पन्न हुई। आप मधुर व्याख्यात्री व तपस्विनी है।

महासती श्री सुशीला कवर जी म.सा. :

मालदावाडी (महाराष्ट्र) निवासी श्रीमान् चम्पालाल जी मुणोत की धर्मपत्नी घीसीबाई की कुक्षि स २००७ माघ सुदी २ को जन्म ग्रहण किया। बहिन महासती श्री ज्ञान कवर जी म के पद चिन्हो पर चलने हेतु तैयार हुई, तब स २०२४ आषाढ सुदी २ को जावरा मे आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से दीक्षा सम्पन्न हुई।

महासती श्री सुशीला कवर जी म.सा. :

बीकानेर निवासी श्रीमान् सतोक चन्द जी बैद की धर्मपत्नी फताबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से स २०२५ फागुन सुदी ५ को बीकानेर मे दीक्षा सम्पन्न हुई। महासती जी विदुषी एव घोर तपस्विनी हैं।

महासती श्री मगला कवर जी म.सा. :

बडावदा निवासी श्री सौभागमल जी साड की धर्मपत्नी सूरज बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। ४ अक्टूबर, १९६७ को दुर्ग मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। महासती जी विदुषी साध्वी रत्ना है। आपके दीक्षित होने के बाद आपके परिवार से और ५ दीक्षा (पिताजी, माताजी, भाई व दो बहिनो) की दीक्षा सम्पन्न हुई।

महासती श्री शकुन्तला कंवर जी म.सा. :

बीजा (म प्र) बालेसर) निवासी श्रीमान् सपतलाल जी साखला की धर्मपत्नी प्यारी बाई की कुक्षि से सवत् २०१० आषाढ बदी ५ को जन्म ग्रहण किया। स २०२४ मिगसर बदी ६ को दुर्ग (म प्र) मे भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। महासतीजी विदुषी उग्रविहारी, मधुर व्याख्यात्री व तपस्विनी हैं।

महासती श्री जतन कवर जी म.सा. :

हिगनघाट निवासी श्रीमान् हीरालाल जी नाहर की धर्मपत्नी पार्वती बाई की कुक्षि से स २००५ मिगसर सुदी १५ को जन्म ग्रहण किया। यौवनवय मे राले गाव' निवासी श्री पानमल गाधी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। स २०२५ मिगसर सुदी १५ को येवतमाल मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा सम्पन्न हुई। महासती जी घोर तपस्विनी थी। वि स २०३९ भादवा सुदी (दि १४ अगस्त, १९८२) को उदयपुर मे महासती जी स्वर्गस्थ हुई।

महासती श्री छगनकंवर जी म.सा. :

दाता निवासी श्रीमान् मोडीलाल जी पोखरना की धर्मपत्नी सिणगार बाई की कुक्षि से आपने जन्म लिया। आचार्य श्री नानेश आपके सहोदर भ्राता है। रून्डेडा निवासी श्रीमान् ईश्वरचन्द जी बोहरा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। सत्–सगति से वैराग्य–भाव् जागृत हुआ और वि स २०२६ वैशाख सुदी ७ को कानोड मे सतीवृन्द के सान्निध्य मे दीक्षा सम्पन्न हुई। महासती जी सेवाभावी एव भद्रमना थी।

विचरण करती हुई महासती जी बीकानेर पधारी, गर्मी की चपेट मे आ जाने से गगाशहर मे ९ जून, १९७६ साय ९ २५ वजे स्वर्गधाम को सलेखना सथारा सहित पधारी। महासती धापू कवर जी म सा आपकी सासारिक सहोदरा है।

महासती श्री चन्द्रकांता जी म सा. :

रतलाम निवासी श्रीमान् सुगनचन्द जी पिरोदिया की धर्मपत्नी सज्जन बाई की कुक्षि से आपने जन्म लिया। रतलाम निवासी श्री कान्तिलाल जी मेहता के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। मनोरमा नाम की पुत्री का भी सयोग हुआ। पुत्री एव पति के स्नेहबधन को छोडकर आदर्श–त्याग के साथ स २०२६ वैशाख सुदी ७ को ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। महासती जी आदर्श सेवाभाविनी एव मधुर भाषी हैं। सासारिक पुत्री मनोरमा ने भी वाद मे गुरु चरणो मे दीक्षा ग्रहण की।

महासती श्री कुसुमलता जी म.सा. :

मदसोर निवासी श्रीमान् चादमल जी कुदाल की धर्मपत्नी मोहनबाई की कुक्षि से स २००४ माघ सुदी ११ को जन्म पाया। आचार्य श्री नानेश के मदसौर चातुर्मास मे स २०२६ आसोज सुदी ४ को छोटी बहिन (प्रेमा–महासती श्री प्रेमलता जी म) के साथ दीक्षित हुई। आप विदुषी साध्वी रत्ना हैं। पीपल्यामडी का पामेचा परिवार आपका ननिहाल पक्ष है।

महासती श्री प्रेमलताजी म.सा. :

मदसौर निवासी श्रीमान् चादमल जी कुदाल की धर्मपत्नी मोहनबाई की कुक्षि से स २००८ मे जन्म लिया। आचार्य श्री नानेश के मदसोर चातुर्मास मे स २०२६ आसोज सुदी ४ को बडी बहिन (महासती श्री कुसुमलता जी) के साथ गुरु चरणो मे दीक्षित हुई। आप विदुषी एव तपस्विनी चारित्रात्मा हैं।

महासती श्री विमला कंवर जी म.सा ·

आतरी निवासी श्रीमान् चादमल जी खिदावत की धर्म सहायिका कचन बाई की कुक्षि से स १९९२ आषाढ सुदी १३ को जन्म ग्रहण किया। कजार्डा निवासी श्री रणजीतमल जी भडारी के साथ आपका विवाह सम्पन्न हुआ। बडीसादडी मे अपने पतिदेव के साथ ऐतिहासिक दीक्षा प्रसग पर स २०२७ कार्तिक बदी ८ तदनुसार २२ अक्टूबर १९७० मगलवार को दीक्षा ग्रहण की। आदर्श त्यागिनी के साथ साथ महासती जी विदुषी एव तपस्विनी भी हैं।

महासती श्री कमलप्रभा जी म.सा. :

बादनवाडा निवासी श्रीमान् नौरतमल जी लोढा की धर्मपत्नी गवरा बाई की कुक्षि से स २००२ वैशाख सुदी ७ को जन्म ग्रहण किया। जेठाना निवासी श्री मूलचन्द जी डूगरवाल के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। स २०२७ कार्तिक बदी ८ तदनुसार दि २२–१०–१९७० मगलवार बडीसादडी मे दीक्षा सम्पन्न हुई। महासती जी विदुषी एव मधुर व्याख्यात्री हैं। आपका व्यावहारिक अध्ययन प्राइमरी व आध्यात्मिक अध्ययन जैन सिद्धान्त शास्त्री है।

महासती श्री पुष्पलता जी म.सा. :

आप बडीसादडी निवासी श्रीमान् अम्बालाल जी जारोली की कन्या हैं। आपकी मातुश्री का नाम सज्जन बाई है। आचार्य श्री नानेश के बडीसादडी चातुर्मास मे स २०२७ कार्तिक बदी ८ तदनुसार दि २२–१०–१९७० मगलवार को दीक्षित हुई। विदुषी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री सुमति कवर जी म.सा. :

बडीसादडी निवासी श्रीमान् ख्यालीलाल जी मुणोत की धर्मपत्नी चौसर बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। बडीसादडी मे स २०२७ कार्तिक सुदी ८ तदनुसार दि २२–१०–१९७० मगलवार को दीक्षित हुई। आप विदुषी साध्वी हैं। आपकी बहिन पुष्पा (महासती श्री पूर्णिमा जी) ने भी दीक्षा ग्रहण की।

श्री विमला कवर जी म सा. :

मोडी निवासी श्रीमान् सूरजमल जी नपावलिया की धर्म पत्नी सौभाग बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया स २०२७ फागण सुदी १२ को जावद मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे प्रवृजित हुई। आपकी ससार पक्षीय बहने (महासती श्री सुशीला कवर जी, मुक्ति प्रभाजी म, करुणा श्री जी म) गुरु शासन मे दीक्षित हैं। आप विदुषी एव तपस्विनी साध्वी रत्ना है।

महासती श्री सूरज कवर जी म.सा. :

आप लोद निवासी श्रीमान् चादमल जी ओस्तवाल की सुपुत्री है। आपकी मातेश्वरी का नाम धूरीबाई था। आपने स १९८२ मे जन्म ग्रहण किया। बडावदा निवासी श्रीमान् सौभागमल जी साड के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पुत्र–पुत्रियो से घर भरा था। सुपुत्री मगला कवर ने गुरु चरणो मे दीक्षा ली बाद मे पति, पुत्र, २ पुत्रियो सहित ब्यावर मे स २०२८ कार्तिक सुदी १२ (रविवार, ३१ अक्टूबर १९७१) को आदर्श त्याग के साथ दीक्षा ग्रहण की। आप तपस्विनी महासती जी है। अजड (M P) मे ११ फरवरी १९९२ तदनुसार २०४९ को स्वर्गवास हुई।

महासती श्री कल्याण कंवर जी म.सा. :

आप बीकानेर निवासी श्रीमान् सपतलाल जी बाठिया की सुपुत्री हैं। सपत बाई की कुक्षि से वि स २००६ वैशाख शुक्ला ४ को जन्म पाया। वि स २०२८ कार्तिक सुदी १२, रविवार दि. ३१–१०–१९७१ को ब्यावर मे जैन भागवती दीक्षा सपन्न हुई। महासती श्री जी विदुषी एव तपस्विनी हैं।

महासती श्री तारा कवर जी म.सा. :

आपने रतलाम निवासी श्रीमान् सुगंनचन्द जी पिरोदिया की धर्मपत्नी सज्जन बाई की कुक्षि से जन्म लिया। वि स २०२८ कार्तिक सुदी १२, रविवार, दि. ३११०७१ को ब्यावर (राज) मे ऐतिहासिक दीक्षा महोत्सव पर दीक्षा सम्पन्न हुई। आप मधुर व्याख्यात्री एव विदुषी है। आपकी

चन्द्रकाता जी बहिन, कनक श्री जी, चितरजन श्री, मनोरमा श्री जी गुरु शासन मे दीक्षित है।

महासती श्री कान्ता जी म.सा. ·

बडावदा निवासी श्रीमान् सोभागमल जी साड की धर्मपत्नी श्रीसूरज बाई की कुक्षि से स २०१२ मे जन्म ग्रहण किया। स २०२८ कार्तिक सुदी १२ रविवार, दि ३१–१०–१९७१ को ब्यावर मे अपने माता–पिता, भाई–बहिन के साथ गुरु चरणो मे दीक्षित हुई। बडी बहिन महासती मगला कवर जी गुरु चरणो मे पूर्व मे दीक्षित थी। महासती जी विदुषी एव सेवाभाविनी हैं।

महासती श्री चन्दनबाला जी म सा .

बडावदा निवासी श्रीमान् सोभागमल जी साड की धर्मपत्नी सूरज बाई की कुक्षि से वि स २०१६ चेत्र सुदी १३ (महावीर जयती) को जन्म ग्रहण किया। पारिवारिक जनो की धर्म–भावना के साथ साथ वेराग्य का अकुर आप मे अकुरित हुआ ओर स २०२८ कार्तिक सुदी १२, रविवार, दि ३१–१०–१९७१ को माता–पिता, भाई–बहिन के साथ ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव सेवाभाविनी है।

महासती श्री कुसुमलता जी म.सा. :

रावटी (म प्र) निवासी श्रीमान् नानालाल जी कटारिया की धर्मपत्नी लीला बाई की कुक्षि से वि स २०१५ भादवा बदी १३ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम केसर था। वि स २०२८ कार्तिक सुदी १२, रविवार, दि ३१–१०–७१ को ब्यावर में दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। आप विदुषी एव मधुर व्याख्यानी हें। सासारिक बहन (महासती सोमलता) ने भी बाद मे दीक्षा ली।

महासती श्री तारा कवर जी म सा. :

रतलाम निवासी श्रीमान् हीरालाल जी राका की धर्मपत्नी दाख बाई की कुक्षि से वि स २०१४ पौष बदी १० को जन्म पाया। वि स २०२८ चैत्र बदी २ को राजस्थान की राजधानी जयपुर मे दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। आप विदुषी है।

महासती श्री चेतन श्री जी म.सा. :

कानोड निवासी श्रीमान् हनुमानमलजी गाधी की धर्मपत्नी पतासी बाई की कुक्षि से वि स २०१२ माघ सुदी १३ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम चचल कुमारी था। वि स २०२९ चैत्र सुदी १३ (महावीर जयती) को टोक मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव मधुर व्याख्यानी हैं।

महासती श्री तेजप्रभा जी म.सा. :

नागेलाव निवासी श्रीमान् रतनलाल जी कोठारी की धर्मपत्नी गवरी बाई की कुक्षि से वि स १९८८ भादवा बदी ३ को जन्म ग्रहण किया। यौवनवय मे अजमेर निवासी श्री सरदारमल जी बैद के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। आपका सासारिक नाम तीजा बाई था। सयोग–वियोग रूप जगत को

देखकर वि स २०२९ माघ सुदी १३, दि १५–२–१९७३ को भीनासर मे दीक्षा सम्पन्न हुई। आप सेवाभाविनी, स्तोक मर्मज्ञ एव मधुर भाषिनी है।

महासती श्री भंवर कंवर जी म.सा. :

बीकानेर निवासी श्रीमान् हीरालाल जी बोथरा की धर्मपत्नी श्री आशा बाई की कुक्षि से वि स १९८५ मे जन्म पाया । यौवन वेला मे बीकानेर निवासी श्री जतनमल जी सोनावत के साथ विवाह सम्पन्ना हुआ। २ पुत्री व एक पुत्र (विजय) की उपलिब्ध हुई। पुत्र की वैराग्य भावना के साथ–साथ आपकी भी भावना दीक्षित होने की हुई और वि स २०२९ माघ सुदी १३, दि १५ फरवरी, १९७३ को अपने पतिदेव, पुत्री एव पुत्र के साथ भीनासर मे दीक्षा ग्रहण की। सेवाभावना के साथ–साथ आप मधुर भाषिनी थी। भीलवाडा मे सलेखना सथारा सहित स्वर्ग पधारी। जितेन्द्र मुनि जी म (पतिदेव), विजय मुनि जी म (पुत्र), प्रभावती जी म (पुत्री) है।

महासती श्री कुसुम कान्ता जी म.सा. :

जावरा निवासी श्रीमान् शातिलाल जी पगारिया की धर्मपत्नी श्री कमलाबाई की कुक्षि से वि स २००८ सावन बदी ५ को जन्म लिया। वि स २०२९ माघ सुदी १३ (दि १५–२–१९७३) को भीनासर मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ली। महासती जी विदुषी है।

महासती श्री पुष्पावती जी म.सा. :

देशनोक निवासी श्रीमान् घेवरचन्द जी बोथरा की धर्मपत्नी गुट्टी बाई की कुक्षि से वि स २०१२ भादवा सुदी १२ को जन्म ग्रहण किया। स २०२९ माघ सुदी १३ (दि १५–२–१९७३) को भीनासर मे दीक्षित हुई। महासती श्री नानूकवर जी म सा आपके सासारिक भुआजी है। महासती जी विदुषी तपस्विनी एव मधुर व्याख्यानी हैं।

महासती श्री वसुमती जी म.सा. :

बीकानेर निवासी श्रीमान् इन्द्रचन्द जी पूगलिया की धर्मपत्नी श्री राजी बाई की कुक्षि से वि स २००९ वैशाख सुदी ८ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासरिक नाम बसन्ता कुमारी था। वि स २०२९ माघ सुदी १३ (दि १५–२–१९७३) को भीनासर मे प्रव्रजित हुई। महासती जी विदुषी एव तपस्विनी के साथ–साथ मधुर व्याख्यानी हैं। आपकी सासारिक बहन व भानजी (महासती श्री प्रेरणा श्रीजी व मुक्ति श्रीजी) भी गुरु शासन मे दीक्षित हैं।

महासती श्री राजमती जी म.सा. :

दलौदा (म प्र) निवासी श्रीमान् भवरलाल जी भडारी की धर्मपत्नी श्री मोहनबाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। स २०२९ माघ सुदी १३ (दि १५ फरवरी, १९७३) को भीनासर मे आचार्य श्री नानेश की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की। आप मधुर भाषिनी एव सेवाभाविनी हैं। पडित रत्न श्री पारस

मुनि जी म सा आपके ससारिक भ्राता हैं।

महासती श्री मन्जुबाला जी म.सा. :

बीकानेर निवासी श्रीमान् रतनलाल जी सेठिया की धर्मपत्नी जवरी वाई की कुक्षि से स २०१६ वैशाख शुक्ला ८ को जन्म ग्रहण किया। स २०२९ माघ सुदी १३ (दि १५–२–१९७३) को भीनासर मे धर्म सघ मे दीक्षित हुई। महासतीजी विदुषी, तपस्विनी एव मधुर व्याख्यात्री हैं।

महासती श्री प्रभावती जी म सा. :

बीकानेर निवासी श्रीमान् जतनलाल जी सोनावत की धर्मपत्नी श्री भवरी बाई की कुक्षि से स २०१७ माघ सुदी १२ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम कुसुम कुमारी था। वि स २०२९ माघ सुदी १३ (दि १५–२–१९७३) को भीनासर मे अपने पूज्य पिताजी (श्री जितेन्द्र मुनिजी), माताजी (भवर कवर जी म), भाई (श्री विजय मुनि जी म) के साथ दीक्षा ग्रहण की। महासती जी विदुषी एव मधुर भाषिनी हैं।

महासती श्री ललितप्रभा जी म सा. :

नोखामडी निवासी धर्मनिष्ठ श्रीमान् घेवरचन्द जी गोलछा की धर्मपत्नी श्री लक्ष्मी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम रूक्मणी बाई था। गगाशहर निवासी श्री भवरलाल जी सेठिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। सासारिक सुख–वैभव को छोडकर वि स २०२९ फाल्गुन शुक्ला ११ को वीकानेर मे आचार्य श्री नानेश के चरणो मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी है।

महासती श्री सुशीला कंवर जी म.सा. :

मोडी निवासी श्रीमान् सूरजमल जी नपावलिया की धर्मपत्नी श्रीमती सौभागबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। वि स २०३० वैशाख शुक्ला ९ को नोखामडी मे गुरु चरणो मे दीक्षित हुई। आपकी बडी बहिन (महासती विमला कवर जी) ने पहले दीक्षा ग्रहण की व छोटी बहिने (महासती श्री मुक्ति प्रभाजी, महासती श्री करुणाजी) भी शासन मे दीक्षित हुई। महासती जी विदुषी, तपस्विनी एव मधुर व्याख्यात्री हैं।

महासती श्री समता कंवर जी म सा. :

अजमेर निवासी श्रीमान् पूरणमल जी कोठारी की धर्मपत्नी शान्ता बाई की कुक्षि से स २०१७ आसोज सुदी १३ को जन्म ग्रहण किया। पारिवारिक जनो ने कन्या का नाम ममता रखा। सत्सगत से वैराग्य भाव जागृत हुआ और स २०३० वैशाख शुक्ला ९ को नोखामडी मे दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। आप विदुषी एव सेवाभाविनी हैं। महासती श्री स्वर्णज्योति जी आपकी सासारिक भानजी है।

महासती श्री निरजना श्रीजी म.सा. :

बडीसादडी निवासी सघनिष्ठ श्री लक्ष्मीलाल जी पामेचा की धर्मपत्नी श्रीमती उगम बाई की कुक्षि से (ज्ञान पचमी) को जन्म ग्रहण किया। पामेचा परिवार ने पुत्री का नाम निर्मला रखा। वि स २०३० आसोज शुक्ला १३ को बीकानेर मे निर्मला ने जैन भागवती दीक्षा अगीकार की। महासती जी विदुषी एव तपस्विनी है।

महासती श्री सुधाश्री जी म.सा. :

ब्यावर निवासी श्रीमान् मगलचन्द जी कोटारी की धर्मपत्नी चुन्नीबाई की कुक्षि से स २०१४ कार्तिक सुदी ५ को जन्म ग्रहण किया। कन्या का नाम "शाता" रखा गया। स २०३० आसोज शुक्ला १३ को बीकानेर मे दीक्षा ग्रहण की। विदुषी बनी। पढने के बाद स्वच्छद प्रवृत्ति व अनुशासन हीनता के कारण आचार्य श्री नानेश ने सघ से निष्कासित कर दिया। सघ से गृहस्थ वेश पहनाकर माता को सौंप दी। तत्पश्चात् अर्हत् सघ मे धर्म प्रचारिका बनकर जीवन व्यतीत कर रही है।

महासती श्री पारस कवर जी म.सा. :

निकुभ निवासी श्रीमान् गेहरीलाल जी सहलोत की धर्मपत्नी श्रीमती दाख बाई की कुक्षि से स १९९६ मे जन्म ग्रहण किया। बागेडा निवासी श्री बालचन्द जी जारोली के साथ पारस बाई का विवाह सम्पन्न हुआ। आपके व सासारिक पुत्री सुशीला के मन मे वैराग्य भाव जागृत हुआ ओर पारिवारिक अनुमति प्राप्त नहीं होने पर स २०३० मिगसर सुदी ९ को भीनासर मे स्वय दीक्षित हुई। महासती जी आदर्श त्यागिनी के साथ–साथ तपस्विनी भी हैं। आगम व्याख्याता श्री कवर चन्द जी म सा सासारिक भ्राता एव स्व भूपेन्द्र मुनि जी म सा भतीजे एव वि सुमनलता जी म सासारिक सुपुत्री है।

महासती श्री सुमनलता जी म.सा. :

बागेडा निवासी श्रीमान् बालचन्द जी जारोली की धर्मपत्नी पारसबाई की कुक्षि से वि स २०१३ भादवा बदी १२ को जन्म ग्रहण किया। कन्या का नाम सुशीला रखा गया। स २०३० मिगसर सुदी ९ को भीनासर मे मातुश्री पारस बाई के साथ दीक्षा ग्रहण की। आगम व्याख्याता श्री कवर चन्द जी म सा सासारिक मामाजी हैं।

महासती श्री स्नेहलता जी म.सा. :

सरदार शहर निवासी श्रीमान् रामलाल जी पारख की धर्मपत्नी श्रीमती मोहन बाई की कुक्षि से स २००४ सावन सुदी ४ को जन्म ग्रहण किया। सरदारशहर निवासी तिलोकचन्द जी बरडिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। स २०३० माघ सुदी ५ को सरदारशहर मे दीक्षा सम्पन्न हुई। महासती जी तपस्विनी हैं।

महासती श्री विजय लक्ष्मी जी म.सा .

उदयपुर निवासी श्रीमान् बख्तावरमल जी तलेसरा की धर्मपत्नी राधाबाई की कुक्षि से स २०१० आसोज सुदी ७ को जन्म ग्रहण किया। स २०३० माघ सुदी ५ को सरदारशहर मे दीक्षा सम्पन्न हुई। आपकी बडी बहिन (महासती अनोखा कवर जी) भी धर्म सघ मे दीक्षित हैं। महासती जी विदुषी एव तपस्विनी है।

महासती श्री अजना श्री जी म.सा

मगलवाड (उदयपुर) निवासी श्रीमान् गुलावचन्द जी चपलोत की धर्मपत्नी सूरज बाई की कुक्षि से स २०१२ भादवा सुदी १ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम आजाद कुमारी था। स २०३१ जेठ सुदी ५ तदनुसार २६ मई, १९७४ को गोगोलाव मे दीक्षित हुई। बहिन (रजना श्री जी) राजकुमारी भी आपके साथ ही दीक्षित हुई हैं। महासती जी विदुषी एव तपस्विनी हैं।

महासती श्री रजना श्री जी म.सा. :

मगलवाड (उदयपुर) निवासी श्रीमान् गुलावचन्द जी चपलोत की धर्मपत्नी श्रीमती सूरज बाई की कुक्षि से स २०१० सावन सुदी १५ (रक्षा–बन्धन) को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम राजकुमारी था। बहिन (अजना श्री जी) के साथ वि स २०३१ जेठ सुदी ५ तदनुसार दि २६ मई, १९७४ को गोगोलाव मे दीक्षा सम्पन्न हुई। महासती जी विदुषी एव तपस्विनी है।

महासती श्री ललिता श्री जी म.सा. :

ब्यावर निवासी श्रीमान् मागीलाल जी मेहता की धर्मपत्नी सौरभ बाई की कुक्षि से १ जुलाई १९५७ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम लाड बाई था। सात पीढी मे यह एक कन्या रत्न पैदा हुई। स २०३१ जेठ सुदी ५ तदनुसार २६ मई १९७४ को गोगोलाव मे अपने लघु भ्राता (विद्वद्वर्य सुलेखक–श्री ज्ञान मुनि) के साथ दीक्षित हुई। महासती जी विदुषी हैं।

महासती श्री विचक्षणा श्री जी म.सा ·

पीपल्या मडी निवासी श्री जमनालाल जी पामेचा की धर्मपत्नी राजकवर बाई की कुक्षि से सन् १९५४ मे जन्म ग्रहण किया। व्यावहारिक शिक्षण बी ए की परीक्षा के साथ साथ धर्मभावना जागृत हुई। वि स २०३१ आसोज सुदी २ तदनुसार (दि १८–१०–१९७४) को सरदारशहर मे दीक्षा ग्रहण की। महासती जी विदुषी और तपस्विनी हैं। आपके परिवार से अनेक आत्माए दीक्षित हैं। आपका सासारिक नाम सुशीला था।

महासती श्री सुलक्षणा श्री जी म.सा. :

पीपल्यामडी निवासी श्रीमान् रामगोपाल जी कछारा की धर्मपत्नी सुन्दर बाई की कुक्षि से सन् १९५६ मे जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सुशीला था। वि स २०३१ आसोज सुदी २

तदनुसार दि १८–१०–१९७४ को सरदारशहर मे दीक्षा ग्रहण की। महासती श्री विदुषी एव मधुर भाषिनी हैं।

महासती श्री प्रियलक्षणा श्री जी म सा. :

पीपल्यामडी निवासी श्रीमान् बापूलाल जी पामेचा की धर्मपत्नी मोहन वाई की कुक्षि स २०१४ मे जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम पुष्पा था। वि स २०३१ आसोज सुदी २ तदनुसार दि १८१०१९७४ को सरदारशहर मे अपने पूज्य पिता श्री (बापूलाल जी पामेचा--श्री बलभद्र मुनि जी) व बहिनो के साथ दीक्षा ग्रहण की। महासती जी विदुषी और तपस्विनी हैं। आपके परिवार से अनेक आत्माए दीक्षित है।

महासती श्री प्रीति सुधा जी म सा.

आतरी निवासी श्रीमान दुलीचन्द जी खिदावत की धर्मपत्नी धापूबाई की कुक्षि से स २००४ आसोज सुदी २ को जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम प्रेमकवर बाई था। निकुभ निवासी श्री सागरमल जी सहलोत के साथ प्रेम बाई का विवाह सम्पन्न हुआ। स २०३१ माघ सुदी १२ (दि २३–२–१९७५) रविवार, को देशनोक मे भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। महासती जी विदुषी और तपस्विनी हैं।

महासती श्री सुमन प्रभाजी म.सा. .

देवगढ निवासी श्रीमान् सोहनलाल जी देरासरिया की धर्मपत्नी मागी बाई की कुक्षि से स २०१४ माघ सुदी १४ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सुशीला कुमारी था। वि स २०३१ माघ सुदी १२ को देशनोक मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। महासती जी विदुषी एव सेवाभाविनी हैं।

महासती श्री सोम प्रभाजी म.सा. .

रावटी (म प्र) निवासी श्रीमान नानालाल जी कटारिया की धर्मपत्नी लीलाबाई की कुक्षि से चैत्र सुदी १३ को जन्म पाया। वि स २०३१ माघसुदी १२ (दि २३–२–१९७५) रविवार को देशनोक मे भागवती दीक्षा अगीकार की। महासती जी तरूण तपस्विनी हैं। महासती कुसुमलता जी म सा आपकी सासारिक बहन है।

महासती श्री किरण प्रभा जी म.सा

बीकानेर निवासी श्रीमान करणीदान जी पटवा की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी बाई की कुक्षि से स २०१३ मिगसर सुदी १३ को जन्म ग्रहण किया। वि स २०३१ माघ सुदी १२ (दि २३–२–१९७५) को देशनोक मे जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की। महासती जी सेवाभाविनी है।

महासती श्री मजुला जी म.सा.

देशनोक निवासी श्रीमान कुन्दनमल दुग्गड की धर्मपत्नी लक्ष्मी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। देशनोक निवासी श्री झवरलाल जी भूरा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। सासारिक सुखो को त्यागकर वि स २०३२ वैशाख बदी १३ तदनुसार दिनाक ९ मई, १९७५ को भीनासर मे दीक्षा ग्रहण

की। आप मधुर व्याख्यात्री एव तपस्विनी हैं।

महासती श्री सुलोचना श्री जी म.सा. .

कानोड निवासी श्रीमान् बाबूलाल जी सहलोत की धर्म पत्नी सोरभ बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया था। आपका सासारिक नाम लीला था। वि स २०३२ वैशाख बदी १३ तदनुसार ९ मई, १९७५ को भीनासर मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी तपस्विनी एव व्याख्यात्री हैं।

महासती श्री प्रतिभा श्री जी म सा.

बीकानेर निवासी श्रीमान् पानमल जी सेठिया की धर्मपत्नी बसन्ता बाई की कुक्षि से स २०१६ वैशाख शुक्ला ७ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम फूल कुमारी था। वि स २०३२ वैशाख बदी १३ तदनुसार दि ९ मई, १९७५ को भीनासर मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तपस्विनी हैं।

महासती श्री वनिता श्री जी म सा. ·

बीकानेर निवासी श्रीमान् गुलाबचन्द जी गुलगुलिया की धर्मपत्नी मगलाबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। वि स २०३२ वैशाख बदी १३ तदनुसार, दिनाक ९ मई, १९७५ को भीनासर मे दीक्षित हुई। महासती जी विदुषी एव तपस्विनी है। आपकी सासारिक दो बहिने (श्री कनक प्रभाजी व सत्यप्रभाजी) भी गुरु शासन मे दीक्षित हुई।

महासती श्री सुप्रभा जी म.सा. ·

गोगोलाव निवासी श्रीमान् चपालाल जी काकरिया की धर्मपत्नी वामा बाई की कुक्षि से स २०१६ मे जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम लीला कुमारी था। वि स २०३२ वैशाख बदी १३ तदनुसार दि ९ मई, १९७५ को भीनासर मे आचार्य श्री नानेश की नेश्राय मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना है।

महासती श्री जयन्त श्री जी म.सा.

बीकानेर निवासी श्रीमान् फकीरचन्द जी पारख की धर्मपत्नी श्रीमती मूली बाई की कुक्षि से स २०१८ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम कुसुम कुमारी था। वि स २०३२ आसोज सुदी ५ को देशनोक मे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की। आप तरूण तपस्विनी है।

महासती श्री हसकवरजी म सा. .

रायपुर (म प्र) निवासी श्रीमान् हिम्मतसिह जी छाजेड की धर्मपत्नी पाची बाई की कुक्षि से सवत् १९८७ माघ बदी १० को जन्म ग्रहण किया। अमरावती निवासी श्री लालचन्द जी सुराणा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पहले आपने ऋषि सप्रदाय मे दीक्षा ग्रहण की थी तत्पश्चात् वि स २०३२ मिगसर सुदी ८ को जावरा मे आचार्य श्री नानेश की शिष्या बनी।

महासती श्री सुदर्शना श्रीजी म.सा. ·

नोखामडी निवासी श्रीमान् मूलचन्द जी पारख की धर्मपत्नी ऊदी वाई की कुक्षि से वि स २०१७ पौष बदी १२ गुरुवार को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सूवा कुमारी था। वि स २०३३ आषाढ सुदी ५ शुक्रवार, तदनुसार २ जुलाई १९७६ को नोखा मडी मे आचार्य श्री नानेश से जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की। महासती जी विदुषी एव मधुर व्याख्यानी है।

महासती श्री निरूपमा जी म.सा. ·

हिगणधाट निवासी श्रीमान् छोटूमल जी कोठारी की धर्मपत्नी महताब बाई की कुक्षि से वि स १९८० आसोज सुदी २ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम रम्भा कुमारी था। रायपुर निवासी श्री सपतराज जी धाडीवाल के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। भरे–पूरे सम्पन्न परिवार मे रहते हुए भी धर्म क्षेत्र मे आपने बहुत काम किया। महिला मडल मे विशेष जागृति की। पतिदेव की धर्म–भावना को देखकर सहर्ष दीक्षा की आज्ञा प्रदान की। पुत्र, पौत्र आदि से भरे–पूरे परिवार को छोडकर वि स २०३३ आसोज सुदी १५ को नोखामण्डी मे दीक्षा ग्रहण की। आप मृदुभाषी एव सेवाभाविनी हैं।

महासती श्री चन्द्रप्रभा जी म.सा.

गगाशहर निवासी श्रीमान् पद्मचन्द जी बैद की धर्मपत्नी श्रीमती तुलसी बाई की कुक्षि से वि स २०१२ को जन्म ग्रहण लिया। आपका सासारिक चन्दा बाई था। यौवनवय मे मेडता सिटी निवासी श्री रतनलाल जी ललवानी के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। वैधव्य का दु ख सहते हुए सत्सगति से धर्म भाव जागृत हुआ। वि स २०३३ मिगसर सुदी १३ को नोखामडी मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव सेवाभाविनी है।

महासती श्री आदर्श प्रभाजी म सा. :

उदासर निवासी श्रीमान् तिलोकचन्द जी सेठिया की धर्मपत्नी किशन देवी की कुक्षि से वि स २०७६ कार्तिक सुदी ७ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सरोज कुमारी था। वि स २०३४ वैशाख बदी ७ (रविवार, दि १० ४ ७७) को भीनासर मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी हैं। महासती श्री गुणसुदरी भी (भुआ) बाद मे गुरु शासन मे दीक्षित हुई।

महासती श्री कीर्ति श्री जी म.सा. .

भीनासर निवासी श्रीमान् मेघराज जी लूणावत की धर्मपत्नी रतन बाई की कुक्षि से स २०७३ माघ सुदी १३ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम काता कुमारी था। वि स २०३४ वैशाख बदी ७ रविवार (१० ४ ७७) को भीनासर मे वै कान्ता ने दीक्षा ग्रहण की। महासती जी तरूण तपस्विनी हैं। बाद मे सासारिक लघु बहन सन्तोष (महासती श्री सुयश मणि जी) भी धर्म शासन मे दीक्षित हुई।

महासती श्री हर्षिला श्री जी म.सा

गगाशहर निवासी श्रीमान् किशनलाल जी सोनावत की धर्मपत्नी आशाबाई की कुक्षि से वि स २०१७ आसोज बदी १२ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम हुलास कुमारी थी। वि स २०३४ वैशाख बदी ७ (रविवार, दि १० ४ ७७) को भीनासर मे दीक्षा ग्रहण की। आप विद्याध्ययनरत है। छोटी बहिन (मूली) महासती श्री वन्दना श्री जी भी गुरु शासन मे दीक्षित है।

महासती श्री साधना श्री जी म सा.

गगाशहर निवासी श्रीमान् सन्तोकचन्द भी भूरा की धर्मपत्नी छगनी बाई की कुक्षि से वि स २०१८ मे जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम शान्ता कुमारी था। वि स २०३४ वैशाख बदी ७ (रविवार, दि १० ४ ७७) को भीनासर मे दीक्षा ग्रहण की अभी आप ज्ञान साधनारत है।

महासती श्री अर्चना श्री जी म.सा.

गगाशहर निवासी श्रीमान् लूणकरण जी सुराना की धर्मपत्नी श्री सोहन बाई की कुक्षि से वि स २०१७ चैत्र बदी २ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम आरती कुमारी था। वि स २०३४ वैशाख शुक्ला पूर्णिमा तदनुसार ३ मई १९७७ को गगाशहर मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। महासती श्री शान्ता कवर जी म सा आपकी सासारिक भुआ हैं। आप विदुषी हैं।

महासती श्री सरोज बाला जी म.सा .

श्रीमान् सूरजमल जी चौरडिया की धर्मपत्नी गुलाब बाई की कुक्षि से वि स २०१० चैत्र बदी १३ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सज्जन बाई था। धमतरी निवासी श्री शान्तिलाल जी राखेचा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। सत्सानिध्य से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३४ भादवा बदी ११ तदनुसार ९ सितम्बर १९७७ को आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से घोर तपस्विनी श्री अमर मुनि जी म सा के मुखारविन्द से दुर्ग (म प्र) मे भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। आप विदुषी एव मधुर व्याख्यात्री है।

महासती श्री मनोरमा श्री जी म.सा.

रतलाम निवासी श्रीमान् कातिलाल जी मेहता की धर्मपत्नी चन्द्रकाता बाई की कुक्षि से वि स २०१६ फाल्गुन बदी ९ को जन्म ग्रहण किया। माता व मौसी (महासती श्री चन्द्रकान्ता व तारा कवर जी) की दीक्षा के साथ वैराग्य अकुर प्रस्फुटित हुआ और वि स २०३४ भादवा बदी ११ तदनुसार ९ सितम्बर १९७७ को दुर्ग मे आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से घोर तपस्वी, आदर्श त्यागी श्री अमर मुनि जी म सा के मुखारविन्द से जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव मधुर व्याख्यात्री हैं।

महासती श्री चचल कवर जी म.सा. ·

काकेर निवासी श्रीमान् सूरजमल जी गान्धी की धर्मपत्नी श्री रमकू बाई की कुक्षि से १९ ११ १९६१ को जन्म ग्रहण किया। वि स २०३४ भादवा बदी ११ तदनुसार ९ सितम्बर १९७७ को आदर्श त्यागी श्री अमर मुनि जी म सा के मुखारविन्द से दुर्ग (म प्र) मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। महासती श्री विदुषी है।

महासती श्री कुसुमकाता जी म.सा. :

नेबारीकला निवासी श्रीमान् केवलचन्द जी नाहटा की धर्मपत्नी श्री लक्ष्मी बाई की कुक्षि से वि स २०१८ को जन्म ग्रहण किया। वि स २०३४ भादवा बदी ११ तदनुसार ९ सितम्बर १९७७ को घोर तपस्वी श्री अमर मुनि जी म सा के मुखारविन्द से दुर्ग (म प्र) मे सयमी जीवन ग्रहण किया। महासती श्री विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. :

उदयपुर निवासी श्रीमान् कन्हैयालाल जी बाफना की धर्मपत्नी श्रीलीला बाई की कुक्षि से १२ जून १९५९ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम मजू बाला था। वि स २०३४ आसोज सुदी २ तदनुसार १४ अक्टूबर १९७७ को भीनासर मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री शान्त प्रभा जी म.सा. :

बीकानेर निवासी श्रीमान् पूनमचन्द जी सिरोहिया की धर्मपत्नी जेठी बाई की कुक्षि से वि स २०१८ आषाढ सुदी १२ को जन्म ग्रहण किया। आचार्य श्री नानेश के बीकानेर शुभागमन पर दर्शन किये और सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३४ आसोज सुदी २ तदनुसार १४ अक्टूबर १९७७ मे दीक्षा ग्रहण की। महासती श्री तरुण तपस्विनी, विदुषी एव सेवाभाविनी है।

महासती श्री मुक्ति प्रभाजी म.सा. :

मोडी निवासी श्रीमान् सूरजमल जी नपावलिया की धर्मपत्नी श्री सौभागबाई की कुक्षि से वि स २०१७ वैशाख सुदी १० को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम मुन्नी कुमारी था। बडी बहिनो (श्री विमला कवर जी और सुशीला कवर जी) के पद चिन्हो पर चलकर वि स २०३४ मिगसर बदी ५ गुरुवार तदनुसार १ दिसम्बर १९७७ को बीकानेर मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी हैं।

महासती श्री गुण सुन्दरी जी म.सा.

उदासर (बीकानेर) निवासी श्रीमान् सपतलाल जी सेठिया की धर्मपत्नी धूडी बाई की कुक्षि से सवत् २०१८ कार्तिक बदी ३ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम गुलाब था। वि स २०३४ मिगसर बदी ५ तदनुसार १ दिसम्बर १९७७ गुरुवार को बीकानेर मे दीक्षा ग्रहण की। महासती श्री आदर्श प्रभा जी आपकी सासारिक भतीजी हैं। आप बीकानेर धार्मिक परीक्षा बोर्ड की "शास्त्री" परीक्षा उत्तीर्ण कर चुकी है।

महासती श्री मधुबाला जी म.सा.

छोटी सादडी (मेवाड) निवासी श्रीमान् शातिलाल जी नागौरी की धर्मपत्नी पत्नी सोसर बाई की कुक्षि से वि स २०१९ माघ सुदी ५ को जन्म ग्रहण किया। वि स २०३४ मिगसर बदी ५ , १ दिसम्बर १९७७ गुरुवार को बीकानेर मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की। आप बीकानेर धार्मिक परीक्षा बोर्ड की "शास्त्री" परीक्षा उत्तीर्ण कर चुकी है।

महासती श्री राजश्री जी म.सा. :

उदयपुर (मेवाड) निवासी श्रीमान् जीवनसिह जी कोठारी की धर्मपत्नी श्री सीता बाई की कुक्षि से २६ फरवरी १९५४ मे जन्म ग्रहण किया। व्यावहारिक शिक्षण एम ए के साथ साथ सत्सगत से वैराग्य भाव जागृत हुआ। सतत् साधना करते हुए वि स २०३४ माघ सुदी १०, दि १७ फरवरी १९७८ को जोधपुर (सरदारपुरा) मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना है।

महासती श्री कनकश्रीजी म.सा.

आपने रतलाम निवासी श्रीमान् गौतमचन्द जी पिरोदिया की धर्मपत्नी श्रीमती चाद बाई की कुक्षि से वि स २०१२ वैशाख शुक्ला ५ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम कमला था। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३४ माघ सुदी १० तदनुसार दि १७ फरवरी १९७८ को जोधपुर (सरदारपुरा) मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री शशिकान्ता जी म.सा. :

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् मदनलाल जी गदिया की धर्मपत्नी श्री कमला बाई की कुक्षि से दि २ सितम्बर १९५६ को जन्म ग्रहण किया। वि स २०३४ माघ सुदी १०, तदनुसार १७ फरवरी १९७८ को जोधपुर सरदारपुरा मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तपस्विनी महासती हैं। आपकी लघु बहिन (तपस्विनी महासती श्री रचना जी) भी साधुमार्गी सघ मे दीक्षित है। आपके पिता श्री ने आपसे ११ वर्ष बाद दीक्षित होकर विवेक मुनिजी म के नाम से समाज मे सम्मुख आए।

महासती श्री सुलभा श्री जी म सा.

देशनोक निवासी श्रीमान् गणेशमल जी बोथरा की धर्मपत्नी पान बाई की कुक्षि से आपने वि स २०१८ आषाढ माह मे जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सुशीला बाई था। धार्मिक वातावरण व सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३४ माघ सुदी १० तदनुसार, दि १७ फरवरी १९७८ को जोधपुर (सरदारपुरा) मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तपस्विनी महासती है। महासती नानू कवर जी म सा आपकी सासारिक भुआजी, महासती श्री पुष्पावती जी बहिन हैं।

महासती चेलना श्री जी म सा

आपने कानोड निवासी श्रीमान् मोहनसिह जी बावेल की धर्मपत्नी श्रीमती मोहन वाई की कुक्षि से वि स २००८ को जन्म पाया। आपका सासारिक नाम चन्द्रकला (चन्द्रा) था। व्यावहारिक शिक्षण के साथ साथ वैराग्य भाग जागृत हुआ। पिताश्री ने योग्य वर के साथ सगाई करने का निश्चय किया। बहिन चन्द्रा ने वार्तालाप के प्रसग पर रक्षा सूत्र युवक के हाथ मे वाधकर धर्मभ्राता बनाकर विदा कर दिया। कठोर परीक्षा उत्तीर्ण कर वि स २०३५ आसोज सुदी २ को जोधपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आप तपस्विनी एव सेवाभाविनी है।

महासती श्री निर्मला श्री जी म.सा. :

आपने देशनोक निवासी श्रीमान् माणकचन्द जी धाडीवाल की धर्मपत्नी वीरा बाई की कुक्षि से वि स २००४ वैशाख बदी १५ को जन्म ग्रहण किया। योवनवय मे गगाशहर निवासी वी. जतनमल जी सेठिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पुत्री, पुत्ररत्न की प्राप्ति के पश्चात् वैधव्य का दु ख आ पडा। सत समागम से वैराग्य भाव जागृत हुआ और अनेक सकटो से मुक्त होकर वि स २०३५ आसोज सुदी २ को जोधपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आप मधुर भाषिनी एव तपस्विनी महासती है।

महासती श्री कुमुद श्री जी म.सा.

गगाशहर निवासी श्रीमान् धूडचन्द जी बोथरा की धर्मपत्नी श्रीमती सुन्दर बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम कमला कुमारी था। वि स २०३५ आसोज सुदी २ जोधपुर मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तपस्विनी हैं। तपस्विनी महासती श्री लब्धि श्री जी म सा आपकी सासारिक लघु बहिन हैं।

महासती श्री पद्म श्री जी म.सा.

आपने महिदपुर (म प्र) निवासी श्रीमान् सौभाग्यमल जी बुरड की धर्मपत्नी कचन बाई की कुक्षि से जन्म दिनाक २९ सितम्बर १९५३ को ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम पुखराज था। व्यावहारिक शिक्षण एम ए के साथ–साथ धर्म–भावना जागृत हुई और दीक्षित होने हेतु अनेक सत सती वर्ग के सम्पर्क मे पहुची। अन्ततोगत्वा वि स २०३६ चैत्र शुक्ला १५ तदनुसार दि १२ अप्रैल १९७९ को ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तपस्विनी साध्वी रत्ना है।

महासती श्री मधुश्री जी म.सा.

इन्दौर (म प्र) निवासी श्रीमान् सोहनलाल जी सुराना की धर्मपत्नी श्रीमती पारस बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। आपने व्यवहारिक अध्ययन बी ए तक किया। सत समागम से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३६ चैत्र सुदी १५, तदनुसार दि १२ ४ १९७९ को ब्यावर मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप विधाध्ययनरत हैं।

महासती श्री कल्पना श्री जी म सा.

आपने देशनोक निवासी श्रीमान् आनदमल जी भूरा की धर्मपत्नी श्री तुलसी बाई की कुक्षि से वि स २०१७ जेठ वदी ६ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम कान्ता कुमारी था। सत्सगत से वैराग्य भाव जागृत हुआ ओर वि स २०३६ चेत्र सुदी १५ तदनुसार, दि १२ ४ १९७९ को ब्यावर मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तपस्विनी साध्वीरत्ना हैं।

महासती श्री अरूणा श्री जी म सा.

आपने पीपल्या मडी निवासी श्रीमान् पारसमल जी छिगावत की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा बाई की कुक्षि से वि स २०१६ भादवा वदी ८ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम विजया कुमारी था। सत्सगत से प्रभावित होकर वि स २०३६ चेत्र सुदी १५, तदनुसार दि १२ ४ १९७९ को ब्यावर मे दीक्षा ग्रहण की। आप मधुर व्याख्यात्री एव विदुषी है।

महासती श्री दर्शना श्री जी म.सा.

आपने देशनोक निवासी श्रीमान् जयचन्दलाल जी छल्लानी की धर्मपत्नी कमला बाई की कुक्षि से वि स २०१८ आषाढ वदी ८ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम लक्ष्मी कुमारी था। वि स २०३६ चेत्र सुदी १५ तदनुसार, दि १२ ४ १९७९ को ब्यावर मे आचार्य श्री नानेश से आपने दीक्षा ग्रहण की। आप धार्मिक अध्ययनरत हे।

महासती श्री प्रवीणा श्री जी म.सा.

आप मदसोर निवासी श्रीमान् सागरमल जी पोरवाल की धर्मपत्नी कमला बाई की सान्निध्य मे वृद्धिगत हुई। सवत् २०२० मे जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम प्रेम कुमारी था। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ ओर वि स २०३६ चैत्र सुदी १५, तदनुसार, दि १२ ४ १९७९ गुरुवार को ब्यावर मे ऐतिहासिक दीक्षा महोत्सव पर दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तरुण तपस्विनी श्रमणीरत्ना है।

महासती श्री पकज श्री जी म.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् लूणकरण जी सुखानी की धर्मपत्नी श्रीमती कचन बाई की कुक्षि से वि स २०१९ भादवा सुदी ५ (सम्वत्सरी महापर्व) को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम शकुन्तला कुमारी था। आपने व्यावहारिक अध्ययन ९वीं तक किया। वि स २०३६ चैत्र सुदी १५, तदनुसार, दि १२ ४ १९७९ गुरुवार को ब्यावर मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री कमल श्री जी म.सा.

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् मोतीसिह जी कोठारी की धर्मपत्नी चेतन बाई की कुक्षि से स २००९ माघ सुदी १२, तदनुसार दि ७ २ १९५२ को जन्म ग्रहण किया। व्यावहारिक शिक्षण बी ए करने के पश्चात् धर्म भावना जागृत हुई और वि स २०३६ चैत्र सुदी १५ तदनुसार, दि १२ ४ १९७९

गुरुवार को ब्यावर (राज) मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना हैं। तपस्विनी महासती श्री सुशीला कवर जी म सा आपकी सासारिक गुरु बहिन हैं।

महासती श्री ज्योत्स्ना श्री जी म.सा. .

आपने गगाशहर (नई लाईन) निवासी श्रीमान् रामलाल जी सेठिया की धर्मपत्नी श्री बाला देवी की कुक्षि से वि स २०१९ सावन सुदी १५ (रक्षा बन्धन) को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम स्नेहलता था। ससार को असार समझकर वि स २०३६ चेत्र सुदी १५, तदनुसार दि १२ ४ १९७९ गुरुवार को ब्यावर (राज) मे भागवती दीक्षा आपने अगीकार की। आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा. ·

आपने बडी सादडी निवासी श्रीमान् ख्यालीलाल जी मुणोत की धर्मपत्नी श्रीमती चौसर बाई की कुक्षि से वि स २०२० कार्तिक बदी १३ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम पुष्पा कुमारी था। सत्सगत से मानव जीवन की महत्त्वता को समझकर वि स २०३६ चैत्र सुदी १५ तदनुसार दिनाक १२ ४ १९७९ को ब्यावर मे आपने दीक्षा ग्रहण की। महासती श्री सुमति कवर जी आपकी सासारिक बडी बहिन हैं, आप विद्याध्ययनरत है।

महासती श्री वन्दना जी म.सा. :

आपने गगाशहर निवासी श्रीमान् किशनलाल जी सोनावत की धर्मपत्नी आशा बाई की कुक्षि से वि स २०२० माघ बदी १२ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम मूली बाई था। बडी बहिन श्री हर्षिला जी की दीक्षा प्रसग से आप मे धर्मरुचि जागृत हुई और वि स २०३६ चैत्र सुदी १५, तदनुसार, दिनाक १२ ४ १९७९ को ब्यावर मे जैन दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान मे आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री प्रमोद श्री जी म.सा. :

आपने ब्यावर निवासी श्रीमान् रतनलाल जी कोठारी की धर्मपत्नी श्री नजर बाई की कुक्षि से वि स २०२१ आसोज सुदी ७ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम जतन कुमारी था। सत्सगति से धर्मभावना जागृत हुई और जन्म भूमि मे ही वि स २०३६ चैत्र सुदी १५ गुरुवार, तदनुसार दिनांक १२ ४ १९७९ को ऐतिहासिक दीक्षा प्रसग पर दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तर्क भाषी हैं।

महासती श्री उर्मिला श्री जी म.सा. :

आपने रायपुर म प्र (मारवाड मे फलौदी) निवासी श्रीमान् नथमल जी झाबक की धर्मपत्नी सोनी बाई की कुक्षि से वि स २०१९ मे जन्म ग्रहण किया। लघुवय मे ससार की नश्वरता लखकर वैराग्य भावना जागृत हुई। आप (बुसी) मारवाड मे वि स २०३७ जेठ सुदी ३, तदनुसार, दिनाक १५ ६ १९८० को भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्विनी हैं। आपके दीक्षित होने के बाद छोटी (श्री कल्प-लता जी) ने भी दीक्षा ग्रहण की।

गहासती श्री हेग प्रभा जी ग सा

आपने श्री केसिगा निवासी श्रीमान् हुक्मीचन्द जी वरडिया की धर्मपत्नी श्रीमती माणक बाई की कुक्षि से वि स २०१८ फाल्गुन शुक्ला १० को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम हेम प्रभा था। सत समागमन से वेराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३७ आसोज सुदी ३ रविवार, तदनुसार, दि १२१०१९८० को राणावास मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना है।

महासती श्री सुभद्रा श्री जी ग.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् किशनचन्द जी पुगलिया की धर्मपत्नी श्री ममोल बाई की कुक्षि से वि स २०१४ चैत्र सुदी ५ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम शान्ता कुमारी था। अनमोल मानव जीवन की महत्त्वता समझकर वि स २०३७ सावन सुदी ११ शुक्रवार तदनुसार २२ अगस्त १९८० को राणावास (मारवाड) मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तपस्विनी हैं।

महासती श्री ललित प्रभा जी म.सा. .

विनोता (मेवाड) निवासी श्रीमान् भवरलाल जी डोशी की धर्मपत्नी श्रीमती राज बाई की कुक्षि से आपने वि स २०१९ मिगसर वदी २ को जन्म ग्रहण किया। ससार की असारता समझकर वि स २०३८ वैशाख शुक्ला ३ (अक्षय तृतीया) को गगापुर मे भागवती दीक्षा अगीकार की। वर्तमान मे आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री वसुमति जी म.सा.

आपने अलाय (नागौर) निवासी श्रीमान् पूनमचन्द जी सुखलेचा की धर्मपत्नी रतनबाई की कुक्षि से २३ मई १९६४ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम बसन्तमाला था। सत–सान्निध्य वे वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि.स २०३८ आषाढ सुदी ८, तदनुसार दि ९ ७ १९८१ को अलाय मे ही आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से घोर तपस्वी श्री ईश्वर चन्द जी म सा के मुखारविन्द से सम्पन्न हुई। आप विदुषी साध्वी रत्ना हैं। स्थविर महासती श्री प्यारकवर जी म सा आपकी सांसारिक बुआसा थे एव तपस्विनी महासती श्री लक्ष्य प्रभा जी आपकी सासारिक लघु बहिन हैं।

महासती श्री लब्धि श्री जी म.सा.

आपने गंगाशहर निवासी श्रीमान् धूडचन्द जी बोथरा की धर्मपत्नी श्री सुन्दर बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम लीला था। वि स २०३८ कार्तिक सुदी १२, दि ९ ११ १९८१ को उदयपुर मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्विनी हैं। महासती श्री कुमुद श्री म सा सासारिक बडी बहिन है। वर्तमान मे आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री इन्दुप्रभा जी म.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् केशरीचन्द जी बोथरा की धर्मपत्नी कमला वाई की कुक्षि से वि स २०१६ जेठ सुदी ५ गुरुवार, तदनुसार दिनाक ४ जून १९५९ को जन्म ग्रहण किया। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३८ कार्तिक शुक्ला १२, दिनाक ९ ११ १९८१ को उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आप मधुर सगायिका एव विदुषी साध्वी रत्ना है।

महासती श्री ज्योति प्रभा जी म.सा. :

आपने गगाशहर निवासी श्रीमान् सूरजमल जी छाजेड की धर्मपत्नी श्रीमती धापूबाई की कुक्षि से वि स २०१७ सावन सुदी ६ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम जेठी कुमारी था। सत्सगति से आप मे वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३८ कार्तिक सुदी १२, दिनाक ९ ११ १९८१ को उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आप तपस्विनी है एव विद्याध्ययनरत है।

महासती श्री चित्रा श्री जी म.सा. .

आपने लोहावट (हाल मुकाम– ऊटी) तमिलनाडू निवासी श्रीमान् सम्पतलाल जी कोटडिया की धर्मपत्नी की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। सत्समागम से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३८ कार्तिक सुदी १२ (दि ९ ११ १९८१) को उदयपुर मे दीक्षा ग्रहण की। आपका सासारिक नाम चन्द्रकला था। आप तपस्विनी महासती हैं। धार्मिक अध्ययनरत हैं।

महासती श्री रचना श्री जी म.सा. :

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् मदनलाल जी गदिया की धर्मपत्नी श्रीमती कमला बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम राजकुमारी था। पारिवारिक धार्मिक वातावरण से धर्म भाव–मन मे जागृत हुआ और उदयपुर मे वि स २०३८ कार्तिक सुदी १२, (दि ९ ११ १९८१) को दीक्षा ग्रहण की। आप तपस्विनी साध्वीरत्न है। आपके पिता श्री (विवेक मुनिजी) पूर्व मे नाम मदनलाल जी एव बडी बहिन श्री शशिकान्ता जी म सा भी गुरु शासन मे दीक्षित है।

महासती श्री सुरेखा श्री जी म.सा. :

जोधपुर निवासी श्रीमान् पारसराज जी मेहता (सकलेचा) की धर्मपत्नी विमला बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३८ कार्तिक सुदी १२, दि ९ ११ १९८१ को उदयपुर मे आचार्य देव से भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप सरल स्वभाविनी एव सेवाभाविनी हैं।

महासती श्री विद्यावती जी म.सा. .

आपने आदर्शनगर सवाई माधोपुर निवासी श्रीमान् बाबूलाल जी पोरवाल की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेम बाई की कुक्षि से बुधवार, दिनाक ३ ७ १९६६ को जन्म ग्रहण किया। सत्सगति से वैराग्य का

अकुर अकुरित हुआ और वि स २०३८ मिगसर सुदी १० (दिनाक ६ १२ १९८१) को उदयपुर (हिरण मगरी सेक्टर न १३) मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी, व्याख्यात्री एव तरुण तपस्विनी हैं।

महासती श्री विरक्ता श्री जी म सा

आपने विनोता (मेवाड) निवासी श्रीमान् नक्षत्रमल जी लोढा की धर्मपत्नी श्रीमती सायर बाई की कुक्षि से स २०२८ कार्तिक सुदी ८ को जन्म ग्रहण किया। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ ओर वि स २०३८ माघ वदी ७ (दि १६ जनवरी १९८२) को बम्बोरा मे दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्विनी साध्वी रत्ना हें।

महासती श्री विनय श्री जी म.सा.

आपने छुई खदान निवासी श्रीमान् गेन्दमलजी साखला की धर्मपत्नी रेशमी बाई की कुक्षि से वि स २०१७ वैशाख शुक्ला पूर्णिमा तदनुसार ३० ४ १९६१ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम विमला कुमारी था। सत्सगति से वेराग्य भाव जागृत हुआ और स २०३८ चैत्र बदी ३ तदनुसार दिनाक १२ मार्च १९८२ को अहमदावाद मे भव्य दीक्षा महोत्सव पर दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्विनी हैं।

महासती श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा. .

आपने राजनादगाव निवासी श्रीमान् आसकरण जी ओरतवाल की धर्मपत्नी श्री शान्ता बाई की कुक्षि से वि स २०१६, आसोज सुदी १३, गुरुवार को जन्म ग्रहण किया। ससार को असार जानकर वि स २०३८ चैत्र वदी ३ (दिनाक ३ मार्च १९८२) गुरुवार को अहमदाबाद मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री अमिता श्री जी म.सा.

आपने रतलाम निवासी श्रीमान् हस्तीमल जी श्रीश्रीमाल की धर्मपत्नी सूरज बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम अगूर बाला था। सत्सगति से वैराग्य भाग जागृत हुआ और वि स २०३८ चैत्र बदी २, गुरुवार, तदनुसार, दिनाक १२ मार्च १९८२ को अहमदाबाद मे अपनी छोटी बहिन सुमनलता (महासती श्री शुचिताश्री जी) के साथ दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी है।

महासती श्री शुचिता श्री जी म.सा. ·

आपने रतलाम निवासी श्रीमान् हस्तीमल जी श्रीश्रीमाल की धर्मपत्नी सूरजबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सुमनलता था। आपने वि स २०३८ चैत्र बदी ३, गुरुवार तदनुसार, दिनाक १२ मार्च १९८२ को अहमदाबाद मे अपनी बडी बहिन अगूरबाला (अमिता श्री जी) के साथ दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री श्वेता श्री जी म.सा.

आपने केशकाल (बस्तर) निवासी श्रीमान् मोतीलाल जी बुरड की धर्मपत्नी सनम बाई की कुक्षि से दिनाक २९ जून १९६१ को जन्म ग्रहण किया आपका सासारिक नाम कमला कुमारी था। वि स २०३८ चैत्र बदी ३ तदनुसार दिनाक १२ ३ १९८२ गुरुवार को अहमदावाद मे दीक्षा अगीकार की। आप तरुण तपस्विनी एव विदुषी साध्वी रत्ना है।

महासती श्री नम्रता श्री जी म सा. .

आपने जगदलपुर निवासी श्रीमान् उत्तमचन्द जी नाहर की धर्मपत्नी श्रीमती जमुना बाई की कुक्षि से वि स २०१९ भादवा सुदी १४ (दिनाक १० अगस्त १९६२) को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सरोज कुमारी था । वि स २०३८ चैत्र बदी ३ गुरुवार तदनुसार, दिनाक १२ मार्च १९८२ को अहमदाबाद मे आपने आचार्य श्री नानेश से जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी हैं।

महासती श्री मुक्ति श्री जी म.सा. ·

आपने कपासन निवासी श्रीमान् सोहनलाल जी चडालिया की धर्मपत्नी सायरबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम कान्ता कुमारी था। ससार की असारता को समझकर वि स २०३८ चैत्र बदी ३ तदनुसार १२ मार्च १९८२ को अहमदाबाद मे दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्विनी साध्वी रत्ना है।

महासती श्री जिन प्रभा जी म.सा. :

आपने राजनादगाव निवासी श्रीमान् राणुलाल जी गिडिया की धर्मपत्नी श्रीमती ढेलाबाई की कुक्षि से वि स २०१५ कार्तिक बदी ७ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम जमुना कुमारी था। साधु समागमन से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३८ चैत्र बदी ३ गुरुवार तदनुसार दिनाक १२ मार्च १९८२ को अहमदाबाद मे जैन–दीक्षा ग्रहण की। आप धार्मिक अध्ययनरत हैं।

महासती श्री सिद्ध प्रभा जी म.सा. :

आपने नागौर निवासी श्रीमान् जवरीमल जी पींचा धर्मपत्नी मीरा बाई की कुक्षि से वि स २०१८ चैत्र बदी २ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सरला कुमारी था। आपने वि स २०३८ चैत्र बदी ३ गुरुवार, तदनुसार दिनाक १२ मार्च १९८२ को अहमदाबाद मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की। आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री मणि प्रभा जी म.सा. :

आपने गगाशहर निवासी श्रीमान् भवरलाल जी बैद की धर्मपत्नी रेवती बाई की कुक्षि से वि स २०१८ माघ बदी १३ को जन्म ग्रहण किया। त्यागी महापुरुषो की सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०३८ चैत्र बदी ३ तदनुसार दिनाक १२ मार्च १९८२, गुरुवार को अहमदाबाद मे

आपने सयम स्वीकार किया। आप विद्याध्ययनरत है।

महासती श्री विशाल प्रभा जी म.सा.

आपने गगाशहर निवासी श्रीमान् मूलचन्द जी भसाली की धर्मपत्नी ममोल बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम विजया कुमारी था। वि स २०३८ चैत्र बदी ३ गुरुवार तदनुसार दिनाक १२ मार्च १९८२ को अहमदाबाद मे आपने जेन भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप वर्तमान मे विद्याध्ययनरत है।

महासती श्री कनक प्रभाजी म.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् गुलाबचन्द जी गुलगुलिया की धर्मपत्नी श्रीमती मगला बाई की कुक्षि से वि स २०२१ पोष सुदी १३ मगलवार तदनुसार दिनाक १५ जनवरी १९६५ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम कुसुम कुमारी था। आपने अपनी लघु बहिन कु सुनिता (महासती सत्य प्रभाजी) के साथ वि स २०३८ चेत्र बदी ३ गुरुवार दि १२ ३ १९८२ को अहमदाबाद मे दीक्षा ग्रहण की। आपकी बडी बहिन वनिता श्रीजी भी गुरुचरणो मे दीक्षित हैं। महासती श्री जी विदुषी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री सत्य प्रभा जी म.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् गुलाबचन्द जी गुलगुलिया की धर्मपत्नी श्रीमती मगला बाई की कुक्षि से वि स २०२२ चैत्र बदी ३ तदनुसार दिनाक १ मार्च १९६६ मगलवार को जन्म ग्रहण लिया। आपका सासारिक नाम सुनिता कुमारी था। आपकी बडी बहिन वनिता श्री जी ने पहली दीक्षा ग्रहण कर ली। आपने बडी बहिन कुसुम (महासती श्री कनक प्रभा जी) के साथ वि स २०३८ चैत्र बदी ३ तदनुसार दिनाक १२ मार्च १९८२ को अहमदाबाद मे दीक्षा ग्रहण की। आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री रक्षिता श्री जी म.सा.

आपने आऊवा निवासी श्रीमान् जसराज जी चौहान की धर्मपत्नी भीकी बाई की कुक्षि से वि स २००६ कार्तिक बदी १५ (दीपावली) को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम रक्षा कुमारी था। १६ वर्ष की वय मे पाली निवासी श्रीमान् पारसमल जी कवाड के साथ वि स २०२२ मे आपका विवाह सम्पन्न हुआ। दो सन्तान की प्राप्ति के बाद वि स २०२८ मे पतिदेव का वियोग होने पर ससार को असार जानकर वि स २०४० आसोज सुदी २ तदुनसार दिनाक ८ अक्टूबर १९८३ को भावनगर (सौराष्ट्र) मे दीक्षा ग्रहण की। आप सेवाभाविनी महासती हैं।

महासती श्री महिमा श्री जी म.सा

आपने अहमदाबाद (मूल मे--बीकानेर) निवासी श्रीमान् गुमानमल जी मुकीम की धर्मपत्नी जब्बर बाई की कुक्षि से दि २० सितम्बर १९६० को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम कुसुम कुमारी था। व्यावहारिक शिक्षण बी ए पार्ट प्रथम करते--करते सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और

वि स २०४० आसोज सुदी २ तदनुसार दिनाक ८ अक्टूबर १९८३ को भावनगर (सौराष्ट्र) मे दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान की आप धार्मिक विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री मृदुला श्री जी म.सा. ·

आपने भिलाई (मूल–जावरा एम पी) निवासी श्रीमान् समरथमल जी पटवा (सोनी) की धर्म–पत्नी श्री प्रेम बाई की कुक्षि से ९ अगस्त १९६१ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम मजूलता था। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और व्यवहारिक शिक्षण बी ए के साथ लघु बहिन वीणा (महासती वीणा श्री जी के साथ वि स २०४० आसोज सुदी २ तदनुसार दिनाक ८ अक्टूबर १९८३ को भावनगर (सौराष्ट्र) मे दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्विनी हैं।

महासती श्री वीणा श्री जी म.सा. :

आपने भिलाई (मूल–जावरा–म प्र) निवासी श्रीमान् समरथमलजी पटवा (सोनी) की धर्मपत्नी श्री प्रेम बाई की कुक्षि से दिनाक २२ अप्रैल १९६३ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम वीणा बहन था। बडी बहन मजू के साथ बी ए का अध्ययन प्राप्त किया। सत्सगति से मानव जीवन की महत्त्वता समझकर सहोदरा बहिन के साथ वि स २०४० आसोज सुदी २ तदनुसार, दिनाक ८ अक्टूबर १९८३ को भावनगर (सौराष्ट्र) मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप विद्याध्ययनरत है।

महासती श्री लक्ष प्रभा जी म.सा. ·

आपने अलाय निवासी श्रीमान् पूनमचन्द जी सुखलेचा की धर्मपत्नी रतनबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम ललिता कुमारी था। बडी बहिन बसतमाला (श्री वसुमति जी म) के दीक्षित होने के बाद आपके मन मे वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४० पौष बदी १० गुरुवार तदनुसार दिनाक २९ दिसम्बर १९८३ गुरुवार को बीकानेर मे आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से सन्तो के मुखाविन्द से भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्विनी हैं।

महासती श्री प्रेरणा श्री जी म.सा. .

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् इन्द्रचन्द जी पुगलिया की धर्मपत्नी श्री राज कुवर बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम पुष्पाबाई था। यौवनवय मे बीकानेर निवासी श्री लूणकरण जी बाठिया के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। एक पुत्री रत्न (मुक्ता) की भी उपलिब्ध हुई। ससार को असार समझकर दीक्षित होने हेतु तैयार हुई। पारिवारिक बाधाओ को चीरती हुई लगभग ११ वर्ष तक वैराग्यावस्था मे रहकर अपनी पुत्री (महासती श्री मुक्ता श्री जी) के साथ रतलाम मे वि स २०४१ फाल्गुन सुदी २ (दिनाक ४ मार्च १९८४) को २५ दीक्षा प्रसग पर दीक्षा ग्रहण की। विदुषी महासती जी श्री वसुमती जी म सा आपकी ससारपक्षीय लघु बहिन हैं। आप भी तपस्विनी एव मृदु भाषिनी है।

महासती गुण रजना श्री जी म सा. .

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् मदनलाल जी नलवाया की धर्मपत्नी सौरमबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम गुणमाला था। आपने एम ए, बी एड की व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त किया। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ ओर रतलाम मे दि ४ मार्च १९८४, वि स २०४१ फाल्गुन सुदी २ को दीक्षा ग्रहण की। आप तपस्विनी साध्वी रत्ना है।

महासती श्री सूर्य मणि जी म.सा.

आपने मन्दसौर (म प्र) निवासी श्रीमान् समरथमल जी जेन (गोटावाला) की धर्मपत्नी श्रीमती सागर बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सरोज बाला था। आपने एम ए तक व्यवहारिक शिक्षण प्राप्त किया। सत समागमन से विरक्त भावना जागृत हुई और वि स २०४१ फाल्गुन शुक्ला २ (दि ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे दीक्षित हुई। आप विदुषी एव तरुण तपस्विनी हैं।

महासती श्री सरिता श्री जी म.सा.

आपने बीकानेर (हाल–कलकत्ता) निवासी श्रीमान् डूगरमल जी दस्साणी की धर्मपत्नी श्रीमती रतन बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। सासारिक सुख वैभव मे पलने वाली कुमारी सरिता पूज्य गुरुदेव व सत सती के दर्शनार्थ आई और सत समागम से वैराग्य भाव जागृत हुआ। वि स २०४१ फाल्गुन सुदी २ (दिनाक ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तरुण तपस्विनी महासती हैं।

महासती श्री सुवर्णा श्री जी म.सा.

आपने रतलाम निवासी श्रीमान् नाथूलाल जी गान्धी की धर्मपत्नी चन्दा बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम शकुन्तला कुमारी था। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४१ फागुन शुक्ला २ (दिनाक ४ मार्च १९८४) को भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप तपस्विनी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री निरूपणा श्री जी म.सा.

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् दयालाल जी दोशी की धर्मपत्नी श्रीमती जतन बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम निर्मला कुमारी था। सत्सगत से ससार को असार समझकर वि स २०४१ फागुन शुक्ला २ (दिनाक ४ मार्च १९८४) को दीक्षा महोत्सव पर रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की। आप तपस्विनी साध्वी रत्ना हैं एव सेवाभाविनी हैं।

महासती श्री शारदा श्री जी म.सा.

आपने डोडी लौहारा निवासी श्रीमान् हजारीमल जी भसाली की धर्मपत्नी श्रीमती कमला बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। सत्प्रेरणा से वैराग्य भावना जागृत हुई और वि स २०४१ फाल्गुन

शुक्ला २, ४ मार्च १९८४ को रतलाम मे ऐतिहासिक दीक्षा महोत्सव पर आपने दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना है। आपकी सासारिक लघु बहिन सरिता (महासती श्री दिव्य प्रभाजी) भी गुरु शासन मे दीक्षित हैं।

महासती श्री विकास श्री जी म.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् मुलतानमल जी गोलछा की धर्म पत्नी श्री कचन बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम रेणुका था। सत्सगति से वेराग्य की लौ प्रज्वलित हुई और वैराग्यावस्था मे मासखमण की कठिन तपाराधना भी की। वि स २०४१, फाल्गुन शुक्ला २ (दिनाक ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की।

महासती श्री तरूलता श्री जी म.सा. :

आपने चित्तौड (मीरा नगरी) निवासी श्रीमान् भवरलाल जी अब्बानी की धर्मपत्नी श्री मोहन बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम तारा कुमारी था। मानव जीवन की महत्त्वता को समझकर आपने वि स २०४१ फाल्गुन शुक्ला २ (दिनाक ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे सयमी जीवन अगीकार किया। आप तरूण तपस्विनी हैं। धार्मिक अध्ययनरत है।

महासती श्री करूणा श्री जी म.सा. :

मोडी निवासी श्रीमान् सूरजमल जी नपावलिया की धर्मपत्नी श्रीमती सौभाग्य बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम कान्ता कुमारी था। परिवार के धार्मिक वातावरण के कारण धर्म–भाव आप मे भी जागृत हुआ और वि स २०४१ फागुन शुक्ला २ (दि ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी साध्वी रत्ना हैं। वि महासती श्री विमला कवर जी म, वि महासती श्री सुशीला कवर जी म सा, वि महासती श्री मुक्ति प्रभा जी म सा, आपकी सासारिक ज्येष्ठ सहोदरा हैं।

महासती श्री प्रभावना श्री जी म.सा. :

आपने बडा खेडा (राज) निवासी श्रीमान् मिश्रीलाल जी माडोत की धर्मपत्नी दाखा बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम पुष्पा कुमारी था। यौवनवय मे वली (भीम) निवासी श्री भीखमचन्द जी भडारी के साथ आपका विवाह सम्पन्न हुआ। ससार के स्वरूप को समझकर सत्सगति से प्रेरणा पाकर रतलाम (म प्र) मे वि स २०४१ फाल्गुन सुदी २ (दिनाक ४ मार्च १९८४) को आपने चारित्र धर्म स्वीकार किया। आप सरल स्वभावी व तरुण तपस्विनी हैं।

महासती श्री सुयशमणि जी म.सा. :

आपने भीनासर निवासी श्रीमान् मेघराज जी लुणावत की धर्मसहायिका श्री रतनी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सन्तोष कुमारी था। बडी बहिन काता (महासती श्री कीर्ति श्रीजी) के दीक्षित होने के बाद आप मे भी त्याग की भावना जागृत हुई। बहिन के पद चिन्हो

पर चलती हुई, वि स २०४१ फाल्गुन शुक्ला २ (दि ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे दीक्षा अगीकार की। आप तरूण तपस्विनी हैं।

महासती श्री चित्तरजना श्री जी म.सा.

आपने रतलाम निवासी श्रीमान् रखबचन्दजी पिरोदिया की धर्मपत्नी श्री रोशन बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम राजकुमारी था। सत समागम से धार्मिक रुचि जागृत हुई और वि स २०४१ फाल्गुन सुदी २ (दि ४ मार्च १९८४) को जन्म भूमि मे ऐतिहासिक दीक्षा महोत्सव पर दीक्षा ग्रहण की। आपके परिवार से महासती श्री चन्द्र कान्ता जी म सा, ताराकवर जी म सा व कनक श्री जी म भी दीक्षित हैं। आप तरूण तपस्विनी हैं। धार्मिक विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री मुक्ता श्री जी म सा. :

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् लूणकरण जी बाठिया की धर्मपत्नी पुष्पा बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। माता की धर्मभावना का असर आप पर भी पडा और वि स २०४१ फाल्गुन शुक्ला २ (दि ४ मार्च १९८४) को माता (श्री प्रेरणा श्री जी) के साथ रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की। आप विदुषी एव तपस्विनी हैं। महासती श्री वसुमति जी आपकी सासारिक मौसी हैं।

महासती श्री सिद्धमणि जी म सा.

आपने बेगू (मेवाड) निवासी श्रीमान् शातिलाल जी पोखरना की धर्मपत्नी सोहन बाई की कुक्षि से वि स २०२० भादवा सुदी १ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम सगीता कुमारी था। सत–सान्निध्य से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४१ फाल्गुन शुक्ला २ (दि ४ मार्च, १९८४) को रतलाम मे आचार्य श्री नानेश से सयम रत्न प्राप्त किया। आप विदुषी एव तपस्विनी हैं।

महासती श्री रजतमणि श्री जी म.सा.

बगुमुडा (उडीसा) निवासी श्रीमान् नुनियामल जी गर्ग (अग्रवाल) की धर्मपत्नी श्रीमती शाति बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण दि ८१०१९६५ को किया। आपका सासारिक नाम राजकुमारी था। वि स २०४१ फाल्गुन शुक्ला २, दि ४ मार्च १९८४ को रतलाम (म प्र) मे आचार्य श्री नानेश से भागवती दीक्षा अगीकार की। आप धार्मिक विद्याध्ययनरत है।

महासती श्री अर्पणा श्री जी म सा.

आपने कानोड निवासी स्वाध्यायी श्रीमान् गुलाबचन्द जी भणावत की धर्मपत्नी श्री कमला बाई की कुक्षि से वि स २०२४ सावन बदी १ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम आजाद कुमारी था। सत्सगत से प्रभावित होकर वि स २०४१ फाल्गुन शुक्ला २ (दि ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे जैनेश्वरी दीक्षा अगीकार की। आप तरूण तपस्विनी हैं। श्री विवेक मुनि जी आपके सासारिक फूफासा व महासती शशिकाता जी व श्री रचना श्री जी बहिने है।

महासती श्री मंजुला श्री जी म.सा. .

आपने भीनासर निवासी श्रीमान् तोलाराम जी सेठिया की धर्मपत्नी श्रीमती जेठी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। सत्सगत से प्रभावित होकर वि स २०४१ फाल्गुन शुक्ला २ (दि ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे सयमी जीवन अगीकार किया। आप विदुषी एव तपस्विनी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री गरिमा श्री जी म.सा. :

आपने चौथ का बरवाडा निवासी श्रीमान् दौलतराम जी पोरवाल की धर्मपत्नी प्रभा बाई की कुक्षि से सन् १९६४ मे जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम गायत्री कुमारी था। गुणश्री था। सत्सगत से धर्म भावना दृढ बनी और वि स २०४१ फाल्गुन सुदी २, दि ४ मार्च १९८४ को रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की। आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री हेम श्री जी म.सा. .

आपने नोखामडी निवासी श्रीमान् रुघलालजी काकरिया की धर्मपत्नी श्री भवरी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम हर्ष कुमारी था। सत्सगत से वैराग्य की लौ जागृत हुई और रतलाम मे दिनाक ४ मार्च १९८४ को आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान मे विद्याध्ययनरत हैं। तपस्वी श्री मूलमुनि जी म सा आपके सासारिक बाबाजी (बडे पिताजी) व विदुषी महासती श्री सुदर्शना श्रीजी भुआ की पुत्री हैं।

महासती श्री कल्पमणि श्री जी म.सा. :

आपने पीपल्या मडी निवासी श्रीमान् सुन्दरलाल जी कछारा की धर्मपत्नी श्री प्रभा बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम किरण कुमारी था। सत्सगति को पाकर वि स २०४१ फाल्गुन सुदी २ (दि ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान मे आप विद्याध्ययनरत है।

महासती श्री रवि प्रभा जी म.सा. ·

आपने जावरा निवासी श्रीमान् छगनमल जी काठेड की धर्मपत्नी श्रीमती काता बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम अनिता कुमारी था। सत्सानिध्य से प्रभावित होकर वि स २०४१ फाल्गुन सुदी २ (दिनाक ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे दीक्षा ग्रहण की। आप सेवाभाविनी एव धार्मिक विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री मयक मणि जी :

आपने पीपल्यामडी निवासी श्रीमान् कन्हैयालाल जी पीतलिया की धर्मपत्नी घीसी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम किरण कुमारी था। वि स २०४१ फाल्गुन शुक्ला २ (दिनाक ४ मार्च १९८४) को रतलाम मे भव्य दीक्षा महोत्सव पर आपने दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण तपस्विनी एव धार्मिक विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री चन्दना श्री जी

आपने बडीसादडी निवासी श्रीमान् मोतीलाल जी मारू की धर्मपत्नी राजकवर बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम चन्दा कुमारी था। सत समागम से वैराग्य भाव जाग्रत हुआ और आचार्य श्री नानेश की आज्ञा से बडीसादडी मे ही घोर तपस्विनी श्री ईश्वरचन्द जी म सा के मुखारविन्द से दिनाक ६ दिसम्बर १९८४ को दीक्षा सम्पन्न हुई। आप विदुषी साध्वी रत्ना हैं। आपकी अनुज अर्पणा श्री गुरु शासन मे आपके बाद दीक्षित हुई।

महासती श्री मीताजी म.सा.

आपने गगाशहर निवासी श्रीमान् मोतीलाल जी सुराना (तपस्वी मोतीलाल जी म सा) की धर्मपत्नी श्री सुआ बाई की कुक्षि से दिनाक २६ नवम्बर १९६४ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम ममोल बाई था। सत्सन्निधि से वैराग्याकुर उत्पन्न हुआ। आचार्य श्री नानेश की विशेषाज्ञा से प रत्न श्री पारस मुनि जी म सा के द्वारा वि स २०४१ माघ सुदी १० तदनुसार दिनाक ३१ जनवरी १९८५ को दीक्षा सम्पन्न हुई। आप सेवाभाविनी महासती रत्ना हैं, पूर्व मे आपके परिवार से अनेक चारित्रात्माए दीक्षित हैं।

महासती श्री पीयूष प्रभाजी म.सा.

आपने बीकानेर निवासी श्रीमान् शिखरचन्द जी बच्छावत की धर्मपत्नी श्री भवरी बाई की कुक्षि से वि स २०२० कार्तिक बदी १० तदनुसार दिनाक ११ नवम्बर १९६३ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम प्रिया था। सत्सगति से प्रेरित होकर आचार्य श्री नानेश के वि स २०४२ के चातुर्मास मे घाटकोपर, बम्बई दिनाक १७ नवम्बर १९८५ को भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री सयम प्रभा जी म सा.

आपने शाहदा (महाराष्ट्र) निवासी श्रीमान् गुलाबचन्द जी कोटडिया की धर्मपत्नी श्रीमती जेठी बाई की कुक्षि से वि स २०२० कार्तिक सुदी १०, तदनुसार दिनाक १९ ११ १९६४ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम शोभना कुमारी था। वैराग्य भाव जागृत होने पर घाटकोपर, बम्बई मे दिनाक १७ ११ १९८५ तदनुसार वि स २०४२ को दीक्षा ग्रहण की। आप धार्मिक विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री रिद्धि प्रभा जी म.सा.

आपने शाहदा निवासी श्रीमान् नेमीचन्द जी चौरडिया की धर्मपत्नी श्रीमती चम्पा बाई की कुक्षि से दिनाक २९ ११ १९६५ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम रेखा कुमारी था। दिनाक १७ ११ १९८५ को घाटकोपर, बम्बई मे आचार्य श्री नानेश से सयमी जीवन अगीकृत किया। आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री पुण्य प्रभा जी म.सा

आपने अक्कलकुआ (महाराष्ट्र) निवासी श्रीमान् जसराज जी कोटडिया की धर्मपत्नी श्रीमती कमला बाई की कुक्षि से वि.स. २०२४ सावन बदी अमावस, तदनुसार, दिनाक ६ अगस्त १९६७ रविवार को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम पद्माकुमारी था। दिनाक १७ नवम्बर १९८५ को घाटकोपर, बम्बई मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप वर्तमान मे विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री वैभव प्रभाजी म.सा.

आपने अक्कलकुआ (महाराष्ट्र) निवासी श्रीमान् रतनलाल जी वोहरा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमी बाई की कुक्षि से वि.स. २०२३ पौष बदी ३ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम विमला कुमारी था। सत्सगत से वैराग्य भाव जागृत हुआ और दिनाक १७ नवम्बर १९८५ को घाटकोपर, बम्बई में भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। आप विद्याध्ययनरत है।

महासती श्री सुबोध प्रभाजी म.सा.

आपने जागलू निवासी श्रीमान् सन्तोक चन्द जी भूरा की धर्मपत्नी गीता बाई की कुक्षि से वि.स. २०२७ चैत्र सुदी ९ (रामनवमी) को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम ललिता कुमारी था। सत्सगत से वैराग्य भाव जागृत हुआ और दिनाक १७ नवम्बर १९८५ को घाटकोपर बम्बई मे आपने दीक्षा ग्रहण की। आप विद्याध्ययनरत है। महासती श्री मजुला श्री जी आपकी सासारिक मौसी हैं।

महासती श्री पराग श्री जी म.सा. :

आपने कपासन निवासी श्रीमान् कन्हैयालाल जी दुग्गड की धर्मपत्नी श्रीमती झनकार बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम मधु कुमारी था। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि.स. २०४४ चैत्र सुदी १३, तदनुसार १२ अगस्त १९८७ (महावीर जयति) को इन्दौर–कचन बाग मे जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप धार्मिक विद्याध्यनरत हैं।

महासती श्री भावना श्री जी म.सा.

आपने भीम (उदयपुर) निवासी श्रीमान् छगनलाल जी गन्ना की धर्मपत्नी श्रीमती गहरी बाई की कुक्षि से स. २०२३ चैत्र सुदी १३ (महावीर जयती) को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम भवरी भारती बाई था। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि.स. २०४४ चैत्र सुदी १३ (महावीर जयति), दिनाक १२ अगस्त १९८७ को इन्दौर–कचन बाग मे दीक्षा ग्रहण की। आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री दिव्य प्रभाजी म.सा.

आपने डोडी लौहरा निवासी श्रीमान् हजारीमल जी भन्साली की धर्मपत्नी श्री कमला बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण की। आपका सासारिक नाम सरिता कुमारी था। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि.स. २०४४ वैशाख शुक्ला २ को इन्दौर–जानकीनगर मे दीक्षा सम्पन्न हुई। आप

विद्याध्ययनरत हैं। विदुषी महासती श्री शारदा श्री जी म आपकी सासारिक बडी बहिन है।

महासती श्री उज्ज्वल प्रभाजी म सा

आपने राजनान्दगाव निवासी श्रीमान् इन्द्रचन्द जी सुराना की धर्मपत्नी श्री गगाबाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम ऊषा था। घरेलू धार्मिक वातावरण से आपमे धर्म भाव जागृत हुआ और वि स २०४४ वेशाख शुक्ला २ को इन्दौर–जानकी नगर मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप ज्ञान साधनारत हैं। पीछे से आपकी पूज्या माताजी (महासती तपस्विनी श्री गरिमा श्री जी) ने भी दीक्षा ग्रहण की। पूज्य पिता श्री भी विरक्तमना है।

महासती श्री कल्पलता जी म.सा.

आपने रायपुर (मूल–फलोदी) निवासी श्रीमान् नथमल जी झाबक की धर्मपत्नी सोनी बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम छोटी बाई था। बडी बहिन महासती श्री उर्मिला श्री जी के दीक्षोपरान्त आपके मन मे वैराग्य भाग जागृत हो गया और वि स २०४४ वैशाख शुक्ला २ को इन्दौर–जानकीनगर मे दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री सुमित्रा श्री जी म.सा. .

आपने बाडमेर निवासी श्रीमान् मोहनलाल जी चौपडा की धर्मपत्नी श्रीमती अणची बाई की कुक्षि से वि स २०२२ पौष सुदी ५, तदनुसार दिनाक १८१२१९६५ को जन्म ग्रहण किया। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और आचार्य श्री नानेश की विशेष अनुज्ञा से वि स २०४४ वैशाख शुक्ला ६ (दिनाक ४ मई १९८७) को बाडमेर मे ही विद्वान सत श्री पारस मुनिजी द्वारा दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। आप विद्याध्ययनरत है।

महासती श्री इगिता श्री जी म सा

आपने बाडमेर निवासी श्रीमान् ईश्वरदास जी माडोतर की धर्मपत्नी पानी बाई की कुक्षि से वि स २०२५ पौष सुदी १४ को जन्म ग्रहण लिया। आपका सासारिक नाम इन्द्रा कुमारी था। सत्सगत से वैराग्य भाव प्रकट हुआ और वि स २०४४ वैशाख शुक्ला ६ (दिनाक ४ मई १९८७) को आचार्य श्री नानेश की आज्ञा से विद्वान श्री पारस मुनि जी म सा के मुखारविन्द से दीक्षा सानन्द सम्पन्न हुई। आप ज्ञान साधनारत है।

महासती श्री लक्षिता श्री जी म.सा.

आपने बाडमेर निवासी श्रीमान् भवरलाल जी चौपडा की धर्मपत्नी चपादेवी की कुक्षि से वि स २०२४ आसोज बदी १२ (दिनाक २११११९६७) को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम लीला था। वि स २०४४ वैशाख शुक्ला ६ (दिनाक ४ मई १९८७) को आचार्य श्री नानालाल जी म सा की आज्ञा से विद्वान सन्त श्री पारस मुनि जी द्वारा दीक्षा बाडमेर मे सानन्द सम्पन्न हुई।

महासती श्री विकास श्री जी म.सा.

आपने फलौदी निवासी श्रीमान् रतनलाल जी बैद की धर्मपत्नी रेशम बाई की कुक्षि से दिनाक १ नवम्बर १९६६ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम विमला कुमारी था। सत्सान्निध्य मे वैराग्य भाव जागृत हआ और वि स २०४५ चैत्र सुदी १० (दिनाक २७ ३ १९८८) को फलौदी मे आचार्य श्री की विशेष अनुमति से विद्वान सत श्री पारस मुनि जी द्वारा आपने दीक्षा ग्रहण की। आप ज्ञान साधनारत है।

महासती श्री अक्षय प्रभा जी म.सा.

आपने बडीसादडी निवासी श्रीमान् घासीलाल जी मारू की धर्मपत्नी मोहन बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम अरविदा कुमारी था। वि स २०४५ जेठ सुदी (दि २० जून १९८८) को जावरा मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप ज्ञान साधनारत हैं।

महासती श्री सरोज श्री जी म.सा.

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् भवरलाल जी मेहता की धर्मपत्नी श्रीमती कमला बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। व्यावहारिक शिक्षण मे एम ए मे प्रवेश लिया था। वैराग्य भाव के उदय से वि स २०४५ जेठ सुदी ५ (दिनाक २० जून १९८८) को जावरा मे दीक्षा ग्रहण की। वि २०४५ मिगसर बदी १ को सघ बाहर हो गई और एकाकी विचरने लग गई।

महासती श्री श्रद्धा श्री जी म.सा.

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् शोभालाल जी पगारिया की धर्मपत्नी मोहन बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम उषा कुमारी था। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ। और वि स २०४५ जेठ सुदी ५ (दिनाक २० जून १९८८) को जावरा (म प्र) मे दीक्षा ग्रहण की। आप ज्ञान साधनारत हैं।

महासती श्री अर्पिता जी म.सा.

आपने बम्बोरा निवासी श्रीमान् तख्तमल जी पीतलिया की धर्मपत्नी श्रीमती गुलाब बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम लीला कुमारी था। सत्सगति से वैराग्य भावना जागृत हुई और दिनाक २० जून १९८८ को आचार्य श्री नानेश से जावरा (म प्र) मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की। आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री किरण प्रभाजी म.सा.

आपने नीमच निवासी श्रीमान् शभूसिह जी काठेड की धर्मपत्नी सज्जन बाई की कुक्षि से चित्तौड मे जन्म ग्रहण किया। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४५ माघ सुदी १० (दिनाक १५ फरवरी १९८९) को मन्दसौर–गौतम नगर (काला खेत) मे दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण

तपस्विनी और ज्ञान साधनारत है।

महासती श्री गरिमा श्री जी म.सा. :

आपने राजनादगाव निवासी श्रीमान् जुहारमल जी नाहटा की धर्मपत्नी दगडी बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम गगा बाई था। यौवनवय मे राजनादगाव (पूर्व मे सनजारी–दुर्ग) निवासी श्रीमान् इन्द्रचन्द जी सुराना के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पुत्र–पुत्रियो से घर भरा हुआ होते भी आदर्श त्याग (पति को छोडकर) के साथ वि स २०४६ वैशाख सुदी ७ (दिनाक ११ मई १९८९) गुरुवार को निम्बाहेडा (नवाब का) मे आचार्य श्री नानेश से ५० वर्ष की उम्र मे दीक्षा ग्रहण की। आपकी सासारिक पुत्री उषा (महासती श्री उज्ज्वल प्रभाजी) ने भी पूर्व मे दीक्षा अगीकार की। आप तपस्विनी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री चारित्र प्रभाजी म.सा. :

आपने विल्लिपुरम (तामिलनाडु) निवासी श्रीमान् रावतमल जी डोसी की धर्मपत्नी श्रीमती पतासी बाई की कुक्षि से जन्म लिया। आपका सासारिक नाम चन्द्रा बाई था यौवनवय मे नेली कुप्पम (तमिलनाडु) निवासी श्रीमान् कस्तूरचन्द जी बोहरा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। अल्पकाल मे वैधव्य का दु ख आ पडा। इधर सती वृन्द के समागम से ससार की असारता को समझ वैराग्य भाव जागृत हुआ। वैराग्यावस्था मे सिरकाली मे ९९ उपवास करके सघ मे एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। वि स २०४६ वैशाख सुदी ७ (दिनाक ११ मई १९८९) गुरुवार को अपनी लघु बहिन पुष्पा (महासती श्री पुण्य प्रभा जी) के साथ आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से परम विदुषी श्री नानूकवर जी म सा के सान्निध्य मे विल्लिपुरम मे दीक्षा सम्पन्न हुई। धर्म साधना मे रत हैं।

महासती श्री कल्पना श्री जी म.सा.

आपने नान्दगाव (महाराष्ट्र) निवासी श्रीमान् रोशनलाल जी छाजेड की धर्मपत्नी श्रीमती कचन बाई छाजेड की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४६ वैशाख सुदी ७, गुरुवार, दिनाक ११ मई १९८९ को निम्बाहेडा मे आचार्य श्री नानेश से भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप सयम साधनारत हैं।

महासती श्री शोभा श्री जी म.सा. :

आपने बोल्ठाण (महाराष्ट्र) निवासी श्रीमान् मागीलाल जी तातेड की धर्मपत्नी श्रीमती लीला बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। रूई नासिक (महाराष्ट्र) निवासी श्री कचरमल जी लोढा के साथ आपका विवाह सम्पन्न हुआ। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४६ वैशाख सुदी ७, गुरुवार (दिनाक ११ मई १९८९) को भागवती दीक्षा निम्बाहेडा मे ग्रहण की।

महासती श्री विकास श्री जी म.सा.

आपने फलौदी निवासी श्रीमान् रतनलाल जी बैद की धर्मपत्नी रेशम बाई की कुक्षि से दिनाक १ नवम्बर १९६६ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम विमला कुमारी था। सत्सान्निध्य मे वैराग्य भाव जागृत हआ और वि स २०४५ चैत्र सुदी १० (दिनाक २७ ३ १९८८) को फलौदी मे आचार्य श्री की विशेष अनुमति से विद्वान सत श्री पारस मुनि जी द्वारा आपने दीक्षा ग्रहण की। आप ज्ञान साधनारत है।

महासती श्री अक्षय प्रभा जी म.सा. :

आपने बडीसादडी निवासी श्रीमान् घासीलाल जी मारू की धर्मपत्नी मोहन बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम अरविदा कुमारी था। वि स २०४५ जेठ सुदी (दि २० जून १९८८) को जावरा मे आचार्य श्री नानेश से दीक्षा ग्रहण की। आप ज्ञान साधनारत हैं।

महासती श्री सरोज श्री जी म.सा. ·

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् भवरलाल जी मेहता की धर्मपत्नी श्रीमती कमला बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। व्यावहारिक शिक्षण मे एम ए मे प्रवेश लिया था। वैराग्य भाव के उदय से वि स २०४५ जेठ सुदी ५ (दिनाक २० जून १९८८) को जावरा मे दीक्षा ग्रहण की। वि २०४५ मिगसर बदी १ को सघ बाहर हो गई और एकाकी विचरने लग गई।

महासती श्री श्रद्धा श्री जी म सा.

आपने उदयपुर निवासी श्रीमान् शोभालाल जी पगारिया की धर्मपत्नी मोहन बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम उषा कुमारी था। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ। और वि स २०४५ जेठ सुदी ५ (दिनाक २० जून १९८८) को जावरा (म प्र) मे दीक्षा ग्रहण की। आप ज्ञान साधनारत हैं।

महासती श्री अर्पिता जी म.सा. ·

आपने बम्बोरा निवासी श्रीमान् तख्तमल जी पीतलिया की धर्मपत्नी श्रीमती गुलाब बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम लीला कुमारी था। सत्सगति से वैराग्य भावना जागृत हुई और दिनाक २० जून १९८८ को आचार्य श्री नानेश से जावरा (म प्र) मे जैन भागवती दीक्षा अगीकार की। आप विद्याध्ययनरत हैं।

महासती श्री किरण प्रभाजी म.सा.

आपने नीमच निवासी श्रीमान् शभूसिह जी काठेड की धर्मपत्नी सज्जन बाई की कुक्षि से चित्तौड मे जन्म ग्रहण किया। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४५ माघ सुदी १० (दिनाक १५ फरवरी १९८९) को मन्दसौर–गौतम नगर (काला खेत) मे दीक्षा ग्रहण की। आप तरुण

तपस्विनी और ज्ञान साधनारत है।

महासती श्री गरिमा श्री जी म सा.

आपने राजनादगाव निवासी श्रीमान् जुहारमल जी नाहटा की धर्मपत्नी दगडी बाई की कुक्षि से आपने जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम गगा बाई था। यौवनवय मे राजनादगाव (पूर्व मे सनजारी–दुर्ग) निवासी श्रीमान् इन्द्रचन्द जी सुराना के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पुत्र–पुत्रियो से घर भरा हुआ होते भी आदर्श त्याग (पति को छोडकर) के साथ वि स २०४६ वैशाख सुदी ७ (दिनाक ११ मई १९८९) गुरुवार को निम्बाहेडा (नवाब का) मे आचार्य श्री नानेश से ५० वर्ष की उम्र मे दीक्षा ग्रहण की। आपकी सासारिक पुत्री उषा (महासती श्री उज्ज्वल प्रभाजी) ने भी पूर्व मे दीक्षा अगीकार की। आप तपस्विनी साध्वी रत्ना हैं।

महासती श्री चारित्र प्रभाजी म.सा.

आपने विल्लिपुरम (तामिलनाडु) निवासी श्रीमान् रावतमल जी डोसी की धर्मपत्नी श्रीमती पतासी बाई की कुक्षि से जन्म लिया। आपका सासारिक नाम चन्द्रा बाई था यौवनवय मे नेली कुप्पम (तमिलनाडु) निवासी श्रीमान् कस्तूरचन्द जी बोहरा के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। अल्पकाल मे वैधव्य का दु ख आ पडा। इधर सती वृन्द के समागम से ससार की असारता को समझ वैराग्य भाव जागृत हुआ। वैराग्यावस्था मे सिरकाली मे ९९ उपवास करके सघ मे एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। वि स २०४६ वैशाख सुदी ७ (दिनाक ११ मई १९८९) गुरुवार को अपनी लघु बहिन पुष्पा (महासती श्री पुण्य प्रभा जी) के साथ आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से परम विदुषी श्री नानूकवर जी म सा के सान्निध्य मे विल्लिपुरम मे दीक्षा सम्पन्न हुई। धर्म साधना मे रत हैं।

महासती श्री कल्पना श्री जी म.सा.

आपने नान्दगाव (महाराष्ट्र) निवासी श्रीमान् रोशनलाल जी छाजेड की धर्मपत्नी श्रीमती कचन बाई छाजेड की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४६ वैशाख सुदी ७, गुरुवार, दिनाक ११ मई १९८९ को निम्बाहेडा मे आचार्य श्री नानेश से भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप सयम साधनारत हैं।

महासती श्री शोभा श्री जी म.सा.

आपने बोल्ठाण (महाराष्ट्र) निवासी श्रीमान् मागीलाल जी तातेड की धर्मपत्नी श्रीमती लीला बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। रूई नासिक (महाराष्ट्र) निवासी श्री कचरमल जी लोढा के साथ आपका विवाह सम्पन्न हुआ। सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४६ वैशाख सुदी ७, गुरुवार (दिनाक ११ मई १९८९) को भागवती दीक्षा निम्बाहेडा मे ग्रहण की।

महासती श्री रेखा श्री जी म.सा. ·

आपने नान्दगाव (महाराष्ट्र) निवासी श्रीमान् बशीलाल जी दरडा की
बाई की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। सत्सान्निध्य से वैराग्य भाव जागृत हु
वैशाख सुदी ७, गुरुवार (दिनाक ११ मई १९८९) को निम्बाहडा मे आचार्य श्री
ग्रहण की। आप ज्ञानसाधनारत हैं।

महासती श्री विवेक श्री जी म.सा. :

आपने पाटोदी (मारवाड) निवासी श्रीमान् दौलतराम जी बाघमार की
की कुक्षि से जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक नाम विमला कुमारी था।
भाव जागृत हुआ और बालोतरा मे आचार्य श्री नानेश की आज्ञा से विद्वद्वर्य
म सा के मुखारविन्द से वि स २०४६ वैशाख सुदी ७ (दिनाक ११ मई १९८९)
भागवती दीक्षा ग्रहण की। आप धर्म साधनारत हैं।

महासती श्री पुण्य प्रभाजी म.सा.

आपने विल्लिपुरम (तामिलनाडु) निवासी श्रीमान् रावतमल जी डोश
पतासी बाई की कुक्षि से वि स २०२४ सावन सुदी १३ को जन्म ग्रहण कि
नाम पुष्पा कुमारी था। अल्पवय मे माता–पिता के वियोग के कारण एव स
जागृत हुआ और बडी बहिन चन्द्रा (तपतेजस्विता महासती श्री चरित्र प्रभा) के
आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से परम विदुषी श्री नानूकवर जी म सा
२०४६ वैशाख सुदी ७, दिनांक ११ मई १९८९, गुरुवार को दीक्षा ग्रहण की। म
पर्याय मे ११० कि मी का विहारकर उत्तर मेरूर (ता ना) चातुर्मासार्थ पहुची
पारणा करने के बाद भादवी बदी अमावस (दिनाक ३१ अगस्त १९८९), गुरुवा
पूर्ण कर के स्वर्ग पधार गई।

महासती श्री पुनीता श्री जी म सा.

आपने बाडमेर निवासी श्रीमान् पुखराज जी चौपडा की धर्मपत्नी श्री
कुक्षि से स २०२५ सावन सुदी १ को जन्म ग्रहण किया। आपका सासारिक
सत्सगति से वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४६ वैशाख सुदी ७ (दिन
बालोतरा (मारवाड़) मे आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से विद्वद्वर्य तपस्
म सा के मुखारविन्द से दीक्षा सम्पन्न हुई। वर्तमान मे आप ज्ञान साधनारत

महासती श्री पूजिता श्री जी

आपने बायतु (मारवाड) निवासी श्रीमान् जेठमल जी चौपडा की धर्मपत्नी श्रीमती चुकी देवी की कुक्षि से जन्म ग्रहण लिया। आपका सासारिक नाम पुष्पा कुमारी था। धर्म देशना श्रवण कर आप मे वैराग्य भाव जागृत हुआ और वि स २०४६ वैशाख सुदी ७, गुरुवार (दिनाक ११ मई १९८९) को बालोतरा (मारवाड) मे आचार्य श्री नानेश की विशेष आज्ञा से तपस्वी विद्वद्वर्य श्री सेवत मुनि जी म सा के द्वारा दीक्षा ग्रहण की। वर्तमान मे आप ज्ञान साधनारत है।

सागर में
सरिताओं
का प्रवेश

तेजसिंह जी महाराज की संप्रदाय

लोकाशाह के क्रियोद्धार के आठ पाट के बाद पुन जिन पाच महापुरुषो ने क्रियोद्धार किया। उनमे से आद्य क्रियोद्धारक जीवराज जी म सा की परम्परा के वीर भाण जी म सा के शिष्य मोती चद जी रतलाम निवासी थे ओर ओसवाल मेहता परिवार मे जन्म लिया था और स १८८२ के आसपास दीक्षा ग्रहण की थी।

बाद मे पूज्य हुक्मेश के क्रियोद्धार सुवास से प्रभावित होकर आप व आपके शिष्य तेजसिह जी म सा, आसकरण जी म सा, देव जी म सा, भोरी लाल जी म सा, सरूपचद जी म सा, धन्नालाल जी म सा आदि भी उनके सहयोगी वन गये ऐसा प्रतीत होता है। क्योकि प्राचीन समाचारी मे हुक्मीचद जी के बाद मोतीचद जी म बाद मे शिवलाल जी म और फिर तेजसिह जी म सा का नामोल्लेख मिलता है। बाद मे स १९१० मे आपका स्वर्गवास हो गया। बाद मे आचार्य श्री चौथमल जी म सा के शासनकाल मे कुछ मतभेद हो जाने के कारण सम्बन्ध टूट गया। जिसका उल्लेख पूज्य जवाहराचार्य के शासनकाल मे जब पुन १९८९ की मिगसर सुदी ३ को सम्प्रदाय के प्रमुख, स्थविर पद विभूषित श्री प्यार चद जी म सा ने अपने सब सतो की पूर्ण वृद्धावस्था देखकर सेवा की सुव्यवस्था हेतु पूज्य जवाहराचार्य को निवेदन कराया और समर्पण पत्र दिया, जिसमे उल्लेख किया है– वह समर्पण पत्र की प्रतिलिपि निम्न प्रकार है–

श्री गौतमाय नम

।। आज गाम कपासण मे स्वामी जी महाराज श्री १००८ श्री प्यार चद जी मा ठाणा ४ से बीराजमान ज्या तमपुर सा की सेवा मे हीरालाल आदी ठाणा ५ से हाजीर होकर या बात ते की है बीगत नीचे मुजब–

१ अवल स्वामिजी महाराज श्री १००८ श्री मोतीराम जी मा श्री १००८ श्री तेजसिह जी मा के और पुज जी मा श्री १००८ श्री होकमचद जी मा सु आज तक बरताव अझारा सभोग को चाल्यो आवे लेकीन बीच मे अतराय का जोर से कमिबेसी हो गयो थो सो आज पुज जी मा श्री १००८ श्री जवाहीरलाल जी मा का हुकम से पुरो अझारे ही सभोग साबीत किया सो दोनु तरफ बरताव मे जाहीर रहेगा।

२ पुज जी मा श्री १००८ श्री जवाहीरलाल जी मा स्वामिजी श्री १००८ श्री प्यारचन्द जी मा ने बदणा साबत मुजब करेगा।

३ पुज जी मा श्री १००८ श्री जवाहीरलाल जी मा ने स्वामी जी श्री १००७ श्री जीतमल जी और स्वामि जी श्री १००७ श्री बोथलाल जी मा वदणा करता रहेगा और या के सिवाय छोटा मोटा सर्व सत दोन्यु तरफ से मुरजादा सहत वदणादि करता रहेगा।

४ पुज महाराज की आज्ञा मे सर्व बरतेगा, चौमासा आदी करेगा और कोई बगत दूरा नजीक होवा पर आज्ञा मगाय लेवेगा पाच वरस की बीच मे कोई बगत चौमासो करबा को हुकम पुज श्री को होगा तो स्वामि जी श्री प्यारचद जी मा कोई गाम की बीणती नहीं मानी होगा तो चोमासो करेगा कारण की बात न्यारी

ह सम्वत् १९८३ का फागण सुद १ गुरुवार कपासण मध्ये।

दसकत–प्यारचद का।। द जीतमल का।

द बोतलाल का। द हीरालाल का। द हजारीमल का। द छगनलाल का। द शोभालाल का। द सागरमल का। द मुलतानमल का।

इसके साथ ही एक पत्र कपासन के प्रमुखो के दस्तकत सहित है। उसकी नकल इस प्रकार है–

श्री रीखब देव जी

सिद्ध श्री जोधपुर सुभ स्थानेक सरव ओपमा वीराजमान अनेक ओपमा लाईक सहाजी श्री लच्छीराम जी श्री लालचद जी साड ऐतान कपासन सुमारगी भाया बाईस सम्प्रदाय की जै जीन्द्रर जी कि बचसी अप्रच अठाका समाचार तो श्री दया माता जी का तेज प्रताप सुभला है आपका सदा भला चाहिजे तो माने प्रम सुख ऊपजे अप्रच अठे श्री महाराज धीराज १००८ श्री प्यारचद जा महाराज व महाराजाधीराज १००५ श्री बोतलाल जी महाराज विराजमान है सो या बात फरमाई है के मारा बारा ही सभोग वेणा चावे सो अबे मे सन्त पुज जी महाराज धीराज श्री १००८ श्री जुवारीलाल जी महाराज का सन्त रेवागा एक समदाय रेहेगा सो मारे मजूर है आगे मेवाड वगेरा मे बाहर बिछरागा तो सत जुवारीलाल जी माराज की सम्प्रदाय का केवागा अलावे ज्यो पुज जी महाराज धीराज हुक्म फरमावेगा वा माफिक चालागा। महाराज सा या भी फरमाई के मारी चाकरी कि जमेवरी पुज जी महाराज धीराज श्री जवारीलाल जी महाराज साब का सता की है यो हुक्म माराज धीराज श्री प्यारचद जी महाराज फरमाई सो सब मारगी भाया भेला होकर ओ कागद लिख्यो है। यो कागद जट पुज जी महाराज धीराज १००८ श्री जुवारीलाल जी महाराज विराजमान होवे जठे ओकागद चरणारविदो मे मालुम कर पाछी मजूरी की इतला तार मुजब माने दिरावसी सब सतो न याने सप्रदायका ने भी हुक्म समो करी फरमा दिरावे और मा भाया कि भी बीदी सहित ठा १५ वटे विराजमान है सो वदणा अर्ज करावे तिक्खुता का पाठ सु विधी सहेत स १९८९ मिगसर बदी ३– द भडारी फूलचद। द पन्नालाल। द देवीलाल चडालिया। द खूबचन्द चपलोत का। द चम्पालाल कोठारी। द कजोडीमल दुग्गड। द हीरालाल साबदडा। द गणेशमल। द गमेरमल साखला का।

द रूपचद खींवेसरा। द इन्द्रमल चडालिया। द गणेशीराम सिरोहिया। द चुन्नीलाल बाघमार। द लक्ष्मीचद बाघमार। द छगनलाल चडालिया। द लखमीचद मारू। द हमरमल।

मोतीसिंह जी तेजसिंहजी म. की संप्रदाय के संतों की सूची

क्र स.	मुनि नाम	देश	ग्राम	कुल	गोत्र	दीक्षा तिथि	गुरु नाम	स्वर्ग सवत्
1	मोतीसिह जी म	मालवा	रतलाम	ओसवाल	मता		वीर भानजी	१९१० जावद
2	तेजसिह जी म	मेवाड	लसडावन	ओसवाल	बबोरी	१९९०	मोतीसिहजी	जावद
3	आसकरण जी म						वीर भानजी	
4	देव जी म						वीर भानजी	
5	भोरीलाल जी म							
6	सरूप जी म							
7	पन्नालाल जी म							
8	चमन जी म	मालवा	रामपुर	ओसवाल	श्रीश्रीमाल		तेजसिहजी	१९१८
9	धन्नालाल जी म							
10	पन्नालाल जी म							
11	नवलचद जी म	मेवाड	भदेसर	ओसवाल	हींगड	बदी ८ १९१९ नीमच		१९३६ बडीसादडी
12	चनणमल जी म	मेवाड	जावद	ओसवाल	नलवाया	चै सुदी १२ रामपुर		१९५० भा सु ६ कानोड
13	प्यारचद जी म	मेवाड	डूगला	ओसवाल	नागोरी	चै सु १ डूगला	नवलचद जी	१९९६ गि सुदी २
14	कालू जी म	मेवाड	भदेसर	ओसवाल		मिग बदी १३ चित्तौड	नवलचद जी	१९६७ मा ब ८ जावद
15	नाथूलाल जी म	मेवाड	बम्बोरा	ओसवाल	वया	१९२८ बडीसादडी	चनणमलजी	१९३६ नीमच
16	सुखलाल जी म	मेवाड	कालुडो	ओसवाल			चनणमलजी	१९४५ ब्यावर
17	सुखलाल जी म	मेवाड		ओसवाल				
18	मगन जी म सा	मेवाड	निकुम्भ	ओसवाल	सोनी	१९२८ मा सु १३ चित्तौड	चनणमलजी	

क्र स.	मुनि नाम	देश	ग्राम	कुल	गौत्र	दीक्षा तिथि/ स्थल	गुरु नाम	स्वर्ग सवत्
19	प्यारचद जी म (छोटा)	मालवा	जीरन	ओसवाल	नलवाया	१९३० का सु ११ राजीत	चनणमलजी	
20	जीतमल जी म	मेवाड	कानोड	ओसवाल	धीग	१९०१ वै द ७ बडीसादडी	चनणमलजी	
21	इदरमल जी म	मेवाड	जावद	ओसवाल	कुभट	१९३७ मि व ५ जावद	प्यारचद बडा	१९५३
22	तिलोकचद जी म	मेवाड	बिलोता	ओसवाल		१९३६ मि द ५ जावद	प्यारचद बडा	
23	बोथलाल जी म	मेवाड	लसडावन	ओसवाल		१९०६ वै द १ निकुभ	प्यारचद बडा	
24	उम जी म	मेवाड	निकुभ	ओसवाल	सहलोत	१९५६ अ द ८ निकुभ	प्यारचद बडा	
25	भैरूलाल जी म	मेवाड	बिलौता	ओसवाल	ओसवाल का घर का	१९५९ निकुभ	प्यारचद बडा	१९६४
26	हजारीमल जी म	मालवा	कानोड	ओसवाल		१९६३ वै सु १० कानोड	बोथलाल	
27	भुर जी म	मेवाड	उठाला	ओसवाल	सामर	१९६१ अ द १३ कानोड		
28	प्यारचद जी म	मेवाड	चीपडा	ओसवाल	ओसवाल का घर का	१६७२ पो सु १५ जावद	कालूजी	गृहस्थ हो गये
29	मोतीलाल जी म	मेवाड	बम्बोरा	ओसवाल	वया	१९३१ चै दु १३ बडीसादडी	नाथुजी	१९७० पाटन
30	फूलचद जी म	मेवाड	कानोड	ओसवाल	जारोली	१९५५ फा द १३ कानोड	प्यारचद छोटा	गृहस्थ हो गये
31	शातिलाल जी म	मेवाड	नुनदो	ओसवाल		१९६१ जठ सु ११	प्यारचद छोटा	१९९६ मि सुदी २
32	नाथूलाल जी म	मेवाड	कानोड	ओसवाल	जारोली	१९६६	प्यारचद छोटा	१९६७ मा ब ८ जावद
33	कालूलाल जी म	मेवाड	कानोड	ओसवाल		१९५९ चै व १०	इन्दरमलजी	१९३६ नीमच
34	हेमराज जी म	मालवा	रामपुरा/धार	ओसवाल		१९५३ ब ५	इन्दरमलजी	१९४५ ब्यावर
35	तेजमल जी म	मालवा	रामपुरा/धार	ओसवाल		१९५३ पो द १ नाथद्वारा	इन्दरमलजी	
36	हीरालाल जी म	मालवा	रामपुरा/धार	ओसवाल				
37	शोभालाल जी म	मेवाड	खेरोदा	ओसवाल			बोथलाल	गृहस्थ हो गये
38	रामलाल जी म	मेवाड	निकुभ	ओसवाल		१९५९ वै सु ५ निकुभ	बोथलाल	
39	हजारीमल जी म	मेवाड	कानोड	ओसवाल	धीग	१९६३ वै सु १० कानोड		
40	जोधराज जी म	मारवाड	बाबरा	ओसवाल		१९४७ भा व	प्यारचदजी तीजा	भादसोडा

वर्तमान मे इस सप्रदाय के एक भी सत नहीं रहे है।

तेज सिह जी म.सा. के सप्रदाय के
प्यारचंद जी महाराज का मय दस्तखत
समर्पण–पत्र

श्री गोतमाय नम

आज गाव कपासण मे स्वामिजी श्री १००८ श्री प्यार चद जी म सा ठाणा ४ विराजमान ज्या उत्तम पुरुषा की सेवा मे हीरालाल आदि ठाणा ५ से हाजिर होकर या बात ते की है वीगत नीचे मुजब

१ अवल स्वामी जी महाराज श्री १००८ श्री मोतीराम जी म श्री १००८ श्री तेजसिह जी म के और पूज्य मा श्री १००८ श्री होकम चन्द जी मा सु आज तक बरताव ग्यारह सभोग को चाल्यो "आवे लेकिन बीच मे अन्तराय का जोर से कमी बेसी हो गयो थो सो आज पुज्य मा श्री श्री जवाहिरलाल जी मा का हुक्म से पुरो अज्ञारे ही सभोग साबित किया सो दोनु तरफ बरताव मे जाहिर रहेगा।

२ पुज जी मा श्री १००८ श्री जवाहिरलाल जी मा स्वामी १००८ श्री प्यार चद जी म ने वदणा साबत मुजब करेगा।

३ पुज्य जी मा १००८ श्री जवाहिरलाल जी मा ने स्वामी जी १००७ श्री जीतमल जी और और स्वामी जी श्री १००७ श्री बोथलाल जी म वदणा करता रहेगा और छोटा मोटा सर्व सत माके सीवाय दोन्यु तरफ के मुरजाद सहित वदणा करता रहेगा।

४ पुज्य माराज की आज्ञा मे सर्व वर्तेगा चौमासा आदि करेगा और कोई वगत दूरा नजीक होण पर आज्ञा मगाय लेवेगा चौमासो परवा को हुक्म पूज्य श्री को होवेगा तो स्वामी जी श्री प्यारचद जी मा कोई गाम की विनती नहीं मानी होगा तो चौमासा करेगा कारण की बात न्यारी है सवत् १९८३ का फागण सुद १ गुरुवार कपासन मध्ये।

द प्यारचद का, द जीतमल का, बोथलाल का, द हीरालाल का, द हजारीमल का, द छगनलाल का, द मुलताणमल का, द शोभालाल का, द सागरमल का।

पंजाब के महान् संत श्री मायाराम जी म.सा.

आप हरियाणा प्रदेश के जींद जिले मे बडोद के निवासी थे और जाट परिवार से वि स १९३५ मे पजाब सम्प्रदाय मे दीक्षित हुए थे। हुक्म सघ के तृतीय पट्टधर पूज्य श्री उदयसागर जी म सा का जब पजाब की तरफ पदार्पण हुआ तब उनके आचार–विचार से आप बहुत प्रभावित हुए थे और लबे समय तक साथ रहे। तत्पश्चात् आप जब राजस्थान मे पधारे तो वह श्रद्धा ओर प्रगाढ बन गई। आचार्य देव ने भी आपके साथ वदन व्यवहारादि साभोगिक सम्बन्ध जोडकर अपने शिष्य की तरह ही पूर्ण वात्सल्य भाव दर्शाया और अपने पास के एक परिपक्व वेरागी श्री छोटेलाल जी डागी–सागानेर (भीलवाडा) निवासी को सवत् १९४६ की पौष बदी २ को आपकी नेश्राय मे दीक्षित किया। वे ही छोटेलाल जी महाराज आगे चलकर महान् प्रभावक बने। जिसके फलस्वरूप पजाब सम्प्रदाय के पूज्य श्री सोहनलाल जी म सा ने आपको गणावच्छेदक पद से विभूषित किया। आप श्री के नाथूलाल जी म सा जैसे प्रतिभावान पाच शिष्य बने थे और नाथूलाल जी म सा के शिष्य व्याख्यान वाचस्पति पूज्य श्री मदनलाल जी म आदि शिष्य हुए थे। वर्तमान मे महामुनीश्वर पूज्य श्री सुदर्शनलाल जी महाराज व उनका शिष्य परिवार है– वह इन्हीं महापुरुषो का परिवार है। जिनके साथ आज तक इस सप्रदाय का वही पूर्ण प्रेम व वात्सल्यता से ओतप्रोत सभोगिक सबध चलता आ रहा है। जब भी सघ मे आवश्यकता पडी तो आपस मे समाचारी आदि के मिलान व परस्पर विवाद निपटाने के प्रसग, विचार विमर्श पत्राचार आदि हुए व वर्तमान मे भी होते रहते है।

स्वामी जी श्री ज्ञानचन्द जी म. छोटे–बडे

आप पूज्य श्री धर्मदास जी म सा की सप्रदाय के सन्त थे। आपके हृदय मे पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा की सप्रदाय के आचार विचार का गहरा प्रभाव था। साथ ही अन्तरग अनुराग भी था। १९२७ के साल की बात है। आपका चातुर्मास मालव प्रान्त मे कोद बिडवाल मे था और पूज्य शिवाचार्य के सन्त छोटे केवलचन्द जी म अपने नवदीक्षित शिष्य श्री रतनचन्द जी म सा (लोद वालो) के साथ बखतगढ मे चातुर्मासार्थ विराजमान थे। अकस्मात् उसी चातुर्मास मे छोटे केवलचन्द जी म सा का स्वर्गवास हो गया। जब यह समाचार ज्ञानचन्द जी म सा को मालूम हुआ तो आप तुरन्त वहा से विहार कर बखतगढ पधार गये और बडे प्रेमभाव से उनको सभाला और सयम साज दिया। बाद मे विचरण करते हुए पूज्य उदयसागर जी म सा की सेवा मे पहुचे और रतनचन्द जी म सा की इच्छानुसार पूज्य श्री की सेवा मे रख दिया। वे ही रतनचद जी महाराज आगे चलकर पूज्य श्री उदयसागर जी म सा के शासन मे धायमाता के रूप मे प्रसिद्ध हुए और पीछे आपका विशाल शिष्य समुदाय हुआ।

बाद मे वह सम्बन्ध प्रगाढ होता गया और पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के शासन काल मे एक बार आपका अपनी सम्प्रदाय के सन्तो के साथ कुछ मनमुटाव हो जाने से आपके शिष्य रतनचद जी महाराज, मुल्तान मल जी महाराज, सिरेमल जी म सा, पूरण बाबा आदि सन्त मारवाड मे विराजते पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा की सेवा मे पहुच गये और कुछ विचार विमर्श करके पूज्य श्री की आज्ञा मे विचरने की भावना व्यक्त करने लगे। आचार्य श्री जी म सा ने अपना मर्यादा पत्र पढाते हुए उसके पालन का निर्देश दिया। साथ की पूज्य हुक्मीचन्द जी म सा की सप्रदाय के घरो मे गुरु धारणा आदि अन्य किन्हीं बातो से मतभेद न पडे–इसकी सावधानी दिलाई। जिसको तहत करके परस्पर वन्दनादि व्यवहार खुले करके अपने साथ ही विचरण का आदेश दिया।

उसके बाद तपस्वी मुल्तानमल जी म सा के सासारिक सुपुत्र भीकमचद जी लोढा जो अपने पिता श्री व काका (श्री श्रेमल जी म सा) के साथ ही दीक्षित होना चाहते थे लेकिन उनकी भुआ महाराष्ट्र मे राजा पीपल गाव लेकर चली गई। लेकिन कुछ दिनो पश्चात् पुन वहा से भगकर सेवा मे आ गये और जसवता बाद मे दीक्षा दे दी और ब्यावर मे पूज्य श्री जी के दर्शन करके उनको आपकी गोद मे बिठा दिया और बोले–यह आपका ही शिष्य है लेकिन आचार्य श्री तो इस शिष्य ममत्व से पहले ही दूर थे। दीक्षा लेने के साथ ही अपनी नेश्राय मे शिष्य बनाने का त्याग कर दिया था। पूज्य श्री ने बडे स्नेह के साथ उनके मस्तक पर हाथ रखकर बोले– ये तो बडे समर्थ मुनि होगे। तब से ही समर्थ मुनि नाम नियुक्त हो गया, यही नाम आगे चलकर प्रसिद्ध हो गया। कुछ समय तक साथ–२ विचरण जारी रहा। बीकानेर मे पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के चातुर्मास मे तपस्वी मुनि श्री मुलतानमल जी म सा का स्वर्गवास हो गया। बाद मे पूज्य श्री की आज्ञा से रतनचन्द जी म सा आदि सन्तो का मारवाड की तरफ विहार हुआ। जोधपुर से तिवरी पधारे। वहा महासती श्री नन्द कवर जी म सा की सतिया सकारण विराजमान थी। उनकी सेवा मे तत्कालीन परम विदुषी महासती श्री पानकवर जी म सा भी विराजमान थे, उनसे समर्थमल जी म सा को अनेक शास्त्रो की वाचनी दिलाई। जिससे सहज अपनत्व भाव पैदा हुआ और लगभग ३३ वर्षो तक निरतर खीचन कारण से विराजना हो गया और वह अपनत्व भाव अदर ही अन्दर बढता ही गया जो आज हम देख ही रहे हैं।

फिर भी आचार्य श्री श्रीलाल जी म सा के बाद आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा व आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा तक सब महापुरुष वही स्नेहभाव पूर्ण रूप से देते रहे, द्विरूपता को कहीं अवकाश ही नहीं मिला। यहा तक की श्रमण सघ बनने पर आपके प्रमुख सन्त पूरण बाबा, इन्द्रमल जी म सा आदि लगभग आठ सत आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा के साथ श्रमण सघ मे मिल गये लेकिन सिरेमल जी म सा व समर्थमल जी म सा आदि कुछ सन्त नहीं मिले, फिर भी वही प्रेम व्यवहार चलता रहा।

वृद्ध सन्तो के स्वर्गस्थ हो जाने पर समर्थमल जी महाराज ने सनवाड (मेवाड) मे चातुर्मास किया और वहा से विहार कर उदयपुर पधार गये। जहा आचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा सकारण भोपालपुरा मे विराजमान थे। बहुश्रुत श्री समर्थमल जी म के पधारने से आचार्य श्री को वडी प्रसन्नता हुई। उन्होने अपनी वृद्धावस्था, श्रमण सघ से पृथक् कारण की चर्चा के साथ श्रमण सस्कृति के रक्षण हेतु गहन चर्चा की।

दोनो महापुरुषो ने एक निर्ग्रन्थ समाचारी का निर्धारण किया और उसकी लिखित निष्ठा पत्र से स्वीकृति के बाद भावी व्यवस्था के लिए आपके ही परामर्श पूर्वक आचार्य श्री नानालाल जी म सा की नियुक्ति की गई। जिसका अनुमोदन रूप सन्देश बीकानेर के श्रावको द्वारा तार के माध्यम से उदयपुर मे युवाचार्य पदोत्सव पर आया। उसके बाद पूज्य श्री गणेशीलाल जी म सा का स्वर्गवास हो गया। फिर भी वह प्रेम भाव सवत् २०२५ अमरावती चातुर्मास तक तो बराबर चलता रहा लेकिन बाद मे कुछ विवादास्पद निमित्तो के उभर जाने से आचार्य श्री को विवशता से वह पूर्वजो से चले आ रहे सम्बन्ध का विच्छेद करना पडा।

कोटा संप्रदाय के मुनि श्री हरक चंद जी म.

आप सोपुर सपाड निवासी थे और ओसवाल सावणसुखा परिवार मे जन्म ग्रहण किया था। आप पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा के ससार के नजदीक रिश्ते मे बहनोई जी लगते थे। आपने भी उन्ही का अनुसरण करके वि स १९५७ की पौष सुदी ४ बुधवार को बणजारी (ढूढार प्रान्त) मे बलदेव जी म सा की नेश्राय मे दीक्षा ग्रहण की।

पूज्य श्री श्रीलाल जी म सा भी उन्ही की नेश्राय मे दीक्षित हुए थे लेकिन गुरुदेव श्री किशनलाल जी म सा के स्वर्गवास के पश्चात् सतो की आचारनिष्ठता अशुद्ध देखकर वहा से अपने शिष्य गूजरमल जी म के साथ पूज्य हुक्मीचद जी म सा के चतुर्थ पट्टधर पूज्य श्री चौथमल जी म सा की नेश्राय मे वृद्धिचद महाराज साहब का शिष्यत्व धारण करके विचरण करने लगे और बाद मे पूज्य श्री चौथमल जी म सा के स्वर्गवास पश्चात् आप सप्रदाय के आचार्य पद पर आसीन हुए तब सवत् १९७० चैत्र सुदी ८ सोमवार को अपने शिष्यो सहित सशर्त सम्मलित हुए। जिसका समर्पण पत्रमय दस्तखत निम्न प्रकार है।

समर्पण पत्र

लीखतु पुज्य हुक्मीचद जी म सा की सप्रदाय का पूज्य श्री श्रीलाल जी महाराज सु पूज्य अनोपचद जी महाराज का सप्रदाय का किशनलाल जी महाराज श्री स्वामी जी बिसनलाल जी म श्री बलदेव जी का सीष हरकचद मागीलाल की विदि सहित वदणा मालुम करवो जी मे ठाणा तीन तो आपका सभोग मे रकर आपकी आज्ञा माफक चालणो चावा सो आप करपा कर माने सभोग मे

ले लो। परन्तु पक्खी छमछरी परकुणो माकी गुरु आमनाय को करता रागा वारे समाचारी कलम इकाणवे आपकी प्रवृत्ति माफक पालागा। सभोग आप कहोगा जासु करागा और सु करा नहीं सो कृपा कर मासु सभोग कर लीजिये। मिती चैत सुद ८ सोमवार १९७०। द हरकचन्द सादु का दी ५७ जेठ सुद ११, द मागीलाल बे हरकचद दीक्षा ६० आसोज बुद ३ द नन्दलाल साधु का दीक्षा ६७ काती बद ७।

इसके अलावा पूज्य श्रीलाल जी म सा के व हरकचद जी म सा के ९ बोल का परस्पर खुलासा हुआ जो इस प्रकार हे– १ सप्रदाय का नाम, २ गुरु का नाम ३ पक्खी, ४ सम्वत्सरी, ५ दो प्रतिक्रमण ६ चेला माके साधु का माकी नेसराय मे करना ७ पोथा माके नेसराय का है सो माके ८ ग्यारह सभोग– आहार पाणीन्यारा, ९ एक वर्ष हडोती आडी विचरणो २ वर्ष हुक्म होवे जहा चौमासो करनो ए प्रवृत्ति पूज्य जवाहिरलाल जी म सा शासन मे चल रही है।

घोर तपस्वी श्री लालचन्द जी महाराज

आपने दीक्षा तो अपने तीन पुत्र (मानमुनि जी महाराज, कानमुनि जी म सा व पारस मुनि जी म सा) और २ पुत्री (महासती श्री मैनाकवर जी म सा और महासती श्री कौशल्या कवर जी महाराज) के साथ मालव केशरी श्री सौभागमल जी म सा एव केवल चन्द जी म सा की नेश्राय मे ग्रहण की थी। लेकिन श्रमण सघ मे व्याप्त शिथिलाचार को दूर हटाने हेतु शात क्राति के अग्रदूत पूज्य श्री गणेशीलाल जी म सा ने क्रान्ति की, तब से आप छ ही साधु साध्वी लगभग २०२६ के जेठ महीने तक स्वर्गीय आचार्य श्री जी एव वर्तमान आचार्य श्री की आज्ञा मे ही विचरण कर रहे थे। दोनो सतियो के कल्प की सुरक्षा हेतु बराबर सतियो का योग जुडाये रक्खा और अच्छे बडे–२ क्षेत्रो मे चातुर्मास भी कराये। आचार्य श्री जी की आज्ञा से कानोड सघ ने दीक्षाए भी धूमधाम पूर्वक कराई लेकिन बाद मे कुछ स्वछन्द व चापलूसी वृत्ति व अस्पष्ट नीति के कारण आज्ञा देना बन्द करना पडा।

आचार्य श्री रतनचन्द जी महाराज

पूज्य श्री हुक्मीचद जी म के क्रियोद्धार के समकाल मे ही आपने भोपालगढ (बडलू) मारवाड मे क्रियोद्धार किया था। तभी से दोनो महापुरुषो का परस्पर प्रेमभाव प्रारम्भ हुआ और आगे चलते चलते पचम पट्टधर पूज्य श्री श्रीलाल जी म के शासन काल मे इतना प्रगाढ हो गया कि पूज्य श्री रतनचद जी म सा की सप्रदाय के प्रमुख सन्त स्वामी जी श्री चदनमल जी म सा ने पूज्य श्री शोभाचद जी म सा की आचार्य पद की रस्म आपके ही हाथो से कराने का निश्चय करके अपने प्रमुख सतो के साथ निमत्रण भेजा। आचार्य श्री श्रीलाल जी म सा ने भी उस निमत्रण को प्राप्त करके सुजानगढ मे बीकानेर निवासी श्री पोखरमल जी म की दीक्षा को आगे पीछे करके अजमेर पधारे और अपने हाथो से ही आचार्य पद प्रदान किया।

तत्पश्चात् स्वय आचार्य श्री शोभाचद जी म सा ने व स्वामी जी श्री चन्दनमल जी म ने आपका महान् आभार मानते हुए यह फरमाया कि आपके इस महान् सहयोग से हमारा पूज्य रतनचद जी म सा का सप्रदाय कभी उऋण नहीं हो सकता। वही प्रेम भाव आगे बढता गया। ऐसा भी प्रबुद्ध सतो द्वारा श्रवण करने को मिला कि आचार्य श्री शोभाचन्द जी म सा ने अपने उत्तराधिकारी आचार्य श्री हस्तीमल जी म सा की नियुक्ति भी आचार्य श्री जवाहरलाल जी म सा के परामर्श पूर्वक ही की थी। क्योकि उस समय सप्रदाय मे वय और दीक्षा मे सभवत आपसे (आचार्य श्री हस्तीमल जी म से) एक या दो सत ही छोटे थे, बाकी सब सत बडे थे।

उसके पश्चात् सारे श्रमण सघ के सर्व सत्ताधिकारी उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की नियुक्ति हेतु भी आचार्य श्री हस्तीमल जी म सा ने सर्वप्रथम प्रस्ताव प्रस्तुत किया था, जो सर्वानुमति से पारित हुआ। बाद मे भी जहा श्रमण सघ से पृथक् होने मे भी आपकी अन्तरग सम्मति होते हुए भी कुछ कारणो से आप सघ मे रहे गये और उपाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा उससे पृथक् हो गये।

उसके पश्चात् जब आचार्य श्री (तात्कालीन उपाध्याय श्री हस्तीमल जी म) को भी श्रमण सघ से पृथक् होने का प्रसग आया। उसके बाद सवत् २०३४ माघ बदी २, दिनाक २६ जनवरी १९७८ को भोपालगढ मे पुन आचार्य द्वय का मधुर मिलन हुआ और परस्पर विचार विमर्श पूर्वक सावत्सरिक एकता के साथ एक चातुर्मास, एक व्याख्यान के साथ वदन व्यवहार आदि कुछ बाते ऐच्छिक रूप से स्वीकार की गई और पुन परस्पर प्रेम सम्बन्ध स्थापित हुआ, जो वर्तमान मे चल रहा है।

आचार्य श्री गणेशीलाल जी म द्वारा हस्तलिखित पत्र की नकल

पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी म सा की सप्रदाय के सतो का पूज्य श्री रतनचन्द्र जी म सा के सम्प्रदाय के सतो का पारस्परिक प्रेम रखने के लिए नीचे मुजब नियमो की आवश्यकता है –

१ जिन सतो को सप्रदाय के आचार्य ने अलग कर दिये है सत चाहे आचार्य नाम भी धराते हो फिर भी उनके साथ कोई तरह का सबध नहीं रखना अर्थात् उनके लिये व्याख्यान को बद रखना व शामिल व्याख्यान देना तथा उनके स्थान पर चला के जाना इत्यादि सम्बन्ध दोनो तरफ के सत बध रखे। उनसे वार्तालाप करने की रोक नहीं है।

२ दोनो सप्रदाय के सत एक गाव मे मिल जावे तो प्रथम आए हुवे सत पीछे आए हुए सतो के लिए अपना व्याख्यान बद कर दे और ग्राम के मुख्य श्रावको को सूचित कर उन सतो का व्याख्यान बचावे।

३ परस्पर सत मिले तो आओ पधारो आदि सत्कार करे स्थान पर पधारे तो छोटे–बडे की रीत्यानुसार खडे रहे।

४ आचार्य श्री छोटे बडे के लिहाज के परस्पर उठने बैठने का सत्कार करे। दूसरे बडे सतो के लिये विवेक से काम ले।

५ व्याख्यान दोनो सतो के शामिल बाचने की इच्छा हो तो अपने अपने नेश्राय के पाटीये योग्य रीति से जमा ले। शामिल बाचने की इच्छा न हो तो पहले आए हुए सत व्याख्यान बद कर दे।

६ सामने जाने आने की बात दोनो सतो की इच्छा पर निर्भर है।

७ जिस कुल मे जिस सप्रदाय की गुरु आमना की परपरा हो उस कुल के सभी सदस्यो को उसी सप्रदाय की आमना दे उस सप्रदाय के आचार्य इजाजत दे उसकी बात अलग।

८ जिस सप्रदाय का उपदेशित वैरागी अर्थात् जिस सप्रदाय मे दीक्षा लेने का अभिप्राय प्रगट किया हो उसकी दीक्षा उसी सम्प्रदाय मे होनी चाहिये। आचार्य आज्ञा दे उसकी बात न्यारी।

९ रगूजी, मोताजी, खेताजी के सप्रदाय की सतियो का और पूज्य रत्नचन्द्र जी की सम्प्रदाय सतियो का, सतो व सतियो के साथ पारस्परिक वत्सलता कैसी रखनी वह उनकी इच्छा पर निर्भर है। परन्तु जहा पर सत हो वहा पर व्याख्यान बद रक्खे, चौपाई की बात न्यारी।

१० शास्त्र और प्राचीन मर्यादानुसार श्रद्धा प्ररूपणा रखना करना यदि कोई विषय का मतभेद मालूम हो तो जब तक परस्पर आचार्य मिलकर निर्णय न करे तव तक दूर से सुनकर विरोध जाहिर न करे।

११ दोनो सप्रदाय की समाचारी के विषय मे परस्पर प्रेम मे बाधा आवे ऐसी इरादा पूर्वक प्ररूपणा न करे।

परिशिष्ट (1)

आचार्यों के व्यवस्था सम्बन्धी दस्तावेज

आचार्य श्री चौथमल जी म.सा. द्वारा संघ व्यवस्था

ऊ ह्रीं श्रीं परमेश्वराय नम

श्रीमत महाराजाधीराज श्री श्री हुक्मीचद जी माराज की सप्रदाय का पूज्य चौथमल जी नीचे लिखे मुजब पाच मडली के पाच सत मालिक बनाये और हुक्म नीचे लिखे मुजब सर्व सतो को वा मडली का मालिक कु बराबर प्रवृत्ति करणी व निभाव करणो।

पाच मडली के मालिक सतो का नाम १ प्यारचद जी (छोटा) तेजसिह जी महाराज की सम्प्रदाय का, २ मन्नालाल जी, ३ करम चदजी, ४ श्रीलाल जी, वृद्धि चद जी, ५ जवेर चद जी।

ऊपर लिखे मुजब पाच साधु को पाच मडली के मालिक बनाए है। अव सप्रदाय के सर्व सन्तो को चाहिए कि अपना–अपना निभाव देख के प्रकृति जिस मडली के मालिक से मिले उस मडली मे जमा हो जाना फिर जिस मडली मे जमा होवे उस मडली के मालिक के हुक्म बिना कोई काम करणो नहीं पावे और मडली के मालिक को जो पूज्य महाराज हुक्म फरमावे या सप्रदाय की मुरजाद मे या सता का निभाव मे किचित्मात्र फर्क पाडने पावे नहीं। और जो सत मडली का मालिक सत का बिना हुक्म से कोई काम करेगा तो वो पूज्य महाराज या मडली का पाचो मालिक का कसूरदार होवेगा और और मडली का मालिक को बरोबर हिस्सासर पूज्य महाराज फरमावे उतना काल पूज्य महाराज के समीप रह सेवा करणी और अपना व सर्व सतो का इचार्ज पूज्य महाराज को बराबर देणा। और पू महाराज की सेवा और भीतरी कारबार का सर्व काम की चौकसी बरोबर करणी और जो मडली का मालिक पूज्य महाराज के समीप रहवे उसकी उत्तमता पूज्य महाराज देखेगा तब तो वो मालिक ही है और जो गल्ती देखेगा तो फेर मालिकपणा पूज्य महाराज उतार लेवे तो उसमे किसी को मन मात्र नहीं दु खाना और किचित्मात्र मन मे द्वेष भाव नहीं लाना कारण कि व्यवस्था सूत्र की राह माफक यह बात है उसमे किसी की तर्क नहीं है और पाचू मडली का मालिक को आपस मे मालिक के पूछे बिना कोई सत को लेणा नहीं रखणा नहीं, कोई प्रकार से क्लेशादि करके सत निकलकर दूसरी मडली मे आवे तो मडली के मालिक कु पीछा जहा से आया वही भेजना परतु रखना नहीं मालिक की राह बिना और पाचो मडली का मालिक को आपस मे हेत प्रीत बहुत रखना और श्रद्धा प्ररूपणा बराबर करणी और स्पर्शना भी बेवार प्रवृत्ति की बराबर मुरजादा रखणी और पाचो मडली का साधु को आपस मे विनय वेयावच्च भणवा गुणवा को साज बराबर देणो।

गण प्रमुख जवाहिर के गण की व्यवस्था

श्री परमेश्वराय नम

श्री महत महाराजाधिराज श्री श्री १००८ श्री चौथमल जी म सा ने सप्रदाय मे पाच मडली स्थापित की और उसके पाच मालिक बनाए और नीचे लिखे माफिक मुरजाद सर्व सता कु व मडली का मालिक कु बराबर प्रवृत्ति करणी।

मडली का मालिक का नाम– मोतीलाल जी के जवेर चद जी।

सही पूज्य १००८ चौथमल जी म सा, ब कलम शोभालाल का

१ जो सत इस मडली मे जमा हुए हैं उन सर्व सतो कु नीचे माफिक कारवाई पर दस्तखत कर देवे और उसी माफिक प्रवृत्ति करणी।

२ मडली के मालिक का हुक्म व राय बिना कोई काम नहीं करणा।

३ नवीन पडत पाना लेवे तो मडली का मालिक की आज्ञा लेकर रखना नेश्राय मे।

४ जिस वैरागी को दीक्षा देवे तो मडली के मालिक की राय से दीक्षा या नेश्राय रखणा अपने मते नेश्राय मे नहीं रखणा।

५ मडली के मालिक की आज्ञा बिना आगा पीछा किसी सत के साथ नहीं रहना।

६ मडली के मालिक की राय से विचरणा सेखेकाल औ चौमासे मे।

७ मडली के मालिक कु चाहिये कि जितना सत मडली मे हुवे उन सर्व सत का निभाव या साज या कारण विशेष मे व्यावच्च करणी सतो कु भेजणा व भणवा को साज वगैहरा बराबर निभाव करणो जिससे सत निभ जावे।

८ जितना सत मडली मे होवे उन सर्व सत कु आचार गोचर विनय भक्ति, सम्प्रदाय की इकाणवे कलम की मुरजाद, व ७२ हाथ कपडा की मरजाद अगवाणी होय कर विचरे जिणके आचाराग निशीथ को जाणपणो चाहिये व आज्ञा बाहर विचरे व एकला विचरे कारण बिना तो जितना दिन विचरे उतना दिन को छेद देणो इत्यादि कारवाई की मुरजाद देखरेख सर्व सता की मडली का मालिक कु चौकसी से राखणी।

९ ऊपर माफक कारवाई की मुरजाद मडली का मालिक कु या मडली के सता कु बराबर बर्तणो जो गल्ती राकेगा वो श्री जी को कसूरदार होवेगा। स १९५६ को फागण सुद ७ बुधवार शुभ भवस्तु श्री श्री श्री– द मोतीलाल का ऊपर लखे सही दस्तक जवेरचद का ऊपर लिख्या माफिक सेवा व निभाव करूगा। दस्तखत केशरीमल का, द राधालाल का उपर लिखा सही। द पन्नालाल का ऊपर लिखा सही, दस्तखत घासीराम का ऊपर मुजब चालुगा।

पूज्य श्री श्रीलाल जी म.सा. द्वारा संप्रदाय की सुव्यवस्था

सवत् १९७१ के रतलाम चातुर्मास मे कार्तिक सुदी १० के रोज आचार्य श्री जी के अकस्मात् पाव मे भयकर वेदना हो उठी जिसको देखकर आचार्य श्री ने सप्रदाय की सुव्यवस्था करना उचित समझकर प्रमुख श्रावक एव श्रीमान् वकील साहब श्री मिश्रीमल जी बोराना से परामर्श करके निम्न व्यवस्था की, जो पूज्य श्री श्रीलाल जी म के जीवन चरित्र पृ ३२२ से अक्षरश उद्धृत किया गया है।

श्री जैन दया धर्मलम्बी पूज्य श्री स्वामी जी महाराज श्री श्री १००८ श्री हुकमी चद जी महाराज के पाचवे पाट पर जैनाचार्य पूज्य महाराजाधिराज श्री श्री १००८ श्री श्रीलाल जी महाराज वर्तमान मे विद्यमान है। उनके अनुयायी साधु एक सौ झाझेरा के करीब है उनकी आज तक शास्त्र व परम्परायुक्त सार सभाल आचार गोचरी वगैरह की निगरानी यथाविधि पूज्य श्री करते है परन्तु पूज्य महाराज श्री के शरीर मे व्याधी वगैरह के कारण से इतने अधिक सतो की सार सभाल करने मे परिश्रम व विचार पैदा होता है इसलिए पूज्य महाराज श्री ने यह विचार पूर्वक गच्छ के सत मुनिराजो की सार सभाल व हिफाजत के वास्ते योग्य सतो को मुकर्रर का प्रायकर तालुक सतो को इस तरह सुपुर्दगी कर दिये है कि वह अग्रेसरी सत अपने गण की सभाल सब तरह से रक्खे और कोई गण की किसी तरह की गल्ती हो तो ओलम्भा वगैरह देकर शुद्ध करने की कार्यवाही का इतजाम करे फक्त कोई बडा दोष होवे और उनकी खबर पूज्य महाराज श्री को पहुचे तो पूज्य श्री को उनका निकाल करने का अखत्यार है। सिवाय इसके जो जो अग्रेसरी है वे थोक आज्ञा चातुर्मासादि की पूज्य महाराज श्री से अवसर पाकर ले लेवे।

इसके सिवाय जे कोई सत निचले के गणो से सबब पाकर नाराज होकर पूज्य श्री के समीप आवे तो पूज्य महाराज श्री को जैसी योग्य कार्यवाही मालूम होवे वैसी करे अखत्यार पूज्य महाराज श्री को है और पूज्य महाराज श्री का कोई सत चला जावे तो वे अग्रेसर बिना पूज्य महाराज श्री के उससे सभोग न करे इसके सिवाय आचार गोचार श्रद्धा प्ररूपणा जाती है वह सब गच्छ की परपरा मुताबिक सर्वगण प्रतिपालन करते रहे।

यह ठहराव शहर रतलाम मे पूज्य महाराज श्री के मरजी अनुकूल हुआ है सो सब सघ को इसका अमल दरामद रखना चाहिये।

गणो के अग्रेसरो की खुलावट नीचे मुताबिक है—

१ पूज्य महाराज श्री के हस्त दीक्षित अथवा पूज्य महाराज श्री की खाश सेवा करने वालो की सार सभाल पूज्य महाराज श्री करेगे।

२ स्वामी जी महाराज श्री चतुर्भुजजी के परिवार मे हाल वर्तमान मे कस्तूरचद जी महाराज

बडे है यदि दाने जो सत हैं उनकी सार सभाल की सुपुर्दगी स्वामी जी श्री मन्नालाल जी महाराज की रहे।

३ स्वामी जी श्री राजमल जी महाराज के परिवार मे श्री रतनचद जी महाराज के नेश्राय मे सतो की सुपुर्दगी श्री देवीलाल जी म की रहे।

४ पूज्य श्री चौथमल जी म सा के परिवार के सतो की सुपुर्दगी श्री डालचद जी महाराज की रहे।

५ स्वामी श्री जी राजमल जी महाराज के शिष्य श्री घासीराम जी महाराज के परिवार की जवाहिरलाल जी सार सभाल करे।

ऊपर प्रमाणे गण पाच की सुपुर्दगी अग्रेसरी मुनिराजो की हुई है सो अपने अपने सतो की सार सभाल व उनका निभाव करते रहे।

यह ठहराव पूज्य महाराज श्री के सामने उनकी राय मुताबिक हुआ है सो सब सघ मजूर करके इस मुताबिक बर्ताव करे।

उपरोक्त ठहराव सुनकर श्री सघ मे हर्षोल्लास की अधिक वृद्धि हुई उस समय रतलाम मे मुनिराज ठाणा २५ तथा आर्ज्याजी ठाणा ६० के करीब विराजमान थे।

युवाचार्य जवाहर द्वारा स्वीकृति पत्र

ॐ

श्री श्री आचार्य महाराज श्री श्रीलाल जी म सा ने मेरे विषय मे जो पदवी दान विषयक ठहराव शहर उदयपुर मे किया वह मुझे शहर रतलाम मे सुनाया। उस पर मैने पूज्यपाद से अरज की कि प्रथम तो इस महान पद का भार उठाने मे मेरी प्रकृति से ही उदासीनता है। उस पर भी शारीरिक स्थिति का और वय वृद्धि का ख्याल से भी मै इस भार को उठाने मे असमर्थ हू और साधको की अभ्यास की देख रेख भी मेरे जुमे है वास्ते यह पद कोई शख्त उत्साही योग्य महात्मा को दिया जाय तो विशेष लाभ है।

उस पर श्री पूज्यवर्य ने फरमाया कि यदि सब काम का बोझा लेने की तुम्हारी इच्छा नहीं है तो गणावच्छेदकादिक के कार्यो का विभाग कर दिया जायगा तुम्हारे सिर सिर्फ आचार्य सम्बन्धी सूत्रार्थ दानादि कार्य रहेगे और जहा तक हो सकेगा, तहा तक विशेष कार्य मै ही करता रहूगा तुम बेफिक्र रहो।

इत्यादि साहस उत्साह मुझे श्री पूज्यपाद श्री आचार्य महाराज से मिल जाने से मैंने यह भार स्वीकार किया है सो श्री अर्हत प्रभु और श्री पूज्यवर्य की कृपा से यह कार्य मेरे से सुव्यवस्थित रीति से पार हो ऐसी मेरी शासनपति से प्रार्थना है और श्रीजी महाराज ने मुझ अल्पज्ञ सामान्य पर यह मान पद का सन्मान दिया इसका मै अन्त करण से श्रीमान् का ऋणी हू इस ऋण से मुक्त होना यद्यपि असभव है तथापि इस ऋण से रहित होऊगा वह दिन परम कल्याण का होगा। शुभ भवतु ।।इति।। श्री श्री श्री।। सवत् १९७६ फाल्गुन शुक्ला ११। द युवाचार्य जवाहिरलाल का।

संघ में शास्त्र निधि की व्यवस्था का निर्णय

।। श्री गोतम सामी जी नम ।।

नीचे मुजब सर्व सता की राय से सात सतो की कमेटी मुकरर करके सातो सतो की सर्वानुमति से ठहराव मारे सामने पास हुवो है शहर उदयपुर मे स १९७७ को फाल्गुन सुद १३ द पूज्य जवाहरलाल का

पूज्य जी महाराज श्री श्रीलाल जी म कि नेसराय कि परता पाना के वास्ते ठेराव निचे मुजब जो परता शास्त्र कि अरथ पाठ कि एक पाठ कि गाथा थोकडा का सचा चौपाईया चोढालिया का सचा, तवना का सचा, सवैया का सचा इत्यादि जो थोक वद पूज्य महाराज की नेसराय का है और किसी सत की नेश्राय मे किया नहीं है बणा व्रत पाना पर इस तरेको नबर लगा दियो जावेगा पूज्य श्री हुक्मीचद जी महाराज की सप्रदाय जिसके नीचे जो पुज्य हुवे या वर्तमान मे है या आगामी काल मे होवेगे उनके नाम का पेला अक्षर उन परतो पर लगा दिया जावेगा और आईदा पर भी लगा दिया जायगा। (पु हु स शी उ चौ श्री ज) जो नोट मे है।

जणि–जणि सतो के जो प्रता या पाना चाहिजे वो उसकी अर्ज पूज्य महाराज के करके मागे वो दो दरजा से दी जावेगी।

१ जीरे जावजीव तक जो व्रत रखने कि जरूरत है उसको जावज्जीव के म्याद पर दी जावेगी, दूसरें को देने का अखत्यार उसको नहीं होगा योग्यता का विचार करने का इकत्यार पुजी मा को रहेगा।

२ जो परता पढियारीवत् वाचने के लिये दी जावेगी उसकी म्याद खोल दी जावेगी, उस म्याद के अदर पीछी पूज्य मा को सौप दी जावेगा यदि जादा रखने की जरूरत होगा फिर मियाद बढा दी जायेगा।

जो परता तोकने के लिये दी जायेगी वो शक्ति सहित एव सतो ने यथा शक्ति तोकनी चाहिये मालकी सप्रदाय की रहेगा ऊपर लिखी नेसराय की प्रता। नहीं तुके तो समदाय का मालीक योग्य गृहस्थ के सामने ममता उतार दी जावेगी। इस मुजब और भी कोई सत अपनी नेश्राय छोड के अपनी प्रता इसमे शामिल करना चावेगा तो ऊपर लिखे कायदे मुजब पुज्य मा ठीक समजेगा तो नम्बर वद चिन्ह लगाकर ले लिया जावेगा। सवत् १९७७ का फागण सुद १३

पडियारी प्रता भी योग्यतानुसार देने का अधिकार पुजी मा का रहेगा। द मोडीलाल का, द चादमल का, द गब्बू लाल का, द हरकचन्द का, द हीरालाल का, द मोहन लाल का, द गणेश लाल का।

।ऊँ नमः सिद्धा।।

श्रीमान पूज्य महाराजाधिराज श्री श्री १००८ श्री जुहारीलाल जी म सा आपके चरणो मे आपकी सप्रदाय के सर्व सत की तरफ से यह अर्ज है कि जो विवाद पूज्य श्री हुक्मीचद जी महाराज की सप्रदाय के सतो मे चल रहा है उसका निकाल हम सर्व सतो की तरफ से आप जिस ढग से करेगे वह हम सबको सपूर्ण सब तरह से मजूर होगा। यहा जो सत मौजूद है वे सत गैर हाजिर सप्रदाय के सर्व सतो की तरफ से जुम्मेवारी अपने सिर पर लेते हैं कि सदर ठहराव सब सतो को मजूर करावेगे। स १९८२ का माह सुद १५ गुरुवार मु रतलाम की पौषधशाला मे।

द शोभाचद, द मोडीराम, द चादमल, द हरकचद, द घासीलाल, द हीरालाल, द मागीलाल, द पन्नालाल, द कन्हैयालाल, द मूलचन्द, द. किशनलाल, द बगतावरमल, द गब्बूलाल, द हमीरमल, द सूरज मल, द जीवनलाल, द चुन्नीलाल, द. जिनदास, द भीमराज, द मुलतानमल, द हीरालाल, द केसरीमल, द बीरबल, द. चतरसिह, द सुदरलाल, द नदराय, द भूरालाल, द समीरमल।

पीछे से मिले उनके दस्तखत द मोटा गब्बूलाल, द चादमल, द धूलचद, द पन्नालाल, द मनोहर लाल, द कपूर चद, द हेमराज, द छगनलाल, द सरदारमल, द बस्तीमल, द चादमल का, द हरखचद, द चौथमल का। इति।।

बीकानेर श्रावक संघ का पारित प्रस्ताव

।।श्री।।

बावीस सप्रदाय का श्रावक श्राविका बीकानेर का देव गुरु धर्म की साक्षी से नीचे मुजब नियम करते है इसके अनुसार हमेशा वरतेगे तो इस नेम को खडन करेगा उनको श्री सघ उचित दड देवेगा वो स्वीकार करना होगा।

१ पच महाव्रत पालने वाले अर्थात् सयम पालने वालो को मुनि समझेगे उन्ही से गुरु आम्नाय से—१ वदना करेगे, २ बखान सुनेगे, ३ चातुर्मास करावेगे। पच महाव्रत नहीं पालने वाले से ये तीन बोल नहीं रखेगे।

२ जिस सप्रदाय मे पुजजी महाराज कायम है बार बिना कारण दूसरा पूज कोई बना लिये वो बना लेगे उनको तीन बोल बद रखेगे।

३ जिस सम्प्रदाय मे जितने साधु हैं वे पुजजी की आज्ञा मे चलेंगे उनसे ऊपर मुजब तीन बोल रक्खेगे, आणा मे नहीं चलेगे उनसे तीन बोल नहीं रक्खेगे।

४ जिस सप्रदाय मे पूज्य नहीं है और बडे सत हैं उनके लिए भी ऊपर मुजब।

५ महासतियो के लिए भी ऊपर मुजब।

६ चौमासा की विनती भाया याने श्रावक सघ मिलकर करेगा।

७ जो कोई दीक्षा लेवेगा उनको श्रीसघ की तरफ से आचार्य या बडे सत या बडी सतिया जी नेसराय मे अपनी तरफ से देगे और दीक्षा योग्य हो उसे ही लेने देगे।

८ चौमासा की विनती पूज्य जी, बडा सत या बडी सतिया जी से ही करेगे।

९ पुस्तके भी बडो की नेसराय मे देगे और शास्त्र पाना साधु साध्वी परठना चाहे तो यहा के श्री सघ के सामने परठावे।

१० जिन सत व सतिया के बाबत मे हमारे सघ मे आपस मे मतभेद हो जायगा तो उनका निर्णय अपने गुरु आम्नाय के आचार्य श्री जी महाराज से कर लिया जायगा और उनका जैसा फरमान होगा वैसा तामील करना होगा।

११ जिन साधु साध्वियो के साथ श्री सघ तीन बोल ऊपर मुजब छेद रखेगे उनके साथ कोई साधु साध्वीजी उनसे दोषी समझ के भी परिचय याने यथा साथ उतरना, व्याख्यान देना आदि करेगा तो साबित होने पर उनके साथ हम तीन बोल बद रखेगे।

१२ ये सर्व नेम चातुर्मास के बाद अमल मे लावेगे।

वि स १९७७ की मिति आषाढ सुदी ११ शनिवार

आचार्य श्री गणेशीलाल जी म. को समर्पण पत्र

।।श्री वीतरागाय नम ।।

पूज्य श्री १००८ श्री हुक्मीचद जी म, पू शिवलाल जी म, पू उदयसागर जी म, पू चौथमल जी म, पू श्रीलाल जी म, पू जवाहिरलाल जी म सा के पट्टधर पूज्य गणेशीलाल जी म सा विद्यमान है वे द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव देखकर सप्रदाय के हित के लिए जो भी नियम उपनियम नवीन बनावे या पूर्व के नियमो को कम ज्यादा करे तो उनकी स्वतत्रता है। इच्छा हो तो दूसरे सतो से पूछे या न पूछे इनके बनाये हुए नियमो पर हम सप्रदाय के सभी सत विश्वास रखकर मजूर करेगे और वे उजर पालन करेगे। यदि गल्ती करेगे तो जो दड देगे वो मजूर करेगे। ऐसा ही अधिकार भावी आचार्य के लिए समझेगे। स २००० मिति सावन बदी ३ मगलवार।

द फूलचन्द, द करणीदान, द सुन्दरलाल, द मगनलाल, द हुक्मचन्द, द सुमेरमल, द नेमचन्द।

ॐ अर्हम्

पूज्य श्री जवाहिरलाल जी महाराज साहब की सप्रदाय के युवाचार्य श्री गणेशीलाल जी म सा की सेवा में हम नीचे दस्तखत करने वाले मुनियो का निवेदन (अर्ज) है कि हम आपकी आज्ञानुसार प्रवृत्ति चातुर्मास विहार व्यावच्च आदि करते रहेगे किसी भी प्रकार आपकी आज्ञा की अवहेलना नहीं करेगे यह हम आपको विश्वास दिलाते है। सवत् १९९७ चैत्र सुदी १३ शनिवार

द शोभाचद, द चादमल, द बगतावरमल, द गुलाबचद, द हरकचद, द हमीरमल, द सूरजमल, द चौथमल, द सिरेमल, द सागरमल, द सुगालचद, द प्रतापमल, द जवरीमल, द मोतीलाल, द गोकलचद, द डूगर सिह, द रतन लाल, द करणीदान , द सुदरलाल, द चौथमल, द नानालाल, द मगनलाल।

परिशिष्ट नं. 2

अष्टाचार्य के शासनकाल में किस क्षेत्र से कितने दीक्षित संत

गांव	मुनि	गोत्र
अजमेर	मुनि श्री राधालाल जी म सा (४)	(राका)
अबाला (पजाब)	मुनि श्री मोडसिह जी म सा द्वितीय (३)	(लोढा)
अलवर	मुनि श्री मोतीलाल जी म सा (१)	(पूगलिया)
	मुनि श्री मिश्री लाल जी म सा (५)	(शिसोदिया)
	मुनि श्री सुदरलाल जी म सा (६)	(सचेती)
अरणोद	मुनि श्री हजारीमल जी म सा (३)	(ओस्तवाल)
अमृतसर	मुनि श्री चुन्नीलाल जी म सा (५)	(ओस्तवाल)
अहमदनगर	मुनि श्री भारमल जी म (३)	(गान्धी)
अमलनेर–भाडयाची	मुनि श्री रतन लाल जी म सा (८)	(बैद मूथा)
	श्री सतोष मुनिजी म (८)	(बैद मूथा)
आष्टा	श्री वीरेन्द्र मुनि जी म (८)	(सचेती)
आमेट	मुनिश्री मूलचदजी म (५)	(कोठारी)
	मुनि श्री सरदारमल जी म सा (५)	(कोठारी)
आलोई	मुनि श्री राजमल जी म (५)	(कुभार)
इन्दौर	मुनि श्री दौलजी (३)	(श्रीश्रीमाल)
उदयपुर	मुनि श्रीमगनलाल जी म (३)	(दुग्गड)
	मुनि श्री पृथ्वीराज जी म (४)	(गलुडिया)
	मुनि श्री फूलचद जी म (४)	(पोखरना)
	मुनि श्री हीरालाल जी म (५)	(ताकडिया)
	पूज्य श्री गणेशीलाल जी म सा (५)	(मारु)
	मुनि श्री कन्हैयालाल जी म (५)	(पोखरना)
	मुनि श्री छगनलाल जी म (५)	(बोल्या)
	मुनि श्री मोतीलाल जी म (५)	(मारु)
	मुनि श्री मनोहर लाल जी म (५)	(पोरवाल)

	मुनि श्री मोतीलाल जी म (५)	(डोसी)
	मुनि श्री किशन लालजी म (५)	(ब्राह्मण)
	मुनि श्री चतरसिह जी म (५)	(पोखरना)
	मुनि श्री जिनदास जी म (६)	(सरूपरिया)
	मुनि श्री केसुलाल जी म (६)	(बाफना)
	श्री रमेश मुनिजी म (८)	(बाफना)
	श्री विवेक मुनि जी म (८)	(गदिया)
उदयरामसर	मुनि श्री टीकम चदजी म (३)	(सिपाणी)
उरासी	मुनि श्री रामसुख जी म सा (२)	(वगेरवाल)
उकलाना	मुनि श्री मागीलाल जी म (५)	(मीणा)
ऊटाला (वल्लभनगर)	मुनिश्री पन्नालाल जी म (५)	(लोढा)
उज्जैन	मुनि श्री दौलतराम जी म (३)	(ओसवाल)
	मुनि श्री चुन्नीलाल जी म (६)	(बोहरा)
	मुनि श्री हुक्मीचद जी (६)	(गादिया)
कजार्डा	मुनि श्री रतनचन्द जी म (१)	(भडारी)
	मुनिश्री रिखबचद जी म (१)	(टीकरीया)
	मुनि श्री हीराचन्द जी म (१)	(भडारी)
	मुनि श्री मगनलाल जी म (२)	(भडारी)
	मुनि श्री कृपाराम जी म (२)	(नलवाया)
	मुनिश्री जयचन्दलाल जी म (२)	(राठौड)
	मुनिश्री जवाहरलाल जी म (२)	(भडारी)
	मुनि श्री हीरालाल जी म (२)	(भडारी)
	मुनि श्री नन्दलाल जी म (२)	(भडारी)
	मुनि श्री किस्तूर चद जी म (२)	(भडारी)
	मुनि श्री दलीचन्द जी म (२)	(भडारी)
	मुनि श्री गणेशीलाल जी म (३)	(भडारी)

	मुनि श्री वृद्धिचन्द जी म (३)	(रेखावत)
	मुनि श्री साकर चद जी म (३)	(भडारी)
	मुनि श्री रिखबदास जी म (३)	(भडारी)
	मुनिश्री उत्तमचन्द जी म (३)	(भडारी)
	मुनि श्री गुलाबचन्द जी म (४)	(भडारी)
	मुनि श्री कालूराम जी म (५)	(भडारी)
	मुनि श्री देवीलाल जी म (५)	(नलवाया)
	मुनि श्री गब्बूलाल जी म (५)	(काठेड)
कन्नोज	मुनि श्री सेवन्त कुमार जी म (८)	(ढाबरिया)
कलोल (गुजरात)	मुनि श्री चुन्नी लाल जी म (५)	(कुलमी)
कानवन	श्री रवीन्द्र मुनि जी म सा (८)	(गोखरू)
ककोड	मुनि श्री राम लाल जी म (५)	(मीणा)
कुरडाया	मुनि श्री विजय चन्द जी म (६)	(कुम्भट)
केरू	मुनि श्री मुलतान मल जी म (५)	(श्री श्रीमाल)
करोली	मुनिश्री शकरलाल जी म (३)	(खडेलवाल)
कालू	मुनि श्री झवरलाल जी म (१)	(श्रावगी)
	मुनि श्री राजमल जी म (६)	(श्रावगी)
कुणी	मुनि श्री नाथूलाल जी म (५)	(कावडिया)
कुडछी	मुनि श्री राजमल जी म (३)	(छाजेड)
कुकडेश्वर	मुनि श्री पृथ्वीराज जी म (५)	(कुभार)
कुचेरा	मुनि श्री रूपचन्द जी म (३)	(भडारी)
	मुनि श्री हणुतमलजी म (६)	(भडारी)
केसिगा (उडीसा)	श्री सतोष मुनि जी म (८)	(अग्रवाल)
केली	मुनि श्री माणकचंद जी म (३)	(बोरदिया)
	मुनि श्री देवीलाल जी म (३)	(बोरदिया)
	मुनि श्री भीमराज जी म (३)	(बोरदिया)

कुडगाव (महाराष्ट्र)	मुनि श्री भीमराज जी म (६)	(गुगलिया)
	मुनि श्री सिरेमल जी म (६)	(गुगलिया)
कोद	मुनि श्री चद जी म (५)	(मतावद)
	मुनि श्री लालचन्द जी म (५)	(कुचेरिया)
कोशीथल	मुनि श्री मूलचन्द जी म (५)	(कोठारी)
	मुनि श्री दयाराम जी म (५)	(कोठारी)
कानोड	मुनि श्री धनराज जी म (५)	(मुरडिया)
कुराईवाल	मुनि श्री डूगरसिह जी म (६)	(छाजेड)
कदवासा	मुनि श्री मोतीलाल जी म (५)	(बोहरा)
खाचरौद	मुनि श्री रिखबचन्द जी म (३)	(सालेचा)
	मुनि श्री ताराचन्दजी म (३)	(श्रीश्रीमाल)
	मुनि श्री राधालाल जी म (४)	(झेलावत)
	मुनि श्री टीकमचद जी म सा (४)	(श्रीश्रीमाल)
	मुनि श्री उम्मेदमल जी म (५)	(गूजर)
खानपुरा	मुनि श्री हजारीमल जी म (५)	(पालावत)
खीचन	मुनि श्री चुन्नीलाल जी म (३)	(गोलेछा)
	मुनि श्री सूरजमल जी म (५)	(राखेचा)
	मुनि श्री केशरीमलजी म (६)	(अग्रवाल)
	मुनि श्री घेवरचद जी म (६)	(गोलेछा)
खवासपुरा	मुनि श्री फतहसिह जी म (३)	(बाफना)
	मुनि श्री गगाराम जी म (३)	(बाफना)
	मुनि श्री कनकमल जी म (३)	(बाफना)
गुडली (मेवाड)	मुनि श्री डालचन्द जी म (३)	(सुराना)
	मुनि श्री मोतीलाल जी म (३)	(सुराना)
	मुनि श्री कन्हैयालाल जी म (६)	(बागरेचा)
गोगुदा	मुनि श्री पन्नालाल जी म (५)	(बडोला)

	मुनि श्री महेन्द्र मुनि जी म सा (८)	(चोरडिया)
गिरि	मुनि श्री अन्नराज जी म (५)	(कोठारी)
गुजरात	मुनि श्री कवर जी म (३)	(ओसवाल)
गाडरवाडा	मुनि श्री पन्नालाल जी म (३)	(खारीवाल)
गगापुर	मुनिश्री सरदारमल जी म (५)	(पिछोलिया)
	मुनि श्री देवीलाल जी म (६)	(पिछोलिया)
गगाशहर	मुनि श्री हमीरमल जी म (६)	(दुग्गड)
	मुनि श्री करणी दान जी म (६)	(सोनावत)
	मुनि श्री नेमीचद जी म (६)	(सेठिया)
	मुनि श्री कुन्दनमल जी म (६)	(सुराना)
	मुनि श्री हनुमानमल जी म (७)	(सिपानी)
	मुनि श्री तोलाराम जी म सा (७)	(सेठिया)
	मुनि श्री हुलास मुनि जी म (८)	(सेठिया)
	मुनि श्री राजेन्द्र मुनि जी म (८)	(सेठिया)
	मुनि श्री मोतीलाल जी म (८)	(सुराणा)
	मुनि श्री किस्तूर चद जी म (८)	(सुराणा)
	मुनि श्री प्रशम मुनि जी म (८)	(छल्लानी)
गोदाजी का गाव	मुनि श्री धर्मेश मुनि जी म (८)	(धोका)
चगेरी नई	मुनि श्री मानमल जी म (५)	(सींगी)
चाकसु	मुनि श्री हीरालाल जी म (२)	(ओसवाल)
	मुनि श्री सूवालाल जी म- (५)	(लूकड)
चपलाना	मुनि श्री भैरूलाल जी म (५)	(नाई)
चित्तौड	मुनि श्री चुन्नीलाल जी म (३)	(पोखरना)
चोरू	मुनि श्री दयालचद जी म (१)	(पोरवाल)
चडावल	मुनि श्री चन्दन मल जी म (३)	(धोका)
	मुनि श्री पूनम चन्द जी म (३)	(धोका)

जसवन्ताबाद	मुनि श्री दयाराम जी म (३)	(ओसवाल)
जमुनापार	मुनि श्री मीरसिह जी म (६)	(अग्रवाल)
जम्मू	मुनि श्री परमचद जी म (६)	(क्षत्री)
जामुनिया	मुनि श्री ऊकारलाल जी म (२)	(भाणावत)
जावद	मुनि श्री गब्बूलाल जी म (४)	(काठेड)
	मुनि श्री मोडीलाल जी म (४)	(पटवा)
	मुनि श्री शोभालाल जी म (४)	(राका)
	मुनि श्री नैण सुख जी म (५)	(मुरडिया)
	मुनि श्री धीरज मुनि जी म सा (८)	(काठेड)
जालना	मुनि श्री पूनमचन्द जी म (६)	
जयनगर	मुनि श्री हजारी मल जी म (५)	(राका)
	मुनि श्री भागीरथ जी म (५)	(ब्राह्मण)
जावरा	मुनि श्री पन्नालाल जी म (३)	(नलवाया)
	मुनि श्री जगन्नाथ जी म (४)	(अग्रवाल)
	मुनि श्री हीरालाल जी म (५)	(पामेचा)
	मुनि श्री किस्तूर चद जी म (५)	(चपलोत)
	मुनि श्री केशरी मल जी म (५)	(चपलोत)
	मुनि श्री हजारीमल जी म (५)	(कटारिया)
	मुनि श्री नदलाल जी म (५)	(बाफना)
	मुनि श्री चादमल जी म (५)	(सचेती)
	मुनि श्री गुलाब चन्द जी म (५)	(काठेड)
	श्री अशोक मुनि जी म (८)	(नवलखा)
जोधपुर—	पूज्य श्री उदयसागर जी म (१)	(खींवेसरा)
	मुनि श्री राजमल जी म (१)	(बोहरा)
	मुनि श्री पृथ्वीराज जी म (२)	(पटवा—माडावत)
	मुनि श्री मन्नालाल जी म (५)	(गोलेछा)

	मुनि श्री शोभाचन्द जी म (५)	(डोशी)
	मुनि श्री तपसीलाल जी म (६)	(डागा)
	मुनि श्री शभूलाल जी म (६)	(ओस्तवाल)
जाडोल	मुनि श्री मगलचन्द जी म (६)	(सीनोदा)
जीरन	मुनि श्री सुखलाल जी म (५)	(चावत)
जयपुर	मुनि श्री चौथमल जी म (५)	(खन्डेलवाल)
टाकली	मुनि श्री उत्तम चन्द जी म (६)	(गान्धी)
टोक	पूज्य श्री श्रीलाल जी म (३)	(बम्ब)
	मुनि श्री गूजर मल जी म (३)	(पोरवाल)
टोडा	पूज्य श्री हुक्मीचन्द जी म (१)	(चपलोत)
डूगला	मुनि श्री विमल मुनि जी म (६)	(दक)
डागियावास	मुनि श्री खेमचन्द जी म (२)	(डागलिया)
डासरिया	श्री चादमल जी म बडे (५)	(मुणोत)
तिवरी	मुनि श्री पीरदान जी म (२)	(बोथरा)
तलावटी (गोगुदा)	मुनि श्री मैयाचद जी म (५)	(ओस्तवाल)
तलगारा	मुनि श्री जसराज जी म (२)	(ओसवाल)
तरावली	मुनि श्री घासीलाल जी म (५)	(वैरागी)
तेलकूड (महाराष्ट्र)	मुनि श्री चुन्नीलाल जी म (६)	(गुगलिया)
	मुनि श्री गोकलचन्द जी म (६)	(गुगलिया)
तारापुर	मुनि श्री तिलोकचन्द जी म (३)	(कुम्भार)
ताल (मेवाड)	मुनिश्री मियाचन्द जी म (५)	(दलाल)
ताल (मालवा)	मुनिश्री चम्पालाल जी म (५)	(भलगट)
थादला	मुनि श्री चतुर्भुज जी म द्वितीय (१)	(भसाली)
	मुनि श्री रूपचद जी म (१)	(भन्साली)
	मुनि श्री मयाचन्द जी म (२)	(पोरवाड)
	पूज्य श्री जवाहरलाल जी म सा (३)	(कवाड)

दाता	पूज्य श्री नानालाल जी म सा (६)	(पोखरना)
दलौदा	मुनि श्री पारस मुनि जी म (८)	(भडारी)
देवरिया	मुनिश्री मागीलाल जी म (६)	(कासवा)
देवगढ	मुनि श्री लालचन्द जी म (३)	(भण्डारी)
	मुनि श्री हरकचद जी म (५)	(मारु)
	मुनि श्री गजानन्द जी म (५)	(देसरला)
दमोरी	मुनि श्री नाथू जी म (५)	(राजपूत)
देशनोक	मुनि श्री भीमराज जी म (५)	(सान्ड)
	मुनि श्री ईश्वर चन्द जी म (७)	(सुराना)
	मुनि श्री आईदान जी म (७)	(धाडेवा)
	मुनि श्री राममुनि जी म सा (८)	(भूरा)
	मुनि श्री प्रकाश मुनि जी म (८)	(भूरा)
	मुनि श्री जयवन्त मुनि जी म (८)	(भूरा)
धानासुता	मुनि श्री प्यारचन्द जी म (५)	(बोथरा)
धरियावद	मुनि श्री भैरूलाल जी म 'शकर' (५)	(राजपूत)
धामनिया	पूज्य श्री शिवलाल जी म (१)	(बोडावत)
नगरी	मुनि श्री रूपचन्द जी म (३)	(ओसवाल)
	मुनि श्री हुक्मीचन्द जी म (३)	(भटेवरा)
नागौर	मुनि श्री प्रतापमल जी म (२)	(सरावगी)
नोखामडी	मुनि श्री मूल मुनि जी म (८)	(काकरिया)
	मुनि श्री सुमति मुनि जी म (८)	(लूणिया)
निकुभ	मुनि श्री भूपेन्द्र मुनि जी म	(सहलोत)
नाहरगढ	मुनि श्री खेमराज जी म (३)	(सुराना)
	मुनि श्री खेमराज जी म (३)	(बडवच्च)
	मुनि श्री चम्पालाल जी म (३)	(सचेती)
नीमगाव खेडी (महाराष्ट्र)	मुनि श्री पद्ममुनि जी म (८)	(चौरडिया)
	मुनि श्री काति मुनि जी म (८)	(चौरडिया)

निम्बाहेडा (नबाव)	मुनि श्री बोट्टुलाल जी म (३)	(अब्वाणी)
	मुनि श्री खूबचद जी म (३)	(जेतावद)
	मुनि श्री बोट्टुलाल जी म (४)	(सींगी)
	मुनि श्री छोटेलाल जी म (५)	(ओस्तवाल)
	मुनि श्री समीरमल जी म (६)	(सींगी)
	मुनि श्री मगनलाल जी म (६)	(चौपडा)
निम्बाज	मुनि श्री धूलचन्द जी म (५)	(सरावगी)
नीमच	मुनि श्री बच्छराज जी म (२)	(कोठारी)
	मुनि श्री बालचद जी म (२)	(सचेती)
	मुनि श्री फतह चन्द जी म (२)	(कोठीफोडा)
	मुनि श्री चौथमल जी म (३)	(चौरडिया)
	मुनि श्री हुक्मीचन्द जी म (५)	(काठेड)
	मुनि श्री शोभालाल जी म (५)	(कटारिया)
	मुनि श्री नाथूलाल जी म (५)	(खमेसरा)
नेगडिया	मुनि श्री फौजमल जी म (५)	(मरलेचा)
निमोद (पजाब)	मुनि श्री वृद्धिचन्द जी म (५)	(लोहारा)
	मुनि श्री चुन्नीलाल जी म (५)	(दुग्गड)
पूना	मुनि श्री जितेश मुनिजी म (८)	(पटवा)
प्रतापगढ	मुनि श्री मन्नालाल जी म (३)	(नरसिहपुरा)
	मुनि श्री देवीलाल जी म (३)	(सरावगी)
	मुनि श्री भैरूलाल जी म (४)	(बीसा पोरवाल)
	मुनि श्री भैरूलाल जी म (५)	(पोरवाल)
पेटलावद	मुनि श्री रिखबचन्द जी म (२)	(पीतलिया)
	मुनि श्री जडाव चन्द जी म (५)	(गुगलिया)
पेडसी	मुनि श्री चुन्नीलाल जी म (५)	(खाती)
पाली	पूज्य श्री चौथमल जी म (१)	(धोका)

	मुनि श्री भीमराज जी म (३)	(ओसवाल)
	मुनि श्री लक्ष्मण जी म (५)	(खाती)
पीपल्यामण्डी (म प्र)	मुनि श्री वृद्धि चन्द जी म (८)	(पामेचा)
	मुनि श्री अमर मुनि जी म (८)	(पामेचा)
	मुनि श्री रणजीत मुनि जी म (८)	(भडारी)
	मुनि श्री बलभद्रमुनि जी म (८)	(पामेचा)
पीपलगाव	मुनि श्री नन्दलाल जी म (२)	(हिरन)
पजाब	मुनि श्री वीरबल जी म (६)	(गर्ग)
पादरू (मारवाड)	मुनि श्री प्रतापमल जी म (६)	(बालर)
फलौदी (मारवाड)	मुनि श्री वृद्धिचन्द जी म (५)	(लोढा)
	मुनि श्री चद्रेश मुनि जी म (८)	(चौरडिया)
फैजापुर (महा)	मुनि श्री चुन्नीलाल जी म (५)	(ओसवाल)
बडावदा (म प्र)	मुनि श्री सौभाग मुनि जी म (८)	(साड)
	मुनि श्री सुरेन्द्र मुनि म (८)	(साड)
बड्लोच गुडी	मुनि श्री सूरजमल जी म (५)	(कोठारी)
	मुनि श्री चन्दूमल जी म (५)	(कोठारी)
बबई	मुनि श्री जीवनमल जी म (६)	(देसाई)
बालोतरा	मुनि श्री चुन्नीलाल जी म (६)	(तातेड)
बबोरी	मुनि श्री नाथूलाल जी म (५)	(राजपूत)
	मुनि श्री सतीदान जी म (५)	
बडकुआ	मुनि श्री देवीलाल जी म (१)	(पासवानिया)
बडोद	मुनि श्री प्यारचन्द जी म (१)	(चौरडिया)
	मुनि श्री केवल चन्द जी म द्वितीय (१)	(ओसवाल)
	मुनि श्री थावर जी म (१)	(राठौड)
	मुनि श्री कुवर जी म (१)	(राठौड)
	मुनि श्री गुलाबचन्दजी म (२)	(नलवाया)

बबोरा	मुनि श्री अर्जुनलाल जी म (६)	(मुरडिया)
	मुनि श्री नरेद्र मुनि जी म (८)	(पीतलिया)
	मुनि श्री ऋषभमुनि जी म (८)	(वया)
बनेडा	मुनि श्री जुहारमल जी म (५)	(गोखरू)
	मुनि श्री भूरालाल जी म (५)	(पानगडिया)
बडलू	मुनि श्री हजारी मल जी म (३)	(चौरडिया)
बरार	मुनि श्री शेषमल जी म (५)	(पीतलिया)
बालेसर	मुनि श्री हसराज जी म (५)	(पारख)
	मुनि श्री किशनचद जी म (५)	(बाफना)
	मुनि श्री मेघराज जी म (५)	(साखला)
	मुनि श्री गुलाबचन्द जी म (५)	(साखला)
	मुनि श्री कपूर चदजी म (५)	(पारख)
	मुनि श्री हेमराज जी म (५)	(साखला)
	मुनि श्री हजारीमल जी म (५)	(पारख)
	मुनि श्री हरकचद जी म (५)	(पारख)
	मुनि श्री मुलतानमल जी म (५)	(चौपडा)
	मुनि श्री हमीरमल जी म (५)	(पारख)
	मुनि श्री किस्तूरचद जी म (५)	(सिगी)
	मुनि श्री जवरीमलजी म (६)	(पारख)
बीकानेर	मुनि श्री शार्दुलसिह जी म (१)	(कोठारी)
	मुनि श्री लालचद जी म 'छोटा' (१)	(लोढा)
	मुनि श्री लालचद जी म 'बडे' (१)	(डागा)
	मुनि श्री सालगराम जी म (१)	(अगवाल)
	मुनि श्री केवलचद जी म प्रथम (१)	(डागा)
	मुनि श्री बिजेमल जी म (२)	(डागा)
	मुनि श्री टीकमचन्द जी म (३)	(सावनसुखा)

	मुनि श्री सौभागमल जी म (३)	(सोनावत)
	मुनि श्री कर्मचन्द जी म (३)	(डागा)
	मुनि श्री पोखरमल जी म (५)	(बोथरा)
	मुनि श्री जेठमल जी म (६)	(सकलेचा)
	मुनि श्री बस्तीमल जी म (६)	(डागा)
	मुनि श्री रेखचन्द जी म सा (६)	(फलोदिया)
	मुनि श्री सुदरलाल जी म (६)	(मुकीम)
	मुनि श्री चौथमल जी म (६)	(कोठारी)
	मुनि श्री जितेद्र मुनि जी म (८)	(सोनावत)
	मुनि श्री विजय मुनि जी म सा (८)	(सोनावत)
	मुनि श्री गौतममुनि जी म (८)	(सेठिया)
बिलाडा	मुनि श्री खेमराज जी म (३)	(चौरडिया)
	मुनि श्री जोरावर मल जी म (५)	(आचलिया)
	मुनि श्री बादरमल जी म (५)	(राका)
विसलपुर	मुनि श्री घेवर चन्द जी म (५)	(पदावत)
बुढ	मुनि श्री फूलचन्द जी म (८)	(रातडिया)
ब्यावर	मुनि श्री शिवलाल जी म (२)	(पदावत)
	मुनि श्री देवकरण जी म (२)	(सान्ड)
	मुनि श्री इन्द्र चन्द जी म (५)	(कोठारी)
	मुनि श्री घासीलाल जी म (५)	(सन्चेती)
	मुनि श्री केशरीमल जी म (६)	(कोठारी)
	मुनि श्री बाबूलाल जी म (७)	(बोगावत)
	मुनि श्री ज्ञान मुनि जी म (८)	(मेहता)
	मुनि श्री विनयमुनि जी म (८)	(बाठिया)
	मुनि श्री गोविन्द मुनि जी म (८)	(बोहरा)
भाटखेडी	मुनि श्री मोडसिह जी म (२)	(भडारी)

	मुनि श्री चैनजी म (२)	(भडारी)
	मुनि श्री जीवराज जी म (२)	(भडारी)
	मुनि श्री कालूजी म (२)	(भडारी)
	मुनि श्री भगवान जी म (३)	(पोरवाल)
भीलवाडा	मुनि श्री कजोडीमल जी म (५)	(सुराना)
	मुनि श्री चादमल जी म (५)	(गान्धी)
भिवानी	मुनि श्री सुगनचन्द जी म (५)	(अग्रवाल)
भूमलिया	मुनि श्री नारायण सिह जी म (३)	(बैद मूथा)
भीमगाव (महाराष्ट्र)	मुनि श्री तेजमल जी म (५)	(ओसवाल)
भादसोडा	मुनि श्री सरदारमल जी म (६)	(लोढा)
भदेसर	मुनि श्री शान्तिमुनि जी म (८)	(सरुपरिया)
भोपाल	मुनि श्री प्रेम मुनि जी म (८)	(कक्कड)
मथानिया	मुनि श्री कवरलाल जी म (७)	(सचेती)
मनासा	मुनि श्री कजोडीमल जी म (५)	(बोथरा)
महागढ	मुनि श्री रतनलाल जी म (६)	(बीराणी)
माडपुरा	मुनि श्री इन्द्रचन्द जी म (७)	(चौरडिया)
मायासर	मुनि श्री रुगनाथ जी म (२)	(श्रीश्रीमाल)
मागरुप	मुनि श्री भीमराज जी म (२)	(चडालिया)
मडी डब्बवाली (हरियाणा)	मुनि श्री पुष्पमुनि जी म (८)	(गोयल)
मोरवन	मुनि श्री वृद्धि चन्द जी म (१)	(मोगरा)
	मुनि श्री घासीलाल जी म (१)	(मोगरा)
मोरबी	मुनि श्री मोहनलाल जी म (५)	(डोशी)
मन्दसौर	मुनि श्री किस्तूर चद जी म (५)	(तलेसरा)
	मुनि श्री पन्नालाल जी म (५)	(नाहर)
	मुनि श्री छगनलाल जी म (५)	(दाणी)
	मुनि श्री सूरजमल जी म (५)	(पोरवाल)

मलकापुर	मुनि श्री मोतीलाल जी म (६)	(कोचेटा)
रतलाम	मुनि श्री चतरोजी म (१)	(राका)
	मुनि श्री स्वरूपचद जी म (१)	(पासवानिया)
	मुनि श्री इन्द्रमल जी म (२)	(गाधी)
	मुनि श्री दया राम जी म (२)	(छाजेड)
	मुनि श्री कालूराम जी म (२)	(कटारिया)
	मुनि श्री जुहारमल जी म (२)	(कटारिया)
	मुनि श्री अमरचद जी म (३)	(नागौरी)
	पूज्य श्री मन्नालाल जी म (३)	(नागौरी)
	मुनि श्री कर्मचन्द जी म (३)	(गान्धी)
	मुनि श्री रतिचन्द जी म (३)	(चत्तर)
	मुनि श्री वीर जी म (३)	(मुरडिया)
	मुनि श्री रायचन्द जी म (३)	(ओस्तवाल)
	मुनि श्री बालचद जी म (३)	(मुरडिया)
	मुनि श्री भोपराज जी म (३)	(नलवाया)
	मुनि श्री माणकचन्द जी म (३)	(मुरडिया)
	मुनि श्री वृद्धिचन्द जी म (३)	(पीपाडा)
	मुनि श्री हुक्मीचद जी म (४)	(चानोदिया)
	मुनि श्री हसराज जी म (४)	(गाधी)
	मुनि श्री उदयचन्द जी म (५)	(बुरड)
	मुनि श्री गभीरमल जी म (५)	(राका)
	मुनि श्री ऊकारलाल जी म (५)	(ब्राह्मण)
	मुनि श्री माणकचद जी म (५)	(मुरडिया)
	मुनि श्री तखतमल जी म (५)	(चपलोत)
	मुनि श्री ताराचद जी म (५)	(राका)
	मुनि श्री चादमल जी म (५)	(राका)

	मुनि श्री हसराज जी म (५)	(गान्धी)
	मुनि श्री सागरमल जी म (५)	(राका)
	मुनि श्री अजित मुनि जी म (८)	(चत्तर)
रेलमगरा	मुनि श्री रूपचन्द जी म (५)	(मेहता)
रामपुरा	मुनि श्री पन्नालाल जी म (१)	(श्रीमाल)
	मुनि श्री गभीरमल जी म (३)	(भडारी)
राजनादगाव	मुनि श्री पकज मुनि जी म (८)	(टाटिया)
रायपुर (मेवाड)	मुनि श्री कालूलाल जी म (५)	(ओसवाल)
रायपुर (सी पी)	मुनि श्री सपतमुनि जी म (८)	(धाडीवाल)
रोहतक	मुनि श्री जुहारमल जी म (३)	(अग्रवाल)
राजगढ	मुनि श्री जसराज जी म (४)	(डोसी)
रभापुर	मुनि श्री हमीरमल जी म (३)	(बाफना)
	मुनि श्री छब्बील जी म (३)	(बाफना)
	मुनि श्री रामसिह जी म (३)	(मतावद)
रिठोडा (पजाब)	मुनि श्री तिलोकचद जी म (५)	(अग्रवाल)
लाखरी	मुनिश्री धन्नालाल जी म (३)	(बगेरवाल)
लुधियाना	मुनि श्री न्यामत जी म (५)	(ओस्तवाल)
लूणदा	मुनि श्री नरसिह जी म (३)	(नरसिहपुरा)
लोद	मुनि श्री रतनचन्द जी म (२)	(पोरवाल–धानुता)
सैलाना	मुनिश्री हसराज जी म (१)	(ओसवाल–सोनी)
सखानिया	मुनि श्री मेघराज जी म (२)	(नपावलिया)
	मुनि श्री ख्यालीलाल जी म (३)	(पोरवाल–पाचावत)
सवाईमाधोपुर	मुनि श्री गोपीलाल जी म (७)	(पोरवाल)
सादडी–बडी	मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म (५)	(मान्डोत)
	मुनि श्री हुक्मीचदजी म (५)	(मारू)
	मुनि श्री पन्नालाल जी म (५)	(माडोत)

	मुनि श्री रतनलाल जी म (५)	(माडोत)
	मुनि श्री हरकचद जी म (५)	(अग्रवाल)
	मुनि श्री अम्बालाल जी म (६)	(दसोरा)
	मुनि श्री कवरचन्द जी म (८)	(सहलोत)
सादडी–छोटी	मुनि श्री लक्ष्मीचन्द जी म (२)	(वया)
	मुनि श्री केशरीमल जी म (६)	(सींगी)
	मुनि श्री हरक मुनि जी म (८)	(कोठारी)
सारन	मुनि श्री धनराज जी म (५)	(डागा)
सालेरा –गोगुदा	मुनि श्री उदयचद जी म (५)	(राका)
साकरा (महाराष्ट्र)	मुनि श्री धर्मेन्द्र मुनि जी म (८)	(देशलहरा)
साथीन (मारवाड)	मुनि श्री मियाचन्द जी म (२)	(धोका)
सिसापुर	मुनि श्री बृजमोहन जी म (५)	(अग्रवाल)
सिगोली	मुनि श्री चतुर्भुज जी म (१)	(लसोड)
	मुनि श्री मोतीलाल जी म (२)	(कटारिया)
सीतामऊ	मुनि श्री नाथूलाल जी म (३)	(सरावगी)
शिवगढ	मुनि श्री केशरीमल जी म (४)	(कोठारी)
सुगरवाड (महाराष्ट्र)	मुनि श्री भैरूलाल जी म (६)	(कटारिया)
सोयला	मुनि श्री मूलचन्द जी म (५)	(चोरडिया)
सोजतसिटी	मुनि श्री किशनसागर जी म (२)	(मूथा)
	मुनि श्री नाहरमल जी म (५)	(श्रीश्रीमाल)
	मुनि श्री बगतावरमल जी म (५)	(अग्रवाल)
सजीत	मुनि श्री हरकचद जी म (१)	(कटारिया)
	मुनि श्री बालचन्द जी म (४)	(मताव्रद)
	मुनि श्री नदलाल जी म (५)	(मोगरा)
हासी	मुनि श्री प्रमोद मुनि जी म (८)	(गर्ग)
हाजी	मुनि श्री सुगाल चद जी म (६)	(मकाणा)

(नोट : कोष्टक मे अकित नम्बर का तात्पर्य आचार्यों के क्रमाक से है।)

परिशिष्ट नं. 3

भगवान महावीर के पश्चात् शासन में ऐतिहासिक परिवर्तन परिवर्धन

भगवान महावीर के पश्चात् शासन में ऐतिहासिक परिवर्तन परिवर्धन

चौथे आरे के ७५ वर्ष ८½ माह शेष रहे तब आषाढ सुदी ६ को भगवान महावीर दसवे स्वर्ग से चवकर ऋषभदत्त ब्राह्मण की पत्नी देवानदा की कुक्षि मे पधारे। आसोज सुदी १३ को देवानदा की कुक्षि से सहरण होकर माता त्रिशला की कुक्षि मे पधारे। चैत्र सुदी १३ को जन्म हुआ, ३० वर्ष की वय मे मिगसर बदी दशमी को दीक्षा ग्रहण की तथा वैशाख शुक्ला दसमी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। उसके पश्चात् चार तीर्थ की स्थापना हुई। भगवान महावीर के केवलज्ञान १४ वर्ष बाद जमाली "चलमाणे चलिए" सूत्र का उत्थापन का पहला निन्हव बना।

प्रभु केवलज्ञान के १७ वर्ष बाद तिष्यगुप्त निन्हव बना। ७२½ वर्ष का आयु पूर्ण करके भगवान मोक्ष में पधार गये और गणधर गौतम स्वामी को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ। वीर निर्वाण के बाद आचार्य परपरा चली।

१– वीर सवत् १ मे आचार्य सुधर्मापाट विराजे व जम्बू स्वामी की दीक्षा हुई।

२– वीर सवत् २० मे आ सुधर्मा स्वामी मोक्ष पधारे, जम्बू स्वामी आचार्य बने।

३– वीर सवत् ६४ मे जम्बू स्वामी मोक्ष पधारे। जम्बू स्वामी के निर्वाण के बाद १० बोलो का विच्छेद हो गया– १ केवल ज्ञान, २ मन पर्याय ज्ञान, ३ परमावधिज्ञान, ४ परिहारविशुद्धि चारित्र, ५ सूक्ष्म सपराय चारित्र, ६ यथाख्यात चारित्र ७, पुलाकलब्धि, ८ आहारक शरीर, ९ क्षायक सम्यक्त्व, १० जिनकल्प।

जम्बूस्वामी के पाट पर प्रभव स्वामी विराजे। जिनका जन्म वीर सवत् ३० वर्ष पूर्व हुआ, वीर सवत् १ मे दीक्षा ग्रहण की। ६४ मे पाट विराजे कुल १०५ वर्ष का आयु पूर्ण कर वीर सवत् ७५ मे मोक्ष पधारे।

४–वीर सवत् ७५ – शय्यभवाचार्य ने वीर सवत् ३६ मे जन्म लिया। वीर सवत् ६४ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स ७५ मे आचार्य बने। कुल ६२ वर्ष का आयु पूर्णकर वी स ९८ मे स्वर्गवासी हुए। पूर्वो मे से निकालकर दशवैकालिक सूत्र की रचना की।

५–वी स ९८– यशोभद्र जी हुए। जिन्होने वी स ६२ मे जन्म लिया। वी स ८४ मे दीक्षा ली और वी स ९८ मे पाट विराजे। कुल ८६ वर्ष का आयु पूर्णकर वी स १४८ मे स्वर्ग पधारे।

६– वी स १४८ – सभूतिविजय पाट विराजे–जिन्होने वी स ६६ मे जन्म लिया, वी स १०८ मे दीक्षा ग्रहण की, वी स १४८ मे पाट विराजे और कुल ९७ वर्ष का आयु भोग वी स १५६ मे स्वर्ग पधारे।

७– वी स १५६– भद्रवाहु पाट विराजे। भद्रबाहु ने वी स ९४ मे जन्म लिया, वी स १३९ मे वराहमिहिर के साथ दीक्षा ग्रहण की और वी स १५६ मे पाट विराजे। कुल ७६ वर्ष का आयु पूर्ण कर वी स १७० मे स्वर्गवास हुआ। आप अतिम चतुर्दशपूर्वधर हुए। आपने "उवसग्ग–हर स्तोत्र" की रचना की।

८– वी स १७०– स्थूलि भद्र पाट पर विराजे। आपने वी स ११६ मे जन्म लिया। वी स १४६ मे दीक्षा ली और १७० मे आचार्य बनकर कुल ९९ वर्ष का आयु पूर्ण कर वी स २१५ मे स्वर्गवास हुआ। आप अतिम १० पूर्वधर थे। आपके निमित्त से कोशा वेश्या श्राविका बनी।

वीर सवत् २१४ मे अव्यक्तवादी तीसरा निन्हव हुआ।

९– वी स २१५– मे महागिरि पाट विराजे। वी स १४५ मे आपका जन्म हुआ। वी स १७५ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स २१५ मे आचार्य बने तथा कुल १०० वर्ष का आयु पूर्ण करके वी स २४५ मे स्वर्गवास हुआ।

वीर सवत् २२० मे कोडिन्याचार्य का शिष्य अश्वमित्र मिथिलावासी शून्यवादी नामक चौथा निन्हव हुआ। उसने मुसलमान धर्म चलाया (जैसलमेर भडार से प्राप्त पाटावली की नकल से)। उद्‌घृत–"ते जैन शिव मुसलमान पुण्य पाप नरक स्वर्ग काई माने नहीं"

वी स २२८ मे महागिरि का शिष्य गग दो क्रियावादी ५वा निन्हव हुआ।

१०– वी स २४५– बलिसिह जी महाराज ने वी स १८४ मे जन्म पाया, वी स २१५ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स २४५ मे आचार्यपद पर प्रतिष्ठित हुए। कुल ९६ वर्ष का आयु पूर्ण कर के वी स २८० मे स्वर्गवासी हुए।

वी स २५५ – श्यामाचार्य उमास्वाति शिष्य ने प्रज्ञापना सूत्र रचा।

११– वी स २८०– सोहन स्वामी (सुहस्ती) पाट पर विराजे। जिन्होने वी स २२२ मे जन्म लिया, वी स २४४ मे दीक्षा ग्रहण की। वी स २८० मे आचार्य बने और कुल ११० वर्ष का आयु पूर्ण कर वी स ३३२ मे स्वर्गवासी हुए।

१२–वी स ३३२– वीरसिह पाट विराजे (इन्द्रदिन्न) आपने वी स २५१ मे जन्म लिया, वी स २८१ मे दीक्षा लेकर वी स ३३२ मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए

और कुल १२५ वर्ष का आयु पूर्ण कर वी स ३७६ मे स्वर्गवासी हुए।

वी स ३३५ – वी स ३३५ मे प्रथम कालकाचार्य हुए।

१३– वी स ३७६– साडिल्याचार्य वी स ३७६ मे पाट पर विराजे। जिन्होने वी स ३०४ मे जन्म पाया, वी स ३५४ मे दीक्षा ग्रहण की, ३७६ मे आचार्य बनकर १०५ वर्ष का आयु पूर्ण कर वी स ४०९ मे स्वर्ग पधारे।

१४– वी स ४०९– आचार्य जीवधर जी– जिन्होने वी स ३८२ मे जन्म ग्रहण किया, वी स ३९१ मे दीक्षा ग्रहण की, वी स ४०९ मे आचार्य बने ओर कुल ७२ वर्ष का आयु पूर्ण करके वी स ४५४ मे स्वर्गवास हुआ।

वी स ४५२ – कालिकाचार्य द्वितीय ने–अनीति का प्रतिकार करने व बहिन सरस्वती साध्वी की रक्षा हेतु युद्ध किया। शक् सवत् प्रारभ हुआ।

१५– वी स ४५४– आर्य समुद्र पाट विराजे– जिन्होने वी स ४११ मे जन्म लिया। वी स ४२७ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स ४५४ मे आचार्य बनकर कुल ९७ वर्ष का आयु पूर्ण करके वी स ५०८ मे स्वर्गवास हुआ।

वी स ४७०– विक्रम सवत् चला और सिद्धसेन दिवाकर हुए।

वी स ५०८– आर्य नदिल ने वी स ४९६ मे जन्म लिया और वी स ५०५ मे दीक्षा ग्रहण की, वी स ५०८ मे आचार्य बने। कुल ९५ वर्ष का आयु पूर्णकर करके वी स ५९१ मे स्वर्गवास हुआ।

वी स ५४४– रोहगुप्त नामक त्रैराशिक मतवाला छठा निन्हव हुआ।

वी स ५८४– चौथा सहनन व सस्थान का विच्छेद हुआ।

वी स ५८४– दशवीरपुर नगर निवासी गोष्ठमाहिल नाम का सर्प काचलीवत् आत्मा व शरीर का सबध वाला सातवा निन्हव हुआ।

१७– वी स ५९१– नागहस्ती आचार्य वी स ५९१ मे हुए, जिन्होने वी सवत् ५६५ मे जन्म लिया और ५७५ मे दीक्षा ग्रहण कर वी स ५९१ मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए और कुल ११९ वर्ष का आयु पूर्ण कर वी स ६८४ मे स्वर्ग पधारे।

वी स ६०५– वीर सवत् ६०५ मे शालीवाहन सवत् चला।

वी स ६०९– शिवभूति (सहस्रमल) व बहिन उत्तरा ने दिगबर मत की स्थापना की।

वी स ६२०–बारहवर्षी अकाल पडा। राजगृही के जिनदत्त सेठ की ईश्वरी सेठानी

के २१ पुत्र थे। अन्न के अभाव मे जहर खाकर मरने लगे। एक लिगधारी के उपदेश से बच गये। अनाज का जहाज विदेश से आया जिसके बराबर मोती देकर खरीद लिया। सेठजी के चार पुत्र– नागेन्द्र, चन्द्र, निवृत्त और विद्याधर दीक्षित हो गये। इन चारो के नाम से ४ शाखाए बनी– जिनमे से दो दिगबर व दो श्वेताबर मत मे रह गई।

वीस ६३५– वीस ६३५ मे शुक्लध्यान व प्रथम सहनन का विच्छेद हुआ।

वीस ६८४– वीस ६८४ मे साचौर मे सर्वप्रथम महावीर प्रभु के नाम की प्रतिमा बनी।

१८–वीस ६८४– रेवतगणि जी ने वीर सवत् ६२५ मे जन्म ग्रहण किया। वी स ६७६ मे दीक्षा ग्रहण की। वीर सवत् ६८४ मे आचार्य बनकर कुल ९३ वर्ष की आयु पूर्ण कर के ७१८ मे स्वर्गवासी हुए।

वीस ६९४– रत्न प्रभ सूरी जी म ने ओसवाल बनाये।

१९– वीस ७१८– सिहगणी महाराज ने वीर सवत् ६७८ मे जन्म लिया और ७०३ मे दीक्षा अगीकार की। फिर वीस ७१८ मे आचार्य बनकर कुल १०२ वर्ष का आयु पूर्ण करके वीस ७८० मे स्वर्गवासी हुए।

२०– वीस ७८०– स्थडिलाचार्य जिन्होने वीर सवत् ७४१ मे जन्म लेकर वीर सवत् ८०६ मे दीक्षा ग्रहण की और ७८० मे आचार्य पद पाया और कुल ७३ वर्ष का आयु पूर्ण करके वीस ८१४ मे स्वर्गवास हुआ।

२१– वीस ८१४– हेमवत आचार्य– जिन्होने वीर सवत् ७६५ मे जन्म लेकर वीर सवत् ८०६ मे दीक्षा ग्रहण की और वीस ८१४ मे आचार्य बनकर कुल ८३ वर्ष का आयु पूर्ण करके वीर सवत् ८४८ मे स्वर्गवासी हुए।

वीस ८२०– वीर सवत् ८२० मे चवदस की पक्खी प्रारभ हुई।

२२– वीस ८४८– आचार्य श्री नागजीत ने वीर सवत् ८०४ मे जन्म लिया और वीस ८२३ मे दीक्षा ग्रहण की और वीस ८४८ मे आचार्य बनकर कुल ७१ वर्ष का आयु पूर्ण कर वीर सवत् ८७५ मे स्वर्ग पधारे।

२३– वीस ८७५– गोविदाचार्य ने वीर सवत् ८२७ मे जन्म लिया और वीस ८५८ मे दीक्षा ग्रहण कर ८७५ मे आचार्य बने और वीर सवत् ८८६ मे कुल ६० वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवास हुआ।

वी स ८६४—गध हस्ती नामक प्रथम टीकाकार हुए।

वी स ८८२— पूजा पोथी देहरावास प्रारभ हुआ। (पाटावली प्रबध पृ ९७)

२४— वी स ८८७— श्री भूतदीन आचार्य— जिन्होने वीर सवत् ८३० मे जन्म लेकर वीर सवत् ८६८ मे दीक्षा ग्रहण की और वीर सवत् ८८७ मे आचार्य बनकर कुल ८४ वर्ष का आयु पूर्ण कर वीर सवत् ९१४ मे स्वर्ग पधारे।

वी स ९०४— वीर सवत् ९०४ मे विद्या मत्र आदि सिद्धि का नाश।

२५— वी स ९१४— श्री छोगगणी आचार्य— आपने वीर सवत् ८३८ मे जन्म लेकर ८६२ मे दीक्षा ग्रहण की तथा वीर सवत् ९१४ मे आचार्य बनकर वीर सवत् ९४२ मे कुल १०४ वर्ष का आयुष्य पूर्ण कर स्वर्गवास हुए।

२६— वी स ९४२— दु सहगणी ने वीर सवत् ८७३ मे जन्म लेकर वी स ९१८ मे दीक्षा ग्रहण की तथा वीर सवत् ९४२ मे आचार्य बनकर वी स ९७५ मे कुल १०२ वर्ष का आयु पूर्ण करके स्वर्गवासी हुए।

वी स ९५४— वीर सवत् ९५४ मे दिगबरो ने सम्मेत शिखर तीर्थ की स्थापना की।

२७— वी स ९७५— देवर्धिगणी क्षमा श्रमण— आपने वीर सवत् ९०७ मे जन्म लेकर वी स ९२२ मे दीक्षा ग्रहण की तथा ९७५ मे आचार्य बनकर वी स १००९ मे कुल १०२ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्ग पधारे।

वी स ९८०—वीर सवत् ९८२ मे शास्त्र ताडपत्र पर लिखना प्रारभ किया। वी स ९९३ तक ११ अग, १२ उपाग, ६ छेद, दस पइन्नाचार, ४ मूल अनुक्रम से लिखा गया— साख मोटापक्ष की पाटावली।

वी स ९८२— वीर सवत् ९८२ मे लब्धि विच्छेद

वी स ९९३— वी स ९९३ मे कालिकाचार्य (तृतीय) ने ७ दिन पर्यूषण और चौथ की सवत्सरी की।

वी स १०००—पूर्वज्ञान का पूर्ण विच्छेद।

वी स १००८—पौषधशाला, उपासरा आदि का निर्माण हुआ।

२८—वी स १००९— वीरभद्राचार्य ने वी स ९५९ मे जन्म लेकर वी स ९७६ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १००९ मे आचार्य पद प्राप्त कर वी स १०६४ मे १०५ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवास हुए।

२९— वी स १०६४— शकर सेनाचार्य का जन्म वीर सवत् १०१९ मे हुआ और १०४१ मे दीक्षा

लेकर वीर सवत् १०६४ मे आचार्य बने। वी स १०९४ मे ७५ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

३०– वी स १०९४– आचार्य यशोभद्र ने वी स १०४८ मे जन्म लिया और वीर सवत् १०७१ मे दीक्षा ग्रहण की। वी सवत् १०९४ मे आचार्य बनकर वी स १११६ मे कुल ७२ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्ग पधारे।

३१– वी स १११६– वीरसेनाचार्य ने वी स १०४० मे जन्म लिया, वी स १०७५ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १११६ मे आचार्य बनकर वी स ११३२ मे ९२ वर्ष की आयु पूर्ण कर स्वर्गवास हुए।

वी स १११७– शीलाकाचार्य ने वी स १११७ मे आचाराग सूत्र पर टीका लिखी।

३२– वी स ११३२– आचार्य वीरजस– अपने वी स ११०३ मे जन्म लिया और वी स १११९ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स ११३२ मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर वी स ११४९ मे कुल ४६ वर्ष का आयु भोगकर स्वर्ग पधारे।

३३–वी स ११४९– जयसेनाचार्य– आपने वी स ११०० मे जन्म लिया वी स ११३५ मे दीक्षा लेकर वी स ११४९ मे आचार्य बने और ११६७ मे कुल ६७ वर्ष का आयु भोग कर स्वर्ग पधारे।

३४– वी स ११६७– आचार्य हरिषेण– आपने वी स ११०२ मे जन्म लेकर वी स ११४० मे दीक्षा ग्रहण की और वी स ११६७ मे आचार्य बनकर वी स ११९७ मे ९५ वर्ष की आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

वी स ११७४– वीर सवत् ११७४ मे श्वेताबरो ने शत्रुजय तीर्थ बनाया।

३५– वी स ११९७– जयसेनाचार्य– आपने वी स ११४२ मे जन्म लिया और वी स ११७४ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स ११९७ मे आचार्य बनकर वी स १२२३ मे ८१ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

३६– वी स १२२३– आचार्य जगमाल जी–आपने वीर सवत् ११८७ मे जन्म लेकर वीर सवत् १२१४ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १२२३ मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर वीर सवत् १२२९ मे कुल ४२ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्ग पधारे।

३७– वी स १२२९– आचार्य देवऋषिजी– आपने वीर सवत् ११४९ मे जन्म लेकर वीर सवत् ११९० मे दीक्षा ग्रहण की। वी स १२२९ मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर वी स १२३४ मे कुल ८५ वर्ष का आयु पूर्ण करके स्वर्गवासी हुए।

३८– वी स १२३४– आचार्य श्री भीमऋषिजी– आपने वी स ११६० मे जन्म लेकर वी स १२११ मे दीक्षा ग्रहण की तथा वी स १२३४ मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर वी स १२६३ मे कुल १०३ वर्ष का आयु पूर्ण करके स्वर्गवासी हुए।

३९– वी स १२६३– आचार्य कृष्ण ऋषिजी– आपने वीर सवत् १२०८ मे जन्म लेकर वी स १२३२ मे दीक्षा गहण की और वी स १२६३ मे आचार्य बनकर वी स १२८४ मे ७६ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

४०–वी स १२८४– आचार्य राजऋषिजी– आपने वी स १२१७ मे जन्म लेकर वी स १२७५ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १२९९ मे आचार्य बनकर वी स १३२४ मे कुल १०७ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

४१–वी स १२९९– आचार्य देवसेन– आपने वी स १२१७ मे जन्म लेकर वी स १२७५ मे दीक्षा अगीकार की और वी स १२९९ मे आचार्य बनकर वी स १३२४ मे कुल १०७ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

४२–वी स १३२४– आचार्य शकर सेन द्वितीय– आपने वी स १२३९ मे जन्म लेकर वी स १२८४ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १३२४ मे आचार्य बनकर वीर सवत् १३५४ मे कुल ११५ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

४३– वी स १३५४– आचार्य लक्ष्मीलाभ जी– आपने वीर सवत् १२९२ मे जन्म लेकर वी स १३२१ मे दीक्षा ग्रहण करके वी स १३५४ मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। वीर सवत् १३७१ मे कुल ७९ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

४४– वी स १३७१– आचार्य रामऋषि– आपने वी स १३०४ मे जन्म लेकर वी स १३२८ मे दीक्षा ली और वी स १३७१ मे आचार्य बनकर वी स १४०२ मे कुल ९८ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

४५–वी स १४०२– आचार्य पद्मऋषि–आपने वी सवत् १३३९ मे जन्म लेकर वीर सवत् १३६९ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १४०२ मे आचार्य बनकर वी स १४३४ मे कुल ९५ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

४६–वी स १४३४– आचार्य हरिसेन जी– आपने वीर सवत् १३७० मे जन्म लेकर वी सवत् १३९१ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १४३४ मे आचार्य वनकर वी स १४६१ मे कुल ९१ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

४७– वी स १४६१– आचार्य कुशलऋषि जी– आपने वीर सवत् १३६९ मे जन्म लेकर वीर सवत् १४३५ मे दीक्षा ग्रहण की तथा वी स १४६१ मे आचार्य बनकर वी स १४७४ मे कुल १०५ वर्ष का आयु पूर्ण करके स्वर्गवासी हुए।

वी स १४६४– वीर सवत् १४६४ मे बड गच्छ की स्थापना के साथ ८४ गच्छ ओर बने (पाटावली प्रबन्ध पृ १३४)

वी स १४७१– मठधारी महात्मा हुए।

४८– वी स १४७४– आचार्य उपनीत्रऋषि– आपने वी स १४०७ मे जन्म लेकर वी स १४४९ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १४७४ मे आचार्य बनकर १४९४ मे कुल ८७ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवास पधारे।

वी स १४७८– वीर सवत् १४७८ मे पौषधशाला का निर्माण हुआ। (पाटावली प्रबन्ध पृ ९७)

४९– वी स १४९४–आचार्य जयसेन जी– आपने वीर सवत् १४२० मे जन्म लेकर वी स १४६५ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १४९४ मे आचार्य बनकर वी स १५२४ मे कुल १०४ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

वी स १४९६– तक्षशिलागच्छ की स्थापना हुई।

५०– वी स १५२४– आचार्य विजयसेन– आपने वीर सवत् १४८७ मे जन्म लेकर वी स १५०३ मे दीक्षा ग्रहण की और वी सवत् १५२४ मे आचार्य बनकर वी स १५८९ मे कुल १०२ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

५१– वी स १५८९– आचार्य देवसेन जी– आपने वीर सवत् १५५४ मे जन्म लेकर वी स १५६४ मे दीक्षा ग्रहण की और वीं स १५८९ मे आचार्य बनकर वी स १६४४ मे कुल ९० वर्ष आयु पूर्ण करके स्वर्गवासी हुए।

वी स १६०९– नवागी टीकाकार अभयदेव सूरी हुए।

वी स १६२९– आचार्य चद्रप्रभ ने पूनम की पक्खी की इससे पूनमिया गच्छ की स्थापना हुई। मणीलाल जी म १६१९ मानते है।

५२– वी स १६४४– आचार्य सूरसेन जी– आपने वीर सवत् १६०१ मे जन्म लेकर वी स १६२३ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १६४४ मे आचार्य बनकर वी स १७०८ मे कुल १०७ वर्ष का आयु पूर्ण करके स्वर्गवासी हुए।

वी स १६५४–वी स १६५४ मे आचलिया गच्छ की स्थापना हुई (पाटावली पृ १६८४)

वीस १६७०—वीस १६७० मे खरतरगच्छ की स्थापना हुई (पाटावली प्रबध पृ १६८३)

५३— वीस १७०८— आचार्य महासूरसेन जी— आपने वीर सवत् १६२९ मे जन्म लेकर वीस. १६५४ मे दीक्षा ग्रहण की और वी सवत् १७०८ मे आचार्य बनकर वीस १७३८ मे १०९ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

वीस १७०४— वी स १७०४ मे नागोरी महात्मा हुए।

वीस १७०५— वीस १७०५ मे प्रौढ सूरी ने प्रागभार नगर मे पोरवाल जैन बनाए।

वीस १७०८— वीस १७०८ मे आगमिया गच्छ की स्थापना हुई।

वीस १७२७— वीस १७२७ मे चवदस पक्खी (पाटावली प्रबध पृ ९७)

५४—वीस १७३८— आचार्य महासेन— आपने वीर सवत् १६५१ मे जन्म लेकर वीस १६६२ मे दीक्षा ग्रहण की और वीस १७३८ मे आचार्य बनकर वीस १७५८ मे १०७ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्ग पधारे।

वीस १७५५— वीर सवत् १७५५ मे तपागच्छ की स्थापना हुई।

वीस १७५५— वीस १७५५ मे तपागच्छ, बडगच्छ, चित्र गच्छ— तीनो मे से एक एक ने मिलकर महात्मा गच्छ की स्थापना की।

५५— वीस १७५८— आचार्य जीवाजी ऋषि— आपने वीर सवत् १७०९ मे जन्म लेकर वीस १७२२ मे दीक्षा ग्रहण की और वींस १७५८ मे आचार्य बनकर वीस १७७९ मे कुल ७० वर्ष की आयु पूर्णकर स्वर्गवासी हुए।

५६—वीस १७७९— आचार्य गजसेन जी— आपने वीर सवत् १७२१ मे जन्म लेकर वीस १७४४ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १७७९ मे आचार्य बनकर वी स १८०६ मे कुल ८५ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

५७—वीस १८०६— आचार्य मिश्रसेनजी— आपने वीर सवत् १७५४ में जन्म लेकर वीस १७७६ मे दीक्षा ग्रहण की और वीस १८०६ मे आचार्य बनकर वीस १८४४ मे कुल ८८ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्ग पधारे।

५८—वीस १८४४— आचार्य विजयसिहजी—अपपने वीर सवत् १८१२ मे जन्म लेकर वीस १८३२ मे दीक्षा ग्रहण की और वीस १८४४ मे आचार्य बनकर वीस १९१२ मे १०१ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गधाम पधारे।

५९— वीस १९१२— आचार्य शिवराज जी— आपने वीर सवत् १८८२ मे जन्म लेकर वीस १९०० मे दीक्षा ग्रहण की और वीस १९१२ मे आचार्य बनकर वीस

१९५७ मे कुल ७५ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवास हुए।

६०– वी स १९५७– आचार्य लाल जी ऋषि–आपने वीर सवत् १९०० मे जन्म लेकर वी स १९३८ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स १९५७ मे आचार्य वनकर वी स १९८७ मे कुल ८७ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्ग पधारे।

६१– वी स १९८७– ज्ञानजी ऋषि आचार्य का जन्म वीर सवत् १९२७ मे हुआ तथा वी स १९४३ मे दीक्षा ग्रहण कर वी स १९८७ मे आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होकर वी स २००७ मे कुल ८० वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्ग पधारे।

वी स १९९९– ज्ञानजी यति से शास्त्र लेकर लोकाशाह ने लेखन प्रारभ किया। वि स १५२९ वैशाख सुदी ३ ओर जाहिर उपदेश देना प्रारभ किया।

वी स २००१– भस्म ग्रह उतरा। माणो जी सुखो जी आदि ४५ व्यक्तियो ने अहमदावाद ज्ञान जी ऋषी से दीक्षा ग्रहण की व लोकागच्छ नाम रखा।

वी स २००७– आचार्य श्री ज्ञान जी ऋषि के शिष्य सोहन जी स्वामी के पास वीर सवत् २००७ मे (विक्रम सवत् १५३६ मिगसर सुदी ५) लोकाशाह ने दीक्षा ग्रहण की।

६२– वी स २००७– आचार्य भाणोजी–आपने वीर सवत् १९४४ मे जन्म लेकर वी स १९७० मे दीक्षा ग्रहण कर वी स २००७ मे आचार्य बने और वी स २०३२ मे कुल ८८ वर्ष की आयु भोग कर स्वर्गवासी हुए।

वी स २०१६– लोकाशाह का स्वर्गवास हुआ– विक्रम सवत् १५४६ चैत्र सुदी ग्यारस– १३ मार्च।

वी स २०२९– रयणुशाह आकर बीकानेर बसे।

६३–वी स २०३२– आचार्य रूपजी स्वामी– आपने वी स १९७२ मे जन्म लिया और वी स २००४ मे दीक्षा ग्रहण की। वी स २०३२ मे आचार्य बनकर वी स २०५२ मे ८० वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवास पधारे।

६४– वी स २०५२– आचार्य जीवाजी ऋषि– आपने वी स १९५९ मे जन्म लिया और वी स १९८७ मे दीक्षा ग्रहण की और वी स २०५२ मे आचार्य बनकर वी स २०५७ मे कुल ९८ वर्ष का आयु पूर्ण कर स्वर्गवासी हुए।

वी स २०५२– आनद विजय जी ने तपागच्छ मे पुन क्रियोद्धार किया।

६५– वी स २०५७– वी स २०५७ मे कुवर जी पाट विराजे।

६६– वी स २०७२– तेजसिह जी पाट पर विराजे।

वी स २०७२– आचलिया गच्छ का पुन क्रियोद्धार हुआ।

वी स २०७५– खरतरगच्छ का पुन क्रियोद्धार हुआ।

वी स २०७८– जीवराज जी म ने स २०७८ मे क्रियोद्धार किया।

वी स २१६२– धर्मसिह जी म ने वी स २१६२ मे क्रियोद्धार किया।

वी स २१६४– लवजी ऋषि जी ने वी स २१६४ मे क्रियोद्धार किया।

वी स २१८६– धर्मदासजी म ने वी स २१८६ मे क्रियोद्धार किया।

६७– वी स २२५५– हरजी ऋषि जी म ने वी स २२५५ मे क्रियोद्धार किया।

६८– गोधाजी

६९– फरसराम जी

७०– लोकमन जी २३१५ मे स्वर्गवास

७१– महाराम जी २३२२ मे स्वर्गवास

७२– दौलतराम जी वी स २२४५ मे दीक्षा, वी २३२२ मे आचार्य बने। २३३० मे स्वर्गवास।

७३– पू लालचद जी म –वी स २२९६ मे स्वर्गवास।

७४– **पू हुक्मीचद जी म**– जन्म–वी स २३३०, पौ सु ९, दीक्षा– वी स २३४८, मिग सु २, क्रियोद्धार–वी स २३६०, मि ब १, आचार्य पद–२३७७ माघ सुदी ५, स्वर्गवास– २३८७, वै सु ५।

७५– **शिवलाल जी म**– जन्म–२३३७ मे पौ सु १०, दीक्षा– २३६१ मि सु १, युवाचार्य–वी स २३७७, मा सु ५, आचार्य–वी स २३८७, वै सु ५, स्वर्गवास–वी स २४०३, पो सु ६।

७६– **उदयसागर जी म**– जन्म– वी स २३४६, आ सु १५, दीक्षा–वी स २३८७, चै सु ११ द्वितीय, युवाचार्य–वी स २३९५, पौ सु ७, आचार्य–वी स २४०३, पो सुदी ६, स्वर्गवास–वी स २४२४, माघ सुदी १०।

७७– **चौथमल जी म**– जन्म–वी स २३५५, वै सु ४, दीक्षा–वी स २३७९ चै सु १२, युवाचार्य–वी स २४२४, आसोज सु १५, आचार्य–वी स २४२४, मा सु १०, स्वर्गवास–वी स २४२७, का सु १०।

७८— **श्रीलालजी** म — जन्म—वी स २३९६, अ सु १२, दीक्षा प्रथम—वी स २४१५, मा ब २, द्वितीय—वी स २४१७, मि सु १—२, युवाचार्य पद—वी स २४२७, का सु २, आचार्य पद—वी स २४२७, का सु १०, स्वर्गवास—वी स २४४७, आ सु ३।

७९— **जवाहरलाल जी** म — जन्म—वी स २४०२, का सु ४, दीक्षा—वी स २४१८, मि सु २, युवाचार्य—वी स २४४५, चै ब ९, आचार्य—वी स २४४७, अ सु ३, स्वर्गवास-वी स २४७०, अ सु ८।

८०— **गणेशीलाल जी** म —जन्म—वी स २४१७, सा ब ३, दीक्षा—वी स २४३२, मि ब १, युवाचार्य—वी स २४६०, फा सु ३, आचार्य—वी स २४७०, अ सु ८, स्वर्गवास—वी स २४८९, मा ब २।

८१— **पू. नानालाल जी** म —जन्म—वी स २४४७, जेठ सु २, दीक्षा—वी स २४६६, पौ सु ८, युवाचार्य—वी स २४८९, आ सु २, आचार्य पद—वी स २४८९, मा ब २।

–प्रतिज्ञा पत्र–

निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति आत्म कल्याण व आत्म शान्ति का एक मात्र अमोघ उपाय है अत इसकी शुद्धता बनी रहना नितान्त आवश्यक है। वर्तमान मे शुद्ध श्रमण वर्ग मे विकृतिया प्रवेश कर गई है, उनको दूर करने के लिए पूज्य श्री १००८ श्री गणेशलाल जी म सा ने जो शान्त क्रान्ति का कदम उठाया, वह उचित एव आदर्श है।

सिद्धान्त व चारित्र की सुरक्षा पूर्वक सगठन को सुदृढ एव चिर स्थायी बनाने की प्रबल इच्छा रखने वाला श्रमण वर्ग यह निर्णय करता है कि सयमी जीवन मे प्रवेश पाई हुई विकृतियो को दूर करने के लिए एव सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अभिवृद्धि हेतु हम शात क्रान्ति के जन्मदाता पूज्य श्री १००८ श्री गणेशलाल जी म सा के नेश्राय मे तथा आप श्री के नेतृत्व मे निम्न बाते जीवन मे उतारने की प्रतिज्ञा करते हैं–

(१) चातुर्मास, प्रायश्चित, विहार व सेवा आदि व्यवस्था की सर्वसत्ता आप श्री के चरणो मे रहेगी।

(२) शिष्य व शिष्याये आप श्री के नेश्राय मे होगे।

(३) चातुर्मास के लिए व शेषकाल के लिए साधु साध्वी ने जहॉ विहार किया या जहॉ बिराजे वहॉ से वस्त्र पात्रादि जो भी वस्तु साल भर मे लेगे उसकी नौध रखेगे। साथ ही सघ व्यवस्था कैसी है, विशेष उपकार व उपसर्ग कहॉ–कहॉ पर हुए इसकी भी नौध रखेगे और वह सब आलोचना की नौध डायरी आप श्री की सेवा मे अर्पण कर देगे।

(४) चातुर्मास पूर्ण होने के बाद आप श्री (आचार्य श्री) जिस समय जहॉ जिन साधु साध्वियो को याद फरमायेगे, वहॉ वे साधु साध्वी उपस्थित होगे।

(५) साधु साध्वी के कल्पनानुसार समान समाचारी जो आप श्री ने तय की है और करेगे वह सब साधु साध्वियो को सहर्ष मान्य होगी तथा सकारण व भूल से जो भी त्रुटि हो जाय उसका आप श्री जो भी उपालम्भ व प्रायश्चित देगे, उसको सहर्ष स्वीकार करेगे।

(६) श्रमण वर्ग की धारणा, विचारणा मे फर्क हो सकता है, लेकिन गच्छाधिपति आचार्य श्री अर्थात् आप श्री की धारणा विचारणा विरूद्ध कोई साधु–साध्वी साधु सघ मे या श्रावक सघ मे स्थापना नहीं करेगे।

(७) जो भी वैरागी या वैरागन हो उसको तैयार करके स्नेह, श्रद्धा के केन्द्र आचार्य श्री के पास परीक्षा होकर जब तक आप श्री द्वारा आज्ञा प्राप्त न हो जाय, तब तक कोई साधु साध्वी उनको दीक्षा न देगे ओर सादडी आदि मे तथा बाद मे भी जो जो सिद्धान्त, चारित्र और सुसगठन विषयक आदेश आदि दिये हैं ओर देगे, उसे हम सन्त–सती वर्ग साकार रूप देने को हर समय तैयार हैं और रहेगे। इति शुभ।[१]

उदयपुर आज्ञानुवर्ती

स २०१८ वैशाख शुक्ला ३ हम है आपके चरण चचरीक साधु साध्वी वृन्द

---

१ पूज्य गणेशाचार्य जीवन चरित्र–पृ ४५४–४५६ से उदघृत।

आचार्य द्वय (समता विभूति बा. ब्र. पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी महाराज साहब एवं परम प्रभावक पू. आचार्य श्री चम्पक मुनिजी म सा.)

का

- संयुक्त निवेदन -

परम प्रसन्नता की बात है कि वी स २५०९ (सन् १९८३) के वर्ष हम दोनो का सयुक्त चातुर्मास भावनगर की पुण्य धरा पर सम्पन्न होने जा रहा है।

निर्ग्रन्थ प्रवचन की शुद्ध आराधना एव निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति की सुरक्षा हेतु अनेक बार विचार विनिमय होते रहे।

अनादिकाल से भव भ्रमण करती हुई इस आत्मा ने अनेक बार द्रव्य सयम का अराधना किया होगा ? काश ? उससे आत्मा कल्याण हुआ होता तो इस पचम काल मे आने का प्रसग नही होता एकबार भी अन्तस के शुद्धतम भावो से इस निर्ग्रन्थ अवस्था का परिपूर्ण आराधन हो जाय तो निश्चित रूप से यह जीव शाश्वत सुखो को प्राप्त कर ले।

वर्तमान समय मे श्रमण साधना की आराधना मे आधुनिक युग के नाम पर परिवर्तन के अनेक प्रकार के प्रयत्न हो रहे है जिनसे बच पाना कईयो के लिए अत्यन्त कठिन हो रहा है अत ऐसे समय मे श्रमण भगवान महावीर के शासन के प्रति निष्ठापूर्वक निर्मल सयम जीवन की आराधना के लिए आचरित कुछेक परामर्श सयम जीवन की सुरक्षा मे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगे ऐसा हमारा मन्तव्य है।

(१) एक सवत्सरी पर्व हेतु सपूर्ण जैन समाज अथवा श्वेताम्बर जैन समाज अथवा स्थानकवासी जैन समाज एकमत होकर जो निर्णय करे उसके लिए सदा तत्पर रहना चाहिए।

(२) ध्वनिवर्धक यन्त्र के विषय पूर्व मे अनेक बार चर्चाये हो चुकी हैं। पावर हाउस, जनरेटर, बैटरी अथवा अन्य किसी भी प्रकार से उत्पन्न हुई विद्युत् बादर तेजस्काय के अन्तर्गत सचित है अत इसका उपयोग श्रमण मर्यादा मे कतई उपयुक्त नहीं है।

(३) किसी भी सस्था के नाम से चाहे वह स्वय के नाम से सम्बन्धित हो अथवा अपने गुरुजनो के नाम से उसके लिए किसी भी प्रकार का चन्दा चिट्ठा फड फाला के कार्य मे कतई नही पडना चाहिये। इसी प्रकार दीक्षा आदि के प्रसगो पर किसी की पैसे आदि की बोलिया नही होनी चाहिए।

(४) उपाश्रय भवन बाडी आदि किसी भी प्रकार के भवन निर्माण सम्बन्धी उपदेश नही देने चाहिये न इसके लिए किसी भी प्रकार के चन्दे चिट्ठे के प्रपच मे पडना चाहिए।

(५) धातु, प्लास्टिक अथवा चीनी मिट्टी के पडिहारी बर्तनो का (त्रास, बाल्टी, प्लेट आदि) उपयोग नही करना चाहिए।

(६) वायुकायिक जीवो की रक्षा हेतु रस्सी आदि पर वस्त्र नही सुखाने चाहिए।

(७) किसी भी प्रकार के सर्फ, साबुन तथा वाशिग पाउडर का उपयोग नही करना चाहिए।

(८) रात्रि मे उदक नही रखना चाहिए तथा रात का बासी पानी भी नही लेना चाहिए।

(९) विद्युत बल्ब तथा पखे वगैरह जिस उपाश्रय भवन मे चालू हो, वहाँ नही ठहरना चाहिए।

(१०) नित्य पिण्ड नही लेना चाहिए।

(११) विहार करते समय टिफिन मगाकर तथा साथ मे चल रहे गृहस्थ से तथा विहार मार्ग मे दर्शनार्थ आए बाहर के गृहस्थो से आहार पानी नही लेना चाहिए।

(१२) सचित मेवा आखी बादाम, मुनक्का आदि ग्रहण नही करना चाहिए।

(१३) सूर्योदय से पहले विहार नही करना चाहिए, उसमे अनके तरह की स्वपर जीवो सम्बन्धी विराधनाओ का प्रसग रहता है। जिस स्थान पर रात्रि निवास किया गया है, उस स्थान के छोटे–बडे कई जीव अप्रतिलेखित उपकरणो के साथ आ सकते है। फलत उनकी हिसा एव उनके स्थानान्तरण की सम्भावना रहती है। इसके अतिरिक्त रात्रि–विहार मे ईर्या समिति का पालन नही किया जा सकता है। अत सूर्योदय के पूर्व विहार नही करना चाहिए और इसी तरह सूर्यास्त के पश्चात् भी विहार नही करना चाहिए। सूर्यास्त होने के बाद सूर्योदय न हो तब तक नारीवर्ग को श्रमण वर्ग के उपाश्रय मे तथा पुरुष वर्ग को श्रमणी वर्ग के उपाश्रय मे प्रवेश नही देना चाहिए।

(१४) श्रमण श्रमणी वर्ग की तपस्या के उपलक्ष मे या सावत्सरिक क्षमापना, दीपावली के आशीर्वाद आदि की पत्रिकाएँ साधु–साध्वियो को न अपने हाथो से गृहस्थ को लिखना चाहिए, न छपवाना चाहिए और न गृहस्थो को दर्शनार्थ ही बुलाना चाहिए। यदि उपरोक्त कार्य गृहस्थ करते हो तो उन्हे रोकना चाहिए।

(१५) फोटो नहीं खिचवाने चाहिए। पाट, गादी, पगलीए, समाधि आदि की जड मान्यता भी नही करनी चाहिए और न करवानी चाहिए। समाधि, पगलीए और गुरु के चित्रो को धूप–दीप अथवा नमस्कार करने वालो को उपदेश देकर रोकना चाहिए। इनके अतिरिक्त अन्य भी बाते है, फिलहाल उनका उल्लेख नही किया जा रहा है पर उनके लिए भी सजग रहना आवश्यक है।

यो तो श्रमण जीवन साधना के पाच महाव्रतो एव उनकी समाचारी का पूर्णतया उल्लेख विधि–विधान शास्त्रो मे वर्णित ही है, फिर भी वर्तमान मे कतिपय श्रमण श्रमणी समुदाय मे कुछेक बातो को लेकर कुछ विकृतिया प्रवेश कर चुकी है अथवा कर रही हैं अत शुद्ध सयम की आराधना हेतु चतुर्विध सघ के प्रत्येक सदस्य को सजग रहना अत्यावश्यक हो गया है। इस प्रकार बढती हुई ऐसी विकृतियो को नही रोका गया तो यह स्थिति कहा तक पहुचेगी ? तथा शुद्ध एव निर्मल सस्कृति की क्या दशा होगी ? यह एक गभीर विचारणीय विषय हो गया है। शास्त्रोक्त साधु समाचारी के अनुसार सभी अपनी शुद्ध एव निर्मल आराधना कर स्वय की तथा शासन की शोभा बढाएँ।

इन्ही शुभ कामनाओ के साथ–

प्रस्तोता

दीपचन्द भूरा
अध्यक्ष
अ भा सा जैन सघ
दिनाक १२ ११ ८३

नवनीतभाई पटेल
अध्यक्ष
बरवाला स सगठन समिति

वीतरागाय नम

आचार्य हुक्मेशाय नम

नानेशाय नम

प्रतिज्ञा-पत्र

श्रमण भगवान महावीर द्वारा निर्दिष्ट निर्ग्रन्थ श्रमण सस्कृति के सरक्षक, शान्त, दात, गम्भीर चारित्र चूडामणि, सघ शिरोमणि, अध्यात्म तत्ववेता शास्त्र विशारद परम श्रद्धेय प्रात स्मरणीय आचार्य प्रवर श्री १००८ श्री नानालाल जी म सा मे सविधिवन्दन सुखशान्ति पूछने के पश्चात् निम्न प्रतिज्ञा करता हूँ।

हे जगदुद्धारक पूज्य गुरुदेवो !

शिक्षा-दीक्षा, प्रायश्चित, चातुर्मास एव विहार आदि एक ही आचार्य के नेश्राय मे होने की जो शासन व्यवस्था है, मैं उसे हृदय से स्वीकार करता हूँ। मै शासन व्यवस्था एव नियम के अनुसार सहर्ष युवाचार्य श्री जी म सा की नेश्राय मे शिष्य रूप से दीक्षित होना चाहता हूँ।

सयमी अवस्था मे आप महापुरुषो के अभिप्रायानुरूप श्रद्धा प्ररूपणा स्पर्शना करने हेतु पूर्ण रूप से तत्पर रहूगा। मैने सयमी जीवन मे आने वाले सर्दी-गर्मी आदि परिषहो को सहन करने का भी यथासभव अभ्यास किया है। अत परिषहो को सहन करने मे तत्पर रहूगा।

मैने साधुमार्गी सघ की निर्धारित मौलिक आचार सहिता का अध्ययन करके उसे समझ लिया है। उसके अनुसार आचरण (बर्ताव) करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहूगा। मुझे जिन भी के साथ रखेगे मै उनके साथ विनय भावपूर्वक रहने की भावना रखता हूँ। मुझे इसमे किसी प्रकार का कोई एतराज नहीं होगा। मै किसी के साथ दलबन्दी नहीं करूगा न उसमे भाग लूगा। सघ से बहिष्कृत को प्रश्रय भी नहीं दूगा।

मै कभी भी किसी पद का दावेदार नहीं बनूगा। शासन सेवा का जो कार्य होगा उसे निष्ठापूर्वक सम्पन्न करने की भावना रखता हूँ।

मै सघपति/सघ अनुशास्ता (आचार्य श्री जी म सा) को सर्वोपरि महत्त्व दूगा। श्रद्धा प्ररूपणा स्पर्शना, सिद्धान्त परम्परा या अन्य किसी भी विषय मे यदि कोई विषय समझ मे नहीं आया तो उसके लिए क्षयोपशम की तारतम्यता को स्वीकार करता हुआ 'तत्त्व केवली गम्य' मानकर विवाद नहीं करूगा बल्कि उक्त श्रद्धा आदि के विषय मे अथवा अन्य किसी भी विवादास्पद विषय मे सघपति/सघ अनुशास्ता द्वारा किये गये निर्णय को सश्रद्धा स्वीकार करूगा व उसी के अनुसार धारणा प्ररूपणा करने की भावना रखता हूँ।

शिक्षा दीक्षा–प्रायश्चित चातुर्मास विहार आदि शासन व्यवस्था के विपरीत कोई भी प्रवृत्ति नहीं करूगा। छद्मस्थिक अवस्था से शासन मर्यादाओ के विपरीत यदि कभी कोई प्रवृत्ति हो जाय तो उसके लिए आप महापुरुष जो भी दण्ड प्रायश्चित देगे उसे मै बिना ननुनच सहर्ष स्वीकार करूगा।

मैं सहर्ष सश्रद्धा मन, वचन, काया से उक्त प्रतिज्ञाओ को स्वीकार करता हूँ। साथ ही आप महापुरुषो के चरणो मे करबद्ध सानुरोध विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि आपश्री जी म सा मुझे शासन व्यवस्था व नियम के अनुसार आप श्री की नेश्राय मे शिष्य रूप से दीक्षा प्रदान करने की महत्ती कृपा करावे।

अन्त मे मैं विश्वास दिलाता हूँ कि गृहीत प्रतिज्ञाओ पर पूर्ण रूप से अटल रहते हुए सयम मार्ग की आराधना करता रहूगा।

दिनाक– हस्ताक्षर प्रतिज्ञाकर्त्ता

स्थान–

पूरा पता–

परिशिष्ट नं. 4

कोटा सम्प्रदाय
के
दीक्षित संतों के
परिचय-पत्र

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
1	हरजी म म			स १५६६			
2	गोदाजी म					हरजी म	
3	परशरामजी म		राजपूत			गोदाजी म	
4	खेतसिहजी म			स १७७६		परसरामजी म	स १८२५
5	लोकमनजी म					परसरामजी म	स १८४५ उन्हियारा
6	श्री जीवराजजी म					खेतसिहजी म	
7	ढोलाजी म तपसी					खेतसिहजी म	
8	सुखरामजी म		सरावगी राठी			खेतसिहजी म	
9	थानसिहजी म					खेतसिहजी म	
10	महारामजी म		पोरवाल			खेतसिहजी म	
11	डालूरामजी म		अग्रवाल			खेतसिहजी म	

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
12	शुभरामजी म		दुग्गड			खेतसिहजी म	
13	फकीरचदजी म		चित्तौडा				
14	गगारामजी म		सरावगी (पाहाडा)				
15	सुखरामजी म		पलीवाल				
16	भीमराजजी म		अग्रवाल				
17	खीवसीजी म			स १७८१			स १८३८
18	घासीलालजी म						
19	लूनकरणजी म						
20	बगतावरमलजी म		पोरवाल				
21	मोतीरामजी म		मानपुरा				
22	गोकलजी म		अग्रवाल				

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
23	ईश्वरजी म	लूणरो (हा)	सोनी				
24	महारामजी म					लोकमनजी म	स १८५२ दुगारी
25	गुलाबचदजी म			स १८०४		खीवसीजी म	१८५३ भा सु १२ उन्हियारा
26	फतहचदजी म			स १७६८		खींवसीजी म	स १८५१
27	चन्द्रभानजी म	जैपुर (आमेर)	कासलीवाल	स १८०६ रवि मि ब ६		खींवसीजी म	स १८५६
28	पू दौलतरामजी म	दवलाना (खैराड)	कासलीवाल	स १८१४ चै ब १४	अलीगढ रामपुरा	खींवसीजी म	१८६० जे सु १३ उन्हियारा
29	परसरामजी म					गुलाबचदजी म	
30	भागतरामजी म			स १८२४ फा सु १० शनि		गुलाबचदजी म	
31	अनोपचदजी म	टोडा (ढूढार)	ओसवाल	१८४८		फतहचदजी म.	
32	श्री जीववाजी म					चन्द्रभाणजी म	
33	सूरजमलजी म					चन्द्रभाणजी म	

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
34	लालचदजी म	करवड नागरचाल	सुथार			पू दोलतराम	स १६२६
35	गणेशजी म	सूरत नीबडी	ओसवाल			पू दौलतराम	स १६२६
36	दलपतरायजी म			स १८२५		पू दोलतराम	
37	सूरजमलजी म			स १८२६		पू दोलतराम	स १८३८
38	दयालजी म	अलीगढ–रामपुरा	पोरवाल मडावरा	स १८२५		पू दोलतराम	स १८३५
39	नयालजी म	अलीगढ–रामपुरा	पोरवाल मडावरा			पू दौलतराम	
40	गुलाबचदजी म					पू दौलतराम	स १८५५ उन्हियारा
41	राजारामजी म					पू दोलतराम	
42	मानकचदजी म			१८४० मि व ६	सवाई माधोपुर	पू दोलतराम	स १८४५ गगरार
43	कनीरामजी म					पू दौलतराम	१८६१ अ ब १३ अलीगढ रामपुरा
44	भूधरजी म					परसरामजी म	

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
45	मगनजी म		श्रीश्रीमाल (ओसवाल)	स १८७२		परसरामजी म	
46	बगतरामजी म					मागतरामजी	
47	रामचद्रजी म					अनोपचदजी	
48	गोपालजी म			स १८५२		अनोपचदजी	१८६०
49	अमीचदजी म					अनोपचदजी	
50	जयचदजी म					अनोपचदजी	कोटा
51	देवजी म	सौपुर	पोरवाड	१८७१		अनोपचदजी	स १६१८ आवा
52	शिवलालजी म					अनोपचदजी	
53	बडासदाजी म		ओसवाल	१८७१		अनोपचदजी	स १६२६ कोटा
54	नदरामजी म					अनोपचदजी	
55	पू हुक्मीचदजी म	टोडा (ढूढार)	चपलोत	१८७६ मि सु २	बूदी	लालचदजी म	१६१७ वै सु ५ मगलवार, जावद

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
56	गजाजी म		कासलीवाल			लालचदजी म	१६४० फा सु ६ कोटा
57	अमीचदजी म	दतरास	छाजेड ओसवाल	१८७६ मि सु १३		गणेशजी म	१६१० माधोपुर
58	श्री जीदनजी म बडा		बाकलीवाल	१८७६ मि सु १३		गणेशजी म	१६२४ का ब ४ बूदी
59	गोविदरामजी म	कोटा (हा)	बगेरवाल (ठग)	१८६२ जे सु ५ शनिवार		राजारामजी म	
60	कनीरामजी म					भूधरजी म	
61	कुदनमलजी म					भूधरजी (४४)	
62	रूपजी म					मगनजी (४५)	
63	प्रतापमलजी म	जोधपुर	सोनार		खाचरौद	मगनजी (४५)	१६३७ अ सु ११ शुक्र मागरोल
64	छोटूजी म					मगनजी (४५)	
65	खेमचदजी म					रामचन्द्र (४७)	
66	पन्नालालजी म	कोटा (हा)	बाकलीवाल श्रावगी	स १८८६		देवजी म	स १६३५ पाटन

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
67	चम्पालालजी म	मागरोल (हा)	श्रीश्रीमाल (ओसवाल)	स १८६८		देवजी म	१६२३ माह
68	वृद्धिचन्दजी म		ओसवाल			देवजी म	१६३३
69	चुन्नीलालजी म	पनवाड (ढू)	ओसवाल			नन्दरामजी म	
70	हीरालालजी म	पनवाड (ढू)	सुराणा			नन्दरामजी म	कोटा
71	छोटा सदाजी म	पनवाड (ढू)	सुराणा			नन्दरामजी म	
72	चमनजी म	माधोपुर	पोरवाड सामरा	स १६२४		गजाजी म	कोटा
73	बालजी म					गजाजी म	
74	बाल मुकुन्दजी म					गजाजी म	पडवाई
75	सूरजमलजी म	आवा (ढू)	बगेरवाल धानुता		कोटा		
76	श्री जीवनजी म छोटा					अमीचन्दजी म (५७)	
77	मगनजी म	माडलगढ (मेवाड)	ओसवाल	स १६०५	बूदी	अमीचन्दजी म (५७)	स १६५३ देई

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
78	बागजी म		राजपूत			अमीचन्दजी (५७)	
79	माणकचन्दजी म					अमीचन्दजी (५७)	
80	भोलूजी म					अमीचन्दजी (५७)	
81	भैरूजी म (बडा)					अमीचन्दजी (५७)	
82	कालूजी म	बूदी (खेराड)	ओस गुगलिया	स १९२०	माधोपुर	अमीचन्दजी (५७)	१९६० आ सु १५ मगल, बूदी
83	धन्नाजी म (बडा)	समेदी (खेराड)	पोर मोरावाल	स १९२२	कोटा	अमीचन्दजी (५७)	१९६० मि ब ६ बूदी
84	धन्नाजी म (छोटा)	लाखेरी	बगेरवाल चौधरी			अमीचन्दजी (५७)	
85	भैरूजी म (छोटा)	अलीगढ रामपुरा	पोर मोरावाल			अमीचन्दजी (५७)	१९२६ माधोपुर
86	चुन्नीलालजी म	समेदी	पोरवाल			अमीचन्दजी (५७)	पडवाई
87	गिरधारीलालजी म	चोथ का वरवाडा	पोरवाल पचौली	स १९१४	दिल्ली	अमीचन्दजी (५७)	
88	धन्नाजी म III	नामत (हा)	बगेरवाल जठाणिया	स १९२७		अमीचन्दजी (५७)	कोटा

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
89	माणकचन्दजी म	आलनपुर	पोरवाल ननकरा		चोरू	जीवनजी बडा (५८)	राणीपुर
90	फतहचन्दजी म	टोक (ढूढार)	खत्री सोनेता	१६०२ अ सु ७	कोटा	गोविन्दरामजी (५६)	१६१६ वै सु ११ कोटा
91	जीवराजजी म	चौथ का बरवाडा (ढू)	श्रावगी डोगा			गोविन्दरामजी (५६)	
92	भैरूजी म					गोविन्दरामजी (५६)	
93	महाचन्दजी म	जरखोदा नागरचाल	पोरवाल सदाराय			गोविन्दरामजी (५६)	स १६१७ कोटा
94	दयालजी म	चोरू	पोरवाल			गोविन्दरामजी (५६)	१८६१ जे सु ५
95	शिवलालजी म					कानीरामजी (६०)	
96	माणकचन्दजी म					कानीरामजी (६०)	
97	रामप्रतापजी म					कुन्दनमलजी (६१)	
98	शोभाचन्दजी म	रामपुरा मालवा	ब्राह्मण जती	स १६२४	मडाना	प्रतापमलजी (६३)	१६५३ भा ब ५ पाटन
99	चन्द्रभानजी म					खेमचन्दजी (६५)	

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
78	बागजी म		राजपूत			अमीचन्दजी (५७)	
79	माणकचन्दजी म					अमीचन्दजी (५७)	
80	भोलूजी म					अमीचन्दजी (५७)	
81	भैरूजी म (बडा)					अमीचन्दजी (५७)	
82	कालूजी म	बूदी (खेराड)	ओस गुगलिया	स १६२०	माधोपुर	अमीचन्दजी (५७)	१६६० आसु १५ मगल, बूदी
83	धन्नाजी म (बडा)	समेदी (खेराड)	पोर मोरावाल	स १६२२	कोटा	अमीचन्दजी (५७)	१६६० मि ब ६ बूदी
84	धन्नाजी म (छोटा)	लाखेरी	बगेरवाल चौधरी			अमीचन्दजी (५७)	
85	भैरूजी म (छोटा)	अलीगढ रामपुरा	पोर मोरावाल			अमीचन्दजी (५७)	१६२६ माधोपुर
86	चुन्नीलालजी म	समेदी	पोरवाल			अमीचन्दजी (५७)	पडवाई
87	गिरधारीलालजी म	चोथ का बरवाडा	पोरवाल पचौली	स १६१४	दिल्ली	अमीचन्दजी (५७)	
88	धन्नाजी म III	नामत (हा)	बगेरवाल जठाणिया	स १६२७		अमीचन्दजी (५७)	कोटा

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
89	माणकचन्दजी म	आलनपुर	पोरवाल ननकरा		चोरू	जीवनजी बडा (५८)	राणीपुर
90	फतहचन्दजी म	टोक (ढूढार)	खत्री सोनेता	१६०२ अ सु ७	कोटा	गोविन्दरामजी (५६)	१६१६ वै सु ११ कोटा
91	जीवराजजी म	चौथ का बरवाडा (ढू)	श्रावगी डोगा			गोविन्दरामजी (५६)	
92	भैरूजी म					गोविन्दरामजी (५६)	
93	महाचन्दजी म	जरखोदा नागरचाल	पोरवाल सदाराय			गोविन्दरामजी (५६)	स १६१७ कोटा
94	दयालजी म	चोरू	पोरवाल			गोविन्दरामजी (५६)	१८६१ जे सु ५
95	शिवलालजी म					कानीरामजी (६०)	
96	माणकचन्दजी म					कानीरामजी (६०)	
97	रामप्रतापजी म					कुन्दनमलजी (६१)	
98	शोभाचन्दजी म	रामपुरा मालवा	ब्राह्मण जती	स १६२४	मडाना	प्रतापमलजी (६३)	१६५३ भा ब ५ पाटन
99	चन्द्रभानजी म					खेमचन्दजी (६५)	

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवारा
100	खेमोजी म					पन्नालालजी (६६)	
101	कनीरामजी म	माडलगढ (मेवाड)	राजपूत	स १९१४		पन्नालालजी (६६)	१९५३ चे सु ५ गु कोटा
102	उम्मेदजी म					चम्पालालजी (६७)	
103	चुन्नीलालजी म	मागरोल (हा)	पोरवाल मोरावाल	स १९१७ भा		चम्पालालजी (६७)	१९४३ भा सु १३ शनि, रामपुरा
104	शिवलालजी म					वृद्धिचन्दजी (६८)	
105	ख्यालीलालजी म					वृद्धिचन्दजी (६८)	
106	धन्नालालजी म					वृद्धिचन्दजी (६८)	
107	मन्नालालजी म					वृद्धिचन्दजी (६८)	
108	किशनलालजी म	ककरावदा (हा)	माली	स १९३०	लाखेरी	छोटारादाजी (७१)	
109	रामकुवारजी म वाप ७२	माधोपुर	पोरवाल रामरा	रा १९२४	माधोपुर	चमनजी (७२)	
110	रोडजी म	वूदी (खे)	ओसवाल बरडिया	स १९३२	लाखेरी	बालजी (७३)	

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
111	रामलालजी म		अग्रवाल			बालजी (७३)	
112	चतुर्भुजजी म					सूरजमलजी (७५)	
113	अमरजी म	करवड (खेराड)	अग्रवाल		गभीरा	कालूजी (८२)	पडवाई
114	बगतावरजी म	पजाब	ओसवाल		नैनवा	कालूजी (८२)	पडवाई
115	रामकुवारजी म	घुमान (ढू)	पोरवाल ओछला	१६५५ मि सु १२	अलोई	कालूजी (८२)	
116	हीरालालजी म	नुगाव	गुजर लोद	स १६५७ जे ब	सोप	धन्नालालजी (८३)	पडवाई
117	रतनजी म	मोमोली (ढू)	पोरवाल ओछोवालि	स १६२४ वै	श्यामपुरा	माणकचन्दजी (८६)	१६५६ कोटा
118	ज्ञानजी म	उदयपुर (मे)	सुखलेचा	१६०२ अ सु ७	कोटा	फतहचन्दजी (६०)	१६२६ राणीपुरा
119	बलदेवजी म	रतलाम	ब्राह्मण	१६०२ अ सु ७	कोटा	फतहचन्दजी (६०)	१६२५ पौ सु १३ शनि, जयपुर
120	शिवलालजी म	धामनिया	बोडावत	१८६१ मि सु १	रतलाम	दयालजी (६४)	१६३३ पो सु ७ मगल, जावद
121	तच्छराजजी म					शिवलालजी (६५)	

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
122	जडावचन्दजी म					माणकचदजी (६६)	
123	रामलालजी म					रामप्रतापजी (६७)	
124	शिवनाथजी म	श्रीपुरो (हाडौती)	मीणा			शोभाचदजी	
125	बगतावरमलजी म	जूनो (अजमेर)	श्रावगी—पाटनी	१६३५ जे ब १०	सुडेल	शोभाचदजी	१६४३ भा सु ४ छावनी
126	केसरीमलजी म	छावनी झालावाड	पाचावत	१६४३ मा सु ५	गता	शोभाचदजी	पडवाई
127	किस्तूरचन्दजी म	बडोदो (खेराड)	तेली			कनीरामजी (१०१)	पडवाई
128	चम्पालालजी म	गता (ढू)	बगेरवाल	स १६२६	बोलो	कनीरामजी (१०१)	१६५४ का सु १२ कोटा
129	हीरालालजी म	कोटा (हा)	ओसवाल (सोनी)	स १६२६	पाटन	कनीरामजी (१०१)	१६५५ जे ब १२ टोक
130	किशनलालजी म बा १०३, भा १३१	मागरोल	पोरवाल मोरावाल	१६२२ मा सु १५	कोटा	चुन्नीलालजी (१०३)	१६४६ सा ब १२ गुरु, छावनी
131	विशनलालजी म बा १०३, भा १३०	मागरोल	पोरवाल मोरावाल	१६२२ मा सु १५	कोटा	चुन्नीलालजी (१०३)	१६६५ चै ब ६ कोटा
132	झूमालालजी म					मन्नालाल (१०७)	

क	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
133	मानकजी म					किशनलालजी (१०८)	
134	पेमराजजी म	फुलसर (द)	ओसवाल गुगलिया	स १६५० आ	अहमदनगर	रोडजी (११०)	
135	मनालालजी म	टोक (ढू)	पार्लेचा (ओ)	रा १६४०	टोंक	कनीराम	१६५६ अ व २ बुध टोंक
136	नानालालजी म	श्यामपुरा	पो महावरो	१६६८ मा सु ५ शनि	पीपलाद	रामकुवारजी	१६७० आ सु १३ मगल देई
137	वरदीचन्दजी म	अलीगढ (रामपुरा)	पो डगाला	१६७६ मा सु ५ बुध	मागराल	रामकुवारजी	
138	छगनलालजी म	डेकवा (ढू)	पोरवाल उजलधोला	१६११ फा व ५ बुध	कोटा	ज्ञानजी (११८)	१६८५ मा सु १३ राम अलाई
139	गभीरमलजी म	दिल्ली	ओ कुमठ	१६१६ मा सु ५	रानीपुरा	ज्ञानजी (११८)	१६८५ रास्वाड
140	हेमराजजी म	रतलाम (मा)	ओ नाहर	१६१३	रतलाम	ज्ञानजी (११८)	१६२५ वे धार
141	केशरीमलजी म	जालोर (मा)	ओ वाफना		राना	बलदेवजी (११६)	
142	मगनलालजी म	जयपुर	खडलवाल	१६१२ मा व ४	बूंदी	बलदेवजी (११६)	१६८५ वे सु ४ कोटा
143	गाडीदासजी म	सारोला (हा)	ओ वाहरा	१६४८ फा सु 3 मगलवार	नजरगढ	[illegible] (१२५)	

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
144	बलदेवजी म	माधोपुर	पो मोरावाल	१६२६ जे ब ६	रामपुर	किशनलालजी (१३१)	१६४५ भा सु ४ स माधोपुर
145	घासीलालजी म					झूमालालजी (१३३)	
146	बगतावरमलजी म	मनोहर थाना सिरोही	ओ मालू	१६३२ मा सु ११ रविवार	मनोहरथाना	छगनलालजी (१३८)	
147	जेठमलजी म	औरगाबाद	ओ रूनवाल	स १६३५ फा	ओरगाबाद	छगनलालजी (१३८)	१६५१ का ब ६ बूदी
148	पेमराजजी म	पीपाड	ओ कोठारी	स १६३६ आ	अहमदनगर	छगनलालजी (१३८)	१६५६ बूदी पडवाई
149	राजमलजी म	खेजडला (मार)	ओ सुराणा	स १६३६	धार	छगनलालजी (१३८)	१६६८, बूदी
150	मन्नालालजी म	दूनी (ढू)	ओ गोखरू	स १६३०	बाकोबणजेरा	छगनलालजी (१३८)	
151	गूजरमलजी म	टोक (ढू)	पो कचोरिया	स १६४७		छगनलालजी (१३८)	१६४८ आ ब १५ अहमदनगर
152	जीवन जी म म छोटा	आलनपुर (ढू)	पो ननकरा	१६१२ अ ब ४	टोक	छगनलालजी (१३८)	आलनपुर
153	सूरजमलजी म	घोडनदी (दक्षिण)	ओ भसाली	स १६३३ मि	पेटलावद	छगनलालजी (१३८)	धार
154	शकरलालजी म	रानीपुरा (खेराड)	माली	१६५७ मा ब १३	बूदी	छगनलालजी (१३८)	

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
155	देवीलालजी म	सीतापुर (खेरोड)	सरावगी–लवारा	१६५७ पौ सु १४	छावनी झालावाड़	छगनलालजी (१३८)	१६६८ का सु २ बुध नासिक
156	मिसरीमलजी म	किशनगढ	ओ मोहनत	स १६४० मा सु	बमोर	गभीरमलजी (१३६)	१६६८ अ सु १४ रवि, किशनगढ
157	मोतीलालजी म		माली			हेमराजजी (१४०)	
158	राजमलजी म	मागलावास (अजमेरा)	ओ सुराना	१६५२ मि सु १३	कोटा	बलदेवजी (१५०)	१६७४ भा सु छावनी–झालावाड
159	हरखचन्दजी म	सोपुर	ओ सावनसुखा	१६५७ पौ ब ४ बुधवार	बणजेरी	बलदेवजी (१५०)	
160	घासीलालजी म	मागरोल (हा)	ओ नवलखा (चौधरी)	१६५७ फा	कोटा	बलदेवजी (१५०)	१६६६ जे ब ८ बुध, कोटा
161	गुलाबचन्दजी म	नीमडी (अज)	राजपूत	१६५०	सोकलिया	बगतावरजी (१५२)	पडवाई
162	कजोडीमलजी म	सोडावावडी (ढू)	ओ नाहर	१६३७ मा	कतारखेडा	बगतावरजी (१५२)	१६४६ श्यामपुरा
163	चतुर्भुज जी म	घोडनदी	ओ भसाली	१६३६ आ सु ११ रविवार	अहमदनगर	सूरजमलजी (१५३)	
164	माधोलालजी म	देवली (ढू)	माली	स १६६१	बूदी	शकरलालजी (१५४)	१६७१ खलचीपुरा
165	रूपचन्दजी म	येवला (द) साथीन (मा)	ओ साकला	१६७२ मि ब १२ शनिवार	येवला	शकरलालजी (१५४)	

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
166	मागीलालजी म	अजमेर	ब्राह्मण	स १६६०	इन्दौर	देवीलालजी (१५५)	१६६६ सा सु ६ कोटा
167	चत्तरसिहजी म	भीलवाडा	ओ चडालिया	१६५८ जे सु १० सोमवार	सरवाड	मिश्रीमलजी (१५६)	खलचीपुरा
168	मागीलालजी म	माधोपुर	पोर मोरावाल	१६५६ फा ब ७ गुरुवार	माधोपुर	हरखचन्दजी (१५६)	
169	नन्दलालजी म	माधोपुर	पोर कणजोला	१६६६ का ब ८ गुरुवार	मागरोल	हरखचन्दजी (१५६)	
170	केशरीमलजी म	टोक (ढू)	तेली	१६७४ पो ब ५	टोक	मागीलालजी	
171	भारमलजी म	अहमदनगर	ओ गादिया	१६३६ अ सु ११ रविवार	अहमदगनर	छगनलालजी (१३८)	
172	मोमदराजजी म	जिन्नदा	अग्रवाल गर्ग	१६४० मा	बमोर	गभीरमलजी (१३६)	पडवाई
173	भैरूलालजी म			१६६२ जे सु १४ शनिवार		गणेशजी	
174	गणेशलालजी म	विलाडा (मा)	ओ ललवानी	१६७० मि सु ६	अहमदनगर	प्रेमराजजी	
175	भूरालालजी म	देई (नागरचाल)	अग्रवाल गोयल	१६७५ भा सु ७	रतलाम	हरखचन्दजी	उदयपुर
176	हजारीमलजी म	चोरू (ढू)	पोर सामरा		चोरू	रामकुमारजी	१६६० पौ सु ७ मगलवार, चोरू

क्र	नाम	गॉव	गोत्र	दीक्षा तिथि	दीक्षा स्थल	दीक्षा गुरु	स्वर्गवास
177	पृथ्वीराजजी म बेटा–१७८	नावम (दक्षन)	ओ काकलिया	१६८४ मि सु १५	चिचवड	देवीलालजी	पूना
178	जीवराजजी म	नावम (दक्षन)	ओ काकलिया	१६८४ मि सु १५	चिचवड	देवीलालजी	
179	खेमराजजी म	धनकर	ओ सचेती	१६८४ मा सु ५ सोमवार	चिचवड	गणेशीलालजी	
180	जुहारलालजी म	आवा (ढू)	बगेरवाल सेरा	१६८८ मा सु ५	कोटा	बरदीचदजी	१६६३ मि सु १३ गुरुवार, माधोपुर
181	हीरालालजी म	बिरवडी (दक्षन)	ओ पगारिया	१६६२ मि ब ६ गुरुवार	बिरवडी	प्रेमचदजी	
182	आनन्दीलालजी म	वारा (हा)	ओ छाजेड	१६६४ चै सु ५ गुरुवार	कोटा	मागीलालजी	१६६५ वै ब ७ शुक्रवार
183	जीवराजजी म	खखेडी	ओ बोरा	१६६४ मि ब ११ रविवार		प्रेमराजजी	
184	मिश्रीलालजी म	बैगलोर	ओ छाजेड		बैगलोर	गणेशीलालजी	
185	ऊकारलालजी म	रायपुर (झालावाड)	ओ बेगानी	१६६४ फा ब ७ बुधवार	रामपुरा	गोडीदासजी	
186	हरकचन्दजी म	महतपुर (पजाब)	ओसवाल	१६६५ मि सु १० शुक्रवार	मुरार	गोडीदासजी	पडवाई

परिशिष्ट नं. 5

पूज्य श्री हुकमीचन्द जी म. के हस्ताक्षर मय प्रपत्र

आचार्य श्री चौथमलजी म. के हस्ताक्षर मय प्रपत्र

पछिम
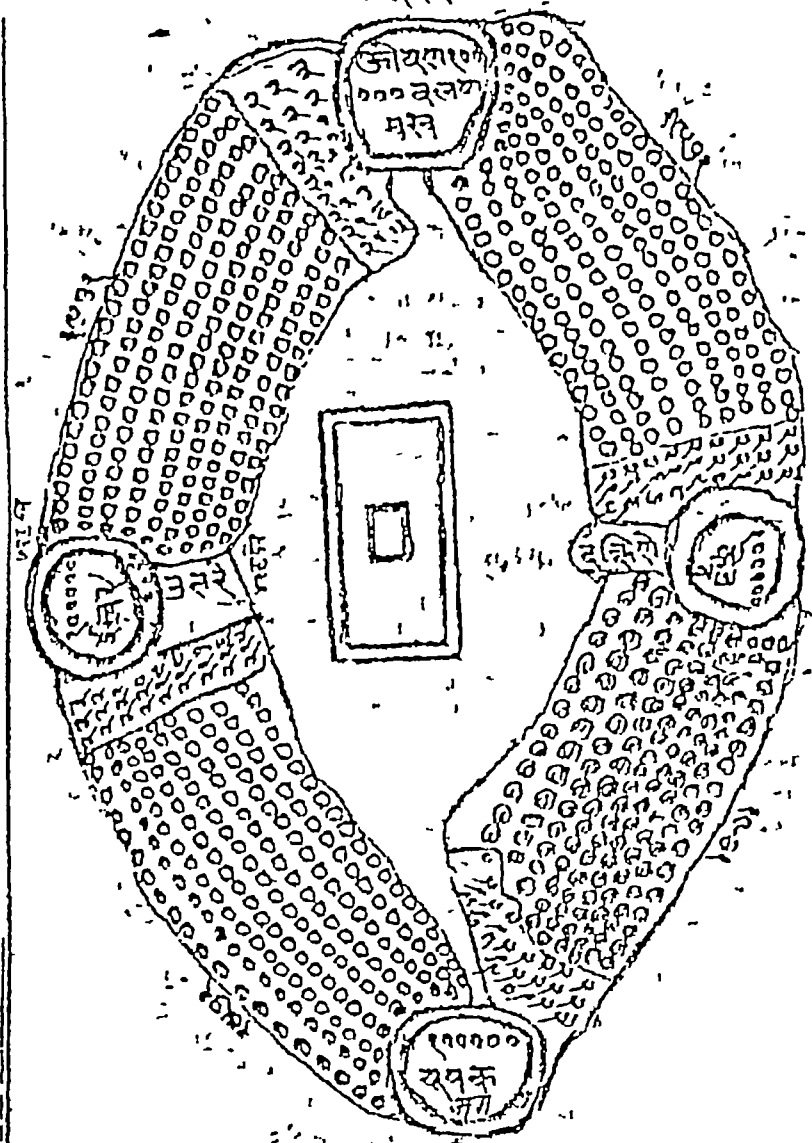
आचार्य श्री गणेशीलाल जी म.सा. की उर्दूलिपि का पत्र

تھے عرصۂ آفاق میں کیا کیا بہادر دلاور — جلادِ فلک جن سے ہوتا تھا برابر ۱ — گو شیر تھے ہنگام وغا اور گئے اژدر

کچھ زورِ اجل سے نہ چلا وائے مقدر ۲ — شہر آپ کو فرصت نہ ملی کام اجل سے — رستم کو رہائی نہ ہوئی دام اجل سے ۳

وہ چہرۂ پُر نور کہ جن پر تھی بحالی — اور نیر بھی عجب خاک ہے اس چرخ نے ڈالی ہے ۴ — کسریٰ کے محل کا کوئی اب بھی نہیں والی

دیکھو تو ذرا قصر فریدوں بھی ہے خالی ۵ — دل میں وہ تمنائیں لیے خاک نشیں ہے — کل سب تھے مگر آج کوئی گھر میں نہیں ہے ۶

غفلت کی جگہ منزل ہستی نہیں واللہ — اس راہ میں دریا ہیں کہیں اور کہیں چاہ ۷ — ہے بیم سفر کوچ ہے آگاہ ہو آگاہ

ہر روز یہاں قافلہ رہتا ہے سر راہ ۸ — دنیا میں کوئی زندۂ جاوید نہیں ہے — گر صبح کسی شام کی امید نہیں ہے ۹

।।श्री।।

।।श्री श्री वितरागदेवजी की साख है सं. १९५६ का माह सु
दी १४ पुजजी महाराज श्री चोथमलजी महाराज का साधा
के अने सामी जुहारमालजी का साधा के खिमतखामणा
करया पंजाब का स्वामीजी महाराज मयारामजी कु
कुल स्वामी मानकचंदजी महाराजने आगेवान किया
लिख्या मुजब वर्तणो जो कबसा तारह सी तेहनी विगत

१ माहो माही आपस मे निंदा नही करणी पुज्यजी का साध
तो जुहारमालजी का साधा की निंदा नही करे अने जु
हारमालजी का साध पुज्यजी का साधा की निंदा नही
करे

२ संभोगी साध है ज्या साधा मा हे सु कोइ साध रागद्वेष
से या किसी प्रकार से विपरीत होके आवे तो पुज्यजी
का साध ने तो जुहारमालजी का साध पुज्यजी की वि
ना आग्या लेणा नही अने जुहारमालजी का साध ने पु
ज्यजी का साध जुहारमालजी की आग्या विना लेणा न
ही

३ वैरागी त्यार होवे या बाइ होवे जीस का परणाम फेरणा
नही पुजजी का साधा का उपदेस्या हुवे जीसने तो जुहार
मालजी का साध परणाम नही फेरे अने जुहारमालजी
का साधा का उपदेस्या हुवे जीसने पुज्यजी का साध प
रणाम नही करे

४ समेकाल विचरे तो जिस गाम मे पहली उतरया होवे
अने पछे दुसरा आवे तो पछे आया है उस साध ने विहार
कर देणा एक दो रात्री रह के विहार नही करे तो दुसरा व
ही करणा वगेरा तो जो पेहला साध होवे जीस कोइ जरूर
होवे एक मास कल्प ताइ पछे उ तो विहार कर जावे गाम
छे कोइ आउ कोइ जाउ

५ चोमासा करणा होवे तो जीस गाम मे जिण साधा की विन
ती होइ चोमासो मान्यो होवे तो दुसरा साधा ने चोमासो नही
मानणा चाये कुल चाहिये के दुसरा चोमासा नही करणा

६ जीस गाम मे थाणापति साध है जिणाने चाहिये के कोइ
दुसरा साध आवे सेषकाल तथा चोमासे तो आपणा सम
लहोमणा परंतु एसा नही करणा के वखाण तो हम दिया
करे परखदा ने तोफने ली किसी परकार से परखदा तो
फलीन हीरन ने वेट से कहे के मानं तो सुणणा वो तो वाने ए
सी कहणी के ना सुणणा वाको तो चरकाव नही परंतु र।

आचार्य श्री श्रीलालजी म. का शासन प्रवेश तथा उनके त्याग का सूची पत्र

आचार्य श्री श्रीलालजी म. को बडे जवाहरलालजी म., नंदलालजी म. द्वारा प्रदत्त पत्र

श्रीजिनायनमः

नगरे

।।पुज्यजि श्री श्रीलालजि माहाराज श्री श्री जुहरलालजि नंदरामकि
साताथ वाचसि ओरसी मिचार १ जाणसि के जुहरलालजी
आपलिखायो ८ मिकलमने आचार्यने विना पुछ्यां संजोग
नहि तो भणो सो बात जिनमारग कि रितसर नहि हे प
रतु दोस विना संजोग नहि किधि तो भणे या बात ठिक हे
सो या बात माने पि मंजुर हे इण रितसु ओर निक
लमा सासन कि रितसर वे णी चाइजे श्री: दसगात
नंदराम का समत १९६६ का असाम सुद ४ वार

मुनि हरकचंद जी म. कोटा वालों द्वारा संघ प्रवेश पत्र

॥श्री॥

पूज्य जवाहराचार्य द्वारा युवाचार्य पद स्वीकृति पत्र

॥ ॐ ॥

श्री श्री श्री आचार्य महाराज श्री ने मेरे विषय में
जो पद प्रदान विषयक ठेराव सहर उदय-
पुर में किया वह मुझे शहर रतलाम में सुनाया

उसपर मैंने श्री पूज्य पाद से अरज की कि —
प्रथम तो इस महत्पद का भार उठाने में
मेरी प्रकृति से ही उदासीनता है. उसपर
भी शारीरिक स्थिति का और वय वृद्धि का
ख्याल से भी मैं इस भार को उठाने में असम-
र्थ हूं, और साधुओं का अभ्यास की व्यवस्था
भी मेरे में कम है इस वास्ते यह पद
कोई ऐसा उत्साही योग्य मुनि हो उनको दि-
या जाय तो ज्यादा लाभकारी होगा.

उसपर श्री पूज्य वर्य ने फरमाया कि यदि
सब काम का बोझा लेने की तुमारी इच्छा
नहीं है तो गणावच्छेदादिक के कार्यों का वि-
भाग कर दिया जायगा, तुमारे सीर तो सिर्फ
आचार्य सम्बन्धी ही युवाचार्य पद का ही कार्य रहे-
गा. और जहांतक हो सकेगा वहां तक विशे-
ष कार्य मैं ही करता रहूंगा तुम बेफिकर —

इत्यादि साहस उत्साह, मुझे श्री पुज्य
पाद श्री आचार्यजी माहाराज से मुझे मिल
जानेसे मैंने यह भार स्वीकार कीयाहै सो श्री
अरिहंत प्रभु और श्री पुज्य वर्यकी कृपा
से यह कार्य मेरे से सुस्थीत रीति से पार हो
वे, ऐसी मेरी आसन्न पति से प्रार्थना है.
और श्रीजी माहाराज ने मुझ जैसे
सामान्य साधु पर यह महान पद भार
न मान दिया इसका मैं आभार करता। सो श्री
माहाराज का मैं ऋणी हुं इस ऋण से
मुक्त होना यद्यपि असंभव है तथापि
इस ऋणसे रहित होउंगा वह दिन
परम कल्याण का होगा. शुभं भ
वतु ॥ इति ॥ श्री ॥ श्री ॥ संवत १९७६
फाल्गुन शुक्ला ११. द: युवाचार्य जवाहरलाल
का ॥

पू. श्री श्रीलालजी म. तथा सम्प्रदाय के पोथी पानों की भावी व्यवस्था का पत्र

।।श्री[illegible]।।
लिखे पुज व सर्व सताकी राहसे सात संतोकी
कमेठी मुकरर करके सा तो संतो की सर्वानु
मत से ठेराव मारे सामने पास हुवो है
सहर उदेपुर में सं १९७७ का फागुन
सुद १३ द० पुज्य० जवाहरलाल का।

।।पुजजीमाराजश्रीश्री१००८श्रीसरिलालजिमा०

किनेसराय किपरता पानाके वास्ते ठेराव लि
खे पुजव जो प्रतासास्त्र कि अरथपाठ कि १
पाठ किर गुहुत ३ थोकडा कासन्या ४ चोपाइयो
५ ढालीया कासन्या ६ लवनाका से चो ७
सवीयाकासन्या ८ ईत्यादि जो थोकवध
जो पुजमाराजा के नेसराय का है और कि सि
स तथा नेसराय में किया नहीहे व लोप्रत
पानाप्र इस तरे को नम्बर लगा दीये जावे
गा पुज्य श्री हुकमीचंदजी माराज कि संप्र
दाय में जिसके निश्रे जो पुज्य हुवे या वरत
मान में हुए और आगामिये काल में हो
वेगे उन का नाम का पेना अगर उस पूंठा पर
लगा दिया जावेगा और सुई चापे भी ल
गा दिया दिया जावेगा (पु० श्री० हो० सं०
सी० पु० वो० श्री० ज०) [illegible]
।।ज[illegible] संतो [illegible] प्रता या प्रता मसवा
डी जेउस कि अरज पुज्य मा० से कर के [illegible]
वो देयदरजा से दिजा वेगा०
१ और जो व जिव तक जो प्रत रखते कि [illegible]
रत होगा उसको जावजिव तक कि मया
दपर दिजावेगा दूसरे को देने का अधिकार
यार उसको नहीं हेगा योगता का विचा
र करने का इकतियार पुजी मा० को रहेगा
२ जो प्रता पनियाहि वन [illegible]

तेजसिंह जी म की सम्प्रदाय के प्यारचद जी महाराज आदि का सम्प्रदाय में प्रवेश पत्र

॥श्रीगौतमायनम.

॥ आज गाम कपासण मे स्वामिजी महाराज श्री १००८ श्री
प्यारचंदजी मा॰ ठाणा ४ सेंवी राजस्थान ज्यावतमपु
साकी सेवामे हीरालाल आदी ठाणा ५ से हाजीर हो
कर या बात तेकी है वीगत नीचे मुजब
१ अवल स्वामिजी महाराज श्री १००८ श्री मोतीरा
मजी मा॰ श्री १००८ श्री तेजसींघजी मा॰ के औ
र पुजजी मा॰ श्री १००८ श्री होकमचंदजी मा॰ सु
आज तक बरताव अज्ञारा संभोग को चु
ल्यो आवे ले कीन बीचमे अंतरायका जो रसे
का मिबसी होगयो थो सो आज पुजजी मा॰ श्री
१००८ श्री जवाहिरलालजी मा॰ का हुकम से पु
रो अज्ञारे ही संभोग साबीत कीया सो दोनु त
रफ बरताव मे जाहीर रहेगा
२ पुजजी मा॰ श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी मा॰
स्वामिजी श्री १००८ श्री प्यारचंदजी मा॰ ने वं
दणा साबत मुजब करेगा
३ पुजजी मा॰ श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी मा॰
ने स्वामिजी श्री १००८ श्री जीतमलजी औ
र स्वामिजी श्री १००८ श्री बोधलालजी मा॰
वंदणा करता रहेगा और याके सीवाय छोटा
मोटा सर्ब संत दोनु तरफ के मुरजादा सहत
वंदणादी करता रहेगा
४ पुज महाराज की अज्ञा मे सब बिचरेगा चोमा
सा आदी करेगा और कोइ वगत दूरानजी
क होवा पर आज्ञा मंगा यले वेगा पांचव
रस की बीच मे कोइ वगत चोमासो करवा
को हुकम पुज श्री को होगा तो स्वामिजी श्री प्या
रचंदजी मा॰ कोइ गांत की बीणा तीन ही मानी
होगा तो चोमासो करेगा कारण की बात न्यारी
है सम्वत १९८३ का फागण सुद ४ गुरु
वार कपासण मध्ये ॥ दस्तक [illegible]

[illegible]
[illegible] ६ शिवलाल का॰
द: हजारीमल का द: छगनलाल का॰
[illegible] द: मोतीलाल
द: सागरमल का

वि.स. 1985 में चुरू में निधारित नियमों का पत्र

पू. मुन्नालाल जी म. का हस्तलिखित पत्र

निम्बाहेड़ा में जै.दि. चौथमलजी म. को जवाहराचार्य द्वारा प्रेषित पत्र

आज मीती पौस वद १२ शनीवार सं. १९९० को मैंने आपसे
(चौथमलजी और प्यारचन्दजी से) बातचीत की उस में
आपने यह बात कही कि घासीलालजी के साथ करेड़े में
हमने १ पाटे पर बैठ के जो व्याख्यान देने का जो कार्य कि-
या है वह भूलछलनाई से कीया है और छगनलालजी
ने जो दीक्षा दी है वह मेरी आग्या से दी है। मैंने छगनला-
लजी से कह दीया था कि जहां च्याहो वहां दीक्षा दो और
अपनी नेसराय में शीष्य करलो। इस पर मैंने (जवाहिरलाल) कहा कि
आपने घासीरामजी के साथ पाटे पर बैठकर व्या-
ख्यान देने का जो व्यवहार कीया है और छगनलालजी
को आपने दीक्षा देने की आग्या दी वह ये दोनु कार्य-
अजमेर में दीये हुए पंचों के फैसले के व साधुसम्मे-
लन के ठहराव के खीलाफ है। इसलीए आप अपनी इन त्रुटि-
यों को स्वीकार करके इन कार्यों की शुद्धी करलें। इस पर आपने
(चौथमलजी व प्यारचंदजी ने) कहा कि हम घासी-
रामजी के साथ एक पाटे पर बैठ कर व्याख्यान देने
के कार्य को भूल नहीं मानते। किन्तु हमने बलचलनाई
से एक पाटे पर बैठ कर व्याख्यान दीया है और स्वामी

यह कान्फरेन्स चाहती है कि साधारण
तथा साधु साध्वियों की आंतरिक व्यवस्था
में खास संयोगों के सिवाय यदि साधु
ओं की तरफ से अपील न की जावे
वहां तक यह कान्फरेन्स बीच में पड़ेगी
नहीं।

पूज्य श्री हुकम चंद जी महाराज
साहब की सम्प्रदाय संबंध में अजमेर
मुकाम पर हुई ऐक्य के बाद उत्पन्न
परिस्थिती विचार करते हुए और दोनो
सम्बन्ध पक्षों में से तीन मुनि महाराज
जाहावान के अभिप्राय तथा प्रमुख साहब
का प्रकाश द्वारा प्रकाशित पत्र व्यवहार
ऊपर ध्यान देते हुए यह जनरल कमेटी भी
सभा ऐसे अभिप्राय पर आती है कि पूज्य
श्री मुन्नालाल महाराज साहब के अवसान के
बाद यह मुनि सम्प्रदाय पूज्य श्री जवाहरलाल
जी महाराज साहब की आज्ञा [illegible] के अन्दर आपदा
अनुसार आ जाती है और इसमें पूज्य श्री जवाहर
लाल महाराज साहब की आज्ञा का उल्लंघन
करके सब कान्फरेन्स की समिति लिये बिदुन
पूज्य श्री मुन्नालाल जी महाराज के पाट पर श्री
खूब चंद महाराज साहब को पूज्य पदवी देने
में आई उस कार्य को कान्फरेन्स की कमेटी
खुल्ला अपमान करने बराबर मानती है।

हर्मन जैकोबी द्वारा लिखा गया पत्र - "मूर्तिपूजा आगम सम्मत नहीं है।"

Dear Sir,

Your kind letter of 9th instant and the copy of the "Notes on the Sthanak-vasi Jains" reached me here far away from Bonn. I have read the booklet with great interest, & shall give notice of it in my report on Jainism which appears every second year in the Archiv for History of Religion, a German journal. Being away from my books I cannot enter into details of the subject, but if I

are not greatly mistaken, I have
somewhere expressed my opinion,
that worship in temples is not
an original element of Jain
Religion, but has been introduced
in order to meet the devotional
requirements of the laity. The practice
of idol worship seems to be pretty
old, though not as old as the com-
position of the Siddhanta. It
seems to have been substituted
for the worship of Yakshas and
other popular deities & demons which
seem to have obtained at the
time of Mahavira among the people.

at las
cult. b
the Jain
tolerated
looked
view,
is clea
a power
substitut
~~nature~~ ?
(and I
see not
conside
ing Nir
I c

. श्री समर्थमलजी म. द्वारा गणेशाचार्य के नेतृत्व स्वीकृति के मय हस्ताक्षर पत्र

ता. ५-१-१९६१

उपरमुजब कामकाज हम हृदय से निश्चय करते हैं। द० मु० समर्थमल। संवत् २०१७ माघ कृ० ५

गणेशाचार्य को सर्वाधिकार पूर्वक समर्पण का पत्र

श्रीवीतरागायनमः

पुज्यश्री १००८ श्री हुक्मीचंदजीम.पू. शिव. महा. पू. उदै. कजोडीमलजी महा पू. सामरतमलजी चौथमलजी महाराज पू. श्रीलालजी महाराज पू. श्री जवाहिरलालजी महाराज के पू. श्री गणेशीलालजी महाराज – विद्यमान हैं, वे द्रव्य क्षेत्र काल भाव देखकर सम्प्रदाय के हित के लिए जो भी नियम उपनियम नवीन बनावे या पूर्व के नियमों को कम ज्यादा करे तो उनको स्वतंत्रता है। फिर वो दूसरे सन्तों से पूछे या न पूछे इनके बनाए हुए नियमों पर इस सम्प्रदाय के सभी सन्त – विश्वास रख कर मंजूर करेंगे और बेउजर पालन करेंगे। अगर गल्ती करेंगे तो जो दंड देंगे उसे मंजूर करेंगे। ऐसा ही अधिकार भावी आचार्य के लिए समझेंगे। सं. २००० मिती सावन वदी २ मंगलवार।

फूलचंद
द: कस्तूरचन्द
द: सुन्दरलाल
द: मगनलाल
द: हुकमचन्द
द: सुमेरमल
द: नेमचन्द

प्रवर्तिनी श्री खेताजी म. के सिंघाड़े की सतियों द्वारा गणेशाचार्य को दिया गया समर्पण पत्र

"पुज्य श्री हुकमी चन्द जी मा. सा. के शासन पदाधिष्ठित श्री म जैनाचार्य श्री १००८ श्री गणेशी लाल जी मा. सा. को स विधि वन्दना कर के हम यह प्रार्थना करती है कि आप सं. २००९ के वैसाख माह मे श्री धनेराव सादड़ी में सम्मेलन होने जा रहा है उसमें पधार रहे हैं उस सम्मेलन में आप जो विधान और जो समाचारी स्वीकृत करेंगे उस विधान और समाचारी को खेताजी मा. सा. की सम्प्रदाय की नीचे हस्ताक्षर करने वाली हम ।। स सतियाँ स्वीकार करेंगी —

1) द. २००६ श्री चम्पा कंवर जी मा. सा.
2) द. श्री सोहन कंवर जी मा. सा.
3) द. श्री जीवन कंवर जी मा. सा.
4) द. श्री रूप कंवर जी मा. सा.
5) द. श्री सूरज कंवर जी मा. सा.
6) द. श्री मोहन कंवर जी मा. सा.
7) द. श्री पान कंवर जी मा. सा.
8) द. श्री मान कंवर जी मा. सा.
9) द. श्री कस्तूर कंवर जी मा. सा.
10) द. श्री प्यार कंवर जी मा. सा.
11) द. श्री केसर कंवर जी मा. सा.

१२) द॰ श्री पारपतीजी मा॰ सा॰
१३) द॰ श्री पानकंवर जी मा॰ सा॰
१४) द॰ श्री कंचन कंवर जी मा॰ सा॰
१५) द॰ श्री रूखम कंवर जी मा॰ सा॰
१६) द॰ आनन्द कँवर जी मा॰ सा॰
१८) द॰ श्री चाँदकंवर

पुज्य श्री श्री १००८ श्री गणेशी लालजी म॰ सा॰ सा॰ के चरणकमलोमें श्रे जो आप हो कम फुरमावे सो हम सब १८ ही सतियाँको मंजुर है।

ॐ नमो भगवते वर्द्धमानाय

प्रवर्तिनी श्री १.८ रंगूजी महासती जी की
सम्प्रदाय के पाटानुपाट विराजित प्रवर्तिनी जी श्री
आनंद कुंवर जी महासती की आज्ञा में प्रवर्तने
वाली हम सब सतीये प्रवर्तिनी जी महासती श्री
आनंद कुंवर जी को विधिपूर्वक वंदना करके अर्ज
करती है कि आप अपना भार (प्रवर्तिनी पद
का भार) हममें से जिस किसी सती को देगे
उस महासती को हम सब सतीये सहर्ष प्रवर्तिनी
मानेंगी। और आज तक जैसा आप को मानती आई
हैं वैसा उनको मानेंगी। आज्ञा धारणा भी उनकी
जैसी होगी वैसी ही हम रक्खेंगी व पालेंगी।
अर्थात् वे प्रवर्तिनी जी हम को जहां चतुर्मास कर
ने को भेजेंगे वहीं चतुर्मास जायेंगी। जिन सती
यें की सेवा करने का हुक्म देगे उनकी
सेवा प्रेमपूर्वक बजायेगी जिस सति को जिस
के साथ रक्खेंगे वह उसी के साथ रहेगी
और भी जहां २ जो २ आज्ञा होगी वह २ वह २
आज्ञा शिरोधार्य करके पालेंगी कोई भी स
ती आज्ञा विरुद्ध व सम्प्रदाय की रीति विरुद्ध
करेगी तो नहीं। इतने पर भी कोई सती कर बैठे
तो उसको दण्ड उस सती को जैसा वे देंगे वैसा
मन्जूर करना होगा। यदि वह मन्जूर न करे तो
हम सब सतीये उसका साथ छोड देंगी यानी
प्रवर्तिनी जी के मर्यादा के विरुद्ध चलने वाली सती
के साथ हम कोई तरह का सम्भोग नहीं रक्खेंगी
यह बातें हम सब नीचे सही करने वाली आनन्द
विश्वास के साथ मन्जूर करती हैं। यानन्द

108 श्री रूपचन्द जी म. के शिष्य श्री जेठमलजी म.सा. द्वारा श्री दौलतराम जी म.सा. को भेंट जम्बूद्वीप पन्नती सूत्र की प्रतिच्छाया। संवत् 1858 वर्ष आषाढ शुक्ला 13 गांव धोराजी

आचार्य परिचय-पत्र

संग्राहक : मुनि धर्मेश

विवरण	आचार्य श्री हुक्मीचन्दजी	आचार्य श्री शिवलालजी	आचार्य श्री उदयसागरजी	आचार्य श्री चौथमलजी
निवासी	टोडारायसिह	धामनिया	जोधपुर	पाली
पिता/माता का नाम	रतनचन्दजी/मोतीबाई	टीकमदासजी/कुन्दनबाई	नथमलजी/जीवीबाई	पोखरदासजी/हीराबाई
गौत्र	चपलोत	बोड़ावत	खींवेसरा	धोका
जन्म तिथि	1860 पो सु 9	1867, पो सु 10	1876, आ सु 15	1885, वै सु 4
दीक्षा तिथि	1879 मि सु 2	1891, मि सु 1	1 1898 चै सु 10 2 1908, चै सु 11	1909, चै सु 12
दीक्षा स्थल	बूदी	रतलाम	बीकानेर	ब्यावर
दीक्षा गुरु	पूज्य लालचन्दजी	मुनि दयालचन्दजी	1 मारवाड़ सम्प्रदाय 2. मुनि हरकचन्दजी	मुनि हरकचन्दजी
दीक्षा के समय उम्र	18 साल 10 महीने 23 दिन	23-10-21	31-5-26	23-1-18
युवाचार्य पद तिथि	1890, मि बदी 1	1907, मा सु 5	1925, पो सु 7	1954, आ सु 15
युवाचार्य पद प्रदान स्थल	क्रियोद्धार स्थल, जावद	बीकानेर	जावद	जावद
युवाचार्य पद के समय दीक्षा पर्याय	10-11-14	16-2-4	17-8-26	45-6-3
युवाचार्य पद के समय उम्र	29-10-7	40-0-25	49-2-22	69-5-11
युवाचार्य काल	17-21-9	9-3-0	7-11-29	0-2-25
युवाचार्य काल मे दीक्षा (सतो की)	-	24	32	-
आचार्य पद तिथि	1907, मा सु 5	1917, वै सु 5	1933, पो सु 6	1954, मा सु 10
आचार्य पद स्थल	बीकानेर	जावद	जावद	रतलाम
आचार्य पद के समय उम्र	47-0-26	49-3-25	57-2-21	69-9-6
आचार्य पद के समय दीक्षा पर्याय	28-2-3	25-5-4	25-8-25	45-9-28
आचार्य शासनकाल	9-0-3	16-8-2	21-1-4	2-9-0
शासनकाल मे दीक्षा (सतो की)	39	57	94	32
कुल आयु	56-3-26	66-11-26	78-3-25	72-6-6
विवाहित/अविवाहित	अविवाहित	अविवाहित	अविवाहित	अविवाहित
स्वर्गवास तिथि	1917, वै सु 5	1933, पो सु 6	1954, मा सु 10	1957, का सु 9(10)
स्वर्गवास स्थल	जावद	जावद	रतलाम	रतलाम

आचार्य श्री श्रीलालजी	आचार्य श्री जवाहरलालजी	आचार्य श्री गणेशीलालजी	आचार्य श्री नानालालजी	युवाचार्य श्री [illegible]
टोक	थादला	उदयपुर	दाता	देशनोक
चुन्नीलालजी/चादबाई	जीवराजजी/नाथीबाई	सायबलालजी/इन्द्राबाई	मोड़ीलालजी/सिणगारबाई	[illegible]
बम्ब	कवाड़	मारू	पोखरना	भूरा
1926, अ सु 12	1932, का सु 4	1947, सा ब 3	1977, जे सु 2	2009, [illegible]
1 1945, मा ब 2 2 1947, मि सु 1-2	1948, मि सु 2	1962, मि व 1	1996, पो सु 8	2031, [illegible] 12
1 बणेठा 2 डूगला	लीमड़ी-पचमहल	उदयपुर	कपासन	देशनोक
1 मुनि बलदेव जी 2 मुनि वृद्धिचन्दजी	मुनि श्रीमानजी (मगनजी)	मुनि मोतीलालजी	युवाचार्य श्री गणेश	आचार्य श्री [illegible]
21-4-19	16-0-28	15-3-28	19-7-6	22-9-28
1957, का सु 1	1975, चै ब 9	1990, फा सु 3	2019, आ सु 2	2048, [illegible] 3
रतलाम	रतलाम	जावद	उदयपुर	बीकानेर
9-11-0	26-3-22	28-3-17	22-8-24	17-0-21
31-3-19	42-4-20	43-7-15	42-0-4	39-10-19
0-0-8	2-3-9	9-4-5	0-3-15	
-	10	18	1	
1957 का सु 9 (10)	1977, अ सु 3	2000, अ सु 8	2019, मा द 2	
रतलाम	भीनासर	भीनासर	उदयपुर	
31-3-27	44-7-29	52-11-20	42-7-15	
9-11-8	28-7-1	37-7-22	23-0-9	
19-7-24	23-0-5	19-6-9	दीर्घायु [illegible]	
157	57	9	59	
51-11-21	67-8-4	72-5-29	दीर्घायु [illegible]	
विवाहित (मानबाई)	अविवाहित	विवाहित ([illegible])	[illegible]	
1977, अ सु 3	2000, आ सु 8	2019, मा द 2		
जैतारण	भीनासर	उदयपुर		